॥पवित्र रामायण तुलसीदास कृत॥

बालकाण्ड

विषय	पृष्ठसे	पृष्ठत०
...देवता वशुरु,ब्राह्मण व्यास आदि कवि की वन्द	१	१७
...च रामचरित्र महिमा वर्णन.	१७	३४
...था श्री रामचरित्र मानस कथा वर्णन.	३४	३८
...हुत देखि सती मोह कथा वर्णन.	३९	४४
...यज्ञ विध्वंस कथा वर्णन.	४४	४८
...उत्पत्ति अरु पार्वतीतप कथा वर्णन.	४८	५८
...वरदान शिव विवाह कथा वर्णन.	५८	७४
...र्वती जी के अवतारार्थ महादेव जी करके श्री रामचन्द्र कथा वर्णन.	७४	८६
...र्णन.	८६	९६
...रु शतरूपा कथा वर्णन.	९६	१०३
...की कथा वर्णन.	१०३	११७
...प अरु ब्रह्मा जी करके वरदान प्राप्त कथा वर्णन.	११७	११८
...वरा परब्रह्म ...ा वर्णन.	११८	१२७
...थ्वी भार ...हित सम्पूर्ण देवतों को थ्वी सहित श्री परमेश्वर की स्तुति कथा वर्णन.	१२७	१३०
...शरथ यज्ञ अ...रामचन्द्र,लक्ष्मण,भरत, शत्रुघ्न उत्पत्ति कथा वर्णन.	१३१	१३८
...रामचन्द्रादि ...रों भ्राताओं के बाल चरित्र लीला वर्णन.	१३८	१४२
...रामचन्द्र ल...ण के विश्वामित्र यज्ञ रक्षा अरु ताड़कादि राक्षसवध कथा वर्णन.	१४२	१४५
...हल्या शाप उ...र अरु गंगा जी की कथा वर्णन.	१४५	१५७
...श्वामित्र जी को श्री रामचन्द्र लक्ष्मण सह जनकपुर जाना अरु रामचन्द्र जी कर- ...ष भंग कथ वर्णन.	१५८	१९१
...स ल...ण रामा...	१९१	२०१
...वरा भ...		२३५
...क जी जो वर्त		

विषय

करके राम रहस्य लीला वर्णन. ... ...

अयोध्याकाण्ड

रामचन्द्र अभिषेक उत्सव कथा वर्णन ... ...
कैकयी को राजा दशरथ से दो वरदान रामचन्द्र का १४ वर्ष बन गमन अरु
माँगना अरु श्री रामचन्द्र बन सुनि दशरथ विलाप अरु सुनि वेष धरि सीता
मचन्द्र लक्ष्मण बन गमन. ... ...
श्री रामचन्द्र का सुरसरि निकट पहुँचना अरु केवट कथा वर्णन ... ...
श्री रामचन्द्र जी लक्ष्मण सीता सहित प्रयाग गमन अरु भरद्वाज मिलन वर्
श्री रामचन्द्र अरु वाल्मीकि मिलन अरु श्री रामचन्द्र चित्रकूट निवास क
सुमन्त्र अयोध्या गमन अरु रामचन्द्र बन गमन दशरथ प्राण त्याग कथा व
भरत करके दशरथ क्रिया अरु भरत वशिष्ठादि पुरवासियों सहित श्री राम
नार्थ चित्रकूट गमन. ... ...
प्रयाग जी में पहुँच कर भरत अरु भरद्वाज मुनि विलाप कथा वर्णन. ...
चित्रकूट विषे भरत रामचन्द्र मिलाप अरु रामचन्द्र की आज्ञानुसार पादुका
पुरवासियों सहित अयोध्या गमन कथा वर्णन. ... ...

आरण्यकाण्ड

शक्रसुत जयन्त मोह कथा वर्णन. १
श्री रामचन्द्र अरु अत्रि मुनि मिलाप अरु अनसूया को सीता जी से पतिव्रत धर्म कथा-
वर्णन. ३
विराध वध व शरभंग कथा वर्णन ७
सुतीक्ष्ण मुनि अरु श्री रामचन्द्र मिलाप कथा वर्णन ८
श्री रामचन्द्र अरु कुम्भज ऋषि मिलाप कथा वर्णन. १३
शूर्पणखा कथा वर्णन. १७
खर दूषणादि निशाचरों अरु रामचन्द्र के युद्ध में खर दूषणादि निशाचर वध. १८
कपट रूप मृग मारीच व ... ...
सीता हरण व ... ...
... ...

विषय		
लोचनाकथा वर्णन.		
अहिरावणा कथा वर्णन.		
रावणासुत नरान्तक कथा वर्णन.		
रावणा यज्ञ विध्वंस कथा वर्णन.		
श्रीरामचन्द्र अरु रावणा का घोर संग्राम अरु रावणा वध कथा वर्णन.		
विभीषणा राज्याभिषेक कथा वर्णन.		
श्रीरामचन्द्र अरु जानकी जी मिलाप कथा वर्णन.		
ब्रह्मा महादेव इन्द्रादि देवतों को श्री रामचन्द्र की स्तुति कथा वर्णन.		
श्रीरामचन्द्र लक्ष्मणा जानकी जी को सुग्रीव हनुमदादि वानरों सहित अयोध्यापुरी-गमन कथा वर्णन.		

उत्तरकाण्ड

भरत मिलाप अरु रामचन्द्र अभिषेक कथा वर्णन.		
ब्रह्मा महेशादि देवतों करके सिंहासनस्थ श्रीरामचन्द्र स्तुति कथा वर्णन.		
सुग्रीव विभीषणा अंगदादि को श्रीरामचन्द्र जी से विदा होय नि ,पुरगमन		
राम राज्य महिमा कथा वर्णन.		
श्रीरामचन्द्र अरु सनक सनन्दनादि मिलाप कथा वर्णन.		
श्रीरामचन्द्र जी करके सन्त महिमा कथा वर्णन.		
श्रीरामचन्द्र जी को पुरवासियों से नीति धर्म्म उपदेश वर्णन.	८३	४०
श्री महादेव करके काग भुशुण्डि व गरुड़ कथा वर्णन.	४०	४६
गरुड़ काग भुशुण्डि मिलाप अरु काग भुशुण्डि करके श्रीराम चरित्र कथा वर्णन. ...	४६	५४
काग भुशुण्डि मोह कथा वर्णन.	५४	६६
काग भुशुण्डि करके निज पूर्व्व जन्म कथा वर्णन.	६६	८८
ज्ञान भक्ति भेद कथा वर्णन.	८८	१००
महादेव जी करके श्री राम कथामाहात्म्य वर्णन	१००	१०६

इति

विषय	पृष्ठसे	पृष्ठ
कथा वर्णन.	३८	४२
नारद मिलाप कथा वर्णन.	४२	४६
किष्किन्धाकाण्ड		
द्रजी वहनुमन्त का मिलाप व सुग्रीव मित्रता कथा वर्णन.	१	८
द्रजी करके वालि बध और सुग्रीव राज्याभिषेक कथा वर्णन.	८	११
न्द्रजी को चतुर्मास प्रवर्षरा पर्वत पर निवास कथा वर्णन.	११	१५
को ढूंढने के निमित्त वानर चतुरङ्गादि गमन कथा वर्णन.	१५	२०
कों की समुद्र तट पहुँच सम्पाति से मिलना और लंका में सीता जी के जाने की	२०	२४
सुन्दरकाण्ड		
का में जाना और सीता जी से मिलाप.	१	१३
रावरा की फुलवाड़ी विध्वंस कर अक्षयकुमार बध और मेघनाद	१३	१५
मान बन्धन अरु लंका दाह.	१५	१९
न जी करके सीता संदेश कथा वर्णन.	१९	२४
भीषरा को श्रीरामचन्द्र की शररागागत में आना अरु श्रीराम चन्द्र विभीषरा मिलाप कथा वर्णन.	२४	४२
लंकाकाण्ड		
सेतुबन्ध कथा वर्णन.	१	४
मन्दोदरी करके रावरा नीति उपदेश अरु रामचन्द्र जी को सेना सहित सुवेल पर्वत पर निवास कथा वर्णन.	४	१२
रामदल सेन संख्या कथा वर्णन.	१२	१९
अंगद पैज कथा वर्णन.	१९	३५
राम दल अरु निशिचरी सेन संग्राम कथा वर्णन.	३५	४१
मेघनाद अरु लक्ष्मरा के युद्ध में लक्ष्मरा को शक्ति लगने से मोहित होना अरु हनुमान को संजीवनी लाना अरु लक्ष्मरा मोह शान्त कथा वर्णन.	४२	५१
रामचन्द्र अरु कुम्भकर्रा का घोर युद्ध अरु कुम्भकर्रा बध कथा वर्णन.	५१	५७
द अरु रामचन्द्र की सेना का महा घोर युद्ध अरु लक्ष्मरा करके मेघनाद बध. ...	५९	६४

लोचना कथा वर्णन. ... ...
अहिरावरा कथा वर्णन. ... ...
रावरा सुत नरान्तक कथा वर्णन. ... ...
रावरा यज्ञ विध्वंस कथा वर्णन. ... ...
श्रीरामचन्द्र अरु रावरा का घोर संग्राम अरु रावरा वध कथा वर्णन. ... ...
विभीषरा राज्याभिषेक कथा वर्णन. ... ...
श्रीरामचन्द्र अरु जानकी जी मिलाप कथा वर्णन. ... ...
ब्रह्मा महादेव इन्द्रादि देवतों को श्रीरामचन्द्र की स्तुति कथा वर्णन. ... ...
श्रीरामचन्द्र लक्ष्मरा जानकी जी को सुग्रीव हनुमदादि वानरों सहित अयोधापुरी-
गमन कथा वर्णन. ... ...

उत्तरकाराड

भरत मिलाप अरु रामचन्द्र अभिषेक कथा वर्णन. ... ...
ब्रह्मा महेशादि देवतों करके सिंहासनस्थ श्रीरामचन्द्र स्तुति कथा वर्णन.
सुग्रीव विभीषरा अंगदादि को श्रीरामचन्द्र जी से विदा होय निज पुर गमन
राम राज्य महिमा कथा वर्णन. ... ...
श्रीरामचन्द्र अरु सनक सनन्दनादि मिलाप कथा वर्णन. ... ...
श्रीरामचन्द्र जी करके सन्त महिमा कथा वर्णन. ... ...
श्रीरामचन्द्र जी को पुर वासियों से नीति धर्म्म उपदेश वर्णन. ४२ ४३
श्री महादेव करके काग भुशुरिड व गरुड़ कथा वर्णन. ४० ४६
गरुड़ काग भुशुरिड मिलाप अरु काग भुशुरिड करके श्रीराम चरित्र कथा वर्णन. ... ४६ ५४
काग भुशुरिड मोह कथा वर्णन. ५४ ६६
काग भुशुरिड करके निज पूर्व्व जन्म कथा वर्णन. ६६ ८८
ज्ञान भक्ति भेद कथा वर्णन. ८८ १०८
महादेव जी करके श्रीराम कथा माहात्म्य वर्णन १०८ १०९

इति

श्रीगणेशायनमः

श्रीरामायणतुलसीकृत

बालकाण्ड

वर्णानामर्थसंघानांरसानाञ्छन्दसामपि॥मङ्गलानाञ्च
कर्त्तारौवन्देवाणीविनायकौ १भवानीशङ्करौवन्देश्रद्धावि
श्वासरूपिणौ॥याभ्यांबिनानपश्यन्तिसिद्धाःस्वान्तःस्थ
मीश्वरम् २ वन्देबोधमयंनित्यंगुरुंशंकररूपिणम्॥यमा
श्रितोहिवक्रोपिचन्द्रःसर्व्वत्रवन्द्यते ३ सीतारामगुणग्राम
पुण्यारण्यविहारिणौ॥वन्देविशुद्धविज्ञानौकवीश्वरक
पीश्वरौ ४ उद्भवस्थितिसंहारकारिणींक्लेशहारिणीम्॥स
र्व्वश्रेयस्करींसीतांनतोहंरामवल्लभाम् ५ यन्मायावशवर्त्ति
विश्वमखिलंब्रह्मादिदेवासुरा यत्सत्वादमृषैवभातिसकलं
रज्जौयथाऽहेर्भ्रमः॥यत्पादप्लवमेवभातिहिभवाम्भोधेस्ति-
तीर्षावतां वन्देऽहंतमशेषकारणपरंरामाख्यमीशंहरिम् ६
नानापुराणानिगमागमसम्मतंयद्रामायणेनिगदितंक्वचि-

न्यतोपि॥ स्व. तस्मुखायतुलसीरघुनाथगाथा भाषा
निबन्धमतिमंजुलमातनोति ७॥

सो० जेहिसुमिरतसिधिहोइगरानायक करिवरवदन
करौ अनुग्रह सोइ बुद्धिरासि शुभगुरासदन॥
मूक होइँ वाचाल पंगु चढ़ैं गिरि वर गहन ।
जासुकृपासुदयालइवौसकलकलिमलदहन॥
नीलसरोरुह श्यामतरुरा अरुरावारिजनयन।
करौसोममउरधाम सदा क्षीरसागर शयन ॥
कुन्दइन्दु सम देह उमारमरा करुरा अयन ।
जाहि दीन पर नेह करौ कृपा मर्दन मयन॥
वन्दौं गुरु पद कञ्ज कृपा सिन्धु नर रूप हरि ।
महामोहतमपुञ्जजासुवचनरविकरनिकर॥
वन्दौं गुरु पद पद्म परागा । सुरुचिसुबासससरस अनुरागा
अमियमूरिमय चूररा चारू। शमनसकलभवरुज परिवारू
सुकृतशम्भुतनविमलविभूती। मंजुलमंगल मोद प्रसूती
जनमनमंजुमुकुरमलहरनी।कियेतिलकगुरागरावशकरनी
श्रीगुरुपदनखमरिागरराज्योती।सुमिरतदिव्यदृष्टिहियहोती

दलन मोह तम सो सुप्रकासू। बड़े भाग उर आवहिं जासू
उघरहिं विमल विलोचन ही के। मिटहिं दोष दुख भव रजनी के
सूझहिं राम चरित मनि मानिक। गुप्त प्रकट जहँ जो जेहि खानिक
दो० यथा सुअंजन आँजि दृग साधक सिद्ध सुजान।
कौतुक देखहिं शैल बन भूतल भूरि निधान १
गुरु पद रज मृदु मंजुल अंजन। नयन अमिय दृग दोष विभंजन
तेहि करि विमल विवेक विलोचन। बरनौं राम चरित भव मोचन
बन्दौं प्रथम महीसुर चरणा। मोह जनित संशय सब हरणा
सुजन समाज सकल गुण खानी। करौं प्रणाम सप्रेम सुबानी
साधु चरित शुभ सरिस कपासू। निरस विशद गुणमय फल जासू
जो सहि दुख पर छिद्र दुरावा। वन्दनीय जेहि जग यश पावा
मुद मंगल मय सन्त समाजू। जो जग जंगम तीरथ राजू
राम भक्ति जहँ सुरसरि धारा। सरस्वति ब्रह्म विचार प्रचारा
विधि निषेध मय कलिमल हरणी। कर्म कथा रविनन्दनि वरणी
हरि हर कथा विराजति बेनी। सुनत सकल मुद मंगल देनी
बट विश्वास अचल निज धर्मा। तीरथ राज समाज सुकर्मा
सबहि सुलभ सब दिन सब देशा। सेवत सादर शमन कलेशा

अकथ अलौकिकतीरथराऊ। देइसद्य फलप्रकट प्रभाऊ

दो॰ सुनिसमुझहिंजनमुदितमनमज्जहिंअतिअनुराग।
लहहिंचारिफलअछततनुसाधुसमाजप्रयाग २

मज्जनफलदेखियततकाला। काकहोहिंपिकबकउमराला
सुनि आचरज करै जनि कोई। सतसंगतिमहिमानहिं गोई
बालमीकिनारदघटयोनी। निजनिजमुखनकही निजहोनी
जलचरथलचरनभचरनाना। जेजड़ चेतन जीव जहाना
मतिकीरतिगतिभूतिभलाई। जबजेंहियतनजहाँजेंहिपाई
सो जानब सतसंग प्रभाऊ। लोकहु वेद न आन उपाऊ
बिन सतसंग विवेक न होई। रामकृपाबिनसुलभ न सोई
सतसंगतिमुदमंगलमूला। सोइफलसिधिसबसाधनफूला
शठ सुधरहिं सतसंगति पाई। पारस परसि कुधातु सुहाई
विधिवशसुजनकुसंगतिपरहीं। फणिमणिसमनिजगुणाअनुसरहीं
विधिहरिहरकविकोविदवानी। कहतसाधुमहिमा सकुचानी
सोमोसनकहिजातनकैसे। साकवणिकमणिगणगुणजैसे

दो॰ वन्दौंसन्तसमानचित हित अनहितनहिं कोउ।
अंजलिगतसुभसुमनजिमिसमसुगन्धकरदोउ ३

मन्त सरल चित जगत हित जानि स्वभाव सनेह।
बाल विनय सुनि करि कृपा राम चरण रति देहु ४

बहुरि वन्दि खल गण सति भाये। जे बिनु काज दाहिन्ह बाँये
पर हित हानि लाभ जिन केरे। उजरे हर्ष विषाद बसेरे।
हरि हर यश राकेश राहु से। पर अकाज भट सहस बाहु से
जे पर दोष लखहिं सहस आखी। पर हित घृत जिन के मन माखी
तेज कृशानु रोष महिषेशा। अघ अवगुण धन धनिक धनेशा
उदय केतु सम हित सबही के। कुम्भकरण सम सोवत नीके
पर अकाज लगि तनु परिहरहीं। जिमि हिम उपल कृषी दलि गरहीं
बन्दौ खल जस शेष सरोषा। सहस वदन वरणौं पर दोषा
पुनि प्रणवौं पृथुराज समाना। पर अघ सुनै सहस दस काना
बहुरि शक्र सम बिनवौं तेही। सन्तत सुरा नीक हित जेही
वचन वज्र जेहि सदा पियारा। सहस नयन पर दोष निहारा

दो० उदासीन अरि मीत हित सुनत जरहिं खल रीति।
जानि पाणि युग जोरि करि विनती करौं सप्रीति ५

मैं अपने दिशि कीन्ह निहोरा। तिन निज ओर न लाउब भोरा
बायस पलिय अति अनुरागा। होहिं निरामिष कबहुं कि कागा

वन्दौं सन्त असज्जन चरणा। दुखप्रद उभय बीच कछु वरणा।
बिछुरत एक प्राण हरि लेहीं। मिलत एक दारुण दुख देहीं।
उपजहिं एक संग जल माहीं। जलज जोंक जिमि गुण बिलगाहीं।
सुधा सुरा सम साधु असाधू। जनक एक जग जलधि अगाधू।
भल अनभल निज निज करतूती। लहत सुयश अपलोक विभूती।
सुधा सुधाकर सुरसरि साधू। गरल अनल कलिमल सरि व्याधू।
गुण अवगुण जानत सब कोई। जो जेहि भाव नीक तेहि सोई।

दो० भले भलाई पै लहहिं लहहिं निचाई नीच।
सुधा सराहिय अमरता गरल सराहिय मीच। ६

खल गह अगुण साधु गुण गाहा। उभय अपार उदधि अवगाहा।
तेहि ते कछु गुण दोष बखाने। संग्रह त्याग न बिनु पहिचाने।
भल्य उ पोच सब विधि उपजाये। गनि गुण दोष वेद बिलगाये।
कहहिं वेद इतिहास पुराना। विधि प्रपञ्च गुण अवगुण साना।
दुख सुख पाप पुण्य दिन राती। साधु असाधु सुजाति कुजाती।
दानव देव ऊँच अरु नीचू। अमिय सजीवन माहुर मीचू।
माया ब्रह्म जीव जगदीशा। लच्छि अलच्छि रंक अवनीशा।
काशि मगह सुरसरि क्रमनाशा। मरु मालव महिदेव गवाशा।

स्वर्ग नरक अनुराग विरागा। निगमागम गुण दोष विभागा।

दो० जड़ चेतन गुण दोष मय विश्व कीन्ह करतार।
संत हंस गुण गहहिं पय परिहरि वारि विकार ७

अस विवेक जब देहिं विधाता। तब तजि दोष गुणहिं मन राता।
काल स्वभाव कर्म बरियाई। भल्य उ प्रकृति वरा चूक भलाई।
सो सुधारि हरि जन जिमि लेहीं। दलि दुख दोष विमल यश देहीं।
खल उ करहिं भल पाइ सुसंगू। मिटहिं न मलिन स्वभाव अभंगू।
लखि सुवेष जग वंचक जेऊ। वेष प्रताप पूजिय त तेऊ।
उघरहिं अन्त न होय निबाहू। कालनेमि जिमि रावण राहू।
किये कुवेष साधु सनमानू। जिमि जग जामवन्त हनुमानू।
हानि कुसंग सुसंगति लाहू। लोकहु वेद विदित सब काहू।
गगन चढ़ै रज पवन प्रसंगा। कीचहि मिलइ नीच जल संगा।
साधु असाधु सदन सुक सारी। सुमिरहिं राम देहिं गन गारी।
धूम कुसंगति कारिख होई। लिखिय पुराण मंजु मसि सोई।
सोइ जल अनल अनिल संघाता। होय जलद जग जीवन दाता।

दो० ग्रह भेषज जल पवन पट पाइ कुयोग सुयोग।
होहिं कुवस्तु सुवस्तु जग लखहिं सुलक्षण लोग ८

समप्रकाशतमपारदुहुनामभेदविधिकीन्ह।
शशिपोषकशोषकसमुझिजगयशअपयशदीन्ह ९
जड़ चेतनजगजीवजे सकलराममयजानि।
वन्दौंसबकेपदकमल सदाजोरियुगपानि १०
देवदनुज नर नाग खग प्रेत पितर गन्धर्व्व ।
वन्दौं किन्नर रजनिचर कृपा करहु अब सर्व्व ११

आकर चारि लाख चौरासी। जगतजीवनभजलथलवासी
सियारामभय सबजगजानी। करौं प्रणामजोरियुग पानी
जानि कृपा करि किंकरमोहू। सबमिलिकरहुछाँडिछलछोहू
निजबलबुधिभरोसमोहिंनाहीं। तातेविनय करौं सब पाहीं
करन चहौं रघुपति गुणगाहा। लघुमतिमोरिचरितअवगाहा
सूझ न एकउ अंग उपाऊ। मनमति रंग मनोरथ राऊ
मतिअतिनीचिऊँचिरुचिआछी। चहियअमियजगजुरै न छाछी
छमिहहिंसज्जन मोरि ढिठाई। सुनिहहिंबालवचनमन लाई
ज्यों बालककहतोतरिबाता। सुनहिंमुदितमनपितुअरुमाता
हँसिहहिं कूरकुटिलकुविचारी। जे पर दूषण भूषणधारी।
निजकवित्तकहिलागुननीका। सरसहोइअथवाअतिफीका

जे परभणिति सुनत हरषाहीं। ते वर पुरुष बहुत जग नाहीं
जग बहु नरसरिता सम भाई। जेनिज बाढ़ बढ़हिं जल पाई
सज्जन सुकृत सिन्धुसम कोई। देखि पूर बिधु बाढ़हिं जोई
दो० भाग छोट अभिलाष बड़ करउँ एक बिस्वास।
पैहहिं सुख सुनि सुजन जन खल करिहैं उपहास १२
खल परिहास होइ हित मोरा। काक कहहिं कलकण्ठ कठोरा
हंसहिं बक दादुर चातकही। हँसहिं मलिन खल बिमल बतकही
कबित रसिक न राम पद नेहू। तिन कहँ सुखद हास रस एहू
भाषा भणिति मोरि मति भोरी। हँसिबे जोग हँसे नहिं खोरी
प्रभु पद प्रीति न सामुझि नीकी। तिन्हहिं कथा सुनि लागिहि फीकी
हरि हर पद रति मति न कुतरकी। तिन्ह कहँ मधुर कथा रघुबर की
राम भगति भूषित जिय जानी। सुनिहहिं सुजन सराहि सुबानी
कबि न होउँ नहिं चतुर प्रबीना। सकल कला सब बिद्या हीना
आखर अरथ अलंकृति नाना। छन्द प्रबन्ध अनेक बिधाना
भाव भेद रस भेद अपारा। कबित दोष गुन बिबिध प्रकारा
कबित बिबेक एक नहिं मोरे। सत्य कहौं लिखि कागद कोरे
दो० भणिति मोरि सब गुन रहित बिस्व बिदित गुन एक।

सोविचारिसुनिहहिंसुमतिजिनकेप्रबलविवेक१३
इहिमहँरघुपतिनामउदारा। अतिपावनपुरागश्रुतिसारा
मंगलभवनअमंगलहारी। उमासहितजेहिजपत्रिपुरारी
भणितविचित्रसुकविकृतजोऊ। रामनामबिनसोहनसोऊ।
विधुवदनीसबभाँतिसँवारी। सोहनवसनबिनाबरनारी
सबगुणरहितकुकविकृतबानी। रामनामयशअंकितजानी
सादरकहहिंसुनहिंबुधताही। मधुकरसरिससन्तगुणग्राही
यदपिकवितगुणएकउनाहीं। रामप्रतापप्रकटइहिमाहीं
स्वइभरोसमोरेमनआवा। केहिनसुसंगबड़प्पनपावा
धूमउतजैसहजकरुआई। अगरप्रसंगसुगन्धबसाई
भणितभदेसवस्तुभलिवरणी। रामकथाजगमंगलकरणी
छं० मंगलकरणीकलिमलहरणीतुलसीकथारघुनाथकी।
गतिकूरकविताससितकीज्योंपरमपावनपाथकी॥
प्रभुसुयशसंगतिभणितभलिहोइहैसुजनमनभावनी।
भवअंगभूतिमसानकीसुमिरतसुहावनिपावनी॥
दो० प्रियलागहिअतिसबहिममभणितरामयशसंग।
दारुविचारकिकरइकोउवन्दियमलयप्रसंग १४

श्यामसुरभि पयविशद अति गुणद करहिं तेहि पान।
गिरा ग्राम सिय राम यश गावहिं सुनहिं सुजान १५
मणिमाणिक मुक्ता छवि जैसी। अहि गिरि गज शिर सोह न तैसी।
नृप किरीट तरुणी तनु पाई। लहहिं सकल शोभा अधिकाई।
तैसेहि सुकवि कवित बुध कहहीं। उपजहिं अनत अनत छवि लहहीं।
भक्ति हेतु विधि भवन विहाई। सुमिरत शारद आवति धाई।
राम चरित सर विनु अन्हवाये। सो श्रम जाइ न कोटि उपाये।
कवि कोविद अस हृदय विचारी। गावहिं हरि गुण कलिमल हारी।
कीन्हे प्राकृत जन गुण गाना। शिर धुनि गिरा लागि पछिताना।
हृदय सिन्धु मति सीप समाना। स्वाती शारद कहहिं सुजाना।
जो बरषै वर वारि विचारू। होहिं कवित मुक्ता मणि चारू।
दो॰ युक्ति बेधि पुनि पोहिये राम चरित वर ताग।
पहिरहिं सज्जन विमल उर शोभा अति अनुराग १६
जे जग मे कलि काल कराला। करतब वायस वेष मराला।
चलत कुपन्थ वेद मग छाँड़े। कपट कलेवर कलि मल भाँडे।
बञ्चक भक्त कहाइ राम के। किंकर कञ्चन कोह काम के।
तिन महँ प्रथम रेख जग मोरी। धिक धरम ध्वज धन्धक धोरी।

जो अपने अवसुधासबकहऊं। बाढ़ै कथा पार नहिं लहऊं
तातेमैं अति अलप बखाने। थोरेमहँ जानिहहिं सयाने
समुझिविविधविधिविनतीमोरी। कोउनकथासुनिदेइहिखोरी
एतेहु पर करिहहिं जे शंका। मोहितेअधिकतेजड़मतिरंका
कविनहोउँनहिं चतुर कहाऊं। मतिअनुरूपरामगुण गाऊं
कहँरघुपतिकेचरित अपारा। कहँमतिमोरि निरत संसारा।
जेहि मारुतगिरिमेरु उड़ाहीं। कहहु तूल केहि लेखे माहीं
समुझत अमितराम प्रभुताई। करत कथा मन अति कदराई
दो॰ शारद शेषमहेश विधि आगमनिगम पुरान।
नेतिनेतिकहिजासुगुणकरहिंनिरन्तरगान १७
सबजानत प्रभु प्रभुता सोई। तदपि कहे बिनु रहा न कोई
तहां वेद अस कारण राखा। भजनप्रभावभाँतिबहुभाखा
एक अनीह अरूप अनामा। अज सच्चिदानन्द पर धामा
व्यापक विश्वरूप भगवाना। तेहँधरिदेह चरित कृत नाना
सो केवलभक्तन हित लागी। परम कृपालुप्रणत अनुरागी
जेहिजन परममता अरु छोहू। तेहिकरुणाकरिकीन्हनकोहू
गये बहोरि गरीब निवाजू। सरल सबलसाहिब रघुराजू

बुधवरणहिंहरियशअसजानी। करहिंपुनीतसुफलनिजबानी
तेहिबलमैंरघुपतिगुणगाथा। कहिहौं नाइ राम पद माथा
सुनिनिजमतिमहरिकीरति गाई। तेहिमगुचलतसुगममोहिंभाई
दो० अति अपारजेसरित वर जो नृप सेतु कराहिं।
चढ़िपिपीलिकापरमलघुबिनश्रमपारहिजाहिं १८
यहिप्रकारबलमनहिंदृढ़ाई। करिहौं रघुपति कथासुहाई
व्यास आदिकविपुंगवनाना। जिनसादरहरिचरितबखाना
चरण कमल बन्दौं सब केरे। पुरवहु सकल मनोरथ मेरे।
कलिकेकविनकरौं परणामा। जिनवरणेरघुपतिगुणग्रामा
जे प्राकृत कविपरम सयाने। भाषाजिनहरिचरित बखाने
भयेजे अहहिंजे होइहैं आगे। प्रणवौंसबहिंकपटछलत्यागे
होउ प्रसन्न देहु वरदानू। साधुसमाजभणिति सनमानू
जोप्रबन्धबुधनहिंआदरहीं। सोश्रमबादिबालकविकरहीं
कीरतिभणितभूतिभलिसोई। सुरसरिसमसबकहँहित होई
रामसुकीरतिभणित भदेशा। असमञ्जस असमोहिंअँदेशा
तुम्हरी कृपासुलभ सोउ मोरे। सियनि सुहावनि पाट पटोरे
करहु अनुग्रह असजिय जानी। बिमलयशहिंअनुहरइ सुबानी

दो० सरलकवित कीरति विमल सोइ आदरहिं सुजान
सहज बयर बिसराइ रिपु जो सुनि करहिं बखान॥
सोनहोइ बिधु विमल मति मोहिं मति बल अति थोर
करुइ कृपा हरि यश कहौं पुनि पुनि करउँ निहोर॥
कवि कोविद रघुवर चरित मानस मंजु मराल।
बालविनय सुनि सुरुचि लखि मो पर होहु कृपाल १५

सो० वन्दौं मुनि पद कञ्ज रामायण जिन निर्मयो।
सरवर सकोमल मञ्जु दोष रहित दूषण सहित॥
वन्दौं चारिउ वेद भव वारिधि बोहित सरिस।
जिनहिं न सपनेहु खेद वरणात रघुपति विशद यश
वन्दौं विधि पद रेणु भव सागर जिन कीन्ह यह।
सन्त सुधा शशि धेनु प्रकटे खल विष वारुणी २

दो० बिबुध विप्र बुध गुरु चरण वन्दि कहौं कर जोर।
होइ प्रसन्न पुरवहु सकल मञ्जु मनोरथ मोर २०

पुनि वन्दौं शारद सुरसरिता। युगुल पुनीत मनोहर चरिता
मज्जन पान पाप हर एका। कहत सुनत इक हर अविवेका
गुरु पितु मातु महेश भवानी। प्रणवौं दीनबन्धु दिन दानी

सेवकस्वामिसखा सियपीके। हित निरुपधि सब विधि तुलसीके
कलिविलोकि जग हित हर गिरिजा। साबर मंत्र जाल जिन सिरजा
अनमिल आखर अरथ न जापू। प्रकट प्रभाव महेश प्रतापू
सो महेश मो पर अनुकूला। करौं कथा मुद मंगल मूला
सुमिरि सिवा सिव पाइ पसाऊ। बरनौं राम चरित चित चाऊ
भनिति मोरि सिव कृपा बिभाती। ससि समाज मिलि मनहुँ सुराती
जे यह कथा सनेह समेता। कहिहहिं सुनिहहिं समुझि सचेता
होइहहिं राम चरन अनुरागी। कलिमल रहित सुमंगल भागी

दो॰ सपनेहुँ साँचेहु मोहि पर जो हर गौरि पसाउ ।
तौ फुर होउ जो कहउँ सब भाषा भनिति प्रभाउ २१

बन्दौं अवध पुरी अति पावनि। सरजू सरि कलि कलुष नसावनि
प्रनवौं पुर नर नारि बहोरी। ममता जिन पर प्रभुहि न थोरी
सिय निन्दक अघ ओघ नसाये। लोक बिसोक बनाइ बसाये
बन्दौं कौसल्या दिसि प्राची। कीरति जासु सकल जग माची
प्रगटेउ जहँ रघुपति ससि चारू। बिस्व सुखद खल कमल तुषारू
दसरथ राउ सहित सब रानी। सुकृत सुमंगल मूरति खानी
करौं प्रनाम करम मन बानी। करहु कृपा सुत सेवक जानी

जिनहिंविरचिबड़भयेविधाता। महिमाअवधिरामपितुमाता
सो० वन्दौंअवधभुआलसत्यप्रेमजेहि राम पद ।
बिछुरतदीनदयालप्रियतनुतृणाइवपरिहरेउ ३
प्रणावौंपरिजनसहितविदेहू। जाहि राम पद गूढ़ सनेहू
योगभोग महँ राखेउ गोई। रामविलोकत प्रकटेउ सोई
प्रणावौंप्रथमभरतकेचरणा। जासुनेमव्रतजाइन वरणा।
रामचरणा पंकज मन जासू। लुब्धमधुपइव तजै न पासू
वन्दौंलक्ष्मणापदजल जाता। शीतल सुभगभक्तसुखदाता
रघुपतिकीरतिविमलपताका। दण्डसमानभयोयशजाका।
शेषसहस्रशीशजगकारन। जोअवतरेउ भूमिभयटारन
सदा सो सानुकूलरहु मोपर। कृपासिन्धुसौमित्रिगुणाकर
रिपुसूदन पदकमल नमामी। शूरसुशील भरत अनुगामी
महाबीर विनऊं हनुमाना। रामजासु यश आपु बखाना
सो० वन्दौंपवनकुमारखलबनपावक ज्ञान घन।
जासु हृदय आगारबसहिंरामशरचाप धर ४
कपिपतिऋक्षनिशाचरराजा। अंगदादि जे कीश समाजा
वन्दौंसब के चरणा सुहाये । अधम शरीररामजिन पाये

रघुपति चरणा उपासक जेते। खग मृग सुर नर असुर समेते
बन्दौं पद सरोज सब केरे। जे बिनु काम राम के चेरे
सुकसनकादिआदिमुनिनारद। जेमुनिवर विज्ञानविशारद
प्रणऊंसबहिधरणिधरिशीशा। करहु कृपा जनजानिमुनीशा
जनकसुताजगजननिजानकी। अतिशयप्रियकरुणानिधानकी
ताके युग पद कमल मनाऊं। जासु कृपानिरमल मति पाऊं
पुनिमनवचनकरमरघुनायक। चरणाकमलवन्दौंसबलायक
राजिव नयन धरे धनु शायक। भक्तविपतिभंजनसुखदायक

दो० गिराअर्थजलबीचिसम कहियतभिन्ननभिन्न।
बन्दौंसीता राम पदजिनहिंपरमप्रियखिन्न २२

बन्दौं राम नाम रघुवर के। हेतु कृशानु भानु हिमकर के
विधिहरिहरमयवेदप्रानसे। अगुणाअनूपमगुणानिधानसे
महामंत्र जोइ जपत महेशू। काशी मुक्ति हेतु उपदेशू
महिमा जासु जान गणराऊ। प्रथम पूजियत नाम प्रभाऊ
जान आदिकवि नाम प्रतापू। भयउ शुद्ध करि उलटा जापू
सहसनामसमसुनिशिववानी। जपिजेबीजशिवसंग भवानी।
हरषे हेतु हेरि हर ही को। किय भूषण तिय भूषण ती को

नाम प्रभाव जान शिव नीके। कालकूट फल दीन्ह अमीके
दो॰ वरषा ऋतु रघुपति भगति तुलसी शालि सुदास।
रामनाम वर वरणा युग सावन भादौं मास २३
आखर मधुर मनोहर दोऊ। वरणविलोचन जन जिय दोऊ
सुमिरत सुलभ सुखद सब काहू। लोक लाह परलोक निबाहू
कहत सुनत सुमिरत सुठि नीके। रामलषण सम प्रिय तुलसीके
वरणात वरणा प्रीति बिलगाती। ब्रह्म जीव सम सहज सँघाती
नर नारायण सरिस सुभ्राता। जग पालक विशेष जन त्राता
भक्ति सुतिय कल करन विभूषण। जग हित हेतु विमल विधु पूषण
स्वादु तोष सम सुगति सुधा के। कमठ शेष सम धर वसुधा के
जन मन मंजु कञ्ज मधुकर से। जीह यशोमति हरि हलधर से
दो॰ एक छत्र इक मुकुट मणि सब वरणान पर जोउ।
तुलसी रघुवर नाम के वरण विराजत दोउ २४
समुझत सरिस नाम अरु नामी। प्रीति परस्पर प्रभु अनुगामी
नाम रूप दोउ ईश उपाधी। अकथ अनादि सुसामुझि साधी
को बड़ छोट कहत अपराधू। सुनि गुण भेद समुझि हैं साधू
देखिय रूप नाम आधीना। रूप ज्ञान नहिं नाम बिहीना।

रूप विशेष नाम बिनु जाने। करतलगत न परहिं पहिचाने
सुमिरिय नाम रूप बिनु देखे। आवत हृदय सनेह बिशेखे
नाम रूप गति अकथ कहानी। समुझत सुखद न परत बखानी
अगुण सगुण बिच नाम सुसाखी। उभय प्रबोधक चतुर दुभाखी

दो॰ राम नाम मणि दीप धरु जीह देहरी द्वार ।
तुलसी भीतर बाहिरौ जो चाहसि उजियार २५

नाम जीह जपि जागहिं योगी। विरति विचार प्रपञ्च वियोगी
ब्रह्म सुखहिं अनुभवहिं अनूपा। अकथ अनामय नाम न रूपा
जाना चहहिं गूढ़ गति जेऊ। नाम जीह जपि जानहिं तेऊ
साधक नाम जपहिं लय लाये। होहिं सिद्ध अणिमादिक पाये
जपहिं नाम जन आरत भारी। मिटहिं कुसंकट होहिं सुखारी
राम भक्त जग चारि प्रकारा। सुकृती चारिउ अनघ उदारा
चहुँ चतुर कहँ नाम अधारा। ज्ञानी प्रभुहि बिशेष पियारा
चहुँ युग चहुँ श्रुति नाम प्रभाऊ। कलि बिशेष नहिं आन उपाऊ

दो॰ सकल कामना हीन जे राम भक्ति रस लीन।
नाम सुप्रेम पियूष ह्रद तिनहुँ किये मन मीन २६

अगुण सगुण दोउ ब्रह्म सरूपा। अकथ अगाध अनादि अनूपा

मोरेमतबड़नामदुहू ते। कियजेहिंजुगनिजबशनिजबूते
प्रौढ़सुजनजनजानहिंजनकी। कहुँप्रतीतिप्रीतिरुचिमनकी
एक दारुगत देखिय एकू। पावकयुग सम ब्रह्म विवेकू
उभयअगमयुगसुगमनामते। कहुँनाम बड़ ब्रह्म राम ते
व्यापकएकब्रह्म अविनाशी। सतचेतन घन आनँद राशी
असप्रभुहृदयअछतअविकारी।सकलजीवजगदीनदुखारी
नामनिरूपणानामयतनते। सोउप्रकटतजिमिमोलरतनसे
दो॰ निर्गुण ते इहि भाँति बड़ नाम प्रभाव अपार।
कहउँनामबड़राम ते निज विचार अनुसार २७
रामभक्तहित नर तनु धारी। सहिसंकट कियसाधुसुखारी
नामसप्रेमजपत अनयासा। भक्तहोहिं मुद मंगल वासा।
रामएक तापस तिय तारी। नामकोटिखलकुमतिसुधारी
ऋषिहितरामसुकेतुसुताकी।सहितसेनसुतकीन्हबिबाकी
सहितदोषदुखदासदुराशा। दलइनामजिमिरविनिशिनाशा
भञ्जेउराम आपु भव चापू। भवभय भञ्जन नाम प्रतापू
दण्डकबनप्रभुकीन्हसुहावन।जनमनअमितनामकियपावन
निशिचरनिकरदलेउरघुनंदन।नामसकलकलिकलुषनिकंदन

दो० शबरी गीध सुसेवकनि सुगति दीन्ह रघुनाथ।
नाम उधारे अमित खल वेद विदित गुणगाथ २८

राम सुकण्ठ विभीषण दोऊ। राखे शरण जान सब कोऊ
नाम अनेक ग़रीब निवाजे॥ लोक वेद वर विरद विराजे।
राम भालु कपि कटक बटोरा। सेतु हेतु श्रम कीन्ह न थोरा
नाम लेत भव सिन्धु सुखाहीं। करहु विचार सुजन मन माहीं
राम सकुल रण रावण मारा। सीय सहित निज पुर पगु धारा
राजा राम अवध रजधानी। गावत गुणा सुर मुनि वर बानी
सेवक सुमिरत नाम सप्रीती। बिनु श्रम प्रबल मोह दल जीती
फिरत सनेह मगन सुख अपने। नाम प्रसाद शोच नहिं सपने

दो० ब्रह्म राम ते नाम बड़ वरदायक वरदानि ।
रामचरित शतकोटि महँ लिय महेश जियजानि २९

नाम प्रसाद शम्भु अविनाशी। साज अमंगल मंगल राशी
शुक सनकादि सिद्ध मुनि योगी। नाम प्रसाद ब्रह्म सुख भोगी
नारद जानेउ नाम प्रताप्। जग प्रिय हरि हर हरि प्रिय आप्
नाम जपत प्रभु कीन्ह प्रसाद्। भक्त शिरोमणि भे प्रह्लाद्।
ध्रुव सगलानि जपेउ हरि नाम्। पायउ अचल अनूपम ठाम्।

सुमिरि पवनसुत पावननामू। अपने वश करि राखेउ रामू
अपर अजामिल गज गनिकाऊ। भये मुक्त हरि नाम प्रभाऊ
कहउँ कहाँ लगि नाम बड़ाई। रामन सकहिं नाम गुन गाई
दो०- राम नाम को कल्पतरु कलि कल्यान निवास।
जो सुमिरत भये भाँगते तुलसी तुलसीदास ३०
चहुँ युग तीनि काल तिहुँ लोका। भये नाम जपि जीव बिसोका
वेद पुरान सन्त मत येहू। सकल सुकृत फल राम सनेहू।
ध्यान प्रथम युग मख युग दूजे। द्वापर परितोषत प्रभु पूजे।
कलि केवल मल मूल मलीना। पाप पयोनिधि जन मन मीना
नाम काम तरु काल कराला। सुमिरत शमन सकल जंजाला
राम नाम कलि अभिमत दाता। हित परलोक लोक पितु माता
नहिं कलि कर्म न भक्ति विवेकू। राम नाम अवलम्बन एकू।
कालनेमि कलि कपट निधानू। नाम सुमति समरथ हनुमानू
दो० राम नाम नर केसरी कनककशिपु कलिकाल।
जापक जन प्रहलाद जिमि पालहिं दलि सुरशाल २४
भायँ कुभायँ अनख आलसहूँ। नाम जपत मंगल दिसि दसहूँ
सुमिरि सो नाम राम गुन गाथा। करों नाइ रघुनाथहिं माथा

मोरि सुधारहिं सोसब भाँती। जासु कृपा नहिं कृपा अघाती
रामसुस्वामि कुसेवक मोसे। निजदिशि देखदयानिधि पोसे
लोकहु वेद सुसाहब रीती। विनय सुनत पहिचानत प्रीती
गनी गरीब ग्राम नर नागर। पंडित मूढ़ मलीन उजागर
सुकवि कुकवि निजमति अनुहारी। नृपहिं सराहत सब नर नारी
साधु सुजान सुशील नृपाला। ईश अंश भव परम कृपाला
सुनि सनमानहिं सबहिं सुबानी। भनिति भक्ति मति गति पहिचानी
यह प्राकृत महिपाल सुभाऊ। जान शिरोमणि कोशलराऊ
रीझत राम सनेह निसोते। को जग मन्द मलिन मति मो ते।

दो० राउ सेवक की प्रीति रुचि रखिहहिं राम कृपालु।
उपलकिये जलयान जेहि सचिव सुमति कपि भालु ३२
होंहु कहावत सब कहत राम सहत उपहास।
साहब सीतानाथ से सेवक तुलसीदास ३३

अति बड़ि मोरि ढिठाई खोरी। सुनि अघ नरकहु नाक सिकोरी
समुझि सहमि मोहिं अपडर अपने। सो सुधि राम कीन्ह नहिं सपने
सुनि अवलोकि सुचित चख चाही। भक्ति मोरि मति स्वामि सराही
कहत नसाइ होइ अति नीकी। रीझत राम जान जन जी की

रहत न प्रभु चित चूक किये की। करत सुरति सौ बार हिये की।
जेहि अघ बधेउ व्याध जिमि बाली। फिर सुकंठ सोइ कीन्ह कुचाली।
सोइ करतूति बिभीषण केरी। सपनेहुँ सो न राम हिय हेरी।
ते भरतहिं भेंटत सनमाने। राज सभा रघुबीर बखाने।

दो० प्रभु तरु तर कपि डार पर ते किय आपु समान।
तुलसी कहूँ न राम से साहब सील निधान ३४

राम निकाई रावरी है सबही को नीक ।
जो यह साची है सदा तौ नीको तुलसीक ३५

इहि बिधि निज गुन दोष कहि सबहिं बहुरि सिर नाइ।
बरणौं रघुबर बिशद यश सुनि कलि कलुष नशाइ ३६

याज्ञवल्क्य जो कथा सुहाई। भरद्वाज मुनिवरहिं सुनाई।
कहि हौं सोइ सम्वाद बखानी। सुनहु सकल सज्जन सुख मानी।
शम्भु कीन्ह यह चरित सुहावा। बहुरि कृपा करि उमहिं सुनावा।
सोशिवकाकभुशुण्डहि दीन्हा। राम भक्ति अधिकारी चीन्हा।
तेहि सन याज्ञवल्क्य पुनि पावा। तिन पुनि भरद्वाज प्रति गावा।
ते श्रोता वक्ता सम शीला । सम दरशी जानहिं हरि लीला।
जानहिं तीन काल निज ज्ञाना। करतल गत आमलक समाना।

औरोंजे हरिभक्त सुजाना। कहहिंसुनहिंसमुझहिंविधिनाना
दो० मैं पुनि निज गुरु सन सुनी कथा सु सूकर खेत।
समुझी नहीं तस बालपन तब अति रहेउँ अचेत ३७
श्रोता वक्ता ज्ञान निधि कथा राम की गूढ़।
किमि समुझै यह जीव जड़ कलिमल ग्रसित विमूढ़ ३८
तदपि कही गुरु बारहिं बारा। समुझि परी कछु मति अनुसारा
भाषा बन्ध करब मैं सोई। मोरे मन प्रबोध जेहि होई
जस कछु बुधि विवेक बल मोरे। तस कहिहौं हिय हरि के प्रेरे
निज सन्देह मोह भ्रम हरनी। करौं कथा भव सरिता तरनी
बुधि विश्राम सकल जन रञ्जनि। राम कथा कलि कलुष विभञ्जनि
राम कथा कलि पन्नग भरनी। पुनि विवेक पावक कहँ अरनी
राम कथा कलि कामद गाई। सुजन सजीवन मूरि सुहाई।
सोइ वसुधा तल सुधा तरंगिनि। भव भंजनि भ्रम भेक भुअंगिनि
असुर सेन सम नरक निकन्दनि। साधु विबुध कुल हित गिरिनंदनि
सन्त समाज पयोधि रमासी। विश्व भार धर अचल समासी।
यम गन मुँह मसि जग जमुना सी। जीवन मुक्ति हेतु जनु कासी
रामहिं प्रिय पावन तुलसी सी। तुलसि दास हित हिय हुलसी सी

शिवप्रियमेकल शैलसुतासी। सकलसिद्धिप्रदसम्पतिरासी
सद्गुणासुरगणअम्बअदितिसी। रघुवरभक्तिप्रेमपरिमितिसी

दो० राम कथा मन्दाकिनी चित्रकूट चित चारु।
तुलसीसुभगसनेहबनसियरघुवीरविहारु ३५

राम चरित चिन्तामणि चारू। सन्तसुगतितियसुभग शृंगारू
जगमंगलगुणग्राम राम के। दानमुक्ति धन धर्म्म धाम के
सद्गुण ज्ञान विराग योग के। विबुधवैद्य भव भीम रोग के
जननिजनक सिय राम प्रेम के। बीजसकल व्रत धर्म्म नेम के
शमन पाप सन्ताप शोक के। प्रिय पालक परलोक लोक के
सचिवसुभट भूपति विचार के। कुम्भजलोभउदधि अपार के
कामकोहकलिमलकरिगन के। केहरि शावक जनमन बन के।
अतिथिपूज्यप्रियतमपुरारि के। कामद धन दारिद दवारि के
मंत्रमहा मणि विषयव्याल के। मेटत कठिन कुअंक भाल के
हरण मोह तम दिनकर कर से। सेवक शालिपाल जलधर से
अभिमत दानि देवतरु वर से। सेवकसुलभसुखदहरि हर से
सुकविशरदनभमनउडुगनसे। रामभक्तजनजीवन धन से।
सकलसुकृतफलभूरिभोगसे। जगहितनिरुपधिसाधुलोगसे

सेवक मन मानस मराल से। पावन गंग तरंग माल से

दो० कुपथकुतर्ककुचालिकलिकपटदम्भपाखण्ड।
दहनराम गुणग्रामइमिईंधनअनलप्रचण्ड ४०

रामचरित राकेश कर सरिस सुखद सब काहु।
सज्जनकुमुद चकोरचितहित विशेषय बड़ लाहु ४१

कीन्हिप्रश्नजेहिभाँतिभवानी। जेहिविधिशंकरकहाबखानी
सो सब हेतु कहब मैं गाई। कथा प्रबन्ध विचित्र बनाई
जिनयहकथासुनीनहिं होई। जनिआश्चर्य्यकरैं सुनि सोई
कथाअलौकिकसुनहिंजेज्ञानी। नहिंआश्चर्यकरहिंअसजानी
रामकथाकीमितिजग नाहीं। असप्रतीतितिनकेमन माहीं
नाना भाँति राम अवतारा। रामायण शत कोटि अपारा
कल्प भेद हरि चरित सुहाये। भाँति अनेक मुनीशन गाये
करियन संशय असउर आनी। सुनियकथासादर रति मानी

दो० राम अनन्त अनन्त गुणा अमित कथा विस्तार।
सुनिआश्चर्य्यनमानिहहिंजिनकेविमलविचार ४२

इहि बिधिसब संशयकरि दूरी। शिरधरि गुरु पद पंकज धूरी
पुनिसबही विनवौं कर जोरी। करतकथाजेहि लागु न खोरी

सादर शिवहिं नाइ अब माथा। बरनौं बिसद राम गुन गाथा
संवत सोरह सौ इकतीसा। करौं कथा हरि पद धरि सीसा
नवमी भौमवार मधु मासा। अवधपुरी यह चरित प्रकासा
जेहि दिन राम जन्म श्रुति गावहिं। तीरथ सकल तहाँ चलि आवहिं
असुर नाग खग नर मुनि देवा। आय करहिं रघुनायक सेवा
जन्म महोत्सव रचहिं सुजाना। करहिं राम कल कीरति गाना
दो० मज्जहिं सज्जन बृन्द बहु पावन सरयू नीर ।
जपहिं राम धरि ध्यान उर सुन्दर श्याम शरीर ४३
दरश परश मज्जन अरु पाना। हरै पाप कह बेद पुराना।
नदी पुनीत अमित महिमा अति। कहि न सकै शारदा बिमल मति
राम धाम दा पुरी सुहावनि। लोक समस्त बिदित जग पावनि
चारि खानि जग जीव अपारा। अवध तजे तनु नहिं संसारा
सब बिधि पुरी मनोहर जानी। सकल सिद्धि प्रद मंगल खानी
बिमल कथा कर कीन्ह अरंभा। सुनत नसाहिं काम मद दंभा
रामचरित मानस यह नामा। सुनत अवरा पाइय बिश्रामा
मन करि बिषय अनल बन जरहीं। होइँ सुखी जे इहि सर परहीं
रामचरित मानस मुनि भावन। बिरचेउ शम्भु सुहावन पावन

त्रिविधदोषदुखदारिददावन। कलिकुचालिकलिकलुषनशावन
रचि महेश निज मानस राखा। पाइ सुसमय शिवा सन भाखा
तातें राम चरित मानस वर। धरेउ नाम हिय हेरि हरषि हर
कहौं कथा सोइ सुखद सुहाई। सादर सुनहु सुजन मन लाई

दो॰ जस मानस जेहि विधि भयो जग प्रचार जेहि हेतु।
अब सोइ कहौं प्रसंग सब सुमिरि उमा वृषकेतु ४४

शम्भु प्रसाद सुमति हिय हुलसी। रामचरित मानस कवि तुलसी
करउँ मनोहर मति अनुहारी। सुजन सुचित सुनि लेहु सुधारी
सुमति भूमि थल हृदय अगाधू। वेद पुराण उदधि घन साधू
बरषहिं राम सुयश वर वारी। मधुर मनोहर मंगलकारी
लीला सगुण जो कहहिं बखानी। सोइ स्वच्छता करै मल हानी
प्रेम भक्ति जो वरणि न जाई। सोइ मधुरता सुशीतलताई
सो जल सुकृत शालि हित होई। राम भक्त जग जीवन सोई
मेधा महि गत सो जल पावन। सकिलि श्रवण मग चलेउ सुहावन
भरेउ सुमानस सुथल थिराना। सुखद शीत रुचि चारु चिराना

दो॰ सुठि सुन्दर संवाद वर विरचेउ बुद्धि विचारि।
तेइ यहि पावन सुभग सर घाट मनोहर चारि ४५

सप्तप्रबन्ध सुभग सोपाना। ज्ञान नयन निरखत मनमाना
रघुपतिमहिमा अगुण अबाधा। बरनब सोइ बर बारि अगाधा
रामसीयशसलिलसुधासम। उपमाबीचिविलासमनोरम
पुरइनि सघन चारु चौपाई। युक्तिमञ्जुमंजुलमणिसोई
छन्द सोरठा सुन्दर दोहा। सोइ बहुरंग कमल कुल सोहा
अर्थ अनूप सुभाव सुभासा। सोइ पराग मकरन्द सुबासा
सुकृतपुञ्जमंजुल अलिमाला। ज्ञान बिराग बिचार मराला
धुनि अवरेव कबित गुन जाती। मीन मनोहर ते बहु भाँती।
अर्थ धर्म कामादिक चारी। कहब ज्ञान बिज्ञान बिचारी
नव रस जप तप योग बिरागा। ते सब जलचर चारु तड़ागा
सुकृती साधु नाम गुन गाना। ते बिचित्र जल बिहँग समाना
सन्त सभा चहुँ दिसि अँबराई। श्रद्धा ऋतु बसन्त सम गाई
भक्ति निरूपण बिबिध बिधाना। क्षमा दया द्रुम लता बिताना
संयम नियम फूल फल नाना। हरि पद रति रस बेद बखाना
औरौ कथा अनेक प्रसंगा। तेइ सुक पिक बहु बरनी बिहंगा

दो॰ पुहुपबाटिका बागबन सुखसुबिहंग बिहारु।
माली सुमन सनेह जल सींचत लोचन चारु ४६

जे गावहिं यह चरित सँभारे। तेइ एहि ताल चतुर रखवारे
सदा सुनहिं सादर नर नारी। तेइ सुरवर मानस अधिकारी
अति खल जे बिषयी बग कागा। एहि सर निकट न जाहिं अभागा
सम्बुक भेक सिवार समाना। इहाँ न बिषय कथा रस नाना
तेहि कारण आवत हिय हारे। कामी काक बलाक बिचारे
आवत एहि सर अति कठिनाई। राम कृपा बिनु आइ न जाई
कठिन कुसंग कुपन्थ कराला। तिन के बचन ब्याघ्र हरि ब्याला
गृह काज नाना जंजाला। तेइ अति दुर्गम शैल बिशाला
बन बहु बिषय मोह मद माना। नदी कुतर्क भयंकर नाना
दो० जे श्रद्धा सम्बल रहित नहिं सन्तन कर साथ।
तिन कहँ मानस अगम अति जिन्हहिं न प्रिय रघुनाथ ४७
जो कदि कष्ट जाइ पुनि कोई। जातहि नींद जुड़ाई होई।
जड़ता जाड़ बिषम उर लागा। गयहु न मज्जन पाव अभागा
करि न जाय सर मज्जन पाना। फिरि आवै समेत अभिमाना
जो बहोरि कोउ पूँछन आवा। सर निन्दा करि ताहि सुनावा
सकल बिघ्न ब्यापहिं नहिं तेही। राम कृपा करि चितवहिं जेही
सोइ सादर सर मज्जन करहीं। महा घोर त्रय ताप न जरहीं

ते नर यह सर तजहिं न काऊ। जिन के राम चरित भल भाऊ
जो नहाइ चह इहि सर भाई। सो सतसंग करौ मन लाई
अस मानस मानस चख चाही। भइ कबि बुद्धि बिमल अवगाही
बढ़्यो हृदय आनन्द उछाहू। उमगेउ प्रेम प्रमोद प्रबाहू
चली सुभग कबिता सरिता सो। राम बिमल यस जल भरिता सो
सरयू नाम सुमंगल मूला॥ लोक बेद मत मंजुल कूला
नदी पुनीत सुमानस नन्दिनि। कलिमल तट तरु मूल निकंदिनि
दो॰ श्रोता त्रिबिध समाज पुर ग्राम नगर दुहुँ कूल।
सन्त सभा अनुपम अवध सकल सुमंगल मूल ४८
राम भक्ति सुरसरितहिं जाई। मिली सुकीरति सरयु सुहाई।
सानुज राम समर जस पावन। मिलेउ महानद सोन सुहावन
जुग बिच भक्ति देवधुनि धारा। सोहति सहित सुबिरति बिचारा
त्रिबिध ताप त्रासक तिमुहानी। राम स्वरूप सिन्धु समुहानी
मानस मूल मिली सुरसरिहीं। सुनत सुजन मन पावन करहीं
बिच बिच कथा बिचित्र बिभागा। जनु सरि तीर तीर बन बागा
उमा महेश बिबाह बराती। ते जलचर अगनित बहु भाँती
रघुबर जन्म अनन्द बधाई। भँवर तरंग मनोहरताई

दो॰ बाल चरित चहुँ बन्धु के बनज बिपुल बहु रंग।
नृपरानी परिजन सुकृत मधुकर बारि बिहंग ४९

सीय स्वयम्बर कथा सुहाई। सरित सुहावनि सो छबि छाई
नदी नाव बहु प्रश्न अनेका। केवट कुशल उतर सबिवेका
पुनि प्रभु कथन परस्पर होई। पथिक समाज सोह सरि सोई
घोर धार भृगुनाथ रिसानी। घाट सुबन्ध राम बर बानी
सानुज राम बिवाह उछाहू। सो शुभ उमग सुखद सब काहू
कहत सुनत हरषहिं पुलकाहीं। ते सुकृती जन मुदित नहाहीं
राम तिलक हित मंगल साजा। पर्व योग जनु जुरेउ समाजा
काई कुमति केकयी केरी। परी जासु फल बिपति घनेरी

दो॰ समन अमित उत्पात सब भरत चरित जपयाग।
कलि अघ खल अवगुन कथन ते जल मल बक काग॥ ५०

कीरति सरित छहूं रितु रूरी। समय सुहावनि पावनि भूरी
हिम हिम शैल सुता शिव ब्याहू। शिशिर सुखद प्रभु जन्म उछाहू
बरषा बिराम राम बिवाह समाजू। सो मुद मंगल मय रितुराजू
ग्रीषम दुसह राम बन गवनू। पन्थ कथा खर आतप पवनू
बर्षा घोर निशाचर रारी। सुर कुल शालि सुमंगल कारी

रामराज सुख विनय बड़ाई। विशदसुखदसोइशरदसुहाई
सतीशिरोमणिसियगुणगाथा। सोइगुणअमलअनूपमपाथा
भरत स्वभाव सुशीतलताई। सदा एकरस वरणि न जाई
दो॰ अवलोकनिबोलनिमिलनिप्रीतिपरस्परहास।
भायपभलिचहुँबन्धुकीजलमाधुरीसुवास ५१
आरति विनय दीनता मोरी। लघुता ललित सुवारि नखोरी
अद्भुतसलिलसुनतगुणकारी। आशापियास मनो मलहारी
रामसुप्रेमहिं पोषत पानी। हरतसकलकलिकलुष गलानी
भव श्रम शोषक तोषक तोषा। शमनदुरितदुख दारिद दोषा
कामकोहमद मोहनशावन। विमलविवेकविरागबढ़ावन
सादर सज्जन पान किये ते। मिटहिं पाप परिताप हिये ते
जिनयहवारि न मानस धोये। ते कायर कलिकाल बिगोये
तृषितनिरखिरविकरभवबारी। फिरहिंमृगा जिमिजीवदुखारी
दो॰ मतिअनुहारिसुवारिगुणगणमनअन्हवाइ।
सुमिरिभवानीशंकरहिंकहकविकथासुहाइ ५२
भरद्वाजजिमिप्रश्नकियायाज्ञवल्क्यमुनिपाय।
प्रथम मुख्यसंवादसोइकहिहौं हेतुबुझाय ५३

अब रघुपति पद पंकरुह हिय धरि पाय प्रसाद।
कहौं युगल मुनि वर्य्य कर मिलन सुभग संवाद ५४

भरद्वाज मुनि बसहिं प्रयागा। जिनहिं राम पद अति अनुरागा
तापस शम दम दया निधाना। परमारथ पथ परम सुजाना
माघ मकर गत रवि जब होई। तीरथ पतिहिं आव सब कोई
देव दनुज किन्नर नर श्रेणी। सादर मज्जहिं सकल त्रिवेणी
पूजहिं माधव पद जलजाता। परसि अक्षयवट हर्षित गाता
भरद्वाज आश्रम अति पावन। परम रम्य मुनिवर मन भावन
तहाँ होय मुनि ऋषय समाजा। जाहिं जे मज्जन तीरथ राजा
मज्जहिं प्रात समेत उछाहा। कहहिं परस्पर हरि गुन गाहा

दो॰ ब्रह्म निरूपण धर्म्म विधि बरणहिं तत्त्व विभाग।
कहहिं भक्ति भगवन्त की संयुत ज्ञान विराग ५५

इहि प्रकार भरि मकर नहाहीं। पुनि सब निज निज आश्रम जाहीं
प्रति संवत अस होइ अनन्दा। मकर मज्जि गवनहिं मुनि वृन्दा
एक वार भरि मकर नहाये। सब मुनीश आश्रमनि सिधाये
याज्ञवल्क्य मुनि परम विवेकी। भरद्वाज राखेउ पद टेकी
सादर चरण सरोज पखारे। अति पुनीत आसन बैठारे

करिपूजासुनिसुयशबरबानी। बोले अति पुनीत मृदु बानी
नाथ एक संशय बड़ मोरे। करतल बेद तत्त्व सब तोरे
कहत मोहिं लागतभयलाजा। जोनकहौं बड़ होइ अकाजा
दो० सन्तकहहिंअसनीतिप्रभुश्रुतिपुराणजोगाव।
होइनविमलविवेकउरगुरुसनकियेदुराव ५६
असविचारि प्रकटौ निजमोहू। हरहु नाथ करिजन पर छोहू
राम नाम कर अमित प्रभावा। सन्त पुराण उपनिषद गावा
सन्ततजपत शम्भु अविनाशी। शिवभगवान ज्ञानगुणराशी
आकर चारिजीवजग अहहीं। काशीमरत परम पद लहहीं
सोपि राम महिमा मुनिराया। शिव उपदेशकरत करि दाया
राम कौन प्रभु पूँछौं तोहीं। कहहुबुझाय कृपानिधि मोहीं
एक राम अवधेश कुमारा। तिनकर चरित विदित संसारा
नारिविरहदुख लहेउ अपारा। भयउ रोष रण रावण मारा
दो० प्रभुसोइराम कि अपरकोउजाहिजपतत्रिपुरारि।
सत्य धाम सर्व्वज्ञ तुम कहहु विवेक विचारि ५७
जैसे मिटै मोह भ्रम भारी। कहहु सो कथा नाथ विस्तारी
याज्ञवल्क्य बोले मुसुकाई। तुमहिं विदित रघुपति प्रभुताई

राम भक्त तुम मन क्रम बानी। चतुराई तुम्हारि मैं जानी
चाहहु सुनै राम गुण गूढ़ा। कीन्हेउ प्रश्न मनहुँ अति मूढ़ा
तात सुनहु सादर मन लाई॥ कहउँ राम की कथा सुहाई
महा मोह महिषेश विशाला। राम कथा कालिका कराला
रामकथा शशि किरण समाना। सन्त चकोर करहिं तेहि पाना
ऐसेइ संशय कीन्ह भवानी। महादेव तब कहा बखानी
दो० कहौं सो मति अनुहारि अब उमा शम्भु संवाद।
भयउ समय जेहि हेतु जेहि सुनि मुनि मिटहिं विषाद ५८
एक बार त्रेता युग माहीं। शम्भु गये कुम्भज ऋषि पाहीं
संग सती जग जननि भवानी। पूजे ऋषि अखिलेश्वर जानी
राम कथा मुनिवर्य्य बखानी। सुनी महेश परम सुख मानी
ऋषि पूँछा हरि भक्ति सुहाई। कही शम्भु अधिकारी पाई
कहत सुनत रघुपति गुण गाथा। कछु दिन तहाँ रहे गिरि नाथा
मुनि सन विदा माँगि त्रिपुरारी। चले भवन सँग दक्ष कुमारी।
तेहि अवसर भञ्जन महि भारा। हरि रघुवंश लीन्ह अवतारा
पिता वचन तजि राज उदासी। दण्डक बन बिचरत अविनासी
दो० हृदय विचारत जात हर केहि विधि दरशन होइ।

गुप्तरूप अवतरेउ प्रभु गये जान सब कोइ ५९

सो० शंकर उर अति छोभ सती न जानहिं मर्म्म सोइ।
तुलसी दरशन लोभ मन डर लोचन लालची ५

रावण मरण मनुज कर राँचा। प्रभु विधि बचन कीन्ह चह साँचा
जो नहिं जाउँ रहै पछितावा। करत विचार न बनत बनावा
एहि विधि भये सोचवश ईशा। ताही समय जाय दश शीशा
लीन्ह नीच मारीचहिं संगा॥ भयउ तुरत सोइ कपट कुरंगा
करि छल मूढ़ हरी वैदेही। प्रभु प्रताप उर बिदित न तेही
मृगबधि बन्धु सहित हरि आये। आश्रम देखि नयन जल छाये
बिरह विकल नर इव रघुराई। खोजत विपिन फिरत दोउ भाई
कबहूँ योग वियोग न जाके। देखा प्रकट विरह दुख ताके

दो० अति विचित्र रघुपति चरित जानहिं परम सुजान।
जे मतिमन्द विमोह वश हृदय धरहिं कछु आन ६०

शम्भु समय तेहि रामहि देखा। उपजा हिय अति हर्ष विशेखा
भरि लोचन छबि सिन्धु निहारी। कुसमय जानि न कीन्ह चिन्हारी
जय सच्चिदानन्द जग पावन। अस कहि चलेउ मनोज नशावन
चले जात शिव सती समेता। पुनि पुनि पुलकित कृपा निकेता

सती सो दशा शम्भुकी देखी। उर उपजा सन्देह विशेखी
शंकर जगतवन्द्य जगदीशा। सुर नर मुनि सब नावत शीशा
तिनृपसुतहिंकीन्हपरणामा। कहि सच्चिदानन्द परधामा
भयेमगनछबितासुविलोकी। अजहुँप्रीतिउररहतिनरोकी

दो० ब्रह्मजोव्यापकविरजअजअकलअनीहअभेद
सोकिदेहधरिहोइनर जाहिन जानत वेद ६१

विष्णुजोसुरहितनरतनुधारी। सोउ सर्व्वज्ञ यथा त्रिपुरारी
खोजतसोकिअज्ञइव नारी। ज्ञान धाम श्रीपति असुरारी
शम्भुगिरापुनिम्रृषा न होई। शिव सर्व्वज्ञ जान सब कोई
अससंशयमनभयउअपारा। होइन हृदय प्रबोध प्रचारा
यद्यपि प्रकटन कहेउभवानी। हर अन्तरयामी सब जानी
सुनहु सती तव नारिस्वभाऊ। संशय असन धरियउरकाऊ
जासु कथाकुम्भजऋषिगाई। भक्ति जासुमैं मुनिहिंसुनाई
सोइमम इष्टदेव रघुवीरा।। सेवत जाहि सदा मुनि धीरा

छं० मुनिधीरयोगीसिद्धसन्ततविमलमनजेहि ध्यावहीं।
कहिनेतिनिगमपुराणआगमजासु कीरतिगावहीं॥
सोइरामव्यापकब्रह्मभुवननिकायपतिमायाधनी।

अवतरेउ अपने भक्त हित निजतंत्र नित रघुकुलमनी२
सो० लागन उर उपदेश यदपि कहेउ शिव बार बहु।
बोले बिहँसि महेश हरिमाया बल जानि जिय ६
जो तुम्हरे मन अति सन्देहू। तो किन जाइ परीक्षा लेहू
तबलगि बैठि रहौं बट छाहीं। जबलगि तुम ऐहहु मोहिं पाहीं
जैसे जाइ मोह भ्रम भारी। करहु सो यतन विवेक विचारी
चलीं सती शिव आयसु पाई। करहिं विचार करौं का जाई।
वहाँ शम्भु अस मन अनुमाना। दक्षसुता कहँ नहिं कल्याना
मोरेहु कहे न संशय जाहीं। विधि विपरीत भलाई नाहीं
होइहै सोइ जो राम रचिराखा। को करि तर्क बढ़ावहिं शाखा
अस कहि लगे जपन हरिनामा। गईं सती जहँ प्रभु सुखधामा
दो० पुनि पुनि हृदय विचार करि धरि सीता कर रूप।
आगे होइ चलि पन्थ तेहि जेहि आवत सुर भूप ६२
लक्ष्मण दीख उमा कृत वेषा। चकित हृदय भ्रम भयउ विशेषा
कहि न सकत कछु अति गंभीरा। प्रभु प्रभाव जानत मति धीरा
सती कपट जानेउ सुर स्वामी। सबदरशी सब अन्तरयामी
सुमिरत जाहि मिटै अज्ञाना। सोइ सर्व्वज्ञ राम भगवाना

सती कीन्ह चह तहउँ दुराऊ। देखहु नारि स्वभाव प्रभाऊ
निजमाया बलहृदय बखानी। बोले बिहँसि राम मृदु बानी
जोरिपाणिप्रभुकीन्हप्रणामू। पिता समेत लीन्ह निज नामू
कहेउ बहोरि कहाँ बृषकेतू। बिपिन अकेलि फिरहु केहि हेतू

दो० राम वचन मृदु गूढ़ सुनि उपजा अति संकोच।
सती सभीत महेश पहँ चलीं हृदय बड़ शोच ५३

मैं शंकर कर कहा न माना। निज अज्ञान राम पहँ आना
जाइ उतर अब देहौं काहा। उर उपजा अति दारुण दाहा
जाना राम सती दुख पावा। निजप्रभाव कछु प्रकटि जनावा
सती दीख कौतुक मग जाता। आगे राम सहित सिय भ्राता
फिर चितवा पाछे प्रभु देखा। सहित बन्धु सिय सुन्दर बेखा
जहँ चितवति तहँ प्रभु आसीना। सेवहिं सिद्ध मुनीश प्रवीना
देखे शिव विधि विष्णु अनेका। अमित प्रभाव एक ते एका
वन्दत चरण करत प्रभु सेवा। विविध वेष देखे सब देवा

दो० सती विधात्री इन्दिरा देखी अमित अनूप।
जेहिजेहिवेष अनादिसुरतेहितेहितनु अनुरूप ५४

देखे जहँ तहँ रघुपति जेते। शक्तिन सहित सकल सुर तेते

जीव चराचर जे संसारा। देखे सकल अनेक प्रकारा
पूजहिं प्रभुहिं देव बहु वेखा। राम रूप दूसर नहिं देखा
अवलोके रघुपति बहुतेरे। सीता सहित सुवेष घनेरे
सोइ रघुवरसोइलक्ष्मणासीता। देखि सती अति भई सभीता
हृदयकम्पतनुसुधिकछुनाहीं। नयन मूँदि बैठी मगु माहीं
बहुरिविलोकेउ नयनउघारी। कछुन दीख तहँ दक्षकुमारी
पुनिपुनिनाइराम पद शीशा। चलीं तहाँ जहँ रहैं गिरीशा

दो० गई समीप महेश तब हँसि पूँछी कुशलात।
लीन्हिपरीक्षाकवनविधिकहहुसत्यसबबात ६५

सती समुझरघुवीर प्रभाऊ। भयवशशिवसनकीन्हदुराऊ
कछुन परीक्षा लीन्ह गुसाईं। कीन्हप्रणामतुम्हारिहिनाईं
जोतुमकहासोमृषा न होई। मोरे मन प्रतीति अस होई।
तब शंकर देखेउ धरिध्याना। सतीजोकीन्हचरितसबजाना
बहुरिराम मायहिशिर नावा। प्रेरिसतिहिजेहि झूठकहावा
हरि इच्छा भावी बलवाना। हृदयविचारत शम्भु सुजाना
सतीकीन्ह सीता कर वेषा। शिवउरभयउ विषाद विशेषा
जो अब करौं सती सन प्रीती। मिटै भक्ति पथ होइ अनीती

दो० परम प्रेम नहिं जाय तजि किये प्रेम बड़ पाप।
प्रकटन कहत महेश कछु हृदय अधिक सन्ताप ६६

तबहिं शम्भु प्रभु पद शिर नावा। सुमिरत राम हृदय अस आवा
सहित सती तिहि भेंट मोहिं नाहीं। शिव संकल्प कीन्ह मन माहीं
अस विचारि शंकर मति धीरा। चले भवन सुमिरत रघुवीरा
चलत गगन भइ गिरा सुहाई। जय महेश भलि भक्ति दृढ़ाई
अस पण तुम बिनु करै को आना। राम भक्त समरथ भगवाना
सुनि नभ गिरा सती उर शोचू। पूछा शिवहि समेत सकोचू
कीन्ह कवन पण कहहु कृपाला। सत्य धाम प्रभु दीनदयाला
यदपि सती पूँछा बहु भाँती। तदपि न कहेउ त्रिपुर आराती

दो० सती हृदय अनुमान किय सब जाना सर्व्वज्ञ।
कीन्ह कपट मैं शम्भु सन नारि सहज जड़ अज्ञ ६७

सो० जल पय सरिस बिकाइ देखहु प्रीति कि रीति भलि
बिलग होइ रस जाइ कपट खटाई परतही ७

हृदय सोच समुझत निज करनी। चिन्ता अमित जाइ नहिं बरनी
कृपासिन्धु शिव परम अगाधा। प्रकट न कहेउ मोर अपराधा
शंकर रुख अवलोकि भवानी। प्रभु मोहिं तजेउ हृदय अकुलानी

निजअघसबुझिनकछुकहिजाई।तपैअवाँइवउरअधिकाई
सतिहिसशोचजानिशिवकेरू। कहेउ कथासुन्दर सुखहेरू।
वरणातपन्थविविधइतिहासा। विश्वनाथ पहुँचे कैलासा
तहँपुनिशम्भुसबुझिप्रराग्रापन।बैठवटतरकरिकमलासन
शंकरसहजस्वरूपसँभारा। लागिसमाधिअखराडअपारा
दो० सतीबसहिंकैलास तबअधिकशोचमनमाहिं।
मर्म्मनकोऊजानकछुयुगसमदिवससिराहिं ६८
नितनव शोच सतीउर भारा। कब जैहौं दुख सागर पारा
मैंजोकीन्हरघुपति अपमाना।पुनिपतिवचनमृषाकरिजाना।
सोफलमोहिंविधाता दीन्हा। जोकछुउचितरहा सोकीन्हा
अबविधिअसबूझियनहिंतोही।शंकरविमुखजिआवहुमोही
कहिनजायकछुहृदयगलानी।मनमहँरामहिंसुमिरिसयानी
जो प्रभु दीनदयालु कहाता। आरतहररा वेद यश गाता
तौ मैं विनय करौं कर जोरी। छूटै बेगि देह अब मोरी
जो मोरे शिव चररा सनेहू। मनक्रमवचनसत्य व्रत येहू
दो० तौसमदर्शीसुनियप्रभु करौ सो वेगि उपाय।
होइमररा जिहिबिनहिंश्रमदुसहविपत्तिविहाय ६९

इहि विधि दुखित प्रजेश कुमारी। अकथनीय दारुण दुख भारी
बीते संवत सहस सतासी। तजी समाधि शम्भु अविनाशी
राम नाम शिव सुमिरन लागे। जानेउ सती जगत पति जागे
जाइ शम्भु पद वन्दन कीन्हा। सन्मुख शंकर आसन दीन्हा
लगे कहन हरि कथा रसाला। दक्ष प्रजेश भये तिहि काला
देखा विधि विचारि सब लायक। दक्षहि कीन्ह प्रजापति नायक
बड़ अधिकार दक्ष जब पावा। अति आभिमान हृदय तब आवा
नहिं कोउ अस जन्मेउ जग माहीं। प्रभुता पाइ जाहि मद नाहीं

दो० दक्ष लिये मुनि बोलि सब करन लगे बड़ याग।
नेवते सादर सकल सुर जे पावत मख भाग ७०

किन्नर नाग सिद्ध गन्धर्व्वा। बधुन समेत चले सुर सर्व्वा
बिष्णु बिरञ्चि महेश बिहाई। चले सकल सुर यान बनाई
सती बिलोके गगन बिमाना। जात चले सुन्दर बिधि नाना
सुर सुन्दरी करहिं कल गाना। सुनत श्रवण छूटहिं मुनि ध्याना
पूँछेउ कछु शिव कहेउ बखानी। पिता यज्ञ सुनि कै हरषानी
जो महेश मोहिं आयसु देहीं। कछु दिन जाय रहौं मिस येही
पति परित्याग हृदय दुख भारी। कहै न निज अपराध बिचारी

बोली सती मनोहर बानी। भय संकोच प्रेम रस सानी
दो० पिता भवन उत्सव परम जो प्रभु आयसु होइ।
तौ मैं जाउँ कृपायतन सादर देखन सोइ ७०
कहेउ नीक मोरे मन भावा। यह अनुचित नहिं नेवत पठावा
दक्ष सकल निज सुता बुलाई। हमरे बैर तुमहिं बिसराई
ब्रह्म सभा हम सन दुख माना। तेहिते अजहुँ करहिं अपमाना
जो बिनु बोले जाहु भवानी। रहै न सील सनेह न कानी
यदपि मित्र प्रभु पितु गुरु गेहा। जाइय बिनु बोलेहु न सँदेहा
तदपि बिरोध मान जहँ कोई। तहाँ गये कल्यान न होई
भाँति अनेक शम्भु समुझावा। भावी बश न ज्ञान उर आवा
कह प्रभु जाहु जो बिनहिं बुलाये। नहिं भलि बात हमारे भाये
दो० कहि देखा हर यतन बहु रहै न दक्ष कुमारि।
दिये मुख्य गण संग तब बिदा किये त्रिपुरारि ७२
पिता भवन जब गईं भवानी। दक्ष त्रास काहु न सनमानी
सादर भलेहिं मिली इक माता। भगिनी मिलीं बहुत मुसकाता
दक्ष न कछु पूँछी कुशलाता। सतिहि बिलोकि जरे सब गाता
सती जाय देखेउ तब यागा। कतहुँ न दीख शम्भु कर भागा

तबचितचढ़ेउजोशंकरकेरे। प्रभुअपमानसमुझिउरदहेऊ
पाछिलदुखनहृदयअसव्यापा। जसयहभयउमहापरितापा
यद्यपिजग दारुणदुखनाना। सबतेकठिनजातिअपमाना
समुझिसोसतिहिंभयोअतिकोधा। बहुविधिजननीकीन्हप्रबोधा
दो॰ शिव अपमान न जाइ सहि हृदय न होत प्रबोध।
सकलसभहिंहठिहटकितबबोलीवचनसक्रोध ७३
सुनहुसभासदसकलमुनिन्दा। कहीसुनी जिनशंकरनिन्दा
सो फलतुरतलहनसबकाहू। भलीभाँतिपछिताव पिताहू
सन्त शम्भुश्रीपति अपवादा। सुनियजहाँतहँअसमर्य्यादा
काटिय तासुजीभजु बसाई। अवरासूँदिनहिंचलियपराई
जगदातमा महेश पुरारी। जगतजनक सब के हितकारी
पिता मन्दमति निन्दत तेही। दक्ष सुक्र सम्भव यह देही
तजिहौं तुरत देह तेहि हेतू। उर धरि चन्द्रमौलि वृषकेतू
अस कहियोग अग्नितनुजारा। भयउ सकल मख हाहाकारा
दो॰ सतीमरणासुनिशम्भुगणालगेकरनमखखीश।
यज्ञविध्वंसविलोकिभृगुरक्षाकीन्हमुनीश ७४
समाचार जब शंकर पाये। वीरभद्र करि कोप पठाये

यज्ञविध्वंसजाइतिनकीन्हा। सकलसुरनविधिवतफलदीन्हा
भइजगविदितदक्षगतिसोई। जसकछुशम्भुविमुखकीहोई
यहइतिहाससकलजगजाना। तातेमैं संक्षेप बखाना
सतीमरतहरिसनवरमाँगा। जन्मजन्मशिवपदअनुरागा
तेहिकारणाहिमगिरिगृहजाई। सोइ जन्मी पार्वति तनुपाई
जबतेउमा शैल गृह आई। सकलसिद्धिसम्पतितहँछाई
जहँतहँमुनिनसुआश्रमकीन्हे। उचित वास हिम भूधर दीन्हे
दो० सदासुमनफलसहितसबद्रुमनव नाना जाति।
प्रकटींसुन्दर शैल पर मणिआकरबहुभाँति७५
सरितासबपुनीतजलबहई। खगमृगमधुपसुखीसबरहई
सहजबैरसबजीवन त्यागा। गिरिपरसकलकरहिंअनुरागा
सोहशैलगिरिजा गृह आये। जिमिनररामभक्ति के पाये
नित नूतन मंगल गृह तासू। ब्रह्मादिक गावहिं यशजासू
नारद समाचार सब पाये। कौतुकहिमगिरिगेहसिधाये
शैलराज बड़ आदर कीन्हा। पदपखारिवर आसन दीन्हा
नारिसहितमुनिपदशिरनावा। चरणसलिलसबभवनसिँचावा
निजसौभाग्यबहुतगिरिवरणा। सुता बोलि मेली मुनि चरणा

दो० त्रिकालज्ञ सर्व्वज्ञ तुम गति सर्व्वत्र तुम्हारि ।
कहहु सुता के दोष गुण मुनिवर हृदय विचारि ७६

कह मुनि बिहँसि गूढ़ मृदु बानी। सुता तुम्हारि सकल गुण खानी
सुन्दरि सहज सुशील सयानी। नाम उमा अम्बिका भवानी
सब लच्छन सम्पन्न कुमारी। होइहि सन्तत पियहि पियारी
सदा अचल एहि कर अहिवाता। इहि ते यश पैहहिं पितु माता
होइहि पूज्य सकल जग माहीं। इहि सेवत कछु दुर्ल्लभ नाहीं
इहि कर नाम सुमिरि संसारा। त्रिय चढ़िहहिं पतिव्रत असिधारा
सैल सुलच्छनि सुता तुम्हारी। सुनहु जे अब अवगुण दुइ चारी
अगुण अमान मातु पितु हीना। उदासीन सब संशय छीना

दो० योगी जटिल अकाम तनु नगन अमंगल भेख।
अस स्वामी इहि कहँ मिलिहि परी हस्त असरेख ७७

सुनि मुनि गिरा सत्य जिय जानी। दुख दम्पतिहि उमा हरषानी
नारद्ह यह भेद न जाना । दशा एक समु रुत बिलगाना
सकल सखी गिरिजा गिरि मयना। पुलक शरीर भरे जल नयना
होइ न मृषा देव ऋषि भाखा। उमा सो वचन हृदय धरि राखा।
उपजेउ शिव पद कमल सनेहू। मिलन कठिन मन भा सन्देहू।

जानि कुअवसर प्रीति दुराई। सखी उछंग बैठि पुनि जाई
झूँठि न होइ देवऋषि बानी। सोचहिं दम्पति सखी सयानी
उर धरि धीर कहेउ गिरिराज। कहहु नाथ का करिय उपाज
दो० कह मुनीस हिमवन्त सुनु जो बिधि लिखा ललार।
देव दनुज नर नाग मुनि कोउ न मेटनहार ७८
तदपि एक मैं कहौं उपाई। होइ करै जो देव सहाई।
जस बर मैं बरनउँ तुम्ह पाहीं। मिलिहि उमहि कछु संसय नाहीं
जे जे बर के दोष बखाने। ते सब सिव पहँ मैं अनुमाने
जो बिबाह संकर सन होई। दोषउ गुन सम कह सब कोई
जो अहि सेज सयन हरि करहीं। बुध कछु तिन्ह कर दोष न धरहीं
भानु कृसानु सर्ब्ब रस खाहीं। तिन्ह कहँ मन्द कहत कोउ नाहीं
सुभ अरु असुभ सलिल सब बहही। सुरसरि कोउ न अपावन कहही
समरथ कहँ नहिं दोष गोसाईं। रबि पावक सुरसरि की नाईं
दो० जौ अस हिसिधा करहिं जहँ बिबेक अभिमान।
परहिं कल्प भरि नरक महँ जीव कि ईस समान ७९
सुरसरि जल कृत बारुनि जाना। कबहुँ न संत करहिं तेहि पाना
सुरसरि मिले सुपावन जैसे। ईस अनीसहि अन्तर तैसे

शम्भुसहजसमरथभगवाना। इहविवाहसबविधिकल्याना
दुराराध्य पै अहहिं महेशू। आशुतोष पुनि किये कलेशू
जो तप करै कुमारि तुम्हारी। भाविउ मेटि सकैं त्रिपुरारी
यद्यपि वर अनेक जग माहीं। इहिकहँ शिवतजि दूसर नाहीं
वरदायक प्रणतारत भञ्जन। कृपासिन्धु सेवक मनरञ्जन
इच्छितफलविनुशिवआराधे। लहइन कोटि योग जपसाधे
दो० असकहिनारदसुमिरिहरिगिरिजहिंदीन्हअशीश।
होइहियहिकल्याणाअबसंशयतजहुगिरीश ८०
कहिअसब्रह्मभवनसुनिगयऊ। आगिलचरितसुनहुजसभयऊ
पतिहिइकांतपायकहमयना। नाथनमैंसमुझेउँमुनिवयना
जो घर वर कुल होइ अनूपा। करियविवाहसुता अनुरूपा
नतुकन्या वरु रहै कुमारी। कन्त उमा मम प्राण पियारी
जोंनमिलिहिवरगिरिजहियोगू। गिरिजड़सहजकहहिंसबलोगू
सोविचारि पतिकरहु विवाहू। जेहिन बहोरि होइ उर दाहू।
असकहिपरीचरणधरिशीशा। बोले सहित सनेह गिरीशा
वरु पावक प्रकटै शशि माहीं। नारद वचन अन्यथा नाहीं
दो० प्रियासोचपरिहरहु सब सुमिरहु श्रीभगवान।

पारवतीजिननिर्म्मयउसोइकरिहहिंकल्यान ८१
अबजो तुमहिं सुता पर नेहू। तौ अस जाइ सिखावन देहू
करैसोतपजेहि मिलहिंमहेसू। आनउपायनमिटहिंकलेसू
नारद वचन सगर्भ सहेतू। सुन्दरसबगुणानिधिबयकेतू
असविचारितुमतजिसबसंका।सबहिंभाँतिशंकर अकलंका
सुनिपतिवचनहर्षमनमाहीं। गई तुरत उठि गिरिजा पाहीं
उमहिंविलोकिनयनभरिवारी।सहित सनेह गोद बैठारी
बारहिंबार लेति उर लाई॥ गद्गदकण्ठनकछुकहिजाई
जगत मातु सर्व्वज्ञ भवानी। मातु सुखद बोलीं मृदुबानी
दो॰ सुनहुमातुमैंदीरवअस सपन सुनाऊँ तोहिं।
सुन्दरगौरसु विप्रवर असउपदेशेउ मोहिं ८२
करहु जाय तप शैलकुमारी। नारद कहा सोसत्य विचारी
मातुपितहिंपुनियहमतभावा। तपसुखप्रदुखदोषनशावा
तपबल रचै प्रपञ्च विधाता। तपबलविष्णुसकलजगत्राता
तपबल शम्भु करहिं संहारा। तपबल शेषधरहिंमहिभारा
तपअधारसबसृष्टि भवानी। करहुजाइतपअस जियजानी
सुनतवचनविस्मितमहतारी। सपनसुनायउगिरिहिंहँकारी

मातु पितहिं बहु बिधि समुझाई। चलीं उमा तप हित हरषाई
प्रिय परिवार पिता अरु माता। भये बिकल सुख सुनत बाता
दो० बेद गिरा सुनि आइ तब सबहिं कहा समुझाइ।
पारबती महिमा सुनत रहे प्रबोधहिं पाइ ८३
उर धरि उमा प्रानपति चरना। जाइ बिपिन लागीं तप करना
अति सुकुमारि न तनु तप जोगू। पति पद सुमिरि तजेउ सब भोगू
नित नब चरन उपज अनुरागा। बिसरी देह तपहि मन लागा
संबत सहस मूल फल खाये। सागु खाइ सत बर्ष गँवाये
कछु दिन भोजन बारि बतासा। किये कठिन कछु दिन उपबासा
बेल पात महि परैं सुखाई। तीन सहस संबत सो खाई
पुनि परिहरे सुखानेउ परना। उमा नाम तब भयउ अपरना
देखि उमहिं तप खीन सरीरा। ब्रह्म गिरा भइ गगन गँभीरा
दो० भयउ मनोरथ सफल तव सुनु गिरिराज कुमारि।
परिहरु दुसह कलेस सब अब मिलिहहिं बिपुरारि ८४
अस तप काहुँ न कीन्ह भवानी। भये अनेक धीर मुनि ज्ञानी
अब उर धरहु ब्रह्म बर बानी। सत्य सदा संतत सुचि जानी
आवै पिता बोलावन जबहीं। हठ परिहरि घर जाएहु तबहीं

मिलहिंतुमहिंजबसप्तऋषीशा।जानेहुतबप्रमाणवागीशा
सुनतगिराविधिगगनबखानी।पुलकगात गिरिजा हरषानी
उमा चरित मैं सुन्दर गावा।सुनहु शम्भुकर चरितसुहावा
जब ते सती जाइ तनु त्यागा। तबते शिव मनभयउ विरागा
जपहिं सदा रघुनायक नामा। जहँतहँसुनहिंरामगुणग्रामा
दो॰ चिदानन्दसुख धाम शिव विगतमोहमदकाम।
विचरहिंमहिधरिहृदयहरिसकललोकअभिराम ८५
कतहुँमुनिनउपदेशहिंज्ञाना। कतहुँरामगुणकरहिंबखाना
यदपिअकामतदपिभगवाना। भक्तविरहदुखदुखितसुजाना
इहिविधिगयउकालबहुबीती। नितनवहोइ राम पदप्रीती
नेम प्रेम शंकर कर देखा। अविचलहृदयभक्तिकीरेखा
प्रकटे राम कृतज्ञ कृपाला। रूपशीलनिधितेज विशाला
बहुप्रकार शंकरहि सराहा। तुमबिनुअसव्रतकोनिरवाहा
बहुविधिरामशिवहिसमुझावा। पारवतीकर जन्म सुनावा
अतिपुनीतगिरिजाकीकरणी। विस्तरसहितकृपानिधिबरणी
दो॰ अबविनती मम सुनहुशिव जोमो पर निजनेहु।
जाइविवाहहुशैलजहिंयहमोहिंमाँगेदेहु ८६

कहशिवयद्यपिउचितअसनाहीं। नाथवचनपुनिमेटिनजाहीं
शिरधरिआयसुकरियतुम्हारा। परम धर्म्म यह नाथ हमारा
मातुपितागुरुप्रभुकी बानी। बिनहिंविचारकरियशुभजानी
तुमसबभाँतिपरमहितकारी। आज्ञा शिरपर नाथ तुम्हारी
प्रभु तोषेउ सुनिशंकरबचना। भक्तिविवेकधर्म्मयुतरचना
कहप्रभुहरतुम्हारप्रणा रहेऊ। अबउररारखेहुजोहम कहेऊ
अन्तर्धान भये अस भाखी। शंकरसोइ मूरतिउर राखी
तबहिंसप्तऋषिशिवपहँआये। बोलेप्रभु असवचनसुहाये

दो० पारवती पहँ जाइ तुम प्रेम परीक्षा लेहु ।
गिरिहिंप्रेरिपठयहुभवन दूरिकरेहुसन्देहु ८७

ऋषिनगौरिदेखीतहँकैसी। मूरतिवन्त तपस्या जैसी।
बोलेमुनि सुनु शैलकुमारी। करहु कवनकारणातपभारी
केहिआराधहुकातुम चहहू। हमसनसत्य मर्मसब कहहू
सुनतऋषिनकेवचनभवानी। बोलीं गूढ़ मनोहर बानी
कहतमर्ममन अतिसकुचाई। हँसिहहुसुनिहमारिजड़ताई
मनहठपरा न सुनै सिखावा। चहत वारि पर भीतिउठावा
नारदकहासत्य सोइ जाना। बिनुपंखनहमबहहिंउड़ाना

देखिय सुनिअविवेकहमारा। चाहतपति शंकर अविकारा
दो० सुनत वचन विहँसे रमाधय गिरिसम्भवतवदेह।
नारद कर उपदेश सुनि कहहु बसे को गेह ८८
दक्ष सुतन उपदेशेनि जाई। तिन फिर भवन न देखे आई
चित्रकेतु कर घरउन घाला। कनककशिपु कर पुनि असहाला
नारद शिवजु सुनहिं नर नारी। अवशि भवनतजिहोहिं भिखारी
मनकपटी तन सज्जन चीन्हा। आपसरिस सबही चहकीन्हा
तेहिके वचन मानि विश्वासा। तुम चाहहु पति सहज उदासा
निर्गुणानिलज कुवेष कपाली। अकुल अगेह दिगम्बर व्याली
कहहु कवन सुख अस वर पाये। भल भूलिहु ठग के बौराये।
पञ्च कहें शिव सती विवाही। पुनि अवडेरि मराइनि ताही
दो० अब सुख सोवत शोचनहिं भीख माँगि भव खाहिं।
सहज एक किनके भवन कबहुँ कि नारि खटाहिं ८९
अजहूं मानहु कहा हमारा। हम तुमकहुँ वर नीक विचारा
अतिसुन्दर शुचि सुखद सुशीला। गावहिं वेद जासु यश लीला।
दूषणा रहित सकल गुणाराशी। श्रीपति पुर वैकुण्ठ निवासी
अस वर तुमहिं मिलाउब आनी। सुनत विहँसि कह वचन भवानी।

सत्य कहहु गिरिभव तनुयेहा। हठ न छूट छूटै वरु देहा
कनकौ पुनि पषाराा ते होई। जारेउ सहज न परिहरि सोई
नारद वचन न मैं परिहरऊं। बसौ भवन उजरौ नहिं डरऊं
गुरु के वचन प्रतीति न जेही। सपनेहुँ सुगमन सुखसिधि तेही

दो० महादेव अवगुराा भवन विष्णु सकल गुराधाम।
जेहि कर मन रमजाहि सन ताहि ताहि सन काम ६०

जो तुम मिलते उ प्रथम मुनीशा। सुनति उँ शिव तुम्हारि धरि शीशा
अब मैं जन्म शम्भु हित हारा। को गुरा दोष हिं करै विचारा
जो तुम्हरे हठ हृदय विशेषी। रहि न जाइ बिनु किये वरेषी
तौ कौतुकियन्ह आलस नाहीं। वर कन्या अनेक जग माहीं
जन्म कोटि लगि रगर हमारी। वरौं शम्भु नतु रहौं कुमारी
तजौं न नारद कर उपदेशू। आपु कहहिं शत वार महेशू
मैं पापरौं कहै जगदम्बा। तुम गृह गवनहु भयउ विलम्बा
देखि प्रेम बोले मुनि ज्ञानी। जय जय जय जगदम्ब भवानी

दो० तुम माया भगवान शिव सकल जगत पितु मात।
नायचरराशिर मुनि चले पुनि पुनि हर्षित गात ६१

जाइ मुनिन हिमवन्त पठाये। करि विनती गिरिजहिं गृह ल्याये

बहुरि सप्तऋषि शिव पहँ जाई। कथा उमा की सकल सुनाई
भये मगन शिव सुनत सनेहा। हरषि सप्तऋषि गवने गेहा
मन थिर करि तब शम्भु सुजाना। लगे करन रघुनायक ध्याना
तारक असुर भयउ तेहि काला। भुज प्रताप बल तेज बिसाला
तेहँ सब लोक लोकपति जीते। भये देव सुख सम्पति रीते।
अजर अमर सो जीति न जाई। हारे सुर करि बिबिध लराई
तब बिरञ्चि सन जाइ पुकारे। देखे बिधि सब देव दुखारे

दो॰ सबसन कहा बुझाय बिधि दनुज निधन तब होय।
शम्भु सुक्र सम्भूत सुत इहि जीतै रण सोय ९२

मोर कहा सुनि करहु उपाई। होइहि ईश्वर करिहि सहाई
सती जो तजी दक्ष मख देहा। जन्मी जाइ हिमाचल गेहा
तेहँ तप कीन्ह शम्भु पति लागी। शिव समाधि बैठे सब त्यागी
यदपि अहै असमञ्जस भारी। तदपि बात इक सुनहु हमारी
पठवहु काम जाइ शिव पाहीं। करै क्षोभ शंकर मन माहीं
तब हम जाइ शिवहिं शिर नाई। करवाउब बिवाह बरिआई
इहि बिधि भलेहि देव हित होई। मत अति नीक कही सबकोई
अस्तुति सुरन कीन्ह अति हेतू। प्रकटेउ बिषम बाण झष केतू

दो० सुरनकही निजविपतिसब सुनिमनकीन्ह विचार।
शम्भुविरोधनकुशलमोहिं बिहँसिकहेउअस मार ९३

तदपिकरबमैं काज तुम्हारा। श्रुतिकह परम धर्म्म उपकारा
परहित लागि तजै जो देही। सन्तत सन्त प्रशंसहिं तेही।
असकहिचलेउसबहिंशिरनाई। सुमन धनुयकरसहितसहाई
चलत मार असहृदय विचारा। शिवविरोध ध्रुवमरण हमारा
तब आपन प्रभाव विस्तारा। निजवशकीन्हसकलसंसारा
कोपेउ जबहिं वारिचर केतू। सराामहँ मिटसकलश्रुतिसेतू
ब्रह्मचर्य्य व्रत संयम नाना। धीरज धर्म्म ज्ञान विज्ञाना
सदाचार जप योग विरागा। सभयविवेककटकसबभागा

छं० भागेविवेकसहायसहितसो सुभट संयुग महँ सुरे।
सदग्रन्थपर्व्वतकन्दरनमहँजाइतेहि अवसर दुरे॥
होनिहार का करतार को रखवार जगखरभरपरा।
दुइमाथकेहिरतिनाथजेहिकहँकोपिधनुशरकरधरा ३

दो० जे सजीव जग अचर चर नारि पुरुष असनाम।
तेनिजनिजमर्य्यादतजिभयेसकलवशकाम ९४

सबकेहृदयमदनअभिलाखा। लतानिहारिनवहिं तरुशाखा

नदीउमगि अम्बुधिकहँधाईं। संगम करहिं तलाव तलाईं
जहँअसिदशाजड़नकीबरणी। कोकहि सकैसचेतनकरणी
पशुपक्षीनभजल थलचारी। भयेकामवशसमय बिसारी
मदनअंधव्याकुलसबलोका। निशिदिननहिंअवलोकहिंकोका
देव दनुज नर किन्नरव्याला। प्रेत पिशाच भूत बैताला
इनकी दशा न कहेउँ बखानी। सदा काम के चेरे जानी
सिद्ध विरक्त महामुनि योगी। तेपिकामवश भयेवियोगी
छं० भयेकामवश योगीश तापस पामरनकी को कहै ।
देखहिं चराचर नारि मयजे ब्रह्म मय देखत रहै ॥
अबलाविलोकहिंपुरुषमयजगपुरुषसबअबलामयं
दुइदण्डभरिब्रह्माण्डभीतरकामकृतकौतुकअयं ४
सो० धरा न काहू धीर सब के मन मनसिज हरे।
जेहि राखेउ रघुवीर ते उबरे तेहि काल महँ ८
उभय घरी अस कौतुकभयऊ। जबलगिकामशंभुपहँगयऊ
शिवहिंविलोकिसशंकेउमाहू। भयउयथाथितसब संसारू
भये तुरत जग जीव सुखारे। जिमिमदउतरि गये मतवारे
रुद्रहिं देखिमदनभय माना। दुराधर्ष दुर्गम भगवाना

फिरतलाज कछु कहिनहिंआई। मरणाठानि मनरचेसिउपाई
प्रकटेसिउरतरुचिरऋतुराजा। कुसुमितनवतरुराज विराजा
बन उपबन वापिकातड़ागा। परमसुभगसबदिशाविभागा
जहँतहँजनुउमगत अनुरागा। देखिसुयहुमनमनसिज जागा
छं० जागेउमनोभवसुयहु मन बन सुभगता न परैकही ।
शीतलसुगन्धसुमन्दमारुतमदनअनलसखासही ॥
विकसे सरन बहु कञ्ज गुञ्जत पुञ्जमञ्जुलमधुकरा।
कलहंसपिकशुकसरसरवकरिगाननाचहिंअप्सरा५
दो० सकलकलाकरिकोटिविधि हारेउसेनसमेत।
चलीनअचलसमाधिशिवकोपेउहृदयनिकेत ९५
देखिरसालविटपवरशाखा। तेहिपरचढ़ेउमदनमनमाखा
सुमनचापनिज शर सन्धानो। अतिरिसताकियउरालगतानो
छाड़ेविषमबिशिखउरलागे। छूटि समाधि शम्भु तबजागे
भयउईशमनक्षोभ विशेखी। नयनउघारिसकलदिशिदेखी
सौरभपल्लवमदन विलोका। भयोकोपकम्पेउ त्रयलोका
तबशिव तीसरनयन उघारा। चितवतकामभयउजरिछारा
हाहाकार भयउ जग भारी। डरपे सुरभये असुर सुखारी

समुझि काम सुख सोच हिं भोगी। भये अकरुआ कसाध कयोगी
छं० योगी अकरुआ कसभय उपति गति सुनति रति मूर्छित भई।
रोदति वदति बहु भाँति करुणा करत शंकर पहँ गई॥
अति प्रेम करि विनती विविध विधि जोरि कर सन्मुख रही।
प्रभु आशुतोष कृपालु शिव अबला निरखि बोले सही ६
दो० अब तेरति तव नाथ कर होइहि नाम अनंग
बिनु वपु व्यापिहि सबहि पुनि सुनु निज मिलन प्रसंग ९६
जब यदुवंश कृष्ण अवतारा। होइहि हरण महा महि भारा
कृष्ण तनय होइहि पति तोरा। वचन अन्यथा होइ न मोरा
रति गवनी सुनि शंकर वानी। कथा अपर अब कहौं बखानी
देवन समाचार सब पाये॥ ब्रह्मादिक वैकुण्ठ सिधाये
सब सुर विष्णु विरञ्चि समेता। गये जहाँ शिव कृपा निकेता
पृथक पृथक तिन कीन्ह प्रशंसा। भये प्रसन्न चन्द्र अवतंसा।
बोले कृपा सिन्धु वृषकेतू। कहहु अमर आयहु केहि हेतू
कह विधि तुम प्रभु अन्तरयामी। तदपि भक्ति वश विनवौं स्वामी
दो० सकल सुरन के हृदय अस शंकर परम उछाह।
निज नयनन देखा चहहिं नाथ तुम्हार विवाह ९७

यह उत्सव देखिय भरि लोचन। सोकछु करिय मदन मद मोचन
कामजारि रति कहँ वर दीन्हा। कृपासिन्धु यह अति भल कीन्हा
शासति करि पुनि करहिं पसाऊ। नाथ प्रभुन कर सहज सुभाऊ
पारवती तप कीन्ह अपारा। करहु तासु अब अंगीकारा
सुनि विधि वचन समुझि प्रभु बानी। ऐसइ होउ कहा सुख मानी
तब देवन दुन्दुभी बजाई। बरषि सुमन जय जय सुरसाईं
अवसर जानि सप्तऋषि आये। तुरतहि विधि गिरि भवन पठाये
प्रथम गये जहँ रही भवानी। बोले वचन मधुर छल सानी

दो० कहा हमार न सुनेहु तब नारद कर उपदेश।
अब भा झूठ तुम्हार पराा जारेउ काम महेश ८८

सुनि बोली मुसकाय भवानी। उचित कहेउ मुनिवर विज्ञानी
तुम्हरे जान काम हर जारा। अबलगि शम्भु रहे सविकारा
हमरे जान सदा शिव योगी। अज अनवद्य अकाम अभोगी
जो मैं शिव सेयेउँ अस जानी। प्रीति समेत कर्म्म मन बानी
तो हमार पराा सुनहु मुनीशा। करिहहिं सत्य कृपानिधि ईशा
तुम जो कहा हर जारेउ मारा। सोअति बड़ अविवेक तुम्हारा
तात अनल कर सहज सुभाऊ। हिम तेहि निकट जाइ नहिं काऊ

गयेसमीप सो अवसिनशाई।जिमिसँपातिनिजपक्षगँवाई

दो॰ हियहरषेमुनिवचनसुनिदेखि प्रीतिविश्वास।
चलेभवानिहिनाइसिर गयेहिमाचलपास ९९

सबप्रसंगगिरिपतिहिंसुनावा।मदनदहनसुनिअतिदुखपावा
बहुरिकहेउरतिकरवरदाना।सुनिहिमवन्तबहुतसुखमाना
हृदयविचारि शम्भुप्रभुताई। सादर मुनिवर लिये बुलाई
सुदिनसुनरवतसुघरीसुहाई। वेगि वेद विधि लगन धराई
पत्रीसप्तऋषिनसोइदीन्हा। गहिपदविनयहिमाचलकीन्हा
जाइविधिहितिनदीन्हसोपाती। बाँचतप्रीतिनहृदयसमाती
लगनबाँचिअजसबहिंसुनाई। हरषे सुनि सब सुर समुदाई
सुमन वृष्टि नभ बाजन बाजे। मंगलकलशदशहुँदिशिसाजे

दो॰ लगेसँवारनसकलसुरवाहनविविधविमान।
होहिंसगुनमंगलसुभगकरहिंअप्सरागान १००

शिवहिंशम्भुगराकरहिंशृंगारा।जटासुकुटअहिमौरसँवारा
कुराडलकंकणापहिरेव्याला। तनुविभूतिपटकेहरिछाला
शशिललाटसुन्दरशिरगंगा। नयनतीनि उपवीत भुजंगा
गरलकराठउरनरशिरमाला। असिववेषशिवधामकृपाला

करत्रिशूलअरुडमरुविराजा। चलेबसह चढ़िबाजहिंबाजा
देखिशिवहिंसुरतियमुसकाहीं। बरलायकदुलहिनिजगनाहीं
विष्णुविरञ्चिआदिसुरब्राता। चढ़ि चढ़ि बाहनचलेबराता
सुरसमाज सबभाँतिअनूपा। नहिं बरात दूलह अनुरूपा

दो० विष्णुकहाअसविहँसितबबोलिसकलदिसिराज
बिलगबिलगहोइचलहुसबनिजनिजसहितसमाज ?

बर अनुहार बरात न भाई। हँसी करैहहु पर पुर जाई
विष्णुवचनसुनिसुरमुसकाने। निजनिजसेनसहितबिलगाने
मनही मन महेश मुसकाहीं। हरिके व्यंगबचन नहिं जाहीं
अतिप्रियबचनसुनतहरिकेरे। भृंगी प्रेरि सकल गरा टेरे
शिवअनुशासनसुनिसबआये। प्रभुपदजलजशीशतिननाये
नाना बाहन नाना बेखा। बिहँसे शिव समाज निज देखा
कोउमुखहीनबिपुलमुखकाहू। बिनुपदकरकोउबहुपदबाहू
बिपुलनयनकोउनयनबिहीना। रिष्टपुष्टकोउअतितनुक्षीना

छं० तनुक्षीनकोउअतिपीनपावनकोउअपावनतनुधरे।
भूषणाकरालकपालकरसबसद्यशोणिततनुभरे॥
खरस्वानसुअरखरशृगालमुखगणाबेषअगणितकोगुनै।

बहुजिनिसिप्रेतपिशाचयोगिनिभाँतिबरातनहिंबनै७

सो० नाचहिं गावहिं गीत परम तरंगी भूत सब ।
देखतअतिविपरीतबोलहिंवचनविचित्रविधि ९

जस दूलह तसि बनी बराता। कौतुकविविधहोहिंमगजाता
इहाँहिमाचलरचेउ विताना। अतिविचित्रनहिंजायबखाना
शैलसकलजहँलगिजगमाहीं। लघुविशालनहिंबररिाासिराहीं
बन सागर नद नदी तलावा। हिमगिरिसबकहँन्यवत पठावा
कामरूप सुन्दर तनु धारी। सहितसमाजसहित वर नारी
आयेसकलहिमाचल गेहा। गावहिं मंगल सहित सनेहा
प्रथमहिंगिरिबहुगृहसवँराये। यथायोग्यजहँ तहँ सब छाये
पुर शोभा अवलोकि सुहाई। लागै लघु विरञ्चि निपुराई
छं० लघुलागिविधिकीनिपुरता अवलोकिपुरशोभासही।
बनबाग कूप तड़ाग सरिता सुभगता सकको कही ॥
मंगल विपुल तोरण पताका केतु गृह गृह सोहहीं ।
वनितापुरुषसुन्दर चतुरछविदेखिमुनिमन मोहहीं ८

दो० जगदम्बा जहँ अवतरी सो पुर वरणि न जाइ।
ऋद्धिसिद्धिसम्पतिसकलनितनूतनअधिकाइ २

नगर निकट बरात जब आई। पुरखरभर शोभा अधिकाई
करि बनाव सजि वाहन नाना। चले लेन सादर अगवाना
हिय हरषे सुर सेन निहारी। हरिहिदेखि अतिभयेसुखारी
शिवसमाजजबदेखन लागे। बिडरि चले वाहन सब भागे
धरि धीरज तहँ रहे सयाने। बालक सब लै जीव पराने
गयेभवन पूँछहिं पितु माता। कहहिंवचनभयकम्पितगाता
कहियकहाकहिजाइनबाता। यमकर धारकिधौंवीरयाता
वर बौराह वरद असवारा। व्यालकपालविभूषणछारा

छं० तनुछारव्यालकपालभूषणनगनजटिलभयंकरा।
संगभूतप्रेतपिशाचयोगिनिविकटमुखरजनीचरा॥
जोजियतरहिहिबरातदेखतपुण्यबड़तिहिकरसही।
देखिहिसोउमाविवाहघरघरबात असिलरिकनकही॥

दो० समुझिमहेशसमाजसब जननिजनकमुसकाहिं
बालबुझायेविविधविधिनिडर होउडरनाहिं ३

लै अगवानि बरातहिं आये। दिये सबहिं जनवास सुहाये
मयना शुभ आरती सँवारी। संग सुमंगल गावहिं नारी
कञ्चन थार सोह मृदु पानी। परछन चलीं हरहिं हरषानी

विकट वेष जब रुद्रहिं देखा। अबलनिउरभयभयउविशेखा
भागि भवन पैठीं अतित्रासा। गये महेश जहाँ जनवासा
मयनाहृदयभयउदुखभारी। लीन्ही बोलिगिरीशकुमारी
अधिक सनेह गोद बैठारी। श्यामसरोजनयन भरिबारी
जेइँविधितुमहिंरूपअसदीन्हा। तेइँ जड़वर बाउर कस कीन्हा

छं० कसकीनवर बौराहविधिजेइँतुमहिंसुन्दरता दई।
जोफलचहियसुरतरुहिंसोबरबसबबूरहिंलागई॥
तुमसहितगिरितेगिरौंपावकजरौंजलनिधिमहँपरौं
घरजाउअपयशहोउजगजीवतविवाहनहौंकरौं १०

दो० भईविकलअबलासकलदुखितदेखिगिरिनारि
करिविलापरोदतिबदतिसुतासनेहसँभारि ४

नारद कर मैं कहा बिगारा। भवनमोर जिन बसत उजारा
असउपदेशउमहिंजिनदीन्हा। बौरे बरहिं लागि तप कीन्हा
साँचेहु उन के मोह न माया। उदासीन धन धाम न जाया
पर घर घालक लाज न भीरा। बाँझ कि जान प्रसव कीपीरा
जननिहिंविकलविलोकिभवानि। बोलीयुतविवेकमृदुबानी
असविचारिशोचहमतिमाता। सो न टरै जो रचै विधाता

करम लिखा जो बाबर नाहू। तौ कत दोष लगाइय काहू
तुमसन मिटहिं कि बिधि के अंका। मातु व्यर्थ जनि लेहु कलंका
छं० जनि लेहु मातु कलंक करुना परिहरहु अवसर नहीं।
दुख सुख जो लिख लिलार हमरे जाब जहँ पाउब तहीं॥
सुनि उमा बचन बिनीत कोमल सकल अबला सोचहीं।
बहु भाँति बिधिहि लगाइ दूषन नयन बारि बिमोचहीं॥१॥
दो० तेहि अवसर नारद सहित अरुन्धति रिषि सप्त समेत।
समाचार सुनि तुहिन गिरि गवने तुरत निकेत॥५॥
तब नारद सबही समुझावा। पूरब कथा प्रसंग सुनावा
मयना सत्य सुनहु मम बानी। जगदम्बा तव सुता भवानी
अजा अनादि शक्ति अविनाशिनि। सदा शम्भु अर्द्धंग निवासिनि
जग सम्भव पालन लय कारिनि। निज इच्छा लीला वपु धारिनि
जन्मी प्रथम दक्ष गृह जाई। नाम सती सुन्दर तनु पाई।
तहँउँ सती शंकरहिं बिवाहीं। कथा प्रसिद्ध सकल जग माहीं
एक बार आवति शिव संगा। देखेउ रघुकुल कमल पतंगा
भयउ मोह शिव कहा न कीन्हा। भ्रम बश बेष सीय कर लीन्हा
छं० सिय बेष सती जो कीन्ह तेहि अपराध शंकर परिहरी।

हर बिरह जाइ बहोरि पितु के यज्ञ योगानल जरी॥
अब जनमि तुम्हरेभवन निज पति लागि दारुण तप किया
अस जानि संशय तजहु गिरिजा सर्वदा शंकर प्रिया १२

दो० सुनि नारद के वचन तब सब कर मिटा विषाद।
छण महँ व्यापेउ सकल पुर घर घर यह संवाद ६

तब मयना हिमवन्त अनन्दे। पुनि पुनि पारवती पद वन्दे
नारि पुरुष शिशु युवा सयाने। नगर लोग सब अति हरषाने
लगे होन पुर मंगल गाना। सजे सबहिं हाटक घट नाना
भाँति अनेक भई जेवनारा। रूप गार्ह जस कछु व्यवहारा
सो जेवनार कि जाइ बखानी। बसहिं भवन जेहि मातु भवानी
सादर बोले सकल बराती। विष्णु विरंचि देव सब जाती
विविध पाँति बैठी जेवनारा। लगे परोसन निपुन सुआरा
नारि वृन्द सुर जेंवत जानी। लगीं देन गारि मृदु बानी
छं० गारी मधुर स्वर देहिं सुन्दरि व्यंग वचन सुनावहीं।
भोजन करहिं सुर अति बिलम्ब विनोद सुनि सचु पावहीं
जेंवत जो बढ़्यो अनन्द सो मुख कोटिहूँ न परै कह्यो।
अचवाइ दीन्हे पान गवने बास जहँ जाको रह्यो १३

दो० बहरि मुनिन्ह हिमवन्तकहँ लगन जनाई आइ।
समय बिलोकि बिबाह कर पठये देव बुलाइ ७

बोलि सकल सुर सादर लीन्हे। सबहिं यथोचित आसन दीन्हे
बेदी बेद बिधान सँवारी। सुभग सुमंगल गावहिं नारी
सिंहासन अति दिब्य सुहावा। जाइ न बरनि बिरञ्चि बनावा
बैठे सिव बिप्रन सिर नाई। हृदय सुमिरि निज प्रभु रघुराई
बहरि मुनीसन उमा बुलाई। करि सिंगार सखी लै आई
देखत रूप सकल सुर मोहे। बरनै छबि अस जग कबि को है
जगदम्बिका जानि भव भामा। सुरन्ह मन्ह मन कीन्ह प्रनामा
सुन्दरता मर्य्याद भवानी। जाइ न कोटिहुँ बदन बखानी

छं० कोटिहु बदन नहिं बनै बरनत जग जननि सोभा महा।
सकुचहिं कहत श्रुति सेष सारद मन्द मति तुलसी कहा॥
छबिखानि मातु भवानि गवनी मध्य मंडप सिव जहाँ।
अवलोकि सकहिं न सकुचि पति पद कमल मन मधुकर तहाँ

दो० मुनि अनुसासन गनपतिहि पूजेउ संभु भवानि।
कोउ सुनि संसय करै जनि सुर अनादि जियँ जानि ८

जस बिबाह कै बिधि श्रुति गाई। महामुनिन सो सब करवाई

गहि गिरीशकुशकन्यापानी। शिवहिंसमर्पीजानि भवानी
पाणिग्रहणजबकीन्हमहेशा। हिय हरषे तब सकलसुरेशा
वेद मंत्र मुनिवर उच्चरहीं। जयजयजय शंकरसुरकरहीं
बाजहिंबाजनविविधविधाना। सुमनवृष्टिनभभइविधिनाना
हरगिरिजा कर भयउ विवाहू। सकलभुवनभरिरहा उछाहू
दासी दास तुरग रथ नागा। धेनुवसनमणिवस्तुविभागा
अन्नकनकभाजनभरियाना। दाइज दीन्ह नजाय बखाना

छं० दाइजदियोबहुभाँतिपुनिकरजोरिहिमभूधरकह्यो।
का देउँ पूरणाकाम शंकर चरणापंकज गहि रह्यो॥
शिवकृपासागरश्वसुरकरपरितोषसबभाँतिनकियो
पुनिगहेउपदपायोजमयनाप्रेमपरिपूरणाहियो १५

दो० नाथउमामम प्राणासम गृह किंकरी करेहु।
क्षमेहु सकल अपराधअबहोइ प्रसन्नवरदेहु ९

बहुविधिशम्भुसासुससमुझाई। गवनीभवन चरणासिरनाई
जननीउमाबोलितबलीन्ही। लैउछंगसुन्दर शिख दीन्ही।
करेहु सदा शंकर पद पूजा। नारि धर्म्म पति देव न दूजा
वचनकहतिभरिलोचनवारी। बहुरिलाइउरलीन्ह कुमारी

कतविधिसिरजनारिजगमाहीं। पराधीन सपनेहु सुख नाहीं।
भइअतिप्रेमविकलमहतारी। धीरजकीन्हकुसमयविचारी
पुनिपुनिमिलतिपरतिगहिचरना। परमप्रेमकछुजाइनबरना
सबनारिनमिलिभेंटि भवानी। जाइजननिउरपुनिलपटानी

छं० जननिहिंबहुरिमिलिचलीउचितअशीषसबकाहूदई।
फिरिफिरिबिलोकतिमातुतनतबसखीलैशिवपहुँगई॥
याचकसकलसन्तोषिशंकरउमासहभवनहिंचले।
सबअमरहरषेसुमनबरषिनिशाननभवाजहिंभले १६

दो० चलेसंग हिमवन्त तब पहुँचावन अति हेतु।
विविधभाँतिपरितोषकरिविदाकीन्हइयकेतु १००

तुरत भवन आये गिरि राई। सकलशैल सरलिये बुलाई
आदर दान विनय बहु माना। सबकरविदाकीन्हहिमवाना
जबहिंशम्भु कैलासहिंआये। सुरसबनिजनिजलोकसिधाये
जगतमातुपितुशंभुभवानी। तेहि शृंगारनकहौं बखानी
करहिंविविधविधिभोगविलासा। गराानसमेतबसहिंकैलासा
हरगिरिजाविहारनितनयऊ। इहिविधिविपुलकालचलिगयऊ
तबजनमेउ षट वदन कुमारा। तारक असुर समर जिन मारा

आगम निगम प्रसिद्ध पुराना। एतसुरजन्मकर्म्मजगजाना।

छं० जगजान षटसुरजन्मकर्म्म प्रतापपुरुषारथमहा।
तेहि हेतु मैं वृषकेतु सुतकर चरित संक्षेपहि कहा॥
यहउमा शम्भुविवाहजे नरनारिकहहिं जे गावहीं।
कल्याणाकाज विवाह मंगलसर्व्वदासुखपावहीं १७

दो० चरित सिन्धुगिरिजा रमण वेद न पावहिं पार।
बरणौ तुलसीदास किमि अतिमतिमन्दगँवार ११

शम्भुचरितसुनिसरससुहावा। भरद्वाजमुनिअतिसुखपावा
बहु लालसा कथा पर बाढ़ी। नयन नीर रोमावलि ठाढ़ी
प्रेमविवश मुखआवनबानी। दशा देखि हरषे मुनि ज्ञानी
अहोधन्य तवजन्म मुनीशा। तुमहिंप्राणासमप्रियगौरीशा
शिवपदकमलजिनहिंरतिनाहीं। रामहिंतेसपनेहु नसुहाहीं।
बिनु छल विश्वनाथ पद नेहू। राम भक्त कर लक्षण येहू
शिवसमकोरघुपतिव्रतधारी। बिनुअघतजीसतीअसिनारी
पणकरिरघुपतिभक्तिदृढ़ाई। कोशिवसमरामहिंप्रियभाई

दो० प्रथम कहेहुँ मैं शिव चरित बूझा मरम तुम्हार।
शुचिसेवक तुम रामके रहित समस्त विकार १२

मैं जाना तुम्हार गुनशीला। कहौं सुनहु अब रघुपतिलीला
सुनु मुनि आजु समागम तोरे। कहि न जाय जस सुख मन मोरे
रामचरित अति अमित मुनीसा। कहि न सकहिं सत कोटि अहीसा
तदपि यथा श्रुत कहौं बखानी। सुमिरि गिरापति प्रभु धनुपानी
शारद दारु नारि सम स्वामी। राम सूत्रधर अन्तरयामी
जेहि पर कृपा करहिं जनजानी। कबि उर अजिर नचावहिं बानी
प्रेरौं सोइ कृपालु रघुनाथा। बरनौं बिशद तासु गुनगाथा
परम रम्य गिरिवर कैलासू। सदा जहाँ शिव उमा निवासू
दो० सिद्ध तपोधन योगिजन सुर किन्नर मुनि बृन्द।
बसहिं तहाँ सुकृती सकल सेवहिं शिव सुख कन्द १३
हरि हर बिमुख धर्म्म रत नाहीं। ते नर तहाँ न सपनेहुं जाहीं
तेहि गिरि पर बट बिटप बिशाला। नित नूतन सुन्दर सब काला
त्रिबिध समीर सुशीतल छाया। शिव बिश्राम बिटप श्रुति गाया
एक बार तेहि तर प्रभु गयऊ। तरु बिलोकि उर अति सुख भयऊ
निज कर डासि नागरिपु छाला। बैठे सहजहि शम्भु कृपाला।
कुन्द इन्दु बर गौर शरीरा। भुज प्रलम्ब परिधन मुनि चीरा।
तरुण अरुण अम्बुज सम चरणा। नख द्युति भक्त हृदय तम हरणा

भुजग भूति भूषरा त्रिपुरारी। आनन शरद चन्द्र छविहारी।
दो॰ जटा मुकुट सुरसरित शिर लोचन नलिन विशाल
नीलकराठ लावरायनिधि सोह बाल विधु भाल १४
बैठे सोह काम रिपु कैसे। धरे शरीर शान्त रस जैसे
पारवती भल अवसर जानी। गईं शम्भु पहँ मातु भवानी
जानि प्रिया आदर अति कीन्हा। वाम भाग आसन हर दीन्हा
बैठीं शिव समीप हरषाई। पूरब जन्म कथा चित आई
पति हिय हेतु अधिक अनुमानी। विहँसि उमा बोलीं प्रिय वानी
कथा जो सकल लोक हितकारी। सोइ पूँछन चह शैलकुमारी
विश्वनाथ मम नाथ पुरारी। त्रिभुवन महिमा विदित तुम्हारी
चर अरु अचर नाग नर देवा। सकल करहिं पद पंकज सेवा
दो॰ प्रभु समर्थ सर्वज्ञ शिव सकल कला गुरा धाम।
योग ज्ञान वैराग्य निधि प्रणत कल्पतरु नाम १५
जो मो पर प्रसन्न सुखरासी। जानिय सत्य मोहिं निज दासी
तौ प्रभु हरहु मोर अज्ञाना। कहि रघुनाथ कथा विधि नाना
जासु भवन सुरतरु तर होई। सहि कि दरिद्र जनित दुख सोई
शशि भूषरा अस हृदय विचारी। हरहु नाथ मम मति भ्रम भारी।

प्रभु जे मुनि परमारथवादी। कहहिं रामकहँ ब्रह्म अनादी
शेष शारदा वेद पुराना। सकल करहिं रघुपति गुण गाना।
तुम पुनि राम नाम दिन राती। सादर जपहु अनंग अराती
रामसो अवधनृपति सुत सोई। की अज अगुण अलख गति कोई
दो० जो नृपतनय तो ब्रह्म किमि नारि विरह मति भोरि।
देखि चरित महिमा सुनत भ्रमति बुद्धि अति मोरि १६
जो अनीह व्यापक विभु कोऊ। कहहु बुझाइ नाथ मोहिं सोऊ
अज्ञ जानि रिस जनि उर धरहू। जेहि विधि मोह मिटै सोइ करहू
मैं बन दीख राम प्रभुताई। अति भय विकल न तुमहिं सुनाई।
तदपि मलिन मन बोध न आवा। सो फल भली भाँति मैं पावा
अजहूं कछु संशय मन मोरे। करहु कृपा विनवौं कर जोरे
प्रभु तब मोहिं बहु भाँति प्रबोधा। नाथ सो समुझि करहु जनि क्रोधा
तब कर अस विमोह अब नाहीं। राम कथा पर रुचि मन माहीं
कहहु पुनीत राम गुण गाथा। भुजग राज भूषण सुर नाथा
दो० बन्दौं पद धरि धरणि शिर विनय करौं कर जोरि।
बरणहु रघुवर विशद यश श्रुति सिद्धान्त निचोरि १७
यद्यपि योषिता अति अधिकारी। दासी मन क्रम वचन तुम्हारी

गूढ़ौ तत्त्व न साधु दुरावहिं। आरत अधिकारी जहँ पावहिं
अति आरत पूछौं सुर राया। रघुपति कथा कहहु करि दाया
प्रथम सो कारण कहहु विचारी। निर्गुण ब्रह्म सगुण वपु धारी
पुनि प्रभु कहहु राम अवतारा। बालचरित पुनि कहहु उदारा
कहहु यथा जानकी विवाहा। राज तजा सो दूषण काहा
बनबसि कीन्हेउ चरित अपारा। कहहु नाथ जिमि रावण मारा
राज बैठि कीन्ही बहु लीला। सकल कहहु शंकर सुखशीला
दो॰ बहुरि कहहु करुणायतन कीन्ह जो अचरज राम।
प्रजा सहित रघुबंशमणि किमि गवने निज धाम १८
पुनि प्रभु कहहु सो तत्त्व बखानी। जेहि विज्ञान मगन मुनि ज्ञानी
भक्ति ज्ञान विज्ञान विरागा। पुनि सब बरणहु सहित विभागा
औरो राम रहस्य अनेका। कहहु नाथ अति विमल विवेका
जो प्रभु मैं पूँछा नहिं होई। सोउ दयालु राखहु जनि गोई
तुम त्रिभुवन गुरु वेद बखाना। आन जीव पामर का जाना
प्रश्न उमा की सहज सुहाई। छलविहीन सुनि शिव मन भाई।
हरहिय राम चरित सब आये। प्रेम पुलकि लोचन जल छाये
श्री रघुनाथ रूप उर आवा। परमानन्द अमित सुख पावा

दो० मगनध्यानरसदंडजुग पुनि मनबाहिर कीन्ह।
रघुपतिचरितमहेशतबहर्षितबरणौलीन्ह १९

झूठौ सत्य जाहि बिनु जाने। जिमि भुजंग बिनु रजु पहिचाने।
जेहि जाने जग जाइ हिराई। जागे यथा सपन भ्रम जाई
बन्दौं बालरूप सोइ रामू। सब सिधि सुलभ जपत जस नामू
मंगल भवन अमंगल हारी। द्रवौ सो दसरथ अजिर बिहारी
करि प्रनाम रामहिं त्रिपुरारी। हरषि सुधा सम गिरा उचारी
धन्य धन्य गिरिराज कुमारी। तुम समान नहिं कोउ उपकारी
पूँछेहु रघुपति कथा प्रसंगा। सकल लोक जग पावनि गंगा
तुम रघुबीर चरन अनुरागी। कीन्हेहु प्रश्न जगत हित लागी

दो० रामकृपा ते पारबति सपनेहु तव मन माहिं ।
शोक मोह सन्देह भ्रम मम बिचार कछु नाहिं १२०

तदपि असंका कीन्हेउँ सोई। कहत सुनत सब कर हित होई
जिन हरिकथा सुनी नहिं काना। श्रवरारन्ध्र अहि भवन समाना
नयनन सन्त दरश नहिं देखा। लोचन मोर पंख कर लेखा
ते शिर कटु तुमर सम तूला। जेन नमत हरि गुरु पद मूला।
जिन हरिभक्ति हृदय नहिं आनी। जीवत शव समान ते प्रानी

जो नहिं करहिं राम गुण गाना। जीह सु दादुर जीह समाना
कुलिश कठोर निठुर सोइ छाती। सुनि हरि चरित न जो हरषाती।
गिरिजा सुनहु राम की लीला। सुरहित दनुज विमोहन शीला
दो० राम कथा सुर धेनु सम सेवत सब सुख दानि।
सन्त सभा सुर लोक सम कोन सुनै अस जानि २१
राम कथा सुन्दर कर तारी। संशय विहँग उड़ावनि हारी
राम कथा कलि विटप कुठारी। सादर सुनु गिरिराज कुमारी
राम नाम गुण चरित सुहाये। जन्म कर्म अगणित श्रुति गाये
यथा अनन्त राम भगवाना। तथा कथा कीरति गुण नाना
तदपि यथा श्रुति जस मति मोरी। कहिहौं देखि प्रीति अति तोरी
उमा प्रश्न तव सहज सुहाई। सुखद सन्त सम्मत मोहिं भाई
एक बात नहिं मोहिं सोहानी। यदपि मोह वश कहेहु भवानी
तुम जो कहा राम कोउ आना। जेहि श्रुति गाव धरहिं मुनि ध्याना
दो० कहहिं सुनहिं अस अधम नर ग्रसे जे मोह पिशाच।
पाखण्डी हरि पद विमुख जानहिं झूँठ न साँच २२
अज्ञ अकोविद अन्ध अभागी। काई विषय मुकुर मन लागी
लम्पट कपटी कुटिल विशेषी। सपनेहु सन्त सभा नहिं देखी

कहहिं ते वेद असम्मत बानी। जिनहिंन सूझ लाभ नहिं हानी
मुकुर मलिन अरु नयन बिहीना। राम रूप देखहिं किमि दीना
जिन के अगुन न सगुन बिबेका। जल्पहिं कल्पित बचन अनेका
हरि माया बस जगत भ्रमाहीं। तिन हिं कहत कछु अघटित नाहीं
बातुल भूत बिबस मतवारे। ते नहिं बोलहिं बचन सँभारे
जिन कृत महा मोह मद पाना। तिन कर कहा करिय नहिं काना

सो० अस निज हृदय बिचारि तजि संसय भजु राम पद।
सुनु गिरिराज कुमारि भ्रम तम रबि कर बचन मम १०

सगुनहिं अगुनहिं नहिं कछु भेदा। गावहिं मुनि पुरान बुध बेदा
अगुन अरूप अलख अज जोई। भगति प्रेम बस सगुन सो होई
जो गुन रहित सगुन सो कैसे। जल हिम उपल बिलग नहिं जैसे।
जासु नाम भ्रम तिमिर पतंगा। तेहि किमि कहिय बिमोह प्रसंगा
राम सच्चिदानन्द दिनेशा। नहिं तहँ मोह निसा लवलेशा
सहज प्रकाश रूप भगवाना। नहिं तहँ पुनि बिज्ञान बिहाना
हरष बिषाद ज्ञान अज्ञाना। जीव धर्म्म अहमिति अभिमाना
राम ब्रह्म व्यापक जग जाना। परमानन्द परेश पुराना

दो० पुरुष प्रसिद्ध प्रकाश निधि प्रकट परावर नाथ।

रघुकुलमणिममस्वामिसोइकहिशिवनायउमाथ
निजभ्रमनहिंसमुझहिअज्ञानी। प्रभुपरमोह धरहिं जड़ प्रानी
यथागगन घनपटलनिहारी। झम्पेउभानुकहहिंकुविचारी
चितवजोलोचनअंगुलिलाये। प्रकटयुगलशशितेहिकेभाये
उमारामविषयकअसमोहा। नभतम धूम धूरिजिमि सोहा
विषयकरन सुरजीव समेता। सकल एक ते एक सचेता
सबकर परम प्रकाशकजोई। राम अनादि अवधपति सोई
जगतप्रकाश्यप्रकाशकरामू। मायाधीश ज्ञान गुण धामू
जासु सत्यता ते जड़ माया। भाससत्य इव मोह सहाया
दो० रजत सीप महँ भासजिमियथा भानुकरवारि।
यदपिमृषातिहुँकालसोइभ्रमनसकैकोउटारि२४
इहिविधिजगहरिआश्रितरहई। यदपिअसत्यदेतदुखअहई
ज्यों सपने शिर काटै कोई। बिनु जागे दुख दूरि न होई।
जासु कृपाअसभ्रममिटिजाई। गिरिजा सोइ कृपालु रघुराई
आदिअन्तकोउजासुनपावा। मतिअनुमाननिगमअसगावा
बिनु पद चलै सुनै बिनु काना। करबिनु कर्म्मकरै विधि नाना
आननरहितसकलरसभोगी। बिनु वाणी वक्ता बड़ योगी

तनु बिनु परस नयन बिनु देखा। ग्रहै घ्राण बिनु बास असेखा
असि सब भाँति अलौकिक करनी। महिमा जासु जाइ नहिं बरनी
दो० जेहि इमि गावहिं बेद बुध जाहि धरहिं मुनि ध्यान।
सोइ दसरथ सुत भक्त हित कोसल पति भगवान २५

काशी मरत जन्तु अवलोकी। जासु नाम बल करौं बिशोकी
सोइ प्रभु मोर चराचर स्वामी। रघुवर सब उर अन्तरयामी
बिबसहु जासु नाम नर कहहीं। अमित जन्म संचित अघ दहहीं
सादर सुमिरन जो नर करहीं। भव बारिधि गोपद इव तरहीं
राम सो परमातमा भवानी। तहँ भ्रम अति अबिहित तव बानी
अस संशय आनत उर माहीं। ज्ञान बिराग सकल गुन जाहीं
सुनि शिव के भ्रम भंजन बचना। मिटि गइ सब कुतर्क की रचना
भइ रघुपति पद प्रीति प्रतीती। दारुन असम्भावना बीती
दो० पुनि पुनि प्रभु पद कमल गहि जोरि पंकरुह पानि.
बोली गिरिजा बचन बर मनहुँ प्रेम रस सानि २६

शशि कर सम सुनि गिरा तुम्हारी। मिटा मोह शरदातप भारी।
तुम कृपालु सब संशय हरेऊ। राम स्वरूप जानि मोहि परेऊ
नाथ कृपा अब गयउ बिषादा। सुखी भयउँ प्रभु चरन प्रसादा।

अबमोहिंआपनिकिंकरिजानी।यद्यपिसहजजड़नारिअयानी
प्रथम जो मैं पूँछा सोइकहहू।जो मो पर प्रसन्न प्रभु अहहू
राम ब्रह्म चिन्मय अविनाशी।सर्ब्व रहित सब उर पुर वासी
नाथ धरेउ नर तनु केहि हेतू। मोहिसमुझायकहहु वृषकेतू
उमा वचन सुनि परम विनीता। राम कथा पर प्रीति पुनीता

दो॰ हियहरषे कामारि तब शंकर सहज सुजान ।
बहुविधिउमहिप्रशंसिपुनिबोलेकृपानिधान २७

सो॰ सुनुसुभकथाभवानिरामचरितमानसविमल
कहाभुशुण्डिबखानिसुनाविहँगनायकगरुड़ १

सोइसंवादउदारजिहि विधि भा आगे कहब।
सुनहु राम अवतार चरित परमसुन्दर अनघ। २
हरिगुणनाम अपारकथारूपअगणितअमित
मैंनिजमति अनुसार कहौं उमा सादर सुनहु। ३

सुनुगिरिजाहरिचरितसुहाये।विपुलविशदनिगमागमगाये
हरि अवतार हेतु जेहि होई । इदमित्थं कहि जाइ न सोई
राम अतर्क्य बुद्धि मन वानी। मतहमार अससुनहु भवानी।
तदपिसन्तमुनिवेदपुराना। जसकछुकहहिंस्वमति अनुमाना

तस मैं सुमुखि सुनावउँ तोही। समुझि परै जस कारण मोही
जब जब होइ धर्म्म की हानी। बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी
करहिं अनीति जाय नहिं बरणी। सीदहिं बिप्र धेनु सुर धरणी
तब तब प्रभु धरि बिबिध शरीरा। हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा

दो० असुर मारि थापहिं सुरन राखहिं निज श्रुति सेतु।
जग बिस्तारहिं बिशद यश राम जन्म कर हेतु २८

सो यश गाइ भक्त भव तरहीं। कृपासिन्धु जन हित तनु धरहीं
राम जन्म के हेतु अनेका ।। परम बिचित्र एक ते एका
जन्म एक दुइ कहौं बखानी। सावधान सुनु सुमति भवानी
द्वारपाल हरि के प्रिय दोऊ। जय अरु विजय जान सब कोऊ
बिप्र शाप ते दोनों भाई। तामस असुर देह तिन पाई
कनककशिपु अरु हाटकलोचन। जगत बिदित सुरपति मदमोचन
बिजयी समर बीर बिख्याता। धरि बराह बपु एक निपाता
होइ नरहरि पुनि दूसर मारा। जन प्रहलाद सुयश बिस्तारा

दो० भये निशाचर जाय ते महावीर बलवान ।
कुम्भकर्ण रावण सुभट सुर बिजयी जग जान २९

मुक्त न भयउ हते भगवाना। तीनि जन्म द्विज बचन प्रमाना।

एक वार तिन के हितलागी। धरेउ शरीर भक्त अनुरागी
कश्यप अदिति तहाँ पितुमाता। दशरथ कौशल्या विख्याता
एक कल्प इहि विधि अवतारा। चरित पवित्र किये संसारा
एक कल्प सुर देखि दुखारे। समर जलन्धर सन सब हारे
शम्भु कीन्ह संग्राम अपारा। दनुज महाबल मरै न मारा
परम सती असुराधिपनारी। तेहि बल ताहि न जीत पुरारी
दो० छल करि टारेउ तासु व्रत प्रभु सुर कारज कीन्ह।
जब तेहिं जानेउ मरम तब शाप कोप करि दीन्ह १३०
तासु शाप हरि कीन्ह प्रमाना। कौतुकनिधि कृपालु भगवाना
तहाँ जलन्धर रावण भयऊ। रण हति राम परम पद दयऊ
एक जन्म कर कारण एहा। जेहि लगि राम धरी नर देहा
प्रति अवतार कथा प्रभु केरी। सुनि सुनि वरणी कविन घनेरी
नारद शाप दीन्ह इक बारा।। कल्प एक तेहि लगि अवतारा
गिरिजा चकित भई सुनि बानी। नारद विष्णु भक्त मुनि ज्ञानी
कारण कवन शाप मुनि दीन्हा। का अपराध रमापति कीन्हा
यह प्रसंग मोहिं कहहु पुरारी। मुनि मन मोह सो अचरज भारी
दो० बोले बिहँसि महेश तब ज्ञानी मूढ़ न कोइ।

जेहिजसरघुपतिकरहिंजवसोतसतेहिक्षराहोउ ३१

सो० कहौं राम गुण गाय भरद्वाज सादर सुनहु ।
भवभंजनरघुनाथभजुतुलसीतजिमानमद २४

हिमगिरिगुहाएकअतिपावनि। बहसमीपसुरसरितसुहावनि
आश्रम परम पुनीत सुहावा। देखिदेवऋषिमनअतिभावा
निरखिशैलश्रीविपिनविभागा।भयउरमापतिपदअनुरागा
सुमिरतहरिहिंशापगतिबाधी।सहजविमलमनलागिसमाधि
मुनिगति देखि सुरेशडराना। कामहिंबोलिकीन्हसनमाना
सहित सहाय जाहु मम हेतू। चलेउहरषिहियजलचरकेतू
सुनासीरमनमहँअतित्रासा। चहत देवऋषिमम पुरवासा
जे कामी लोलुप जग माहीं। कुटिलकाकइवसबहिंडराहीं
दो० सूखवहाड़लेभागशठ श्वान निरखिमृगराज ।
छीनिलेइजनिजानजड़तिमिसुरपतिहिनलाज ३२

तेहिआश्रमहिंमदनजबगयऊ।निजमायावसन्तनिर्म्मयऊ।
कुसुमितविविधविटपबहुरंगा। कूजहिंकोकिलगुंजहिंभृंगा
चली सुहावनित्रिविधबयारी। काम कृशानु बढ़ावनि हारी
रम्भादिक सुर नारि नवीना। सकलअसमशरकलाप्रवीना

करहिं गान बहु तान तरंगा। बहुविधि क्रीड़हिं पानि पतंगा
देखि सहाय मदन हरषाना। कीन्हेसि पुनि प्रपंच बिधि नाना
कामकला कछु मुनिहिं न व्यापी। निज भयडरेउ मनोभव पापी।
सीम कि चापि सकै कोउ तासू। बड़ रखवार रमापति जासू

दो॰ सहित सहाय सभीत अति मानि हारि मन मैन।
गहेसि जाइ मुनिवर चरना कहि सुठि आरत बैन ३३

भयउ न नारद मन कछु रोषा। कहि प्रिय बचन काम परितोषा
नाइ चरन सिर आयसु पाई। गयउ मदन तब सहित सहाई।
मुनि सुशीलता आपनि करनी। सुरपति सभा जाय सब बरनी
सुनि सब के मन अचरज आवा। मुनिहिं प्रशंसि हरिहिं सिर नावा
तब नारद गवने शिव पाहीं। जीति काम अहमिति मन माहीं
मार चरित शंकरहिं सुनावा। अति प्रिय जानि महेश सिखावा
बार बार बिनवों मुनि तोहीं। जिमि यह कथा सुनायउ मोहीं
तिमि जनि हरिहि सुनायह कबहूं। चलेह प्रसंग दुराय तबहूं।

दो॰ शम्भु दीन्ह उपदेश हित नहिं नारदहि सुहान।
भरद्वाज कौतुक सुनह हरि इच्छा बलवान ३४

राम कीन्ह चाहैं सोइ होई। करै अन्यथा अस नहिं कोई

शम्भुवचनमुनिमनहिंनभाये। तब विरञ्चिके लोक सिधाये
एकबार करतल वर वीणा। गावतहरियुणागान प्रवीणा
क्षीरसिन्धु गवने मुनिनाथा। जहँवसश्रीनिवासश्रुतिमाथा
हरषिमिलेउठि रमा निकेता। बैठे आसन ऋषियहि समेता
बोले विहँसि चराचर राया। बहुतदिनन्हिंकीन्ही मुनिदाया
काम चरित नारद सब भाखे। यद्यपि प्रथमबरजि शिवराखे
अतिप्रचण्ड रघुपतिकीमाया। जेहिनमोहयाकोजगजाया
दो० रूखवदनकरि वचन मृदु बोले श्रीभगवान।
तुम्हरेसुमिरणातेमिटहिंमोहमारमदमान ३५
सुनु मुनि मोहहोइमन ताके। ज्ञानविरागहृदयनहिं जाके
ब्रह्मचर्य्य व्रत रत मति धीरा। तुमहिंकि करैमनोभव पीरा
नारदकहेउसहितअभिमाना। कृपातुम्हारिसकलभगवाना
करुणाणानिधिमनदीखविचारी। उर अंकुरेउगर्व्व तरु भारी
बेगि सो मैं डारिहौं उपारी। पणा हमार सेवक हितकारी
मुनिकर हित मम कौतुकहोई। अवशि उपायकरबमैं सोई
तबनारदहरिपदगहिनाई। चलेहृदयअहमिति अधिकाई
श्रीपति निजमाया तहँ प्रेरी। सुनहु कठिन करणीतेहिकेरी

दो० विरचेउ मगमहँ नगर तेहिं शत योजन विस्तार।
श्रीनिवास पुर ते अधिक रचना विविध प्रकार ३६

बसहिं नगर सुन्दर नर नारी। जनु बहु मनसिज रति तनु धारी।
तेहि पुर बसै शीलनिधि राजा। अगरीत हय गज सेन समाजा।
शत सुरेश सम विभव विलासा। रूप तेज बल नीति निवासा।
विश्व मोहनी तासु कुमारी। श्रीविमोह जेहि रूप निहारी।
सोहरि माया सब गुण खानी। शोभा तासु कि जाइ बखानी।
करै स्वयम्बर सो नृप बाला। आये तहँ अगरीत महिपाला।
सुनि कौतुकी नगर तेहि गयऊ। पुरवासिन सब पूछत भयऊ।
सुनि सब चरित भूप गृह आये। करि पूजा नृप मुनि बैठाये

दो० आनि दिखाई नारदहिं भूपति राजकुमारि।
कहहु नाथ गुण दोष सब एहि कर हृदय विचारि ३७

देखि रूप मुनि विरति विसारी। बड़ी बार लगि रहे निहारी।
लक्षण तासु विलोकि भुलाने। हृदय हर्ष नहिं प्रगट बखाने।
जो एहि बरै अमर सो होई। समरभूमि तेहि जीत न कोई।
सेवहिं सकल चराचर ताही। बरै शीलनिधि कन्या जाही।
लक्षण सब विचारि उर राखे। कछुक बनाइ भूप सन भाखे

सुतासुलक्षणीकहिन्हपपाहीं। नारद चले सोच मन माहीं।
करौंजाइ सोइ यतन विचारी। जेहिप्रकार मोहिंवरै कुमारी
जपतपकछुनहोइइहिकाला। हेविधिमिलैकवनविधिबाला।

दो० इहिअवसरचाहियपरमशोभारूपविशाल।
जोविलोकिरीझैकुँवरितबमेलैजयमाल ३८

हरि सन माँगौं सुन्दरताई। होइहिजातगहरु अतिभाई।
मोरेहितहरिसमनहिं कोऊ। इहि अवसर सहाय सोहोऊ
बहुविधिविनयकीन्हेतेहिकाला। प्रकटेउप्रभुकौतुकीकृपाला।
प्रभुविलोकिमुनिनयनजुड़ाने। होइहि काज हिये हरषाने।
अति आरत कहिकथासुनाई। करहु कृपा प्रभु होहु सहाई।
आपन रूप देहु प्रभु मोही। आनभाँति नहिं पावौं ओही
जेहिविधिनाथहोइहितमोरा। करौ सो वेगि दास मैं तोरा।
निजमायाबलदेखिविशाला। हियहँसि बोले दीनदयाला।

दो० जेहिविधिहोइहिपरमहितनारदसुनहुतुम्हार।
सोइहमकरबनआनकछुवचननस्वाहमार ३९

कुपथमाँगुरुजव्याकुलरोगी। वैद्यन देइ सुनहु मुनि योगी
इहिविधिहिततुम्हारमैंकीन्हा। कहिअसआन्तरहितप्रभुभयऊ

मायाविवशभये मुनि मूढ़ा। समुझी नहिं हरि गिरा निगूढ़ा
गवने तुरत तहाँ ऋषिराई। जहाँ स्वयम्बर भूमि बनाई
निज निज आसन बैठे राजा। बहुबनावकरिसहितसमाजा
मुनिमन हर्ष रूप अति मोरे। मोहिंतजिआनबरहिंनहिं भोरे
मुनिहितकारिकृपानिधाना। दीन्हकुरूपनजाइ बखाना
सो चरित्र लखिकाहुन पावा। नारदजानिसबहि सिर नावा
दो० रहे तहाँ दुइ रुद्र गरा ते जानहिं सब भेउ ।
विप्रवेष देखत फिरहिं परम कौतुकी तेउ १४०
जेहिसमाजबैठे मुनिजाई। हृदय रूप अहमिति अधिकाई
तहँ बैठे महेश गरा दोऊ। विप्रवेष गति लखै न कोऊ
कहहिं कूट नारदहिं सुनाई। नीकि दीन्हि हरि सुन्दरताई
रीझिहि राजकुँवरि छबिदेखी। इनहिंबरिहिहरिजानिविशेखी
मुनिहि मोहमन हाथ पराये। हँसहिंशम्भुगरा अतिसचुपाये
यदपिसुनहिंमुनिअटपटिबानी। समुझिनपरैबुद्धिभ्रमसानी
काहुनलखासोचरितविशेखी। सो स्वरूप नृपकन्या देखी
मर्कट वदन भयंकर देही। देखत हृदय क्रोध भा तेही।
दो० सखी संग लै कुँवरि तब चलिजनु राज मराल।

देखत फिरै महीप सब कर सरोज जयमाल ४१

जेहि दिसि बैठे नारद फूली। सो दिसि तेहिं न विलोकी भूली
पुनि पुनि मुनि उकसहिं अकुलाहीं। देखि दशा हर गन मुसुकाहीं
धरि नृपतनु तहँ गयेउ कृपाला। कुँअरि हरषि मेली जयमाला
दुलहिनि लेंगे लच्छि निवासा। नृपसमाज सब भयउ निरासा
मुनि अति विकल मोह मति नाँठी। मनि गिरि गई छूटि जनु गाँठी
तब हर गन बोले मुसुकाई। निज मुख मुकुर विलोकहु जाई
अस कहि दोउ भागे भयभारी। बदन दीख मुनि बारि निहारी
बेष विलोकि क्रोध अति बाढ़ा। तिन्हहिं शाप दीन्हा अति गाढ़ा

दो॰ होहु निशाचर जाइ तुम कपटी पापी दोउ।
हँसेहु हमहिं सो लेहु फल बहुरि हँसेउ मुनि कोउ ४२

पुनि जल दीख रूप निज पावा। तदपि हृदय सन्तोष न आवा।
फरकत अधर कोप मन माहीं। सपदि चले कमलापति पाहीं
देहौं शाप कि मरिहौं जाई। जगत मोरि उपहास कराई
बीचहि पन्थ मिले दनुजारी। संग रमा सोइ राजकुमारी
बोले मधुर वचन सुर साईं। मुनि कहँ चलेहु बिकल की नाईं
सुनत वचन उपजा अति क्रोधा। माया वश न रहा मन बोधा

पर सम्पदा सकहु नहिं देखी। तुम्हरे ईर्षा कपट विशेखी
मथत सिन्धु रुद्रहिं बौरायहु। सुरन्ह प्रेरि विष पान करायहु
दो॰ असुरसुराविषशंकरहिं आपुरमामणिचारु।
स्वारथसाधककुटिलतुमसदाकपटव्यवहार४३
परम स्वतंत्र न शिर पर कोई। भावै मनहिंकरहु तुम सोई
भलेहिमन्दमन्दहिभलकरहू। विस्मयहर्ष न हियकछु धरहू
डहँकिडहँकिपरकेहुसबकाहू। अतिअशंक मनसदाउछाहू
कर्म्मशुभाशुभतुमहिंनबाधा। अबलगितुमहिंनकाहूसाधा
भले भवन अबवायन दीन्हा। पावहुगे फल आपन कीन्हा
बञ्चेहु मोहिजवन धरि देहा। सोइ तनु धरहु शाप मम येहा
कपिआकृतितुमकीन्हहमारी। करिहहिंकीशसहायतुम्हारी
मम अपकार कीन्ह तुम भारी। नारि विरह तुम होब दुखारी
दो॰ शापशीशधरिहरषिहिय प्रभुसुरकारजकीन्ह।
निजमायाकीप्रबलताहरषिकृपानिधिलीन्ह४४
जब हरि माया दूरि निवारी। नहिं तहँ रमा न राज कुमारी
तबसुनिअतिसभीतहरिचरणा। गहे पाहि प्रणतारतिहरणा
मृषा होउमम शापकृपाला। मम इच्छा कह दीनदयाला।

मैं दुर्व्वचन कहेउँ बहुतेरे। कहसुनि पाप मिटहिंकिमि मेरे
जपहु जाइ शंकर शत नामा। होइहि हृदय तुरत विश्रामा
कोउनहिंशिवसमानप्रियमोरे। असप्रतीतितियागेहुजनिभोरे
जेहि पर कृपा न करहिं पुरारी। सोन पाव मुनि भक्ति हमारी
असउरधरिमहिविचरहुजाई। अबनतुमहिं माया नियराई

दो॰ बहुविधिमुनिहिंप्रबोधिप्रभुतबभयेअन्तर्द्धान।
सत्यलोकनारदचले करतरामगुणगान ४५

हरगणासुनिहिंजातपथदेखी। विगतमोह मनहर्षविशेखी
अतिसभीत नारद पहँ आये। गहि पद आरत वचन सुनाये
हरगणा हम नविप्रमुनिराया। बड़अपराधकीन्ह फलपाया
शाप अनुग्रह करहु कृपाला। बोले नारद दीन दयाला
निशिचरजाय होहुतुम दोऊ। वैभव विपुल तेज बल होऊ।
भुजबलविश्वजितबहुमजाहिआ। धरिहहिंविष्णुमनुजतनुतहिआ
समर मरणाहरिहाथतुम्हारा। होइहहु मुक्ति न पुनि संसारा
चले युगलमुनिपदशिर नाई। भये निशाचर कालहिं पाई।

दो॰ एककल्प इहिहेतुप्रभु लीन्हमनुज अवतार।
सुररंजनसज्जनसुखद हरिभञ्जनभूभार ४६

अहिविधिजन्मकर्महरिकेरे। सुन्दर सुखद विचित्र घनेरे
कल्पकल्पप्रतिप्रभुअवतरहीं। चारुचरितनानाविधिकरहीं
तब तब कथा मुनीशन गाई। परमपुनीत विचित्र सुहाई।
विविध प्रसंग अनूप बखाने। करहिंनसुनिआचरजसयाने
हरिअनन्तहरिकथाअनन्ता। कहहिंसुनहिंबहुविधिसबसन्ता
रामचन्द्र के चरित सुहाये। कल्पकोटि लगि जाहिन गाये
यह प्रसंग मैं कहा भवानी। हरिमाया मोहहिंमुनिज्ञानी
हरिकौतुकीप्रभातहितकारी। सेवतसुलभसकलदुखहारी।
सो० सुरनरमुनिकोउनाहिंजेहिनमोहमायाप्रबल।
असविचारिमनमाहिंभजियरामसायापतिहि१५
अपर हेतु सुनु शैल कुमारी। कहौं विचित्र कथा विस्तारी
जेहिकारणाअजअगुणाअनूपा। ब्रह्म भये कोशलपुर भूपा
जोप्रभुविपिनफिरतुमदेखा। बन्धुसमेतकिये मुनि वेखा
जासुचरितअवलोकिभवानी। सती शरीर रहिउ बौरानी।
अजहुंनछाया मिटत तुम्हारी। तासुचरितसुनुभमरुज हारी
लीलाकीन्हजोतेहिअवतारा। सोसबकहिहौं मतिअनुसारा
भरद्वाज सुनि शंकर बानी। सकुचि सप्रेम उमा मुसुकानी

लगे बहुरि बरणौं वृषकेतू। सो अवतार भयउ जेहिहेतू

दो० सोमैं तुम सन कहौं सब सुनु मुनीश मन लाइ।
रामकथा कलिमल हरणि मंगल करणि सुहाइ ९७

स्वायम्भुव मनु अरु शतरूपा। जिनते भइ नर सृष्टि अनूपा
दम्पति धरम आचरण नीका। अजहुँ गाव श्रुति जिनकी लीका
नृप उत्तानपाद सुत ताहू। ध्रुव हरिभक्त भयउ सुत जाहू
लघु सुत नाम प्रियव्रत ताही। वेद पुराण प्रशंसत जाही।
देवहूती पुनि तासु कुमारी। जो मुनि कर्दम की प्रिय नारी
आदिदेव प्रभु दीन दयाला। जठर धरेउ जिहि कपिल कृपाला
सांख्य शास्त्र जिन प्रकट बखाना। तत्व विचार निपुण भगवाना
तिहि मनु राज्य कीन्ह बहु काला। प्रभु आयसु बहु विधि प्रतिपाला

सो० होइ न विषय विराग भवन बसत भा चौथ पन।
हृदय बहुत दुख लाग जन्म गयउ हरिभक्ति बिन २६

बरबस राज सुतहि तब दीन्हा। नारि समेत गवन बन कीन्हा
तीरथ वर नैमिष विख्याता। अति पुनीत साधक सिधि दाता
बसहिं जहाँ मुनि सिद्ध समाजा। तहँ हिय हर्षि चले मनु राजा
पन्थ जात सोहहिं मति धीरा। ज्ञान भक्ति जनु धरे शरीरा

पहुँचे जाइ धेनुमति तीरा। हर्षि नहाने निर्मल नीरा
आये मिलन सिद्ध मुनि ज्ञानी। धर्म्म धुरन्धर नृप ऋषि जानी।
जहँ जहँ तीरथ रहे सुहाये। मुनिन सकल सादर करवाये
कृश शरीर मुनि पट परिधाना। सन्त सभा नित सुनहिं पुराना
दो॰ द्वादश अक्षर मंत्रवर जपहिं सहित अनुराग।
वासुदेव पद पंकरुह दम्पति मन अति लाग ४८
करहिं अहार शाक फल कन्दा। सुमिरहिं ब्रह्म सच्चिदानन्दा
पुनि हरि हेतु करन तप लागे। वारि अहार मूल फल त्यागे।
उर अभिलाष निरन्तर होई।। देखिय नयन परम प्रभु सोई
अगुण अखण्ड अनन्त अनादी। जेहि चिन्तहिं परमारथवादी
नेति नेति जेहि वेद निरूपा। चिदानन्द निरुपाधि अनूपा।
शम्भु विरंचि विष्णु भगवाना। उपजहिं जासु अंश ते नाना
ऐसे प्रभु सेवक वश अहहीं। भक्त हेतु लीला तनु गहहीं
जो यह वचन सत्य श्रुति भाषा। तो हमार पूजिहि अभिलाषा
दो॰ इहि विधि बीते वर्ष षट सहस वारि आहार।
संवत सप्त सहस्र पुनि रहे समीर अधार ४९
वरष सहस दश त्यागेउ सोऊ। ठाढ़े रहे एक पग दोऊ।

विधिहरिहरतपदेखिअपारा। मनु समीप आये बहु बारा
माँगहु वरबहु भाँति लुभाये। परमधीरनहिंचलहिं चलाये
अस्थि मात्र होइ रहा शरीरा। तदपिमनागपिनहिंमनपीरा
प्रभु सर्व्वज्ञ दास निज जानी। गति अनन्य तापस नृपरानी
माँगु माँगु वरभइ नभ बानी। परम गँभीर कृपामृत सानी
मृतक जियावनि गिरासुहाई। अवराारन्ध्र होइ उरजब आई
हृष्ट पुष्ट तनु भयउ सुहाये॥ मानहुं अबहिं भवन ते आये
दो॰ अवरासुधासमवचनसुनिपुलकप्रफुल्लितगात।
बोलेमनुकरिदराडवतप्रेमनहृदयसमात १५०
सुनु सेवक सुरतरु सुर धेनू। विधि हरि हर वन्दित पद रेनू
सेवतसुलभसकलसुखदायक। प्रणतपालसचराचरनायक
जो अनाथहितहम पर नेहू। तौ प्रसन्न ह्वै यह वर देहू।
जोस्वरूपवसशिवमनमाहीं। जेहिकारणामुनियतनकराहीं
जोभुशुण्डिमनमानसहंसा। सगुणाअगुणाजेहिनिगमप्रशंसा
देखहिंहमसोरूपभरिलोचन। कृपाकरहु प्रणतारतमोचन
दम्पतिवचनपरमप्रियलागे। मृदुल विनीत प्रेम रस पागे
भक्तबछलप्रभुकृपानिधाना। विश्ववास प्रकटे भगवाना

दो० नीलसरोरुह नीलमणि नीलनीरधर श्याम।
लाजहिं तनुशोभा निरखि कोटि कोटि शतकाम ५१

शरद मयंक बदन छबि सींवा। चारु कपोल चिबुक दर ग्रीवा
अधर अरुण दाड़िम सुन्दर नासा। विधुकर निकर विनिन्दक हासा
नव अम्बुज अम्बक छबि नीकी। चितवनि ललित भावती जीकी
भृकुटि मनोज चाप छबि हारी। तिलक ललाट पटल द्युति कारी
कुण्डल मकर मुकुट शिर भ्राजा। कुटिल केश जनु मधुप समाजा
उर श्रीवत्स रुचिर वनमाला। पदिक हार भूषण मणि जाला
केहरि कन्धर चारु जनेऊ। बाहु विभूषण सुन्दर तेऊ
करिकर सरिस सुभग भुजदण्डा। कटि निषंग कर शर कोदण्डा

दो० तड़ित विनिन्दक पीत पट उदर रेख वर तीन ।
नाभि मनोहर लेति जनु जमुन भँवर छबि छीन ५२

पदराजीव बरणि नहिं जाहीं। मुनि मनमधुप बसहिं जेहि माहीं
वामभाग शोभित अनुकूला। आदिशक्ति छबिनिधि जगमूला
जासु अंश उपजहिं गुणखानी। अगणित उमा रमा ब्रह्मानी
भृकुटि विलास जासु जग होई। राम वाम दिशि सीता सोई
छबि समुद्र हरिरूप विलोकी। इकटक रहे नयन पट रोकी

चितवहिं सादर रूप अनूपा॥ दृष्टि न मानहिं मनुज तातरूपा
हर्ष विवश तनु दशा भुलानी। परे दण्ड इव गहि पद पानी
शिरपरस्योमप्रभुनिजकरकंजा। तुरत उठाये करुणापुंजा
दो० बोलेकृपानिधानपुनि अतिप्रसन्नमोहिंजानि।
माँगहुवरजोइभावमन्नमहादानि अनुमानि ५३
सुनिप्रभुवचनजोरियुगपाणी। धरि धीरज बोले मृदुबाणी
नाथ देखिपदकमलतुम्हारे। अब पूजे सब काम हमारे
एकलालसा बड़ि मन माहीं। सुगमअगमकहिजातसोनाहीं
तुमहिंदेत अतिसुगमगुसाईं। अगमलागमोहिंनिजकृपणाई
यथादरिद्र विबुध तरु जाई। बहु सम्पति माँगत सकुचाई
तासु प्रभाव न जानै सोई। तथा हृदय मम संशय होई
सो तुम जानहु अन्तरयामी। पुरवहु मोर मनोरथ स्वामी
सकुचविहाय माँगुनृपमोहीं। मोरे नहिं अदेय कछु तोहीं
दो० दानिशिरोमणिकृपानिधिनाथकहौंसतभाव।
चाहौंतुमहिंसमानसुतप्रभुसनकवनदुराव ५४
देखिप्रीतिसुनिवचनअमोले। एवमस्तुकरुणानिधि बोले।
आपसरिसखोजौंकहँजाई। नृप तुव तनय होब मैं आई

शतरूपहिं विलोकिकरजोरे। देवि माँगु वर जो रुचि तोरे
जोवरनाथचतुरनृपमाँगा। सोइकृपालुमोहिंअतिप्रियलागा
प्रभुपरन्तुसुठि होति ढिठाई। यद्यपिभक्तहितुमहिंसुहाई
तुमब्रह्मादिजनकजगस्वामी। ब्रह्मसकल उर अन्तरयामी
असमसुझत मन संशयहोई। कहाजोप्रभुप्रमाणापुनिसोई
जेनिज भक्त नाथ तव अहहीं। जोसुखपावहिंसोगतिलहहीं
दो० सोइसुखसोइगतिसोइभगतिसोइनिजचरणासनेहु।
सोइविवेकसोइरहनिप्रभुमोहिंकृपाकरिदेहु ५५
सुनिमृदुगूढ़रुचिवररचना॥ कृपासिन्धु बोलेमृदु वचना
जोकछु रुचितुम्हरेमनमाहीं। मैंसो दीन्ह सब संशय नाहीं
मातु विवेक अलौकिकतोरे। कबहुंनमिटिहि अनुग्रहमोरे
बन्दिचरणामनु कहेउ बहोरी। अवरएकविनती प्रभु मोरी
सुतविषयकतवपदरतहोऊ। मोहिंबरुमूढ़कहैकिनकोऊ
मणिबिनुफणिजिमिजलबिनुमीना। ममजीवनतिमितुमहिंअधीना
असवरमाँगिचरणागहिरहेऊ। एवमस्तुकरुणानिधिकहेऊ
अबतुममममअनुशासनमानी। बसहुजाइसुरपतिरजधानी
सो० तहँकरिभोगविशालतातगयेकछुकालपुनि।

होइहहु अवध भुआल तबमैंहोब तुम्हार सुत १८
इच्छा मय नर भेष सँवारे ।। होइ हौं प्रकट निकेत तुम्हार
अंशन सहित देह धरि ताता। करिहौं चरित भक्त सुखदाता
जेसुनि सादर नर बड़ भागी । भवतरिहहिं ममता मदत्यागी
आदिशक्ति जेहिजग उपजाया। सोउ अवतरहि मोरि यह माया
पुरउब मैं अभिलाष तुम्हारा। सत्य सत्य प्रण सत्य हमारा
पुनि पुनि अस कहि कृपानिधाना। अन्तर्द्धान भये भगवाना
दम्पति उर धरि भक्ति कृपाला। तेहि आश्रम निबसे कछु काला
समय पाइ तनु तजि अनयासा। जाइ कीन्ह अमरावति बासा

दो० यह इतिहास पुनीत अति उमहिं कहेउ वृषकेतु।
भरद्वाज सुनि अपर पुनि राम जन्म कर हेतु ५६

सुनु मुनि कथा पुनीत पुरानी। जो गिरिजा प्रति शम्भु बखानी
विश्व विदित इक कैकय देशू। सत्यकेतु तहँ बसै नरेशू।
धर्म्म धुरन्धर नीति निधाना। तेज प्रताप शील बलवाना
तेहि के भये युगल सुत बीरा। सब गुण धाम महारण धीरा
राजधानी जेठे सुत आही। नाम प्रतापभानु अस ताही
अपर सुतहिं अरिमर्दन नामा। भुजबल अतुल अचल संग्रामा

भाइहि भाइ परस्पर प्रीती। सकल दोषछलवर्जितरीती
जेठे सुतहिंराज नृप दीन्हा। हरिहित आपु गवन बनकीन्हा
दो० जबप्रतापरविभयउ नृपफिरी दोहाई देश।
प्रजापालअतिवेदविधिकतहुंनहींअघलेश ५७
नृपहितकारकसचिवसुजाना। नामधर्मरुचिशुक्रसमाना
सचिवसयानबन्धुबलवीरा। आपु प्रताप पुञ्ज रणधीरा
सेन संग चतुरंग अपारा। अमितसुभटभयसमरजुझारा
सेन विलोकि राउ हरषाना। अरु बाजे गहगहे निशाना
विजय हेतु कटकाइ बनाई। सुदिनसाधिनृपचलेउबजाई
जहँ तहँ परीं अनेक लड़ाई। जीते सकल भूप बरिआई
सप्तद्वीप भुज बलवश कीन्हा। लैलै दराड छाँड़ि नृप दीन्हा।
सकलअवनिमराडलतेहिकाला। एकप्रतापभानुमहिपाला
दो० स्ववशविश्वकरिबाहुबलनिजपुरकीन्हप्रवेश।
अर्थ धर्म्म कामादिसुख सेवहिं सबै नरेश ५८
भूप प्रताप भानु बल पाई। कामधेनु भइ भूमि सुहाई
सबदुखवर्जित प्रजा सुखारी। धर्म्म शील सुन्दर नर नारी
सचिवधर्मरुचिहरिपदप्रीती। नृपहित हेतु सिखावत नीती

गुरु सुर सन्त पितर महिदेवा। करै सदा नृप सब की सेवा
भूप धर्म्म जे वेद बखाने। सकल करै सादर सुख माने
दिनप्रतिदेइविविधविधिदाना। सुनै शास्त्र वर वेद पुराना
नाना वापी कूप तड़ागा। सुमन वाटिका सुन्दर बागा
विप्रभवनसुर भवन सुहाये। सब तीरथनि विचित्र बनाये

दो० जहँलगिकहेपुराणश्रुतिएकएकसबयाग।
बारसहस्रसहस्रनृपकियेसहित अनुराग ५९

हृदयनकछुफलअनुसन्धाना। भूप विवेकी परम सुजाना
करै जो धर्म्मकर्म्ममनबानी। वासुदेव अर्पित नृप ज्ञानी
चढ़ि वर वाजि बारइक राजा। मृगयाकरसबसाजिसमाजा
विन्ध्याचल गँभीर बनगयऊ। मृगपुनीत बहु मारतभयऊ
फिरतविपिननृपदीखबराहू। जनुबनदुरेउशशिहियसिराहू
बड़विधुनहिंसमातसुखमाहीं। मनहुंक्रोधबशउगिलतनाहीं
कोल करालदशनछबिगाई। तनुविशाल पीवर अधिकाई
घुरुघुरात हय आरव पाये। चकितविलोकतकानउठाये

दो० नीलमहीधरशिखरसमदेखिविशालवराह।
चपरिचलेउहयसुकिनृपहाँकिनहोइनिबाह १६०

आवत देखि अधिक रव बाजी। चला वराह मरुत गति भाजी
तुरत कीन्ह नृप सर सन्धाना। महि मिलि गयउ बिलोकत बाना
तकि तकि तीर महीश चलावा। करि छल सुअर सरीर बचावा
प्रगटत दुरत जाय मृग भागा। रिस बस भूप चलेउ सँग लागा
गयउ दूरि घन गहन बराहू। जहँ नाहीं गज बाजि निबाहू
अति अकेल बन बिपुल कलेसू। तदपि न मृग मग तजै नरेसू।
कोल बिलोकि भूप बड़ धीरा। भागि पैठि गिरि गुहा गँभीरा
अगम देखि नृप अति पछिताई। फिरेउ महा बन परेउ भुलाई
दो० खेद खिन्न छुधित तृषित राजा बाजि समेत।
खोजत ब्याकुल सरित सर जल बिनु भयउ अचेत ६१
फिरत बिपिन आश्रम इक देखा। तहँ बस नृपति कपट मुनि बेखा
जासु देश नृप लीन्ह छड़ाई॥ समर सेन तजि गयउ पराई
समय प्रताप भानु कर जानी। आपन अति असमय अनुमानी
गयउ न गृह मन बहुत गलानी। मिला न राजहिं नृप अभिमानी
रिस उर मारि रंक जिमि राजा। बिपिन बसै तापस के साजा
तासु समीप गमन नृप कीन्हा। यह प्रताप रबि तेहँ तब चीन्हा
राउ सपथि नहिं सो पहिचाना। देखि सुबेष महा मुनि जाना

उतरि तुरँग ते कीन्ह प्रणामा। परम चतुर न कहेउ निज नामा
दो० भूपति तृषित बिलोकि तेँ सरबर दीन्ह दिखाइ।
मज्जन पान समेत हय कीन्ह नृपति हरषाइ ६२
गा श्रम सकल सुखी नृप भयऊ। निज आश्रम तापस लै गयऊ
आसन दीन्ह अस्त रबि जानी। पुनि तापस बोला मृदु बानी
को तुम कस बन फिरहु अकेले। सुन्दर युवा जीव पर हेले।
चक्रबर्त्ति के लक्षन तोरे। देखत दया लागि अति मोरे
नाम प्रतापभानु अवनीशा। तासु सचिव मैं सुनहु मुनीशा
फिरत अहेरहिं परेउँ भुलाई। बड़े भाग्य देखेउँ पद आई
हम कहँ दुर्लभ दरस तुम्हारा। जानत हौं कछु भल होनिहारा
कह मुनि तात भयउ अँधियारा। योजन सत्तरि नगर तुम्हारा
दो० निसा घोर गम्भीर बन पन्थ न सूझ सुजान।
बसहु आजु अस जानि तुम जायउ होत बिहान ६३
तुलसी जसि भवितव्यता तैसे मिलै सहाय।
आपुन आवै ताहि पै कि ताहि तहाँ लै जाय ६४
भलेहिं नाथ आयसु धरि सीसा। बाँधि तुरँग तरु बैठ महीसा
नृप बहु भाँति प्रसंसेउ ताही। चरन बन्दि निज भाग्य सराही

पुनि बोलेउ मृदु गिरा सुहाई। जानि पिता प्रभु करौं ढिठाई
मोहिं सुनीस सुत सेवक जानी। नाथ नाम निज करुबखानी
तेहि न जान नृप नृपति सोजाना। भूप सुहृद्य सो कपट सयाना
बैरी पुनि सत्रिय पुनि राजा। छल बल कीन्ह चहै निज काजा।
समुझि राज सुख दुखित अराती। अवाँ अनल इव सुलगै छाती
सरल बचन नृप के सुनि काना। बैर सँभारि हृदय हरषाना।
दो० कपट बोरि बानी मृदुल बोलेउ युक्ति समेत।
नाम हमार भिखारि अब निर्धन रहित निकेत ६५
कह नृप जे विज्ञान निधाना। तुम सारिखे गलित अभिमाना
सदा अपन पौ रहहिं दुराये। सब विधि कुशल कुवेष बनाये
तेहि ते कहहिं सन्त श्रुति टेरे। परम अकिंचन प्रिय हरि केरे
तुम सम अधन भिखारि अगेहा। होत बिरञ्चि शिवहि सन्देहा
जोसि सोसि तव चरनन मामी। मो पर कृपा करिय अब स्वामी
सहज प्रीति भूपति की देखी। आप विषे विश्वास विशेखी
सब प्रकार राजहिं अपनाई। बोलेउ अधिक सनेह जनाई
सुनु सति भाव कहौं महिपाला। इहाँ बसत बीते बहु काला
दो० अबलगि मोहिं न मिलेउ कोउ मैं न जनायों काहु।

लोकमान्यता अनल सम कर तप कानन दाहु ६६

सो० तुलसी देखि सुवेष भूलहिं मूढ़ न चतुर नर।
सुन्दर केकिहि पेखि वचन सुधा सम असन अहि १९

ताते गुप्त रहौं जग माहीं। हरि तजि किमपि प्रयोजन नाहीं
प्रभु जानत सब बिनहिं जनाये। कहहु कवन सिधि लोक रिझाये
तुम्ह सुचि सुमति परम प्रिय मोरे। प्रीति प्रतीति मोहि पर तोरे
अब जो तात दुराबौं तोही। दारुण दोष घटै अति मोही
जिमि जिमि तापसु कथइ उदासा। तिमि तिमि नृपहि होइ बिस्वासा
देखा स्वबस कर्म मन बानी। तब बोला तापस बक ध्यानी
नाम हमार एकतनु भाई। सुनि नृप बोले उपनि सिर नाई
कहहु नाम कर अरथ बखानी। मोहि सेवक अति आपन जानी

दो० आदि सृष्टि उपजी जबहिं तब उतपनि भइ मोरि।
नाम एक तनु हेतु तेहि देह न धरी बहोरि ६७

जनि आचरज करहु मन माहीं। सुत तप ते दुर्लभ कछु नाहीं
तप बल ते जग सृजै बिधाता। तप बल बिष्नु भये परित्राता
तप बल संभु करहिं संहारा। तप ते अगम न कछु संसारा
भयउ नृपहि सुनि अति अचरजा। कथा पुरातन कहै सो लागा

कर्म्म धर्म्म इतिहास अनेका। करैं निरूपण बिरति बिबेका
उद्भव पालन प्रलय कहानी। कहेसि अमित आश्चर्य्य बखानी
सुनि महीश तापस बस भयऊ। आपन नाम कहन तब लयऊ
कह तापस नृप जानौं तोहीं। कीन्हेउ कपट लाग भल मोहीं
सो० सुनु महीश असि नीति जहँ तहँ नाम न कहहिं नृप।
मोहिं तोहिं पर अति प्रीति परम चतुरता निरखि तव २०
नाम तुम्हार प्रताप दिनेशा। सत्यकेतु तव पिता नरेशा
गुरु प्रसाद सब जानिय राजा। कहिय न आपन जानि अकाजा
देखि तात तव सहज सुधाई। प्रीति प्रतीति नीति निपुणाई
उपजि परी ममता मन मोरे। कहेउँ कथा निज बूझे तोरे
अब प्रसन्न मैं संशय नाहीं। माँगु जो भूप भाव मन माहीं
सुनि सुबचन भूपति हरषाना। गहि पद बिनय कीन्ह बिधि नाना
कृपासिन्धु मुनि दरशन तोरे। चारि पदारथ करतल मोरे।
प्रभुहिं तथापि प्रसन्न बिलोकी। माँगि अगम बर होउँ असोकी
दो० जरा मरण दुख रहित तनु समर न जीतै कोउ।
एकछत्र रिपुहीन महि राज कल्प शत होउ ६८
कह तापस नृप एसइ होऊ। कारण एक कठिन सुनु सोऊ

कालहु तव पद नाइहि शीशा। एक विप्र कुल छाँडि महीशा
तप बल विप्र सदा वरियारा। तिनके कोप न कोउ रखवारा
जो विप्रन वश करहु नरेशा। तौ तव वश विधि विष्णु महेशा
चलन ब्रह्म कुलमें वरिआई। सत्य कहौं दोउ भुजा उठाई
विप्र शाप बिनु सुनु महिपाला। तोर नाश नहिं कवनेहु काला
हरषेउ राउ वचन सुनि तासू। नाथ न होइ मोर अब नासू
तव प्रसाद प्रभु कृपानिधाना। मोकहँ सर्व काल कल्याना
दो० एवमस्तु कहि कपट मुनि बोला कुटिल बहोरि।
मिलब हमार भुलाब जनि कहहु तो मोरि नरखोरि ६९
ताते मैं तोहिं बरजौं राजा। कहे कथा तव परम अकाजा
छठे श्रवण यह परत कहानी। नाश तुम्हार सत्य मम बानी
यह प्रकटे अथवा द्विज शापा। नाश तोर सुनु भानुप्रतापा
आन उपाय निधन तब नाहीं। जो हरिहर कोपहिं मन माहीं
सत्य नाथ पद गहि नृप भाखा। द्विज गुरु कोप कहहु को राखा
राखै गुरु जौ कोप विधाता। गुरु विरोध नहिं कोउ जग त्राता
जो न चलब हम कहे तुम्हारे। होइ नाश नहिं शोच हमारे
एकहि डर डरपत मन मोरा। प्रभु महिदेव शाप अति घोरा।

दो० होहिं विप्रवंश कवनविधि कहहु कृपा करि सोउ।
तुम तजि दीनदयालु निज हितू न देखौं कोउ १७०

सुनु नृप विविध यतन जग माहीं। कष्टसाध्य पुनि होहिं कि नाहीं
अहै एक अति सुगम उपाई। तहाँ परन्तु एक कठिनाई
मम आधीन युक्ति नृप सोई। मोर जाब तव नगर न होई।
आजु लगे अरु जब तेहि अयऊं। काहू के गृह ग्राम न गयऊं
जो न जाब तव होइ अकाजू। बना आइ असमंजस आजू।
सुनि महीप बोले मृदु बानी। नाथ निगम असनीति बखानी
बड़ेसनेह लघुन पर करहीं। गिरि निज शिरन सदा तृन धरहीं
जलधि अगाध मौलि बह फेनू। संतत धरनि धरत शिर रेनू

दो० अस कहि गहे नरेश पद स्वामी होहु कृपालु।
मोहिं लागि दुख सहिय प्रभु सज्जन दीनदयालु ७१

जानि नृपहिं आपन आधीना। बोला तापस कपट प्रवीना
सत्य कहौं भूपति सुनु तोही। जग महँ नहिं दुर्लभ कछु मोही
अवशि काज मैं करिहौं तोरा। मन क्रम वचन भक्त तू मोरा
योग युक्ति तप मंत्र प्रभाऊ। फलै तबहिं जब करिय दुराऊ
जो नरेश मैं करउँ रसोई। तुम परसहु मोहिं जान न कोई

अन्नसोजोइजोइभोजनकरई। सोइसोइतबआयसुअनुसरई
पुनि तिनके गृह जेंवै जोऊ। तब बस होय भूप सुनु सोऊ
जाइ उपाय रचहु नृप येहू। संबत भरि संकल्प करेहू
दो० नित नूतन द्विज सहस शत बरहु सहित परिवार।
मैं तुम्हरे संकल्प लगि दिनहिं करबजेंवनार ७२
इहिविधि भूप कष्ट अति थोरे। होइहहिं सकल विप्रबस तोरे
करिहहिं विप्र होम मख सेवा। तेहि प्रसंग सहजहिं बस देवा
और एक तोहिं कहौं लखाऊ। मैं यहि वेष न आउब काऊ
तुम्हरे उपरोहित कहँ राया। हरि आनबमैं करि निज माया
तपबल तेहि करि आपु समाना। रखिहौं इहाँ बरष परमाना
मैं धरि तासु वेष सुनु राजा। सबविधि तोर सँवारब काजा
गै निशि बहुत शयन अब कीजे। मोहिं तोहिं भूप भेंट दिन तीजे
मैं तपबल तोहिं तुरग समेता। पहुँचैहौं सोवत तहि निकेता
दो० मैं आउब सोइ वेष धरि पहिचानेहु तब मोहिं।
जब एकान्त बोलाइ सब कथा सुनाऊं तोहिं ७३
शयन कीन्ह नृप आयसु मानी। आसन जाइ बैठ छलज्ञानी
श्रमित भूप निद्रा अति आई। सो किमि सोव सोच अधिकाई

कालकेतुनिशिचरतहँआवा।जेहिसूकरहोइनृपहिंभुलावा
परम मित्र तापस नृप केरा। जानै सो अति कपट घनेरा
तेहिकेशतसुतअरुदशभाई।खलअतिअजयदेवदुखदाई
प्रथमहिंभूपसमर सब मारे।विप्र सन्त सुर देखि दुखारे
तेहिखलपाछिलबैरसँभारा।तापसनृपमिलिमंत्र विचारा
जेहिरिपुक्षयसोइरचेसिउपाऊ।भावीवश न जान कछुराऊ
दो० रिपुतेजसी अकेल अपिलघु करिगनियनताहु।
अजहुँदेतदुखरविशशिहिंसिर अवशेषितराहु ७४
तापसनृपनिजसखहिंनिहारी।हरषिमिलेउउठिभयउसुखारी
मित्रहिं कहिसबकथासुनाई।यातुधान बोला सुख पाई
अबसाधौंरिपुसुनहु नरेशा।जो तुम कीन्ह मोर उपदेशा
परिहरिशोचरहहुतुमसोई।बिनुऔषधहिंव्याधिविधिखोई
कुलसमेतरिपु मूल बहाई।चौथे दिवस मिलब मैं आई
तापसनृपहिं बहुत परितोषी।चला महा कपटी अतिरोषी
भानुप्रतापहि बाजि समेता।पहुँचायसिसोवतहि निकेता
नृपहिं नारि पहँ शयन कराई।हयगृह बाँधेसि बाजि बनाई
दो० राजा के उपरोहितहिं हरि लै गयउ बहोरि ।

तैं रखवसि गिरिरखोहु महँ माया करिमति भोरि ७५
आपु बिरचि उपरोहित रूपा। परा जाइ तेहि सेज अनूपा।
जागेउ नृप अनभयउ बिहाना। देखि भवन अति अचरज माना।
मुनि महिमा मन महँ अनुमानी। उठे गवहिं जेहि जान न रानी।
कानन गयउ बाजि चढ़ि तेही। पुर नर नारि न जानेउ केही।
गये याम युग भूपति आवा। घर घर उत्सव बाजु बधावा।
उपरोहितहिं देख जब राजा। चकित बिलोकि सुमिरि सोइ काजा।
युग सम नृपहिं गये दिन तीनी। कपटी मुनि पद हरि मति लीनी।
समय जानि उपरोहित आवा। नृपहि मते सब कहि समुझावा।
दो० नृप हरषे पहिचानि गुरु भ्रम बस रहा न चेत।
बरे तुरत शत सहस बर बिप्र कुटुम्ब समेत ७६
उपरोहित जेंवनार बनाई। छरस चारि बिधि जसि श्रुति गाई।
माया मय तेहँ कीन्ह रसोई। व्यञ्जन बहु गनि सकै न कोई।
बिबिध मृगन कर आमिष राँधा। तेहि महँ बिप्र माँस खल साँधा।
भोजन कहँ सब बिप्र बुलाये। पद पखारि सादर बैठाये।
परसन लाग जबहिं महिपाला। भइ अकाश बानी तेहि काला।
बिप्र बृन्द उठि उठि गृह जाहू। है बड़ि हानि अन्न जनि खाहू

भयउ रसोई भूसुर मासू। सब द्विज उठे मानि विश्वासू
भूपविकलमतिमोहभुलानी। भावीवशन आव मुख बानी
दो॰ बोले विप्रसकोपतब नहिं कछु कीन्ह विचार।
जाइनिशाचरहोहुनृपमूढ़ सहितपरिवार ७७
क्षत्र बन्धु तैं विप्र बुलाई। घालै लिये सहित समुदाई
ईश्वर राखा धर्म्म हमारा। जैहसि तैं समेत परिवारा
संव्वत मध्य नाश तव होऊ। जलदाता न रहहिंकुलकोऊ
नृपसुनिशापविकलअतित्रासा।भईबहुरिवरगिराअकासा
विप्रन्हशापविचारिनदीन्हा। नहिंअपराधभूपकछुकीन्हा
चकितविप्रसबसुनिनभबानी। भूप गये जहँ भोजन खानी
तहँनअशननहिंविप्रसुआरा। फिरेउ राव मन शोच अपारा
सब प्रसंग महिसुरन सुनाई। त्रसितपरेउअवनीअकुलाई
दो॰ भूपति भावीमिटै नहिंयदपि न दूषणा तोर।
कियेअन्यथाहोइनहिंविप्रशापअतिघोर७८
असकहि सबमहिदेवसिधाये। समाचार पुर लोगन पाये
शोचहिं दूषणा दैवहिं देहीं। विरचत हंस काकिकियजेहीं
उपरोहितहिं भवन पहुँचाई। असुर तापसहिंखबरिजनाई

तेहिरवलजहँतहँपत्रपठाये। सजिसजिसेनभूपसब आये
घेरिन्हि नगरनिशान बजाई। विविधभाँतिनितहोतिलराई
जूझै सकलसुभट कै करणी। बन्धु समेत परेउ नृप धरणी
सत्यकेतु कुलकोइ न बाँचा। विप्रशाप किमिहोइ असाँचा
रिपुहिंजीतिनृपनगरबसाई। निजनिजपुरगयेजययशपाई
दो० भरद्वाज सुनु जाहिजब होत विधाता वाम।
धूरिमेरुसम जनकयम ताहिव्यालसमदाम १६
कालपाइमुनिसुनुसोइराजा। भयउनिशाचरसहितसमाजा
दशशिरताहिबीसभुजदण्डा। रावण नाम वीर वरिबराडा
भूप अनुज अरिमर्दन नामा। भयउसोकुम्भकरणबलधामा
सचिवजोरहाधर्म्मरुचिजासू। भयउविभात्रबन्धु लघुतासू
नामविभीषणाजेहिजगजाना। विष्णु भक्त विज्ञान निधाना
रहे जे सुत सेवक नृप केरे। भये निशाचर घोर घनेरे।
कामरूपखलजिनिसअनेका। कुटिलभयंकरविगतविवेका
कृपारहित हिंसक सबपापी। वरणिानजाइँविश्वपरितापी
दो० उपजे यदपि पुलस्त्य कुल पावन अमल अनूप
तदपिमहीसुरशापवशभयेसकलअघरूप १८०

कीन्ह विविध तप तीनिउँभाई। परम उग्र सो बरणि न जाई
गयउ निकट तप देखि बिधाता। माँगहु बर प्रसन्न मैं ताता
करि बिनती पद गहि दससीसा। बोलेउ बचन सुनहु जगदीसा
हम काहू कर मरहिं न मारे। बानर मनुज जाति दुइ बारे।
एवमस्तु तुम बड़ तप कीन्हा। मैं ब्रह्मा मिलि तेहि बर दीन्हा
पुनि प्रभु कुम्भकर्ण पहँ गयऊ। तेहि बिलोकि मन बिस्मय भयऊ
जोयह खलनित करब अहारा। होइहि सब उजार संसारा
सारद प्रेरि तासु मति फेरी। माँगेसि नींद मास षट केरी
दो॰ गयउ बिभीषण पास तब कहा पुत्र बर माँगु।
तेहि माँगेउ भगवन्त पद कमल अमल अनुरागु ८१
तिनहिं देइ बर ब्रह्म सिधाये। हरषित ते अपने गृह आये
मय तनुजा मन्दोदरि नामा। परम सुन्दरी नारि ललामा
सोइ मय दीन्ह रावणहिं आनी। भई सो यातुधान पति रानी
हरषित भयउ नारि भलि पाई। पुनि दोउ बन्धु बिवाहेसि जाई।
गिरि त्रिकूट एक सिन्धु मझारी। बिधि निर्मित दुर्गम अति भारी
सोइ मय दानव बहुरि सँवारा। कनक रचित मनि भवन अपारा
भोगवती जसु अहिकुल बासा। अमरावति जस सक्र निवासा

तिनतेअधिकरम्यअतिबंका। जगविख्यातनामतेहिलंका
दो० खाईसिन्धुगँभीर अति चारिउदिशिफिरिआव।
कनककोटमणिखचितदृढ़बरणिनजाइबनाव८२
हरिप्रेरितजिहिकल्पजोइ यातुधानपतिहोय।
शूर प्रतापी अतुलबल दलसमेत बससोय ८३
रहे तहाँ निशिचर भट भारे। ते सब सुरन समर संहारे
अब तहँ रहहिं शक्र के प्रेरे। रक्षक कोटि यक्षपति केरे
दशमुखकतहुँखबरिअसिपाई। सेनसाजिगढ़घेरिसिजाई
देखि विकट भट बड़ि कटकाई। यक्ष जीव लै गये पराई
फिरि सब नगर दशाननदेखा। गयउशोचसुखगयउविशेखा
सुन्दरसहज अगम अनुमानी। कीन्ह तहाँ रावण रजधानी
जेहिजसयोग्यबाँटिगृहदीन्हे। सुखीसकलरजनीचरकीन्हे
एक बार कुबेर पहँ धावा। पुष्पक यान जीति लै आवा
दो० कौतुकही कैलास पुनि लीन्हेसि जाइउठाइ।
मनहुँतौलिभटबाहुबलचला अधिकसुखपाइ ८४
सुखसम्पतिसुत सेन सहाई। जय प्रताप बल बुद्धि बड़ाई
नितनूतनसबबाढ़तजाई। जिमि प्रति लाभ लोभ अधिकाई

अतिबलकुम्भकर्ण अस भ्राता। जेहि कहँ नहिं प्रतिभट जग जाता
करि मद पान सोव षट मासा। जागत होइ तिहूं पुर त्रासा
जो दिन प्रति अहार कर सोई। बिस्व बेगि सब चौपट होई
समर धीर नहिं जाइ बखाना। तेहि सम अधिक न कोउ बलवाना
बारिद नाद जेठ सुत तासू। भट महँ प्रथम लीक जग जासू
जेहि न होइ रन सन्मुख कोई। सुरपुर नितहिं पराव न होई
दो॰ कुमुख अकम्पन कुलिशरद धूम्रकेतु अतिकाय।
एक एक जग जीति सक ऐसे सुभट निकाय ७५
कामरूप जानहिं सब माया। सपनेहुँ जिन के धर्म्म न दाया।
दसमुख बैठ सभा इक बारा। देखि अमित आपन परिवारा
सुत समूह जन परिजन नाती। गनै को पार निसाचर जाती
सेन बिलोकि सहज अभिमानी। बोला बचन क्रोध मद सानी
सुनहु सकल रजनीचर यूथा। हमरे बैरी बिबुध बरूथा
ते सन्मुख नहिं करहिं लराई। देखि सबल रिपु जाहिं पराई
तिन कर मरन एक बिधि होई। कहौं बुझाइ सुनहु अब सोई
द्विज भोजन मख होम सराधा। सब कर जाइ करहु तुम बाधा
दो॰ सुधा सरीर बलहीन सुर सहजहिं मिलिहहिं आइ।

तबमारिहौंकि छाँड़िहौंभलीभाँतिअपनाइ ८६
मेघनाद कहँ पुनि हँकरावा। दीन्ह सीख बल बैर बढ़ावा
जे सुर समर धीर बलवाना। जिनकेलरिबेको अभिमाना
तिनहिंजीतिरणआनेसिधाँयी। उदिसुतपितुअनुशासनसाधी
इहिविधिसबहीआज्ञादीन्हा। आपनचलेउगदाकर लीन्हा
चलतदशाननडोलतअवनी। गर्जतगर्भस्रवतसुररवनी।
रावण आवत सुनेउसकोहा। देवन तकेउमेरुगिरिखोहा
दिगपालनकेलोकसिधाये। सूने सकल दशानन पाये।
पुनिपुनिसिंहनादकरिभारी। देइ देवतन्हिं गारि प्रचारी।
रणमद मत्त फिरैजग धावा। प्रतिभटखोजतकतहुँनपावा

यहाँसेक्षेपक है

नारद मिले कहेसिमुसकाई। देव कहाँ मुनि देहु दिखाई
सुनतअनरखनारदहिंनभावा। श्वेतद्वीपतिहि तुरत पठावा
सागरउतरि पारसो गयऊ। नारि दुन्द तहँ देखत भयऊ
तिन्हसनकहापतिन्हपहँजाहू। कहेउ किआवनिशाचरनाहू
तबमैं तिनहिं जीति संग्रामा। लैजैहौंतुम कहँ निज धामा
सुनत वचन यकजरठरिसानी। धाइचरणगहिगगनउड़ाहीं

गई दूरि धरि धरि झकझोरा। डारिसि सिन्धु मध्य अति जोरा
दो० गयो पताल अचेत ह्वै मरै न विप्र प्रसाद।
सावधान उठि गर्ज पुनि हिये न हर्ष विषाद ७७
जीतेसि नाग नगर सब झारी। गयो बहरि बलि लोक सुरारी
वामन रावरा आवत जाना। किये देव ऋषि सन अपमाना
खेलत रहे नगर शिशु नाना। निज बल तिनहिं दीन्ह भगवाना
धाइ धरा तिन पुर लै आये। नगर नारि नर देखन धाये
बीस बाहु दश कन्धर भाई। विधि यह गढ़नि कहाँ की आई
रावन बाँधि खिभावहिं भारी। नाम न कहे सहे बरु मारी।
वामन दीख बहुत सकुचाना। तब छुड़ाय दिय कृपा निधाना
चला तुरन्त निशाचर नाहाँ। लाज शंक कछु नहिं मन माहाँ
दो० अति निर्लज्ज दया रहित हिंसा पर अति प्रीति।
राम विमुख दश कन्ध शठ ता पर चाहत जीति ७८
भरद्वाज सुनु जाहि जब होइ विधाता वाम।
धूरिहु काँच होइ जाइ तब लहै न कौड़ी दाम ७९
जहँ कहुँ फिरत देव द्विज पावै। दराउ लेइ बहु त्रास दिखावै
इहि आचरण फिरै दिन राती। महा मलिन मन खल उतपाती

बहुरि तुरत यम्पापुर आवा। बालि नाम कपि पति जिहिं ठावा
अवलोकसि इक सरवर शोभा। जिहिं मन महा मुनिन कर लोभा
तहँ कपीश कर निज ध्याना। दशकन्धर हिं देखि सुसुकाना
तब रावरा बोला करि क्रोधा। बक ध्यानी कपि शठ बिन बोधा
नाम तोर सुनि आयउँ धाई। देकपि युद्ध छाँड़ि कदराई

दो० मोहिं जीते बिनु समर सुनु वृथा ध्यान तव कीश।
कटक टाइ कहँ रजनिचर रदन तीनि सै बीस १९०

बालि कहा हठि करिय न रारी। दशकन्धर घर जाहु विचारी
बल तुम्हार ऐसोइ है भाई। अजय चारि दिशि मैं सुनि पाई
इहि विधि बालि बहुत समुझावा। कवनिहुँ भाँति बोध नहिं आवा
तब सकोप उठि झपटि कपीशा। दृढ़ गहि काँख चापि दशशीशा
बालिहि बिसरि गई सुधि ताता। इहि विधि विगत भये षट मासा
एक दिवस रवि अञ्जुलि साजा। काँख तें निसरि दशानन भाजा
निलज अशंक आव पुनि तहवाँ। कर जल केलि सहस भुज जहवाँ

दो० क्षोभेउ जल भुज बीस बल बूड़न लगी समाज।
सहस बाहु अति क्रोध मन मोहि समर न कोउ आज ९१

जाइ दीख तहँ रावरा ठाढ़ा। जासु विपुल भुज बल जल बाढ़ा।

माया प्रबल महाबल भारी। लंकेश्वर कहँ अरि सिपचारी
निरखि तियन आचरज विशाला। बाँधि राख्यो छन महँ यशाला
लज्जित दुष्ट भष्ट कारि रहई। रिस उर मारि कष्ट बहु सहई
सकल आइ देखहिं नर नारी। मारहिं लात हँसें दे गारी।
नामन कहे रहे सकुचाना। बहुविधि पूछहिं नृपति सुजाना
नृत्य करैं रम्भादिक नारी। दशहु माय दश दीपक बारी
सुनिपुलस्त्यतबजाइछुड़ावा। पुनिनलशापआयतिहिंपावा
दो० मारग जात दीख अति अनुपम सुन्दरिनारि।
चन्दन पुष्प पत्रकर पूजन चलि त्रिपुरारि ९२
देखि उर्व्वशी मन सकुचानी। तब रावरा बोला मृदु बानी
कोतुम नारि गमन कहँ कीन्हा। लज्जावश तिहिं उत्तर न दीन्हा
मन मद मत्त विचार न करेऊ। धनपति पुत्र बधू कर धरेऊ।
चीन्हि ताहि पुनि शंका आई। घाटि कर्म्म कीन्ही पछिताई
मन पछिताइ शोच उरभयऊ। लंकेश्वर लंका कहँ गयऊ।
विकल उर्व्वशी अलकहिं आई। नल कूबर सन बात जनाई
दीन्ह शाप तिन क्रोध अपारा। रावरा वंश होउ क्षयकारा।
चली शाप लंका कहँ आई। दशकन्धर बैठा जिहिं ठाई

आगे आइठाढ़िभइ शापा। निरखिदशानन अतिभयकाँपा

दो॰ शापहिं अंगीकारकरि मन महँकीन्हविचार।
दराउअयिन्हसेलीन्हनहिंरोषेउ लंकभुआर९३

दूतचारिपठयेऋषिआश्रम। निरखिविसारिगेमुनिअधिआतम
तिनसनतबपूँछहिंमुनिहाला। कहहुकुशल लंकेश भुआला
कुशलतासुयहसुनहुमुनीशा। करतुमसन चाहत दशशीशा
सुनि सोवचन महाभय पाई। करहिंविचारविरति विसराई
जिहि दरबार नीति नहिं भाई। खलमराडली जुरी तहँ आई
कछु बिनदियेनहींगतिआछी। घटभरिरुधिर दिये तन पाछी
दूतन्ह सौंपिकहा मुनिज्ञानी। भूपहिं कहेउ जाइ यह बानी

दो॰ घटउघरत क्षयहोइहह सहित सकलपरिवार
दूत तुरत घट ले गये लंका पति दरबार ९४

रावरा घट लखिपरमहुलासा। तबदूतन सुनि वचन प्रकासा
सुनिसुनि शापउपजउरदाहू। बोला घट लेइ उत्तर जाहू
यतन समेत धररिगा धरिएहू। जानि न पाव बात यह केहू
लै घट जनक देश ते गये। गाड़त क्षेत्र मध्य तहँ भये
जनक यज्ञ रचना तहँ ब्यका। चामीकर हलकरयत भयऊ

प्रकट अवनितेऋष्यशृंगकुमारी। कन्याकहि लीन्ही उरगारी
नामजानकी परम पुनीता। नारद आइ कहा सुनि सीता
कहिसुकथाऋषिराउसिधाये। बहुरि दूत लंकापुर आये
चारिठावँ हारा लंकेशा। देवन को बहु देत कलेशा

यहाँतकक्षेपक

रविशशिपवनवरुणाधनुधारी। अगिकालयमसबअधिकारी
किन्नरसिद्धमनुजसुर नागा। हठ सबही के पन्यहि लागा
ब्रह्मसृष्टिजहँलगितनुधारी। दशमुखवशवर्त्ती नर नारी।
आयसुकरहिंसकलभयभीता। नवहिंआइनितचरणाविनीता

दो० भुजबलविश्ववश्यकरिराखेसिकोउनस्वतंत्र।
मराडलीक महिरावणराज करै निजमंत्र ९५
देव यक्ष गन्धर्व्व नर किन्नर नाग कुमारि ।
जीतिवरीनिज बाहु बल बहु सुन्दरिवर नारि९६

इन्द्रजीत सन जोकछु कहेऊ। सो सबजनु पहिलेकरिरहेऊ
प्रथमहिंजिनकहँआयसुदीन्हा। तिनकहँचरितसुनहुँजोकीन्हा
देखत भीम रूप सब पापी। निशिचरनिकरदेवपरितापी
करहिं उपद्रव असुरनिकाया। नानारूप धरहिं करि माया

जेहि विधि होइ धर्म्म निर्मूला। सो सब करहिं वेद प्रतिकूला
जेहि जेहि देश धेनु द्विज पावहिं। नगर गाम पुर आगि लगावहिं
सुभ आचरण कतहुँ नहिं होई। देव विप्र गुरु मान न कोई।
नहिं हरि भक्ति यज्ञ जप दाना। सपनेहुँ सुनिय न वेद पुराना
छं॰ जप योग विराग तपा मख भागा श्रवण सुनै दशशीशा।
आपुन उठि धावै रहै न पावै धरि सब घालै खीशा॥
अस भ्रष्ट अचारा भा संसारा धर्म्म सुनिय नहिं काना।
तेहि बहु विधि त्रासै देश निकासै जो कह वेद पुराना १८
सो॰ बरणि न जाइ अनीति घोर निशाचर जो करहिं।
हिंसा पर अति प्रीति तिन के पापहि कोन मिति २०
बाढ़े बहु खल चोर जुआरी। जे लम्पट पर धन पर नारी
मानहिं मातु पिता नहिं देवा। साधुन सों करवावहिं सेवा
जिन के यह आचरण भवानी। तेजानहु निशिचर सम प्रानी
अतिशय देखि धर्म की हानी। परम सभीत धरा अकुलानी
गिरि सरि सिन्धु भार नहिं मोही। जस मोहि गरुअ एक परद्रोही
सकल धर्म्म देखहिं विपरीता। कहि न सकै रावण भय भीता
धेनु रूप धरि हृदय विचारी। गई तहाँ जहँ सुर मुनि झारी

निज सन्ताप सुनायसि रोई। काहू ते कछु काज न होई
छं॰ सुरमुनिगन्धर्वामिलिकरिसर्वागये विरञ्चिकेलोका।
सँगगोतनुधारी भूमिविचारी परमविकलभयशोका॥
ब्रह्मा सबजाना मन अनुमाना मोरो कछु न बसाई।
जाकर तैं दासी सो अविनासी हमरो तोर सहाई १९
सो॰ धरनिधरहमन धीरकहविरञ्चिहरिपदसुमिरि।
जानतजनकीपीरप्रभुभञ्जहिंदारुनाविपति २१
बैठे सुर सब करहिं विचारा। कहँपाइय प्रभु करिय पुकारा
पुर वैकुण्ठ जान कह कोई। कोइकह पयनिधिमहँबसुसोई
जाके हृदय भक्तिजस प्रीती। प्रभुतेहिप्रकटसदायहरीती
तेहिसमाज गिरिजा मैं रहेऊं। अवसर पाय वचनइक कहेऊं
हरिव्यापक सर्व्वत्र समाना। प्रेम ते प्रकट होहिं मैं जाना
देशकालदिशिविदिशिहुमाहीं। कहहु सोकहाँजहाँप्रभुनाहीं
अगजगमयसबरहितविरागी। पवनतेप्रकटहोहिंजिमिआगी
मोरवचनसबके मन माना। साधु साधु करि ब्रह्म बखाना
दो॰ सुनिविरञ्चिमन हर्षतनुपुलकनयनबहनीर
अस्तुतिकरिअजजोरिकरसावधानमतिधीर ९७

छं॰ जयजयसुरनायकजनसुखदायकप्रनतपालभगवन्ता।
गोद्विजहितकारीजयअसुरारीसिन्धुसुताप्रियकन्ता॥
पालनसुरधरनी अद्भुतकरनी मर्म न जानै कोई।
जोसहजकृपाला दीनदयाला करौ अनुग्रह सोई २०
जयजयअविनासी सबघटवासी व्यापकपरमानन्दा।
अविगतिगोतीता चरितपुनीता मायारहितमुकुन्दा॥
जेहिलागिविरागी अतिअनुरागी विगतमोहमुनिवृन्दा
निशिवासरध्यावहिंहरिगुनगावहिंजयतिसच्चिदानन्दा २१
जिहि सृष्टि उपाई त्रिविध बनाई संग सहाय न दूजा।
सो करहु अघारी चिन्त हमारी जानिय भक्ति न पूजा॥
जोभवभयभञ्जनजनमनरञ्जनगञ्जनविपतिबरूथा
मनवचक्रमबानीछाड़िसयानीशरनासकलसुरयूथा २२
शारदश्रुतिशेषाऋषयअशेषाजाकहँकोउनहिंजाना।
जेहि दीन पियारे वेद पुकारे द्रवौं सो श्री भगवाना॥
भवबारिधिमन्दरसबविधिसुन्दरगुनामन्दिरसुखपुञ्जा।
मुनिसिद्धसकलसुरपरमभयातुरनमतनाथपदकञ्जा २३
दो॰ जानिसभयसुरभूमिसुनिबचनसमेतसनेह।

गगन गिरा गम्भीर भइ हरनी शोक सन्देह ९८
जनि डरपहु मुनि सिद्ध सुरेशा। तुमहिं लागि धरि हौं नर भेशा
अंशन सहित मनुज अवतारा। लेहौं दिनकर वंश उदारा
कश्यप अदिति महा तप कीन्हा। तिन कहँ मैं पूरब वर दीन्हा
ते दशरथ कौशल्या रूपा। कोशल पुरी प्रकट नर भूपा
तिन के गृह अवतरिहौं जाई। रघुकुलतिलक सो चारिउ भाई
नारद वचन सत्य सब करिहौं। परम शक्ति समेत अवतरिहौं
हरि हौं सकल भूमि गरुआई। निर्भय होहु देव समुदाई।
गगन ब्रह्म वाणी सुनि काना। तुरत फिरे सुर हृदय जुड़ाना
तब ब्रह्मा धरिरिणिहिं समुझावा। अभय भई भरोस जिय आवा
दो० निज लोकहिं विरञ्चि गये देवन इहै सिखाइ।
वानर तनु धरि धरणि महँ हरि पद सेवहु जाइ ९९
गये देव सब निज निज धामा। भूमि सहित पायो विश्रामा
जो कछु आयसु ब्रह्मे दीन्हा। हर्षे देव विलम्ब न कीन्हा।
वनचर देह धरी क्षिति माहीं। अतुलित बल प्रताप तिन पाहीं
गिरि तरु नख आयुध सब वीरा। हरि मारग चितवहिं रणधीरा
गिरि कानन जहँ तहँ भरि पूरी। रहे निज निज अनीक रचि रूरी

यह सब रुचिर चरित मैं भाखा। अब सो सुनहु जो बीच बहि राखा
अवधपुरी रघुकुलमनिराऊ। बेदबिदित तेहि दसरथ नाऊ
धर्मधुरन्धर गुननिधि ज्ञानी। हृदय भगति मति सारँगपानी
दो० कौशल्यादि नारि प्रिय सब आचरन पुनीत।
पति अनुकूल प्रेम दृढ़ हरि पदकमल बिनीत २००
एक बार भूपति मन माहीं। भइ गलानि मोरे सुत नाहीं
गुरु गृह गयेउ तुरत महिपाला। चरन लागि करि बिनय बिसाला
निज दुख सुख नृप गुरुहि सुनावा। कहि बसिष्ठ बहु बिधि समुझावा
धरहु धीर होइहैं सुत चारी। त्रिभुवन बिदित भक्त भय हारी।
शृंगी ऋषिहि बसिष्ठ बुलावा। पुत्र लागि सुभ यज्ञ करावा
भगति सहित मुनि आहुति दीन्हे। प्रकटे अगिनि चारु कर लीन्हे
बोले अनल प्रेम सुत बानी। अति प्रसन्न नहिं परै बखानी
जो बसिष्ठ कछु हृदय बिचारा। सकल काज भा सिद्ध तुम्हारा
यह हबि बाँटि देहु नृप जाई। यथा योग जेहि भाग बनाई
दो० तब अदृश्य पावक भयेसकल सभहिं समुझाय।
परमानन्द मगन नृप हर्ष न हृदय समाय १
तबहिं राउ प्रिय नारि बुलाईं। कौशल्यादि तहाँ चलि आईं

अर्द्ध भाग कौशल्यहिं दीन्हा। उभय भाग आधे करि लीन्हा
कैकयिकहँ नृप सो दयऊ। रहेउ सोउभय भाग पुनि भयऊ
कौशल्या कैकयी हाथ धरि। दीन्ह सुमित्रहि मन प्रसन्न करि
इहि विधि गर्भसहित सब नारी। भयउ हृदय हरषित सुख भारी
जाहि दिन ते हरि गर्भहि आये। सकल लोक सुख सम्पति छाये
मन्दिर महँ सब राजहिं रानी। शोभा शील तेज की खानी।
सुखयुत कछुक काल चलि गयऊ। जेहि प्रभु प्रकट सो अवसर भयऊ

दो॰ योग लग्न ग्रह वार तिथि सकल भये अनुकूल।
चर अरु अचर हर्ष युत राम जन्म सुख मूल २

नवमी तिथि मधु मास पुनीता। शुक्ल पक्ष अभिजित हरि प्रीता
मध्य दिवस अति शीत न घामा। पावन काल लोक विश्रामा
शीतल मन्द सुरभि बहै बाऊ। हर्षित सुर सन्तत मन चाऊ।
बन कुसुमित गिरि गन मनियारा। स्रवहिं सकल सरिता अमृत धारा
सो अवसर विरञ्चि जब जाना। चले सकल सुर साजि विमाना
गगन विमल संकुल सुर यूथा। गावहिं गुन गंधर्ब्ब बरूथा।
बरषहिं सुमन सुअंजुलि साजी। गहगह गगन दुन्दुभी बाजी
अस्तुति करहिं नाग मुनि देवा। बहुविधि लावहिं निज निज सेवा

दो० सुरसमूह विनती करि पहुँचे निज निज धाम।
जगनिवास प्रभु प्रकटे अखिल लोक विश्राम ३

छं० भये प्रकट कृपाला दीनदयाला कौशल्या हितकारी।
हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप निहारी॥
लोचन अभिरामा तनु घनश्यामा निज आयुध भुज चारी।
भूषन बनमाला नयन विशाला शोभासिन्धु खरारी २४
कह दुइँ कर जोरी अस्तुति तोरी केहि विधि करौं अनंता
माया गुन ज्ञाना तीत अमाना वेद पुराना भनंता॥
करुना सुख सागर सब गुन आगर जेहि गावहिं श्रुति संता
सो मम हित लागी जन अनुरागी प्रकट भये श्री कंता २५
ब्रह्माण्ड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति वेद कहै।
मम उर सो बासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहै॥
उपजा जब ज्ञाना प्रभु मुसकाना चरित बहुत विधि कीन्ह चहै
कहि कथा सुनाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै २६
माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा।
कीजै शिशु लीला अति प्रिय शीला यह सुख परम अनूपा॥
सुनि वचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक सुर भूपा।

यहचरितजेगावहिंहरिपदपावहिंतेनपरहिंभवकूपा२१

दो० विप्र धेनु सुर सन्त हित लीन्ह मनुज अवतार।
निज इच्छा निर्मित तनु माया गुना गोपार ४

सुनि शिशुरुदन परमप्रियवानी। संभ्रम चलि आईं सब रानी
हर्षित जहँ तहँ आईं दासी। आनँदमगन सकलपुरवासी
दशरथपुत्रजन्मसुनि काना। मानहुँ ब्रह्मानन्द समाना
परम प्रेम मन पुलक शरीरा। चाहतउठनकरत मति धीरा
जाकर नामसुनत शुभ होई। मोरे गृह आयो प्रभु सोई
परमानन्द पूरि मन राजा। कहा बुलाइ बजावहु बाजा
गुरु वशिष्ठकहँभयउहँकारा। आयेद्विजन सहितनृपद्वारा
अनुपमबालकदेखिनजाई। रूपराशिगुनाकहिनसिराई

दो० तबनांदीमुख श्राद्धकरिजातकर्म सबकीन्ह।
हाटक धेनुवसन मणिनृपविप्रनकहँदीन्ह ५

ध्वजपताकतोरणापुरछावा। कहिनजाइजेहिभाँतिबनावा
सुमनवृष्टिआकाशते होई। ब्रह्मानन्द मगन सब कोई
वृन्दवृन्दमिलि चलीलुगाईं। सहजशिँगारकियेउठि धाईं
कनककलशमंगलभरिथारा। गावत पैठहिं भूप दुआरा।

करि आरती निछावरकरहीं। बार बार शिशुचररान परहीं
मागधसूतबन्दिगुणगायक। पावनगुणगावहिंरघुनायक
सर्व्वस दान दीन सब काहू। जेहि पावा राखा नहिं ताहू
मृगमद चन्दन कुंकुम सींचा। मचीसकलवीथिनबिचकीचा
दो० गृह गृहबाजबधाव शुभप्रकट भयेसुखकन्द।
हर्षवन्तसब जहँ तहँ नगर नारि नर वृन्द ॥
कैकय सुता सुमित्रा दोऊ। सुन्दरसुतजन्मत भइँ ओऊ
वहसुखसम्पतिसमयसमाजा। कहिनसकैं शारद अहिराजा
अवध पुरी सोहै इहि भाँती। प्रभुहिं मिलन आई जनुराती
देखि भानु जनुमनसकुचानी। तदपि बनी संध्या अनुमानी
अगर धूप जनु बहु अँधियारी। उड़ै अबीर मनहुँ अरुणारी
मन्दिर मणि समूह जनु तारा। नृपगृहकलश सोइन्दुउदारा
भवनवेदध्वनिअति सुहावनी। जनुखगमुखरसमयसुखमानी
कौतुक देखि पतंग भुलाना। एकमास तेहिजात न जाना
दो० मासदिवसकादिवसभा मर्म्म न जानै कोइ।
रथसमेत रवि थाकेउनिशाकवनविधिहोइ ॥
यह रहस्य काहू नहिं जाना। दिनमणिचलेकरतगुणगाना

देखि महोत्सव सुरमुनिनागा। चले भवन वरणत निजभागा
औरौ एक कहौं निज चोरी। सुनु गिरिजा अति दृढ़ मति तोरी
काक भुसुण्डि संग हम दोऊ। मनुज रूप जानै नहिं कोऊ
परमानन्द प्रेम सुख फूले। बीथिन फिरहिं मगन मन भूले।
यह सब चरित जान पै सोई। कृपा राम की जा पर होई
तेहि अवसर जो जेहि विधि आवा। दीन्ह भूप जो जेहि मन भावा
गज रथ तुरग हेम गो हीरा। दीन्हे नृप नाना विधि चीरा
दो० मन सन्तोष सबनि के जहँ तहँ देहिं असीस।
सकल तनय चिर जीवहु तुलसिदास के ईस ८
कछुक दिवस बीते इहि भाँती। जात न जानहिं दिन अरु राती
नाम करण कर अवसर जानी। भूप बोलि पठये मुनि ज्ञानी
करि पूजा भूपति अस भाखा। धरिय नाम जो मुनि गुनि राखा
इन के नाम अनेक अनूपा। मैं नृप कहब स्वमति अनुरूपा
जो आनन्द सिन्धु सुख रासी। सीकर ते त्रैलोक्य सुपासी
सो सुख धाम राम अस नामा। अखिल लोक दायक विश्रामा
विश्व भरण पोषण कर जोई। ताकर नाम भरत अस होई
जाके सुमिरण तें रिपु नाशा। नाम शत्रुहन वेद प्रकाशा।

दो० लक्षणा धाम राम प्रिय सकल जगत आधार।
गुरु वशिष्ठ तेहि राखेउ लक्ष्मण नाम उदार ९

धरे नाम गुरु हृदय विचारी। वेद तत्त्व नृप तव सुत चारी
मुनिजन धनसर्वस शिवप्राना। बालकेलिरस तेहि सुखमाना
बारेहि ते निजहित पति जानी। लक्ष्मण राम चरण रति मानी
भरत शत्रुहन दोनों भाई। प्रभु सेवक जस प्रीति बड़ाई
श्याम गौर सुन्दर दोउ जोरी। निरखहिं छबि जननी तृण तोरी
चारिउ शील रूप गुण धामा। तदपि अधिक सुखसागर रामा
हृदय अनुग्रह इन्दु प्रकासा। सूचत किरण मनोहर हासा
कबहुँ उछंग कबहुं वर पालन। मातु दुलारहिं कहि प्रिय लालन

दो० व्यापक ब्रह्म निरंजन निर्गुण विगत विनोद।
सो अज प्रेम भक्ति वश कौशल्या की गोद २१०

काम कोटि छबि श्याम शरीरा। नील कञ्ज वारिद गम्भीरा
अरुण चरण पंकज नख ज्योती। कमल दलन बैठे जनु मोती
रेख कुलिश ध्वज अंकुश सोहैं। नूपुर धुनि सुनि मुनि मन मोहैं
कटि किंकिणी उदर त्रय रेखा। नाभि गँभीर जान जेहि देखा
भुज विशाल भूषण युत भूरी। हिय हरि नख शोभा अति रूरी

उर मणिहार पदिककीशोभा। विप्रचरणदेखत मन लोभा
कम्बुकण्ठअतिचिबुकसुहाई। आननअमितमदनछविछाई।
दुइदुइदशन अधर अरुणारे। नासातिलक को वरणौ पारे
सुन्दर श्रवण सुचारुकपोला। अतिप्रियमधुरतोतरिबोला
नीलकमलदोउनयनविशाला। विकटभृकुटिलटकनिवरभाला
चिक्कन कचकुञ्चितगभुआरे। बहु प्रकार रचि मातु सँवारे
पीतझँगुलिया तनपहिराये। जानुपाणिविचरतमहिभाये
रूपसकहिंनहिंकहिश्रुतिशेखा। सोजानैसपनेहुजिन्ह देखा
दो० सुख सन्दोह मोह पर ज्ञान गिरा गोतीत ।
दम्पतिपरमप्रेमवश करशिशुचरितपुनीत ११
इहिविधिरामजगतपितुमाता। कोशलपुरवासिनसुखदाता
जिन्हरघुनाथचरणरतिमानी। तिनकीयहगतिप्रकटभवानी
रघुपतिविमुखयतनकरकोरी। कवन सकै भव बन्धन छोरी
जीव चराचरवश करि राखे। सो माया प्रभु सो भय भाखे।
भृकुटि विलासनचावैंताही। असप्रभुछाँड़िभजियकहुकाही
मन क्रम वचन छाँड़ि चतुराई। भजतहि कृपा करैं रघुराई।
इहिविधिशिशुविनोदप्रभुकीन्हा। सकलनगरवासिनसुखदीन्हा

लै उछंग कबहूं हलरावैं। कबहुं पालने घालि झुलावैं
दो० प्रेम मगन कौशल्यानिशि दिन जात न जान।
सुत सनेह वश माता बाल चरित करि गान १२
एक बार जननी अन्हवाये। करि शिंगार पलना पौढ़ाये।
निज कुल इष्ट देव भगवाना। पूजा हेतु कीन्ह पकवाना।
करि पूजा नैवेद्य चढ़ावा। आपु गई जहँ पाक बनावा
बहुरि मात तहँवाँ चलि आई। भोजन करत देख रघुराई
गइ जननी शिशु पहँ भयभीता। देखा बाल तहाँ पुनि सूता
बहुरि आइ देखा सुत सोई। हृदय कम्प मन धीर न होई
इहाँ उहाँ दुइ बालक देखा। मति भ्रम मोरि कि आन विशेखा
देखि राम जननी अकुलानी। प्रभु हँसि दीन्ह मधुर मुसुकानी
दो० देखरावा मातहि निज अद्भुत रूप अखण्ड।
रोम रोम प्रति राजहिं कोटि कोटि ब्रह्मण्ड १३
अगणित रवि शशि शिव चतुरानन। बहु गिरि सरित सिंधु महि कानन
काल कर्म्म गुण दोष सुभाऊ। सो देखा जो सुना न काऊ।
देखी माया सब विधि गाढ़ी। अति सभीत जोरे कर ठाढ़ी
देखा जीव नचावै जाही। देखी भक्ति जो छोरै ताही

तनुपुलकितमुखवचननआवा।नयनमूँदिचरणनसिरनावा
विस्मयवन्ति देखि महतारी।भये बहुरि शिशुरूप खरारी
अस्तुतिकरिनजाइभयमाना।जगतपितामैंसुतकरिजाना
हरिजननिहिबहुविधिसमुझाई।यहजनिकतहुँकहसिसुनुमाई
दो० बार बार कौशल्याविनय करै कर जोरि ।
अबजनिकबहूंव्यापै प्रभु मोहिंमाया तोरि १४
बालचरितहरिबहुविधिकीन्हा।अतिअनन्ददासनकहँदीन्हा
कछुक कालबीतेसब भाई।बड़े भये परिजन सुखदाई
चूड़ाकरणाकीन्हगुरु आई।विप्र दक्षिणा पुनि बहु पाई
परम मनोहर चरित अपारा।करतफिरत चारिउसुकुमारा
मनक्रम वचन अगोचरजोई।दशरथअजिरविचरप्रभुसोई
भोजनकरतबुलावतराजा।नहिंआवहिंतजिबालसमाजा
कौशल्याजब बोलन जाई।ठुमुकिठुमुकिप्रभुचलहिंपराई
निगमनेतिशिवअन्तनपावा।ताहि धरैजननी हठि धावा
धूसर धूर भरे तन आये।भूपति विहँसि गोद बैठाये
दो० भोजन करतचपलचित इतउत अवसर पाइ।
भाजिचलेकिलकतमुखदधिओदनलपटाइ १५

बाल चरित अति सकल सुहाये। शारद शेष शम्भु श्रुति गाये।
जिन कर मन इन सन नहिं राता। ते जग वञ्चित किये विधाता
भये कुमार जबहिं सब भ्राता। दीन्ह जनेउ गुरु पितु माता
गुरु गृह गये पढ़न रघुराई। अल्प काल विद्या सब पाई
जाकी सहज श्वास श्रुति चारी। सो हरि पढ़ यह कौतुक भारी
विद्या विनय निपुण गुण शीला। खेलहिं खेल सकल नृप लीला
कर तल बारा धनुष अति सोहा। देखत रूप चराचर मोहा।
जिन बीथिन बिहरहिं सब भाई। थकित होहिं सब लोग लुगाई

दो॰ कोशल पुर वासी नर नारि वृद्ध अरु बाल।
प्रानहुं ते प्रिय लागहिं सब कहं राम कृपाल १६

बन्धु सखा सँग लेहिं बुलाई। बन मृगया नित खेलहिं जाई।
पावन मृग मारहिं जिय जानी। दिन प्रति नृपहिं दिखावहिं आनी
जे मृग राम बाण के मारे। ते तनु तजि सुर लोक सिधारे
अनुज सखा सँग भोजन करहीं। मातु पिता आज्ञा अनुसरहीं
जेहि विधि सुखी होहिं पुर लोगा। करहिं कृपानिधि सोइ संयोगा
वेद पुराण सुनहिं मन लाई। आपु कहहिं अनुजन समुझाई
प्रात काल उठि कै रघुनाथा। मातु पिता गुरु नावहिं माथा

आयसुमाँगिकरहिंपुरराजा।देखिचरितहर्षहिंमन राजा

दो० व्यापक अकल अनीह अज निर्गुणनामनरूप।
भक्त हेतु नाना विधिहिं करत चरित्र अनूप१७

यह सब चरितकहा मैं गाई। आगिलकथासुनहुमनलाई
विश्वामित्रमहामुनिज्ञानी। बसहिंविपिनसुभआश्रमजानी
तहँजपयज्ञयोगमुनिकरहीं। अतिमारीचसुबाहुहिडरहीं
देखत यज्ञनिशाचर धावहिं। करहिंउपद्रवमुनिदुखपावहिं
गाधितनयमनचिन्ताव्यापी।हरिबिनुमरिहिननिशिचरपापी
तबमुनिवरमनकीन्हविचारा। प्रभुअवतरेउहरणमहि भारा
इहिमिसुदेखौंप्रभुपद जाई। करिविनती आनौंदोउ भाई
ज्ञानविरागसकलगुणाश्रयना। सोप्रभुमैंदेखबभरिनयना

दो० बहुविधि करत मनोरथ जात न लागी बार।
करि मज्जन सरयू सलिल गये भूप दरबार १८

सुनि आगमन सुनाजबराजा। मिलनगयउ लैविप्र समाजा
करिदण्डवतमुनिहिसनमानी। निजआसनबैठारिसि आनी
चरणापखारिकीन्हअतिपूजा। मोसमआजुधन्यनहिं दूजा।
विविधभाँतिभोजनकरवावा। मुनिवरहृदयहर्षअतिपावा

पुनि चरणान मेले सुत चारी। रामदेखि मुनि बिरति बिसारी
भये मगन देखत मुख शोभा। जनु चकोर पूरण शशि लोभा
तब मन हर्षि बचन कह राऊ। मुनि अस कृपा कीन्ह नहिं काऊ
केहि कारण आगमन तुम्हारा। कहहु सो करत न लाउब बारा
असुर समूह सतावहिं मोहीं। मैं याचन आयउँ नृप तोहीं
अनुज समेत देहु रघुनाथा। निशिचर बध मैं होब सनाथा
दो० देहु भूप मन हर्षि सुत तजहु मोह अज्ञान।
धर्म सुयश प्रभु तुम कहँ इन कहँ अति कल्यान १९

सुनि राजा अति अप्रिय बानी। हृदय कम्प मुख द्युति कुम्हिलानी
चौथेपन पायउँ सुत चारी। बिप्र बचन नहिं कहहु बिचारी
माँगहु भूमि धेनु धन कोया। सर्ब्बस देउँ आज सहरोया
देह प्राण ते प्रिय कछु नाहीं। सोउ मुनि देउँ निमिष इक माहीं
सब सुत प्रिय मोहिं प्राण की नाईं। राम देत नहिं बनै गोसाईं
कहँ निशिचर अति घोर कठोरा। कहँ सुन्दर सुत परम किशोरा
सुनि नृप गिरा प्रेम रस सानी। हृदय हर्ष माना मुनि ज्ञानी
तब बशिष्ठ बहु बिधि समुझावा। नृप सन्देह नाश कहँ पावा
अति आदर दोउ तनय बुलाये। हृदय लाइ बहु भाँति सिखाये

मेरे प्राण नाथ सुत दोऊ। तुम मुनि पिता आन नहिं कोऊ
दो० सौंपे भूपति ऋषिहि सुत बहु विधि देइ असीस।
जननी भवन गये प्रभु चले नाइ पद शीश २२०
सो० पुरुष सिंह दोउ वीर हर्षि चले मुनि भयँहरण।
कृपासिन्धु मतिधीर अखिल विश्वकारणकरण २२
अरुणानयन उर बाहु विशाला। नीलजलद तनश्याम तमाला
कटि पट पीत कसे वर भाथा। रुचिर चाप शायक दुहुँ हाथा
श्याम गौर सुन्दर दोउ भाई। विश्वामित्र महा निधि पाई।
प्रभु ब्रह्मराय देव मैं जाना। मोहिं हित पिता तजेउ भगवाना
चले जात मुनि दीन्ह दिखाई। सुनि ताड़का क्रोध करि धाई
एकहि बाण प्राण हरि लीन्हा। दीन जानि तेहि निज पद दीन्हा
तब ऋषि निज नाथहिं जिय चीन्हा। विद्यानिधि कहँ विद्या दीन्हा
जाते लाग न क्षुधा पियासा। अतुलित बल तन तेज प्रकासा
दो० आयुध सकल समर्पि करि प्रभु निज आश्रम आनि।
कन्द मूल फल भोजन दिये भक्त हित जानि २१
प्रात कहा मुनि सन रघुराई। निर्भय यज्ञ करहु तुम जाई
होम करन लागे मुनि झारी। आपु रहे मख की रखवारी

सुनि मारीच निशाचर कोही। लै सहाय धावा मुनि द्रोही
बिनु फर बाण राम तेहि मारा। शत योजन गा सागर पारा
पावक शर सुबाहु पुनि मारा। अनुज निशाचर कटक सँहारा
मारि असुर द्विज निर्भयकारी। अस्तुति करहिं देव मुनि झारी
तहँ पुनि कछुक दिवस रघुराया। रहे कीन्ह विप्रन पर दाया।
भक्ति हेतु बहु कथा पुराना। कहहिं विप्र यद्यपि प्रभु जाना
तब मुनि सादर कहा बुझाई। चरित एक देखिय प्रभु जाई
धनुष यज्ञ सुनि रघुकुलनाथा। हरषि चले मुनिवर के साथा
आश्रम एक दीख मग माहीं। खग मृग जीव जन्तु तहँ नाहीं।
पूँछा मुनिहि शिला प्रभु देखी। सकल कथा मुनि कही विशेखी

दो० गौतम नारी शाप वश उपल देह धरि धीर।
चरण कमल रज चाहती कृपा करहु रघुवीर २२

छं० परसत पद पावन शोक नशावन प्रकट भई तप पुंज सही।
देखत रघुनायक जन सुखदायक सनमुख होइ कर जोरि रही
अति प्रेम अधीरा पुलक शरीरा मुख नहिं आवै वचन कही
अतिशय बड़भागी चरनन लागी युगल नयन जल धार बही २८
धीरज मन कीन्हा प्रभु कहँ चीन्हा रघुपति कृपा भक्ति पाई

अतिनिर्मलबानी अस्तुतिठानी ज्ञानगम्य जयरघुराई॥
मैंनारि अपावन प्रभु जगपावन रावरिपुजनसुखदाई।
राजिवलोचनभवभयमोचनपाहिपाहिशरणहिंआई २९
सुनिशापजोदीन्हाअतिभलकीन्हापरम अनुग्रहमैंमाना।
देखेउँभरिलोचनहरिभवमोचनयहैलाभशंकरजाना॥
विनती प्रभुमोरी मैं मति भोरी नाथ न वर माँगौं आना।
पदकमलपरागारस अनुरागामममनमधुपकरैपाना ३०
जेहिपदसुरसरिता परमपुनीताप्रकटभईशिवशीशधरी।
सोइपदपंकजजेहि पूजतअजममशिरधरेउकृपालहरी॥
इहिभाँति सिधारी गौतमनारी बारबारहरिचरणापरी।
जोअतिमनभावासोवरपावागेपतिलोकअनन्दभरी ३१
दो० अस प्रभु दीनबन्धु हरि कारण रहित कृपाल।
तुलसिदास शठताहिभजुछाँड़िकपटजंजाल २३
चले रामलक्ष्मणामुनि संगा। गये जहाँ जग पावनि गंगा
अनुजसहितप्रभुकीन्हप्रणामा। बहु प्रकार मुनवपायउरामा

अथक्षेपक

पुनि मुरसरि उतपति रघुराई। कौशिकसन पूँछा शिर नाई

कहसुनिप्रभुतवकुलइकराजा। नामसगरतिहुंलोकविराजा
तेहिकेयुगभामिनिसुकुमारी। प्रथमकेशिनीसुमतिपियारी
सबप्रकारसम्पतिसुरभाजा। सुतविहीनमनविरमयराजा
एकसमयभामिनिदोउसाथा। गयेवनतनयहेतुरघुनाथा
सघनसफलतरुसुन्दरनाना। तहँभृगुमुनितपतेजनिधाना

दो० सहितनारिनृपमुदितमनरहेवरषशतएक।
कीन्हेतपबलदेखिभृगुअस्तुतिकीन्हअनेक२४

काहिनिजदुखपरणामनृपकीन्हा। देअशीशातवमुनिवरदीन्हा
नृपरानीसनसुनिअसभाषा। लेहुखवरजोजेहिअभिलाषा
सुनिमुनिवचनशीशतिननावा। देहुनाथजोअतिमनभावा
एकहिकहेउएकसुतहोना। दूसरिसाठसहसगुणालोना
हरषितभयोसुभगवरपाई। पारणाजोरिचरणानशिरनाई
सहितभामिनीअवधहिआये। हर्षसहितकछुदिवसगँवाये
जानिसुघरिसुन्दरसुखदाई। नामकेशिअसमंजसजाई
सुमतिप्रसवइकतुम्बरिसोई। भयेसुतप्रकटकहेसुनिजोई
निरखेसुतहर्षितसबकोई। मंगलचारकियेसबकोई।
हर्षसहितदियदानअनेरू। पूजिविप्रगुरुगौरिगणेशू

घृत घट सुन्दर विविध मँगाये। तेसब सुत नृप तिनमहँ नाये
दो० यहि विधि भयउ सकल सुत पूजे सब मनकाम।
जाइ दिवसनिशि हर्ष वश सुनहु राम घनश्याम २५
पुरजन सब घर घरनि नरेशू। अति आनन्द तनु मिटा अँदेशू
बालकेलि कर भये कुमारा। लीला करैं अगम संसारा
होइसो काज सकल मनचीते। यहि सुख बसत बहुत दिन बीते
सरयू नदी अवध जो अहई। विमल सलिल उत्तर तट बहई
प्रजा लोग के बालक नाना। नित उठि तहाँ करैं असनाना
असमञ्जस तहँ तरराी आनी। तिनहिं चढ़ाइ बोरि निज पानी
भये प्रजा सब परम दुखारी। बालक बध सुनि सुनहु खरारी
सकल गये जहँ बैठ नृपाला। बोले वचन नाय पद भाला
तुम नृप चहहु प्रजा प्रतिपाला। सुत तुम्हार भा सबकर काला
तजब देश सब सुनहु नरेशू। बिना तजे नहिं मिटै कलेशू।
दो० तव सुत कीन्हेउ पाप बहु मारे बालक वृन्द।
तुमकहँ प्राराा समान यह सकल प्रजन कहँ मन्द २६
प्रजा गिरा सुनि धीरज दीन्हा। सुतहिं देश ते बाहर कीन्हा।
तासुतनय जग विदित प्रभाऊ। गुराानिधि अंशुमान तिहि नाऊ

बसत हृदय नृपके सो कैसे। मुनिमनमीनसलिलरहजैसे
गयेप्रजासबनिजनिजधामा। भयेविलोकमनयुगाविश्रामा
बहुरिनृपतिमनकीन्हविचारा। आयभयउ पन चौथ हमारा
हितमंत्रीगुरुसुतहुबुलाये। हिमगिरिविन्ध्यसद्यतबआये
रुचिर वेदिका एक बनाई। देखत बनै वरणि नहिं जाई
मख आरम्भ छाड़ेउतबतुरगा। वेगवन्त जिमि देखिय उरगा
दो० सुरपतिसुनिभयदारुणाहिमनमहँकरिअनुमान।
आनतुरग तब लीन्हेउ मर्म्म न कोऊ जान २७
रखेउआनिकपिलसुनिपाहीं। कोउनजानकाहुहिगमनाहीं
जुगवत रहे जे सुभट सयाने। ले तुरंग रहे किनहु न जाने
तिनसबआनकहीनृपपाहीं। महाराज हम कहत डराहीं
लीन्हतुरँगकोइजाननकोऊ। कहा करिय सो आयसु होऊ
सुनतवचननृपविस्मयपाये। सकलसुतनकहँतुरतबुलाये
जाहुतुरग तुम हेरहु जाई। सकल चले चरणान शिर नाई।
सुरपति सम देखियसबवीरा। सकल धनुर्द्धर अतिरणधीरा
तिनहिंचलतधरणी अकुलाई। बलि पशुजीव भये सब आई
सुमन वाटिकाउपबन बागा। सरित कूप वापिका तड़ागा

नगरगाँव सुनीश थलनाना। गिरिकन्दर कानन अस्थाना
दो० इहिविधिखोजहु तुरगतिन आयेभूपतिपाहिं।
चररानमाथहिनाइकहिखोजअश्वकरनाहिं २८
खोदहु महि सुतकरहिपठाये। चलेसकल पूरबदिशि आये
तिनकेकरजिमिकुलिशसमाना। योजनभरिखोदहिंबलवाना
देखि अतुलबल देव डराने। नर नाहन विरंचि सनमाने
शोधत महि पतालसब आये। दिग्गज देखि एक शिर नाये
तिनपूँछा सब कथा सुनाये। बहुरिसकलदक्षिणादिशिआये
इहिविधिपुनिदूसरगजदेखा। अतिउतंगगजविमलविशेखा
ताहू बहु प्रणाम तिन कीने। चलेसुनत पश्चिम चित दीने।
तीसरदेखिप्रदक्षिणाकीन्ही। पुनिउत्तरदिशिशोधहिलीन्ही
दिग्गजश्वेतनिरखिसुखपाये। सकलकपिलमुनिपहँपुनिआये
खोजतमही पारनहिंपावा। शोभाचहुँदिशिजलधिसुहावा
दो० देखिन आयतुरंग तबबाँधा मुनिवरपास ।
बोलेवचनसकोपकरिभाचहसबकरनास २९
खोदामहिहमचारिउकोधा। रेरे दुष्ट बहुत तोहिं शोधा।
कोउकह चोर दीरघबहुहोई। यहिसमछलीअवरनहिंकोई

पर धन लै पताल पुनि आयो। तस्कर सुनि वर वेष बनायो।
कोउ कहै यह सुनि वर नाहीं। समुझि देखि लक्षण मन माहीं
कोउ कह बक तप कीन्ह अपारा। अहो दुष्ट लै तुरग हमारा
सुनत वचन सुनि चितवा जबहीं। भये भस्म सब लक्षण में तबहीं
उमा वचन जिहि समुझि न बोला। सुधा होइ विष तिक्त न ओला
पावक जानि धरहिं कर प्रानी। जरहिं काहि नहिं अति अभिमानी
जानि गरल जे संग्रह करहीं। सुनहु राम ते काहे न मरहीं
क्रोध कीन्ह बिन किये विचारा। भये सकल तेहि ते जरि छारा।
इहाँ नृपति अँशुमान बुलाये। नहिं आये सब तिनहिं पठाये

दो० दीन्हा नृपति अशीष तब अति हित बारहिं बार।
वेगि फिरौ लै तुरग सुत मेरे प्राण अधार २३०

चले नाय पद शीश कुमारा। विष्णु भक्त हित कुल उजियारा
जहँ तहँ निरखि मुनिन के धामा। पूँछि खबर करि दण्ड प्रणामा
पन्नग नाग सन पाइ अशीशा। चहुँ दिग्गज कहँ नावत शीशा
यहि विधि शोधत मग महँ जाता। मिले गरुड़ सुमनी कर भ्राता
चरण परत तब आशिष दयऊ। जरे सकल जेहि विधि सो कहऊ
सुनते वचन शोच भयो भारी। लिये खगेश दिखाय लवारी

अंशुमानतहँमज्जनकीन्हा। क्रमक्रमसबहिजलांजलिदीन्हा
बहुरि गरुड़ बोलेसुनुभ्राता। मैं तोहिंकहौंकरिहिइकबाता
सो० करुसुतसोइउपाय गंगाआवहिंअवनिमहँ।
दरशनतेअघजायमज्जनकीन्हेपरमसुख २३
षष्टि सहस्र तरिहैं एही विधि। गंगापायपरमपावननिधि।
सुनिअसवचनहृदयमनभाये। सहितगरुड़मुनिवरपहँआये
तबखगेशमुनिचररानानायउ। पूरबकथासकलमुनिगायउ
आयसुदेइतुरँगमुनिदीन्हा। हरषिहृदयनिजअश्वहिचीन्हा
नगरसमीप गरुड़ पहुँचाई। गये भवन निज तब रघुराई।
इहाँ तुरग ले नृप शिर नाई। षट सहस्र सुनि कथासुभाई
विस्मय हर्ष विवशनृपभयऊ। कीन्हा यज्ञ दान बहु दयऊ
बहुविधिनृपतिराजपुनिकीन्हा। प्रजालोगकहँअतिसुखदीन्हा
दो० अंशुमान हित राज दै निज मन हरि पद लाग।
गयउसगरतपकाजबनहृदयअधिकअनुराग ३१
तासुतनामदिलीपनृपभयऊ। मनतपहेतुउत्तरदिशिगयऊ।
उहाँ अगम तपकीन्हनृपाला। भयेकालवशगयेकछुकाला
कहहु कवन दिलीप प्रभुताई। सेवैंसकल नृपति जेहि आई

जुगवतजिहिनितसुरपतिरहहीं।महिमातासुकविकेहिविधिकहै
भागीरथअससुतभयोजाकहँ।पितुसमनीतिअधिकउरताकहँ
तिनहिंबोलिनृपदीन्हेउराजू। आपचलेउठि तपके काजू
मनमहँकरतपन्थअनुमाना।सुरसरिआवतजउँनतुप्राना
निजमनतनदीनेउनिमिदेऊं।फिरिनिजनगरकनामनलेऊं
सो० यहिविधिकरतविचारनृपकीन्हेतपप्रबलतब।
बीतेकछुयककालदेहतजीकोउप्रकटनहिं २४
जेहिसुरसरिलगितजितनुभूपा।सोतजिमूढ़पियहिंजलकूपा
इहाँभगीरथअसमनभयऊ।पितुनआववहुदिनचलिगयऊ
काकुस्थ नाम तनयइकरेऊ।दीन्हा राज नीति बहु कहेऊ
कहि तब पूर्वकथासुतपाहीं। दीन्ह असीस चले नर नाहीं
निकसतनगरसगुनभलपाये। अतिहिनिबिड़वनजहँनृपआये
देखिभगीरथबनसुखपावा।सुरसरिहिततपकहँमनलावा
एक चरण दोउ भुजा उठाये ।रविसन्मुखचितवहिंमनलाये
वर्ष सहस बीते यहि भाँती ।जात न जाने दिन अरु राती
देखिउग्र तप अज चलि आये।बोले वचन नृपहि मन भाये
चहहि नृपति जो ले वरदाना। बोलेनृपकरि अजहिंप्रणामा

जो माँगौं सो जानत अहहू। मोसनमाँगनप्रभुकिमिकहहू
दो० तदपिकुहौं प्रभु देहु वरसबसन्तन कहँ ईहि।
दूसर माँगौं जोरि कर गंगा आवहिं निहि ३२
एवमस्तुकहिपुनिविधिभवही। सुरसरि देहुँ रविकोसकही
छूटजाहिपुनितुरतरसातल। फिरहिंनृपतिबहुरिसुनुभूतल
तेहि ते कहौं एक तोहिं पाहीं। अतिदयालु शंकर मन माहीं
सोइ शंकररविसुरसरिआजू। उनहिजपे तबहोइहै काजू
असकहिविधिअन्तरहितभये। बहुरिभगीरथशिवपहँगये
विबुधवर्ष अंगुष्ठ अधारा। बार बार शिव नाम उचारा।
शिवदयालु प्रकटे तबआई। हाथ जोरि नृप विनयसुनाई
मैं राखबसुरसरि कह ईशा। बहुरिमापति ध्यान करीशा
दो० उहाँ देवसरिशिववचनसुनिमनकीन्हविचार।
जाउँरसातलशिवसहितजात नलावौंबार ३३
अन्तरयामी शिवहि उपाई। निजशिरजटासोअगमबनाई
इहाँभगीरथअस्तुतिकीन्ही। सुनिमृदुगिराछाँड़िविधिदीन्ही
छूटे शोर भयउ जग भारी। चकितदेव अहिदिग्गजचारी
सुरसरि पुनि हर जटासमानी. वर्ष एक तहँ रहीं भवानी

कौतुक देखि सकल सुर हर्षे। कहजयजयति सुमनबहु वर्षे
बहरि भगीरथ सुमिरण कीन्हा। डारि जटा शिव बुन्दक दीन्हा
तेहिते भई तीनि पुनि धारा। एक गई नभ एक पतारा
गइ नभसोइ भई अघनाशिनि। देवन धरा नाम मन्दाकिनि
दो० दूसरि गई पताल में नाम प्रभावति हरण दुख।
तीसरि भइ गंगा सोई सब सन्तन को करन सुख ३४
सलिल प्रवाह निरखि नृप उर अति भयउ अनन्द।
जैसे उमड़त सिन्धु तब पूर्ण काला लखि चन्द ३५
आय भगीरथ पुनि शिर नाये। बोलीं सुरसरि वचन सुहाये।
वेगवन्त नृप रथ लै आवहु। तुरत तुरग शुभ गति जिमि भावहु
तेहि रथ चढ़ि नृप चलु मम आगे। चलिहौं मैं तव पीछे लागे
सुनि नृप दिव्य तुरग रथ आना। चले हृदय सुमिरत भगवाना
चली अग्र करि नृपहि सुरसरी। देवन मुदित सुमन झरि करी
चलत तेज कछु वरणि न जाई। टूटहिं गिरि तरु शैल सुहाई
कौरैं कुलाहल विविध भाँती। कमठ नक्र झष व्याल सो माती
मज्जन करहिं देव तहँ आई। सुनि गति सिद्ध रहे सब छाई
सो० तर्पण कर मन लाय हर्ष हृदय नहिं जात कहि।

दर्शन ते अघजाय तेरे सकल मुनिजन कहैं २५
मज्जन करहु राय सुर अजादिसनकादिऋषि।
पानकरत अघजाय असमन सबकोऊ कहहिं २६
करैं जो मज्जन जप मन लाई। तिनकी महिमा कहिन सिराई
रथ पर जात सोह नृप कैसे। तेजवन्त रवि देखिय जैसे।
लाँघत शैल सुहावन देशा। पीछे सुरसरि आगे नरेशा
हरिद्वार समीप तब आये। तीर्थ देखि सुरसरि मन लाये
तीर्थ निरखि मनभो सुखभारी। आदि प्रयाग पहुँचि अघहारी
तहँ मज्जन कीन्हे दुख जाई। बहुरि देवसरि काशी आई
सो शिवपुरी सहज सुखदाई। वरणि न जाइ मनोहरताई
अबसो तीर्थ विविध विधि जानी। गई तहाँ किमि कहौं बखानी
मग लोगन कहँ करत सनाथा। जाइ चलीं इहि विधि रघुनाथा
दो॰ मिलीं जाइ पुनि उदधि महँ उदधि हृदय सुख मान।
लगे कहन भागीरथहिं तुम सम धन्य न आन ३६
कीन्हो अस जो करहिं न कोई। तप महिमा बल कस नहिं होई
सगर सुतनय तरे ततकाला। हर्षवन्त तब भयो नृपाला
अबलौं रहो है कुल महँ कोऊ। तिन के संग तरे अब सोऊ

तुम समान नृप अवर न भयऊ। जग विख्यात अचल यश लयऊ
सकल सुरन तहँ संग विधाता। नृपसन आय कहा सब बाता
धन्य भगीरथ यश जग जयऊ। तुम समान नृप और न भयऊ
अपनी सत्य प्रतिज्ञा कियऊ। सम्मत वेद जनन सुख दयऊ
गंगा सागर सब कोउ कहहीं। अघ उलूक देखत रवि डरहीं
भागीरथी नाम अरु कहहीं। मुनि सुर सिद्ध नाग यश लहहीं
अस विधि कहि निज लोकहिं आये। जहाँ भगीरथ अति सुख पाये
छं० पायो अमित सुख बहुरि पूजा सुरसरिहिं मन लाइकै।
तब दीन्ह आशिष मुदित गंगा नृप भवन सुख पाइकै॥
इहि भाँति मुनि गंगा कथा तब रामरुचि चरणाननये।
कहदास तुलसी राम लषणहि महा मुनि आशिष दये ३२
दो० कौशिक आशिष अमिय सम पाय हर्ष रघुराज।
प्रभु संशय सब भमि गई लवा निरखि जिमि बाज ३७
आशिष सुधा समान सुनि हर्षे श्री रघुनाथ।
प्रभु सुख पाइ कहेउ पुनि बेगि चलिय मुनिनाथ ३८

राम नाम ते संशय जाई। देह धरे कर यह फल भाई

इति

गाधिसुवन सब कथा सुनाई। जेहिप्रकार सुरसरि महि आई
तब प्रभु ऋषिनसमेत अन्हाये। विविध दान महिदेवन पाये
हर्षि चले मुनिवृन्द सहाया। वेगि विदेह नगर नियराया
पुर रम्यता राम जब देखी। हर्षे अनुज समेत विशेखी
वापी कूपसरित सर नाना। सलिलसुधासममणिसोपाना
गुञ्जत मञ्जु मत्त रस भृंगा। कूजत कलबह वरण विहंगा
वरणावरणाविकसेजलजाता। त्रिविधिसमीरसदासुखदाता
दो॰ सुमन वाटिका बाग बन विपुल विहंग निवास।
फूलत फलत सुपल्लवित सोहत पुर चहुँपास ३९
बने नवरणात नगर निकाई। जहाँ जाइ मन तहाँ लुभाई।
चारुबजारविचित्र अटारी। मणिमय विधिजनु स्वकरसँवारी
धनिकबनिकवरधनदसमाना। बैठे सकलवस्तु लै नाना।
चौहट सुन्दर गली सुहाई। सन्तत रहहिं सुगन्ध सिँचाई।
मंगल मय मन्दिर सब केरे। चित्रित जनु रतिनाथ चितेरे
पुर नरनारिसुभग शुचि सन्ता। धर्म्म शील ज्ञानी गुणवन्ता
अतिअनूपजहँजनकनिवासू। विथकहिंविबुधविलोकिविलासू
होत चकितचित कोटविलोकी। सकलभुवनशोभाजनु रोकी

दो० धवल धाम मनि पुरट पट सुघटित नाना भाँति।
सिय निवास सुन्दर सदन शोभा किमि कहि जाति २४०

सुभग द्वार सब कुलिश कपाटा। भूप भीर नट मागध भाटा
बनी विशाल वाजि गज शाला। हय गज रथ संकुल सब काला
शूर सचिव सेनप बहुतेरे। नृप गृह सरिस सदन सब केरे
पुर बाहिर सर सरित समीपा। उतरे जहँ तहँ विपुल महीपा
देखि अनूप एक अँबराई। सब सुपास सब भाँति सुहाई
कौशिक कहेउ मोर मन माना। इहाँ रहिय रघुवीर सुजाना
भलेहि नाथ कहि कृपानिकेता। उतरे तहँ मुनि वृन्द समेता
विश्वामित्र महा मुनि आये। समाचार मिथिलापति पाये

दो० संग सचिव शुचि भूरि भट भूसुर वर गुरु ज्ञाति।
चले मिलन मुनिनायकहि मुदित राउ एहि भाँति ४१

कीन्ह प्रणाम धरणि धरि माथा। दीन्ह अशीश मुदित मुनिनाथा
विप्र वृन्द सब सादर बन्दे। जानि भाग्य बड़ राउ अनन्दे।
कुशल प्रश्न कहि बारहिं बारा। विश्वामित्र नृपहि बैठारा।
तेहि अवसर आये दोउ भाई। गये रहे देखन फुलवाई।
श्याम गौर मृदु वयस किशोरा। लोचन सुखद विश्व चित चोरा

उठे सकल जब रघुपति आये। विश्वामित्र निकट बैठाये
भये सब सुखी देखि दोउ भ्राता। बारि बिलोचन पुलकित गाता
मूरति मधुर मनोहर देखी। भयउ बिदेह बिदेह बिसेखी
दो० प्रेम मगन मन जानि नृप करि बिबेक धरि धीर।
बोलेउ मुनि पद नाइ सिर गदगद गिरा गँभीर ४२
कहहु नाथ सुन्दर दोउ बालक। मुनिकुलतिलक कि नृपकुलपालक
ब्रह्म जो निगम नेति कहि गावा। उभय बेष धरि सो कि आवा।
सहज बिराग रूप मनमोरा। थकित होत जिमि चन्द्र चकोरा।
ताते प्रभु पूँछौं सतभाऊ। कहहु नाथ जनि करहु दुराऊ
इन्हहिं बिलोकत अति अनुरागा। बरबस ब्रह्मसुखहिं मन त्यागा
कहमुनि बिहँसि कहेउ नृपनीका। बचन तुम्हार न होइ अलीका
ये प्रिय सबहिं जहाँ लगि प्राणी। मन मुसुकाहिं रामु सुनि बानी
रघुकुलमनि दशरथ के जाये। मम हित लागि नरेश पठाये
दो० राम लषन दोउ बन्धु बर रूप शील बल धाम।
मख राखेउ सब साखि जग जीति असुर संग्राम ४३
मुनि तव चरन देखि कह राऊ। कहि न सकौं निज पुन्य प्रभाऊ
सुन्दर श्याम गौर दोउ भ्राता। आनँदहू के आनँद दाता

इन की प्रीति परस्पर पावनि। कहि न जाइ मन भाव सुहावनि
सुनहु नाथ कह मुदित विदेहू। ब्रह्म जीव इव सहज सनेहू।
पुनि पुनि प्रभुहि चितव नर नाहू। पुलक गात उर अधिक उछाहू
मुनिहिं प्रशंसि नाइ पद शीशा। चले लिवाइ नगर अवनीशा
सुन्दर सदन सुखद सब काला। तहाँ वास लै दीन्ह भुआला
करि पूजा सब विधि सेवकाई। गयउ राउ गृह विदा कराई
दो० ऋषय संग रघुवंश मणि करि भोजन विश्राम।
बैठे प्रभु भ्राता सहित दिवस रहा भरि याम ४४
लषण हृदय लालसा विशेषी। जाइ जनकपुर आइय देखी
प्रभु भय बहुरि मुनिहि सकुचाहीं। प्रकट न कहहिं मन हिं मुसुकाहीं
राम अनुज मन की गति जानी। भक्त बछलता हिय हुलसानी
परम विनीत सकुचि मुसुकाई। बोले गुरु अनुशासन पाई
नाथ लषण पुर देखन चहहीं। प्रभु सकोच डर प्रकट न कहहीं
जो राउर आयसु मैं पाऊँ। नगर दिखाइ तुरत ले आऊँ
सुनि मुनीश कह वचन सप्रीती। कस न राम रारवहु तुम नीती
धर्म्म सेतु पालक तुम ताता। प्रेम विवश सेवक सुख दाता
दो० जाइ देखि आवहु नगर सुख निधान दोउ भाइ।

करहु सुफल सबके नयन सुन्दर वदन दिखाइ ४५

मुनि पदकमल वन्दि दोउ भ्राता। चले लोक लोचन सुख दाता।
बालक बृन्द देखि अति शोभा। लगे संग लोचन मन लोभा
पीत वसन परिकर कटि भाथा। चारु चाप शर सोहत हाथा
तनु अनुहरत सुचन्दन खोरी। श्यामल गौर मनोहर जोरी
केहरि कन्धर बाहु विशाला। उर अति रुचिर नाग मणि माला
सुभग अवण सरसीरुह लोचन। वदन मयंक ताप त्रय मोचन।
कानन्ह कनक फूल छबि देहीं। चितवत चितहि चोरि जनु लेहीं
चितवनि चारु भृकुटि वर बाँकी। तिलक रेख शोभा जनु चाँकी
दो० रुचिर चौतनी सुभग शिर मेचक कुंचित केश।
नख शिख सुन्दर बन्धु दोउ शोभा सकल सुदेश ४६

देखन नगर भूप सुत आये। समाचार पुरवासिन पाये
धाये धाम काम सब त्यागे। मनहुँ रंक निधि लूटन लागे
निरखि सहज सुन्दर दोउ भाई। होहिं सुखी लोचन फल पाई
युवती भवन झरोखन्हि लागीं। निरखहिं राम रूप अनुरागीं
कहहिं परस्पर वचन सप्रीती। सखि इन्ह कोटि काम छबि जीती
सुर नर असुर नाग मुनि माहीं। शोभा असि कहुं सुनियत नाहीं

विष्णु चारिभुज विधिमुख चारी। विकटवेष मुख पञ्च पुरारी
अपर देव अस कोउ जग आही। इहि छबि सरिस पटतरिये नाही
दो० वय किशोर सुखमा सदन श्याम गौर सुख धाम।
अंग अंग पर वारिये कोटि कोटि शत काम ४७
कहहु सखी अस को तनुधारी। जो न मोह यह रूप निहारी
कोउ सप्रेम बोली मृदुबानी। जो मैं सुना सो सुनहु सयानी
ये दोउ नृप दशरथ के ढोटा। बाल मरालनि के कल जोटा
मुनि कौशिक मख के रखवारे। जिन रण अजय निशाचर मारे
श्याम गात कल कंज विलोचन। जो मारीच सुभुज मद मोचन।
कौशल्या सुत सो सुख खानी। नाम राम धनु शायक पानी
गौर किशोर वेष वर काछे। कर शर चाप राम के पाछे
लक्ष्मण नाम राम लघु भ्राता। सुनु सखि तासु सुमित्रा माता
दो० विप्र काज करि बन्धु दोउ मग मुनि बधू उधारि।
आये देखन चाप मख सुनि हर्यो सब नारि ४८
देखि राम छबि कोउ इक कहई। योग्य जानकी यह वर अहई
जो सखि इन्हहिं देख नर नाहू। पण परिहरि हठि करै विवाहू
कोउ कह इन्ह भूपति पहिचाने। मुनि समेत सादर सनमाने

सखि परन्तु पराधीन तर्जई। विधिवश हठि अविवेकहि भर्जई
कोउ कहै जो भल अहै विधाता। सब कहँ सुनिय उचित फल दाता
तौ जानकिहि मिलिहि वर एहू। नाहिन आली यह सन्देहू।
जो विधि वश अस बनै सँयोगू। तौ कृतकृत्य होयँ सब लोगू
सखि हमरे अति आरत ताते। कबहुँक ये आवहिं इहि नाते
दो० नाहित हमकहँ सुनहु सखि इन्ह कर दरशन दूरि।
यह संघट तब होइ जब पुराय पुराकृत भूरि ४९
बोली अपर कहेहु सखि नीका। यह विवाह अति हित सबही का
कोउ कहै शंकर चाप कठोरा। श्यामल मृदुगात किशोरा
सब असमञ्जस अहै सयानी। यह सुनि अपर कहै मृदुवानी
सखि इनकहँ कोउ कोउ अस कहहीं। बड़ प्रभाव देखत लघु अहहीं
परसि जासु पद पंकज धूरी। तरी अहल्या कृत अघ भूरी
सो कि रहैं बिन शिव धनु तोरे। यह प्रतीति परिहरियन भोरे
जेहि विरञ्चि रचि सीय सँवारी। तेहँ श्यामल वर रचेउ विचारी।
तासु वचन सुनि सब हरषानी। ऐसइ होउ कहहिं मृदुवानी।
दो० हिय हर्षहिं वर्षहिं सुमन सुमुखि सुलोचनि वृन्द।
जाहिं जहाँ जहँ बन्धु दोउ तहँ तहँ परमानन्द २५०

पुर पूरब दिशि गे दोउ भाई। जहाँ धनुष मख भूमि बनाई
अति बिस्तार चारु गच ढारी। बिमल बेदिका रुचिर सँवारी
चहुँ दिशि कञ्चन मञ्च बिशाला। रचे जहाँ बैठहिं महिपाला
तेहि पाछे समीप चहुँ पासा। अपर मञ्च मण्डली बिलासा
कछुक ऊँच सब भाँति सुहाई। बैठहिं नगर लोग सब आई
तिन के निकट बिशाल सुहाये। धवल धाम बहु बरण बनाये।
जहँ बैठीं देखहिं पुर नारी। यथा योग्य निज कुल अनुहारी
पुर बालक कहि कहि मृदु बचना। सादर प्रभुहिं देखावहिं रचना

दो॰ सब शिशु इहि मिसु प्रेम बश परसि मनोहर गात।
तन पुलकहिं अति हर्ष हिय देखि देखि दोउ भ्रात ५१

शिशु सब राम प्रेम बश जाने। प्रीति समेत निकेत बखाने
निज निज रुचि सब लेहिं बुलाई। सहित सनेह जाहिं दोउ भाई
राम दिखावहिं अनुज हि रचना। कहि मृदु मधुर मनोहर बचना
लव निमेष महँ भुवन निकाया। रचै जासु अनुशासन माया
भक्त हेतु सोइ दीन दयाला। चितवत चकित धनुष मख शाला
कौतुक देखि चले गुरु पाहीं। जानि बिलम्ब त्रास मन माहीं
जासु त्रास डर कहँ डर होई। भजन प्रभाव देखावत सोई।

कहि बातें मृदु मधुर सुहाई। किये बिदा बालक बरिआई
दो॰ सभय सप्रेम विनीत अति सकुच सहित दोउ भाइ।
गुरु पद पंकज नाइ सिर बैठे आयसु पाइ ५२
निसि प्रवेस मुनि आयसु दीन्हा। सबहिं सन्ध्या बन्दन कीन्हा
कहत कथा इतिहास पुरानी। रुचिर रजनि जुग जाम सिरानी
मुनिवर शयन कीन्ह तब जाई। लगे चरण चापन दोउ भाई
जिनके चरण सरोरुह लागी। करत विविध जप योग विरागी
ते दोउ बन्धु प्रेम जनु जीते। गुरु पद कमल पलोटत प्रीते
बार बार मुनि आज्ञा दीन्हा। रघुवर जाय शयन तब कीन्हा
चापत चरण लखण उर लाये। सभय सप्रेम परम सुख पाये
पुनि पुनि प्रभु कह सोवहु ताता। पौढ़े धरि उर पद जल जाता
दो॰ उठे लखण निसि विगत सुनि अरुण शिखा धुनि कान
गुरु तें पहिले जगत पति जागे राम सुजान ५३
सकल शौच करि जाइ नहाये। नित्य निबाहि गुरुहि सिर नाये
समय जानि गुरु आयसु पाई। लेन प्रसून चले दोउ भाई।
भूप बाग बर देखेउ जाई। जहँ बसन्त ऋतु रही लुभाई
लागे बिटप मनोहर नाना। बरण बरण बर बेलि बिताना।

नव पल्लव फल सुमन सुहाये। निज सम्पति सुरतरु हिलजाये
चातक कोकिल कीर चकोरा। कूँजत विहँग नचत कल मोरा
मध्य बाग सर सोह सुहावा। मनि सोपान विचित्र बनावा
विमल सलिल सरसिज बहुरंगा। जल खग कूजत गुंजत भृंगा
दो॰ बाग तड़ाग विलोकि प्रभु हर्षे बन्धु समेत ।
परम रम्य आराम यह जो रामहिं सुख देत ५४
चहुँ दिशि चितै पूँछि मालीगन। लगे लेन दल फूल मुदित मन
तेहि अवसर सीता तहँ आई। गिरिजा पूजन जननि पठाई
संग सखी सब सुभग सयानी। गावहिं गीत मनोहर बानी।
सर समीप गिरिजा गृह सोहा। बरनि न जाय देखि मन मोहा
मज्जन करि सर सखी समेता। गई मुदित मन गौरि निकेता
पूजा कीन्ह अधिक अनुरागा। निज अनुरूप सुभग वर माँगा
एक सखी सिय संग विहाई। गई रही देखन फुलवाई।
तेइँ दोउ बन्धु विलोके उजाई। प्रेम विवश सीता पहँ आई
दो॰ तासु दशा देखी सखिन पुलक गात जलनयन।
कहु कारण निज हर्ष कर पूँछहिं सब मृदु बयन ५५
देखन बाग कुँवर दोउ आये। वय किशोर सब भाँति सुहाये

श्यामगौरकिमिकहौंबखानी। गिराअनयननयनबिनुबानी
सुनिहर्षींसबसखीसयानी। सियहियअतिउतकण्ठाजानी
एककहहिं नृपसुतते आली। सुनेजे मुनिसँग आये काली
निजनिजरूप मोहनी डारी। कीन्हे स्ववशनगरनर नारी
बरातछबिजहँतहँसबलोगू। अवशि देखिये देखन योगू
तासुवचनअतिसियहिसुहाने। दरशलागिलोचनअकुलाने
चलींअग्रकरिप्रियसखिसोई। प्रीति पुरातन लखैन कोई
दो० सुमिरि सीय नारद वचन उपजी प्रीति पुनीत।
चकितविलोकतिसकलदिशिजनुशिशुमृगीसभीत ५६
कंकणाकिंकिणिनूपुरधुनिसुनि। कहतलखणासनरामहृदयगुनि
मानहुँमदन दुन्दुभी दीन्ही। मनसाविश्वविजयकहँकीन्ही
असकहिफिरिचितयेतेहिओरा। सियमुखशशिभयेनयनचकोरा
भयेविलोचनचारुअचंचल। मनहुँसकुचिनिमितजेउहगंचल
देखि सीय शोभा सुखपावा। हृदय सराहत वचन न आवा
जनुविरञ्चिसबनिजनिपुणाई। विरचिविश्वकहँप्रगटदिखाई
सुन्दरता कहँ सुन्दर करई। छविगृह दीपशिखाजनुबरई।
सब उपमा कवि रहे जुठारी। केहि पटतरिय विदेहकुमारी

दो० सिय शोभा हिय बरनि प्रभु आपनि दशा विचारि।
बोले शुचि मन अनुज सन बचन समय अनुहारि ५७

तात जनक तनया यह सोई। धनुष यज्ञ जेहि कारण होई
पूजन गौरि सखी लै आई। करति प्रकाश फिरति फुलवाई
जासु विलोकि अलौकिक शोभा। सहज पुनीत मोर मन लोभा
सो सब कारण जान विधाता। फरकहिं सुभग अंग सुनु भ्राता
रघुबंशिन कर सहज सुभाऊ। मन कुपन्थ पग धरैं न काऊ
मोहिं अतिशय प्रतीति जिय केरी। जेहि सपनेहुँ पर नारि न हेरी
जिन के लहहिं न रिपु रण पीठी। नहिं लावहिं पर तिय मन डीठी
मंगन लहहिं न जिन के नाहीं। ते नर वर थोरे जग माहीं

दो० करत बतकही अनुज सन मन सिय रूप लुभान।
मुख सरोज मकरन्द छवि करत मधुप इव पान ५८

चितवति चकित चहूं दिशि सीता। कहँ गये नृप किशोर मन चीता
जहँ विलोकि मृग शावक नैनी। जनु तहँ बरिस कमल सित श्रेनी
लता ओट तब सखिन लखाये। श्यामल गौर किशोर सुहाये
देखि रूप लोचन ललचाने। हर्षे जनु निज निधि पहिचाने।
थके नयन रघुपति छवि देखी। पलकनहूं परिहरी निमेषी

अधिकसनेह देहभइ भोरी। शरदशशिहिजनुचितवचकोरी
लोचन मगु रामहिंउर आनी। दीन्हे पलक कपाट सयानी
जबसियसखिनप्रेमवशजानी। कहिनसकहिंकछुमनसकुचानी

दो॰ लताभवन ते प्रकट भे तेहि अवसर दोउ भाइ।
निकसेजनुयुगविमलविधुजलदपटलविलगाइ॥२९॥

शोभासीवसुभग दोउ वीरा। नील पीत जल जात शरीरा
काकपक्ष शिर सोहत नीके। गुच्छाबिचबिचकुसुमकलीके
भालतिलकश्रमविन्दुसुहाये। श्रवणासुभगभूषणछबिछाये
विकट भृकुटि कच घूँघरवारे। नव सरोज लोचन रतनारे।
चारुचिबुक नासिकाकपोला। हासविलासलेतजनु मोला
मुखछबिकहिनजाइमोहिंपाहीं। जोविलोकिबहुकाम लजाहीं
उरमणिमालकम्बुकलग्रीवा। कामकलभकरभुजबलसींवा
सुमन समेत बाम कर दोना। साँवर कुँवर सखी सुठि लोना

दो॰ केहरिकटि पट पीत धर सुखमा शीलनिधान।
देखि भानुकुलभूषणहिंबिसरासखिनअपान॥२९॥

धरि धीरज इकसखीसयानी। सीता सन बोली गहि पानी
बहुरि गौरि कर ध्यान करेहू। भूपकिशोर देखि किन लेहू

सकुचि सीय तब नयन उघारे। सन्मुख दोउ रघुवंश निहारे
नख शिख देखि राम की शोभा। सुमिरि पिता प्रण मन अति क्षोभा
परवश सखिन लखी जब सीता। भयउ गहरु सब कहहिं सभीता
पुनि आउब इहि बिरिया काली। अस कहि मन बिहँसी इक आली
गूढ़ गिरा सुनि सिय सकुचानी। भयउ विलम्ब मातु भय मानी
धरि धीरज धीर राम उर आनी। फिरि आपन प्रण पितु वश जानी

दो० देखन मिसु मृग विहँग तरु फिरैं बहोरि बहोरि।
निरखि निरखि रघुवीर छबि बाढ़ी प्रीति न थोरि ६१

जानि कठिन शिव चाप बिसूरति। चली राखि उर श्यामल मूरति
प्रभु जब जात जानकी जानी। सुख सनेह शोभा गुण खानी
परम प्रेममय मृदु मसि कीन्ही। चारु चित्त भीतर लिखि लीन्ही
गई भवानी भवन बहोरी। वन्दि चरण बोली कर जोरी
जय जय जय गिरिराज किशोरी। जय महेश मुख चन्द चकोरी
जय गजवदन षड़ानन माता। जगत जननि दामिनि द्युति गाता
नहिं तव आदि मध्य अवसाना। अमित प्रभाव वेद नहिं जाना
भव भव विभव पराभव कारिणि। विश्व विमोहिनि स्ववश विहारिणि

दो० पति देवता सुतीय महँ मातु प्रथम तव रेख।

महिमा अमित न कहि सकहिं सहस सारद सेष ६२
सेवत तोहिं सुलभ फल चारी। वरदायिनि त्रिपुरारि पियारी।
देवि पूजि पद कमल तुम्हारे। सुर नर मुनि सब होहिं सुखारे
मोर मनोरथ जानहु नीके। बसहु सदा उर पुर सबही के
कीन्हेउँ प्रगट न कारन तेही। अस कहि चरन गहे बैदेही
बिनय प्रेम बस भई भवानी। खसी माल मूरति मुसुकानी
सादर सिय प्रसाद उर धरेऊ। बोली गौरि हरष हिय भरेऊ।
सुनु सिय सत्य असीष हमारी। पूजिहि मन कामना तुम्हारी
नारद बचन सदा सुचि साँचा। सो बर मिलिहि जाहि मन राँचा
छं० मन जाहि राँचेउ मिलिहि सो बर सहज सुन्दर साँवरो।
करुनानिधान सुजान सील सनेह जानत रावरो॥
एहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हिय हरषित अली
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मन्दिर चली ३३
सो० जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु न जाय कहि।
मञ्जुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे ३१
हृदय सराहत सीय लुनाई। गुरु समीप गवने दोउ भाई
राम कहा सब कौसिक पाहीं। सरल सुभाउ छुआ छल नाहीं

सुमन पाइ मुनि पूजा कीन्ही। पुनि असीस दोउ भाइन दीन्ही
सुफल मनोरथ होहिं तुम्हारे। राम लषन सुनि भये सुखारे
करि भोजन मुनि बर बिज्ञानी। लगे कहन कछु कथा पुरानी
बिगत दिवस मुनि आयसु पाई। सन्ध्या करन चले दोउ भाई
प्राची दिसि ससि उगेउ सुहावा। सिय मुख सरिस देखि सुख पावा
बहरि बिचार कीन्ह मन माहीं। सीय बदन सम हिमकर नाहीं

दो० जन्म सिन्धु पुनि बन्धु बिष दिन मलीन सकलंक।
सिय मुख समता पाव किमि चन्द बापुरो रंक ६३

घटै बढ़ै बिरहिनि दुखदाई। ग्रसै राहु निज सन्धिहि पाई
कोक शोक प्रद पंकज द्रोही। अवगुन बहुत चन्द्रमा तोही
बैदेही मुख पटतर दीन्हे। होय दोष बड़ अनुचित कीन्हे
सिय मुख छबि बिधु ब्याज बखानी। गुरु पहँ चले निसा बड़ि जानी
करि मुनि चरन सरोज प्रनामा। आयसु पाइ कीन्ह बिश्रामा
बिगत निशा रघुनायक जागे। बन्धु बिलोकि कहन अस लागे
उगेउ अरुन अवलोकहु ताता। पंकज कोक लोक सुख दाता
बोले लषन जोरि युग पानी। प्रभु प्रभाव सूचक मृदु बानी

दो० अरुनोदय सकुचे कुमुद उडुगन ज्योति मलीन।

जिमि तुम्हार आगमन सुनि भये नृपति बलहीन ६४
नृप सब नखत करहिं उजियारी। टारि न सकहिं चाप तम भारी
कमल कोक मधुकर खग नाना। हरषे सकल निशा अवसाना
ऐसेहि प्रभु सब भक्त तुम्हारे। होइहहिं टूटे धनुष सुखारे
उदय भानु बिनु श्रम तम नाशा। दुरे नखत जग तेज प्रकाशा
रवि निज उदय व्याज रघुराया। प्रभु प्रताप सब नृपन दिखाया
तव भुज बल महिमा उदघाटी। प्रगट धनुष बिघटत परिपाटी
बन्धु बचन सुनि प्रभु मुसुकाने। होइ शुचि सहज पुनीत अन्हाने
नित्य क्रिया करि गुरु पहँ आये। चरण सरोज सुभग शिर नाये
सतानन्द तब जनक बुलाये। कौशिक मुनि पहँ तुरत पठाये
जनक बिनय तिन आय सुनाई। हरषे बोलि लिये दोउ भाई
दो० सतानन्द पद बन्दि प्रभु बैठे गुरु पहँ जाइ ।
चलहु तात मुनि कहेउ तब पठवा जनक बुलाइ ६५
सीय स्वयम्बर देखिय जाई। ईश काहि धौं देहिं बड़ाई
लखण कहा यश भाजन सोई। नाथ कृपा तव जा पर होई
हरषे मुनि सब सुनि बर बानी। दीन्ह अशीष सबहि सुख मानी
पुनि मुनि बृन्द समेत कृपाला। देखन चले धनुष मख शाला

रंगभूमि आये दोउ भाई। अस सुधि सब पुरवासिन पाई
चले सकल गृह काज बिसारी। बाल जुवा जरठ नर नारी
देखी जनक भीर भइ भारी। सुचि सेवक सब लिये हँकारी
तुरत सकल लोगन पहँ जाहू। आसन उचित देहु सब काहू

दो॰ कहि मृदु बचन बिनीत तिन बैठारे नर नारि।
उत्तम मध्यम नीच लघु निज निज थल अनुहारि ६६

राज कुँवर तेहि अवसर आये। मनहुं मनोहरता छबि छाये
गुन सागर नागर बर बीरा। सुन्दर स्यामल गौर सरीरा
राज समाज बिराजत रूरे। उडुगन महुँ जनु जुग बिधु पूरे।
जिन के रही भावना जैसी। प्रभु मूरति देखी तिन तैसी
देखहिं भूप महा रन धीरा। मनहुं बीर रस धरे सरीरा
डरे कुटिल नृप प्रभुहि निहारी। मनहुं भयानक मूरति भारी
रहे असुर छल जो नृप बेरखा। तिन प्रभु प्रगट काल सम देखा
पुर बासिन देखे दोउ भाई। नर भूषन लोचन सुखदाई

दो॰ नारि बिलोकहिं हरषि हिय निज निज रुचि अनुरूप।
जनु सोहत सिंगार धरि मूरति परम अनूप ६७

बिदुषन्ह प्रभु बिराटमय दीखा। बहु मुख कर पग लोचन सीसा

जनकजाति अवलोकहिंकैसे। सजन सगे प्रिय लागहिं जैसे
सहितविदेहविलोकहिंरानी। सिशुसमप्रीतिनजातिबखानी
योगिनपरमतत्त्वमयभाषा। शान्तशुद्धसमसहज प्रकाशा
हरिभक्तन देखेउदोउ भ्राता। इष्टदेव इव सब सुखदाता
रामहिंचितवभावजेहिसीया। सोसनेहसुखनहिंकथनीया
उरअनुभवतिनकहिसकसोऊ। कवन प्रकार कहैकविकोऊ
इहिविधिरहाजाहिजसभाऊ। तेहिं तस देखेउ कोशल राऊ
दो० राजत राज समाज महँ कोशलराजकिशोर।
सुन्दरश्यामलगौरतनुविश्वविलोचनचोर ६८
सहज मनोहर मूरति दोऊ। कोटि काम उपमा लघु सोऊ
शरद चन्दनिन्दक मुखनीके। नीरज नयन भावते जीके
चितवनिचारुमारमदहरणी। भावतिहृदयजाइनहिंवरणी
कलकपोलश्रुतिकुण्डललोला। चिबुकअधरसुन्दरमृदुबोला
कुसुदबन्धुकरनिन्दकहासा। भृकुटी विकट मनोहर नासा
भालविशालतिलकझलकाहीं। कचविलोकिअलिअवलिलजाहीं
पीत चौतनी शिरन सुहाई। कुसुमकलीबिचबीचबनाई
रेखारुचिरकम्बुकल ग्रीवाँ। जनुत्रिभुवनसुखमाकीसीवाँ

दो० कुञ्जर मनिगा करा ढा कलित उर तुलसी की माल।
वृषभ कन्ध केहरि ठवनि बल निधि बाहु विशाल ६९

कटि तूणीर पीत पट बाँधे। कर शर धनुष वाम कर काँधे
पीत यज्ञ उपवीत सुहाई। नख शिख रूप मंजु महा छबि छाई
देखि लोग सब भये सुखारे। इकटक लोचन टरहिं न टारे
हर्षे जनक देखि दोउ भाई। मुनि पद कमल गहे तब जाई
करि विनती निज कथा सुनाई। रंग अवनि सब मुनिहि दिखाई
जहँ जहँ जाहिं कुँवर वर दोऊ। तहँ तहँ चकित चितव सब कोऊ
निज निज रुचि राम हिं सब देखा। कोउ न जान कछु मर्म विशेखा
भलि रचना नृप सन मुनि कहेउ। राजा मुदित महा सुख लहेऊ

दो० सब मञ्चन ते मञ्च इक सुन्दर विशद विशाल।
मुनि समेत दोउ बन्धु तहँ बैठारे महिपाल २७०

प्रभुहि देखि सब नृप हिय हारे। जनु राकेश उदय भये तारे।
असप्रतीति तिन्ह के मन माहीं। राम चाप तोरब शक नाहीं
बिनु भञ्जेहु भव धनुष विशाला। मेलिहि सीय राम उर माला
असविचारि गवनेहु घर भाई। जय प्रताप बल तेज गवाँई
विहँसे अपर भूप सुनि बानी। जे विवेक अन्ध अभिमानी

तोरइ धनुष व्याह अवगाहा। बिनु तोरे को कुँवरि बिवाहा
एकबार कालहु किन होई। सियहितसमरजितबहुमसोई
यहसुनि अपर भूपसुकाने। धर्म्म शील हरि भक्तसयाने
सो० सीय बिवाहब राम गर्ब्ब दूरिकरि नृपनकर।
जीतिको सकसंग्राम दशरथके रणबाँकुर २८
बृथामरहुजनि गाल बजाई। मन मोदक नहिं भूखबुताई
शिव हमारि सुनु परमपुनीता। जगदम्बा जानहु जिय सीता
जगतपितारघुपतिहिबिचारी। भरिलोचन छबिलेहु निहारी
सुन्दरसुखद सकलगुणरासी। येदोउ बन्धु शम्भु उर बासी
सुधा समुद्र समीप बिहाई। मृगजलनिरखिमरहुकत धाई
करहुजाइजाकहुँजोइभावा। हमतौ आजुजन्मफल पावा
असकहिभलेभूप अनुरागे। रूप अनूप बिलोकन लागे।
देखहिंसुर नभचढ़े बिमाना। बर्षहिंसुमनकरहिंकलगाना
दो० जानि सुअवसर सीय तबपठवाजनकबुलाइ।
चतुरसखीसुन्दरिसकल सादर चलींलिवाइ २९
सियशोभानहिंजाइबखानी। जगदम्बिकारूपगुणखानी
उपमासकलमोहिंलघुलागी। प्राकृत नारि अंग अनुरागी

सीय वरणि तेहि उपमा देई। को कवि कहै यश को लेई
जो पटतरिय तीय सम सीया। जग असि युवति कहाँ कमनीया
गिरा सुरवर तनु अर्द्ध भवानी। रति अति दुखित अतनु पति जानी
विष वारुणी बन्धु प्रिय जेही। कहिय रमा सम किमि वैदेही
जो छवि सुधा पयोनिधि होई। परम रूपमय कच्छप सोई
शोभा रजु मन्दर शृंगारू। मथै पाणि पंकज निज मारू
दो० इहि विधि उपजै लखि जब सुन्दरता सुख मूल।
तदपि सकोच समेत कवि कहहिं सीय सम तूल ७२
चलीं संग लै सखी सयानी। गावत गीत मनोहर बानी
सोह नवल तनु सुन्दरि सारी। जगत जननि अतुलित छवि भारी
भूषण सकल सुदेश सुहाये। अंग अंग रचि सखिन बनाये
रंगभूमि जब सिय पगु धारी। देखि रूप मोहे नर नारी
हरषि सुरन दुन्दुभी बजाई। बरषि प्रसून अप्सरा गाई
पाणि सरोज सोह जयमाला। अवचक चितै सकल महिपाला
सीय चकित चित रामहिं चाहा। भये मोह वश सब नर नाहा
मुनि समीप बैठे दोउ भाई। लगे ललकि लोचन निधि पाई
दो० गुरुजन लाज समाज बड़ि देखि सीय सकुचानि।

लगी विलोकन सखिन तन रघुवीर हिउर आनि ७३
राम रूप अरु सिय छबि देखी। नर नारिन परिहरी निमेषी
सोचहिं सकल कहत सकुचाहीं। विधिसन विनय करहिं मन माहीं
हरु विधि वेगि जनक जड़ताई। मति हमारि असि देहु सुहाई
बिनु विचार पन तजि नर नाहू। सीय राम कर करैं विवाहू।
जगभल कहहिं भाव सब काहू। हठ कीन्हे अन्तहु उर दाहू।
यह लालसा मगन सब लोगू। वर साँवरो जानकी योगू
तब वन्दीजन जनक बुलाये। विरदावली कहत चलि आये
कह नृप जाइ कहहु पन मोरा। चले भाट हिय हर्ष न थोरा।
दो० बोले वन्दी वचन वर सुनहु सकल महिपाल ।
पनविदेह कर कहहिं हम भुजा उठाय विशाल ७४
नृप भुजबल विधु शिव धनु राहू। गरुअ कठोर विदित सब काहू
रावण बाण महा भट भारे। देखि शरासन गवँहिं सिधारे
सोइ पुरारि कोदण्ड कठोरा। राज समाज आजु जेइँ तोरा
त्रिभुवन जय समेत वैदेही। बिनहिं विचार वरै हठि तेही।
सुनि पण सकल भूप अभिलाषे। भट मानी अतिशय मन माखे
परिकर बाँधि उठे अकुलाई। चले इष्टदेवन सिर नाई।

तमकि ताकि तकि शिव धनु धरहीं। उठइ न कोटि भाँति बल करहीं
जिन के कछु विचार मन माहीं। चाप समीप महीप न जाहीं
दो॰ तमकि धरहिं धनु मूढ़ नृप उठइ न चलहिं लजाइ।
मनहुँ पाइ भट बाहुबल अधिक अधिक गरुआइ ७५
भूप सहस दस एकहि बारा। लगे उठावन टरइ न टारा
डगै न शम्भु शरासन कैसे। कामी वचन सती मन जैसे
सब नृप भये योग उपहासी। जैसे बिनु विराग संन्यासी।
कीरति विजय वीरता भारी। चले चाप कर सरवस हारी
श्रीहत भये हारि हिय राजा। बैठे निज निज जाइ समाजा
नृपन विलोकि जनक अकुलाने। बोले वचन रोष जनु साने
दीप दीप के भूपति नाना। आये सुनि हम जो पण ठाना
देव दनुज धरि मनुज शरीरा। विपुल वीर आये रणधीरा
दो॰ कुँवरि मनोहरि विजय बड़ि कीरति अतिकमनीय।
पावनहार विरञ्चि जनु रचेउ न धनु दमनीय ७६
कहहु काहि यह लाभ न भावा। काहु न शंकर चाप चढ़ावा
रहा चढ़ाउब तोरब भाई। तिलभरि भूमि न सकेउ छुड़ाई
अब जनि कोउ माखै भटमानी। वीर विहीन मही मैं जानी

तजहु आस निज निज गृह जाहू। लिखा न बिधि वैदेहि बिबाहू
सुकृत जाइ जौं पन परिहरऊं। कुँअरि कुआँरि रहै का करऊं
जो जनतेउँ बिनु भट भुइँ भाई। तौ पन करि होतेउँ न हँसाई
जनक बचन सुनि सब नर नारी। देखि जानकिहि भये दुखारी
मागे लखन कुटिल भइँ भौंहैं। रदपुट फरकत नयन रिसौंहैं

दो॰ कहि न सकत रघुबीर डर लगे बचन जनु बान।
नाइ राम पद कमल सिर बोले गिरा प्रमान ७७

रघुबंसिन महँ जहँ कोउ होई। तेहि समाज अस कहइ न कोई
कही जनक जस अनुचित बानी। बिद्यमान रघुकुल मनि जानी
सुनहु भानुकुल पंकज भानू। कहौं सुभाव न कछु अभिमानू
जौं राउर अनुशासन पाऊं। कंदुक इव ब्रह्मांड उठाऊं
काँचे घट जिमि डारौं फोरी। सकौं मेरु मूलक इव तोरी
तव प्रताप महिमा भगवाना। का बापुरो पिनाक पुराना।
नाथ जानि अस आयसु होऊ। कौतुक करौं बिलोकिय सोऊ
कमल नाल जिमि चाप चढ़ावौं। जोजन सत प्रमान लै धावौं

दो॰ तोरौं छत्रक दंड जिमि तव प्रताप बल नाथ।
जौं न करौं प्रभु पद शपथ पुनि न धरौं धनु हाथ ७८

लषणासकोपवचनजबबोले।डगमगानिमहिदिग्गजडोले
सकललोक सब भूप डराने।सियहियहर्षजनकसकुचाने
गुरुरघुपतिसबमुनिमनमाहीं।मुदितभयेपुनिपुनिपुलकाहीं
सैनहिंरघुपतिलषणानिवारे।प्रेम समेत निकट बैठारे।
विश्वामित्र समयशुभजानी।बोले अति सनेह मृदुबानी
उठहु राम भञ्जहु भव चापू।मेटहु तात जनक परितापू
सुनिगुरुवचनचरणशिरनावा।हर्ष विषादनकछुउरआवा
ठाढ़ भयेउठि सहज सुभाये।ढवनि युवा मृगराज लजाये
दो० उदित उदयगिरि मञ्च पर रघुवर बालपतंग।
विकसे सन्त सरोज बन हरषे लोचन भृंग ७९
नृपनकेरिआशानिशिनाशी।वचननखतअवलीनप्रकाशी
मानी महिप कुमुदसकुचाने।कपटी भूप उलूक लुकाने
भयेविशोककोकमुनि देवा।वर्षहिंसुमन जनावहिं सेवा
गुरुपदवन्दिसहितअनुरागा।रामसुनिनसनआयसु माँगा
सहजहिंचलेसकलजगस्वामी।मत्त मञ्जुकुञ्जरवर गामी
चलतराम सबपुर नर नारी।पुलक पूरि तनु भये सुखारी
वन्दिपितर सुर सुकृतसँभारे।जोकछु पुण्य प्रभाव हमारे

तौशिवधनुमृणालकी नाईं। तोरहिं राम गणेश गुसाईं
दो० रामहिंप्रेमसमेतलखिसखिनसमीपबुलाइ।
सीतामातुसनेहवशवचनकहैविलखाइ २८०
सखिसबकौतुकदेखनहारे। जोउ कहावत हितू हमारे
कोउनबुझायकहइनृपपाहीं। येबालकअसिहठभलनाहीं
रावणबाणछुआनहिंचापा। हारे सकलभूप करि दापा
सो धनु राजकुँवर कर देहीं। बालमराल कि मन्दर लेहीं
भूपसयानपसकलसिरानी। सखिविधिगतिकछुजायनजानी
बोली चतुर सखी मृदुबानी। तेजवन्त लघु गनियन रानी
कहँकुम्भजकहँसिन्धुअपारा। सोयेउ सुयशसकलसंसारा
रविमराडल देखतलघुलागा। उदय तासुत्रिभुवनतम भागा
दो० मंत्रपरम लघुजासुवशविधिहरिहरसुरसर्व्व।
महामत्तगजराजकहँ वशकर अंकुशखर्व्व ८१
कामकुसुमधनुसायकलीन्हे। सकलभुवनअपनेवशकीन्हे
देवितजियसंशयअसजानी। भञ्जब धनुष राम सुनु रानी
सखीवचनसुनिभइपरतीती। मिटा विषादबढ़ीअतिप्रीती
तबरामहिंविलोकिवैदेही। सभयहृदयविनवतिजेहि तेही

मनहीं मन मनाय अकुलानी। होहु प्रसन्न महेश भवानी
करहु सफल आपनि सेवकाई। हरि हित हरहु चाप गरुआई
गनानायक वरदायक देवा। आजु लगे कीन्ही तव सेवा
बार बार बिनती सुनि मोरी। करहु चाप गरुता अति थोरी
दो० देखि देखि रघुवीर तन सुर मनाव धरि धीर।
भरे बिलोचन प्रेम जल पुलकावली शरीर ८२
नीके निरखि नयन भरि शोभा। पितु पन सुमिरि बहुरि मन सोभा
अहह तात दारुन हठ ठानी। समुझत नहिं कछु लाभ न हानी
सचिव सभय सिख देइ न कोई। बुध समाज बड़ अनुचित होई
कहँ धनु कुलिश कहाँ चाहि कठोरा। कहँ श्यामल मृदु गात किशोरा
बिधि केहि भाँति धरौं उर धीरा। सिरस सुमन कि मिलइ हीरा
सकल सभा की मति भइ भोरी। अब मोहि शंभु चाप गति तोरी
निज जड़ता लोगन पर डारी। होहु हरुअ रघुपतिहि निहारी
अति परिताप सीय मन माहीं। लव निमेष युग सम चलि जाहीं
दो० प्रभुहि चितै पुनि चितै महि राजत लोचन लोल।
खेलत मनसिज मीन युग जनु बिधु मंडल डोल ८३
गिरा अलिनि मुख पंकज रोकी। प्रकट न लाज निशा अवलोकी

लोचनजल रहु लोचनकोना। जैसे परम कृपण कर सोना
सकुचीव्याकुलताबड़िजानी। धरि धीरज प्रतीति उर आनी
तनमनवचनमोरपणसाचा। रघुपतिपदसरोज मनराचा
तौभगवानसकलउरवासी। करिहहिंमोहिंरघुपतिकी दासी
जेहि कर जेहिपरसत्य सनेहू। सोतेहिमिलत न कछु सन्देहू
प्रभु तनचितै प्रेमपण ठाना। कृपानिधानराम सब जाना
सियहिविलोकितकेउधनुकैसे। चितवगरुड़लघुव्यालहिजैसे
दो० लखण लखेउ रघुवंशमणि ताकेउहर कोदण्ड।
पुलकि गातबोलेवचन चरण चापिब्रह्मण्ड ८४
दिशिकुञ्जरहुकमठअहिकोला। धरहुधरणिधरि धीरनडोला
रामचहहिं शंकर धनु तोरा। होहुसजगसुनिआयसु मोरा
चाप समीप राम जब आये। नरनारिन सुर सुकृत मनाये
सब कर संशय अरु अज्ञानू। मन्दमहीपन कर अभिमानू
भृगुपति केरि गर्व्व गरुआई। सुर मुनि वरन केरि कदराई
सियकरशोचजनकपछितावा। रानिनकरदारुणदुखदावा
शम्भु चाप बड़ वोहित पाई। चढ़े जाइ सब संग बनाई।
रामबाहु बल सिन्धु अपारा। चहत पारनहिंकोउकनहारा

दो० रामविलोके लोग सब चित्र लिखे से देखि।
चितई सीय कृपायतन जानी विकल बिशेखि ८५
देखी विपुल विकल वैदेही। निमिषविहात कल्पसम तेही
तृषित वारिबिनु ज्यों तनत्यागा। मुये करै का सुधा तड़ागा
का वर्षा जब कृषी सुखाने। समय चूकि पुनि का पछिताने
अस जिय जानि जानकी देखी। प्रभु पुलकेलखि प्रीति बिशेखी
गुरहि प्रणामु मनहिं मन कीन्हा। अतिलाघव उठाय धनु लीन्हा
दमकेउ दामिनि जिमि घनलयऊ। पुनि धनु भमरा डलसम भयऊ
लेत चढ़ावत खैंचत गाढ़े। काहु न लखा देख सब ठाढ़े
तेहि छन राम मध्य धनु तोरा। भरेउ भुवन धुनि घोर कठोरा
छं० भरि भुवन घोर कठोर रव रवि बाजि तजि मारग चले।
चिक्करहिं दिग्गज डोल महि अहि कोल कूरम कलमले॥
सुर असुर मुनि कर कान दीन्हे सकल विकल विचारहीं।
कोदण्ड भञ्जेउ राम तुलसी जयति वचन उचारहीं ३४
सो० शंकर चाप जहाज सागर रघुवर बाहु बल ।
बूड़े सकल समाज चढ़े जे प्रथम हिं मोहवश २९
प्रभु दोउ खण्ड चाप महि डारा। देखि लोग सब भये सुखारे

कौशिकरूपपयोनिधिपावन।प्रेमवारि अवगाह सुहावन
राम रूपराकेश निहारी। बढ़ी बीचि पुलकावलि भारी।
बाजे नभ गहगहे निशाना। देवबधू नाचहिं करि गाना
ब्रह्मादिक सुर सिद्ध मुनीशा। प्रभुहिं प्रशंसहिं देहिं असीशा
बरषहिं सुमन रंग बहुभाला। गावहिं किन्नर गीत रसाला
रही भुवन भरि जय जय बानी। धनुष भंग धुनि जात न जानी
मुदित कहहिं जहँ तहँ नरनारी। भञ्जेउ राम शम्भु धनु भारी
दो॰ बन्दी मागध सूत गणा बिरद बदहिं मति धीर।
करहिं निछावरि लोग सब हय गज धन मणि चीर ८६
झाँझ मृदंग शंख सहनाई। भेरि ढोल दुन्दुभी सुहाई
बाजहिं बहु बाजने सुहाये। जहँ तहँ युवतिन मंगल गाये
सखिन सहित हर्षित अति रानी। सूखत धान परा जनु पानी
जनक लहेउ सुख सोच बिहाई। पैरत थके थाह जनु पाई।
श्रीहत भये भूप धनु टूटे। जैसे दिवस दीप छबि छूटे
सियहिय सुख वरणि कहि भाँती। जनु चातकी पाइ जल स्वाती
रामहिं लषण विलोकत कैसे। शशिहि चकोर किशोरक जैसे
सतानन्द तब आयसु दीन्हा। सीता गवन राम पहँ कीन्हा

दो० संग सखी सुन्दरि चतुर गावहिं मंगलचार ।
गवनी बाल मराल गति सुखमा अंग अपार ८७
सखिन मध्य सिय सोहति कैसी। छबि गरा मध्य महाछबि जैसी
कर सरोज जयमाल सुहाई। विश्व विजय शोभा जनु छाई।
तनु सकोच मन परम उछाहू। गूढ़ प्रेम लखि परै न काहू
जाइ समीप राम छबि देखी। रहि जनु कुँवरि चित्र अवरेखी।
चतुर सखी लखि कहा बुझाई। पहिरावहु जयमाल सुहाई
सुनत युगल कर माल उठाई। प्रेम विवश पहिराइ न जाई।
सोहत जनु युग जलज सनाला। शशिहि सभीत देत जयमाला
गावहिं छबि अवलोकि सहेली। सिय जयमाल राम उर मेली
सो० रघुवर उर जयमाल देखि देव बरषहिं सुमन ।
सकुचे सकल सुभाल जनु बिलोकि रबिकुमुदगन ३०
पुर अरु व्योम बाजने बाजे। खल भये मलिन साधु सब गाजे
सुर किन्नर नर नाग मुनीशा। जयजय सब कहि देहिं असीशा
नाचहिं गावहिं बिबुध बधूटी। बार बार कुसुमावलि छूटी।
जहँ तहँ बिप्र बेद धुनि करहीं। बन्दी बिरदावलि उच्चरहीं।
महि पाताल नाक यश व्यापा। राम बरी सिय भञ्जेउ चापा

करहिं आरती पुर नर नारी। देहिं निछावरि वित्त विसारी।
सोहत सीय राम की जोरी। छबि शृंगार मनहु इक ठोरी
सखीकहहिंप्रभुपदगहुसीता।करतिनचरणापरसअतिभीता
दो० गौतमतियगतिसुरतिकरिनहिंपरसतिपदपानि।
मनविहँसेरघुवंशमणिप्रीतिअलौकिकजानि ८८
तबसियदेखिभूपअभिलाखे। कूर कपूत मूढ़ मन माखे
उठिउठिपहिरसनाह अभागे। जहँ तहँ गाल बजावन लागे
लेहु छुड़ाइ सीय कह कोऊ। धरिबाँधहु नृप बालक दोऊ
तोरे धनुष काज नहिं सरई। जीवत हमहिं कुँवरि को बरई
जो विदेह कछु करै सहाई। जीतइ समर सहित दोउ भाई
साधु भूप बोले सुनि बानी। राजसमाजहिं लाज लजानी।
बल प्रताप वीरता बड़ाई। नाक पिनाकहि संग सिधाई
सोइ दरता कि अबकहं पाई। असबुधितौविधिसुहँमसिलाई
दो० देखहु रामहिं नयनभरि तजि इरषा मद मोहु।
लषनरोषपावक प्रबलजानिशलभजनिहोहु ८९
वैनतेयबलिजिमिचह कागू। जिमिशशचहहिंनागअरिभागू
जिमिचहकुशलअकारणकोही।सुखसम्पदाचहहिंशिवद्रोही

लोभी लोलुप कीरति चहई। अकलंकता कि कामी लहई
हरिपद बिमुख परमगति चाहा। तस तुम्हार लालच नर नाहा
कोलाहलसुनि सीय सकानी। सखी लिवाय गईं जहँ रानी
राम सुभाय चले गुरु पाहीं। सिय सनेह बरणात मनमाहीं
रानिन सहित सोच बस सीया। अब बिधि हि कहा करणीया
भूपबचन सुनि इत उत तकहीं। लखण राम डर बोलि न सकहीं
दो० अरुण नयन भृकुटी कुटिल चितवत नृपन सकोप।
मनहुं मत्त गज गण निरखि सिंह किशोरहि चोप २५०
स्वरभर देखि बिकल नर नारी। सब मिलि देहिं महीपन गारी।
तेहि अवसर सुनि शिव धनु भंगा। आये भृगु कुल कमल पतंगा
देखि महीप सकल सकुचाने। बाज झपट जनु लवा लुकाने
गौर शरीर भूति भलि भ्राजा। भाल बिशाल त्रिपुराइ बिराजा।
शीश जटा शशि बदन सुहावा। रिस बश कछुक अरुण होइ आवा
भृकुटी कुटिल नयन रिस राते। सहजहिं चितवत मनहुं रिसाते
बृषभ कन्ध उर बाहु बिशाला। चारु जनेउ माल मृग छाला
कटि मुनि बसन तूण दुइ बाँधे। धनु शर कर कुठार कल काँधे
दो० सान्त बेष करणी कठिन बरणि न जाइ स्वरूप।

धरि सुनि तनुजनु वीर रस आये जहँ सब भूप ९१

देखत भृगुपति वेष कराला। उठे सकल भय विकल भुआला
पितु समेत कहि कहि निज नामा। लगे करन सब दण्ड प्रणामा
जेहि सुभाव चितवहिं हित जानी। सो जानै जनु आयु खुटानी
जनक बहोरि आइ सिर नावा। सीय बुलाइ प्रणाम करावा
आसिष दीन्ह सखी हरषानी। निज समाज लै गई सयानी।
विश्वामित्र मिले पुनि आई। पद सरोज मेले दोउ भाई
राम लषण दशरथ के ढोटा। दीन्ह असीष जानि भल जोटा
रामहिं चितय रहे थकि लोचन। रूप अपार मार मद मोचन

दो॰ बहुरि विलोकि विदेह सन कहहु कहा अति भीर।
पूँछत जानि अजान जिमि व्यापेउ कोप शरीर ९२

समाचार कहि जनक सुनाये। जेहि कारण महीप सब आये
सुनत वचन फिरि अनत निहारे। देखे चाप खण्ड महि डारे
अति रिस बोले वचन कठोरा। कहु जड़ जनक धनुष के ईं तोरा
बेगि देखाउ मूढ न तु आजू। उलटौं महि जहँ लगि तव राजू
अति डर उतर देत नृप नाहीं। कुटिल भूप हर्षे मन माहीं
सुर मुनि नाग नगर नर नारी। सोचहिं सकल त्रास उर भारी

मन पछिताति सीय महतारी। विधि सँवारि सबबात बिगारी
भृगुपति कर स्वभाव सुनि सीता। अरध निमेष कल्प सम बीता
दो० सभय बिलोके लोग सब जानि जानकी भीर।
हृदय न हरषु बिषादु कछु बोले श्री रघुबीर ९३
नाथ सम्भु धनु भञ्जनहारा। होइहि कोउ एक दास तुम्हारा
आयसु कहा कहिअ किन मोही। सुनि रिसाय बोले मुनि कोही
सेवकसो जो करै सेवकाई। अरि करनी करि करिअ लराई
सुनहु राम जेहिं सिव धनु तोरा। सहसबाहु सम सो रिपु मोरा
सो बिलगाउ बिहाइ समाजा। न तु मारे जैहैं सब राजा।
सुनि मुनि बचन लषन मुसुकाने। बोले परसु धरहिं अपमाने
बहु धनुहीं तोरीं लरिकाईं। कबहुँ न असि रिस कीन्हि गोसाईं
एहि धनु पर ममता केहि हेतू। सुनि रिसाय कह भृगुकुलकेतू
दो० रे नृप बालक काल बस बोलत तोहि न सँभार।
धनुही सम त्रिपुरारि धनु बिदित सकल संसार ९४
लषन कहा हँसि हमरे जाना। सुनहु देव सब धनुष समाना
का छति लाभ जीरन धनु तोरे। देखा राम नये के भोरे
छुवत टूट रघुपतिहु न दोसू। मुनि बिनु काज करिय कत रोसू

बोले चितय परशु की ओरा। रे शठ सुनेसि सुभाव न मोरा
बालक बोलि बधौं नहिं तोहीं। केवल मुनि जड़ जानेसि मोहीं
बाल ब्रह्मचारी अति कोही। विश्व विदित क्षत्रियकुल द्रोही
भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्ही। बिपुल बार महिदेवन दीन्ही
सहस बाहु भुज छेदन हारा। परशु बिलोकु महीप कुमारा
दो॰ मातु पितहिं जनि शोचबश करसि महीप किशोर।
गर्भन के अर्भक दलन परशु मोर अति घोर ९५
बिहँसि लषण बोले मृदु बानी। अहो मुनीश महाभट मानी
पुनि पुनि मोहिं देखाव कुठारा। चहत उड़ावन फूँकि पहारा
इहाँ कुम्हड़ बतिया कोउ नाहीं। जो तर्जनि देखत मरि जाहीं
देखि कुठार शरासन बाना। मैं कछु कहा सहित अभिमाना
भृगुकुल समुझि जनेउ बिलोकी। जो कछु कहहु सहौं रिस रोकी
सुर महिसुर हरिजन अरु गाई। हमरे कुल इन पर न सुराई।
बधे पाप अपकीरति हारे। मारतहू पाँ परिय तुम्हारे।
कोटि कुलिश सम बचन तुम्हारा। व्यर्थ धरहु धनु बाण कुठारा
दो॰ जो बिलोकि अनुचित कहेउं छमहु महा मुनि धीर।
सुनि सरोष भृगुबंश मणि बोले गिरा गँभीर ९६

कौशिक क्षमहु मन्द्य हवालक। कुटिल काल वश निज कुल घालक
भानु वंश राकेश कलंकू। निपट निरंकुश अबुध असंकू।
काल कवर होइहि सरा माहीं। कहौं पुकारि खोरि मोहिं नाहीं
तुम हटकहु जो चहहु उबारा। कहि प्रताप बल रोष हमारा
लषरा कहेउ मुनि सुयश तुम्हारा। तुमहिं अस्त कोवरो पारा
अपने मुख तुम आपनि करनी। बार अनेक भाँति बहु वरनी
नहिं सन्तोष तो पुनि कछु कहहू। जनि रिस रोकि दुसह दुख सहहू
वीर व्रत्ति तुम धीर अछोभा। गारी देत न पावहु शोभा
दो० शूर समर करनी करहिं कहि न जनावहिं आपु।
विद्यमान रण पाइ रिपु कायर कथहिं प्रतापु ९७
तुम तौ काल हाँक जनु लावा। बार बार मोहिं लागि बुलावा
सुनत लषरा के वचन कठोरा। परशु सुधारि धरेउ कर घोरा
अब जनि देइँ दोष मोहिं लोगू। कटुबादी बालक वध योगू।
बाल विलोकि बहुत मैं बाँचा। अब यह मरना हार भा साँचा
कौशिक कहा क्षमिय अपराधू। बाल दोष गुण गनहिं न साधू
कर कुठार मैं अकरुन कोही। आगे अपराधी गुरु द्रोही।
उतर देत छाँड़ौं बिनु मारे। केवल कौशिक शील तुम्हारे

नतु इहि काटि कुठार कठोरे। गुरुहिउरिण होतेउँ श्रम थोरे

दो० गाधिसुवन कह हृदय हँसि मुनिहिं हरिअरसूझ।
अयमगवरवराडउऊँखजिमि अजहुँन बूझ अबूझ २८

कहेउ लषरा मुनि शील तुम्हारा। को नहिं जान विदित संसारा
माता हिं पिता हिं उरिण भये नीके। गुरु ऋण रहा सोच बड़ जी के
सो जनु हमरे माथे काढ़ा। दिन चलि गये ब्याज बहु बाढ़ा।
अब आनिय व्यवहरिया बोली। तुरत देउँ मैं थैली खोली
सुनि कटु वचन कुठार सुधारा। हाहा कहि सब लोग पुकारा
भृगुवर परसु देखावहु मोही। विप्र विचारि बचौ नृप द्रोही
मिले न कबहुँ सुभट रण गाढ़े। द्विज देवता घरहि के बाढ़े
अनुचित कहि सब लोग पुकारे। रघुपति सैन हिं लषरा निवारे

दो० लषरा उतर आहुति सरिस भृगुपति कोप कृशानु।
बढ़त देखि जल सम वचन बोले रघुकुल भानु २९

नाथ करहु बालक पर छोहू। सूध दूध मुख करिय न कोहू
जो पै प्रभु प्रभाव कछु जाना। तो कि बराबरि करत अयाना
जो लरिका कछु अनुचित करहीं। गुरु पितु मातु मोद मन भरहीं
करिय कृपा शिशु सेवक जानी। तुम सम शील धीर मुनि ज्ञानी

रामवचनसुनिकछुकुड़ाने। कहिकछुलषराबहुरिमुसुकाने
हँसतदेषिनषशिषरिसव्यापी। राम तोर भ्राता बड़ पापी
गौर शरीर श्याम मन माहीं। कालकूट मुषपयमुषनाहीं
सहज टेढ़ अनुहरै न तोहीं। नीच मीच सम लषै न मोहीं
दो॰ लषराकहेउ हँसिसुनहमुनिक्रोधपापकरमूल।
जेहिवशजनअनुचितकरहिंचलहिंविश्वप्रतिकूल ३००
मैंतुम्हार अनुचरमुनि राया। परिहरि कोप करियअबदाया
टूट चापनहिं जुरहि रिसाने। बैठिय होइहहिं पायँ पिराने।
जोअतिप्रिय तौकरिय उपाई। जोरिय कोउबड़गुनीबुलाई
बोलत लषराहिंजनकडराहीं। मष्टकरहुअनुचित भलनाहीं
थर थर काँपहिं पुर नर नारी। छोट कुमार खोट अति भारी
अगुपतिसुनिसुनिनिर्भयबानी। रिस तनुजरै होइ बल हानी
बोले रामहिं देइ निहोरा। बचौ विचारि बन्धु लघु तोरा।
मन मलीन तनु सुन्दर कैसे। विष रस भरा कनक घट जैसे
दो॰ सुनि लक्ष्मणा विहँसे बहुरि नयन तरेरे राम ।
गुरु समीप गवने सकुचि परिहरि बानीबाम १
अतिविनीतमृदुशीतलबानी। बोले राम जोरि युग पानी

सुनहु नाथ तुम सहज सुजाना। बालक वचन करिय नहिं काना
बरे बालक एक सुभाऊ। इन्हहिं न सन्त बिदूषहिं काऊ
तिन नाहीं कछु काज बिगारा। अपराधी मैं नाथ तुम्हारा
कृपा कोप बध बन्धु गुसाईं। मो पर करिय दास की नाईं
कहिय बेगि जेहि बिधि रिस जाई। मुनिनायक सोइ करिय उपाई
कह मुनि राम जाइ रिस कैसे। अजहुँ अनुज तव चितव अनैसे
एहि के कण्ठ कुठार न दीन्हा। तौ मैं कहा कोप करि कीन्हा
दो० गर्भ अवहिं अवनि परवनि सुनि कुठार गति घोर।
परसु अक्षत देखौं जियत बैरी भूप किसोर २
बहै न हाथ दहै रिस छाती। भा कुठार कुरिठत नृप घाती
भयउ बाम बिधि फिरेउ सुभाऊ। मोरे हृदय कृपा कसि काऊ
आजु दैव दुरबदु सहसहावा। सुनि सौमित्र बिहँसि सिर नावा।
बाउ कृपा मूरति अनुकूला। बोलत बचन झरत जनु फूला
जो पै कृपा जरै मुनि गाता। क्रोध भयें तनु राखु बिधाता
देखु जनक हठि बालक येहू। कीन्ह चहत जड़ जमपुर गेहू।
बेगि करहु किन आँखिन ओटा। देखत छोट खोट नृप ढोटा
बिहँसे लषन कहा मुनि पाहीं। मूँदिय आँखि कतहुँ कोउ नाहीं

दो० परशुराम तब राम प्रति बोले वचन सक्रोध।
शम्भु शरासन तोरि शठ करसि हमार प्रबोध ३

बन्धु कहै कटु सम्मत तोरे। तू छल विनय करसि कर जोरे
करु परितोष मोर संग्रामा। नाहिंत छाँड़ु कहाउब रामा
छलतजिकरहुसमरशिवद्रोही। बन्धु सहित नतु मारौं तोही
भृगुपति तमकिकुठार उठाये। मनमुसुकाहिं राम शिर नाये
गुनाहु लषणाकरहुमपररोषू। कतहुं सुधाइहु ते बड़ दोषू
टेढ़ जानि शंका सब काहू। वक्र चन्द्रमहिं ग्रसै न राहू।
रामकहेउ रिसतजियमुनीशा। कर कुठार आगे यह शीशा
जेहिरिसजायकरियसोइस्वामी। मोहिंजानिआपन अनुगामी

दो० प्रभु सेवकहि समर कस तजहु विप्र वर रोष ।
वेष विलोकि कहेसि कछु बालकहू नहिंदोष ४

देखि कुठार वीरा धनु धारी। भेलरिकहिंरिसवीर विचारी
नामजान पैतुमहिं न चीन्हा। वंश सुभाव उतर तेहि दीन्हा
जो तुम अवतेहुमुनि की नाईं। पदरजशिरशिशुधरत गुसाईं
क्षमहु चूक अनजानत केरी। चहिय विप्र उर कृपा घनेरी
हमहिंतुमहिंसरवरकस नाया। कहहुतोकहाँ चूका कहँ माया

राम मात्र लघु नाम हमारा। परशु सहित बड़ नाम तुम्हारा
देव एक गुण धनुष हमारे। नव गुण परम पुनीत तुम्हारे
सब प्रकार हम तुम सन हारे। क्षमहु विप्र अपराध हमारे
दो० बार बार मुनि विप्रवर कहा राम सन राम ।
बोले भृगुपति सरुष हसि तुहूं बन्धु सम बाम ५
निपटहिं द्विज करि जानेउ मोहीं। मैं जस विप्र सुनाऊं तोहीं
चाप स्रुवा शर आहुति जाग्यू। कोप मोर अति घोर कृशाग्यू
समिध सेन चतुरंग सुहाई। महा महीप भये पसु आई
मैं इहि परशु काटि बलि दीन्हा। समर यज्ञ जग कोटिन कीन्हा
मोर प्रभाव विदित नहिं तोरे। बोलसि निदरि विप्र के भोरे।
भञ्जेउ चाप दाप बड़ बाढ़ा। अहमिति मनहुं जीति जग ठाढ़ा।
राम कहा मुनि कहहु विचारी। रिस अति बड़ि लघु चूक हमारी
छुवत हि टूट पिनाक पुराना। मैं केहि हेतु करौं अभिमाना
दो० जोहम निदरहिं विप्र बदि सत्य सुनहु भृगुनाथ।
तौ अस को जग सुभट जेहि भय वश नावहिं माथ ६
देव स्नुज भूपति भट नाना। सम बल अधिक होउ बलवाना
जोरा हम हि प्रचारय कोऊ। लरहिं सुखेन काल किन होऊ

क्षत्रिय तनुधरि समर सकाना। कुल कलंक तेहि पामर जाना
कहौं सुभाव न कुलहि प्रशंसी। कालहु डरहिं न रण रघुवंशी।
विप्र वंश की अति प्रभुताई। अभय होइ जो तुमहिं डराई
सुनि मृदु गूढ़ वचन रघुपति के। उघरे पटल परशुधर मति के
राम रमापति कर धनु लेहू। खैंचहु चाप मिटै सन्देहू।
देत चाप आपुहि चढ़ि गयऊ। परशुराम मन विस्मय भयऊ

दो० जाना राम प्रभाव तब पुलक प्रफुल्लित गात।
जोरि पाणि बोले वचन प्रेम न हृदय समात ७

जय रघुवंश वनज वन भानू। गहन दनुज कुल दहन कृशानू
जय सुर विप्र धेनु हितकारी। जय मद मोह कोह भ्रम हारी
विनय शील करुणा गुणसागर। जयति वचन रचना अति नागर
सेवक सुखद सुभग सब अंगा। जय शरीर छवि कोटि अनंगा
करौं कहा मुख एक प्रशंसा। जय महेश मन मानस हंसा
अनुचित बहुत कहेउँ अज्ञाता। क्षमहु क्षमा मन्दिर दोउ भ्राता
कहि जय जय जय रघुकुल केतू। भृगुपति गये वनहिं तप हेतू
अपभय कुटिल महीप डराने। जहँ तहँ कायर गँवहिं पराने

दो० देवन दीन्ही दुन्दुभी प्रभु पर वरषहिं फूल।

हरषे पुर नर नारि सब मिटा मोह भय शूल ८

अति राहगहे बाजने बाजे। सबहिं मनोहर मंगल साजे।
यूथयूथ मिलि सुमुखि सुनयनी। करहिं गान कल कोकिल बयनी।
सुख विदेह कर वरणि न जाई। जन्म दरिद्र मनहुं निधि पाई।
बिगत त्रास भइ सीय सुखारी। जनु विधु उदय चकोर कुमारी।
जनक कीन्ह कौशिकहि प्रणामा। प्रभु प्रसाद धनु भञ्जेउ रामा।
मोहिं कृतकृत्य कीन्ह दुहुं भाई। अब जो उचित सो कहिय गुसाँई।
कह मुनि सुनु नरनाह प्रवीना। रहा बिवाह चाप आधीना।
टूटत ही धनु भयउ बिवाहू। सुर नर नाग बिदित सब काहू।
दो॰ तदपि जाइ तुम करहु अब यथा बंश व्यवहार।
बूझि बिप्र कुल बृद्ध गुरु बेद बिदित आचार ९

दूत अवध पुर पठवहु जाई। आने नृप दशरथहिं बुलाई।
मुदित राउ कहि भलेहिं कृपाला। पठये दूत अवध तेहि काला।
बहरि महाजन सकल बुलाये। आइ सबनि सादर शिर नाये।
हाट बाट मन्दिर सुर बासा। नगर सबाँरहु चारिहु पासा।
हरषि चले निज निज गृह आये। पुनि परिचारक बोलि पठाये।
रचहु बिचित्र बितान बनाई। शिर धरि बचन चले सचु पाई।

पढ़ये बोलिय्राी।तिन नाना।जेवितानविधिकुशलसुजाना
विधिहिवन्दितिनकीनअरंभा।विरचे कनक कदली खंभा
दो० हरित मणिान के पत्र फल पद्मराग के फूल ।
रचनादेखिविचित्रअतिमनविरञ्चिकेभूल३१०
बेदुहरितमणिामयसबकीन्हे।सरससुवर्णापरहिंनाहिंचीन्हे।
कनककलित अहिबेलिबनाई।लखिनाहिंपरै सवर्णा सुहाई
तेहिकेरचि पचिबन्धबनाये।बिचबिच मुकता दाम सुहाये
माणिाकमरकतकुलिशापिरोजा।चीरकोरपचिरचेसरोजा
किये भृंग बहु रंग विहंगा।गुञ्जहिं कुञ्जहिं पवनप्रसंगा
सुरप्रतिमा खम्भन गढ़िकाढ़ी।मंगल द्रव्यलिये सब ठाढ़ी।
चौके भाँति अनेक पुराई ।सिंदुरमणिामय सहज सुहाई।
दो० सौरभ पल्लव सुभग सुठि किये नीलमणिाकोरि।
हेम बौर मरकत घवरि लसत पाटमय डोरि११
रचे रुचिर वर वन्दनवारे। मनहुं मनोभव फन्द सँवारे।
मंगल कलश अनेक बनाये। ध्वज पताक पट चमर सुहाये
दीपमनोहर मणिामय नाना।जाइनबरणिाविचित्र बिताना।
जेहिमण्डपदुलहिनिबैदेही।सोबरणौ असिमतिकविकेही।

दूलह राम रूप गुण सागर। सो वितान तिहुँलोक उजागर
जनक भवन की शोभा जैसी। गृह गृह प्रति पुर देखिय तैसी
जेहि तिरहुति तेहि समय निहारी। तेहि लघु लगे भुवन दश चारी
जो सम्पदा नीच गृह सोहा। सो विलोकि सुर नायक मोहा
दो० बसै नगर जेहि लच्छि करि कपट नारि वर वेष।
तेहि पुर की शोभा कहत सकुच शारदा शेष १२
पहुँचे दूत राम पुर पावन। हरषे नगर विलोकि सुहावन
भूप द्वार तिन्ह खबरि जनाई। दशरथ नृप सुनि लिये बुलाई
करि प्रणाम तिन्ह पाती दीन्ही। मुदित महीप आपु उठि लीन्ही
बारि विलोचन बाँचत पाती। पुलक गात आई भरि छाती
राम लषण उर कर वर चीठी। रहि गये कहत न खाटी मीठी
पुनि धरि धीर पत्रिका बाँची। हरषी सभा बात सुनि साँची
खेलत रहे तहाँ सुधि पाई। आये भरत सहित दोउ भाई
पूँछत अति सनेह सकुचाई। तात कहाँ ते पाती आई
दो० कुशल प्राण प्रिय बन्धु दोउ अहहिं कहहु केहि देश।
सुनि सनेह साने वचन बाँची बहुरि नरेश १३
सुनि पाती पुलके दोउ भ्राता। अधिक सनेह समात न गाता

प्रीति पुनीत भरत की देखी। सकल सभा सुख लहेउ विशेखी
तब नृप दूत निकट बैठारे। मधुर मनोहर वचन उचारे
भैया कहहु कुशल दोउ बारे। तुम नीके निज नयन निहारे
श्यामल गौर धरे धनु भाथा। वय किशोर कौशिक मुनि साथा
पहिचानेहु तौ कहहु सुभाऊ। प्रेम विवश पुनि पुनि कह राऊ
जा दिन ते मुनि गये लिवाई। तब ते आजु साँचि सुधि पाई
कहहु विदेह कवन विधि जाने। सुनि प्रिय वचन दूत मुसकाने
दो० सुनहु महीपति मुकुट मनि। तुम समधन्य न कोउ।
रामलषन जिनके तनय विश्व विभूषन दोउ १४
पूँछन योग न तनय तुम्हारे। पुरुष सिंह तिहुं पुर उजियारे
जिन के यश प्रताप के आगे। शशि मलीन रवि शीतल लागे
तिन कहँ कहिय नाथ किमि चीन्हे। देखिय रवि कि दीप कर लीन्हे
सीय स्वयम्बर भूप अनेका। सिमिटे सुभट एक ते एका
शम्भु शरासन काहु न टारा। हारे सकल भूप बरियारा।
तीन लोक महँ जे भट मानी। सब की शक्ति शम्भु धनु भानी
सकैं उठाइ सुरासुर मेरू। सोउ हिय हारि गयउ करि फेरू
जेहि कौतुक शिव शैल उठावा। सोउ तेहि सभा पराभव पावा

दो० तहाँ राम रघुवंश मनि सुनिय महा महिपाल।
भंजेउ चाप प्रयास बिनु जिमि गज पंकज नाल १५

सुनि सरोष भृगुनायक आये। बहुत भाँति तिन आँखि देखाये
देखि राम बल निज धनु दीन्हा। करि बहु बिनय गमन बन कीन्हा
राजत राम अतुल बल जैसे। तेज निधान लषन पुनि तैसे
कम्पहि भूप बिलोकत जाके। जिमि गज हरि किसोर के ताके
देव देखि तव बालक दोऊ। अब नहिं आँखि तर आवत कोऊ
दूत बचन रचना प्रिय लागी। प्रेम प्रताप बीर रस पागी।
सभा समेत राउ अनुरागे। दूतहि देन निछावरि लागे
कहि अनीति ते मूँदहु काना। धर्म बिचारि सबहिं सुख माना

दो० तब उठि भूप बसिष्ठ कहँ दीन्ह पत्रिका जाइ।
कथा सुनाई गुरुहिं सब सादर दूत बुलाइ १६

सुनि बोले मुनि अति सुख पाई। पुरोधा पुरुष कहँ महि सुख छाई
जिमि सरिता सागर महँ जाई। यद्यपि ताहि कामना नाहीं
तिमि सुख संपति बिनहिं बुलाये। धर्म शील पहँ जाहिं सुभाये।
तुम गुरु बिप्र धेनु सुर सेवी। तस पुनीत कौशल्या देवी।
सुकृती तुम समान जग माहीं। भयउ नहै कोउ होनेउ नाहीं

तुम ते अधिक पुरायबड़काके। राजत राम सरिस सुत जाके
वीर विनीत धर्म्म व्रत धारी। गुण सागर बालक वर चारी
तुमकहुँ सर्व्वकालकल्याना। सजहु बरात बजाइ निशाना
दो० चलेबेगिसुनिगुरुवचनभलेहि नायशिरनाइ।
भूपति गवने भवन तब दूतहिं बासदिवाइ १७
राजा सब रनिवास बुलाई। जनक पत्रिका बाँचि सुनाई
सुनि सन्देश सकल हरषानी। अपर कथा सब भूपबखानी
प्रेम प्रफुल्लित राजा रानी। मनहुंशिखिनसुनिवारिद बानी
सुदित असीश देहिंगुरुनारी। अति आनन्द मगन महतारी
लेहिं परस्पर अतिप्रियपाती। हृदय लगाइ जुड़ावहिंछाती
रामलषणकीकीरतिकरणी। बारहिं बार भूप वर वरणी
सुनि प्रसादकहि द्वारसिधाये। रानिनतब महिदेव बुलाये
दिये दान आनन्द समेता। चले विप्र वर आशिय देता
सो० याचकलियेहँकारि दीन्हनिछावरिकोटिविधि।
चिरजीवहु सुत चारि चक्रवर्त्ति दशरत्थ के २८
कहत चले पहिरे पट नाना। हरषि हने गहगहे निशाना
समाचार सब लोगन पाये। लागे घर घर होन बधाये

भुवन चारि दश भयउ उछाहू। जनक सुता रघुवीर विवाहू
सुनिशुभकथा लोग अनुरागे। मग गृह गली सवाँरन लागे
यद्यपिअवधसदैवसुहावनि। रामपुरी मङ्गल मय पावनि
तदपि प्रीति कीरीति सुहाई। मङ्गल रचना रची बनाई।
ध्वज पताक पट चामर चारू। छावा परम विचित्र बजारू
कनककलश तोरणामणिजाला। हरद दूब दधि अक्षतमाला।

दो॰ मङ्गलमय निजनिज भवन लोगन रचे बनाय।
बीथी सींची चतुर सब चौके चारु पुराय १९

जहँतहँयूथयूथमिलिभामिनि। सजिनवसप्तसकलद्युतिदामिनि
बिधुवदनीमृगशावकलोचनि। निजस्वरूपरतिमानविमोचनि
गावहिंमंगलमंजुलबानी। सुनिकलरवकलकण्ठलजानी
भूपभवन किमिजायबखाना। विश्वविमोहन रचेउ विताना
मङ्गल द्रव्य मनोहर नाना। राजत बाजत विपुल निशाना।
कतहुँ विरद बन्दी उच्चरहीं। कतहुँ वेद ध्वनि भूसुर करहीं
गावहिं सुन्दरि मंगल गीता। लै लै नाम राम अरु सीता
बहुत उछाह भवन अतिथोरा। मानहुँ उमँगि चला चहुँ ओरा।

दो॰ शोभा दशरथ भवन की को कवि वरनै पार।

जहँ सकल सुरसीस मणि रामलीन्ह अवतार ३२०

भूप भरत पुनि लिये बुलाई। हय गज स्यन्दन साजह जाई
चलह बेगि रघुवीर बराता। सुनत पुलक पूरे दोउ भ्राता
भरत सकल साहनी बुलाये। आयसु दीन्ह मुदित उठि धाये
रचि रुचि जीन तुरँग तिन साजे। बरन बरन बर बाजि बिराजे
सुभग सकल सुठि चंचल करनी। अय जिमि जरत धरत पगु धरनी
नाना भाँति न जाहिं बखाने। निदरि पवन जनु चहत उड़ाने
तिन सब छयल भये असवारा। भरत सरिस सब राजकुमारा
सब सुन्दर सब भूषन धारी। कर सर चाप तून कटि भारी

दो० छरे छबीले छयल सब सूर सुजान नवीन।
जुग पद चर असवार प्रति जे असि कला प्रवीन २१

बाँधे बिरद बीर रन गाढ़े। निकसि भये पुर बाहिर ठाढ़े
फेरहिं चतुर तुरँग गति नाना। हर्षहि धुनि सुनि पवन निसाना
रथ सारथिन्ह बिचित्र बनाये। ध्वज पताक मनि भूषन छाये
चमर चारु किंकिनि धुनि करहीं। भानु जान सोभा अपहरहीं
सावन घन घमंड जनु गाजा। जनु भल बहतु गरब भरे साजा
जाहिं सकल रथ बरनि न जाहीं। बसहिं जाहि पर लोक उछाहीं
सर्ब सुपेद सुभग गज तेई। उदय समय जनु जलधर केई
भरत सकल साहनी बनाई। निज निज साज समाज सजाई
एक एक रथ एक एक जूथा। भरत चले रन हरष बरूथा
बृद बृद रथ बिरथ नकीबा। चले गाजि गुन गहे सजीवा
बरन बरन बर बारन बाजी। सोभित नाना साज समाजी
सुभग सकल सुठि चंचल करनी। अय जिमि जरत धरत पगु धरनी
नाना भाँति न जाहिं बखाने। निदरि पवन जनु चहत उड़ाने
तिन सब छयल भये असवारा। भरत सरिस सब राजकुमारा
सब सुन्दर सब भूषन धारी। कर सर चाप तून कटि भारी

दो० छरे छबीले छयल सब सूर सुजान नवीन।
जुग पद चर असवार प्रति जे असि कला प्रवीन २१

बाँधे बिरद बीर रन गाढ़े। निकसि भये पुर बाहिर ठाढ़े
फेरहिं चतुर तुरँग गति नाना। हर्षहि धुनि सुनि पवन निसाना
रथ सारथिन्ह बिचित्र बनाये। ध्वज पताक मनि भूषन छाये
चमर चारु किंकिनि धुनि करहीं। भानु जान सोभा अपहरहीं
स्यामकरन अगरुतन हय होते। ते तिन रथन सारथिन जोते।
सुन्दर सकल अलंकृत सोहैं। जिनहिं बिलोकत मुनि मन मोहैं

जे जल चलहिं थलहिं की नाईं। टाप न बूड़ वेग अधिकाईं
अस्त्र शस्त्र सब साज सजाई। रथी सारथिन लिये बुलाई
दो० चढ़ि चढ़ि रथ बाहिर नगर लागी जुरन बरात।
होत सगुन सुन्दर सबहिं जो जेहि कारज जात २२
कलित करिवरन परी अँबारी। कहि न जाय जेहि भाँति सँवारी
चले मत्त गज घंट विराजे। मनहुँ सुभग सावन घन गाजे
बाहन अपर अनेक विधाना। शिविका सुभग सुखासन याना
तिन चढ़ि चले विप्रवर बृन्दा। जनु तनु धरे सकल श्रुति छन्दा
मागध सूत बन्दि गुन गायक। चले यान चढ़ि जो जेहि लायक
बेसर ऊँट बृषभ बहु जाती। चले वस्तु भरि अगनित भाँती
कोटिन काँवरि चले कहारा। विविध वस्तु को बरनै पारा
चले सकल सेवक समुदाई। निज निज साज समाज बनाई।
दो० सबके उर निर्भर हरष पूरित पुलक शरीर।
सबहिं देखि हैं नयन भरि राम लषण दोउ वीर २३
गरजहिं गज घंटा धुनि घोरा। रथ रव बाजि हींस चहुँ ओरा
निदरि घनहिं घुमरहिं निशाना। निज पराय कछु सुनिय न काना
महा भीर भूपति के द्वारे। रज होइ जाइ पषाण पबारे।

चढ़ी अटारिन देखहिं नारी। लिये आरती मंगल थारी
गावहिं गीत मनोहर नाना। अति आनन्द नहिं जाइ बखाना
तब सुमन्त्र दुइ स्यन्दन साजी। जोते रबि हय निन्दक बाजी
दोउ रथ रुचिर भूप पहँ आने। नहिं सारद पहिं जाहिं बखाने
राज समाज एक रथ साजा। दूसर तेज पुञ्ज अति राजा
दो० तेहि रथ रुचिर बशिष्ठ कहँ हरषि चढ़ाइ नरेश।
आपु चढ़ेउ स्यन्दन सुमिरि हर गुरु गौरि गनेश २४
सहित बशिष्ठ सोह नृप कैसे। सुर गुरु संग पुरन्दर जैसे।
करि कुल रीति बेद बिधि राऊ। देखि सबहिं सब भाँति बनाऊ
सुमिरि राम गुरु आयसु पाई। चले महीपति संख बजाई
हरषे बिबुध बिलोकि बराता। बरषहिं सुमन सुमंगल दाता
भयउ कोलाहल हय गय गाजे। ब्योम बरात बाजने बाजे।
सुर नर नारि सुमंगल गाईं। सरस राग बाजहिं सहनाईं
घरट घरीट धुनि बरनि न जाई। सरों करैं पायक फहराई
करहिं बिदूषक कौतुक नाना। हास कुसल कल गान सुजाना
दो० तुरग नचावहिं कुँअर बर अकनि मृदंग निसान।
नागर नट चितवहिं चकित डगहिं न ताल बिधान २५

बनै नवरसात बनी बराता। होइँ सगुन सुन्दर शुभ दाता
चारा चारखु वाम दिशि लेई। मनहुँ सकल मंगल कहि देई
दाहिन काग सुखेत सुहावा। नकुल दरश सब काहु न पावा
सानुकूल बह त्रिविध बयारी। सघट सबाल आव वर नारी
लोवा फिरि फिरि दरश दिखावा। सुरभी सन्मुख शिशुहिं पिआवा
मृगमाला दाहिनि दिशि आई। मंगल गण जनु दीन्ह दिखाई
क्षेमकरी कह क्षेम विशेखी। श्यामा वाम सुतरु पर देखी
सन्मुख आयउ दधि अरु मीना। कर पुस्तक दुइ विप्र प्रवीना
दो० मंगल मय कल्याण मय अभिमत फल दातार।
जनु सब साँचे होन हित भये सगुन इकबार २६
मंगल सगुन सुगम सबताके। सगुन ब्रह्म सुन्दर सुत जाके
राम सरिस वर दुलहिनि सीता। समधी दशरथ जनक पुनीता
सुनि अस ब्याह सगुन सब नाचे। अब कीन्हे बिरञ्चि हम साँचे
इहि विधि कीन्ह बरात पयाना। हय गज गाजहिं हनहिं निशाना
आवत जानि भानुकुल केतू। सरितन जनक बँधायउ सेतू।
बीच बीच वर वास बनाये। सुरपुर सरिस सम्पदा छाये
असन शयन बर बसन सुहाये। पावहिं सब निज निज मन भाये

नितनूतन सुखलखि अनुकूला। सकलबरातिन मन्दिर भूला।
दो० आवत जानि बरात बर सुनि गहगहे निशान।
सजि गज रथ पदचर तुरंग लेन चले अगवान २७
कनक कलश कल कोपर थारा। भोजन ललित अनेक प्रकारा।
भरे सुधा सम सब पकवाना। भाँति भाँति नहिं जाइ बखाना।
फल अनेक वर वस्तु सुहाई। हरषि भेंट हित भूप पठाई।
भूषर बसन महामनि नाना। खगमृग हयगज बहु विधियाना।
मंगल सगुन सुगन्ध सुहाये। बहुत भाँति महिपाल पठाये।
दधि चिउरा उपहार अपारा। भरि भरि काँवरि चले कहारा।
अगवानन्ह जब दीख बराता। उर आनन्द पुलक भर गाता।
देखब नाव सहित अगवाना। मुदित बरातिन्ह हने निशाना।
दो० हरषि परस्पर मिलन हित कछुक चले बगमेल।
जनु आनन्द समुद्र दुइ मिलत विहाय सुबेल २८
बरषि सुमन सुर सुन्दरि गावहिं। मुदित देव दुन्दुभी बजावहिं।
वस्तु सकल राखीं नृप आगे। विनय कीन्ह तिन अति अनुरागे।
प्रेम समेत राउ सब लीन्हा। भै बकसीस याचकन दीन्हा।
करि पूजा बहु मान बड़ाई। जनवासे कहँ चले लिवाई।

वसन विचित्र पाँवड़े परहीं। नृप दशरथ तापर पग धरहीं
देखि धनद धनमद परिहरहीं। बरषि सुमन सुर जय जय करहीं
अति सुन्दर दीन्हेउ जनवासा। जहँ सबकहँ सब भाँति सुपासा
जानी सिय बरात पुर आई। कछु निज महिमा प्रगटि जनाई
हृदय सुमिरि सब सिद्धि बुलाई। भूप पहुनई करन पठाई
दो० सिय आयसु सिर सिद्धि धरि गईं जहाँ जनवास।
लिये सम्पदा सकल सुर सुरपुर भोग विलास २९
निज निज वास विलोकि बराती। सुर सुख सकल सुलभ सब भाँती
विभव भेद कछु काहु न जाना। सकल जनक कर करहिं बखाना
सिय महिमा रघुनायक जानी। हरषे हृदय हेतु पहिचानी
पितु आगमन सुनत दोउ भाई। हृदय न अति आनन्द समाई
सकुचत कहि न सकत गुरु पाहीं। पितु दरशन लालसा मन माहीं
विश्वामित्र विनय बड़ि देखी। उपजा उर सन्तोष विशेखी
हरषि बन्धु दोउ हृदय लगाये। पुलक अंग लोचन जल छाये
चले जहाँ दशरथ जनवासे। मनहुँ सरोवर तके पियासे
दो० भूप विलोके जबहिं मुनि आवत सुतन समेत।
उठे उ हरषि सुख सिन्धु महँ चले थाह सी लेत ३३०

मुनिहिं दण्डवत कीन्ह महीशा। बार बार पदरज धरि शीशा
कौशिक राउ लिये उर लाई। कहि असीष पूँछी कुशलाई
पुनि दण्डवत करत दोउ भाई। देखि नृपति उर सुख न समाई
सुत हिय लाइ दुसह दुख मेटे। मृतक शरीर प्राण जनु भेटे
पुनि वशिष्ठ पद शिर तिन नाये। प्रेम मुदित मुनिवर उर लाये
विप्र वृन्द वन्दे दुहुँ भाई। मन भावति असीष तिन पाई
भरत सहानुज कीन्ह प्रणामा। लिये उठाइ लाइ उर रामा
हरषे लषण देखि दोउ भ्राता। मिले प्रेम परिपूरित गाता
दो० पुरजन परिजन जातिजन याचक मंत्री मीत।
मिले यथाविधि सबहिं प्रभु परम कृपालु विनीत ३१
रामहिं देखि बरात जुड़ानी। प्रीति कि रीति न जाइ बखानी
नृप समीप सोहहिं सुत चारी। जनु धन धर्म्मादिक तनु धारी
सुतन सहित दशरथ कहँ देखी। मुदित नगर नर नारि विशेखी
सुमन वरषि सुरहन हिं निशाना। नाक नटी नाचहिं करि गाना
सतानन्द अरु विप्र सचिव गन। मागध सूत विदुष वन्दीजन
सहित बरात राउ सनमाना। आयसु माँगि फिरे अगवाना
प्रथम बरात लगन ते आई। तातें पुर प्रमोद अधिकाई

ब्रह्मानन्दलोग सबलहहीं। बढ़उ दिवसनिशिविधिसनकहहीं

दो० रामसीयशोभाअवधिसुकृतअवधिदोउराज।
जहँतहँपुरजनकहहिंअसमिलिनरनारिसमाज ३२

जनक सुकृत मूरति वैदेही। दशरथ सुकृत राम धरि देही
इनसमकाहुनशिवअवराधे। काहुन इन समान फलसाधे
इनसमकोउनभयउजगमाहीं। है नहिं कतहूं होनेउ नाहीं
हमसबसकलसुकृतकीरासी। भयेजगजन्मजनकपुरवासी
जिनजानकी राम छबि देखी। कोसुकृती हमसरिसविशेखी
पुनि देखब रघुवीर विबाहू। लेब भली विधि लोचन लाहू
कहहिंपरस्परकोकिलबयनी। यहविवाहबड़लाहुसुनयनी
बड़े भाग विधि बात बनाई। नयनअतिथिहोइहैं दोउ भाई

दो० बारहिं बार सनेह वश जनक बोलाउब सीय।
लेनआइहहिं बन्धु दोउकोटिकामकमनीय ३३

विविध भाँति होइहि पहुनाई। प्रियनकाहि अस सासुर माई
तबतबराम लखणाहिंनिहारी। होइहहिंसबपुरलोगसुखारी
सखिजसराम लखणाकरजोटा। तैसेइ भूप संग दुइ ढोटा
श्याम गौर सब अंग सुहाये। ते सब कहहिं देखिजे आये

कहा एकमैं आजु निहारे। जनु बिरंचि निज हाथ सँवारे।
भरत राम एकहि अनुहारी। सहसा लखि न सकहिं नरनारी
लखन सत्रुसूदन इक रूपा। नख सिख ते सब अंग अनूपा
मनभावहिं सुखबरनि न जाहीं। उपमा कहँ त्रिभुवन कोउ नाहीं
छं० उपमा न कोउ कहँ दास तुलसी कतहुँ कबि कोबिद कहैं।
बल बिनय बिद्या सील सोभा सिन्धु इन सम ये लहैं॥
पुर नारि सकल पसारि अंचल बिधिहि बचन सुनावहीं
ब्याहिय सुचारिउ भाइ इहि पुर हम सुमंगल गावहीं ३५
सो० कहहिं परस्पर नारि बारि बिलोचन पुलकतन।
सखि सबकर पुरारि पुराय पयोनिधि भूप दोउ ३६
इहि बिधि सकल मनोरथ करहीं। आनँद उमँगि उमँगि उर भरहीं
जे नृप सीय स्वयम्बर आये। देखि बन्धु सब तिन सुख पाये
कहत राम जस बिसद बिसाला। निज निज भवन गये महिपाला
गये बीति कछु दिन इहि भाँती। प्रमुदित पुर जन सकल बराती
मंगल मूल लगन दिन आवा। हिम ऋतु अगहन मास सुहावा
ग्रह तिथि नखत जोग बर बारू। लगन सोधि बिधि कीन्ह बिचारू।
पठै दीन्ह नारद सन सोई। गुनी जनक के गनकन जोई

सुनीसकललोगनयहबाता।कहहिंज्योतिषीअहहिंविधाता
दो० धेनु धूरि बेला विमल सकल सुमंगल मूल ।
विप्रनकहेउविदेह सनजानिसमय अनुकूल ३४
उपरोहितहिं कहेउ नरनाहा। अबबिलम्बकरकारणाकाहा
सतानन्दतबसचिव बुलाये। मंगलकलशसाजिसबलाये।
शंखनिशानपरावबहुबाजे।मंगलकलशसगुनसबसाजे
सुभगसुआसिनिगावहिंगीता। करहिंवेद धुनि विप्रपुनीता
लेन चले सादर इहि भाँती। गये जहाँ जनवास बराती।
कोशलपतिकरदेखिसमाजू। अतिलघुलगेतिनहिंसुरराजू
भयउसमय अबधारियपाऊ। यहसुनि परा निशानन घाऊ
गुरुहिंपूजिकरिकुलविधिराजा। चलेसंगसुनिसाजसमाजा
दो० भाग्य विभव अवधेशकर देखिदेव ब्रह्मादि ।
लगेसराहनसहससुखजानिजन्मनिजवादि ३५
सुरनसुमंगल अवसर जाना। वर्षहिं सुमन बजाइ निशाना
शिवब्रह्मादिकविबुधवरूथा। चढ़े विमानन नाना यूथा
प्रेमपुलकतन हृदय उछाहू। चले विलोकन राम विवाहू
देखिजनकपुरसुर अनुरागे। निजनिजलोकसबहिंलघुलागे

चितवहिं चकित विलोकि वितान। रचना सकल अलौकिक नाना
नगर नारि नर रूप निधाना। सुघर सुधर्म्म सुशील सुजाना
तिनहिं देखि सब सुर सुरनारी। भये नखत जनु बिधु उजियारी
बिधिहि भयउ आचरज बिसेखी। निज करनी कछु कतहुँ न देखी
दो० शिव समुझाये देव सब जनि आचरज भुलाहु।
हृदय बिचारहु धीर धरि सिय रघुबीर बिबाहु ३६
जिन कर नाम लेत जग माहीं। सकल अमंगल मूल नशाहीं
करतल होहिं पदारथ चारी। ते सिय राम कहेउ कामारी
इहि बिधि शम्भु सुरन समुझावा। पुनि आगे बर बसह चलावा
देवन देखे दशरथ जाता। महा मोद मन पुलकित गाता।
साधु समाज संग महिदेवा। जनु तनु धरे करहिं सुर सेवा
सोहत साथ सुभग सुत चारी। जनु अपवर्ग सकल तनु धारी
मरकत कनक बरण बर जोरी। देखि सुरन भइ प्रीति न थोरी
पुनि रामहिं बिलोकि हिय हरषे। नृपहि सराहि सुमन तिन बरषे
दो० राम रूप नख शिख सुभग बारहिं बार निहारि।
पुलक गात लोचन सजल उमा समेत पुरारि ३७
कोकि कराठ द्युति श्याम तन शोभा। तड़ित बिनिन्दक बसन सुरंगा

व्याहविभूषणा विविधबनाये। मंगल मय सब भाँति सुहाये
शरदविमलविधुवदनसुहावन। नयननवलराजीवलजावन।
सकलअलौकिक सुन्दरताई। कहिन जाय मनही मन भाई
बन्धु मनोहर सोहहिं संगा। जात नचावत चपल तुरंगा
राजकुँवर वर वाजि नचावहिं। वंश प्रशंसक विरद सुनावहिं
जेहि तुरंग पर राम विराजे। गतिविलोकिखगनायकलाजे
कहिनजाइसब भाँति सुहावा। वाजि वेष जनु काम बनावा
छं० जनुवाजिवेष बनाइ मनसिज रामहित अति सोहहीं।
आपनबयबलरूपगुणागतिसकलभुवनविमोहहीं॥
जगमगतजीनजड़ावज्योतिसुमोतिमाणिकतेहिलगे।
किंकिणिललामलगामललितविलोकिसुरनरमुनिठगे ३६
दो० प्रभुमनसहिंलयलीनमन चलतवाजिछबिपाव।
भूषितउड़ुगणातड़ित घनजनुवरवरहिं नचाव ३८
जेहिवरवाजि राम असवारा। तेहि शारदहु न वरणौ पारा
शंकर राम रूप अनुरागे। नयनपञ्चदशअतिप्रियलागे
हरिहित सहित रामजबजोहे। रमा समेत रमापति मोहे।
निरखिरामछबिविधिहरषाने। आठे नयनजानि पछिताने।

सुर सेनप उर बहुत उछाहू। बिधि ते डेवढ़े लोचन लाहू
रामहिं चितव सुरेश सुजाना। गौतम श्राप परम हित माना
देव सकल सुरपतिहि सिहाहीं। श्रावु पुरन्दर सम कोउ नाहीं
मुदित देवगरा रामहिं देखी। नृप समाज दुहुँ हर्ष बिसेखी
छं० अति हर्ष राजसमाज दुहुँ दिसि दुन्दुभी बाजहिं घनी।
बरषहिं सुमन सुर हर्षि कहि जय जयति जय रघुकुलमनी॥
इहि भाँति जानि बरात आवत बाजने बहु बाजहीं।
रानी सुआसिनि बोलि परिछनहेतु मंगल साजहीं ३७
दो० सजि आरती अनेक बिधि मंगल सकल सँवारि।
चलीं मुदित परिछन करन गजगामिनि वर नारि ३८
बिधुबदनी मृगशावक लोचनि। सब निजतनु छबि रति मदमोचनि
पहिरे बरगा बरगा बर चीरा। सकल बिभूषगा सजे शरीरा
सकल सुमंगल अंग बनाये। करहिं गान कलकण्ठ लजाये
कंकरा किंकिरिगा नूपुर बाजहिं। चाल बिलोकि काम गज लाजहिं
बाजहिं बाजन बिबिध प्रकारा। नभ अरु नगर सुमंगलचारा।
शची शारदा रमा भवानी। जे सुरतिय शुचि सहज सयानी
कपट नारि बर बेष बनाई। मिलीं सकल रनिवासहिं आई

करहिंगानकलमंगलबानी। हर्षविवशसबकाहुन जानी
छं० कोजानकेहिआनन्दवशसबब्रह्मवरपरिछनचली।
कलगानमधुरनिशानबरषहिंसुमनसुरशोभाभली॥
आनन्दकन्दविलोकिदूलहसकलहियहरषितभईं।
अम्भोजअम्बकअम्बुउमँगिसुअंगपुलकावलिछईं३८
दो० जोसुखभासियमातुमनदेखिरामवरवेष।
सोनसकहिंकहिकल्पशतसहसशारदाशेष३४०
नयननीरहटिमंगलजानी। परिछनकरहिंमुदितमनरानी
वेदविहितअरुकुलव्यवहारू। कीन्हभलीविधिसबपरिचारू
पञ्चशब्दधुनिमंगलगाना। पट पाँवड़े परहिं विधि नाना
करिआरती अर्घ तिन दीन्हा। रामगवनमराडपतबकीन्हा
दशरथसहितसमाजविराजे। विभवविलोकिलोकपतिलाजे
समयसमयसुरबरषहिंफूला। शान्तिपढ़हिंमहिसुरअनुकूला
नभअरुनगरकुलाहल होई। आपनपरकछुसुनै न कोई
इहिविधिरामराडपहिआये। अर्घ देइ आसन बैठाये
छं० बैठारि आसनआरतीकरिनिरखिवरसुखपावहीं।
मणिवसनभूषणाभूरिवारहिंनारिमंगलगावहीं॥

ब्रह्मादि सुर वर विप्र वेष बनाइ कौतुक देखहीं।
अवलोकि रघुकुलकमलरविछबिसुफलजीवनलेखहीं ३९

दो० नाऊ बारी भाट नट राम निछावरि पाइ।
मुदित असीषहिं नाइसिरहर्षनहृदयसमाइ४१

मिलेजनकदशरथअतिप्रीती। करिवैदिकलौकिकसबरीती
मिलतमहादोउराजविराजे। उपमाखोजिखोजिकविलाजे
लहींनकतहुँहारिहियमानी। इनसमये उपमाउरआनी
समधी देखि देव अनुरागे। सुमनवरषि यशगावनलागे
जगविरञ्चिउपजावाजब ते। देखे सुने व्याह बहु तब ते।
सकलभाँतिसमसाजसमाजू। सम समधी देखे हम आजू
देवगिरासुनिसुन्दरिसाँची। प्रीतिअलौकिकदुहुँदिशिमाँची
देत पाँवड़े अरघ सुहाये। सादरजनक मराडपहिं ल्याये

छं० मराडपविलोकि विचित्ररचनारुचिरतामुनिमनहरे।
निजपारिजातसुजानसबकहुँआनिसिंहासनधरे
कुलइष्टसरिसवशिष्ठपूजेविनयकरिआशिषलही।
कौशिकहिंपूजतपरमप्रीतिकिरीतितौनपरैकही ४०

दो० वामदेव आदिक ऋषय पूजे मुदित महीश।

दिये दिव्य आसन सबहिं सब सनलही असीस ४२

बहुरि कीन्ह कोशलपति पूजा। जानि ईश सम भाव न दूजा।
कीन्ह जोरि कर विनय बड़ाई। कहि निज भाग्य विभव बहुताई
पूजे भूपति सकल बराती। सम समधी सादर सब भाँती
आसन उचित दिये सबकाहू। कहौं कहा सुख एक उछाहू
सकल बरात जनक सनमानी। दान मान विनती वर बानी।
विधि हरिहर दिशिपति दिनराऊ। जे जानहिं रघुवीर प्रभाऊ
कपट विप्र वर वेष बनाये। कौतुक देखहिं अति सचुपाये
पूजे जनक देव सम जाने। दिये सुआसन बिन पहिचाने

छं० पहिचान को केहि जान सबहि अपान सुधि भोरी भई।
आनन्दकन्द विलोकि दूलह उभय दिशि आनँद मई॥
सुर लखे राम सुजान पूजे मानसिक आसन दये।
अवलोकि सरल सुभाव प्रभु को विबुध मन प्रमुदित भये ४१

दो० रामचन्द्र मुख चन्द्र छबि लोचन चारु चकोर।
करत पान सादर सकल प्रेम प्रमोद न थोर ४३

समय विलोकि वशिष्ठ बुलाये। सादर सतानन्द मुनि आये।
बेगि कुँवरि अब आनहु जाई। चले मुदित मुनि आयसु पाई

रानी सुनि उपरोहित बानी। प्रमुदित सखिन समेत सयानी
बिप्र बधू कुल बृद्ध बुलाई। करि कुल रीति सुमंगल गाई
नारि बेष जे सुर बर बामा। सकल सुभाय सुन्दरी श्यामा
तिनहिं देखि सुख पावहिं नारी। बिनु पहिचानि प्रानतेंप्यारी
बार बार सनमानहिं रानी। उमा रमा शारद सम जानी।
सीय सँवारि समाज बनाई। मुदित मराड पहि चलीं लिवाई
छं० चलि ल्याय सीतहि सखी सादर सजि सुमंगल भामिनी।
नव सप्त साजे सुन्दरी सब मत्त कुञ्जर गामिनी॥
कल गान सुनि मुनि ध्यान त्यागहिं काम कोकिल लाजहीं
मञ्जीर नूपुर कलित कंकण ताल गति बर बाजहीं ४२
दो० सोहति बनिता बृन्द महँ सहज सुहावनि सीय।
छबि ललना गरा मध्य जनु सुखमा तिय कमनीय ४४
सिय सुन्दरता बरणि न जाई। लघु मति बहुत मनोहरताई।
आवत देखि बरातिन सीता। रूप राशि सब भाँति पुनीता
सबहिं मनहिं मन कीन्ह प्रणामा। देखि राम भये पूरण कामा
हरषे दशरथ सुतन समेता। कहि न जाइ उर आनँद जेता
सुर प्रणाम करि बर्षहिं फूला। मुनि अशीष धुनि मंगल मूला

गाननिशान कुलाहल भारी। प्रेम प्रमोद नगर नर नारी।
इहिविधिसीयमण्डपहिं आई। प्रमुदितशान्तिपढ़हिं मुनिराई
तेहिअवसरकरिविधिव्यवहारू। दुहुंकुलगुरुसबकीन्हअचारू
छं० आचारकरिगुरुगौरिगणपतिमुदितविप्रपुजावहीं।
सुरप्रकटपूजालेहिंदेहिंअशीषसुनिसुखपावहीं॥
मधुपर्कमंगलद्रव्यजोजेहिसमयसुनिमनमहँचहैं।
भरकनककोपरकलशसबकरलियेपरिचारकरहैं४३
कुलरीतिप्रीतिसमेतरविकहिदेतसबसादरकियो।
इहिभाँतिदेवपुजाइसीतहिंसुभगसिंहासनदियो॥
सियरामअवलोकनिपरस्परप्रेमकाहुनलखिपरै।
मनबुद्धिबरबाणीअगोचरप्रकटकविकैसेकरै ४४
दो० होमसमयतनुधरिअनलअतिहितआहुतिलेहिं।
विप्रवेषधरिवेदसबकहिविवाहविधिदेहिं ४५
जनकपाटमहिषीजगजानी। सीयमातुकिमिजाइबखानी
सुयशसुकृतसुखसुन्दरताई। सबसमेटिविधिरची बनाई
समयजानिमुनिवरनबुलाई। सुनतसुआसिनिसादरल्याई
जनकबामदिशिसोहसुनयना। हिमगिरिसंगबनीजनुमयना

कनक कलश मनिको पर रूरे। शुचि सुगन्ध मंगल जल पूरे।
निज कर मुदित राउ अरु रानी। धरे राम के आगे आनी
पढ़हिं वेद मुनि मंगल बानी। गगन सुमन झरि अवसर जानी
वर बिलोकि दम्पति अनुरागे। पाय पुनीत पखारन लागे
छं० लागे पखारन पाय पंकज प्रेम तन पुलकावली ।
नभ नगर गान निशान जय धुनि उमगि जनु चहुँ दिशि चली
जे पद सरोज मनोज अरि उर सर सदैव विराजहीं।
जे सुकृत सुमिरत बिमलता मन सकल कलि मल भाजहीं ४५
जे परसि मुनि बनिता लही गति रही जो पातक मई।
मकरन्द जिन को शम्भु शिर शुचि ता अवधि सुरवर नई॥
करि मधुप मुनि मन योगिजन जे सेइ अभिमत गति लहैं।
ते पद पखारत भाग्य भाजन जनक जय जय सब कहैं ४६
वर कुँवरि कर तल जोरि शारद वेद दोउ कुल गुरु करैं।
भयो पारिग्रह राबिलोकि बिधि सुर मनुज मुनि आनँद भरैं
सुख मूल दूलह देखि दम्पति पुलक तनु हुलस्यो हियो।
करि लोक वेद बिधान कन्या दान नृप भूषण दियो ४७
हिमवन्त जिमि गिरिजा महेशहि हरिहिं श्री सागर दई।

तिमिजनकरामहिंसियसमर्पीविश्वकलकीरतिनई॥
इक ठौर करि जोरी सुभग सुनि गौरि मूरति साँवरी।
करि होमविधिवत गाँठि जोरी होन लागी भाँवरी ४८

दो॰ जय धुनि वन्दी वेद धुनि मंगल गान निशान।
सुनिहरषहिंवरषहिंविबुधसुरतरुसुमनसुजान ४६

कुँवरि कुँवर कलभाँवरिदेहीं। नयन लाभ सब सादर लेहीं
जाइ नवरिणा मनोहर जोरी। जोउपमाकछुकहियसोथोरी
रामसीयसुन्दर परिछाहीं। जगमगाहिंमणिखम्भन माहीं
मनहुँ मदन रति धरिबहुरूपा। देखहिं राम विवाह अनूपा
दरश लालसा सकुच न थोरी। प्रकटत दुरत बहोरि बहोरी
भये मगन सब देख निहोरे। जनक समान अपान बिसोरे
प्रमुदित मुनिन भाँवरी फेरी। नेग सहित सब रीति निवेरी
राम सीय शिर सिन्दुर देहीं। शोभाकहि नजात विधिकेहीं
अरुणापरागजलजभरिनीके। शशिहि भूरवअहिलोभअमीके
बहरिवशिष्ठ दीन्ह अनुशासन। वरदुलहिनिबैठे इक आसन

छं॰ बैठे वरासन राम जानकी मुदित मन दशरथ भये।
तनुपुलकपुनिपुनिदेखिअपनेसुकृतसुरतरुफलनये॥

भरि भुवन रहा उछाह राम विवाह भा सबही कहा।
केहि भाँति वारिस सिरातरसना एक मुखमंगल महा ४९
तब जनक पाइ वशिष्ठ आयसु व्याह साज सँवारिकै।
मारांडवी श्रुतिकीर्ति उर्मिला कुँवरि लई हँकारिकै॥
कुशकेतु कन्या प्रथम जो गुन शील सुख शोभा मई।
सब रीति प्रीति समेत करि सो व्याहि नृप भरतहिं दई ५०
जानकी लघु भगिनि अति सुन्दरि सिरोमनि जानिकै।
सो जनक दीन्ही व्याहि लखनहिं सकल विधि सनमानिकै
जेहि नाम श्रुति कीरति सुलोचनि सुमुखि सब गुन आगरी
सो दई रिपुसूदनहिं भूपति रूप शील उजागरी ५१
अनुरूप वर दुलहिनि परस्पर लखि सकुचि हिय हर्षहीं।
सब मुदित सुन्दरता सराहहिं सुमन सुर गण वर्षहीं॥
सुन्दरी सुन्दर वरन सह सब एक मण्डप राजहीं।
जनु जीव उर चारिउ अवस्था विभुन सहित विराजहीं ५२

दो० मुदित अवध पति सकल सुत बधुन समेत निहारि
जनु पाये महिपाल मणि क्रियन सहित फल चारि ४७

जस रघुवीर व्याह विधि बरणी। सकल कुँवर व्याहे तेहि करणी।

कहि न जाइ कछु दाइज भूरी। रहा कनक मणि मण्डप पूरी
कम्बल वसन विचित्र पटोरे। भाँति भाँति बहु मोल न थोरे।
गज रथ तुरँग दास अरु दासी। धेनु अलंकृत काम दुहासी
वस्तु अनेक करिय किमि लेखा। कहि न जाइ जानहिं जिन देखा
लोकपाल अवलोकि सिहाने। लीन्ह अवधपति सबसुख माने
दीन्ह याचकन जो जेहि भावा। उबरा सो जनवासहिं आवा
तब कर जोरि जनक मृदु बानी। बोले सब बरात सनमानी ।

छं०-सनमानि सकल बरात सादर दान विनय बड़ाइ कै।
प्रमुदित महा मुनि वृन्द वन्दे पूजि प्रेम लड़ाइ कै॥
शिर नाइ देव मनाय सब सन कहत कर सम्पुट किये।
सुरसाधु चाहत भाव सिन्धु कि तोष जल अंजलि दिये ५३
कर जोरि जनक बहोरि बन्धु समेत कोशल रायसों।
बोले मनोहर वचन सानि सनेह शील सुभायसों॥
सम्बन्ध राजन रावरे हम बड़े अब सब विधि भये ।
यह राज साज समेत सेवक जानिबी बिनु गत लये ५४
ये दारिका परिचारिका करि पालबी करुणा मई।
अपराध छमिबो बोलि पठये बहुत हौं ढीठी दई॥

पुनि भानुकुलभूधरा सकल सनमान विधि समधी किये।
कहि जात नहिं विनती परस्पर प्रेम परिपूरण हिये ५५
बृन्दारका गण सुमन वरषहिं राउ जनवासहिं चले।
दुन्दुभी अरु वेद धुनि नभ नगर कौतूहल भले॥
सब सखी मंगल गान करति सुनीश आयसु पाइकै।
दुलहदुलहिनि सहित सुन्दरि चलीं कुहवर ल्याइकै ५६

दो० पुनि पुनि रामहिं चितवसिय सकुचति मन सकुचैन।
हरत मनोहर मीन छबि प्रेम पियासे नैन ४८

श्याम शरीर सुभाय सुहावन। शोभा कोटि मनोज लजावन।
यावक युत पदकमल सुहाये। मुनि मन मधुप रहत जनु छाये
पीत पुनीत मनोहर धोती। हरत बाल रवि दामिनि ज्योती
कल किंकिण कटि सूत्र मनोहर। बाहु विशाल विभूषण सोहर
पीत जनेउ महा छबि देई। कर मुद्रिका चोरि चित लेई।
सोहत व्याह साज सब साजे। उर आयत उर भूषण राजे
पीत उपरना काँधा सोती। दुहुँ आँचरन लगे मणि मोती
नयन कमल कल कुण्डल काना। वदन सकल सौंदर्य्य निधाना
सुन्दर भृकुटि मनोहर नासा। भाल तिलक रुचिरुचिर निवासा

सोहत मौर मनोहर माथे। मंगलमय मुकुता मनि गाथे
छं० गाथे महामनि मौर मंजुल अंग सब चित चोरहीं।
पुरनारिसुन्दरवरविलोकहिं निरखि बिद्युतिबोरहीं॥
मनिवसन भूषन वारि आरति करहिं मंगल गावहीं।
सुरसुमनवरषहिं सूत मागध वन्दि सुयश सुनावहीं॥१७
कुहवरहिं आनेकुँवरकुँवरिसुआसिनिनसुखपाइकै।
अति प्रीति लौकिक रीति लागीं करन मंगल गाइकै॥
लहकौरि गौरि सिखाव रामहिं सीय सन शारद कहैं।
रनिवास हास विलास रस वश जनम को फल सब लहैं॥१८
निजपानि मनि महँ देखि प्रति मूरति स्वरूप निधान की
चालति न भुजबल्ली विलोक निवरह वश भइ जानकी॥
कौतुक विनोद प्रमोद प्रेम न जाइ कहि जानहिं अली।
वरकुँवरि सुन्दर सकल सखिन लिवाय जनवासहिं चली॥१९
तेहि समय सुनिय असीस जहँ तहँ नगर नभ आनँद महा।
चिरजियहु जोरी चारु चारिउ मुदित मन सबही कहा॥
योगीन्द्र सिद्ध मुनीश देव विलोकि प्रभु दुन्दुभि हनी।
चले हरषि बरषि प्रसून निज निज लोक जय जय जय भनी॥२०

दो० सहित बधूटिन कुँवर सब तब आये पितु पास।
शोभा मंगल मोद भरि उमगेउ जनु जनवास ४९

पुनि जेवनार भई बहु भाँती। पठये जनक बुलाय बराती
परत पाँवड़े बसन अनूपा। सुतन समेत गमन कियभूपा
सादर सबके पाँव पखारे। यथायोग्य पीढ़न बैठारे।
धोये जनक अवधपति चरणा। शील सनेह जाय नहिं बरणा
बहुरि राम पद पंकज धोये। जे हर हृदय कमल महँ गोये
तीनौं भाइ राम सम जानी। धोये चरण जनक निज पानी
आसन उचित सबहिं नृप दीन्हे। बोलि सूपकारी सब लीन्हे
सादर लगे परन पनवारे। कनक कील मरिण परन सँवारे

दो० सूपोदन सुरभी सरपि सुन्दर स्वाद पुनीत।
छरण महँ सबके परुसिगे चतुर सुआर विनीत ३५०

पंच कौर करि जेंवन लागे। गारि गान सुनि अति अनुरागे
भाँति अनेक परे पकवाना। सुधा सरिस नहिं जाहिं बखाना
परुसन लगे सुआर सुजाना। व्यंजन विविध नाम को जाना
चारि भाँति भोजन विधि गाई। एक एक विधि बरणि न जाई
छरस रुचिर व्यंजन बहु जाती। एक एक रस अगनित भाँती

जेंवत देहिं मधुर धुनि गारी। लै लै नाम पुरुष अरु नारी
समय सुहावन गारि विराजा। हँसत राउ सुनि सहित समाजा
इहि विधि सबही भोजन कीन्हा। आदर सहित आचमन लीन्हा
दो० देइ पान पूजे जनक दसरथ सहित समाज।
जनवासेगवने मुदित सकल भूप सिरताज ५१
नित नूतन मंगल पुर माहीं। निमिष सरिस दिन यामिनि जाहीं
बड़े भोर भूपति मनि जागे। याचक गुन गन गावन लागे
देखि कुँअर वर वधुन समेता। किमि कहि जात मोद मन जेता
प्रात क्रिया करि गे गुरु पाहीं। महा प्रमोद प्रेम मन माहीं
करि प्रनाम पूजा कर जोरी। बोले गिरा अमिय जनु बोरी
तुम्हरी कृपा सुनिय मुनि राजा। भयउ आजु मम पूरन काजा
अब सब विप्र बुलाइ गोसाँई। देहु धेनु सब भाँति बनाई।
सुनि गुरु करि महिपाल बड़ाई। पुनि पठये मुनि वृन्द बुलाई
दो० वामदेव अरु देवरिषि वालमीकि जाबालि।
आये मुनिवर निकर तब कौसिकादि तपशालि ५२
दण्ड प्रनाम सबहिं नृप कीन्हा। पूजि सप्रेम वरासन दीन्हा
चारि लक्ष वर धेनु मँगाई। कामसुरभि सम शील सुहाई

सबविधिसकलअलंकृतकीन्ही।मुदितमहीपतहृदयँहरषीन्ही
करतविनयबहुविधिनरनाहू।लहेउँआजुजगजीवन लाहू
पाइअशीषमहीशअनन्दा।लिये बोलिपुनियाचकबृन्दा
कनकवसनमणिहयगजस्यन्दन।दिये बूझिरुचिरविकुलनन्दन
चलेपढ़तगावतगुणगाथा।जयजयजयदिनकरकुलनाथा
इहिविधिरामविवाहउछाहू।सकैनवरणिसहससुखजाहू
दो० बारबारकौशिकचरणशीशनाइकहराउ ।
यहसबसुखमुनिराजतवकृपाकटाक्षप्रभाउ ५३
जनकसनेहशीलकरतूती।नृपसबभाँतिसराहविभूती
दिनउठिविदाअवधपतिमाँगा।राखहिंसहितजनकअनुरागा
नितनूतनआदरअधिकाई।दिनप्रतिसहसभाँतिपहुँनाई
नितनवनगरअनन्दउछाहू।दशरथगवनसुहाइनकाहू
बहुतदिवसबीतेइहिभाँती।जनुसनेहरजुबँधेबराती।
कौशिकसतानन्दतबजाई।कहीविदेहनृपहिसमुझाई
अबदशरथकहँआयसुदेहू।यद्यपिछाड़िनसकहुसनेहू
भलेहिनाथकहिसचिवबुलाये।कहिजयजीवशीशतिनाये
दो० अवधनाथचाहतचलन भीतरकरहुजनाव।

भये प्रेमवश सचिवसुनि विप्रसभासद राव ५४
पुरवासी सुनि चली बराता। पूँछत बिकल परस्पर बाता
सत्यगमन सुनि सबबिलखाने। मनहुँ साझ सरसिज सकुचाने
जहँ जहँ आवत बसे बराती। तहँ तहँ सीध चले बहु भाँती
बिबिध भाँति मेवा पकवाना। भोजन साज न जाइ बखाना।
भरि भरि बसन अपार कहारा। पठये जनक अनेक सुआरा
तुरँग लाख रथ सहस पचीसा। सकल सँवारे नख अरु सीसा
मत्त सहस दस सिन्धुर साजे। जिन्हहिं देखि दिसिकुंजर लाजे।
कनक बसन मनि भरि भरि याना। महिषी धेनु बस्तु बिधि नाना
दो० दाइज अमित न सकिय कहि दीन्ह बिदेह बहोरि।
जो अवलोकत लोकपति लोक सम्पदा थोरि ५५
सबसमाज अहि भाँति बनाई। जनक अवधपुर दीन्ह पठाई
चलिहि बरात सुनत सबरानी। बिकल मीन गन जनु लघु पानी
पुनि पुनि सीय गोद करि लेहीं। देइ असीस सिखावन देहीं।
होइहहु सन्तत पियहि पियारी। चिर अहिवात असीस हमारी
सासु ससुर गुरु सेवा करेहू। पति रुख लखि आयसु अनुसरेहू
अति सनेह बस सखी सयानी। नारि धर्म सिखवहिं मृदु बानी

सादर सकलकुँवरिसमुझाई। रानिन बार बार उर लाई।
बहुरि बहुरि भेंटहिं महतारी। कहहिं बिरंचि रची कत नारी
दो० तेहि अवसर भाइन सहित रामभानुकुलकेतु।
चले जनकमन्दिरमुदित बिदा करावन हेतु ५६
चारिउ भाइ सुभाय सुहाये। नगर नारि नर देखन धाये
कोउकह चलन चहतहहिं आजू। कीन्ह बिदेह बिदा कर साजू
लेहु नयन भरि रूप निहारी। प्रिय पाहुने भूप सुत चारी
को जाने केहि सुकृतसयानी। नयनअतिथिकीन्हे बिधि आनी
मरुधरराउ जिमि पाव पियूषा। सुरतरु लहै जन्म कर भूखा
पाव नारकी हरि पद जैसे। इन कर दरसन हम कहँ तैसे।
निरखि राम सोभाउर धरहू। निजमन फरि मूरति मरि करहू
इहि बिधि सबहिं नयन फल देता। गये कुँवर सब राज निकेता
दो० रूप सिन्धु सब बन्धु लखि हरषि उठीं रनिवासु।
करहिं निछावरि आरती महा मुदित मन सासु ५७
देखि राम छबि अति अनुरागी। प्रेम बिवश पुनि पुनि पद लागी
रही न लाज प्रीति उर छाई। सहज सनेह बरनि किमि जाई।
भाइन सहित उबटि अन्हवाये। छरस असन अति हेतु जेंवाये

बोले राम सुअवसर जानी। शील सनेह सकुचमय बानी
राउ अवधपुर चहत सिधाये। बिदा होन हम इहाँ पठाये
मातु मुदित मन आयसु देहू। बालक जानि करब नित नेहू
सुनत बचन बिलखेउ रनिवासू। बोलि न सकहिं प्रेमबस सासू
हृदय लगाइ कुँअरि सब लीन्ही। पतिन सौंपि बिनती अति कीन्ही।

छं० करि बिनय सिय रामहिं समरपी जोरि कर पुनि पुनि कहै।
बलि जाउँ तात सुजान तुम कहँ बिदित गति सब की अहै॥
परिवार पुरजन मोहि राजहिं प्रान प्रिय सिय जानिबी।
तुलसी सुशील सनेह लखि निज किंकरी करि मानिबी ६१

सो० तुम परिपूरन काम जान सिरोमनि भाव प्रिय।
जन गुन गाहक राम दोष दलन करुनायतन ३३

अस कहि रही चरन गहि रानी। प्रेम पंक जनु गिरा समानी
सुनि सनेह सानी बर बानी। बहु बिधि राम सासु सनमानी
राम बिदा माँगत कर जोरी। कीन्ह प्रनाम बहोरि बहोरी।
पाइ असीस बहुरि सिर नाई। भाइन सहित चले रघुराई।
मञ्जु मधुर मूरति उर आनी। भई सनेह सिथिल सब रानी
पुनि धीरज धरि कुँअरि हँकारी। बार बार भेंटहिं महतारी।

पहुँचावहिं फिरि मिलिहिं बहोरी। बढ़ी परस्पर प्रीति न थोरी
पुनि पुनि मिलति सखिन बिलगाई। बाल बत्स जनु धेनु लवाई
दो० प्रेम बिबस नर नारि सब सखिन सहित रनिवास।
मानहुँ कीन्ह बिदेह पुर करुना बिरह निवास ५८
सुक सारिका जानकी ज्याये। कनक पिंजरन्हि राखि पढ़ाये।
व्याकुल कहहिं कहाँ बैदेही। सुनि धीरज परिहरै न केही
भये बिकल खग मृग इहि भाँती। मनुज दशा कैसे कहि जाती
बन्धु समेत जनक तब आये। प्रेम उमँगि लोचन जल छाये
सीय बिलोकि धीरता भागी। रहे कहावत परम बिरागी।
लीन्ह राउ उर लाइ जानकी। मिटी महा मर्य्याद ज्ञान की
समुझावत सब सचिव सयाने। कीन्ह बिचार अवसर जाने
बारहिं बार सुता उर लाई। सजि सुन्दरि पालकी मँगाई
दो० प्रेम बिबस परिवार सब जानि सुलग्न नरेश।
कुँअरि चढ़ाई पालकी सुमिरे सिद्धि गनेश ५९
बहु बिधि भूपसुता समुझाई। नारि धर्म्म कुल रीति सिखाई
दासी दास दिये बहुतेरे। शुचि सेवक जे प्रिय सिय केरे
सीय चलत व्याकुल पुरबासी। होहिं सगुन शुभ मंगल रासी

भूसुर सचिव समेत समाजा। संग चले पहुँचावन राजा।
रथ गज बाजि बरातिन साजे। सुनि गह गहे बाजने बाजे
दशरथ विप्र बोलि सब लीन्हे। दान मान परिपूरण कीन्हे
चरण सरोज धूरि धरि शीशा। मुदित महीपति पाइ असीशा
सुमिरि गजाननकीन्ह पयाना। मंगल मूल सगुन भये नाना
दो० सुर प्रसून बरषहिं हरषि करहिं अप्सरा गान।
चले अवधपति अवधपुर मुदित बजाइ निशान ३६०
नृप करि विनय महाजन फेरे। सादर सकल माँगने टेरे।
भूषण वसन वाजि गज दीन्हे। प्रेम पोषि ठाढ़े सब कीन्हे।
बार बार विरदावलि भाखी। फिरे सकल रामहिं उर राखी
बहुरि बहुरि कोशलपति कहहीं। जनक प्रेमवश फिरन चहहीं
पुनि कह भूपति वचन सुहाये। फिरिय महीप दूरि बड़ि आये
राउ बहोरि उतरि भये ठाढ़े। प्रेम प्रवाह विलोचन बाढ़े।
तब विदेह बोले कर जोरी। वचन सनेह सुधा जनु बोरी।
करौं कवन विधि विनय सुहाई। महाराज मोहिं दीन्ह बड़ाई
दो० कोशलपति समधी सजन सनमाने सब भाँति।
मिलन परस्पर विनय अति प्रीति हृदय समाति ३६१

मुनि मराडली जनक शिर नावा। आशिरवाद सबहिं सन पावा
सादर पुनि भेंटे जामाता। रूप शील गुरा निधि सब भ्राता
जोरि पंकरुह पारिा सुहाये। बोले वचन प्रेम जनु जाये
राम करौं केहि भाँति प्रशंसा। मुनि महेश मन मानस हंसा
करहिं योग योगी जेहि लागी। कोह मोह ममता मद त्यागी
व्यापक ब्रह्म अलख अविनाशी। चिदानन्द निर्गुरा गुरा राशी
मन समेत जेहि जान न वानी। तरकि न सकहिं सकल अनुमानी
महिमा निगम नेति करि कहहीं। जो तिहुँ काल एकरस रहहीं

दो॰ नयन विषय मो कहुँ भयउ सो समस्त सुख मूल।
सबहिं सुलभ जग जीव कहुँ भये ईश अनुकूल ६२

सबहिं भाँति मोहिं दीन्ह बड़ाई। निजजन जानि लीन्ह अपनाई
होइ सहस दश शारद शेखा। करहिं कल्प कोटिक भरि लेखा
मोर भाग्य राउर गुरा गाथा। कहि न सिराहिं सुनिय रघुनाथा
मैं कछु कहौं एक बल मोरे। तुम रीझहु सनेह सुठि थोरे
बार बार माँगौं कर जोरे। मन परिहरै चररा जनि भोरे
सुनि वर वचन प्रेम जनु पोषे। पूररा काम राम परितोषे
करि वर विनय ससुर सनमाने। पितु कौशिक वशिष्ठ समजाने

विनती बहुरि भरत सन कीन्ही। मिलि सप्रेम पुनि आसिष दीन्ही
दो० मिले लषन रिपुदवनहिं दीन्ह असीष महीस।
भये परस्पर प्रेमबस फिरि फिरि नावहिं सीस ६३

बार बार करि विनय बड़ाई। रघुपति चले संग सब भाई
जनक गहे कौसिक पद जाई। चरनरेनु सिर नयनन लाई।
सुनु मुनीस बर दरसन तोरे। अगमन कछु प्रतीति मन मोरे
जो सुख सुयस लोकपति चहहीं। करत मनोरथ सकुचत अहहीं
सो सुख सुयस सुलभ मोहि स्वामी। सब विधि तव दरसन अनुगामी
कीन्ह बिनय पुनि पुनि सिर नाई। फिरे महीपति आसिष पाई
चली बरात निसान बजाई। मुदित छोट बड़ सब समुदाई
रामहिं निरखि ग्राम नर नारी। पाइ नयन फल होहिं सुखारी।
दो० बीच बीच बर बास करि मग लोगन सुख देत।
अवध समीप पुनीत दिन पहुँची आय जनेत ६४

हने निसान पनाव बहु बाजे। भेरि संख धुनि हय गज गाजे
झाँझ चंग डिमिडिमी सुहाई। सरस राग बाजे सहनाई।
पुर जन आवत अकनि बराता। मुदित सकल पुलकावलि गाता
निज निज सुन्दर सदन सँवारे। हाट बाट चौहट पुर द्वारे

गली सकल अरगजा सिचाई। जहँ तहँ चौकें चारु पुराई
बना बजार न जात बखाना। तोरण केतु पताक बिताना
सफल पुंगि फल कदलि रसाला। रोपे बकुल कदम्ब तमाला
लगे सुभग तरु परसत धरणी। मनिमय आलबाल कल करणी
दो० बिबिध भाँति मंगल कलश गृह गृह रचे सँवारि।
सुर ब्रह्मादि सिहाहिं सब रघुबर पुरी निहारि ६४
भूपभवन तेहि अवसर सोहा। रचना देखि मदन मन मोहा
मंगल सगुन मनोहरताई। रिधि सिधि सुख सम्पदा सुहाई
जनु उछाह सब सहज सुहाये। तनु धरि धरि दशरथ गृह आये
देखन हेतु राम बैदेही। कहहु ललसा होय न केही
जूथ जूथ मिलि चलीं सुआसिनि। निज छबि निदरहिं मदन बिलासिनि
सकल सुमंगल सजे आरती। गावहिं जनु बहु बेष भारती
भूपति भवन कुलाहल होई। जाइ न बरणि समय सुख सोई
कौशल्यादि राम महतारी। प्रेम बिवश तनु दशा बिसारी
दो० दिये दान बिप्रन बिपुल पूजि गणेश पुरारि।
प्रमुदित परम दरिद्र जनु पाइ पदारथ चारि ६५
प्रेम प्रमोद बिबश सब माता। चलहिं न चरण शिथिल सब गाता

रामदरश हित अति अनुरागीं। परिछन साज सजन सब लागीं
विविध विधान बाजने बाजे। मंगल मुदित सुमित्रा साजे
हरद दूब दधि पल्लव फूला। पान पूंगि फल मंगल मूला
अक्षत अंकुर रोचन लाजा। मंजुल मञ्जरि तुलसि विराजा
छुहे पुरट घट सहज सुहाये। मदन शकुन निज नीड़ बनाये
सगुन सुगन्ध न जाहिं बरवानी। मंगल सकल सजहिं सब रानी
रची आरती विविध विधाना। मुदित करहिं कल मंगल गाना

दो॰ कनक थार भरि मंगलहिं कमल करनि लिये मात।
चलीं मुदित परिछन करन पुलक पल्लवित गात॥

धूप धूम नभ मेचक भयऊ। सावन घन घमराड जनु छयऊ
सुरतरु सुमन माल सुरवरषहिं। मनहुँ बलाक अवलि मन करषहिं
मंजुल मनिमय वन्दनवारा। मनहुँ पाकरिपु चाप सँवारा
प्रकटहिं दुरहिं अटन परभामिनि। चारु चपल जनु दमकहिं दामिनि
दुन्दुभि धुनि घन गरजहिं घोरा। याचक चातक दादुर मोरा।
शुचि सुगन्ध बहु वर्षहिं वारी। सुखी सकल शशिपुर नर नारी
समय जानि गुरु आय सुदीन्हा। पुर प्रवेश रघुकुल मनि कीन्हा
सुमिरि शम्भु गिरिजा गनराजा। मुदित महीपति सहित समाजा

दो० होहिं सगुन बरषहिं सुमन सुर दुन्दुभी बजाइ।
बिबिध बधू नाचहिं मुदित मंजुल मंगल गाइ ६८

मागध सूत बन्दि नट नागर। गावहिं यश तिहुँ लोक उजागर
जय धुनि बिमल बेद बर बानी। दश दिशि सुनिय सुमंगल सानी
बिपुल बाजने बाजन लागे। नभ सुर नगर लोग अनुरागे
बने बराती बरनि न जाहीं। महा मुदित मन सुख न समाहीं
पुर बासिन तब राउ जुहारे। देखत रामहिं भये सुखारे
करहिं निछावरि मनि गन चीरा। बारि बिलोचन पुलक शरीरा
आरति करहिं मुदित पुर नारी। हरषहिं निरखि कुँवर बर चारी
शिबिका सुभग उघारि उघारी। देखि दुलहिनि होहिं सुखारी

दो० इहि बिधि सबही देत सुख आये राज दुआर।
मुदित मातु परिछन करहिं बधुन समेत कुमार ६९

करहिं आरती बारहिं बारा। प्रेम प्रमोद कहै को पारा।
भूषन मनि पट नाना जाती। करहिं निछावरि अगनित भाँती
बधुन समेत देखि सुत चारी। परमानन्द मगन महतारी।
पुनि पुनि सीय राम छबि देखी। मुदित सुफल जग जीवन लेखी
सखी सीय मुख पुनि पुनि चाही। गान करहिं निज सुकृत सराही

बरषहिं सुमन अपछराहिं अपछरा देवा। नाचहिं गावहिं लावहिं सेवा
देखि मनोहर चारिउ जोरी। शारद उपमा सकल ढँढोरी।
देत न बनहिं निपट लघु लागी। इकटक रही रूप अनुरागी
दो० निगम नीति कुल रीति करि अर्घ पाँवड़े देत।
बधुन सहित सुत परिछि सब चलीं लिवाइ निकेत ३१०
चारि सिंहासन सहज सुहाये। जनु मनोज निज हाथ बनाये।
तिन पर कुँवरि कुँवर बैठारे। सादर पाँय पुनीत पखारे
धूप दीप नैवेद्य वेद विधि। पूजे वरदुलहिनि मंगल निधि।
बारहिं बार आरती करहीं। व्यजन चारु चामर शिर ढरहीं।
वस्तु अनेक निछावरि होहीं। भरी प्रमोद मात सब सोहीं
पावा परम तत्त्व जनु योगी। अमृत लहि जनु सन्तत रोगी
जन्म रंक जनु पारस पावा। अन्धहिं लोचन लाभ सुहावा
मूक वदन जस शारद छाई। मानहुं समर शूर जय पाई
दो० इहि सुख ते शत कोटि गुरा पावहिं मातु अनंद।
भाइन सहित विवाहि घर आये रघुकुल चन्द ३१
लोक रीति जननी करहिं वरदुलहिनि सकुचाहिं।
मोद विनोद विलोकि बड़ राम मनहिं मुसकाहिं ३२

देव पितर पूजे विधि नीकी। पूजी सकल वासना जीकी
सबहिं वन्दि माँगहिं वरदाना। भाइन सहित राम कल्याना।
अन्तरहित सुर आशिष देहीं। मुदित मातु अंचल भरि लेहीं
भूपति बोलि बरातिन लीन्हे। यान वसन मनि भूषन दीन्हे
आयसु पाइ राखि उर रामहिं। मुदित गये सब निज निज धामहिं
पुर नर नारि सकल पहिराये। घर घर बाजहिं अनँद बधाये
याचक जन याचहिं जोइ जोई। प्रमुदित राउ देहिं सोइ सोई
सेवक सकल बजनिया नाना। पूरन किये दान सनमाना
दो० देहिं अशीष जुहारि सब गावहिं गुन गन गाथ।
तब गुरु भूसुर सहित गृह गमन कीन्ह नरनाथ ३३
जो वशिष्ठ अनुशासन दीन्हा। लोक वेद विधि सादर कीन्हा
भूसुर भीर देखि सब रानी। सादर उठीं भाग्य बड़ जानी।
पाँय पखारि सकल अन्हवाये। पूजि भली विधि भूपजिवाँये
आदर दान प्रेम परिपोषे। देत अशीष चले मन तोषे
बहु विधि कीन्ह गाधिसुत पूजा। नाथ मोहिं सम धन्य न दूजा।
कीन्ह प्रशंसा भूपति भूरी। रानिन सहित लीन्ह पग धूरी।
भीतर भवन दीन्ह वर बासू। मन जुगवत रह नृप रनिवासू

पूजे गुरु पद कमल बहोरी। कीन्ह बिनय मन प्रीति न थोरी
दो० बधुन समेत कुमार सब रानिन सहित महीश।
पुनि पुनि बन्दत गुरु चरन देत असीस मुनीश ७४
बिनय कीन्ह उर अति अनुरागे। सुत सम्पदा राखि सब आगे
नेग माँगि मुनि नायक लीन्हा। आशिरवाद बहुत बिधि दीन्हा
उर धरि रामहिं सीय समेता। हरषि कीन्ह गुरु गवन निकेता
बिप्रबधू कुलबृद्ध बुलाई। चीर चारु भूषना पहिराई
बहरि बुलाई सुआसिन लीन्ही। रुचि बिचारि पहिरावन दीन्ही
नेगी नेग जोग सब लेहीं। रुचि अनुरूप भूप मनि देहीं
प्रिय पाहुने पूज्य जे जाने। भूपति भली भाँति सनमाने
देव देखि रघुबीर बिवाहू। बरषि प्रसून प्रशंसि उछाहू।
दो० चले निशान बजाइ सुर निज निज पुर सुख पाइ।
कहत परस्पर राम यश हर्ष न हृदय समाइ ७५
सब बिधि सबहिं समधि नरनाहू। रहा हृदय भरि पूरि उछाहू
जहँ निवास तहँ पगु धारे। सहित बधूटिन कुँवर निहारे
लिये गोद करि मोद समेता। को कहि सकै भयउ सुख जेता
बधू सप्रेम गोद बैठारी। बार बार हिय हरषि दुलारी

देखि समाज मुदित रनिवासू। सब के उर आनन्द विलासू
कहेउ भूप जिमि भयउ विवाहू। सुनि सुनि हरष होत सब काहू
जनक राज गुण शील बड़ाई। प्रीति रीति सम्पदा सुहाई
बहु विधि भूप भाट जिमि बरणी। रानी सब प्रमुदित सुनि करणी

दो० सुतन समेत नहाइ नृप बोलि लिये गुरु ज्याति।
भोजन कीन्ह अनेक विधि घरी पाँच गइ राति ७६

मंगल गान करहिं वर भामिनि। भइ सुख मूल मनोहर यामिनि
अँचै पान सब काहू पाये। स्रग सुगन्ध भूषित छवि छाये
रामहिं देखि रजायसु पाई। निज निज भवन चले शिर नाई
प्रेम प्रमोद विनोद बड़ाई। समय समाज मनोहरताई
कहि न सकहिं श्रुति शारद शेषू। वेद विरंचि महेश गणेषू
सो मैं कहौं कवन विधि बरणी। भूमि नाग शिर धरै कि धरणी
नृप सब भाँति सबहिं सनमानी। कहि मृदु वचन बुलाई रानी
बधू लरिकिनी पर घर आई। राखेहु नयन पलक की नाईं

दो० लरिका श्रमित उनींद वश शयन करावहु जाइ।
अस कहि गे विश्राम गृह राम चरण चित लाइ ७७

भूप वचन सुनि सहज सुहाये। जड़ित कनक मणि पलँग डसाये

सुभग सुरभि पय फेनु समाना। कोमल कलित सुपेती नाना
उपबरहना बर बरनि न जाहीं। स्रग सुगन्ध भरि मन्दिर माहीं
रतन दीप सुठि चारु चँदोवा। कहत न बनै जान जेहि जोवा
सेज रुचिर रचि राम उठाये। प्रेम समेत पलँग पौढ़ाये
आज्ञा पुनि पुनि भाइन दीनी। निज निज शेज शयन तिन कीनी
देखि श्याम मृदु मंजुल गाता। कहहिं सप्रेम वचन सब माता
मारग जात भयावनि भारी। कहि विधि तात ताड़ुका मारी
दो० घोर निशाचर विकट भट समर गनै नहिं काहु।
मारे सहित सहाय किमि खल मारीच सुबाहु १८
मुनि प्रसाद बलि तात तुम्हारे। ईश अनेक करवरे टारे
मख रखवारी करि दुहुँ भाई। गुरु प्रसाद सब विद्या पाई
मुनि तिय तरी लगत पग धूरी। कीरति रही भुवन भरि पूरी।
कमठ पीठ पवि कूट कठोरा। नृपसमाज महँ शिव धनु तोरा
विश्व विजय यश जानकि पाई। आये भवन व्याहि सब भाई
सकल अमानुष कर्म तुम्हारे। केवल कौशिक कृपा सुधारे
आजु सुफल जग जन्म हमारे। देखि तात विधु वदन तुम्हारे
जे दिन गये तुमहिं बिनु देखे। ते विरंचि जनि पारहिं लेखे।

दो० राम प्रतोषी मातु सब कहि विनीत वर वयन।
सुमिरि शम्भु गुरु विप्र पद किये नींद वश नयन ७६

नींद्ह वदन सोह सुठि लोना। मनहुँ साँझ सरसीरुह सोना
घर घर करहिं जागरण नारी। देहिं परस्पर मंगल गारी
पुरी विराजति राजत रजनी। रानी कहहिं विलोकह सजनी।
सुन्दरि वधुन सासु लै सोई। फरिपति जनु शिर मणिऊर गोई
प्रात पुनीत काल प्रभु जागे। अरुण चूड़ वर बोलन लागे
वन्दी मागध सुरण गण गाये। पुर जन द्वार जुहारन आये
वन्दि विप्र सुर गुरु पितु माता। पाइ अशीष मुदित सब भ्राता
जननिन सादर वदन निहारे। भूपति संग द्वार पगु धारे।

दो० कीन्ह शौच सब सहज शुचि सरित पुनीत नहाइ।
प्रात क्रिया करि तात पहुँ आये चारिउ भाइ ३८०

भूप विलोकि लिये उर लाई। बैठे हरषि रजायसु पाई।
देखि राम सब सभा जुड़ानी। लोचन लाभ अवधि अनुमानी
पुनि वशिष्ठ मुनि कौशिक आये। सुभग आसनन्ह मुनि बैठाये
सुतन समेत पूजि पद लागे। निरखि राम दोउ उर अनुरागे।
कहहिं वशिष्ठ धर्म इतिहासा। सुनहिं महीप सहित रनिवासा।

सुनिमनअगमगाधिसुतकरणी।मुदितवशिष्ठविपुलविधिवरणी।
बोले वामदेव सब साँची। कीरति कलित लोक तिहुँ माँची।
सुनि आनन्द भयउ सब काहू। राम लषण उर अधिक उछाहू
दो० मंगल मोदउछाह नित जाहिं दिवस इहिभाँति।
उमँगी अवध अनन्द भरि अधिक अधिक अधिकाति
सुदिन साधि कर कंकण छोरे। मंगल मोद विनोद न थोरे।
नितनवसुखसुरदेखिसिहाहीं। अवधजन्मयाचहिंविधिपाहीं।
विश्वामित्र चलन नित चहहीं। राम सप्रेम विनय वश रहहीं।
दिनदिन सदगुणा भूपतिभाऊ। देखि सराह महा मुनि राऊ
माँगत विदा राउ अनुरागे। सुतन समेत ठाढ़ भये आगे।
नाथ सकल सम्पदा तुम्हारी। मैं सेवक समेत सुत नारी
करब सदा लरिकन पर छोहू। दरशन देत रहब मुनि मोहू।
असकहि राउसहितसुत रानी। परेउ चरण मुख आव नवानी।
दीन्ह असीष विप्र बहु भाँती। चलेन प्रीति रीति कहि जाती।
राम सप्रेम संग सब भाई। आयसु पाइ फिरे पहुँचाई
दो० रामरूप भूपतिभगति ब्याह उछाह अनन्द।
जातसराहतमनहिंमनमुदितगाधिकुलचन्द ८२

वामदेव रघुकुल गुरु ज्ञानी। बहुरि गाधि सुत कथा बखानी
सुनि मुनि सुयश मनहिं मनराऊ। बररात आपन पुरायप्रभाऊ
बहुरे लोग रजायसु भयऊ। सुतन समेत नृपति गृह गयऊ
जहँ तहँ राम ब्याह यश गावा। सुयश पुनीत लोक तिहुं छावा
आये ब्याहि राम घर जब ते। बसे अनन्द अवध सब तब ते
प्रभु विवाह यश भयउ उछाहा। सकहिं न बरनि गिरा अहिनाहा
कविकुलजीवन पावन जानी। राम सीय यश मंगल खानी
तेहि ते मैं कछु कहा बखानी। करन पुनीत हेतु निज बानी
छं० निज गिरा पावन करन कारन राम यश तुलसी कह्यो।
रघुवीर चरित अपार वारिधि पार कवि कवने लह्यो॥
उपवीत ब्याह उछाह मंगल सुनहिं सादर गावहीं ।
वैदेहि राम प्रसाद ते जन सर्व्वदा सुख पावहीं ६२
सुनि गाय कहौं गिरीश कन्या धन्य अधिकारी सही।
नित प्रीति नूतन सुनत हरि गुण भक्ति अनुपम तेलही
रघुवीर पद अनुराग जल लोभाग्नि वेगि बुझावई।
यहु जानि तुलसीदास मनक्रमवचन हरिगुण गावई ६३
दो० कठिन काल मल ग्रसित तनु साधन कछु न होइ।

यह विचारि विश्वास करि हरि सुमिरै बुध सोइ ८३

सो० मन हरि पद अनुराग करु त्यागि नाना कपट।
महा मोह निशि जाग सोवत बीते काल बहु ३४

सिय रघुवीर विवाह जे सप्रेम सादर सुनहिं।
तिन कहँ सदा उछाह मंगलायतन राम यश ३५

इति श्री राम चरित मानसे सकल कलि कलुष विध्वंसने विमल विज्ञानवैराग्य सन्तोष सम्पादनो नाम तुलसीकृत बालकाण्डः प्रथमस्सोपानः समाप्तः १॥

रामायण गीतावली मूल तुलसीकृत छापा टैप.

अनेक रागों में सुन्दर बाल चरित्रादि सम्पूर्ण लीला युक्त रामायण सातों काण्ड का आशय वर्णित है.

तथा. गीतावली सटीक बैजनाथजी छापा टैप.

सातो काण्ड रामायण की सम्पूर्ण कथा अनेक उत्तम २ रागों में वर्णित है बैजनाथ जी ने हरि भक्तों व मज्जनों के सरलता हेतु उत्तम रीति से ब्रजभाषा में टीका किया है.

रामायण दोहावली तुलसीदास जी मूल छापा टैप.

जिसमें ज्ञान भक्ति वैराग्य मिश्रित दोहे हैं और विशेष कर संतोष की शिक्षा प्रधान है.

विजय दोहावली तु. दा. जी छापा टैप.

श्री गोसाईं तुलसीदास जी ने अपनी तुलसीकृत रामायण के कठिन और गुप्तार्थ दोहे चौपाई सोरठे आदि के भाव यथार्थ प्रकट करने के निमित्त छन्दों में प्रकाशित किया.

रामायण छन्दावली मू. तु. कृ. छापा टैप.

श्री रविकुल कैरव चन्द्र कौशल्या हृदयानन्द वर्द्धन का परमोत्तम चरित्र बालकाण्ड से उत्तरकाण्ड पर्य्यन्त मनोहर चौपय्या छन्द में वर्णित है.

तथा. मय तिलक बैजनाथजी छापा टैप.

जिसको श्री बैजनाथ जी ने कठिन २ स्थलों के गूढ़ २ शब्दों का आशय प्रत्येक पुराण शास्त्रादिकों के प्रमाण देकर ऐसा सरल कर दिया है जिसे सब सहज में समझ सक्ते हैं.

छप्पै रामायण मूल तुलसीकृत छापा टैप.

सातों काण्ड रामायण की कथा अति रुचिर छप्पै छन्दों में अतीव सरल पदों से वर्णन की गई है.

तथा. मय टीका बैजनाथ जी छापा टैप.

जिसको बैजनाथ जी ने कठिन २ स्थलों के गूढ़ २ शब्दों का आशय प्रत्येक पुराण शास्त्रादिकों के प्रमाण देकर ऐसा सरल कर दिया है जिसे सब सहज में समझ सक्ते हैं.

विनय पत्रिका मूल तुलसीदास जी कृत छापा टैप.

गोसाईं तुलसीदास जी ने श्री रामचन्द्र परब्रह्म परमेश्वर और जानकी महारानी के विनय युक्त भजन राग आदि में वर्णन किये हैं.

तथा. मय टीका बाबू शिवप्रकाश जी छापा टैप.

जिसमें भक्त भयहारी - अवध बिहारी - दीनहितकारी - रावणान्तकर्त्ता - विभीषणादि भयहर्त्ता श्री रामचन्द्र महाराजाधिराज प्रति विनय अति सुन्दर भजनों में निर्मित है.

तथा. मय टीका बैजनाथ जी छापा टैप.

जिसको बैजनाथ जी ने प्रति पद प्रति [illegible] का अनेक शास्त्र, पुराण, स्मृति, उपनिषदादि

दृष्टान्त देकर सरल भाषा में निर्मित किया है ।

तुलसी सतसयी मूल तुलसी कृत छापोदेप.

जिस में नानाप्रकार के नीति शास्त्र ग्रन्थों से छाँदकर सात सौ अत्यंत सरणीय दोहों में नीति वर्णन कीगई है.

तथा. मय टीका कामताशरणजी का. टैं.

जिसको श्री ६ मत् कृपासागर सकल गुरा आगर श्री स्वामी युगलानन्य शरणा जी के किङ्कर राधाकिङ्कर श्री पण्डित रामकान्ता शरणा जी ने उत्तम रीति से वार्तिक भाषा टीका किया है.

तथा. मय टीका बैजनाथजी का. टेप.

जिसमें नाना प्रकार के नीति शास्त्र ग्रन्थों से छाँदकर अतीव मनोहर सात सौ दोहों में धर्मनीति वर्णितहै.

भगवद्गीता नवलभाष्यका विज्ञापन.

प्रकट हो कि यह पुस्तक श्री मद्भगवद्गीता सकल निगम पुराणा स्मृति सांख्यादि शास्त्रों का परम रहस्य गीताशास्त्र का सर्व्व विद्यानिधान सौशील्य विनयौदार्य्य सत्यसंगर शौर्य्यादि गुरा सम्पन्न नरावतार महानुभाव अर्जुन को परम अधिकारी जान के हृदय जनित मोहनाशार्थ सब प्रकार अपार संसार निस्तारक भगवद्भक्ति मार्ग दृष्टिगोचर कराया है वही उक्त भगवद्गीता वज्रवत् वेदान्त व योगशास्त्रान्तर्गत जिसको अच्छे २ शास्त्रवेत्ता अपनी बुद्धि से पार नहीं पा सक्ते तब मन्दबुद्धी जिन को कि केवल देश भाषा ही पठन पाठन करने की सामर्थ्य है वह कब इनके अन्तराभिप्राय को जान सक्ते हैं. और यह प्रत्यक्षही है कि जब तक किसी पुस्तक अथवा किसी वस्तु का अन्तराभिप्राय अच्छे प्रकार बुद्धि में न भासित हो तब तक आनन्द क्योंकर मिले इस प्रकार सम्पूर्ण भारतनिवासी श्री मद्भगवत्पदाब्जरसिकजनों के चित्तानन्दार्थ व बुद्धिबोधार्थ सन्ततधर्म्म धुरीरा सकलकला चातुरीरा सर्व्वविद्या विलासी भगवद्भक्त्यनुरागी श्रीमान् मुन्शी नवलकिशोर जी (सी. आई. ई.) ने बहुत साधन व्ययकर फ़र्रुखाबाद निवासि पण्डित उमादत्त जी से इस मनोरञ्जन वेद वेदान्त शास्त्रोपरि पुस्तक को श्रीशंकराचार्य्य निर्मित भाष्यानुसार संस्कृत से सरल देशभाषा में तिलक रचाय नवलभाष्य आख्य से प्रभात कालिक कमल सरिस प्रफुल्लित करा दिया है कि जिसको भाषामात्र के जाननेवाले पुरुष भी जान सक्ते हैं ॥

रामायण

अयोध्याकाण्ड

मोटे अक्षरों में हरएक भक्तजन
के अनुराग और सुगमता से
पाठ करने के हेतु

प्रथम बार

कानपुर

मुंशी नवल किशोर की आज्ञा से छापेखाने में छपी

अप्रैल सन् १८९४ ई०

विज्ञापन.

यह विशाल दरशी मोटे अक्षरों की रामायण प्रथमबार छापी गई है. अभी तक ऐसी रामायण हिन्दुस्तान में नहीं छपी कि जिस के दर्शन से आप लोग प्रसन्नहो लें अब परमेश्वर की कृपा से हमारे कारख़ाने में छपी है और हम इस की प्रशंसा नहीं कर सक्ते जब आप लोग ख़ुद इस रामायण को अवलोकन करेंगे तब आप प्रसन्नता को प्राप्त होंगे- और यह रामायण अलग २ काण्ड भी मिल सक्ती है. फ़क़त

नवलकिशोर.

मालिक अतबा नवलकिशोर प्रेस कानपूर व लखनऊ

नीचे लिखी हुई रामायण हर क़िस्म की छापाख़ाना नवलकिशोर कानपूर व लखनऊ में ख़रीदारों को मिल सक्ती हैं.

रामायण तु॰ क॰ सटीक रामचरणदास किताबनुमा बपत्रानुमा छा॰ टैप सा॰ कां.

जिसको श्री रामचरण जी ने भक्तजनों के उपकार और जगत कल्याण के लिये वेद की ऋचाओं व अनेक प्रमाणिक श्लोकों से भूषित कर पद २ का भाषा टीका किया है.

रामायण तुलसीकृत मूल मोटा अक्षर मय तसवीर छापा टैप.

क्षेपक वमाहात्म्य सहित - रावण विजय व श्री गंगा जी - अहिरावण नारान्तक रामदल संख्या सुलोचना कथा श्री रामायण व सप्तदेव स्तुति भिन्न २ क्षेपक की रीति से संयुक्त है.

तथा - सुतवस्सित क़लम मय तसवीर छापा टैप ऊपर के अलङ्कारों सहित.

रामायण तु॰ क॰ सटीक सुखदेवलाल किताबनुमा बपत्रानुमा छापा टैप.

जिसको सुखदेवलाल जी ने जगत कल्याण के अर्थ भाषा टीका रचकर प्रमाणिक श्लोकों से भूषित किया और पद पदार्थ के अर्थ को अति स्पष्ट रीति से सलिल देश भाषा में बखाना है.

रामायण तु॰ क॰ सटीक बैजनाथ जी छापा टैप.

जिसको बैजनाथ जी ने कठिन २ स्थलों के गूढ़ शब्दों का आशय प्रत्येक पुराण शास्त्र उपनिषद वेदादि के श्लोक ऋचा सूत्रादिकों के दृष्टान्त देकर ऐसा सरल कर दिया है जिसे सब सहज में समझ सक्ते है और अवलोकन करने के योग्य है.

रामायण कवित्तावली मूल तु॰ छापा टैप.

जिसमें सम्पूर्ण आशय रामायण का उक्त कवि ने अति रुचिर छन्दों में वर्णन किया है.

तथा. मय टीका बैजनाथ जी सटीक.

जिसमें श्री महाराज राज राजेन्द्र रामचन्द्र जी का समस्त जीवन चरित्र सातकाण्डों में अत्युत्तम कवित्तों में वर्णित है.

अयोध्याकाण्ड २

श्रीगणेशायनमः

श्रीरामायणतुलसीकृत

अयोध्याकाण्ड

वामाङ्कःचविभातिभूधरसुतादेवापगामस्तके। भाले बालविधुर्गलेचगरलंयस्योरसिव्यालराट॥ सोऽयम्भूति विभूषणाःसुरवरःसर्व्वाधिपस्सर्व्वदा।शर्व्वःसर्वगतःशिवः शशिनिभःश्रीशंकरःपातुमाम १ प्रसन्नतांयोनगताभिषेकतस्तथानमल्लोवनवासदुःखतः॥ मुखाम्बुजश्रीरघुनन्दनस्यमेसदास्तुसामंजुलमंगलप्रदा २ नीलाम्बुजश्यामलकोमलाङ्गं। सीतासमारोपितवामभागम्॥ पाणौमहाशायकचारुचापंनमामिरामंरघुवंशनाथम ॥ ३ ॥

दो०। श्रीगुरुचरणसरोजरजनिजमनमुकुरसुधारि।
वरणौंरघुबरविमलयशजोदायकफलचारि १

जबतेरामव्याहि घर आये। नितनवमंगलमोदबधाये
भुवनचारिदशभूधर भारी। सुकृतमेघवरषहिंसुखवारी

ऋधि सिधि सम्पति नदी सुहाई। उमगि अवध अम्बुधि कहँ आई
मणि गण पुर नर नारि सुजाती। शुचि अमोल सुन्दर सब भाँती
कहि न जाइ कछु नगर विभूती। जनु इतनी विरञ्चि करतूती
सब विधि सब पुर लोग सुखारी। रामचन्द्र मुख चन्द्र निहारी
मुदित मातु सब सखी सहेली। फलित बिलोकि मनोरथ बेली
राम रूप गुण शील सुभाऊ। प्रमुदित होहिं देखि सुनि राऊ
दो॰ सबके उर अभिलाष अस कहहिं मनाइ महेश।
आपु अछत युवराज पद रामहिं देहिं नरेश २
एक समय सब सहित समाजा। राजसभा रघुराज बिराजा
सकल सुकृत मूरति नरनाहू। राम सुयश सुनि अतिहि उछाहू
नृप सब रहहिं कृपा अभिलाषे। लोकप रहहिं प्रीति रुख राखे
त्रिभुवन तीनि काल जग माहीं। भूरि भाग्य दशरथ सम नाहीं
मंगल मूल राम सुत जासू। जो कछु कहिय थोर सब तासू
राउ सुभाव मुकुर कर लीन्हा। बदन बिलोकि मुकुट सम कीन्हा
श्रवण समीप भये सित केशा। मनहुँ चौथपन अस उपदेशा
नृप युवराज राम कहँ देहू। जीवन जन्म सुफल करि लेहू
दो॰ अस विचारि उर आनि नृप सुदिन सुअवसर पाइ।

तनुपुलकितमनमुदितअतिगुरुहिसुनायउजाइ३

कहेउभुआलसुनियमुनिनायक। भयेरामसबविधिसबलायक
सेवकसचिवसकलपुरबासी। जे हमार अरिमित्र उदासी
सबहिरामप्रियजेहिविधिमोही। प्रभुअशीशजनुतनुधरिसोही
विप्रसहितपरिवारगुसाईं । करहिं छोह सबरौरहि नाईं
जेगुरुचरणरेणुशिर धरहीं। तेजनुसकलविभववशकरहीं
मोहिंसमानअरुभयउनदूजे। सबपायों प्रभुपद रज पूजे
अबअभिलाषएकमनमोरे। पूजिहिनाथअनुग्रह तोरे
मुनिप्रसन्नलखिसहजसनेहू। कहेउ नरेश रजायसु देहू
दो० राजन राउर नाम यश सब अभिमत दातार ।
फलअनुगामीमहिपमणि मनअभिलाष तुम्हार४
सबविधिगुरुप्रसन्नजियजानी। बोलेउ राउ विहँसि मृदुवानी
नाथ राम करिये युवराजू। कहियकृपाकरिकरियसमाजू
मोहिंअछतअस होउ उछाहू । लहहिं लोग सबलोचनलाहू
प्रभुप्रसादशिवसबै निबाही। यहै लालसा इक मन माही
पुनिन शोचतनु रहै कि जाऊ। जेहिन होय पाछे पछिताऊ
सुनिमुनिदशरथवचन सुहाये। मंगलमूल मोद अति पाये

सुनु नृपजासु विमुख पछितहीं। जासु भजन बिनु जरनि न जाहीं
भये तुम्हार तनय सो स्वामी। राम पुनीत प्रेम अनुगामी
दो० बेगि बिलम्ब न करिय नृप साजिय सबै समाज।
सुदिन सुमंगल तबहिं जब राम होहिं युवराज ५
मुदित महीपति मन्दिर आये। सेवक सचिव सुमन्त बुलाये
कहि जय जीव शीश तिन नाये। भूप सुमंगल वचन सुनाये
प्रमुदित मोहिं कहेउ गुरु आजू। रामहिं राज देहु युवराजू
जो पाँचहि मत लागै नीका। करहु हरषि हिय रामहिं टीका
मंत्री मुदित सुनत प्रिय बानी। अभिमत बिरवँ परेउ जनु पानी
बिनती सचिव करहिं कर जोरी। जियहु जगत पति बरष करोरी
जग मंगल भल काज बिचारा। बेगहिं नाथ न लाइय बारा
नृपहिं मोद सुनि सचिव सुभाखा। बढ़त बिटप जनु लही सुशाखा
दो० कहेउ भूप मुनि राज कर जो जो आयसु होय।
राम राज अभिषेक हित बेगि करहु सोइ सोय ६
हरषि मुनीश कहेउ मृदु बानी। आनहु सकल सुतीरथ पानी
औषध मूल फूल फल नाना। कहे नाम गनि मंगल जाना
चामर चमर बसन बहु भाँती। रोम पाट पट अगनित जाती

मणिगणमंगलवस्तु अनेका। जो जग योग भूप अभिषेका
वेदविहित कहि सकलविधाना। कहेउ रचहु पुरविविधवितानां
पनस रसाल पूगि फलकेरा। रोपहु वीथिन पुर चहुँ फेरा
रचहु मंजु मणि चौके चारू। कहहु बनावन बेगि बजारू
पूजहु गणपति गुरुकुलदेवा। सब विधि करहु भूमिसुर सेवा
दो० ध्वज पताक तोरण कलश सजहु तुरग रथ नाग।
शिरधरि मुनिवर वचन सब निजनिज काजहि लाग १
जेहि सुनीश जो आयसु दीन्हा। सो जनु काज प्रथम तेइ कीन्हा
विप्र साधु सुर पूजत राजा। करत रामहित मंगल काजा
सुनत राम अभिषेक सुहावा। बाज गहगहा अवध बधावा
राम सीय तनु सगुन जनाये। फरकहिं मंगल अंग सुहाये
पुलकि सप्रेम परस्पर कहहीं। भरत आगमन सूचक अहहीं
भये बहुत दिन अति अवसेरी। सगुन प्रतीति भेंट प्रिय केरी
भरत सरिस प्रिय को जग माहीं। यहै सगुन फल दूसर नाहीं
रामहिं बन्धु शोच दिन राती। अण्डन्ह कमठ हृदय जेहि भाँती
दो० तेहि अवसर मंगल परम सुनि हरष्यो रनिवास।
शोभित लखि विधु वदन जनु वारिधि बीच विलास २

प्रथम जाइ जिन्ह बरिजनाये। भूषन बसन भूरि तिन पाये
प्रेम पुलक तनु मन अनुरागीं। मंगल साज सजन सब लागीं
चौकैं चारु सुमित्रा पूरी। मनिमय बिबिध भाँति अति रूरी
आनँद मगन राम महतारी। दिये दान बहु बिप्र हँकारी
पूजेउ ग्राम देव सुर नागा। कहेउ बहोरि देन बलिभागा
जेहि बिधि होइ रामकल्याना। देहु दया करि सो बरदाना
गावहिं मंगलकोकिलबयनीं। बिधुबदनीं मृगशावकनयनीं
दो० राम राज अभिषेक सुनि हिय हर्षीं बर नारि।
लगीं सुमंगल सजन सब बिधि अनुकूल बिचारि ९
तब नरनाह बसिष्ठ बुलाये। राम धाम सिख देन पठाये.
गुरु आगमन सुनत रघुनाथा। द्वार आइ पद नायउ माथा
सादर अरघ देइ घर आने। षोड़स भाँति पूजि सनमाने
गहे चरन सिय सहित बहोरी। बोले राम कमल कर जोरी
सेवक सदन स्वामि आगमनू। मंगल मूल अमंगल दमनू
तदपिउचित असबोलि सप्रीती। पठइय नाथ काज असनीती
प्रभुता तजि प्रभु कीन्ह सनेहू। भयउ पुनीत आजु मम गेहू
आयसु होइ सो करिय गुसाँई। सेवक लहै स्वामि सेवकाई.

दो० सुनि सनेह साने वचन मुनि रघुवरहि प्रसंस।
राम कस न तुम कहहु अस हंस वंस अवतंस १०

वरिस राम गुन शील सुभाऊ। बोले प्रेम पुलकि सुनि राऊ
भूप सजेउ अभिषेक समाजू। चाहत देन तुमहिं युवराजू
राम करहु सब संयम आजू। जो विधि कुशल निबाहै काजू
गुरु सिख देइ राव पहँ गयऊ। राम हृदय अस विस्मय भयऊ
जनमे एक संग सब भाई। भोजन शयन केलि लरिकाई
करन बेध उपवीत विवाहा। संग संग सब भयउ उछाहा
विमल वंश यह अनुचित एका। अनुज विहाय बड़ेहि अभिषेका
प्रभु सप्रेम पछितानि सुहाई। हरेउ भरत मन की कुटिलाई

दो० तेहि अवसर आये लखन मगन प्रेम आनन्द।
सनमाने प्रिय वचन कहि रविकुल कैरव चन्द ११

बाजहिं बाजन विविध विधाना। पुर प्रमोद नहिं जाइ बखाना
भरत आगमन सकल मनावहिं। आवहिं बेगि नयन फल पावहिं
हाट बाट घर गली अथाई। कहहिं परस्पर लोग लोगाई
कालिहि लगन भलि केतिक बारा। पूजिहि विधि अभिलाष हमारा
कनक सिंहासन सीय समेता। बैठहिं राम होइ चित चेता॥

सकल कहहिं कब होइहि काली। विघ्न मनावहिं देव कुचाली
तिनहिं सोहात न अवध बधावा। चोरहिं चाँदनि राति न भावा
सारद बोलि विनय सुर करहीं। बारहिं बार पाय लै परहीं॰
दो॰ विपति हमारि विलोकि बड़ि मातु करिय सोइ आज।
राम जाहिं बन राज तजि होइ सकल सुरकाज १२
सुनि सुर विनय ठाढ़ि पछिताती। भइउँ सरोज विपिन हिमराती
देखि देव पुनि कहहिं बहोरी। मातु तोहिं नहिं थोरिउ खोरी
विस्मय हर्ष रहित रघुराऊ। तुम जानह रघुवीर सुभाऊ
जीव करम वस सुख दुख भागी। जाइय अवध देव हित लागी
बार बार गहि चरना सकोची। चली विचारि विबुध मति पोची
ऊँच निवास नीच करतूती। देखि न सकहिं पराइ विभूती
आगिल काज विचारि बहोरी। करिहैं चाह कुशल कवि मोरी
हरषि हृदय दशरथ पुर आई। जनु ग्रह दशा दुसह दुख दाई॰
दो॰ नाम मन्थरा मन्दमति चेरि कैकयी केरि ।
अजस पिटारी ताहि करि गई गिरा मति फेरि १३
देखि मन्थरा नगर बनावा। मंगल मञ्जुल बाजु बधावा
पूँछिसि लोगन्ह काह उछाहू। राम तिलक सुनि भा उर दाहू

करै विचार कुबुद्धि कुजाती। होइ अकाजकवन विधि राती
देखि लाग मधु कुटिल किराती। जिमि गवँ तकै लेउँ केहि भाँती
भरत मातु पहँ गइ बिलखानी। का अनमनि हसि कह हँसि रानी
ऊतर न देइ सो लेइ उसाँसू। नारि चरित करि ढारति आँसू
हँसि कह रानि गाल बड़ तोरे। दीन्ह लखन सिख अस मन मोरे
तबहुँ न बोलि चेरि बड़ि पापिनि। छाँड़ै स्वास कारि जनु साँपिनि
दो० सभय रानि कह कहेसि किन कुशल राम महिपाल
भरत लखन रिपुदमन सुनि भा कुबरी उर शाल १४
कत सिख देइ हमहिं कोउ माई। गाल करब केहि कर बल पाई
रामहिं छाँड़ि कुशल केहि आजू। जाहि नरेश देत युवराजू
भा कौशल्यहि विधि अति दाहिन। देखत गर्ब्ब रहत उर नाहिन
देखहु कस न जाइ सब शोभा। जो अवलोकि मोर मन छोभा
पूत विदेश न शोच तुम्हारे। जानति हौ बश नाह हमारे
नींद बहुत प्रिय सेज तुराई। लखहु न भूप कपट चतुराई
सुनि प्रिय वचन कुटिल मन जानी। झुकी रानि अब रहू अरगानी
पुनि अस कबहुं कहसि घर फोरी। तौ धरि जीह कढ़ावौं तोरी
दो० काने खोरे कूबरे कुटिल कुचाली जानि।

तिय विशेष पुनि चेरि कहि भरत मातु मुसुकानि १५
प्रिय वादिनि सिख दीन्हेउँ तोहीं। सपनेहुँ तोपर कोप न मोहीं
सुदिन सुमंगल दायक सोई। तोर कहा फुर जादिन होई।
जेठ स्वामि सेवक लघु भाई। यह दिनकर कुल रीति सदाई
रामतिलक जो साँचेहु काली। माँगु देउँ मन भावत आली
कौशल्या सम सब महतारी। रामहिं सहज सुभाव पियारी
मोपर करहिं सनेह विशेखी। मैं करि प्रीति परीक्षा देखी
जो विधि जन्म देइ करि छोहू। होहिं राम सिय पूत पतोहू
प्राराते अधिक राम प्रिय मोरे। तिनके तिलक छोभ कस तोरे
दो० भरत शपथ तोहिं सत्य कहु परिहरि कपट दुराव।
हर्ष समय विस्मय करसि कारण मोहिं सुनाव १६
एकहि बार आश सब पूजी। अब कछु कहब जीह करि दूजी
फोरै योग कपार अभागा। भलो कहत दुख रौरेहु लागा
कहइ झूंठ फुर बात बनाई। ते प्रिय तुमहिं करुइ मैं माई
हमहुं कहब अब ठकुर सुहाती। नाहिं तौ मौन रहब दिन राती
करि कुरूप विधि परबश कीन्हा। बवा सो लुनिय लहिय जो दीन्हा
कोउ नृप होय हमैं का हानी। चेरि छाँड़ि अब होब कि रानी

जौरे योग सुभाव हमारा । अनभलदेखि न जाइतुम्हारा
ताते कछुक बात अनुसारी । क्षमब देबि बड़ि चूक हमारी
दो० गूढ़ कपट प्रियवचन सुनि तीय अधरबुधि रानि ।
सुरमायाबश बैरिनिहि सुहृद जानि पतिआनि २७
सादर पुनि पुनि पूँछति ओही । सबरी गान मृगी जनु मोही ।
तसि मति फिरी अहै जसि भावी । रहसी चेरि घात भलि पावी
तुम पूँछहु मैं कहत डेराऊं । धरेहु मोर घर फोरी नाऊं
सजि प्रतीति बहुबिधि गढ़ि छोली । अवध साढ़ साती तब बोली ।
प्रिय सिय राम कहा तुम रानी । रामहिं तुम प्रिय सो फुर बानी
रहे प्रथम अब सो दिन बीते । समय पाइ रिपु होहिं पिरीते
भानु कमल कुल पोषनिहारा । बिनु जल जारि करै सोइ छारा
जरि तुम्हारि चह सवति उपारी । रूंधहु करि उपाय बर बारी
दो० तुमहिं न सोच सुहाग बल निज बश जानहु राव ।
मन मलीन मुंह मीठ नृप राउर सरल सुभाव २८
चतुर गँभीर राम महतारी । बीच पाइ निज काज सवाँरी
पठये भरत भूप ननिऔरे । राम मातु मत जानब रौरे
सेवहिं सकल सवति मोहिं नीके । गर्बित भरत मातु बल पीके

शालतुम्हार कौशलहिं माई। चतुर कपट नहिं परत लखाई
राजहिं तुमपर प्रीति विशेखी। सवतिसुभाव सकै नहिं देखी
रचि प्रपञ्च भूपहिं अपनाई। रामतिलकहित लगन धराई
इहि कुल उचित रामकहँटीका। सबहिं सुहाइ मोहि सुठि नीका
आगिलि बात समुझि डरमोहीं। देउ दैव फिरि सो फल ओहीं
दो० रचि पचि कोटिक कुटिल पन कीन्हेसि कपट प्रबोध।
कहेसि कथा शत सौति कर जाते बढ़ै बिरोध १९॥
भावी बश प्रतीति उर आई। पूँछि रानि निज शपथ दिवाई
का पूँछहु तुम अजहुं न जाना। हित अनहित निज पशु पहिंचाना
भये पाख दिन सजत समाजू। तुम सुधि पायहु मोसन आजू
खाइय पहिरिय राज तुम्हारे। सत्य कहे नहिं दोष हमारे
जो असत्य कछु कहब बनाई। तौ विधि देइहि मोहिं सजाई
रामहिं तिलक काल्हि जो भयऊ। तुम कहँ विपति बीज विधि बयऊ
रेखा खैंचि कहौं बल भाषी। भामिनि भइहु दूध की माखी
जो सुत सहित करहु सेवकाई। तौ घर रहहु न आन उपाई
दो० कद्रू विनतहिं दीन्ह दुख तुमहिं कौशिला देव।
भरत बन्दि गृह सेइहैं राम लषण कर नेव २०

केकयसुता सुनत कटु बानी। कहि न सकै कछु सहमि सुखानी
तनु पसेव कदलि जिमि कांपी। कुबरी दसन जीह तब चांपी
कहि कहि कोटिक कपट कहानी। धीरज धरहु प्रबोधे रानी
फोन्हे सि कठिन पढ़ाइ कुपाठू। जिमि ननवै फिरि उकठि कुकाठू
फिरा करम्म प्रिय लागि कुचाली। बकिहि सराहति मनहुं मराली
सुनु मन्थरा बात फुर तोरी। दहिनि आँखि नित फरकत मोरी
दिन प्रति देखौं राति कुसपना। कहौं न तोहिं मोह बस अपना
काह कहौं सखि सूध सुभाऊ। दहिन बाम जानौं नहिं काऊ

दो० अपने चलत न आजु लगि अनभल काहुक कीन्ह।
कोहि अघ एकहि बार मोहिं दैव दुसह दुख दीन्ह २१

नैहर जन्म भरब बरु जाई। जिअत न करब सवति सेवकाई
अरि बस दैव जिआवै जाही। मरन नीक तेहि जिअब न चाही
दीन बचन कह बहु बिधि रानी। सुनि कुबरी तिय माया ठानी
अस कस कहहु मानि मन ऊना। सुख सुहाग तुम कहँ दिन दूना
जो राउर अति अनभल ताका। सो पाइहि यह फल परिपाका
जब तेकुमति सुना मैं स्वामिनि। भूँख न बासर नींद न यामिनि
पूँछा गुनिन रेख तिन खांची। भरत भुआल होब यह सांची

भामिनि करहु तो कहौं उपाऊ। है तुम्हरे सेवा वश राऊ
दो० परौं कूप तव वचन लागि मकौं पूत पति त्यागि।
कहसि मोर दुख देखि बड़ कस न करब हित लागि २१
कुबरी करी कुबुद्धि कै कैकेई। कपट छुरी उर पाहन टेई
लखै न रानि निकट दुख कैसे। चरै हरित तृन बलि पसु जैसे
सुनत बात मृदु अन्त कठोरी। देति मनहुँ मधु माहुर घोरी
कहै चेरि सुधि अहै कि नाहीं। स्वामिनि कहेहु कथा मोहि पाहीं
दुइ वरदान भूप सन थाती। माँगहु आजु जुड़ावहु छाती
सुतहिं राज रामहिं बन बासू। देहु लेहु सब सवति हुलासू
भूपति राम शपथ जब करई। तब माँगहु जेहि बचन न टरई
होइ अकाज आजु निशि बीते। बचन मोर प्रिय मानहु जीते
दो० बड़ कुघात करि पातकिनि कहेसि कोप गृह जाहु
काज सँवारहु सजग सब सहसा जनि पतियाहु २२
कुबरिहिं रानि प्रानप्रिय जानी। बार बार बड़ि बुद्धि बखानी
तोहिं सम हित न मोर संसारा। बहे जात कर भइसि अधारा
जो विधि पुरव मनोरथ काली। करौं तोहिं चख पूतरि आली
बहु विधि चेरिहिं आदर देई। कोप भवन गवनी कैकेई

बिषतिबीज बरषा ऋतु चेरी। भुइँ भइ कुमति कैकयी केरी
पाइ कपट जल अंकुर जामा। बर दुइ दल दुख फल परिणामा
कोप समाज साज सजि सोई। राज करत तेहि कुमति बिगोई
राउ नगर कोलाहल होई। यह कुचाल कछु जान न कोई
दो० प्रमुदित पुर नर नारि सब साजि सुमंगल चार।
इक प्रबिसहिं इक निकसहिं भीर भूप दरबार २४
बाल सखा सुनि हिय हरषाहीं। मिलि दस पाँच राम पहँ जाहीं
प्रभु आदरहिं प्रेम पहिचानी। पूछहिं कुसल खेम मृदु बानी
फिरहिं भवन प्रभु आयसु पाई। करत परस्पर राम बड़ाई
को रघुबीर सरिस संसारा। शील सनेह निबाहन हारा
जेहि जेहि योनि कर्म्म बस भ्रमहीं। तहँ तहँ ईश देहिं यह हमहीं
सेवक हम स्वामी सिय नाहू। होउ नाथ यह ओर निबाहू
अस अभिलाष नगर सब काहू। कैकय सुता हृदय अति दाहू
को न कुसंगति पाइ नसाई। रहै न नीच मते गरुआई.
दो० साँझ समय सानन्द नृप गये कैकयी गेह।
गवन निठुरता निपट किय जनु धरि देह सनेह २५
कोप भवन सुनि सकुचे राऊ। भय बस अगुमन परै न पाऊ॥

सुरपति बसै बाहु बल जाके। नरपति सकल रुखत ताके
सो सुनि तिय रिस गयउ सुखाई। देखहु काम प्रताप बड़ाई।
सूल कुलिस असि अंगवनिहारे। ते रति नाथ सुमन शर मारे
सभय नरेश प्रिया पहँ गयऊ। देखि दशा दुख दारुण भयऊ
भूमि शयन पट मोट पुराना। दिये डारि तनु भूषण नाना
कुमतिहि कस कुरूपता फावी। अनअहिवात शोच जनु भावी
जाइ निकट नृप कह मृदु बानी। प्राण प्रिया केहि हेतु रिसानी

छं० केहि हेतु रानि रिसानि परसत पाणि पतिहि निवारई।
मानहुं सरोष भुअंग भामिनि बिषम भाँति निहारई॥
दुइ वासना रसना दशन वर मर्म्म ठाहर देखई।
तुलसी नृपति भवितव्यता वश काम कौतुक लेखई॥

सो० बार बार कह राव सुमुखि सुलोचनि पिकबयनि।
कारण मोहिं सुनाव गजगामिनि निज कोप कर॥

अनहित तोर प्रिया केहि कीन्हा। केहि दुइ शिर केहि यम चह लीन्हा
कहु केहि रंकहि करौं नरेशू। कहु केहि नृपहि निकासौं देशू
सकौं तोर अरि अमरहु मारी। कहा कीट बपुरे नर नारी
जानसि मोर सुभाव बरोरू। तव सुख मम दृग चन्द चकोरू

प्रिया प्राण सुत सर्व्वस मोरे। परिजन प्रजा सकल बस तोरे
जो कछु कहौं कपट करि तोहीं। भामिनि रामशपथ शत मोहीं
बिहँसि माँगु मन भावति बाता। भूषण साजु मनोहर गाता
घरी कुघरी समुझि जिय देखू। बेगि प्रिया परिहरहु कुबेखू
दो० यह सुनि मन गुनि शपथ बड़ि बिहँसि उठी मति मन्द
भूषण साजित बिलोकि मृग मनहुँ किरातिनि फन्द २६
पुनि कह राउ सुहृद जिय जानी। प्रेम पुलकि मृदु मंजुल बानी॰
भामिनि भयउ तोर मन भावा। घर घर नगर अनन्द बधावा
रामहिं देउँ काल्हि युवराजू। सजहु सुलोचनि मंगल साजू
दलकि उठी सुनि बचन कठोरा। जनु छुइ गयउ पाक बर तोरा
ऐसी पीर बिहँसि उर गोई। चोर नारि जिमि प्रकट न रोई
लखी न भूप कपट चतुराई। कोटि कुटिल गुरा गुरु पढ़ाई
यद्यपि नीति निपुरा नर नाहू। नारि चरित जल निधि अवगाहू
कपट सनेह बढ़ाइ बहोरी। बोली बिहँसि नयन मुख मोरी
दो० माँगु माँगु पै कहहु पिय कबहूं देहु न लेहु।
देन कहेउ बरदान दुइ तेउ पावत सन्देहु २७
जानेउ मर्म्म राउ हँसि कहई। तुमहिं कोहाब परम प्रिय अहई

थातीराखि न माँगेउ काऊ। बिसरिगयो मम भोर सुभाऊ
मूँदहु दोय हमहिं जनि देहू। दुइ के चारि माँगि किन लेहू
रघुकुल रीति सदा चलि आई। प्राण जाय बरु वचन न जाई
नहिं असत्य सम पातक पुंजा। गिरि सम होहिं कि कोटिक गुंजा
सत्य मूल सब सुकृत सुहाई। वेद पुराण विदित मुनि गाई
तेहि पर राम शपथ करि आई। सुकृत सनेह अवधि रघुराई
बात दृढ़ाय कुमति हँसि बोली। कुमति विहंग कुलह जनु खोली
दो० भूप मनोरथ सुभग वन सुख सुविहंग समाज।
भिल्लिनि जनु छाँड़न चहति वचन भयंकर बाज २८
सुनहु प्राणपति भावत जीका। देहु एक वर भरतहिं टीका॥
दूसर वर माँगौं कर जोरे। नाथ मनोरथ पुरवहु मोरे॥
तापस वेष विशेष उदासी। चौदह वर्ष राम वनवासी
सुनितिय वचन भूप उर शोकू। शशिकर छुवत विकल जिमि कोकू
गयेसहमि कछु कहि नहिं आवा। जनु सचान वन झपटेउ लावा
विवरण भयउ निपट नरपालू। दामिनि हनेउ मनहुं तरु तालू
माथे हाथ मूँदि दोउ लोचन। तनु धरि शोच लाग जनु शोचन
मोर मनोरथ सुर तरु फूला। फरत करिरा जनु हतेउ समूला

अवध उजारि कीन्ह कैकेई। दीन्हेसि अचल विपति कै नेई
दो० कवने अवसर का भयउ गयउँ नारि विश्वास।
योग सिद्ध फल समय जिमि यतिहि अविद्या नास २९
इहि बिधि राउ मनहिं मन दहई। देखि कुभाँति कुमति अस कहई
भरत कि राउर पूत न होहीं। आनेहु मोल बेसाहि कि मोहीं।
जो सुनि सर असम लाग तुम्हारे। काहे न बोलहु बचन सँभारे
देहु उतर अस कहहु कि नाहीं। सत्यसन्धु तुम रघुकुल माहीं
देन कहेहु बर अब जनि देहू। तजहु सत्य जग अपयश लेहू
सत्य सराहि कहेउ बर देना। जानेहु लेइहि माँगि चबेना
सिबि दधीचि बलि जो कछु भाखा। तनु धन तजेउ बचन पन राखा
अति कटु बचन कहति कैकेई। मानहुँ लोन जरे पर देई॥
दो० धर्म धुरन्धर धीर धरि नयन उघारे राउ।
सिर धुनि लीन्ह उसास अति मारेसि मोहि कुठाउ ३०
आगे दीख बरति रिस भारी। मनहुँ रोष तरवारि उघारी
मूढ़ कुबुद्धि धार निठुराई। धरि कुबरी जनु सान बनाई
लखेउ महीप कराल कठोरा। सत्य कि जीवन लेइहि मोरा
बोले राउ कठिन करि छाती। बानी बिनय न तजहि सोहाती

मोरे भरत राम दोउ आँखी। सत्य कहौं करि शंकर साखी
प्रियावचन कस कहसि कुभाँती। रीति प्रतीति प्रीति करि घाती
अवशि दूत मैं पठउब भ्राता। ऐहैं बेगि सुनत दोउ भ्राता
सुदिन साधि सब साज सजाई। देहौं भरतहिं राज बजाई।

दो० लोभ न रामहिं राजकर बहुत भरत पर प्रीति।
मैं बड़ छोट विचार करि करत रहेउँ नृप नीति ३१

राम शपथ शत कहौं सुभाऊ। राम मातु मोहिं कहा न काऊ
मैं सब कीन्ह तोहिं बिनु पूँछे। ताते परे मनोरथ छूँछे.
रिस परिहरु अब मंगल साजू। कछु दिन गये भरत युवराजू
एकहि बात मोहिं दुख लागा। वर दूसर असमञ्जस माँगा
अबहूँ हृदय दहत तेहि आँचा। रिस परिहास कि साँचहु साँचा
कहु तजि रोष राम अपराधू। सब कोउ कहत राम सुठि साधू
तुहूं सराहसि करसि सनेहू। अब सुनि मोहिं परम सन्देहू
जासु सुभाव अरिहु अनुकूला। सो किमि करहिं मातु प्रतिकूला

दो० प्रिया हास रिस परिहरहु माँगु विचारि विवेक।
जेहि देखौं अब नयन भरि भरत राज अभिषेक ३२

जिये मीन बरु बारि विहीना। मणि बिनु फनिक जिये दुख दीना

कहौं सुभाव न छलमन माहीं। जीवन मोर राम बिनु नाहीं
समुझि देखु तैं प्रिया प्रबीना। जीवन राम दरश आधीना
सुनि मृदु बचन कुमति अति जरई। मनहुँ अनल आहुति घृत परई
कहहु करहु किन कोटि उपाया। इहाँ न लागहि राउरि माया
देहु कि लेहु अजस करि नाहीं। मोहिं न बहु परपञ्च सोहाहीं
राम साधु तुम साधु सुजाना। राममातु भलि तुम पहिचाना
जस कौशला मोर भलताका। तस फल देहुँ उन्हहिं करि शाका

दो० होत प्रात मुनि बेष धरि जौन राम बन जाहिं।
मोर मरण राउर अजश नृप समुझहु मन माहिं ३३

अस कहि कुटिल भई उठि ठाढ़ी। मानहुँ रोष तरंगिनि बाढ़ी।
पाप पहार प्रगट भइ सोई। भरी क्रोध जल जाइ न जोई
दोउ वर कूल कठिन हठ धारा। भँवर कूबरी वचन प्रचारा
ढाहति भूप रूप तरु मूला। चली विपति वारिधि अनुकूला
लखी नरेश बात सब साँची। तिय मिस मीच शीश पर नाची
गहि पद विनय कीन्ह बैठारी। जनि दिनकर कुल होसि कुठारी
मांगु माथ अबहीं देउँ तोही। राम बिरह जनि मारसि मोहीं
राखु राम कहँ जेहि तेहि भाँती। नाहित जरिहि जन्म भरि छाती

दो० देखी व्याधि असाध्य नृप परेउ धरणि धुनि माथ।
कहत परम आरत वचन राम राम रघुनाथ ३४.

व्याकुल राउ शिथिल सब गाता। करिणि कल्पतरु मनहुं निपाता
कराठ सूख मुख आव न बानी। जिमि पाठीन दीन बिनु पानी
पुनि कह कटु कठोर कैकेई। मर्म पाछि जनु माहुर देई।
जो अन्तहु अस करतब रहेऊ। मांगु मांगु केहि केबल कहेऊ
दुइ कि होइ यक समय भुआलू। हंसब ठठाइ फुलाउब गालू
दानि कहाउब अरु कृपणाई। चाहिय क्षेम कुशल रौताई।
छाँड़हु बचन कि धीरज धरहू। जनि अबला इव करुणा करहू
तनु तिय तनय धाम धन धरणी। सत्यसिंधु कहँ तृण सम वरणी
दो० मर्म्म वचन सुनि राउ कह कहु कुछ दोष न हिं तोर।
लागेउ तोहिं पिशाच जनु काल कहावत मोर ३५

चहत न भरत भूप पद भोरे। विधि वश कुमति बसी उर तोरे
सो सब मोर पाप परिणामू। कहु न बसाइ भयो विधि बामू
सुबस बसिहि फिरि अवध सुहाई। सब गुण धाम राम प्रभुताई
करिहैं भाइ सकल सेवकाई। होइ है तिहुं पुर राम बड़ाई
तोर कलंक मोर पछिताऊ। मुयेहु न मिटिहि न जाइहि काऊ

अब तोहिं नीक लाग करु सोई। लोचन ओट बैठु मुख गोई
जौलौं जियौं कहौं कर जोरी। तौलौं जनि कछु कहसि बहोरी
फिरि पछितैहसि अन्त अभागी। मारसि गाय नाहरू लागी
दो० परेउ राउ कहि कोटि बिधि काहे करसि निदान।
कपट सयानि न कहति कछु जागति मनहुं मसान३६
राम राम रटि बिकल भुआलू। जनु बिनु पंख बिहंग बिहालू
हृदय मनाव भोर जनि होई। रामहिं जाइ कहै जनि कोई
उदय करहु जनि रबि कुल गूरा। अवध बिलोकि शूल होइ ऊरा
भूप प्रीति कैकयि निठुराई। उभय अवधि बिधि रची बनाई
बिलपति नृपहिं भयउ भिनुसारा। बीना बेनु शंख धुनि द्वारा
पढ़हिं भाट गुन गावहिं गायक। सुनत नृपहि लागहिं जनु शायक
मंगल सकल सुहाय न कैसे। सहगामिनी बिभूषन जैसे
तेहि निशि नींद परी नहिं काहू। राम दरश लालसा उछाहू।
दो० द्वार भीर सेवक सचिव कहहिं उदय रबि देखि।
जागे अजहुं न अवधपति कारण कवन बिशेखि३७
पिछले पहर भूप नित जागा। आजु हमहिं बड़ अचरज लागा
जाहु सुमन्त्त जगावहु जाई। कीजिय काज रजायसु पाई

गे सुमन्त्त नृप मन्दिर पाहीं। देखि भयानक जात डेराहीं
धाइ खाइ जनु जात न हेरा। मानहुं बिपति बिषाद बसेरा
पूछत कोउ न उतर कछु देई। गेजेहि भवन भूप कैकेई
कहि जय जीव बैठ सिर नाई। देखि भूप गति गयउ सुखाई
शोक बिकल विवरण महि परेऊ। मानहुं कमल मूल परिहरेऊ
सचिव सभीत सकै नहिं पूँछी। बोली असुभ भरी शुभ छूँछी
दो० परी न राजहि नींद निशि सर्म्म जानु जगदीश।
राम राम रटि भोर किय हेतु न कहेउ महीश ३८
आनहु रामहिं बेगि बुलाई। समाचार तब पूँछहु आई
चल्यो सुमन्त्त राउ रुख जानी। लखी कुचाल कीन्ह कछु रानी
शोच विवश महि परै न पाऊ। रामहिं बोलि कहहिं का राऊ
उर धरि धीरज गयउ दुआरे। पूँछहिं सकल देखि मन मारे
समाधान मन करि सबही का। गये जहां दिनकर कुल टीका
राम सुमन्त्तहि आवत देखा। आदर कीन्ह पिता सम लेखा
निरखि वदन कहि भूप रजाई। रघुकुल दीपहिं चले लिवाई
राम कुभांति सचिव सँग जाहीं। देखि लोग जहँ तहँ बिलखाहीं
दो० आइ दीख रघुबंश मणि नरपति निपट कुसाज।

सहमि परेउ बश सिंहिनिहिं मनहुं बृद्ध गजराज ३९
सूखे अधर जरे सब अंगा। मनहुं दीन मणि हीन भुअंगा
सरुष समीप देखि कैकेई। मानहुं मृत्यु घरी गनि देई।
करुणामय रघुनाथ सुभाऊ। प्रथम दीख दुख सुना न काऊ
तदपि धीर धरि समय विचारी। पूँछी मधुर वचन महतारी
मोहिं कहु मातु तात दुख कारण। करिय यत्न जेहि होइ निवारण
सुनहु राम सब कारण एहू। राजहिं तुम पर बहुत सनेहू
देन कहेउ मोहिं दुइ वरदाना। मांगेउँ जो कछु मोहिं सुहाना
सो सुनि भयउ भूप उर शोचू। छाँड़ि न सकहिं तुम्हार सकोचू
दो० सुत सनेह इत वचन उत संकट परेउ नरेश।
सकहु तो आयसु शीश धरि मेटहु कठिन कलेश ४०
निधरक बैठि कहति कटु बानी। सुनत कठिनता अति अकुलानी
जीभ कमान वचन शर नाना। मनहुं भूप मृदु लक्ष समाना
जनु कठोर पन धरे शरीरा। सीख धनुष विद्या वर वीरा
सब प्रसंग रघुपतिहिं सुनाई। बैठी जनु तनु धरि निठुराई
मन मुसुकाहिं भानुकुल भानू। राम सहज आनन्द निधानू
बोले वचन विगत सब दूषण। मृदु मंजुल जनु बाग विभूषण

सुनु जननी सोइ सुतु बड़भागी। जो पितु मातु बचन अनुरागी
तनय मातु पितु पोषनिहारा। दुर्ल्लभ जननी यहि संसारा
दो० मुनिगण मिलन विशेष बन सबहि भाँति भल मोर।
तेहि महँ पितु आयसु बहुरि सम्मत जननी तोर ४१.
भरत प्रण प्रिय पावहिं राजू। विधि सब विधि मोहिं सम्मुख आजू
जो न जाउँ बन ऐसेहु काजा। प्रथम गनिय मोहिं मूढ़ समाजा
सेव अरण्ड कल्पतरु त्यागी। परिहरि अमिय लेहिं विष माँगी
तेउ न पाइ अस समय चुकाहीं। देखि विचारि मातु मन माहीं
अम्ब एक दुख मोहिं विशेखी। निपट विकल नर नायक देखी
थोरिहि बात पितहिं दुख भारी। होति प्रतीति न मोहिं महतारी
राउ धीर गुण उदधि अगाधू। भा मोते कछु बड़ अपराधू
याते मोहिं न कहत कछु राऊ। मोर शपथ तोहिं कहु सति भाऊ
दो० सहज सरल रघुवर बचन कुमति कुटिल करि जान।
चलै जोंक जिमि बक्र गति यद्यपि सलिल समान ४२
रहसी रानि राम रुख पाई। बोली कपट सनेह जनाई
शपथ तुम्हारि भरत कै आना। हेतु न दूसर मैं कछु जाना
तुम अपराध योग नहिं ताता। जननी जनक बन्धु सुख दाता

रामसत्य तुम जो कछु कहहू । तुम पितु मातु वचन रत अहहू
पितहिं बुझाइ कहहु बलि सोई । चौथे पन अघ अयश न होई
तुम सम सुवन सुकृत जेहि दीन्हे। उचित न तासु निरादर कीन्हे.
लागहिं कुमुखि वचन शुभ कैसे। मगह गयादिक तीरथ जैसे
रामहिं मातु वचन सब भाये । जिमि सुरसरि गत सलिल सुहाये
दो० गै मूर्च्छा रामहिं सुमिरि नृप फिरि करवट लीन्ह।
सचिव राम आगमन कहि विनय समय सम कीन्ह ४३
जब नृप अकनि राम पगु धारे। धरि धीरज तब नयन उघारे
सचिव सँभारि राउ बैठारे। चरण परत नृप राम निहारे
लिये सनेह विकल उर लाई। गइ मनि फनिक बहुरि जिमि पाई
रामहिं चितै रहे नर नाहू । चला विलोचन वारि प्रवाहू
शोक विकल कछु कहै न पारा। हृदय लगावत बारहिं बारा
विधिहि मनाउ राउ मन माहीं। जेहि रघुनाथ न कानन जाहीं
सुमिरि महेशहिं कहहिं निहोरी। विनती सुनहु सदा शिव मोरी
आशुतोष तुम औढर दानी। आरति हरहु दीन जन जानी
दो० तुम प्रेरक सब के हृदय सो मति रामहिं देहु।
वचन मोर तजि रहहिं घर परिहरि शील सनेहु ४४

अयश होउ बरु सुयश नशाऊं। नरक परौं बरु सुर पुर जाऊं
सब दुख दुसह सहावहु मोहीं। लोचन ओट राम जनि होहीं
अस मन गुनत राउ नहिं बोला। पीपर पात सरस मन डोला
रघुपति पितहिं प्रेम वश जानी। पुनि कछु कहेउ मातु अनुमानी
देश काल अवसर अनुसारी। बोले वचन विनीत विचारी
तात कहौं कछु करौं ढिठाई। अनुचित क्षमब जानि लरिकाई
अति लघु बात लागि दुख पावा। काहुं न कहि मोहिं प्रथम जनावा
देखि गुसाईंहिं पूंछेउं माता। सुनि प्रसंग भा शीतल गाता
दो० मंगल समय सनेह वश शोच परिहरिय तात।
आयसु देइय हरषि हिय कहि पुलके प्रभु गात ४५
धन्य जन्म जगतीतल तासू। पितहिं प्रबोध चरित सुनि जासू
चारि पदारथ करतल ताके। प्रिय पितु मातु प्रान सम जाके
आयसु पालि जन्म फल पाई। ऐहौं बेगिहि होउ रजाई
बिदा मातु सन आवौं मांगी। चलिहौं बनहिं बहुरि पग लागी
अस कहि राम गवन तब कीन्हा। भूप शोक वश उतर न दीन्हा
नगर व्यापि गइ बात सुतीछी। छुअत चढ़ी जनु सब तनु बीछी
सुनि भये बिकल सकल नर नारी। बेलि बिटप जनु लागि दवारी

जो जहँ सुनै धुनै शिर सोई। बड़ विषाद नहिं धीरज होई
दो० सुरखरखहिं लोचन स्रवहिं शोक न हृदय समाइ।
मानहुं करुणा रस कटक उतरा अवधवजाइ ४६
भलि बनाइ विधि बात बिगारी। जहँ तहँ देहिं केकयिहि गारी
इहि पापिनिहिं बूझि का परेऊ। छाय भवन पर पावक धरेऊ
निज कर नयन काढ़ि चह दीखा। डारि सुधा विष चाहत चीखा
कुटिल कठोर कुबुद्धि अभागी। भइ रघुवंश वेणु वन आगी
पल्लव बैठि पेड़ इहिं काटा। सुखमहँ शोक ठाट इहिं ठाटा
सदा राम इहि प्राणा समाना। कारण कवन कुटिल पन ठाना
सत्य कहहिं कवि नारि सुभाऊ। सबविधि अगम अगाध दुराऊ
निज प्रतिबिम्ब मुकुर गहि जाई। जानि न जाइ नारि गति भाई
दो० का नहिं पावक जरि सकै का न समुद्र समाइ।
का न करै अबला प्रबल केहि जग काल न खाइ ४७
का सुनाइ विधि काह सुनावा। का देखाइ चह काह देखावा
एक कहहिं भल भूप न कीन्हा। वर विचारि नहिं कुमतिहिं दीन्हा
जो हठि भयउ सकल दुख भाजन। अबला विवश ज्ञान गुण गाजन
एक धर्म्म परमिति पहिचाने। नृपहिं दोष नहिं देहिं सयाने

शिबिदधीचिहरिचन्दकहानी। एक एकसनकहहिंबखानी
एक भरतकरसम्मतकहहीं। एकउदासभावसुनिरहहीं.
कानमूँदिकररदगहिजीहा। एककहहिंयहबातअलीहा
सुकृतजाइअसकहतुम्हारे। भरतरामकहँप्राणापियारे
दो० चन्द्रस्रवैबरुअनलकणासुधाहोइविषतूल।
सपनेहुँकबहुँनकरहिंकछुभरतरामप्रतिकूल४८
एकविधातहिंदूषणादेहीं। सुधादिखाइदीन्हविषजेहीं.
खरभरनगरशोचसबकाहू। दुसहदाहउरमिटाउछाहू
विप्रबधूकुलमानजठेरी। जेप्रियपरमकेकयीकेरी
लगींदेनशिखशीलसराही। वचनबाणासमलागहिंताही
भरतनप्रियमोहिंरामसमाना। सदाकहहुयहसबजगजाना
करहुरामपरसहजसनेहू। केहिअपराधआजुबनदेहू
कबहुंनकीन्हसवतिआरेशू। प्रीतिप्रतीतिजानसबदेशू
कौशल्याअबकाहबिगारा। तुमजेहिलागिबज्रपुरपारा
दो० सीयकिपियसँगपरिहरिहिलषणाकिरहिहहिंधाम
भरतकिभूजवराजपुरनृपकिजियहिंबिनुराम४९
असविचारिजियछाँड़हुकोहू। शोककलंककोटजनिहोहू

भरतहि अवसि देहु युवराजू। कानन काह राम कर काजू
नाहिंन राम राज के भूखे। धर्म धुरीना विषय रस रूखे
गुरु गृह बसहिं राम तजि गेहू। नृप मन अस वर दूसर लेहू।
राम सरिस सुत कानन योगू। काह कहहिं सुनि तुम कहँ लोगू
जो न मानि हौ कहे हमारे। नहिं लागिहि कछु हाथ तुम्हारे
जो परिहास कीन्ह कछु होई। तौ कहि प्रगट जनावहु सोई
उठहु वेगि सोइ करहु उपाई। जेहि बिधि शोक कलंक नशाई
छं० जेहि भाँति शोक कलंक जाय उपाय करि कुल पालहू
हठि फेरु रामहिं जात बन जनि बात दूसरि चालहू
जिमि भानु बिनु दिन प्राण बिनु तनु चन्द बिनु जिमि यामिनी
तिमि अवध तुलसीदास प्रभु बिनु समुझि धौं मन भामिनी २
सो० सरिवन्ह सिरवावन दीन्ह सुनत मधुर परिणाम हित
तेहि कछु कानन कीन्ह कुटिल प्रबोधी कूबरी २
उतर न देइ दुसह रुख रूखी। मृगिहि चितव जनु बाघिनि भूखी
व्याधि असाधि जानि तिन त्यागी। चली कहति मति मन्द अभागी
राज करत इहि दैव बिगोई। कीन्हेसि अस जस करै न कोई
इहि बिधि बिलपहिं पुर नर नारी। देहि कुचालिहि कोटिक गारी

जरहिं विषम ज्वर लेहिं उसासा। कवन राम बिनु जीवन आसा
बिकल बियोग प्रजा आकुलानी। जिमि जलचर गन सूखत पानी
अति बिषाद बस लोग लुगाई। गये मातु पहँ राम गुसाई.
मुख प्रसन्न चित चौगुन चाऊ। इहै सोच जनि राखहिं राऊ॥

दो० नव गयन्द रघुबंस मनि राज अलान समान।
छूट जानि बन गवन सुनि उर आनंद अधिकान ५०

रघुकुल तिलक जोरि दोउ हाथा। मुदित मातु पद नायउ माथा
दीन्ह असीस लाइ उर लीन्हे। भूषन बसन निछावरि कीन्हे
बार बार मुख चूमति माता। नयन नेह जल पुलकित गाता
गोद राखि पुनि हृदय लगाई। स्रवत प्रेम रस पयद सुहाई.
प्रेम प्रमोद न कछु कहि जाई। रंक धनद पदवी जनु पाई
सादर सुन्दर बदन निहारी। बोली मधुर बचन महतारी
कहहु तात जननी बलिहारी। कबहिं लगन मुद मंगलकारी
सुकृत सील सुख सीव सुहाई। जन्म लाभ लहि अवध अघाई
दो० जेहि चाहत नर नारि सब अति आरत एहि भाँति।
जिमि चातकि चातक तृषित बृष्टि सरद ऋतु स्वाति ५१

तात जाउँ बलि बेगि नहाहू। जो मन भाव मधुर कछु खाहू

पितु समीप तब जायहु भैया। भइ बड़िबार जाइ बलि मैया
मातु बचन सुनि अति अनुकूला। जनु सनेह सुर तरु के फूला
सुख मकरन्द भरे श्री मूला। निरखि राम मन भँवर न भूला
धर्म्म धुरीना धर्म्म गति जानी। कहेउ मातु सन अति मृदु बानी
पिता दीन्ह मोहिं कानन राजू। जहँ सब भाँति मोर बड़ काजू
आयसु देहु मुदित मन माता। जेहिं मुद मंगल कानन जाता
जनि सनेह बस डरपसि भोरे। आनँद मातु अनुग्रह तोरे
दो० बर्ष चारि दस बिपिन बसि करि पितु बचन प्रमान।
आय पाय पुनि देखिहौं मन जनि करसि मलान ५२
बचन बिनीत मधुर रघुबर के। सर सम लगे मातु उर करके
सहमि सूखि सुनि सीतल बानी। जिमि जवास पर पावस पानी
कहि न जाइ कछु हृदय बिषादू। जनु सहमेउ करि केहरि नादू
नयन सलिल तनु थर हर काँपी। माँजा मनहुँ मीन कहँ ब्यापी
धरि धीरज सुत बदन निहारी। गद्गद बचन कहति महतारी
तात पितहि तुम प्राना पियारे। देखि मुदित नित चरित तुम्हारे
राज देन कहँ सुभ दिन साधा। कहेउ जान बन केहि अपराधा
तात सुनावहु मोहिं निदानू। को दिनकर कुल भयउ कृसानू

दो० निरखि रामरुख सचिवसुत कारण कहेउ बुझाइ।
सुनि प्रसंग रहि मूक गति दशा वरणि नहिं जाइ ५३.

राखिन सकहिं न कहि सक जाहू। दुहूं भाँति उर दारुण दाहू।
लिखत सुधाकर लिखि गा राहू। विधि गति बाम सदा सब काहू
धर्म्म सनेह उभय मति घेरी। भइ गति साँप छछूँदरि केरी
राखौं सुतहि होइ अनुरोधू। धर्म्म जाइ अरु बन्धु विरोधू.
कहौं जान वन तौ बड़ि हानी। संकट शोच विकल भइ रानी
बहुरि समुझि तिय धर्म सयानी। राम भरत दोउ सुत सम जानी
सरल सुभाव राम महतारी। बोली वचन धीर धरि भारी
तात जाउँ बलि कीन्हेउँ नीका। पितु आयसु सब धर्म क टीका
दो० राज देन कहि दीन्ह वन मोहिं न शोच दुख लेश।
तुम विनु भरतहिं भूपतिहिं प्रजहिं प्रचण्ड कलेश ५४

जो केवल पितु आयसु ताता। तौ जनि जाहु जानि बलि माता
जो पितु मातु कहै वन जाना। तौ कानन शत अवध समाना
पितु वन देव मातु वन देवी। खग मृग चरण सरोरुह सेवी
अन्तहु उचित नृपहि वनवासू। वय विलोकि हिय होत हरासू.
बड़ भागी वन अवध अभागी। जो रघुबंशतिलक तुम त्यागी

जो सुत कहौं संग मोहिं लेहू। तुम्हरे हृदय होइ सन्देहू
पुत्र परम प्रिय तुम सबही के। प्राना प्राना के जीवन जी के
ते तुम कहहु मातु वन जाऊं। मैं सुनि वचन बैठि पछिताऊं
दो० यह विचारि नहिं करउँ हठ झूंठ सनेह बढ़ाइ।
मानि मातु के नात बलि सुरति बिसारि जनि जाइ ५५
देव पितर सब तुमहिं गुसाईं। रखहु पलक नयन की नाईं
अवधि अम्बु प्रिय परिजन मीना। तुम करुणाकर धर्म्म धुरीना
अस बिचारि सोइ करहु उपाई। सबहिं जियत जेहि भेंटहु आई.
जाहु सुखेरा बनहिं बलि जाऊं। करि अनाथ जन परिजन गाऊं
सब कर आजु सुकृत फल बीता। भये कराल काल बिपरीता
बहु विधि बिलपि चरन लपटानी। परम अभागिनि आपुहि जानी
दारुण दुसह दाह उर व्यापा। बरणि न जाय बिलाप कलापा
राम उठाय मातु उर लावा। कहि मृदु वचन बहुत समुझावा
दो० समाचार तेहि समय सुनि सीय उठी अकुलाइ।
जाइ सासु पग कमल युग बन्दि बैठि सिर नाइ ५६
दीन्ह असीस सासु मृदु बानी। अति सुकुमारि देखि अकुलानी
बैठि नमित मुख सोचति सीता। रूप राशि पति प्रेम पुनीता

चलन चहत बन जीवन नाथा। कवन सुकृत सनहोइहि साथा
की तनु प्राण कि केवल प्राना। बिधि करतब कछु जात न जाना
चारु चरण नख लेखति धरणी। नूपुर मुखर मधुर कबि बरणी
मनहुं प्रेम बस बिनती करहीं। हमहिं सीय पद जनि परिहरहीं
मञ्जु बिलोचन मोचति बारी। बोली देखि राम महतारी.
तात सुनहुं सिय अति सुकुमारी। सासु श्वशुर परिजनहिं पियारी
दो० पिता जनक भूपाल मणि श्वशुर भानुकुल भानु।
पति रबिकुल कैरव बिपिन बिधु गुणरूप निधानु ५७
मैं पुनि पुत्र बधू प्रिय पाई। रूप राशि गुण शील सुहाई
नयन पुतरि इव प्रीति बढ़ाई। राखेउं प्राण जानकिहि लाई
कल्पबेलि जिमि बहु विधि लाली। सींचि सनेह सलिल प्रति पाली
फूलत फलत भये विधि बामा। जानि न जाइ काह परिणामा
पलँग पीठि तजि गोद हिंडोरा। सिय न दीन पगु अवनि कठोरा
जिवन मूरि जिमि जुगवति रहेऊं। दीप बाति नहिं टारन कहेऊं
सोसिय चलन चहति बन साथा। आयसु कहा होइ रघुनाथा
चन्द्र किरण रस रसिक चकोरी। रवि रुख नयन सकै किमि जोरी
दो० करि केहरि निशिचर चरहिं दुष्ट जन्तु वन भूरि।

बियबाटिकाकपिसोहसुतसुभगसजीवनमूरि ५८
बनहितकोलकिरातकिशोरी। रचीविरंचिविषयरसभोरी
पाहनकृमिजिमिकठिनसुभाऊ। तिनहिंकलेशनकाननकाऊ
कै तापसतियकानन योगू। जिनतपहेतुतजा सबभोगू
सियवनबसिहितातकेहिभांती। चित्रलिखितकपिदेखिडेराती
सुरसरिसुभगवनजवनचारी। डाबरयोगकिहंसकुमारी
असबिचारिजसआयसुहोई। मैंशिसदेउँजानकिहिसोई
जोसियभवनरहैकहअम्बा। मोकहँहोइ पाराअवलम्बा
सुनिरघुबीरमातुप्रियबानी। शीलसनेहसुधाजनुसानी
दो० कहिप्रियवचनविवेकमयकीन्हमातुपरितोष।
लगेप्रबोधनजानकिहिप्रगटिविपिनगुणदोष ५९
मातुसमीपकहतसकुचाहीं। बोलेसमयसमुझिमनमाहीं
राजकुमारिसिखावनसुनहू। आनभांतिजियजनिकछुगुनहू
आपनमोरनीकजोचहहू। वचनहमारमानिघररहहू
आयसुमोरसासुसेवकाई। सबविधिभामिनिभवनभलाई
एहितेअधिकधर्मनहिंदूजा। सादरसासुश्वशुरपदपूजा
जबजबमातुकरिहिसुधिमोरी। होइहिप्रेमबिकलमतिभोरी

तब तबु मकहि कथा पुरानी। सुन्दरि समुझाय हु मृदुबानी
कहौं सुभाव शपथ शत मोहीं। सुमुखि मातु हित राखौं तोहीं
दो० गुरु श्रुति सम्मत धर्म्म फल पाइय बिनहिं कलेश।
हठ वश सब संकट सहे गालव नहुष नरेश ६०
मैं पुनि करि प्रमाण पितु बानी। बेगि फिरब सुनु सुमुखि सयानी
दिवस जात नहिं लागिहि बारा। सुन्दरि सिख बचन सुनहु हमारा
जो हठ करहु प्रेम बश बामा। तौ तुम दुख पाउब परिणामा
कानन कठिन भयंकर भारी। घोर घाम हिम वारि बयारी.
कुश कण्टक मग कंकर नाना। चलब पयादेहि बिनु पदत्राना
चरण कमल मृदु मञ्जु तुम्हारे। मारग अगम भूमिधर भारे.
कन्दर खोह नदी नद नारे। अगम अगाध न जाहिं निहारे
भालु बाघ बृक केहरि नागा। करहिं नाद सुनि धीरज भागा
दो० भूमि शयन बल्कल बसन अशन कन्द फल मूल।
तेकि सदा सब दिन मिलहिं समय समय अनुकूल ६१
नर अहार रजनीचर करहीं। कपट वेष विधि कोटिन धरहीं
लागै अति पहार कर पानी। विपिन विपति नहिं जात बखानी
व्याल कराल विहँग बन घोरा। निशिचर निकर नारि नर चोरा

डरपहिं धीर गहन सुधि आये। मृगलोचनि तुम भीरु सुभाये
हंसगवनि तुम नहिं वन योगू। मुनि अपयश देहहिं मोहिं लोगू
मानस सलिल सुधा प्रतिपाली। जियै कि लवण पयोधि मराली
नव रसाल वन विहरन शीला। सोह कि कोकिल विपिन करीला
रहहु भवन अस हृदय विचारी। चन्द्रवदनि दुख कानन भारी
दो० सहज सुहृद गुरु स्वामि सिख जो न करै हित मानि।
सो पछिताय अघाय उर अवशि होय हित हानि ६२
सुनि मृदु वचन मनोहर पीके। लोचन नलिन भरे जल सीके
शीतल सिख दाहक भइ कैसे। चकइहिं शरद चांदनी जैसे
उतर न आव बिकल वैदेही। तजन चहत मोहिं परम सनेही
वरवस रोंकि विलोचन वारी। धरि धीरज उर अवनिकुमारी
लागि सासु पद कह कर जोरी। क्षमब देवि बड़ि अविनय मोरी
दीन्ह प्राण पति मोहिं सिख सोई। जेहि विधि मोर परम हित होई
मैं पुनि समुझि दीख मन माहीं। पिय वियोग सम दुख जग नाहीं
दो० प्राणनाथ करुणायतन सुन्दर सुखद सुजान।
तुम बिनु रघुकुल कुमुद विधु सुरपुर नरक समान ६३
मातु पिता भगिनी प्रिय भाई। प्रिय परिवार सुहृद समुदाई

सासुश्वशुरगुरुसुजनसहाई। सुतसुन्दर सुशील सुखदाई
जहँलगि नाथनेह अरु नाते। पियबिनुतियहि तरनिहुतेताते
तनुधनधामधरणिपुरराजू। पतिबिहीनसबशोकसमाजू
भोगरोग समभूषण भारू। यमयातना सरिस संसारू
प्राणनाथतुमबिनुजगमाहीं। मोकहँसुखदकतहुँकोउनाहीं
जियबिनुदेहनदीबिनुवारी। तैसेहिनाथपुरुषबिनुनारी
नाथसकलसुखसाथतुम्हारे। शरदविमलविधुवदननिहारे
दो० खगमृगपरिजननगरवनबलकलविमलदुकूल
नाथसाथसुरसदनसमपरणशाल सुखमूल ६४
वन देवी वन देव उदारा। करिहैंसासुश्वशुरसमसारा
कुशकिशलयसाथरीसुहाई। प्रभुसँग मंजु मनोज तुराई
कन्दमूलफलअमियअहारू। अवधसौधसुखसरिसपहारू
सराक्षराप्रभुपदकमलविलोकी। रहिहौंमुदितदिवसजिमिकोकी
वन दुख नाथ कहे बहुतेरे। भय विषाद परिताप घनेरे
प्रभुवियोगलवलेशसमाना। सबमिलिहोहिनकृपानिधाना
असजियजानिसुजानशिरोमनि। लेअयसंगमोहिछाँड़ियजनि.
बिनतीबहुतकरौं कारवामी। करुणामय उर अन्तरयामी

दो० राखिय अवध जो अवधि लगि रहत जो जानिय प्रान
दीन बन्धु सुन्दर सुखद शील सनेह निधान ९५

मोहिं मग चलत न होइहि हारी। छिन छिन चरन सरोज निहारी
सबहि भाँति पिय सेवा करिहौं। मारग जनित सकल श्रम हरिहौं
पाँय पखारि बैठि तरु छाहीं। करिहौं वायु मुदित मन माहीं
श्रम कण सहित श्याम तनु देखे। कह दुख समय प्राणपति पेखे
सम महि तृण तरु पल्लव डासी। पायँ पलोटिहि सब निशि दासी
बार बार मृदु मूरति जोही। लागिहि तात बयारि न मोही
को प्रभु संग मोहि चितवनिहारा। सिंहबधुहि जिमि शशक सियारा
मैं सुकुमारि नाथ बन योगू। तुमहिं उचित तप मोकहँ भोगू

दो० ऐसेहु वचन कठोर सुनि जो न हृदय बिलगान।
तौ प्रभु विषम वियोग दुख सहि हैं पामर प्रान ९६

अस कहि सीय विकल भइ भारी। वचन वियोग न सकी सँभारी
देखि दशा रघुपति जिय जाना। हठि राखे राखिहि नहिं प्राना
कहेउ कृपालु भानुकुल नाथा। परिहरि शोच चलहु बन साथा
नहिं विषाद कर अवसर आजू। बेगि करहु बन गमन समाजू
कहि प्रिय वचन प्रिय हि समुझाई। लगे मातु पद आशिष पाई

बेगि प्रजा दुख मेटहु आई । जननीनिठुरबिसरिजनिजाई
फिरिहिदशाविधिबहुरिकिमोरी। देखिहौं नयन मनोहर जोरी
सुदिन सुघरी तात कब होई । जननीजियतवदन बिधु जोई
दो० बहुरिबच्छकहि लालकहि रघुपति रघुवर तात।
कबहिंबुलाइलगाइउरहरषिनिरखिहौंगात ६७
लखि सनेह कातरि महतारी। वचन न आवविकल भइ भारी
राम प्रबोधकीन्ह विधिनाना। समय सनेह न जाइबखाना
तब जानकी सासुपगलागी। सुनिय माय मैं परम अभागी
सेवा समय दैव वन दीन्हा । मोरमनोरथ सुफल नकीन्हा
तजब क्षोभजनि छांडब छोहू । कर्मकठिन कछु दोष न मोहू
सुनिसियवचनसासुअकुलानी।दशाकवनविधिकहौंबखानी
बारहिंबार लाइ उर लीन्ही। धीरधीरजसिख आशिषदीन्ही
अचलहोउअहिवातुम्हारा। जबलगिगंगयमुनजलधारा
दो० सीतहिंसासु अशीषशिख दीन्ह अनेकप्रकार।
चली नाइपदपद्मशिरअतिहितबारहिंबार ६८
समाचारजब लक्ष्मण पाये। व्याकुलबिलखिबदनउठिधाये
कम्पपुलकतनुनयनसनीरा। गहे चरणा अति प्रेम अधीरा

कहिन सकत कछु चित वत ढाढ़े। मीन दीन जनु जल ते काढ़े
शोच हृदय विधि का होनिहारा। सब सुख सुकृत सिरान हमारा
मो कहँ कहा कहब रघुनाथा। रखिहैं भवन कि लेहहिं साथा
राम बिलोकि बन्धु कर जोरे। देह गेह सब सन तृण तोरे
बोले वचन राम नय नागर। शील सनेह सरल सुख सागर
तात प्रेम वश जनि कदराहू। समुझि हृदय परिणाम उछाहू

दो० मातु पिता गुरु स्वामि शिख शिर धरि करहिं सुभाय
लहेउ लाभ तिन जन्म के नतरु जन्म जग जाय ६९

अस जिय जानि सुनहु शिख भाई। करौ मातु पितु पद सेवकाई
भवन भरत रिपुसूदन नाहीं। राउ वृद्ध मम दुख मन माहीं
मैं बन जाउँ तुम्हैं लै साथा। होइहि सब बिधि अवध अनाथा
गुरु पितु मातु प्रजा परिवारू। सबकहँ परै दुसह दुख भारू
रहहु करहु सब कर परितोषू। नतरु तात होइहि बड़ दोषू
जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी। सो नृप अवशि नरक अधिकारी
रहहु तात असनीति विचारी। सुनत लखण भये व्याकुल भारी
सिय रे बदन सूखि गो कैसे। परसत तुहिन तामरस जैसे

दो० उतर न आवत प्रेम वश गहे चरण अकुलाइ।

नाथ दास मैं स्वामि तुम तजहु तौ कहाव साइ ७०
दीन्ह मोहिं शिख नीक गुसाईं। लागत अगम अपनि कदराईं
नरवर धीर धर्म्म धुर धारी। निगम नीति के ते अधिकारी
मैं शिशु प्रभु सनेह प्रतिपाला। मन्दर मेरु कि लेइ मराला।
गुरु पितु मातु न जानौं काहू। कहौं सुभाव नाथ पतियाहू
जहँ लगि जगत सनेह सगाई। प्रीति प्रतीति नीति निपुणाई
मोरे सबै एक तुम स्वामी। दीनबन्धु उर अन्तरयामी
धर्म्म नीति उपदेशिय ताही। कीरति भूति सुगति प्रिय जाही
मन क्रम वचन चरण रत होई। कृपासिन्धु परिहरिय कि सोई
दो० करुणासिन्धु सुबन्धु के सुनि मृदु वचन विनीत।
समुझाये उर लाइ प्रभु जानि सनेह सभीत ७१
मागहु बिदा मातु सन जाई। आवहु बेगि चलहु बन भाई
मुदित भये सुनि रघुबर बानी। भयउ लाभ बड़ गई गलानी
हरषित हृदय मातु पहँ आये। मनहुं अन्ध फिरि लोचन पाये
जाइ जननि पग नायउ माथा। मन रघुनन्दन जानकि साथा
पूंछेउ मातु मलिन मन देखी। लखन कहेउँ सब कथा विशेखी
गई सहमि सुनि वचन कठोरा। मृगी देखि जनु दव चहुं ओरा

लषणलखेउभाअनरथआजू। इन सनेह वशाकरब अकाजू
मांगतविदा समयसकुचाहीं। जानसंगविधिकहिहिकिनाहीं
दो० समुझि सुमित्रा रामसिय रूप सुशील सुभाव।
नृप सनेह लखि धुनेउ शिर पापिनिकीन्हकुदाव७२
धीरज धरेउ कुअवसर जानी। सहज सुहृद बोली मृदु बानी
तात तुम्हारि मातु बैदेही। पिता राम सब भांति सनेही
अवध तहाँ जहँ राम निवासू। तहाँ दिवस जहँ भानु प्रकासू
जो पै सीय राम बन जाहीं। अवध तुम्हार काज कछु नाहीं
गुरु पितु मातु बन्धु सुर साईं। सेइय सकल प्राण की नाईं
राम प्राण प्रिय जीवन जीके। स्वारथ रहित सखा सबही के
पूजनीय प्रिय परम जहाँ ते। मानिय सबहि राम के नाते
अस जिय जानि संग बनजाहू। लेहु तात जग जीवन लाहू।
दो० भूरि भाग भाजन भये मोहिं समेत बलिजाउँ।
जो तुम्हार मन छाँड़ि छल कीन्ह राम पदठाउँ७३
पुत्रवती युवती जग सोई। रघुबर भक्त जासु सुत होई
नतरु बाँझ भलि बादि बियानी। राम विमुख सुत ते हित हानी
तुम्हरेहि भाग राम बन जाहीं। दूसर हेतु तात कछु नाहीं

सकल सुकृत कर फल सुत येहू। राम सीय पद सहज सनेहू.
राग रोष इरषा मद मोहू। जनि सपनेहु इनके बश होहू
सकल प्रकार विकार विहाई। मन क्रम वचन करेहु सेवकाई
तुम कहँ बन सब भाँति सुपासू। सँग पितु मातु राम सिय जासू
जेहि न राम बन लहहिं कलेशू। सुत सोइ करेहु इहै उपदेशू.

छं० उपदेश यह जेहि तात तुम्हते राम सिय सुख पावहीं
पितु मातु प्रिय परिवार पुर सुख सुरति सब बिसरावहीं
तुलसी सुतहि शिख देइ आयसु देइ पुनि आशिष दई
रति होउ अविरल अमल सिय रघुवीर पद नित नित नई ३

सो० मातु चरण शिर नाइ लषण चले शंकित हिये।
बाम रुख विधम तुराइ मनहुँ भाग मृग भाग वश ३

गये लषण जहँ जानकिनाथा। भये मन मुदित पाइ प्रिय साथा
बन्दि राम सिय चरण सुहाये। चले संग नृप मन्दिर आये.
कहहिं परस्पर पुर नर नारी। भलि बनाइ विधि बात बिगारी
तनु कृश मन दुख बदन मलीना। विकल मनहुँ मारी मधुक्षीना
कर मीजहिं शिर धुनि पछिताहीं। जनु बिनु पंख विहँग अकुलाहीं
भइ बड़ि भीर भूप दरवारा। बरणि न जाइ विषाद अपारा.

सचिव उठाइ राउ बैठारे। कहि प्रिय वचन राम पगुधारे
सिय समेत दोउ तनय निहारी। व्याकुल भये भूमिपति भारी
दो० सीय सहित सुत सुभग दौ देखि देखि अकुलाइ।
बारहिं बार सनेह वश राउ लिये उर लाइ ७४
सके न बोलि बिकल नरनाहू। शोक विवश उर दारुण दाहू
नाइ शीश पद अति अनुरागा। उठि रघुनाथ बिदा तब मागा
पितु अशीष आयसु मोहिं दीजै। हर्ष समय विलम्ब कत कीजै
तात किये प्रिय प्रेम प्रमादू। यश जग जाइ होइ अपवादू
सुनि सनेह वश उठि नरनाहू। बैठारे रघुपति गहि बाहू
सुनहु तात तुम कहँ मुनि कहहीं। राम चराचर नायक अहहीं
शुभ अरु अशुभ कर्म अनुहारी। ईश देइ फल हृदय विचारी
करै जो कर्म्म पाव फल सोई। निगम नीति असकह सबकोई
दो० और करै अपराध कोइ और पाव फल भोग।
अति विचित्र भगवन्त गति को जग जानै योग ७५
राउ राम रखवन हित लागी। बहुत उपाय कीन्ह छल त्यागी
लखेउ राम रुख रहत न जाने। धर्म्म धुरन्धर धीर सयाने
तब नृप सीय लाइ उर लीनी। अति हित बहुत भाँति सिख दीनी

कहिबनकेदुखदुसहसुनाये। सासुश्वशुरपितुसुखसमुझाये
सियमनरामचरणअनुरागा। घरनसुगमबनअगमनलागा
औरोसबहिसीयसमुझाई। कहिकहिविपिनविपतिअधिकाई
सचिवनारिगुरुनारिसयानी। सहितसनेहकहहिंमृदुबानी
तुमकहँतौनदीन्हबनबासू। करहुजोकहहिंश्वशुरगुरुसासू
दो० सिखशीतलहितमधुरमृदुसुनिसीतहिनसुहानि।
शरदचन्दचाँदनिलगतजनुचकईअकुलानि७६
सीयसकुचवशउतर न देई। सोसुनितमकिउठी कैकेई
मुनिपटभूषणाभाजनआनी। आगेधरिबोली मृदु बानी
नृपहिप्राणाप्रियतुमरघुबीरा। शीलसनेहन छाँड़हिं भीरा
सुकृतसुयशपरलोकनशाऊ। तुमहिंजानबनकहहिंन राऊ
असविचारिसोइकरोजुभावा। रामजननिसिखसुनिसुखपावा
भूपहिवचनबाणासमलागे। करहिंन प्राणापयानअभागे
शोकाबिकलमूर्च्छितनरनाहू। काहकरियकछुसूझनकाहू
राम तुरत मुनि वेष बनाई। चलेजनकजननीशिरनाई
दो० सजिबनसाजसमाजसबवनितावन्धुसमेत।
बन्दिविप्रगुरुचरणाप्रभुचलेकरिसबहिअचेत७७

निकसि वशिष्ठ द्वार भये ठाढ़े। देखे लोग विरह दव डाढ़े॥
कहि प्रिय वचन सबहि समुझाये। विप्रवृन्द रघुवीर बुलाये॥
गुरु सन कहि वरषासन दीन्हे। आदर दान विनय बहु कीन्हे॥
याचक दान मान सन्तोषे। मीत पुनीत प्रेम परिपोषे॥
दासी दास बुलाइ बहोरी। गुरुहिं सौंपि बोले कर जोरी॥
सब कर सार सँभारि गुसाईं। करब जनक जननी की नाईं॥
बारहिं बार जोरि युग पानी। कहत राम सब सन मृदु बानी॥
सोइ सब भाँति मोर हितकारी। जेहि ते रह नरनाह सुखारी॥

दो० मातु सकल मोरे विरह जेहि न होहिं दुख दीन।
सोउपाय तुम करब सब पुरजन परम प्रवीन ७८

इहि विधि राम सबहिं समुझावा। गुरु पद पद्म हरषि सिर नावा॥
गनपति गौरि गिरीश मनाई। चले असीस पाइ रघुराई॥
राम चलत अति भयउ विषादू। सुनि न जाइ पुर आरत नादू॥
कुसकुन लंक अवध अति सोकू। हर्ष विषाद विवश सुरलोकू॥
गै मूर्च्छा तब भूपति जागे। बोलि सुमन्त कहन अस लागे॥
राम चले बन प्राण न जाहीं। केहि सुख लागि रहत तनु माहीं॥
इहि ते कवन व्यथा बलवाना। जो दुख पाइ तजहिं तनु प्राना॥

पुनि धरि धीर कहहिं नरनाहू। लै रथ संग सखा तुम जाहू
दो० सुठि सुकुमार कुमार दोउ जनकसुता सुकुमारि।
रथ चढ़ाइ दिखराइ बन फिरेहु गये दिन चारि ७९
जो नहिं फिरहिं धीर दोउ भाई। सत्यसिन्धु दृढ़ व्रत रघुराई
तौ तुम बिनय करेहु कर जोरी। फेरिय प्रभु मिथिलेसकिसोरी
जब सिय कानन देखि डेराई। कहेहु मोरि सिख अवसर पाई
सासु ससुर अस कहेउ सँदेसू। पुत्रि फिरिय बन बहुत कलेसू
पितु गृह कबहुँ कबहुँ ससुरारी। रहेउ जहाँ रुचि होइ तुम्हारी
एहि बिधि करेहु उपाय कदम्बा। फिरइ तो होइ प्राण अवलम्बा
नाहिं तो मोर मरण परिणामा। कछु न बसाइ भयो बिधि बामा
अस कहि मूर्च्छि परेउ महि राऊ। रामु लखनु सिय आनि देखाऊ
दो० पाय रजायसु नाइ सिर रथ अति बेगि बनाइ।
गये जहाँ बाहर नगर सीय सहित दोउ भाइ ८०
तब सुमन्त नृप बचन सुनाये। करि बिनती रथ राम चढ़ाये
चढ़ि रथ सीय सहित दोउ भाई। चले हृदय अवधहि सिर नाई
चलत रामु लखि अवध अनाथा। बिकल लोग लागे सब साथा
कृपासिन्धु बहु बिधि समुझावहिं। फिरहिं प्रेम बस पुनि फिरि आवहिं

लागति अवध भयानक भारी। मानहुँ कालराति अँधियारी
घोर जन्तु सब पुर नर नारी। डरपहिं एकहि एक निहारी
घर मसान परिजन जनु भूता। सुत हित मीत मनहुँ यमदूता
बागनि बिटप बेलि कुम्हिलाहीं। सरित सरोवर देखि न जाहीं
दो० हय गय कोटिक केलि मृग पुरपशु चातक मोर।
पिक रथांग शुक सारिका सारस हंस चकोर ८१
राम बियोग बिकल सब ठाढ़े। जहँ तहँ मनहुँ चित्र लिखि काढ़े
नगर सकल बन गहबर भारी। खग मृग बिकल सकल नर नारी
बिधि केकयिहि किरातिनि कीन्हीं। जेइँ दव दुसह दसाहुँ दिसि दीन्हीं
सहि न सके रघुबर बिरहागी। चले लोग सब ब्याकुल भागी
सबहि बिचार कीन्ह मन माहीं। राम लखन सिय बिनु सुख नाहीं
जहाँ राम तहँ सकल समाजू। बिनु रघुबीर अवध कहँ काजू
चले साथ अस मंत्र दृढ़ाई। सुर दुर्लभ सुख सदन बिहाई
राम चरन पंकज प्रिय जिन्हहीं। बिषय भोग बस करहिं कि तिन्हहीं
दो० बालक बृद्ध बिहाइ गृह लगे लोग सब साथ।
तमसा तीर निवास किय प्रथम दिवस रघुनाथ ८२
रघुपति प्रजा प्रेम बस देखी। सदय हृदय दुख भयउ बिसेषी

करुणामय रघुनाथ गुसाईं। बेगि पाइ यह पीर पराईं
कहि सप्रेम मृदुवचन सुहाये। बहुविधि राम लोग समुझाये
किये धर्म्म उपदेश घनेरे। लोग प्रेम वश फिरहिं न फेरे
शील सनेह छाँड़ि नहिं जाई। असमञ्जस वश भे रघुराई
लोग शोक श्रमवश गये सोई। कछुक देव माया मति मोई
जबहिं यामयुग यामिनि बीती। राम सचिव सन कहेउ सप्रीती
खोज मारि रथ हाँकहु ताता। आन उपाय बनहिं नहिं बाता
दो० राम लखन सिय यान चढ़ि शम्भु चरण शिर नाइ।
सचिव चलायउ तुरत रथ इत उत खोज दुराइ ८३
जागे सकल लोग भये भोरू। गये रघुवीर भयो अति शोरू
रथ कर खोज कतहुँ नहिं पावहिं। राम राम कहि चहुँ दिशि धावहिं
मनहुँ वारि निधि बूड़ जहाजू। भयउ विकल जनु वारिक समाजू
एकहि एक देहिं उपदेशू। तजेउ राम हम जानि कलेशू
निन्दहिं आपु सराहहिं मीना। धृग जीवन रघुवीर विहीना
जोपै प्रिय वियोग विधि कीन्हा। तौ कस मरण न माँगे दीन्हा
इहि विधि करत प्रलाप कलापा। आये अवध भरे परितापा
विषम वियोग न जाइ बखाना। अवधि आश रखवहिं सब प्राना

दो० राम दरश हित नेम व्रत लगे करन नर नारि।
मनहुँ कोक कोकी कमल दीन विहीन तमारि ८४

सीता सचिव सहित दोउ भाई। शृङ्गवेर पुर पहुँचे जाई।
उतरे राम देवसरि देखी। कीन्ह दण्डवत हरष विशेषी।
लषण सचिव सिय कीन्ह प्रणामा। सबहि सहित सुख पायउ रामा।
गंग सकल मुद मंगल मूला। सब सुख करणि हरणि सब शूला।
कहि कहि कोटिक कथा प्रसंगा। राम विलोकत गंग तरंगा।
सचिवहि अनुजहि प्रियहि सुनाई। बिबुध नदी महिमा अधिकाई।
मज्जन कीन्ह पन्थ श्रम गयऊ। शुचि जल पियत मुदित मन भयऊ।
सुमिरत जाहि मिटहिं भव भारू। तेहि श्रम यह लौकिक व्यवहारू।

दो० शुद्ध सच्चिदानन्द मय राम भानु कुल केतु।
चरित करत नर अनुहरत संसृति सागर सेतु ८५

यह सुधि गुह निषाद जब पाई। मुदित लिये प्रिय बन्धु बुलाई।
लै फल मूल भेंट भरि भारा। मिलन चल्यो हिय हर्ष अपारा।
करि दण्डवत भेंट धरि आगे। प्रभुहि विलोकत अति अनुरागे।
सहज सनेह विवश रघुराई। पूँछेउ कुशल निकट बैठाई।
नाथ कुशल पद पंकज देखे। भयउँ भाग्य भाजन जन लेखे।

देव धरणिधन धाम तुम्हारा। मैं जन नीच सहित परिवारा
कृपा करिय पुर धारिय पाऊँ। थापिय जन सब लोग सिहाऊँ
कहहु सत्य सब सखा सुजाना। मोहिं दीन्ह पितु आयसु आना
दो० वर्ष चारि दश वास वन मुनि व्रत वेष अहार।
ग्राम वास नहिं उचित सुनि गुहहिं भयो दुख भार ८६
राम लषण सिय रूप निहारी। कहहिं सप्रेम नगर नर नारी
ते पितु मातु कहहु सखि कैसे। जिन पठये वन बालक ऐसे
एक कहहिं भूपति भल कीन्हा। लोचन लाहु हमहिं जिन दीन्हा
तब निषाद पति उर अनुमाना। तरु सिंसिपा मनोहर जाना
लै रघुनाथहिं ठाँव बतावा। कहेउ राम सब भाँति सुहावा
पुर जन करि जुहार गृह आये। रघुवर सन्ध्या करन सिधाये
गुह सँवारि साँथरी बनाई। कुश किसलय मृदु परम सुहाई
शुचि फल मूल मधुर मृदु जानी। दोना भरि भरि राखेसि आनी
दो० सिय सुमन्त्र भ्राता सहित कन्द मूल फल खाइ।
शयन कीन्ह रघुवंश मणि पाय पलोटत भाइ ८७
उठे लषण प्रभु सोवत जानी। कहि सचिवहिं सोवन मृदु बानी
कछुक दूरि सजि बान शरासन। जागन लगे बैठि वीरासन

गुह बुलाइ पहरुआ प्रतीती। ठावँ ठावँ राखे अति प्रीती
आपु लषण पहँ बैठेउ जाई। कटि भाथा शर चाप चढ़ाई
सोवत प्रभुहि निहारि निषादा। भयउ प्रेम वश हृदय विषादा
तनु पुलकित लोचन जल बहई। वचन सप्रेम लषण सन कहई
भूपति भवन सुभाहज सुहावा। सुरपति सदन न पटतर पावा
मणिमय रचित चारु चौबारे। जनु रतिपति निज हाथ सवाँरे
दो० शुचि सुविचित्र सुभोग मय सुमन सुगन्ध सुवास।
पलँग मञ्जु मणि दीप जहँ सब विधि सकल सुपास ८८
विविध वसन उपधान तुराई। क्षीर फेन मृदु विशद सुहाई
तहँ सिय राम शयन निशि करहीं। निज छवि रति मनोज मद हरहीं
ते सिय राम साथरी सोये। श्रमित वसन बिन जाहिं न जोये
मातु पिता परिजन पुरवासी। सखा सुशील दास अरु दासी
जुगवहिं जिनहिं प्राण की नाईं। महि सोवत सो राम गुसाईं
पिता जनक जग विदित प्रभाऊ। श्वशुर सुरेश सखा रघुराऊ
रामचन्द्र पति सो वैदेही। महि सोवत विधि वाम न केही
सिय रघुवीर कि कानन योगू। कर्म्म प्रधान सत्य कहँ लोगू
दो० केकय नंदिनि मन्द मति कठिन कुटिल पन कीन्ह।

जेरघुनन्दन जानकिहि सुख अवसर दुख दीन्ह ८९

भइ दिनकर कुल बिटप कुठारी। कुमति कीन्ह सब बिस्व दुखारी
राम सीय महि सयन निहारी। भयउ बिषाद निषादहि भारी
बोले लषण मधुर मृदु बानी। ज्ञान बिराग भगति रस सानी
कोउ न काहु दुख सुख कर दाता। निज कृत कर्म भोग सब भ्राता
योग बियोग भोग भल मन्दा। हित अनहित मध्यम भ्रम फन्दा
जनम मरण जहँ लगि जग जालू। सम्पति बिपति कर्म अरु कालू
धरणि धाम धन पुर परिवारू। स्वर्ग नरक जहँ लगि ब्यवहारू
देखिय सुनिय गुनिय मन माहीं। मोह मूल परमारथ नाहीं॥

दो० सपने होइ भिखारि नृप रंक नाकपति होइ।
जागे लाभ न हानि कछु तिमि प्रपञ्च जिय जोइ ९०

अस बिचारि नहिं कीजिय रोषू। काहुहि बादि नहिं दीजिय दोषू॥
मोह निशा सब सोवनिहारा। देखहिं स्वप्न अनेक प्रकारा
यहि जग यामिनि जागहिं योगी। परमारथी प्रपञ्च बियोगी
जानिय तबहिं जीव जग जागा। जब सब बिषय बिलास बिरागा
होय बिबेक मोह भ्रम भागा। तब रघुबीर चरण अनुरागा
सखा परम परमारथ एहू। मन क्रम बचन राम पद नेहू॥

राम ब्रह्म परमारथ रूपा। अविगत अलख अनादि अनूपा
सकल विकार रहित गतभेदा। कहि नित नेति निरूपहिं बेदा
दो० भक्त भूमि भूसुर सुरभि सुरहित लागि कृपालु।
करत चरित धरि मनुज तनु सुनत मिटै जग जालु ९१
सखा समुझि अस परिहरि मोहू। सिय रघुबीर चरन रत होहू।
कहत राम गुन भा भिनुसारा। जागे जग मंगल दातारा।
सकल शौच करि राम नहाये। शुचि सुजान बट क्षीर मँगाये
अनुज सहित शिर जटा बनाये। देखि सुमन्त नयन जल छाये
हृदय दाह अति बदन मलीना। कह कर जोरि बचन अति दीना
नाथ कहेउ अस कोशल नाथा। लै रथ जाहु राम के साथा
बन दिखाइ सुरसरि अन्हवाई। आनेहु बेगि फेरि दोउ भाई.
लषण राम सिय आनेहु फेरी। संशय सकल सँकोच निबेरी
दो० नृप अस कहेउ गुसाइँ जस कहिय करौं बलि सोइ
करि बिनती पायँन परेउ दीन बाल जिमि रोइ ९२
तात कृपा करि कीजिय सोई। जाते अवध अनाथ न होई।
मन्त्रिहि राम उठाय प्रबोधा। तात धर्म्म मत तुम सब शोधा
शिबि दधीचि हरिचन्द्र नरेशा। सहे धर्म्म हित कोटि कलेशा

५८—अजोधिया

रन्तिदेव बलि भूप सुजानू। धर्म्म धरेउ सहि संकट नाना
धर्म्म न दूसर सत्य समाना। आगम निगम पुराण बखाना
मैं सोइ धर्म्म सुलभ करि पावा। तजे सोतिहुँ पुर अपयश छावा
सम्भावित कहँ अपयश लाहू। मरण कोटि सम दारुण दाहू
तुम्ह सन तात बहुत का कहऊँ। दिये उतर फिरि पातक लहऊँ

दो॰ पितु पद गहि कहि कोटि विधि विनय करब कर जोरि
चिन्ता कवनिहुँ बात की तात करिय जनि मोरि ९३

तुम्ह पुनि पितु सम हित मोरे। विनती करौं तात कर जोरे॰
सब विधि सोइ करतव्य तुम्हारे। दुखन पाव नृप शोच हमारे।
सुनि रघुनाथ सचिव सम्वादू। भयउ सपरिजन विकल निषादू
पुनि कछु लषण कहेउ कटुवानी। प्रभु बरजेउ बड़ अनुचित जानी
सकुचि राम निज शपथ दिवाई। लषण सँदेश कहब जनि जाई
कह सुमन्त पुनि भूप सँदेशू। सहि न सकिहि सिय विपिन कलेशू
जेहि विधि अवध आव फिरि सीया। सोइ रघुनाथ तुम्हहिं करनीया
नतरु निपट अवलम्ब विहीना। मैं न जियब जिमि जल बिनु मीना

दो॰ मैके ससुरे सकल सुख जबहिं जहाँ मन मान।
तबतहँ रहब सुखेन सिय जब लगि विपति विहान ९४

विनती कीन्ह भूप जेहि भाँती। आरति प्रीति न सो कहि जाती
पितु सँदेश सुनि कृपानिधाना। सिय हित दीन्ह सिख कोटि विधाना
सासु श्वशुर गुरु प्रिय पितु माता। फिरहु तौ सब कर मिटै खभारू
सुनि पति वचन कहति वैदेही। सुनहु प्राणपति परम सनेही
प्रभु करुणामय परम बिवेकी। तनु तजि छाँह रहति किमि छेकी
प्रभा जाय कहँ भानु बिहाई। कहँ चन्द्रिका चन्द्र तजि जाई
पतिहि प्रेम मय विनय सुनाई। कहति सचिव सन गिरा सुहाई
तुम पितु श्वशुर सरिस हितकारी। उतर देउँ फिरि अनुचित भारी
दो० आरत वश सन्मुख भइउँ विलगु न मानब तात।
आरज सुत पद कमल बिनु बादि जहाँ लगि नात ५५

पितु वैभव विलास मैं दीठा। सुर पति सदृश सम्पदा मीठा
सुखनिधान अस पितु गृह मोरे। पिय बिहीन मन भाव न भोरे
श्वशुर चक्रवै कोशल राजू। भुवन चारि दश प्रकट प्रभाजू
आगे होइ जेहि सुरपति लेई। अरध सिंहासन आसन देई।
श्वशुर एतादृश अवध निवासू। देखब मातु सम सासू
विन रघुपति पद पद्म परागा। मोहि कोउ सपनेहुँ सुखद न लागा
अगम पन्थ वन भूमि पहारा। करिहरि सरित सरित अपारा

कोल किरात कुरंग विहंगा। मोहिं सब सुखद प्राणपति संगा
दो० सासु श्वशुर सन मोरि हुति बिनय करब परिपाय।
मोर शोच जनि करिय कछु मैं बन सुखी सुभाय ९६
प्राणनाथ प्रिय देवर साथा। वीर धुरीण धरे धनु भाथा।
नहिं मग श्रम भ्रम दुख मन मोरे। मोहि लगि शोच करिय जनि भोरे
सुनि सुमन्त सिय शीतल बानी। भयो विकल जनु फणि मणि हानी
नयन न सूझ सुनै नहिं काना। कहि न सकै कछु अति अकुलाना
राम प्रबोध कीन्ह बहु भांती। तदपि होइ नहिं शीतल छाती
यत्न अनेक साथ हित कीन्हा। उर चित उतर रघुनन्दन दीन्हा।
मेटि जाइ नहिं राम रजाई। कठिन कर्म्म गति कछु न बसाई
राम लषण सिय पद शिर नाई। फिरे वणिक जिमि मूर गँवाई
दो० रथ हांके हय राम तन हेरि हेरि हिहिनाहिं।
देखि निषाद विषाद बस धुनहिं शीश धुनि पछिताहिं ९७
जासु वियोग विकल पशु ऐसा। प्रजा मातु पितु जीवहिं कैसे।
बरबस राम सुमन्त पठाए। मैं सुरसरि तीर आपु चलि आये
मांगी नाव न केवट आना। कहै तुम्हार मरम मैं जाना
चरण कमल रज कहँ सब कहई। मानुष करणि मूरि कछु अहई

छुअत शिला भइ नारि सुहाई। पाहन ते न काठ कठिनाई
तरनिउ मुनि घरनी होइ जाई। बाट परै मोरि नाव उड़ाई॥
यह प्रतिपालै सब परिवारू। नहिं जानौं कछु और कबारू
जो प्रभु अवशि पारगा चहहू। तौ पद पद्म पखारन कहहू
छं० पद पद्म धोइ चढ़ाइ नाव न नाथ उतराई चहौं।
मोहिं राम राउरि आनि दशरथ शपथ सब साची कहौं
बरु तीर मारहिं लखन पै जब लगि न पाय पखारिहौं।
तब लगि न तुलसीदास नाथ कृपालु पार उतारिहौं४
सो० सुनि केवट के बैन प्रेम लपेटे अटपटे।
बिहँसे करुणा अयन चितइ जानकी लखन तन४
कृपासिन्धु बोले मुसुकाई। सोइ करु जेहि नाव न जाई
बेगि आनि जल पाय पखारू। होत बिलम्ब उतारहु पारू।
जासु नाम सुमिरत इक बारा। उतरहिं नर भव सिन्धु अपारा
सोइ कृपालु केवटहि निहोरा। जेहिं जगति हुं पगहुंते थोरा
पद नख निरखि देवसरि हरषी। निज प्रभु चरन मोह मति करषी
केवट राम रजायसु पावा। निकठवता भरि लै आवा
अति आनन्द उमँगि अनुरागा। चरन सरोज पखारन लागा

बरषि सुमन सुर सकल सिहाहीं। इहि सम पुण्य पुञ्ज कोउ नाहीं॥

दो० पद पखारि जल पान करि आपु सहित परिवार।
पितर पार करि प्रभुहि पुनि मुदित गयउ लै पार ९८

उतरि ठाढ़ भये सुरसरि रेता। सीय राम गुह लषण समेता॥
केवट उतरि दण्डवत कीन्हा। प्रभुहु सकुच इहि कछु नहिं दीन्हा॥
पिय हिय की सिय जाननहारी। मधुर मृदु मंजुल मुदित उतारी॥
कहेउ कृपालु लेहु उतराई। केवट चरण गहेउ अकुलाई॥
नाथ आजु हम काह न पावा। मिटे दोष दुख दारिद दावा॥
बहु काल मैं कीन्ह मजूरी। आजु दीन्ह बिधि बनि भलि पूरी॥
अब कछु नाथ न चाहिय मोरे। दीन दयालु अनुग्रह तोरे॥
फिरती बार मोहि जो देबा। सो प्रसाद मैं सिर धरि लेबा॥

दो० बहुत कीन्ह हठ लषण सिय गुहु नहिं कछु केवट लेइ।
बिदा कीन्ह करुणायतन भगति बिमल बर देइ ९९

तब मज्जन करि रघुकुल नाथा। पूजि पारथी नायउ माथा॥
सिय सुरसरिहि कहा कर जोरी। मातु मनोरथ पुरवहु मोरी॥
पति देवर सँग कुशल बहोरी। आइ करौं जेहि पूजा तोरी॥
सुनि सिय बिनय प्रेम रस सानी। भइ तब बिमल बारि बर बानी॥

सुनु रघुवीर प्रिया वैदेही। तवप्रभावजगविदित न केही
लोकपहोहिं विलोकत तोरे। तोहिं सेवहिं सबसिधि कर जोरे
तुम जोहमहिं बड़ि विनय सुनई। कृपा कीन्हि मोहिं दीन्हि बड़ाई
तदपि देवि मैं देव असीसा। सुफलहोन हित निजबागीसा
दो० प्राननाथ देवर सांत कुशल कोशला आइ।
पूरिहि सब मनकामा सुयशरहिहि जगछाइ १००
गंग वचन सुनि मंगल मूल। मुदित सीय सुरसरि अनुकूला
तब प्रभु गुहहि कहा घर जा। सुनत सूख मुख भा उर दाहू
दीन वचन गुह कहकर जोरे। विनय सुनिय रघुकुलमणि मोरे
नाथ साथ रहि पन्थ दिखाई। करि दिन चारि चरण सेवकाई
जेहि बन जाइ रहब रघुराई। पर्णकुटी मैं करब सुहाई
तब मो कहँ जस देब रजाई। सो करिहौं रघुवीर दुहाई।
सहज सनेह राम लखि तासू। संग लीन्ह गुह हृदय हुलासू
पुनि गुह ज्ञाति बोलि सब लीन्हे। करि परितोष बिदा तब कीन्हे
दो० तब गणपति शिव सुमिरि, भुनाइ सुरसरिहि माथ।
सखा अनुज सिय सहित, गवन कीन्ह रघुनाथ १
तेहि दिन भयउ विटप तर वासू। लखन सखा सब कीन्ह सुपासू

प्रात प्रातकृत करि रघुराई। तीर
सचिव सत्य श्रद्धा प्रिय नारी। मा
चारि पदारथ भरा भँडारू। पु
क्षेत्र अगम गढ़ गाढ़ सुहावा। स
सेन सकल तीरथ वर वीरा। क
संगम सिंहासन सुठि सोहा।
चँवर यमुन जल गंग तरंगा।
दो० सेवहिं सुकृती साधु सु
बन्दी वेद पुराना गराव
को कहि सकै प्रयाग प्रभाऊ
अस तीरथपति देखि सुहावा
कहि सिय अनुजहि सखहिं सु
करि प्रनाम देखत बनबाग
इहि विधि आइ विलोकेउ बे
मुदित अन्हाइ कीन्ह शिवसे
तब प्रभु भरद्वाज पहँ आ
सुनि मन मोदन कछु कहि

य राज दीख प्रभु जाई
व सरिस मीत हितकारी
य प्रदेश देश अति चारू
नहुँ जिन्ह प्रतिपक्ष न पावा
सुय अनीक दलन रनधीरा
अक्षयबट मुनि मन मोहा
ख होहिं दुख दारिद भंगा
पावहिं सब मन काम।
हिं विमल गुन ग्राम २
लुष पुञ्ज कुञ्जर मृग राऊ
ख सागर रघुबर सुख पावा
श्री सुख तीरथ राज बड़ाई
कहत महातम अति अनुरागा
सुमिरत सकल सुमंगल देनी
पूजि यथा विधि तीरथ देवा
करत दराडवत मुनि उर लाये
ब्रह्मानन्द राशि जनु पाई

दो० दीन्ह असीस मुनीस उर अति आनँद असजानि
लोचन गोचर सुकृत फल मनहुँ किये विधि आनि १०३

कुशल प्रश्न करि आसन दीन्हा। पूजि प्रेम परिपूरन कीन्हा
कन्द मूल फल अंकुर नीके। दिये आनि मुनि मनहुँ अमी के
सीयल सरस जनसहित सुहाये। अति रुचि राम मूल फल खाये
भये विगत श्रम राम सुखारे। भरद्वाज मृदु वचन उचारे।
आजु सुफल तप तीरथ यागू। आजु सुफल जप योग विरागू
सुफल सकल शुभ साधन साजू। राम तुमहिं अवलोकत आजू
लाभ अवध सुख अवधि न दूजी। तुम्हरे दरश आश सब पूजी
अब करि कृपा देहु वर येहू। निज पद सरसिज सहज सनेहू

दो० कर्म्म वचन मन छाँड़ि छल जब लगि जनन तुम्हार।
तब लगि सुख सपनेहुँ नहीं किये कोटि उपचार १०४

सुनि मुनि बचन राम सकुचाने। भाव भक्ति आनन्द अघाने।
तब रघुवर मुनि सुयश सुहावा। कोटि भाँति कहि सबहिं सुनावा
सो बड़ सो सब गुण गण गेहू। जेहि मुनीश तुम आदर देहू।
सुनि रघुवीर परस्पर नवहीं। वचन अगोचर सुख अनुभवहीं
यह सुधि पाइ प्रयाग निवासी। बटु तापस मुनि सिद्ध उदासी

भरद्वाज आश्रम सब आये। देखन दशरथ सुवन सुहाये
राम प्रणाम कीन्ह सब काहू। मुदित भये लहि लोचन लाहू॰
देहि अशीष परम सुख पाई। फिरे सराहत सुन्दरताई।
दो॰ राम कीन्ह विश्राम निशि प्रात प्रयाग अन्हाइ।
चले सहित सिय लषण जन मुदित मुनिहिं शिर नाइ १०५
राम सप्रेम कहेउ मुनि पाहीं। नाथ कहिय हम केहि मग जाहीं
मुनि मुनि बिहँसि राम मन कहहीं। सुगम सकल मग तुम कहँ अहहीं
साथ लागि मुनि शिष्य बुलाये। सुनि मन मुदित पचासक आये
सबहिं राम पद प्रेम अपारा। सबहिं कहहिं मग दीख हमारा
मुनिवटु चारि संग तब दीन्हे। जिन्ह बहु जन्म सुकृत बड़ कीन्हे
करि प्रणाम मुनि आयसु पाई। प्रमुदित हृदय चले रघुराई।
ग्राम निकट जब निसरहि जाई। देखहिं दरश नारि नर धाई
होहिं सनाथ जन्म फल पाई। फिरहिं दुखित मन संग पठाई
दो॰ बिदा कीन्ह वटु विनय करि फिरे पाइ मन काम।
उतरि अन्हाने यमुन जल जो शरीर सम श्याम १०६
सुनत तीर बासी नर नारी। धाये निज निज काज बिसारी
लषण राम सिय सुन्दरताई। देखि करहिं निज भाग्य बड़ाई

अतिलालसा सबहिंमनमाहीं। नाम ग्राम पूँछत सकुचाहीं
जेतिन महँ वय वृद्ध सयाने। तिन्ह करि युक्ति राम पहिंचाने
सकल कथा कहि तिनहिं सुनाई। बनहिं चले पितु आयसु पाई
सुनि सविषाद सकल पछिताहीं। रानी राउ कीन्ह भल नाहीं।
राम लषण सिय रूप निहारी। शोच सनेह विकल नर नारी
ते पितु मातु कहौ सखि कैसे। जिन पठये बन बालक ऐसे
दो० तब रघुबीर अनेक विधि सखहि सिखावन दीन्ह।
रामरजायसु शीश धरि भवन गवन तिन्ह कीन्ह १०७
पुनि सिय राम लषण कर जोरी। यमुनहिं कीन्ह प्रणाम बहोरी
गवने सीय सहित दोउ भाई। रवि तनया करि करत बड़ाई
पथिक अनेक मिलहिं मगु जाता। कहहिं सप्रेम देखि दोउ भ्राता
राज लक्षण सब अंग तुम्हारे। देखि शोच हिय होत हमारे।
मारग चलहु पयादेहि पाये। ज्योतिष झूँठ हमारे भाये
अगम पन्थ गिरि कानन भारी। तेहि महँ साथ नारि सुकुमारी
करि केहरि बन जाहिं न जोई। हम सँग चलहिं जो आयसु होई
जाब जहां लगि तहँ पहुँचाई। फिरब बहोरि तुमहिं शिर नाई
दो० इहि विधि बूझहिं प्रेम वश पुलक गात जल नैन।

कृपासिन्धु फेरहिं तिनहिं करि विनती मृदु बैन १०८

जे पुर ग्राम बसहिं मग माहीं। तिनहिं नाग सुरनगर सिहाहीं
केहि सुकृती केहि घरी बसाये। धन्य पुण्यमय परम सुहाये
जहँ जहँ राम चरण चलि जाहीं। तेहि समान अमरावति नाहीं
पुण्यपुञ्ज मग निकट निवासी। तिनहिं सराहहिं सुरपुर वासी
जो भरि नयन विलोकहिं रामहिं। सीता लखण सहित घनश्यामहिं
जेहि सर सरित राम अवगाहहिं। तिनहिं देव सरि सरित सराहहिं
जेहि तरु तर प्रभु बैठहिं जाई। करहिं कल्पतरु तासु बड़ाई
परसि राम पद पद्म परागा। मानहिं भूमि भूरि निज भागा

दो० छाँह करहिं घन बिबुध गण बरषहिं सुमन सिहाहिं
देखत गिरि बन बिहग मृग राम चले मग जाहिं १०९

सीता लखण सहित रघुराई। गाँव निकट जब निसरहिं जाई
सुनि सब बाल बृद्ध नर नारी। चलहिं तुरत गृह काज बिसारी
राम लखण सिय रूप निहारी। पाइ नयन फल होहिं सुखारी
सजल नयन अति पुलक शरीरा। सब भये मगन देखि दोउ बीरा
बरणि न जाइ दशा तिन्ह केरी। लही रंक जनु सुरमणि ढेरी
एकहिं एक बोलि सिख देहीं। लोचन लाहु लेहु छण एहीं

रामहिं देखि एक अनुरागे। चितवत चले जात संग लागे
एक नयन मग छबि उर आनी। होहिं शिथिल तनु मानस बानी
दो० एक देखि बट छाँह भलि डासि मृदुल तृन पात।
कहहिं गँवाइय छन एक श्रम गवनब अबहिं कि प्रात ११०
एक कलश भरि आनहिं पानी। अँचइय नाथ कहहिं मृदु बानी
सुनि प्रिय बचन प्रीति अति देखी। राम कृपालु सुशील बिशेखी
जानी सीय श्रमित मन माहीं। घरिक बिलम्ब कीन्ह बट छाहीं
मुदित नारि नर देखहिं शोभा। रूप अनूप देखि मन लोभा
इकटक सब जोहहिं चहुं ओरा। रामचन्द्र मुख चन्द्र चकोरा॥
तरुण तमाल बरण तनु सोहा। देखत काम कोटि मन मोहा।
दामिनि बरण लषण सुठि नीके। नख शिख सुभग भावते जीके
मुनि पट कटिन कसे तूणीरा। सोहत कर कमलन धनु तीरा
दो० जटा मुकुट शीशन सुभग उर भुज नयन बिशाल।
शरद पर्व बिधु बदन वर लसत श्वेद कण जाल १११
बरणि न जाइ मनोहर जोरी। शोभा अमित मोरि मति थोरी
राम लषण सिय सुन्दरताई। सब चितवहिं मति मन चित लाई
थके नारि नर प्रेम पियासे। मनहुं मृगी मृग देखि दियासे

सीय समीप ग्राम तिय जाहीं। पूंछत अति सनेह सकुचाहीं
बार बार सब लागहिं पाये। कहहिं वचन मृदु सरल सुहाये
राजकुमारि विनय हम करहीं। तिय सुभाव कछु पूंछत डरहीं॰
स्वामिनि अविनय क्षमब हमारी। बिलगन मानब जानि गँवारी
राजकुँवर दोउ सहज सलोने। इनते लहि द्युति मरकत सोने
दो॰ श्यामल गौर किशोर वर सुन्दर सुखमा ऐन।
शरद सर्वरी नाथ मुख शरद सरोरुह नैन ११२
कोटि मनोज लजावनि हारे। सुमुखि कहहु को अहहिं तुम्हारे
सुनि सनेह मय मञ्जुल वानी। सकुचि सीय मन महँ मुसुकानी
तिनहिं बिलोकि बिलोकेउ धरणी। दुहुँ सकोच सकुचति वर वरणी
सकुचि सप्रेम बाल मृगनयनी। बोली मधुर वचन पिकवयनी
सहज सुभाव सुभग तनु गोरे। नाम लषण लघु देवर मोरे
श्यामवरण विशाल भुजनयना। अति सुन्दर बोलत मृदु वयना
बहुरि वदन विधु अञ्चल ढाँकी। पिय तन चितै भौंह करि बाँकी
खञ्जन मञ्जु तिरीछन नयनी। निज पति कहेउ तिनहिं सिय सयनी
भई मुदित सब ग्राम बधूटी। रंकन रतन राशि जनु लूटी
दो॰ अति सप्रेम सिय पायँ परि बहु विधि देहिं अशीश।

सदासुहागिनि रहहु तुम जबलगि महि अहि शीश २२३

पारवती सम पति प्रिय होहू। देवि न हम पर छाड़व छोहू।
पुनि पुनि विनय करहिं कर जोरी। जोयह मारग फिरिय बहोरी
दरशन देब जानि निज दासी। लखी सीय सब प्रेम पियासी
मधुर वचन कहि कहि परितोषी। जनु कुमुदिनी कौमुदी पोषी
तबहिं लखण रघुवर रुख जानी। पूँछेउ मगु लोगन मृदुवानी
सुनत नारि नर भये दुखारी। पुलकित अंग विलोचन वारी
मिटा मोद मन भये मलीने। विधि निधि दीन्ह लीन्ह जनु छीने
समुझि कर्म गति धीरज कीन्हा। शोधि सुगम मगु तिन्ह कहि दीन्हा

दो० लखण जानकी सहित वन गवन कीन्ह रघुनाथ
फेरे सब प्रिय वचन कहि लिये लाइ मन साथ २२४

फिरत नारि नर अति पछिताहीं। दैवहिं दोष देहिं मन माहीं
सहित विषाद परस्पर कहहीं। विधि करतब सब उलटे अहहीं
निपट निरंकुश निठुर निशंकू। जेहिं शशि कीन्ह सरुज सकलंकू
रूख कल्पतरु सागर खारा। तेहिं पठये वन राजकुमारा
जो पै इनहिं दीन्ह वनवासू। कीन्ह बादि विधि भोग विलासू
ये विचरहिं मगु बिनु पदत्राना। रचे बादि विधि बाहन नाना.

ये महि परहिं डासि कुश पाता। सुभग सेज कत कीन्ह बिधाता
तरु तर बास इन्हहिं बिधि दीन्हा। धवल धाम रचि रचत अम कीन्हा
दो० जोये मुनि पट धर जटिल सुन्दर सुठि सुकुमार।
बिबिध भाँति भूषण बसन बादि किये करतार ११५
जो ये कन्द मूल फल खाहीं। बादि सुधादि असन जग माहीं
एक कहहिं ये सहज सुहाये। आपु प्रकट मे बिधि न बनाये
जहँ लगि बेद कहेउ बिधि करणी। श्रवण नयन मन गोचर बरणी
देखहु खोजि भुवन दश चारी। कहँ अस पुरुष कहाँ असि नारी
इन्हहिं देखि बिधि मन अनुरागा। पटतरु जोग बनावन लागा
कीन्ह बहुत श्रम एक न आये। तेहि ईर्षा बन आनि दुराये
एक कहहिं हम बहुत न जानहिं। आपुहिं परम धन्य करि मानहिं
ते पुनि पुराय पुञ्ज हम लेखे। जे देखहिं देखिहहिं जिन्ह देखे
दो० इहि बिधि कहि कहि बचन प्रिय लेहिं नयन भरि नीर
किमि चलिहैं मारग अगम सुठि सुकुमार शरीर ११६
नारि सनेह बिकल सब होहीं। चकई साँझ समय जिमि मोहीं
मृदु पद कमल कठिन मग जानी। गह करि हृदय कहहिं मृदु बानी
परसत मृदुल चरण अरुणारे। सकुचति महि जिमि हृदय हमारे

जो जगदीश इन्हहिं बन दीन्हा। कस न सुमनमय मारग कीन्हा
जो मागे पाइय बिधि पाहीं। ए रखिय सखि इन्ह आँखिन माहीं
जेहि नर नारि न अवसर आये। ते सिय राम न देखन पाये
सुनि सरूप पूँछहिं अकुलाई। अब लगि गये कहाँ लगि भाई
समरथ धाइ बिलोकहिं जाई। प्रमुदित फिरहिं नयन फल पाई

दो० अबला बालक बृद्ध जन कर मीजहिं पछिताहिं।
होहिं प्रेम बस लोग इमि राम जहाँ जहँ जाहिं २१७

गाँव गाँव अस होइ अनन्दू। देखि भानुकुल कैरव चन्दू
जे कछु समाचार सुनि पावहिं। ते नृप रानिहि दोस लगावहिं
कहहिं एक अति भल नरनाहू। दीन्ह हमहिं जिन लोचन लाहू
कहहिं परस्पर लोग लुगाई। बातैं सरल सनेह सुहाई॥
ते पितु मातु धन्य जे जाये। धन्य सो नगर जहाँ ते आये
धन्य सो सैल देस बन गाऊँ। जहँ जहँ जाहिं धन्य सो ठाऊँ
सुख पायो बिरञ्चि रचि तेही। जे इन्ह के सब भाँति सनेही
राम लषन सिय कथा सुहाई। रही सकल मग कानन छाई

दो० जेहि बिधि रबिकुल कमल रबि मगलोगन सुखदेत
जाहिं चले देखत बिपिन सिय सौमित्रि समेत २१८

आगे राम लषण पुनि पाछे। तापस बेष बिराजत काछे।
उभय मध्य सिय सोहति कैसी। ब्रह्म जीव बिच माया जैसी
बहुरि कहौं छबि जसि मन बसई। जनु मधु मदन मध्य रति लसई
उपमा बहुरि कहौं जिय जोही। जनु बुध बिधु बिच रोहिनि सोही
प्रभु पद रेख बीच बिच सीता। धरहिं चरन मग चलहिं सभीता
सीय राम पद अंक बराये। लषण चलहिं मग दाहिन बाये
राम लषण सिय प्रीति सुहाई। बचन अगोचर किमि कहि जाई
खग मृग मगन देखि छबि होहीं। लिये चोरि चित राम बटोहीं
दो० जिन्ह जिन्ह देखे पथिक प्रिय सीय सहित दोउ भाइ
भव मग अगम अनन्द तेइ बिनु श्रम रहे सिराइ ११९
अजहुं जासु उर सपनेहुं काऊ। बसहिं राम सिय लषण बटाऊ
राम धाम पथ पाइहि सोई। जो पथ पावक बहुँ मुनि कोई
तब रघुबीर श्रमित सिय जानी। देखि निकट बट शीतल पानी
तहँ बस कन्द मूल फल खाई। प्रात नहाइ चले रघुराई।
देखत बन सर शैल सुहाये। बालमीकि आश्रम प्रभु आये
राम देखि मुनि बास सुहावन। सुन्दर गिरि कानन जल पावन
सरन सरोज बिटप बन फूले। गुञ्जत मञ्जु मधुप रस भूले

खग मृग बिपुल कुलाहल करहीं। रहित बैर प्रमुदित मन चरहीं॥
दो० शुचि सुन्दर आश्रम निरखि हरषे राजिव नयन।
सुनि रघुबर आगमन मुनि आगे आये लयन २२०
सुनि कहँ राम दण्डवत कीन्हा। आशिरवाद विप्रवर दीन्हा
देखि राम छवि नयन जुड़ाने। करि सनमान आश्रम महिं आने
तब मुनि आसन दिये सुहाये। मुनिवर अतिथि प्रिया प्रिय पाये
कन्द मूल फल मधुर मँगाये। सिय सौमित्रि राम फल खाये
बालमीकि मन आनँद भारी। मंगल मूरति नयन निहारी
तब कर कमल जोरि रघुराई। बोले वचन श्रवण सुखदाई
तुम त्रिकाल दरशी मुनिनाथा। विश्व बदरि जिमि तुम्हरे हाथा
अस कहि प्रभु सब कथा बखानी। जेहि जेहि भाँति दीन्ह बन रानी
दो० तात वचन पुनि मातु मत भाइ भरत अस राव।
मोकहँ दरश तुम्हार प्रभु सब मम पुण्य प्रभाव २२१
देखि पायँ मुनि राय तुम्हारे। भये सुकृत सब सुफल हमारे
अब जहँ राउर आयसु होई। मुनि उद्वेग न पावहिं कोई
मुनि तापस जिन्ह ते दुख लहहीं। ते नरेश बिनु पावक दहहीं॥
मंगल मूल विप्र परितोषू। दहै कोटि कुल भूसुर रोषू॥

असजियजानिकहियसोइठाऊं।सियसौमित्रिसहितजहंजाऊं
तहंरचिरुचिरपर्णतृणशाला।वासकरौंकछुकालकृपाला
सहजसरलसुनिरघुबरबानी।साधुसाधुबोलेमुनिज्ञानी
कसनकहहुअसरघुकुलकेतू।तुमपालकसन्ततश्रुतिसेतू।

छं० श्रुतिसेतुपालकरामतुमजगदीशमायाजानकी।
जोसृजतिजगपालतिहरतिरुखपाइकृपानिधानकी॥
जोसहजशीशअहीशमहिधरलखनासचराचरधनी।
सुरकाजधारेनरराजतनुचलेदलनखलनिशिचरअनी४

सो० रामस्वरूप तुम्हार वचन अगोचर बुद्धि पर।
अभिगतिअकथअपारनेतिनेतिनितनिगमकह ४

जग पेखन तुम देखन वारे।विधिहरिशम्भुनचावनहारे।
तेउनजानहिंमर्म्मतुम्हारा।औरतुमहिंकोजाननिहारा
सोजानैजेहि देहु जनाई।जानततुम्हैंतुमहिंहोइजाई
तुम्हरीकृपातुमहिंरघुनन्दन।जानतभक्तभक्तउरचन्दन।
चिदानन्दमयदेहतुम्हारी।बिगतबिकारजानअधिकारी
नरतनुधरेउसन्तसुरकाजा।कहहुकरहुजसप्राकृतराजा
रामदेखिसुनिचरिततुम्हारे।जड़मोहहिंकुधहोहिंसुखारे

तुम जो कहहु करहु सब साँचा। जस काछिय तस चाहिय नाँचा।
दो० पूँछेहु मोहिं कि रहौं कहँ मैं पूँछत सकुचाउँ।
जहँ न होहु तहँ देहुँ कहि तुमहिं देखावौं ठाउँ १२२
सुनि मुनि वचन प्रेम रस साने। सकुचि राम मन महँ मुसुकाने
बालमीकि हँसि कहहिं बहोरी। बानी मधुर अमिय रस बोरी
सुनहुं राम अब कहौं निकेता। बसहु जहाँ सिय लषण समेता
जिनके श्रवण समुद्र समाना। कथा तुम्हारि सुभग सरि नाना
भरहिं निरन्तर होहिं न पूरे। तिनके हिय सदन तव रूरे
लोचन चातक जिन करि राखे। रहहिं दरश जलधर अभिलाखे
निदरहिं सरित सिन्धु सर बारी। रूप बिन्दु लहि होहिं सुखारी।
तिनके हृदय सदन सुखदायक। बसहु लषण सिय सहित रघुनायक
दो० यश तुम्हार मानस बिमल हंसिनि जीहा जासु।
मुक्ताहल गुण गण चुगहिं बसहु राम हिय तासु २३
प्रभु प्रसाद शुचि सुभग सुबासा। सादर जासु लहै नित नासा
तुमहिं निवेदित भोजन करहीं। प्रभु प्रसाद पट भूषण धरहीं
सीश नवहिं सुर गुरु द्विज देखी। प्रीति सहित करि विनय विशेखी
कर नित करहिं राम पद पूजा। राम भरोस हृदय नहिं दूजा।

चरण राम तीरथ चलि जाहीं। राम बसहु तिन के मन माहीं।
मंत्र राज नित जपहिं तुम्हारा। पूजहिं तुमहिं सहित परिवारा
तर्पण होम करहिं बिधि नाना। बिप्र जेंवाइ देहिं बहु दाना।
तुम ते अधिक गुरहि जिय जानी। सकल भाव सेवहिं सनमानी
दो० सब करि माँगहिं एक फल राम चरण रति होउ।
तिन के मन मन्दिर बसहु सिय रघुनन्दन दोउ २४
काम क्रोध मद मान न मोहा। लोभ न क्षोभ न राग न द्रोहा।
जिन्ह के कपट दम्भ नहिं माया। तिन्ह के हृदय बसहु रघुराया
सब के प्रिय सब के हितकारी। दुख सुख सरिस प्रशंसा गारी
कहहिं सत्य प्रिय बचन बिचारी। जागत सोवत शरण तुम्हारी
तुमहिं छाँड़ि गति दूसरि नाहीं। राम बसहु तिन्ह के उर माहीं।
जननी सम जानहिं पर नारी। धन पराय बिष ते बिष भारी
जे हरषहिं पर सम्पति देखी। दुखित होहिं पर बिपति बिशेषी
जिनहिं राम तुम प्राण पियारे। तिन के उर शुभ सदन तुम्हारे
दो० स्वामि सखा पितु मातु गुरु जिन के सब तुम तात।
तिन के मन मन्दिर बसहु सीय सहित दोउ भ्रात २५
अवगुण तजि सब के गुण गहहीं। बिप्र धेनु हित संकट सहहीं

नीति निपुन जिन की जग लीका। घर तुम्हार तिन के मन नीका।
गुरा तुम्हार समुझहिं निज दोसू। जेहि सब भाँति तुम्हार भरोसू।
राम भक्त प्रिय लागहिं जेही। तेहि उर बसहु सहित बैदेही।
जाति पाँति धन धर्म बड़ाई। प्रिय परिवार सदन समुदाई।
सब तजि तुमहिं रहै लव लाई। ताके हृदय बसहु रघुराई।
स्वर्ग नरक अपवर्ग समाना। जहँ तहँ देख धरे धनु बाना।
मन क्रम बचन जो राउर चेरा। राम करहु ताके उर डेरा।

दो० जाहि न चाहिय कबहुँ कछु तुम सन सहज सनेह
बसहु निरन्तर तासु उर सो राउर निज गेह २६

इहि बिधि मुनिबर भवन देखाये। बचन सप्रेम राम मन भाये।
कह मुनि सुनहु भानुकुल नायक। आश्रम कहौं समय सुखदायक।
चित्रकूट गिरि करहु निवासू। तहँ तुम्हार सब भाँति सुपासू।
सैल सुहावन कानन चारू। करि केहरि मृग बिहँग बिहारू।
नदी पुनीत पुरान बखानी। अत्रि प्रिया निज तप बल आनी।
सुरसरि धार नाम मन्दाकिनि। जो सब पातक पोतक डाकिनि।
अत्रि आदि मुनिबर तहँ बसहीं। करहिं जोग जप तप तनु कसहीं।
चलहु सफल श्रम सबके कर्हू। राम देहु गौरव गिरि बरहू।

दो० चित्रकूट महिमा अमित कही महा मुनिगाइ।
आइ अन्हाने सरित वर सीय सहित दोउ भाइ २७

रघुवर कहेउ लषण भल घाटू। करहु कतहुँ अब ठाहर ठाटू
लषण दीख पय उतर करारा। चहुँ दिशि फिरेउ धनुष जिमि नारा
नदी पनच सर सम दम दाना। सकल कलुष कलि साउज नाना
चित्रकूट जनु अचल अहेरी। चूक न घात मारु मुठ भेरी
अस कहि लषण ठाम दिखरावा। थल बिलोकि रघुपति सुख पावा
रमेउ राम मन देवन जाना। चले सहित सुरपति परधाना
कोल्ह किरात भेष धरि आये। रचेउ पर्ण तृण सदन सुहाये
बरणि न जाइ मंजु दुइ शाला। एक ललित लघु एक विशाला

दो० लषण जानकी सहित प्रभु राजत पर्ण निकेत।
सोह मदन मुनि भेष जनु रति ऋतु राज समेत २८

अमर नाग किन्नर दिगपाला। चित्रकूट आये तेहि काला
राम प्रणाम कीन्ह सब काहू। मुदित देव लहि लोचन लाहू
बरषि सुमन कह देव समाजू। नाथ सनाथ भये हम आजू
करि बिनती दुख दुसह सुनाये। हरषित निज निज गेह सिधाये
चित्रकूट रघुनन्दन छाये। समाचार सुनि सुनि आये

आवत देखि मुदित मुनिवृन्दा। कीन्ह दण्डवत रघुकुल चन्दा
मुनि रघुबरहिं लाइ उर लेहीं। सुफल होन हित आसिष देहीं
सिय सौमित्रि राम छबि देखहिं। साधन सकल सुफल करि लेखहिं

दो० यथा योग सनमानि प्रभु विदा किये मुनि वृन्द।
करहिं योग जप यज्ञ तप निज आश्रमन्ह सुछन्द २९

यह सुधि कोल्ह किरातन पाई। हरषे जनु नव निधि घर आई
कन्द मूल फल भरि भरि दोना। चले रंक जनु लूटन सोना
तिन महँ जिन्ह देखे दोउ भ्राता। अवर तिन्हहिं पूछहिं मगु जाता
कहत सुनत रघुबीर निकाई। आय सबन देखे रघुराई।
करहिं जोहारि भेंट धरि आगे। प्रभुहिं विलोकत अति अनुरागे
चित्र लिखे जनु जहँ तहँ ठाढ़े। पुलक शरीर नयन जल बाढ़े
राम सनेह मगन सब जाने। कहि प्रिय वचन सकल सनमाने
प्रभुहिं जोहारि बहोरि बहोरी। वचन विनीत कहहिं कर जोरी

दो० अब हम नाथ सनाथ सब भये देखि प्रभु पाय।
भाग्य हमारे आगमन राउर कोशलराय १३०

धन्य भूमि बन पन्थ पहारा। जहँ जहँ नाथ पाँव तुम धारा
धन्य बिहँग मृग कानन चारी। सुफल जन्म भये तुमहिं निहारी

हम सब धन्य सहित परिवारा। देखि नयन भरि दरश तुम्हारा
कीन्ह बास भलि ठाम विचारी। इहाँ सकल रितु रहब सुखारी
हम सब भाँति करब सेवकाई। करि केहरि अहि बाघ बराई।
बन बीहड़ गिरि कंदर खोहा। सब हमार प्रभु पग पग जोहा
तहँ तहँ तुमहिं अहेर खेलाउब। सर निर्झर सब ठाम देखाउब
हम सेवक परिवार समेता। नाथ न सकुचब आयसु देता
दो० वेद वचन मुनि मन अगम ते प्रभु करुना ऐन।
वचन किरातन के सुनत जिमि पितु बालक बैन ३१
रामहिं केवल प्रेम पियारा। जानि लेहु जो जाननिहारा
राम सकल बनचर परितोषे। कहि मृदु वचन प्रेम परिपोषे
विदा किये सिर नाइ सिधाये। प्रभु गुन कहत सुनत घर आये
इहि विधि सीय सहित दोउ भाई। बसहिं बिपिन सुर मुनि सुखदाई
जब ते आइ रहे रघुनायक। तब ते भा बन मंगल दायक
फूलहिं फलहिं बिटप बिधि नाना। मंजु ललित बर बेलि बिताना
सुरतरु सरिस सुभाव सुहाये। मनहुँ बिबुध बन परिहरि आये
गुंजत मंजुल मधुकर श्रेनी। त्रिबिध बयारि बहै सुख देनी
दो० नील कराठ कल कराठ सुक चातक चक्क चकोर।

भाँति भाँति बोलहिं विहंगा श्रवण सुखद चित चोरइ ३२
कारि केहरि कपि कोल कुरंगा। विगत वयर विहरहिं इक संगा
फिरत अहेर राम छबि देखी। होहिं मुदित मृगवृन्द विसेखी
बिबुध बिपिन जहँ लगि जग माहीं। देखि राम बन सकल सिहाहीं
सुरसरि सरस इ दिनकर कन्या। मेकल सुता गोदावरि धन्या
सब सरि सिन्धु नदी नद नाना। मन्दाकिनि कर करहिं बखाना
उदय अस्त गिरि अरु कैलासू। मन्दर मेरु सकल सुर वासू
शैल हिमाचल आदिक जेते। चित्रकूट यश गावहिं तेते॥
देव मुदित मन सुख न समाई। बिनु श्रम बिपुल बड़ाई पाई
दो० चित्रकूट के विहंग मृग बेलि बिटप तृण जाति।
पुण्य पुञ्ज सब धन्य अस कहहिं देव दिन राति ३३
नयनवन्त रघुपतिहि बिलोकी। पाइ जन्म फल होहिं बिशोकी
परसि चरण रज अचर सुखारी। भये परम पद के अधिकारी
सो बन शैल सुभाय सुहावन। मंगलमय अति पावन पावन
महिमा कहौं कवन बिधि तासू। सुखसागर जहँ कीन्ह निवासू
पय पयोधि तजि अवध बिहाई। जहँ सिय राम लषण रहे आई
कहि न सकहिं सुख भाग तिन्ह केरा। जो अति सहस होहिं सहस आनन

सो मैं बरणि कहौं बिधि केही। डाबर कमठ कि मन्दर लेही.
सेवहिं लषण करम मन बानी। जाइ न शील सनेह बखानी
दो० सरल सुबक्र लखि सिय राम पद जानि आपु पर नेह
करत लषण सपनेन चित बन्धु मातु पितु गेह ३४
राम संग सिय रहहिं सुखारी। पुर परिजन गृह सुरति बिसारी
छन छन पिय बिधु बदन निहारी। प्रमुदित मनहुं चकोर कुमारी
नाह नेह नित बढ़त बिलोकी। हरषित रहति दिवस जिमि कोकी
सिय मन राम चरण अनुरागा। अवध सहस सम बन प्रिय लागा
परी कुटी प्रिय प्रीतम संगा। प्रिय परिवार कुरंग बिहंगा
सासु श्वशुर सम मुनितिय मुनिवर। असन अमिय सम कन्द मूल फर
नाथ साथ साथरी सुहाई। मयन शयन शत सम सुखदाई
लोकप होहिं बिलोकत जासू। तेहि कि मोह सक बिषय बिलासू
दो० सुमिरत रामहिं तजहिं जन तृण सम बिषय बिलासु
राम प्रिया जग जननि सिय कछु न आचरज तासु ३५
सीय लषण जेहि बिधि सुख लहहीं। सोइ रघुनाथ करैं जोइ कहहीं
कहहिं पुरातन कथा कहानी। सुनहिं लषण सिय अति सुख मानी
जब जब राम अवध सुधि करहीं। तब तब बारि बिलोचन भरहीं।

सुमिरि मातु पितु परिजन भाई। भरत सनेह सील सेवकाई।
कृपासिन्धु प्रभु होहिं दुखारी। धीरज धरहिं कुसमय बिचारी
लखि सिय लखन बिकल होइ जाहीं। जिमि पुरुषहिं अनुसर परिछाहीं
प्रिया बन्धु गति लखि रघुनन्दन। धीर कृपालु भक्त उर चन्दन।
लगे कहन कछु कथा पुनीता। सुनि सुखलहहिं लखन अरु सीता।

दो० राम लखन सीता सहित सोहत पर्ण निकेत।
जिमि बासव बस अमरपुर शची जयन्त समेत ३६

जुगवहिं प्रभु सिय अनुजहिं कैसे। पलक बिलोचन गोलक जैसे
सेवहिं लखन सीय रघुबीरहिं। जिमि अबिबेकी पुरुष शरीरहिं
एहि बिधि प्रभु बन बसहिं सुखारी। खग मृग सुर तापस हितकारी
कहेउँ राम बन गवन सुहावा। सुनहु सुमन्त्र अवध जिमि आवा
फिरेउ निषाद प्रभुहिं पहुँचाई। सचिव सहित रथ देखेउ आई।
मंत्री बिकल बिलोकि निषादू। कहि न सकहिं जस भयउ बिषादू
राम राम सिय लखन पुकारी। परेउ धरनितल व्याकुल भारी
देखि दखिन दिशि हय हहिनाहीं। जनु बिनु पंख बिहंग अकुलाहीं

दो० नहिं तृण चरहिं न पियहिं जल मोचत लोचन बारि।
व्याकुल भयउ निषाद गण रघुबर बाजि निहारि ३७

धरिधीरजतबकहहिंनिषादू। अबसुमन्तपरिहरहुविषादू
तुमपण्डितपरमारथज्ञाता। धरहुधीरलखिबामविधाता
विविधकथाकहिकहिमृदुबानी। रथबैठारयोबरबसआनी.
शोकशिथिलरथसकहिंनहाँकी। रघुबरविरहपीरउरबाँकी
तरफराहिंमगुचलहिंनघोरे। बनमृगमनहुआनिरथजोरे.
अटकिपरहिंफिरिचितवहिंपीछे। रामवियोगविकलदुखतीछे
जोकहरामलषणाबैदेही। हिकरिहिकरिहयहेरहिंतेही
बाजिविरहगतिकिमिकहिजाती। बिनुमणिफणिकविकलजेहिभाँती
दो० भयेनिषादविषादबश देखतसचिवतुरंग।
बोलिसुसेवकचारितब दियेसारथीसंग ३८
गुहसारथिहिफिरयोपहुँचाई। बिरहविषादबरणिनहिंजाई
चलेअवधलैरथहिंनिषादा। होतदाहिनेदरामगनबिषादा
शोचसुमन्तविकलदुखदीना। धिकजीवनरघुबीरबिहीना
रहिहिनअन्तहुअधमशरीरू। यशनलहेउबिछुरतरघुबीरू
भयेअयशअघभाजनप्राना। कवनहेतुनहिंकरतपयाना
अहहमन्दमतिअवसरचूका। अजहुँनहृदयहोतदुइटूका।
मींजिहाथशिरधुनिपछिताई। मनहुँकृपणाधनराशिगँवाई

बिरद बाँधि बर बीर कहाई। चले समर जनु सुभट पराई
दो० बिप्र बिबेकी बेद बिद सम्मत साधु सुजाति।
जिमि धोखे मद पान कर सचिव शोच तेहि भाँति ३९
जिमि कुलीन तिय साधु सयानी। पति देवता कर्म्म मन बानी
रहै कर्म्म बश परिहरि नाहू। सचिव हृदय तिमि दारुन दाहू
लोचन सजल दृष्टि भइ थोरी। सुनै न श्रवन बिकल मति भोरी
सूखहिं अधर लागि मुह लाटी। जिय न जाइ उर अवध कपाटी
बिबरन भयउ न जाइ निहारी। मारेसि मनहुँ पिता महतारी
हानि गलानि बिपुल मन व्यापी। यमपुर पन्थ शोच जिमि पापी
बचन न आव हृदय पछिताई। अवध काह मैं देखब जाई
राम रहित रथ देखिहि जोई। सकुचिहि मोहिं बिलोकत सोई
दो० धाइ पूँछिहहिं मोहिं जब बिकल नगर नर नारि।
उतर देब मैं सबहि तब हृदय बज्र बैठारि १४०॥
पुँछिहहिं दीन दुखित सब माता। कहब काह मैं तिनहिं बिधाता
पुँछिहहिं जबहिं लखन महतारी। कहिहौं कवन सँदेश सुखारी
राम जननि जब आइहि धाई। सुमिरि बच्छ जिमि धेनु लवाई
पूँछत उतर देब मैं तेही। गे बन राम लखन बैदेही

जेइ पूँछिहि तेहि उत्तर देबा। जाइ अवध अबयह सुख लेबा
पूँछहिं जबहिं राउ दुख दीना। जीवन जासु राम आधीना
देहौं उतर कवन मुँह लाई। आयउँ कुशल कुँवर पहुँचाई
सुनत लषण सिय राम सँदेशू। तृण इव तनु परिहरब नरेशू।
दो० हृदय न बिदरत पंक जिमि बिछुरत प्रीतम नीर।
जानत हौं मोहिं दीन्ह विधि यह यातना शरीर ४१
इहि विधि करत पन्थ पछितावा। तमसा तीर तुरत रथ आवा
बिदा किये करि बिनय निषादू। फिरे पाँव परि बिकल बिषादू
पैठत नगर सचिव सकुचाई। जनु मारेसि गुरु ब्राह्मण गाई
बैठि बिटप तर दिवस गँवावा। साँझ समय तेइ अवसर पावा
अवध प्रवेश कीन्ह अँधियारे। पैठ भवन रथ राखि दुआरे।
जिन्ह जिन्ह समाचार सुनि पाये। भूप द्वार रथ देखन आये॥
रथ पहिचानि बिकल लखि घोरे। गरहिं गात जिमि आतप ओरे
नगर नारि नर व्याकुल कैसे। निघटत नीर मीन गण जैसे.
दो० सचिव आगमन सुनत सब बिकल भईं रनिवास।
भवन भयंकर लाग तेहि मानहुँ प्रेत निवास ४२
अति आरत सब पूँछहिं रानी। उतर न आव बिकल भइ बानी

सुनै न श्रवणानयन नहिं सूझा। कहहु कहाँ नृप जेहि तेहि बूझा
दासिन्ह दीख सचिव बिकलाई। कौशल्या गृह गईं लिवाई।
जाइ सुमन्त दीख कस राजा। अमिय रहित जनु चन्द बिराजा
आसन शयन बिभूषण हीना। परेउ भूमितल निपट मलीना
लेइ उसास शोच एहि भाँती। सुरपुर ते जनु खसेउ ययाती
लेत शोच भरि छनाछन छाती। जनु जरि पंख परेउ सम्पाती
राम राम कह राम सनेही। पुनि कह राम लषण वैदेही

दो० देखि सचिव जय जीव कहि कीन्हेसि दण्ड प्रणाम।
सुनत उठे व्याकुल नृपति कहु सुमंत कहँ राम ४३

भूप सुमन्त लीन्ह उर लाई। बूड़त कछु अधार जनु पाई
सहित सनेह निकट बैठारी। पूँछत राउ नयन भरि बारी
राम कुशल कहु सखा सनेही। कहँ रघुनाथ लषण वैदेही
आनेहु फेरि कि वनहिं सिधाये। सुनत सचिव लोचन जल छाये
शोक बिकल पुनि पूछ नरेशू। कहु सिय राम लषण संदेशू
राम रूप गुण शील सुभाऊ। सुमिरि सुमिरि उर शोचत राऊ
राज सुनाइ दीन्ह बन बासू। सुनि मन भयउ न हरष हिरासू
सो सुत बिछुरत गये न प्राना। को पापी बड़ मोहिं समाना

दो० सखा राम सिय लषण जहँ तहाँ मोहिं पहुँचाउ।
नाहिंत चाहत चलन अब प्राण कहौं सतभाउ ४४

पुनि पुनि पूँछत मंत्रिहि राऊ। प्रीतम सुवन सँदेश सुनाऊ
सुनहुँ सखा सोइ करिय उपाऊ। राम लषण सिय बेगि देखाऊ
सचिव धीर धरि कह मृदु बानी। महाराज तुम पण्डित ज्ञानी
बीर सुधीर धुरन्धर देवा। साधु समाज सदा तुम सेवा
जन्म मरण सब दुख सुख भोगा। हानि लाभ प्रिय मिलन बियोगा
काल कर्म्म बश होहिं गुसाईं। बरबश राति दिवस की नाईं
सुख हर्षहिं जड़ दुख बिलखाहीं। दोउ सम धीर धरहिं मन माहीं
धीरज धरहु बिबेक बिचारी। छाँड़िय सोच सकल हितकारी

दो० प्रथम बास तमसा भयउ दूसर सुरसरि तीर।
न्हाइ रहे जल पान करि सिय समेत दोउ बीर ४५

केवट कीन्ह बहुत सेवकाई। सो यामिनि शृंगबेर गवाँई
होत प्रात बट क्षीर मँगावा। जटा मुकुट निज शीश बनावा
राम सखा तब नाव मँगाई। प्रिया चढ़ाइ चढ़े रघुराई
लषण धरे धनु बाण बनाई। आपु चढ़े प्रभु आयसु पाई
बिकल बिलोकि मोहिं रघुबीरा। बोले मधुर बचन धरि धीरा

तात प्रणामतात सन कहेऊ। बार बार पद पंकज गहेऊ
करेउ पायँ परिविनय बहोरी। तातकरियजनि चिन्ता मोरी
बन मगु मंगल कुशल हमारे। कृपा अनुग्रह पुराय तुम्हारे
छं० तुम्हरे अनुग्रह तात कानन जात सब सुख पाइहौं।
प्रतिपालि आयसु कुशल देखन पायँ पुनि फिरि आइहौं
जननी सकल परितोषि करि परि पायँ करि विनती घनी।
तुलसी करेहु सोइ यतन जेहि विधि कुशल रह कोशलधनी ५
सो० गुरु सन कहब संदेश बार बार पद पद्म गहि।
करब सोइ उपदेश जेहि न शोच मोहिं अवध पति ५
पुरजन परिजन सकल निहोरी। तात सुनायहु विनती मोरी.
सोइ सब भाँति मोर हितकारी। जातें रह नर नाह सुखारी।
कहब संदेश भरत के आये। नीति न तजव राज पद पाये
पालेहु प्रजहि कर्म्म मन बानी। सेयहु मातु सकल सम जानी
और निबाहब भायप भाई। करि पितु मातु सुजन सेवकाई
तात भाँति तेहि राखब राऊ। शोच मोर जेहि करहिं न काऊ
लयरा कहेउ कछु वचन कठोरा। बरजि राम पुनि मोहिं निहोरा
बार बार निज शपथ दिवाई। कहब न तात लयरा लरिकाई

दो० कहि प्रणामकछु कहन लिय सिय भइ शिथिल सनेह
थकित वचन लोचन सजल पुलक पल्लवित देह ४६

तेहि अवसर रघुबर रुख पाई। केवट पारहिं नाव चलाई।
रघुकुल तिलक चले इहि भाँती। देखेउँ ठाढ़ कुलिश धरि छाती
मैं आपन किमि कहउँ कलेशू। जिअत फिरेउँ लै राम सँदेशू
अस कहि सचिव वचन रहि गयऊ। हानि गलानि सोच वश भयऊ
सुनत सुमन्त वचन नर नाहू। परेउ धरणि उर दारुण दाहू
तलफत विषम मोह मन मापा। माँजा मनहुँ मीन कहँ व्यापा
करि विलाप सब रोवहिं रानी। महा विपति किमि जाइ बखानी
सुनि विलाप दुखहू दुख लागा। धीरजहू कर धीरज भागा

दो० भयउ कोलाहल अवध अति सुनि नृप राउर शोर।
विपुल विहँग बन परेउ निशि मानहुँ कुलिश कठोर ४७

प्राण कण्ठगत भयउ भुआलू। मणि विहीन जिमि व्याकुल व्यालू
इन्द्रिय सकल विकल भइँ भारी। जनु सर सरसिज वन बिनु वारी
कौशल्या नृप दीख मलीना। रवि कुल रवि अथये जनु दीना
उर धरि धीर राम महतारी। बोली वचन समय अनुहारी
नाथ समुझि मन करिय विचारू। राम वियोग पयोधि अपारू

कर्णधारतुम अवध जहानू। चढ़उ सकल प्रिय पुरजन मानू
धीरज धरिय तौ पाइय पारू। नाहिंत बूड़हि सब परिवारू
जोजिय धरिय विनय पिय मोरी। रामलषण सिय मिलब बहोरी
दो० प्रिया वचन मृदु सुनत नृप चितयउ आँखि उघारि
तलफत मीन मलीन जनु सींचत शीतल वारि ४८
धरि धीरज उठि बैठ भुआलू। कहु सुमन्त कहँ राम कृपालू
कहाँ लषण कहँ राम सनेही। कहँ प्रिय पुत्र वधू वैदेही
विलपत राउ विकल बहु भाँती। भइ युग सरिस सिराति न राती
तापस अन्ध शाप सुधि आई। कौशल्यहि सब कथा सुनाई
भयउ विकल वरणत इतिहासा। राम रहित धिक जीवन आसा
सो तनु राखि करब मैं काहा। जेइ न प्रेम पन मोर निवाहा
हा रघुनन्दन प्राण पिरीते। तुम बिनु जिअत बहुत दिन बीते
हा जानकी लषण हा रघुवर। हा पितु हित चित चातक जलधर
दो० राम राम कहि राम कहि राम राम कहि राम।
तनु परिहरि रघुवर विरह राउ गये सुर धाम ४९
जियन मरण फल दशरथ पावा। अरु अनेक जग जस विस्तावा
जियत राम विधु वदन निहारी। राम विरह करि मरण सँवारी

शोकविकल सबरोवहिंरानी। रूपशील बल तेज बखानी
करहिंविलाप अनेकप्रकारा। परहिं भूमितल बारहिं बारा
विलपहिंविकलदासअरुदासी। घर घररुदन करहिं पुरबासी
अयउ आजुभानुकुल भानू। धर्म अवधिगुणरूपनिधानू
गारी सकल कैकयिहि देहीं। नयनविहीनकीन्ह जगजेहीं
इहिविधिविलपतरैनिविहानी। आये सकल महा मुनि ज्ञानी
दो० तबवशिष्ठ मुनिसमयसमकहि अनेकइतिहास।
शोकनिवारेउ सबहिकर निजविज्ञानप्रकास१५०
तेल नावभरि नृप तनु राखा। दूतबुलाइ बहुरि अस भाखा
धावहु वेगि भरत पहँ जाहू। नृपसुधिकतहुँकहहु जनिकाहू
इतनेकहेहु भरत सन जाई। गुरु बुलाइ पठये दोउ भाई
सुनि मुनिआयसुधावनधाये। चले वेगि वर बाजि लजाये.
अनरथ अवध अरम्भेउ जबते। कुशकुनहोहिं भरत कहँ तबते
देखहिंराति भयानकसपना। जागिकरहिं कटुकोटिकल्पना
विप्रजेंवाइ देहिं दिन दाना। शिवअभिषेककरहिंविधिनाना
माँगहिं हृदय महेश मनाई। कुशलमातुपितुपरिजन भाई
दो० इहिविधिशोचत भरतमन धावन पहुँचेजाइ।

गुरु अनुशासन श्रवण सुनि चले गनेश मनाइ ५१
चले समीर वेगि हय हाँके। लाँघत सरित शैल वन बाँके
हृदय शोच बड़ कछु न सुहाई। असजानहिं जिय जाउँ उड़ाई
एक निमेष बरस सम जाई। इहि विधि भरत नगर नियराई
अशकुन होहिं नगर पैठारा। रटहिं कुभाँति कुखेत करारा
खर शृगाल बोलहिं प्रतिकूला। सुनि सुनि होहिं भरत उर शूला
श्रीहत सर सरिता वन बागा। नगर विशेष भयावन लागा
खग मृग हय गज जाहिं न जोये। राम वियोग कुरोग विगोये
नगर नारि नर निपट दुखारी। मनहुँ सबनि सब सम्पति हारी
दो० पुरजन मिलहिं न कहहिं कछु गवहिं जोहारहिं जाहिं।
भरत कुशल पूँछि न सकहिं भय विषाद मन माहिं ५२
हाट बाट नहिं जाइ निहारी। जनु पुर दशा दिशिलागि दवारी
आवत सुत सुनि कैकय नन्दिनि। हरषी रवि कुल जलरुह चन्दिनि
सजि आरती मुदित उठि धाई। द्वारहि भेंटि भवन लै आई
भरत दुखित परिवार निहारा। मानहुँ तुहिन वनज वन मारा
कैकेयी हरषित इहि भाँती। मनहुँ मुदित दवलाइ किराती
सुतहि सशोच देखि मन मारे। पूँछति नैहर कुशल हमारे

सकलकुशलकहि भरतसुनाई। पूछी निजकुलकुशलभलाई
कहु कहँ तातकहाँ सबमाता। कहँसियरामलषणप्रियभ्राता
दो० सुनिसुतवचनसनेहमयकपटनीर भरिनयन।
भरतश्रवणामनशूलसमपापिनिबोलीबयन५३
तातबात मैं सकल सँवारी। भइ मन्थरा सहाइ बिचारी
कछुककाजबिधिबीचबिगारेउ। भूपति सुरपतिपुरपगुधारेउ.
सुनतभरतभयेबिकलबिषादा। जनुसहमेउकरिकेहरिनादा
तात तात हा तात पुकारी। परेउ भूमितलब्याकुल भारी
चलतन देखन पायउँ तोहीं। तात न रामहिं सौंपेहु मोहीं.
बहुरि धीर धरि उठे सँभारी। कहुपितुमरणा हेतुमहतारी
सुनिसुतवचनकहतिकैकेई। मर्म्म पाछि जनु माहुर देई
आदिहितेसबआपनिकरणी। कुटिलकठोरमुदितमनवरणी
दो० भरतहिंबिसरेउपितुमरणासुनतरामवनगौन।
हेतुअपनपुनिजानिजियथकितरहेधरिमौन५४
बिकलबिलोकिसुतहिसमुझावति। मनहुँजरेपरलोनलगावति
तातराउ नहिं शोचन योगू। बिढ़इसुकृतयराकीन्हेउ भोगू
जीवत सकलजन्म फलपाये। अन्तअमरपतिसदन सिधाये

अस अनुमानि शोच परिहरहू। सहित समाज राज पुर करहू
सुनि सुठि सहमेउ राजकुमारा। पाकें छत जनु लाग अँगारा
धीरज धरि भरि लेहिं उसासा। पापिनि सबहि भाँति कुल नासा
जो पै कुरुचि रही अति तोही। जनमत काहे न मारेसि मोही
पेड़ काटि तैं पल्लव सींचा। मीन जिअन हित बारि उलीचा
दो० हंस बंश दशरथ जनक राम लखन से भाइ।
जननी तू जननी भई बिधि तें कहा बसाइ ५५
जब तें कुमति कुमत जियँ ठयऊ। खरभर खरभर हृदय न गयऊ
बर माँगत मन भइ नहिं पीरा। गरि न जीह मुँह परेउ न कीरा
भूप प्रतीति तोरि किमि कीन्ही। मरण काल बिधि मति हरि लीन्ही
बिधि हुँ न नारि हृदय गति जानी। सकल कपट अघ अवगुन खानी
सरल सुशील धर्म्म रत राऊ। सो किमि जानहिं तीय सुभाऊ
अस को जीव जन्तु जग माहीं। जेहि रघुनाथ प्राण प्रिय नाहीं
मे अति अहित राम तेउ तोही। को तू अहसि सत्य कहु मोही
जो हसि सो हसि मुँह मसि लाई। आँखि ओट उठि बैठहि जाई
दो० राम विरोधी हृदय तें प्रकट कीन्ह बिधि मोहिं।
मो समान को पातकी बादि कहौं कछु तोहिं ५६

सुनि शत्रुघ्न मातु कुटिलाई। जरहि गात रिस कछु न बसाई
तेहि अवसर कुबरी तहँ आई। बसन बिभूषण बिबिध बनाई
लखि रिस भरेउ लखण लघु भाई। बरत अनल घृत आहुति पाई
हुमकि लात तकि कूबर मारा। परि मुँह भरि महि करति पुकारा
कूबर टूटेउ फूट कपारू। दलित दसन मुख रुधिर प्रचारू
आहि दय्या मैं काह नसावा। करत नीक फल अनइस पावा
पुनि रिपुहन लखि नख सिख खोटी। लगे घसीटन धरि धरि झोंटी
भरत दयानिधि दीन्ह छुड़ाई। कौशल्या पहँ गे दोउ भाई
दो० मलिन वसन विवरण विकल कृश शरीर दुख भार
कनक कमल वर बेलि बन मानहुँ हनी तुषार ५७
भरतहिं देखि मातु उठि धाई। मूर्च्छित अवनि परी झँव आई
देखत भरत विकल भये भारी। परे चरण तनु दशा बिसारी
मातु तात कहँ देहि दिखाई। कहँ सिय राम लखण दोउ भाई
कैकयि कत जनमी जग मांझा। जो जनमी भइ काहे न बांझा
कुल कलंक जेहि जनमेउ मोही। अपयश भाजन प्रियजन द्रोही
को त्रिभुवन मोहिं सरिस अभागी। गति असि तोरि मातु जेहि लागी
पितु सुरपुर बन रघुकुल केतू। मैं केवल सब अनरथ हेतू

धिक मोहिं भयउ वेनु वन आगी। दुसह दाह दुख दूषन भागी
दो० मातु भरत के वचन मृदु सुनि पुनि उठी सँभारि।
लिये उठाइ लगाइ उर लोचन मोचति वारि ५८
सरल सुभाय माय हिय लाये। अति हित मनहुँ राम फिरि आये
भेंटेउ बहुरि लषन लघु भाई। शोक सनेह न हृदय समाई
देखि सुभाव कहत सब कोई। राम मातु अस काहे न होई।
माता भरत गोद बैठारे। आंसु पोंछि मृदु वचन उचारे
अजहुँ वच्छ बलि धीरज धरहू। कुसमय समुझि शोक परिहरहू
जनि मानहु हिय हानि गलानी। काल कर्म्म गति अघटित जानी
काहुहि दोष देहु जनि ताता। मा मोहिं सब विधि वाम विधाता
जो एसेहु दुख मोहिं जियावा। अजहुँ को जानै का तेहि भावा
दो० पितु आयसु भूषन वसन तात तजे रघुवीर।
विसमय हरष न हृदय कछु पहिरे वलकल चीर ५९
मुख प्रसन्न मन राग न रोषू। सब कर सब विधि कीन्ह परितोषू
चले विपिन सुनि सिय सँग लागी। रही न राम चरण अनुरागी
सुनतहि लषन चले उठि साथा। रहे न यतन किये रघुनाथा
तब रघुपति सबही सिर नाई। चले संग सिय अरु लघु भाई

रामलषणसियबनहिंसिधाये। गईन संग न प्राण पठाये।
यहसबभाइनआँखिनआगे। उनतजा तनुजीव अभागे.
मोहिंन लाजनिजनेहनिहारी। रामसरिस सुत मैं महतारी
जियेमरै भल भूपति जाना। मोरहृदयशतकुलिशसमाना
दो० कौशल्या के वचनसुनि भरत सहित रनिवास।
व्याकुल विलपत राजगृह मानहुशोक निवास १६०
विलपहिंविकलभरतदोउभाई। कौशल्या लिय हृदयलगाई
भाँतिअनेक भरत समुझाये। कहि विवेकवर वचनसुनाये
भरतहु मातु सकल समुझाई। कहि पुराण श्रुतिकथा सुहाई
छलविहीनशुचिसरलसुबाणी। बोले भरत जोरि युग पाणी
जे अघ मातु पिता गुरु मारे। गाइगोठ महि सुर पुर जारे
जे अघतियबालकबधकीन्हे। मीत महीपति माहुर दीन्हे।
जे पातक उपपातक अहहीं। कर्मवचनमनभवकविकहहीं
ते पातक मोहिं होउविधाता। जो यह होइ मोर मत माता
दो० जे परिहरि हरिहर चरण भजहिं भूत गण घोर।
तिन्हकीगति मोहिंदेव विधि जोजननीमतमोर १६१
बेंचहिंवेद धर्म्म दुहि लेहीं। पिशुन पराव पापकहिदेहीं

कपटी कुटिल कलह प्रिय क्रोधी। वेद विदूषक विश्व विरोधी।
लोभी लम्पट लोल लबारा। जे ताकहिं पर धन पर दारा
पावउँ मैं तिन करि गति घोरा। जो जननी यह सम्मत मोरा
जे नहिं साधु संग अनुरागे। परमारथ पथ बिमुख अभागे
जेन भजहिं हरि नर तनु पाई। जिनहिं न हरि हर सुयस सुहाई
तजि श्रुति पन्थ बाम पथ चलहीं। बञ्चक बिरचि बेष जगछलहीं
तिन की गति मोहिं शंकर देऊ। जननी जो यह जानौं भेऊ।

छं० मम वचन कर्म्म कपाय तन कर दास मैं सुनु मातुरी।
अवसत राम सुजान जानत प्रीति अरु छल चातुरी॥
अस कहत लोचन बहत जल तनु पुलक नख लेखत महीं।
हिय लाय लिये बहोरि जननी जानि प्रभु पद रत सही ६

दो० मातु भरत के वचन सुनि साँचे सरल सुभाय।
कहति राम प्रिय तात तुम सदा वचन मन काय ६२

राम प्राण ते प्राण तुम्हारे। तुम रघुपतिहि प्राण ते प्यारे
बिधु बिष चुवै स्रवै हिम आगी। होइ वारिचर वारि विरागी
भये ज्ञान बरु मिटै न मोहू। तुम रामहिं प्रतिकूल न होहू
मत तुम्हार अस जो जग कहही। सो सपनेहुं सुख सुगति न लहही

अस कहि मातु भरत हिय लाये। थन पय स्रवहिं नयन जल छाये
करत विलाप विपुल इहि भाँती। बैठे बीति गई सब राती।
बामदेव वशिष्ठ मुनि आये। सचिव महाजन सकल बुलाये
मुनि बहु भाँति भरत उपदेशे। कहि परमारथ वचन सुदेशे

दो० तात हृदय धीरज धरहु करहु जो अवसर आजु।
उठे भरत गुरु वचन सुनि करन कहेउ सब काजु ९३

नृपतनु वेद विहित अन्हवावा। परम विचित्र विमान बनावा
गहि पद भरत मातु सब राखीं। रहीं रानि दरशन अभिलाखीं
चन्दन अगर भार बहु आये। अमित अनेक सुगन्ध सुहाये
सरयु तीर रचि चिता बनाई। जनु सुर पुर सोपान कराई
इहि विधि दाह क्रिया सब कीन्ही। विधिवत न्हाइ तिलांजलि दीन्ही
शोधि सुमृति सब वेद पुराना। कीन्ह भरत दशगात्र बिधाना
जहँ जस मुनिवर आयसु दीन्हा। तहँ तस सहस भाँति सब कीन्हा
भये विशुद्ध दिये सब दाना। धेनु बाजि गज बाहन नाना

दो० सिंहासन भूधरा बसन अन्न धरणी धन धाम।
दिये भरत लहि भूमिसुर भे परिपूरण काम ९४

पितु हित भरत कीन्ह जसि करणी। सो मुख लाख जाइ नहिं बरणी

सुदिन शोधि मुनिवर तब आये। सकल महाजन सचिव बुलाये
बैठे राज सभा सब जाई। पठये बोलि भरत दोउ भाई
भरत बशिष्ठ निकट बैठारे। नीति धर्म्म मय बचन उचारे
प्रथम कथा सब मुनिवर बरणी। कैकयि कुटिल कीन्हि जसि करणी
भूप धर्म्म ब्रत सत्य सराहा। जेहि तनु परिहरि प्रेम निबाहा
कहत राम गुण शील सुभाऊ। सजल नयन पुलके मुनि राऊ
बहुरि लखण सिय प्रीति बखानी। शोक सनेह मगन मुनि ज्ञानी

दो० सुनहु भरत भावी प्रबल बिलखि कहेउ मुनिनाथ
हानि लाभ जीवन मरण यश अपयश बिधि हाथ ६५

असबिचारि केहि दीजिय दोषू। व्यर्थ काहि पर कीजिय रोषू
तात बिचार करहु मन माहीं। शोच योग दशरथ नृप नाहीं
शोचिय बिप्र जो बेद बिहीना। तजि निज धर्म्म बिषय लय लीना
शोचिय नृपति जो नीति न जाना। जेहि न प्रजा प्रिय प्रान समाना
शोचिय बैश्य कृपण धनवानू। जो न अतिथि शिव भक्त सुजानू
शोचिय शूद्र बिप्र अपमानी। मुखर मान प्रिय ज्ञान गुमानी
शोचिय पुनि पति बञ्चक नारी। कुटिल कलह प्रिय इच्छाचारी
शोचिय बटु निज ब्रत परिहरई। जो नहिं गुरु आयसु अनुसरई

दो० शोचिय गृही जो मोह वश करै धर्म पथ त्याग।
शोचिय यती प्रपञ्च रत विगत विवेक विराग ईई
वैखानस सोइ शोचन योगू। तप विहाय जेहि भावै भोगू.
शोचिय पिशुन अकारण क्रोधी। जननि जनक गुरु बन्धु विरोधी
सब विधि शोचिय पर अपकारी। निज तनु पोषक निर्दय भारी
शोचनीय सबही बिधि सोई। जो न छाँड़ि छलहरि जन होई.
शोचनीय नहिं कोशल राऊ। भुवन चारि दश प्रगट प्रभाऊ
भयउ न अहै न अब होनिहारा। भूप भरत जस पिता तुम्हारा
विधिहरिहरसुरपतिदिशिनाथा। वरणहिं सब दशरथ गुणगाथा
दो० कहहु तात केहि भाँति कोउ करिहि बड़ाई तासु।
रामलखण तुम शत्रुहन सरिस सुवन शुचि जासु ईञ
सब प्रकार भूपति बड़ भागी। बादि विषाद करिय तेहि लागी
यह सुनि समुझि शोच परिहरहू। शिरधरि राज रजायसु करहू।
राय राज पद तुम कहँ दीन्हा। पिता वचन फुर चाहिय कीन्हा
तजे राम जेहि वचन हिं लागी। तनु परिहरेउ राम विरहागी
नृपहि वचन प्रिय नहिं प्रिय प्राणा। करहु तात पितु वचन प्रमाणा
करहु शीश धरि भूप रजाई। हैतुम कहँ सब भाँति भलाई

परशुराम पितु आज्ञा राखी। मारी मातु लोक सब साखी
तनय ययाति हिं यौवन दयऊ। पितु आज्ञा अघ अयश न भयऊ
दो॰ अनुचित उचित विचार तजि जे पालहिं पितु वयन।
ते भाजन सुख सुयश के बसहिं अमरपति अयन ६८
अवशि नरेश वचन फुर करहू। पालहु प्रजा शोक परिहरहू
सुरपुर नृप पाइहि परितोषू। तुमकहं सुकृत सुयश नहिं दोषू
वेद विहित सम्मत सबही का। जेहि पितु देइ सो पावै टीका
करहु राज परिहरहु गलानी। मानहु मोर वचन हित जानी
सुनि सुख लहब राम वैदेही। अनुचित कहब न पण्डित केही
कौशल्यादि सकल महतारी। तेउ प्रजा सुख होहिं सुखारी
परम तुम्हार राम सब जानहिं। सोसब विधि तुमसन भल मानहिं
सौंपेहु राज राम के आये। सेवा करेहु सनेह सुहाये.
दो॰ कीजिय गुरु आयसु अवशि कहहिं सचिव कर जोरि
रघुपति आये उचित जस तब तस करब बहोरि ६९
कौशल्या धरि धीरज कहई। पूत पिता गुरु आयसु अहई
सो आदरिय करिय चित मानी। तजिय विषाद काल गति जानी
बन रघुपति सुरपुर नर नाहू। तुमइहि भाँति तात कदराहू.

परिजन प्रजा सचिव सब कहँ अंबा। तुमही सुत सब कहँ अवलंबा।
लखि बिधि बाम काल कठिनाई। धीरज धरहु मातु बलि जाई।
सिर धरि गुरु आयसु अनुसरहू। प्रजा पालि परिजन दुख हरहू।
गुरु के बचन सचिव अभिनन्दन। सुनत भरत हिय हित जनु चन्दन
सुनी बहोरि मातु मृदु बानी। शील सनेह सरल रस सानी
छं० सानी सरल रस मातु बानी सुनि भरत व्याकुल भये।
लोचन सरोरुह स्रवत सींचत बिरह उर अंकुर नये॥
सो दशा देखत समय तेहिं बिसरी सबहि सुधि देह की।
तुलसी सराहत सकल सादर सींव सहज सनेह की ७
सो० भरत कमल कर जोरि धर्म्म धुरन्धर धीर धरि।
बचन अमिय जनु बोरि देत उचित उत्तर सबहिं ६
मोहिं उपदेश दीन गुरु नीका। प्रजा सचिव सम्मत सबही का
मातु उचित पुनि आयसु दीन्हा। अवसि शीश धरि चाहिय कीन्हा
गुरु पितु मातु स्वामि हित बानी। सुनि मन मुदित करिय भल जानी
उचित कि अनुचित किये विचारू। धर्म्म जाइ शिर पातक भारू
तुम तो देहु सरल सिख सोई। जो आचरत मोर हित होई
यद्यपि यह समुझत हौं नीके। तदपि होत परितोष न जीके

अबतुम्ह विनय मोरि सुनि लेहू। मोहि अनुहरत सिखावन देहू
उत्तर देउँ छमब अपराधू। दुखित दोष गुन गनहिं न साधू
दो० पितु सुरपुर सिय राम बन करन कहहु मोहिं राज।
एहि ते जान हु मोर हित कै आपन बड़ काज २७०
हित हमार सिय पति सेवकाई। सो हरि लीन्ह मातु कुटिलाई
मैं अनुमानि दीख मन माहीं। आन उपाय मोर हित नाहीं
सोक समाज राज केहि लेखे। लखन राम सिय पद बिनु देखे
बादि बसन बिनु भूषन भारू। बादि बिरति बिनु ब्रह्म बिचारू
सरुज सरीर बादि बहु भोगा। बिनु हरि भगति जाय जप जोगा
जाय जीव बिनु देह सुहाई। बादि मोर सब बिनु रघुराई
जाउँ राम पहँ आयसु देहू। एकहि आँक मोर हित एहू
मोहिं नृप करि आपन भलचहहू। सो सनेह जड़ता बस कहहू
दो० कैकेयी सुत कुटिल मति राम बिमुख गत लाज।
तुम्ह चाहत सुख मोह बस मोहिं से अधम के राज २७१
कहौं साँच सब सुनि पतिआहू। चाहिय धर्म्म शील नर नाहू।
मोहिं राज हठि देहहु जबहीं। रसा रसातल जाइहि तबहीं
मोहिं समान को पाप निवासी। जेहि लगि सीय राम बन बासी

राय राम कहँ कानन दीन्हा। बिछुरत गमन अमरपुर कीन्हा
मैं शठ सब अनरथ कर हेतू। बैठि बात सब सुनहुँ सचेतू
बिनु रघुबीर बिलोकिय बासू। रहे प्राण सहि जग उपहासू
राम पुनीत बिषय रस रूखे। लोलुप भूप भोग के भूखे।
कहँ लगि कहउँ हृदय कठिनाई। निदरि कुलिस जेहिं लही बड़ाई
दो० कारण ते कारज कठिन होइ दोष नहिं मोर।
कुलिश अस्थि ते उपल ते लोह कराल कठोर ७२
कैकयी भव तनु अनुरागे। पामर प्राण अघाय अभागे
जो प्रिय बिरह प्राण प्रिय लागे। देखब सुनब बहुत अब आगे.
लखण राम सिय कहँ बन दीन्हा। पठय अमरपुर पति हित कीन्हा
लीन्ह बिधवपन अपयश आपू। दीन्हेउ प्रजहि शोक सन्तापू
मोहिं दीन्ह सुख सुयश सुराजू। कीन्ह कैकयी सब कर काजू
इहि ते मोर काह अब नीका। तेहि पर देन कहहु तुम टीका
कैकयि जठर जन्मि जग माहीं। यह मोहिं कहँ कछु अनुचित नाहीं
मोरि बात सब बिधिहि बनाई। प्रजा पञ्च कत करहु सहाई.
दो० ग्रह ग्रहीत पुनि बात बश तेहि पुनि बीछी मार।
ताहि पिआइय बारुणी कहहु कवन उपचार ७३

केकयि सुवन योग जग जोई। चतुर विरञ्चि रचेउ मोहिं सोई
दशरथ तनय राम लघु भाई। दीन्ह मोहिं विधि बादि बड़ाई
तुम सब कहहु कढ़ावन टीका। राय राज सबहीं कहँ नीका
उतर देउँ केहि विधि केहि केही। कहहु सुखेन जथा रुचि जेही
मोहिं कुमातु समेत बिहाई। कहहु कहहि को कीन्ह भलाई
मोहिं बिनु को सचराचर माहीं। जेहि सिय राम प्रान प्रिय नाहीं
परम हानि सब कहँ बड़ लाहू। अदिन मोर नहिं दूषण काहू
संशय शील प्रेम बश अहहू। सबै उचित सब जो कछु कहहू

दो० राम मातु सुठि सरल चित मो पर प्रेम विशेषि।
कहहिं सुभाव सनेह बश मोरि दीनता देखि ७४

गुरु विवेक सागर जग जाना। जिनहिं विश्व कर बदरि समाना
मोकहँ तिलक साज सजि सोऊ। भा विधि विमुख विमुख सबकोऊ
परिहरि राम सीय जग माहीं। कोउ न कहिहि मोर मत नाहीं
सो मैं सुनब सहब सुख मानी। अन्तहु कीच तहाँ जहँ पानी
डरन मोहिं जग कहिहि कि पोचू। परलोक हु कर नाहिं न शोचू
एकै बड़ि उर दुसह दवारी। मोहिं लगि भे सिय राम दुखारी
जीवन लाहु लखन भल पावा। सब तजि राम चरन मन लावा

मोर जन्म रघुबर बन लागी। झूँठ काह पछिताउँ अभागी
दो० आपनि दारुण दीनता सबहि कहेउँ समुझाय।
देखे बिनु रघुबीर पद जिय की जरनि न जाय ७५
आन उपाय मोहिं नहिं सूझा। को जिय की रघुबर बिनु बूझा
एकहि आँक इहै मन माहीं। प्रातकाल चलिहौं प्रभु पाहीं
यद्यपि मैं अनभल अपराधी। भइ मोहिं कारन सकल उपाधी
तदपि सरन सनमुख मोहिं देखी। छमि सब करिहहिं कृपा बिसेखी
सील सकुच सुठि सरल सुभाऊ। कृपा सनेह सदन रघुराऊ
अरिहुक अनभल कीन्ह न रामा। मैं सिसु सेवक यद्यपि बामा
तुम्ह पै पाँच मोर भल मानी। आयसु आसिष देहु सुबानी
जेहि सुनि बिनय मोहिं जन जानी। आवहिं बहुरि राम रजधानी।
दो० यद्यपि जन्म कुमातु ते मैं सठ सदा सदोस।
आपन जानि न त्यागिहैं मोहिं रघुबीर भरोस ७६
भरत बचन सब कहँ प्रिय लागे। राम सनेह सुधा जनु पागे
लोग बियोग बिषम बिष दागे। मंत्र सजीव सुनत जनु जागे
मातु सचिव गुरु पुर नर नारी। सकल सनेह बिकल भे भारी
भरतहि कहहिं सराहि सराही। राम प्रेम मूरति तनु आही।

तात भरत अस काहि न कहहू। प्राण समान राम प्रिय अहहू
जो पामर आपनि जड़ताई। तुमहिं सुगाइ मातु कुटिलाई
सो शठ कोटिक पुरुष समेता। बसहिं कल्प शत नरक निकेता
अहि अघ अवगुण नहिं गनहीं। हरै गरल दुख दारिद दहई
दो० अवशि चलिय बन राम पहँ भरत मञ्च भल कीन्ह
शोक सिन्धु बूड़त सबहि तुम अवलम्बन दीन्ह ७७
भा सब के मन मोद न थोरा। जनु घन धुनि सुनि चातक मोरा
चलब प्रातलगि निर्णय नीके। भरत प्राण प्रिय भे सबही के
मुनिहि बन्दि भरतहि शिर नाई। चले सकल घर विदा कराई
धन्य भरत जीवन जग माहीं। शील सनेह सराहत जाहीं
कहहिं परस्पर भा बड़ काजू। सकल चलै कर साजहिं साजू
जेहि राखहिं घर रहु रखवारी। सो जानै जनु गरदनि मारी
कोउ कह रहन कहिय नहिं काहू। को न चहै जग जीवन लाहू
दो० जरै सुसम्पति सदन सुख सुहृद मातु पितु भाइ।
सन्मुख होत जो राम पद करै न सहज सहाइ ७८
घर घर बाहन साजहिं नाना। हर्ष हृदय परभात पयाना
भरत जाइ घर कीन्ह विचारू। नगर बाजि गज भवन भँडारू

सम्पति सब रघुपतिके आही। जो बिनु यतन चलौं तजि ताही
तौ परिणाम न मोरि भलाई। पापि शिरोमणि साँइ दोहाई
करहिं स्वामि हित सेवक सोई। दूसरा कोटि देइ किन कोई
अस विचारि शुचि सेवक बोले। जे सपनेहुँ निज धर्म्म न डोले॰
कहि सब मर्म्म धर्म्म सब भाखा। जो जेहि लायक सो तहँ राखा
करि सब यतन राखि रखवारे। राम मातु पहँ भरत सिधारे
दो॰ आरत जननी जानि सब भरत सनेह सुजान।
कहेउ सजावन पालकी सुखद सुखासन यान ७९
चक चकई इव पुर नर नारी। चलब प्रात उर आरत भारी
जागत सब निशि भयउ बिहाना। भरत बुलाये सचिव सुजाना
कहेउ लेहु सब तिलक समाजू। बनहिं देब मुनि रामहिं राजू॰
बेगि चलहु सुनि सचिव जुहारे। तुरत तुरग रथ नाग सँवारे
अरुन्धती अरु अगिनि समाजू। रथ चढ़ि चले प्रथम मुनिराजू
बिप्रवृन्द चढ़ि बाहन नाना। चले सकल तप तेज निधाना
नगर लोग सब सजि सजि याना। चित्रकूट कहँ कीन्ह पयाना
शिविका सुभग न जाइ बखानी। चढ़ि चढ़ि चलत भईं सब रानी
दो॰ सौंपि नगर शुचि सेवकन सादर सबहिं चलाइ।

सुमिरि राम सिय चरण तब चले भरत दोउ भाइ १८०
राम दरश हित सब नर नारी। जनु करि करिणि चले तकि बारी
बन सिय राम समुझि मन माहीं। सानुज भरत पयादेहि जाहीं
देखि सनेह लोग अनुरागे। उतरि चले हय गज रथ त्यागे
जाइ समीप राखि निज डोली। राम मातु मृदु बानी बोली
तात चढ़हु रथ बलि महतारी। होइहि प्रिय परिवार दुखारी
तुम्हरे चलत चलहिं सब लोगू। सकल शोक कृश नहिं मग जोगू
शिर धरि वचन चरण शिर नाई। रथ चढ़ि चलत भये दोउ भाई
तमसा प्रथम दिवस करि बासू। दूसर गोमति तीर निवासू
दो० पय अहार फल असन इक निशि भोजन इक लोग
करत राम हित नेम व्रत परिहरि भूषण भोग ८१
सई तीर बसि चले बिहाने। शृंगबेर पुर सब नियराने
समाचार सब सुने निषादा। हृदय बिचार करै सविषादा
कारण कवन भरत बन जाहीं। है कछु कपट भाव मन माहीं
जौ पै जिय न होति कुटिलाई। तौ कत लीन्ह संग कटकाई
जानहिं सानुज रामहिं मारी। करौं अकण्टक राज्य सुखारी
भरत न राजनीति उर आनी। तब कलंक अब जीवन हानी

सकल सुरासुर जुरहिं जुझारा। रामहिं समर न जीतन हारा
का आश्चर्य्य भरत असकरहीं। नहिं विष बेलि अमिय फल फरहीं
दो० अस विचारि गुह ज्ञाति सन कहेउ सजग सब होहु।
हथवाँसहु बोरहु तरिन कीजिय घाटा रोहु ८२.
होइ सजोइल रोकहु घाटा। ठाढ़हु सकल मरन कै ठाटा
सन्मुख लोह भरत सन लेहू। जियत न सुरसरि उतरन देहू
समर मरन पुनि सुरसरि तीरा। राम काज क्षण भंगु शरीरा.
भरत भाइ नृप मैं जन नीचू। बड़े भाग असि पाइय मीचू
स्वामि काजु करिहौं रण रारी। यश लहि धवल भुवन दश चारी
तजहुँ प्राण रघुनाथ निहोरे। दुहूँ हाथ मुद मोदक मोरे
साधु समाज न जाकर लेखा। राम भक्त महँ जासु न रेखा
जाय जियत जग सो महि भारू। जननी यौवन विटप कुठारू
दो० विगत विषाद निषाद पति सबहि बढ़ाय उछाह।
सुमिरि राम माँगेउ तुरत तरकस धनुष सनाह ८३
बेगिहि भाइ सजहु सञ्जोऊ। सुनि रजाय कदराय न कोऊ
भले नाथ सब कहहिं सहर्षा। एकहि एक बढ़ावहिं कर्षा
चले निषाद जुहारि जुहारी। सूर सकल रण रुचे सुरारी

सुमिरि राम पदपङ्कज पनहीं। भाथा बाँधि चढ़ावहिं धनुहीं
आगरि पहिरि कूंड़ि सिरधरहीं। फरसा बाँस सेल सम करहीं
एक कुशल अति ओड़न खाँड़े। कूदहिं गगन मनहुं सिति छाँड़े
निज निज साज समाज बनाई। गुह राउतहिं जुहारे जाई।
देखि सुभट सब लायक जाने। लै लै नाम सकल सनमाने
दो० भाइहु लावहु धोरव जनि आजु काज बड़ मोहु।
सुनि सरोष बोले सुभट बीर अधीर न होहु ८४
राम प्रताप नाथ बल तोरे। करहिं कटक बिनु भट बिनु घोरे
जियत पाँव नहिं पाछे धरहीं। राड सुराड मय मेदिनि करहीं
दीरघ निषाद नाथ भल टोलू। कहेउ बजाउ जुझाऊ ढोलू
इतना कहत छींक भइ बायें। कहेउ सगुनिअन्ह खेत सुहायें
बूढ़ एक कह सगुन विचारी। भरतहि मिलिय न होइहि रारी
रामहिं भरत मनावन जाहीं। सगुन कहै अस विग्रह नाहीं
सुनि गुह कहै नीक कह बूढ़ा। सहसा करि पछिताहिं विमूढ़ा
भरत सुभाव शील बिनु बूझे। बड़ि हित हानि जानि बिनु जूझे
दो० गहहु घाट भट समिति सब लेउ मरम मिलि जाय।
बूझि मित्र अरि मध्य गति तब तस करब उपाय ८५

लखब सनेह सुभाव सुहाये। बैर प्रीति नहिं दुरत दुराये॥
अस कहि भेंट संजोवन लागे। कन्द मूल फल खग मृग माँगे
मीन पीन पाठीन पुराने। भरि भरि भार कहारन्ह आने
सकल साज सजि मिलन सिधाये। मंगल मूल सगुन शुभ पाये
देखि दूरि ते कहि निज नामू। कीन्ह मुनीशहि दण्ड प्रणामू
जानि राम प्रिय दीन्ह असीशा। भरतहिं कहेउ बुझाय मुनीशा
राम सखा सुनि स्यन्दन त्यागा। चले उतरि उमगत अनुरागा
नाम जाति गुह ग्राम सुनाई। कीन्ह जुहारि माथ महि लाई
दो० करत दण्डवत देखि तेहि भरत लीन्ह उर लाइ।
मनहुँ लखन सन भेंट भइ प्रेम न हृदय समाइ ८६
भेंटे भरत ताहि अति प्रीती। लोग सिहाहिं प्रेम कै रीती
धन्य धन्य धुनि मंगल मूला। सुर सराहि तेहि बरषहिं फूला
लोक वेद सब भाँतिहि नीचा। जासु छाँह छुइ लेइय सींचा।
तेहि भरि अंक राम लघु भ्राता। मिलत पुलक परिपूरित गाता
राम राम कहि जे जमुहाहीं। तिनहिं न पाप पुञ्ज समुहाहीं
इहि तौ राम लाय उर लीन्हा। कुल समेत जग पावन कीन्हा
करम नाश जल सुरसरि परई। तेहि को कहहु शीश नहिं धरई

उलटा नाम जपत जग जाना। वालमीकि भये ब्रह्म समाना
दो० स्वपच सबर खस यमन जड़ पाँवर कोल्ह किरात
रामकहत पावन परम होत भुवन विख्यात ८७
नहिं अचरज युग युग चलि आई। केहि न दीन्ह रघुबीर बड़ाई
राम नाम महिमा सुर कहहीं। सुनि सुनि अवध लोग सुख लहहीं
रामसखहिं मिलि भरत सप्रेमा। पूँछहिं कुसल सुमंगल खेमा
देखि भरत कर शील सनेहू। भा निषाद तेहि समय विदेहू
सकुच सनेह मोद मन बाढ़ा। भरतहि चितवत एकटक ठाढ़ा
धीरज धरि पद बन्दि बहोरी। विनय सप्रेम करत कर जोरी
कुसल मूल पद पंकज पेखी। मैं तिहुँ काल कुसल निज लेखी
अब प्रभु परम अनुग्रह तोरे। सहित कोटि कुल मंगल मोरे
दो० समुझि मोरि करतूति कुल प्रभु महिमा जिय जोइ
जो न भजै रघुबीर पद जग बिधि बंचित सोइ ८८
कपटी कायर कुमति कुजाती। लोक वेद बाहिर सब भाँती
रामकीन्ह आपन जबहीं ते। भयउ भुवन भूषन तबहीं ते
देखि प्रीति सुनि विनय सुहाई। मिले बहोरि लखन लघु भाई
कहि निषाद निज नाम सुबानी। सादर सकल जुहारीं रानी।

जानि लषण आसमदेहिं असीसा। जियहु सुखी सत लाख बरीसा
निरखि निषाद नगर नरनारी। भये सुखी जनु लषण निहारी
कहहिं लहेउ यह जीवन लाहू। भेटेउ राम भाइ भरि बाहू।
सुनि निषाद निज भाग बड़ाई। प्रमुदित मन महँ चलेउ लिवाई
दो० सनकारे सेवक सकल चले स्वामि रुख पाइ।
घर तरु तर सर बाग बन बास बनायउ जाइ ९९
शृंगबेर पुर भरत दीख जब। भये सनेह बश अंग शिथिल तब
सोहत दिये निषादहिं लागू। जनु तनु धरे विनय अनुरागू
इहि बिधि भरत सैन्य सब संगा। दीख जाइ जग पावनि गंगा
राम घाट कहँ कीन्ह प्रणामा। भा मन मगन मिले जनु रामा
करहिं प्रणाम नगर नरनारी। मुदित ब्रह्म मय बारि निहारी
करि मज्जन माँगहिं कर जोरी। रामचन्द्र पद प्रीति न थोरी
भरत कहेउ सुरसरि तव रेनू। सकल सुखद सेवक सुर धेनू
जोरि पाणि बर माँगौं एहू। सीय राम पद सहज सनेहू
दो० इहि बिधि मज्जन भरत करि गुरु अनुशासन पाइ।
मातु नहानी जानि सब डेरा चले लिवाइ ९०
जहँ तहँ लोगन डेरा कीन्हा। भरत शोध सबही कर लीन्हा

गुरु सेवा करि आयसु पाई। राम मातु पहँ गे दोउ भाई
चरण चापि कहि कहि मृदु बानी। जननी सकल भरत सनमानी
भाइहि सौंपि मातु सेवकाई। आपु निषादहिं लीन्ह बुलाई
चले सखा कर सों कर जोरे। शिथिल शरीर सनेह न थोरे
पूँछत सखहिं सो ठाँव दिखाऊ। नेकु नयन मन जरनि जुड़ाऊ
जहँ सिय रामलषण निशि सोये। कहत भरे जल लोचन कोये
भरत वचन सुनि भयउ विषादू। तुरत तहां लै गयउ निषादू
दो० जहँ सिंसिपा पुनीत तरु रघुबर किय विश्राम।
अति सनेह सादर भरत कीन्हेउ दण्ड प्रणाम ९२
कुश साथरी निहारि सुहाई। कीन्ह प्रणाम प्रदक्षिणा लाई
चरण रेख रज आँखिन लाई। बनै न कहत प्रीति अधिकाई
कनक बिन्दु दुइ चारिक देखे। राखे शीश सीय सम लेखे
सजल विलोचन हृदय गलानी। कहत सखा सन वचन सुबानी
श्रीहत सीय विरह द्युति हीना। यथा अवध नर नारि मलीना
पिता जनक देउँ पटतर केही। करतल भोग योग जग जेही
श्वशुर भानुकुल भानु भुआलू। जेहि सिहात अमरावति पालू
प्राण नाथ रघुनाथ गुसाँई। जो बड़ होत सो राम बड़ाई

दो० पतिदेवता सुतीय महँ सीय सिरोमनि देखि।
बिहरतहृदय हनुमान के पुनि पुनि करत बिसेखि ९२

लालन जोग लखन लघु लोने। भरत भाइ अस आपु न होने
पुरजन प्रिय पितु मातु दुलारे। सिय रघुबीरहि प्राना पियारे
मृदु मूरति सुकुमार सुभाऊ। तातिवायु तन लागि न काऊ
ते बन सहहिं बिपति सब भाँती। निदरे कोटि कुलिस एहि छाती
राम जनमि जग कीन्ह उजागर। रूप सील सुख सब गुन सागर
पुरजन परिजन गुरु पितु माता। राम सुभाव सबहिं सुखदाता
बैरिउ राम बड़ाई करहीं। बोलनि मिलनि बिनय मन हरहीं
सारद कोटि कोटि सत सेषा। करि न सकहिं प्रभु गुन गन लेखा

दो० सुखस्वरूप रघुबंसमनि मंगल मोद निधान।
ते सोवत कुस डासि महि बिधि गति अति बलवान ९३

राम सुना दुखु कान न काऊ। जीवन तरु जिमि जुगवत राऊ
पलक नयन फनि मनि जेहि भाँती। जुगवहिं जननि सकल दिन राती
ते अब फिरत बिपिन पदचारी। कन्द मूल फल फूल अहारी
धिक कैकेयि अमंगल मूला। भइसि प्राण प्रियतम प्रतिकूला
मैं धिक धिक अघ उदधि अभागी। सब उतपात भयउ जेहि लागी

कुलकलंक करि सृजेउ बिधाता। साँइद्रोह मोहिं कीन्ह कुमाता
सुनि सप्रेम समुझाव निषादू। नाथ करिय कत बादि बिषादू
राम तुम्हहिं प्रिय तुम्ह प्रिय रामहि। यह निरदोष दोष बिधि बामहि
छं० बिधि बाम की करनी कठिन जेइ मातु कीन्ही बावरी।
तेहि राति पुनि पुनि करहिं प्रभु सादर सराहन रावरी॥
तुलसी न तुम सो राम प्रीतम कहत हौं सौंहें किये।
परिणाम मंगल जानि अपने आनिये धीरज हिये ८
सो० अन्तर्यामी राम सकुचि सप्रेम कृपायतन।
चलिय करिय बिश्रामु यह बिचारि दृढ़ आनिमन ७
सखा बचन सुनि उर धरि धीरा। बास चले सुमिरत रघुबीरा
यह सुधि पाइ नगर नर नारी। चले बिलोकन आरत भारी
परदछिना करि करहिं प्रनामा। देहिं कैकयिहि खोरि निकामा
भरि भरि बारि बिलोचन लेहीं। बाम बिधातहि दूषन देहीं.
एक सराहहिं भरत सनेहू। कोउ कह नृपति निबाहेउ नेहू
निंदहिं आपु सराहि निषादहि। को कहि सकै बिमोह बिषादहि
इहि बिधि राति लोग सब जागा। भा भिनुसार गुदारा लागा
गुरहि सुनाव चढ़ाइ सुनाई। नई नाव सब मातु चढ़ाई.

खाइ चारि महँ मास सब पारा। उतरि भरत तब सबहिं सँभारा
दो० प्रात क्रिया करि मातु पद बन्दि गुरुहिं सिर नाइ।
आगे किये निषादगन दीन्हेउ कटक चलाइ ९४
कियउ निषाद नाथ अगुआई। मातु पालकी सकल चलाई
साथ बोलाइ भाइ लघु दीन्हा। बिप्रन्ह सहित गमन गुरु कीन्हा
आपु सुरसरिहि कीन्ह प्रनामू। सुमिरे लखन सहित सिय रामू
गवने भरत पयादेहि पाँये। कोतल संग जाहिं डोरिआये
कहहिं सुसेवक बारहिं बारा। होइय नाथ अस्व असवारा
राम पयादेहि पाँव सिधाये। हम कहँ रथ गज बाजि बनाये
सिर भर जाउँ उचित अस मोरा। सब ते सेवक धर्म कठोरा
देखि भरत गति सुनि मृदु बानी। सब सेवक गन गरहिं गलानी
दो० भरत तीसरे पहर कहँ कीन्ह प्रवेश प्रयाग।
कहत राम सिय राम सिय उमगि उमगि अनुराग ९५
फलका झलकत पाँयन कैसे। पंकज कोस ओस कन जैसे
भरत पयादेहि आये आजू। भयदुखित सुनि सकल समाजू
खबरि लीन्ह सब लोग नहाये। कीन्ह प्रनाम त्रिबेनिहि आये
सबहि सिता सित नीर नहाने। दिये दान महिसुर सनमाने।

देखत श्यामल धवल हिलोरे। पुलक शरीर भरत कर जोरे
सकल काम प्रद तीरथ राऊ। वेद विदित जग प्रगट प्रभाऊ
मागौं भीख त्यागि निज धरमू। आरत काह न करहिं कुकरमू
अस जियँ जानि सुजान सुदानी। सफल करौं जग याचक बानी।
दो० अर्थ न धर्म्म न काम रुचि गति न चहौं निर्वान।
जन्म जन्म रति राम पद यह वरदान न आन ९६
जानहिं राम कुटिल करि मोही। लोग कहौ गुरु साहिब द्रोही
सीता राम चरन रति मोरे। अनुदिन बढ़ौ अनुग्रह तोरे
जलद जन्म भरि सुरति बिसारे। याचक जल पवि पाहन डारे
चातक रटनि घटत घटि जाई। बढ़ै प्रेम सब भाँति भलाई।
कनकहि बान चढ़ै जिमि दाहे। तिमि प्रीतम पद नेम निबाहे
भरत बचन सुनि माँझ त्रिवेनी। भइ मृदु बानि सुमंगल देनी
तात भरत तुम सब बिधि साधू। राम चरन अनुराग अगाधू।
बादि गलानि करहु मन माहीं। तुम सम राम हिं प्रिय कोउ नाहीं
दो० तनु पुलकेहि हृदय हरषु सुनि बेनि बचन अनुकूल।
भरत धन्य कहि धन्य सुर हरषित बरषहिं फूल ९७
प्रमुदित तीरथ राज निवासी। बैखानस बटु गृही उदासी

कहहिं परस्पर मिलि दस पाँचा। भरत सनेह सील सुचि साँचा।
सुनत राम गुन ग्राम सुहाये। भरद्वाज मुनिवर पहँ आये।
दण्ड प्रनाम करत मुनि देखे। मूरतिवन्त भाग निज लेखे।
धाइ उठाइ लाइ उर लीन्हे। दीन्ह असीस कृतारथ कीन्हे
आसन दीन्ह नाइ सिर बैठे। चहत सकुच गृह जनु भजि पैठे
मुनि पूँछब कछु यह बड़ सोचू। बोले रिषि लखि सीलु सँकोचू
सुनहु भरत हम सब सुधि पाई। बिधि करतब पर कछु न बसाई
दो० तुम्ह गलानि जियँ जनि करहु समुझि मातु करतूति
तात कैकयिहि दोसु नहिं गई गिरा मति धूति ९८।
इहाँ कहत भल कहिहि न कोऊ। लोक बेद बुध सम्मत दोऊ।
तात तुम्हार बिमल जसु गाई। पाइहि लोकहु बेद बड़ाई।
लोक बेद सम्मत सबु कहई। जेहि पितु देइ सो लहई।
राउ सत्यब्रत तुम्हहिं बोलाई। देत राज सुख धर्म्म बड़ाई॥
राम गवनु बन अनरथ मूला। जो सुनि सकल बिस्व भइ सूला
सो भावी बस रानि अयानी। करि कुचालि अन्तहु पछितानी
तहउँ तुम्हार अलप अपराधू। कहै सो अधम अयान असाधू
करतेहु राज तुम्हहिं नहिं दोषू। रामहिं होत सुनत सन्तोषू

दो० अब अति कीन्हेहु भरत भल तुम्हहिं उचित मत एहु।
सकल सुमंगल मूल जग रघुबर चरण सनेहु ९९

सो तुम्हार धन जीवन प्राना। भूरिभाग को तुम्हहिं समाना
यह तुम्हार आचरजु नहिं ताता। दशरथ सुवन राम प्रिय भ्राता
सुनहु भरत रघुपति मन माहीं। प्रेम पात्र तुम सम कोउ नाहीं
लखण राम सीतहिं अति प्रीती। निशि सब तुम्हहिं सराहत बीती
जानां मर्म नहात प्रयागा। मगन होहिं तुम्हरे अनुरागा
तुम पर अस सनेह रघुबर के। सुख जीवन जग जस जड़ नर के
यह न अधिक रघुबीर बड़ाई। प्रणत कुटुम्ब पाल रघुराई
तुम तौ भरत मोर मत एहू। धरे देह जनु राम सनेहू।

दो० तुम कहँ भरत कलंक यह हम सब कहँ उपदेश।
राम भक्ति रस सिद्धि हित भा यह समय गणेश २००

नव विधु विमल तात यश तोरा। रघुबर किंकर कुमुद चकोरा
उदय सदा अथइहि कबहूंना। घटहि न जग नभ दिन दिन दूना
कोक विलोक प्रीति अति करहीं। प्रभु प्रताप रवि छबिहि न हरहीं
निशि दिन सुखद सदा सब काहू। ग्रसहि न केतु कि राहु
पूरण राम सुप्रेम पियूषा। गुरु अपमान दोष नहिं दूषा

रामभक्ति अवअमिय अघाहू। कीन्हेउ सुलभ सुधा बसुधाहू
भूप भगीरथ सुरसरि आनी। सुमिरत सकल सुमंगल खानी
दशरथ गुनागराबर धीरा। नजहीं अधिक कहा जेहि सम जग नाहीं
दो० जासु सनेह सकोच बश राम प्रकट भे आय।
जेहि रहि नयन कबहुँ निरखे नाहिं अघाय १
कीरति बिधु तुम कीन्ह अनूपा। जहँ बश राम प्रेम मृगरूपा।
तात गलानि करहु जिय जाये। डरहि दरिद्रहि पारस पाये।
सुनहु भरत हम झूठ न कहहीं। उदासीन तापस बन रहहीं
सब साधन कर सुफल सुहावा। लखन राम सिय दर्शन पावा
तेहि फल कर फल दरश तुम्हारा। सहित प्रयाग सुभाग हमारा
भरत धन्य तुम जग यश लयऊ। कहि अस प्रेम मगन मुनि भयऊ
सुनि मुनि बचन सभासद हरखे। साधु सराहि सुमन सुर बरखे
धन्य धन्य धुनि गगन प्रयागा। सुनि सुनि भरत मगन अनुरागा
दो० पुलक गात हिय राम सिय सजल सरोरुह नयन।
करि प्रणाम मुनि मण्डलिहि बोले गद्गद बयन २
मुनि समाज अरु तीरथ राजू। साँचेहु शपथ अघाइ अकाजू
इहि थल जोकछु कहिय बनाई। इहि सम नहिं कछु अघ अधमाई

तुम सर्व्वज्ञ कहौं सतिभाऊ। उर अन्तरयामी रघुराऊ
मोहिंन मातु करब कर शोचू। नहिंदुखजिय जगजानहिंपोचू
नाहिंन डरबिगरहि परलोकू। पितहु मरेकर नाहिंन शोकू.
सुकृतसुयश भरि भुवनसुहाये। लछमण राम सरिस सुतपाये
राम विरह तजितनुक्षणभंगू। भूप शोच कर कवन प्रसंगू.
राम लखण सिय बिनु पगपनहीं। करि मुनिबेष फिरहिंबनबनहीं
दो० अजिनबसन फल अशन महि शयन डासि कुशपात
बसितरुतर नित सहत दुख हिम तप बरषा बात ३
यहदुखदाह दहै नित छाती। भूख न बासर नींद न राती
यहकुरोग कर औषध नाहीं। सोवेउँ सकल विश्व मन माहीं
मातुकुमत बढ़ई अघ मूला। तेहिहमारहित कीन्हबरूला
कलिकुकाठकर कीन्हकुयंत्रू। गाड़िअवधिपढ़ि कठिनकुमंत्रू
मोहिंलगि यहकुठाटतेहिंठाटा। घालिसि सबजग बारहबाटा
मिटै कुयोग राम फिरि आये। बसै अवध नहिं आन उपाये
भरत वचन सुनि सुनि सुखपाई। सबहिंकीन्हबहु भाँतिबड़ाई
तातकरहु जनिशोच विशेखी। सबदुखमिटिहि रामपद देखी
दो० करिप्रबोध मुनिवर कहेउ अतिथि प्रारा प्रियहोहु

कन्द मूल फल फूल हम देहिं लेहु करि छोहु ४

सुनि सुनि वचन भरत हिय सोचू। भयउ कुअवसर कठिन सकोचू
जानि गरु अ गुरु गिरा बहोरी। चरण बन्दि बोले कर जोरी
शिर धरि आयसु करिय तुम्हारा। परम धर्म्म यह नाथ हमारा
भरत वचन मुनिवर मन भाये। शुचि सेवक सब निकट बुलाये
चाहिय कीन्ह भरत पहुनाई। कन्द मूल फल आनहु जाई
भले नाथ कहि तिन्ह शिर नाये। प्रमुदित निज निज काज सिधाये
मुनिहि शोच पाहुन बड़ नेवता। तस पूजा चाहिय जस देवता
सुनि ऋधि सिधि अणिमादिक आई। आयसु होइ सो करैं गुसाईं

दो० रामबिरह व्याकुल भरत सानुज सकल समाज।
पहुनाई करि हरहु श्रम कहेउ मुदित मुनिराज ५

ऋधि सिधि शिर धरि मुनिवर बानी। बड़ भागिनि आपुहि अनुमानी
कहहिं परस्पर सिधि समुदाई। अतुलित अतिथि राम लघु भाई
मुनि पद बन्दि करिय सोइ आजू। होइ सुखी सब राज समाजू
अस कहि रुचिर रचे गृह नाना। जेहि बिलोकि बिलखाहिं बिमाना
भोग विभूति भूरि भरि राखे। देखत जिनहिं अमर अभिलाखे
दासी दास साज सब लीन्हे। जुगवत रहहिं मनहिं मन दीन्हे

सबसमाजसजिसिधिपलमाहीं। जेसुरसमयनहुंसुरपुरनाहीं
प्रथमहिंबास दियेसबकेही। सुन्दरसुखदयथारुचि जेही
दो० बहुरिसपरिजनभरतकहुँ ऋषिआयसुअसदीन्ह।
विविविस्मयदायकविभवमुनिवरतपबलकीन्ह ९
मुनिप्रभावजबभरतबिलोका। सबलघुलगेलोकपतिलोका
सुखसमाजनहिंजाइबखानी। देखतविरतिबिसारहिंज्ञानी
आसन शयनसुबसनबिताना। बनबाटिकाबिहंगमृगनाना
सुरभिफूलफलअमियसमाना। विमलजलाशयविविधविधाना
अशनपानशुचिअमितअमीसे। देखि लोग सकुचात जमी से
सुरसुरभी सुरतरु सबही के। लखिअभिलाषसुरेशशचीके
ऋतुबसन्तबहत्रिविधबयारी। सबकहुँसुलभ पदारथ चारी
सबकचन्दनवनितादिकभोगा। देखि हर्ष विस्मयबशलोगा
दो० सम्पतिचकई भरतचकमुनिआयसुखेलवार
तेहिनिशिआश्रम पींजरा राखेभा भिनुसार ७
कीन्हनिमज्जनतीरथ राजा। नायमुनिहिशिरसहितसमाजा
ऋषिआयसुआशिषशिरधारी। करिदण्डवतबिनयबहुभारी
पथगतिकुशलसाथसबलीन्हे। चले चित्रकूटहिचितदीन्हे.

राम सखा कर दीन्हे लागू। चलत देह धरि जनु अनुरागू
नहिं पद त्राण शीश नहिं छाया। प्रेम नेम व्रत धर्म्म अमाया।
लखण राम सिय पन्थ कहानी। पूँछत सखहिं कहत मृदु बानी
राम बास फल विटप बिलोके। उर अनुराग रहत नहिं रोके।
देखि दशा सुर बर्षहिं फूला। भइ मृदु महि मगु मंगल मूला
दो० किये जाहिं छाया जलद सुखद बहै बर बात।
तस मगु भयउ न रामकहँ जस भा भरतहि जात ८
जड़ चेतन जग जीव घनेरे। जे चितये प्रभु जिन्ह प्रभु हेरे
ते सब भये परमपद योगू। भरत दरश मेषज भव रोगू
यह बड़ि बात भरत के नाहीं। सुमिरत जिनहिं राम मन माहीं
बारेक राम कहत जग जेऊ। होत तरण तारण नर तेऊ.
भरत राम प्रिय पुनि लघु भ्राता। कस न होय मगु मंगल दाता
सिद्ध साधु मुनिवर अस कहहीं। भरतहिं निरखि हरष हिय लहहीं
देखि प्रभाव सुरेशहिं शोचू। जग भल भलहिं पोच कहँ पोचू
गुरु सन कहेउ करहु प्रभु सोई। रामहिं भरतहिं भेंट न होई।
दो० राम सकोची प्रेम बश भरत सप्रेम पयोधि।
बनी बात बिगरन चहत करिय यतन छल शोधि ९

वचन सुनत सुरगुरु मुसुकाने। सहस नयन बिनु लोचन जाने
कहु गुरु बारिद कौसल राऊ। देखि पटतर देइअ काऊ
माया पति सेवक सन माया। करिअ उलटि परसुरराया
तब कछु कीन्ह राम रुख जानी। अब कुचालि करि होइहि हानी
सुनु सुरेश रघुनाथ सुभाऊ। निज अपराध रिसाहिं न काऊ
जो अपराध भगत कर करई। राम रोष पावक सो जरई
लोक हुँ बेद बिदित इतिहासा। यह महिमा जानहिं दुरबासा
भरत सरिस को राम सनेही। जेहि जपु राम राम जपु जेही
दो० मनहुँ न आनिय अमरपति रघुबर भगत अकाज।
अयश लोक परलोक दुख दिन दिन सोक समाज २१०
सुनु सुरेश उपदेश हमारा। रामहि सेवक परम पियारा
मानत सुख सेवक सेवकाई। सेवक बैर बैर अधिकाई
यद्यपि सम नहिं राग न रोषू। गहहिं न पाप पुनय गुन दोषू
करम प्रधान बिस्व करि राखा। जो जस करै सो तस फल चाखा
तदपि करहिं सम बिषम बिहारा। भगत अभगत हृदय अनुसारा
अगुन अलेख अमान एकरस। राम सगुन भए भगत प्रेम बस
राम सदा सेवक रुचि राखी। बेद पुरान साधु सुर साखी

असजियजानितजड़कुटिलाई। करहु भरतपद प्रीति सुहाई
दो० रामभक्तपरहितनिरत परदुखदुखीदयाल।
भक्तशिरोमणि भरत तेंजनिडरपहु सुरपाल ११
सत्यसिन्धु प्रभुसुरहितकारी। भरत राम आयसु अनुसारी
स्वारथविवशविकलतुमहोहू। भरत दोष नहिं राउर मोहू।
सुनिसुरवरसुरगुरुवरबानी। भा प्रबोधमन मिटीगलानी
बरषि प्रसून हर्षि सुर राऊ। लगे सराहन भरत सुभाऊ
इहिविधि भरत चले मगजाहीं। दशा देखि मुनिसिद्धसिहाहीं
जबहि रामकहिलेहिं उसासा। उमगत प्रेम मनहुं चहुं पासा
द्रवहिंवचनसुनिकुलिशपषाना। पुरजनप्रेम न जाय बखाना
बीचबास करियमुनहिंआये। निरखि नीरलोचनजलछाये
दो० रघुबरबरणा विलोकिबरबारिसमेतसमाज।
होतविरहबारिधिमगन चढ़े विवेकजहाज १२
यमुन तीरतेहि दिनकरिबासू। भयउ समयसमसबहिंसुपासू
रातिहिं घाट घाटकीतरणी। आई अगरीत जाइन बरणी
प्रात पार भे एकहि खेवा। तोषे राम सखा करि सेवा
चले अन्हाइ नदिहिंशिरनाई। साथ निषाद नाथ लघुभाई

आगे मुनिवर बाहन आछे। राज समाज जाइ सब पाछे
तेहि पाछे दोउ बन्धु पयादे। भूषण बसन वेष सुठि सादे
सेवक सुहृद सचिव सुत साथा। सुमिरत लषण सीय रघुनाथा
जहँ जहँ राम बास विश्रामा। तहँ तहँ करहिं सुप्रेम प्रणामा
दो० मगु बासी नर नारि सुनि धाम काम तजि धाइ।
देखि स्वरूप सनेह बस सुदित जन्म फल पाइ १३
कहहिं सप्रेम एकइक पाहीं। राम लषण सखि होहिं कि नाहीं
बय बपु बरण रूप सोइ आली। शील सनेह सरिस सम चाली
बेष न सो सखि सीय न संगा। आगे अनी चली चतुरंगा
नहिं प्रसन्न मुख मानस खेदा। सखि सन्देह होत इहि भेदा
तासु तर्क तिय गण मन मानी। कहहिं सकल तोहि सम न सयानी
तेहि सराहि बानी फुर पूजी। बोली मधुर वचन तिय दूजी
कहि सप्रेम सब कथा प्रसंगू। जेहि विधि राम राज रस भंगू
भरतहि बहुरि सराहन लागी। शील सनेह सुभाव सुभागी
दो० चलत पयादे खात फल पिता दीन्ह तजि राज।
जात मनावन रघुबरहिं भरत सरिस को आज १४
भायप भक्ति भरत आचरणू। कहत सुनत दुख दूषण हरणू

जो कछु कहिय थोर सबिसोई। रामबन्धु अस काहे न होई।
हम सब सानुज भरतहिं देखे। भये धन्य युवती जन लेखे।
सुनि गुरु दरसु सपथ महिपाली। कैकयि जनि जोगु सुतु नाही
कोउ कह दूषन रानिहि नाहिन। बिधि सब भाँति छमहि जो दाहिन
कहँ हम लोक बेद बिधि हीना। लघु कुल ति य करतूति मलीना
बसहिं कुदेस कुगाँव कुठामा। कहँ यह दरसु पुन्य परिनामा
अस अनन्द अचरजु प्रति ग्रामा। जनु मरुभूमि कल्पतरु जामा
दो० भरत दरसु देखत खुलेउ मगु लोगन कर भागु।
जनु सिंघल बासिन भयउ बिधि बसु सुलभ प्रयागु १५
निज गुन सहित राम गुन गाथा। सुनत जाहिं सुमिरत रघुनाथा
तीरथ मुनि आश्रम सुरधामा। निरखि निमज्जहिं करहिं प्रनामा
मनहीं मन मागहिं बर येहू। सीय राम पद पदुम सनेहू।
मिलहिं किरात कोल बनबासी। बैखानस बटु जती उदासी
करि प्रनामु पूँछहिं जेहि तेही। केहि बन लखनु राम बैदेही
ते प्रभु समाचार सब कहहीं। भरतहिं देखि जनमफलु लहहीं
जे जन कहहिं कुसलु हम देखे। ते प्रिय राम लखनु सम लेखे
एहि बिधि बूझत सबहिं सुबानी। सुनत राम बनबास कहानी

दो० तेहि बासर बसि प्रातही चले सुमिरि रघुनाथ।
रामदरश की लालसा भरत सरिस सब साथ २६

मंगल सगुन होहिं सब काहू। फरकहिं सुखद बिलोचन बाहू
भरतहिं सहित समाज उछाहू। मिलिहहिं राम मिटिहि दुख दाहू
करत मनोरथ जस जिय जाके। जाहि सनेह सुरा सब छाके
सिथिल अंग मग डगि डोलहिं। बिह्वल बचन प्रेम बस बोलहिं
राम सखा तेहि समय देखावा। सैल सिरोमनि सहज सुहावा
जासु समीप सरित पय तीरा। सीय समेत बसहिं दोउ बीरा
देखि करहिं सब दंड प्रनामा। कहि जय जानकि जीवन रामा
प्रेम मगन अस राज समाजू। जनु फिरि अवध चले रघुराजू

दो० भरत प्रेम तेहि समय जस तस कहि सकै न सेषु।
कबिहि अगम जिमि ब्रह्म सुख अह मम मलिन जनेषु

सकल सनेह सिथिल रघुबर के। गये कोस दुइ दिनकर ढर के
जल थल देखि बसे निसि बीते। कीन्ह गवन रघुनाथ पिरीते
उहां राम रजनी अवसेषा। जागे सीय सपन अस देखा
सहित समाज भरत जनु आये। नाथ बियोग ताप तनु ताये.
सकल मलिन मन दीन दुखारी। देखी सासु आन अनुहारी

सुनि सिय सपन भरे जल लोचन। भये सोच बस सोच बिमोचन
लषण सपन यह नीक न होई। कठिन कुचाह सुनाइहि कोई
अस कहि बन्धु समेत अन्हाने। पूजि पुरारि साधु सनमाने।
छं० सनमानि सुर मुनि बन्दि बैठे उत्तर दिशि देखत भये।
नभ धूरि खग मृग भूरि भागे बिकल प्रभु आश्रम गये
तुलसी उठे अवलोकि कारण काह चित सचकित रहे।
सब समाचार किरात कोल्हन आइ तेहि अवसर कहे ९
सो० सुनत सुमंगल बयन मन प्रमोद तन पुलक भर
सरद सरोरुह नयन तुलसी भरे सनेह जल ८
बहुरि सोच बस भे सिय रमनू। कारण कौन भरत आगमनू
एक आइ अस कहा बहोरी। सेन संग चतुरंग न थोरी
सो सुनि रामहिं भा अति सोचू। इत पितु बच उत बन्धु सँकोचू
भरत सुभाव समुझि मन माहीं। प्रभु चित हित थिति पावत नाहीं
समाधान तब भा यह जाने। भरत कहे महँ साधु सयाने
लषण लखेउ प्रभु हृदय खभारू। कहत समय सम नीति बिचारू
बिनु पूँछे कछु कहउँ गुसाँई। सेवक समय न ढीठ ढिठाई
तुम सर्बज्ञ शिरोमणि स्वामी। आपनि समुझि कहौं अनुगामी

दो० नाथ सुहृद सुठि सरल चित शील सनेह निधान।
सब पर प्रीति प्रतीति जिय जानिय आपु समान २८

बिषयी जीव पाइ प्रभुताई। मूढ़ मोह बश होहिं जनाई
भरत नीति रत साधु सुजाना। प्रभु पद प्रेम सकल जग जाना
तेऊ आजु राज पद पाई। चले धर्म्म मर्य्याद मिटाई
कुटिल कुबन्धु कुअवसर ताकी। जानि राम बनवास एकाकी
करि कुमन्त्र मन साजि समाजू। आये करन अकण्टक राजू
कोटि प्रकार कलपि कुटिलाई। आये दल बटोरि दोउ भाई
जो जिय होति न कपट कुचाली। केहि सोहात रथ बाजि गजाली
भरतहिं दोष देइ को जाये। जग बौराइ राज पद पाये.

दो० शशि गुरु तिय गामी नहुष चढ़ेउ भूमि सुरयान।
लोक वेद तें बिमुख भा अधम को वेनु समान २९

सहस बाहु सुर नाथ त्रिशंकू। केहि न राज मद दीन कलंकू
भरत कीन्ह यह उचित उपाऊ। रिपु रिन रञ्च न राखब काऊ
एक कीन्ह नहिं भरत भलाई। निदरे राम जानि असहाई
समुझि परिहि सो आजु बिशेखी। समर सरोष राम मुख देखी
इतना कहत नीति रस भूला। रण रस बिटप पुलक जिमि फूला

प्रभुपदवन्दि शीशरजरारवी। बोले सत्य सहज बलभारवी
अनुचित नाथन मानब मोरा। भरतहमहिंउपचार न थोरा
कहँलगि सहिय रहियमनमारे। नाथ साथ धनु हाथ हमारे
दो० क्षत्रिजाति रघुकुलजनम रामअनुजजगजान।
लातहुमारे चढ़तशिरनीचको धूरिसमान२२०
उठिकर जोरि रजायसुमाँगा। मनहुँ बीर रस सोवत जागा
बाँधिजटाशिरकटिकसिभाथा। साजिशरासन शायकहाथा
आजु राम सेवक यश लेऊं। भरतहि समर सिरवावन देऊं
राम निरादर कर फल पाई। सोवहु समर सेज दोउ भाई
आइबना भल सकल समाजू। प्रकट करौंरिसपाछिलि आजू
जिमिकरिनिकरदलेमृगराजू। लेइलपेटि लवाजिमि बाजू
तैसेहि भरतहि सेन समेता। सानुजनिदरि निपातौं खेता
जो सहाय कर शंकर आई। तदपि हतौं रण राम दुहाई।
दो० अति सरोष भाषेलषणा लखि सुनि शपथ प्रमान
सभयविलोकतलोकपति चाहतभभरेभगान२१
जग भा मगन गगन भइबानी। लषणा बाहुबल बिपुल बखानी
तात प्रताप प्रभाव तुम्हारा। को कहिसकेकोजाननिहारा

अनुचित उचित काज कछु होई। समुझि करिय भल कह सब कोई
सहसा करि पाछे पछिताहीं। कहहिं बेद बुध ते बुध नाहीं
सुनि सुरबचन लखन सकुचाने। राम सीय सादर सनमाने।
कही तात तुम नीति सुहाई। सबते कठिन राज मद भाई
जो अँचवत मातहिं नृप तेई। नाहिन साधु सभा जिन्ह सेई
सुनहु लखन भल भरत सरीखा। बिधि प्रपञ्च महँ सुना न दीखा
दो० भरतहि होइ न राजमद बिधि हरिहर पद पाइ।
कबहुँ न काँजी सीकरनि छीरसिन्धु बिनसाइ॥२२
तिमिरतरुन तरनिहि मकु गिलई। गगन मगन मकु मेघहिं मिलई
गोपद जल बूड़हिं घटजोनी। सहज क्षमा बरु छाड़हिं छोनी
मसक फूँक बरु मेरु उड़ाई। होइ न नृप मद भरतहिं भाई
लखन तुम्हार सपथ पितु आना। सुचि सुबन्धु नहिं भरत समाना
सगुन खीर अवगुन जल ताता। मिलै रचै परपञ्च बिधाता
भरत हंस रबि बंस तड़ागा। जनमि कीन्ह गुन दोष बिभागा
गहि गुन पय तजि अवगुन बारी। निज जस जगत कीन्ह उजियारी
कहत भरत गुन सील सुभाऊ। प्रेम पयोधि मगन रघुराऊ॥
दो० सुनि रघुबर बानी बिबुध देखि भरत पर हेतु।

सकल सराहत राम सो प्रभु को कृपानिकेत २३

जो न होत जग जन्म भरत को। सकल धरम धुर धरनि धरत को
कवि कुल अगम भरत गुन गाथा। को जाने तुम बिनु रघुनाथा
लषन राम सिय सुनि सुर बानी। अति सुख लहेउ न जाइ बखानी
इहाँ भरत सब सहित सुहाये। मन्दाकिनी पुनीत अन्हाये
सरित समीप राखि सब लोगा। माँगि मातु गुरु सचिव नियोगा
चले भरत जहँ सिय रघुराई। साथ निषाद नाथ लघु भाई
समुझि मातु करतब सकुचाहीं। करत कुतर्क कोटि मन माहीं
राम लषन सिय सुनि मम नाऊँ। उठि जनि अनत जाहिं तजि ठाऊँ

दो० मातु मते महँ जानि मोहि जो कछु करहिं सो थोर।
अघ अवगुन तजि आदरहिं समुझि आपनी ओर २४

जो परिहरहिं मलिन मन जानी। जो सनमानहिं सेवक मानी
मोरे शरन राम की पनहीं। राम सुस्वामि दोष सब जनहीं
जग यश भाजन चातक मीना। नेम प्रेम निज निपुन नवीना
अस मन गुनत चले मग जाता। सकुच सनेह शिथिल सब गाता
फेरति मन हुँ मातु कृत खोरी। चलत भक्ति बल धीरज धोरी
जब समुझहिं रघुनाथ सुभाऊ। तब पथ परत उताइल पाऊ

भरतदशातेहि अवसरकैसी। जलप्रवाहजलअलिगतिजैसी
देखिभरत कहशोच सनेहू। भानियादतिहिसमयविदेहू
दो० लगेहोनमंगलसगुनसुनिगुणाकहतनिषाद।
मिटिहिशोचहोइहिहरषपुनिपरिणामविषाद२५
सेवकवचनसत्यसबजाने। आश्रमनिकटजाइनियराने
भरतदीखवनशैलसमाजू। मुदितछुधितजनुपाइसुनाजू
ईतिभीतिजनुप्रजादुखारी। त्रिविधतापपीड़ितग्रहमारी
जाइसुराजसुदेशदुखारी। भईभरतगतितेहिअनुहारी
रामबासबनसम्पतिभ्राजा। सुखीप्रजाजनुपाइसुराजा
सचिवविरागविवेकनरेशू। विपिनसुहावनपावनदेशू
भटकमनीयशैलसजवानो। शान्तिसुमतिशुचिसुन्दरिरानी
सकलअंगसम्पन्नसुराजू। रामचरणाआश्रितचितचाजू
दो० जीतिमोहमहिपालदलसहितविवेकभुआल।
करतअकण्टकराजपुरसुखसम्पदासुकाल२६
बनप्रदेशमुनिबासघनेरे। जनुपुरनगरगाँवगणाखेरे
विपुलविचित्रविहंगमृगनाना। प्रजासमाजनजाइबखाना.
खरहाकरिहरिबाघवराहा। देखिमहिषवृकसाजसराहा

बैर बिहाइ चराहिं एक संगा। जहँ तहँ मनहुँ सेन चतुरंगा
झरना झरहिं मत्त गज गाजहिं। मनहुं निसान बिबिध बिधि बाजहिं
चक चकोर चातक सुक पिक गन। कूजत मंजु मराल मुदित मन
अलि गन गावत नाचत मोरा। जनु सुराज मंगल चहुं ओरा
बेलि बिटप तृन सफल सफूला। सब समाज मुद मंगल मूला.
दो० राम सैल सोभा निरखि भरत हृदय अति प्रेम।
तापस तप फल पाइ जिमि सुखी सिराने नेम २७
तब केवट ऊंचे चढ़ि जाई। कहा भरत सन भुजा उठाई
नाथ देखु यह बिटप बिसाला। पाकरि जम्बु रसाल तमाला
तिन्ह तरुवरन्ह मध्य बट सोहा। मंजु बिसाल देखि मन मोहा
नील सघन पल्लव फल लाला। अबिचल छाँह सुखद सब काला
मानहुँ तिमिर अरुनमय रासी। बिरची बिधि सकेलि सुषमासी
ये तरु सरित समीप गोसाँई। रघुबर परन कुटी जहँ छाई
तुलसी तरुवर बिबिध सुहाये। कहुँ सिय पिय कहुँ लषन लगाये
बट छाया बेदिका बनाई। सिय निज पानि सरोज सुहाई
दो० जहँ बैठे मुनि गन सहित नित सिय राम सुजान।
सुनहिं कथा इतिहास सब आगम निगम पुरान २८

सखा वचन सुनि विटप निहारी। उमगे भरत विलोचन वारी
करत प्रनाम चले दोउ भाई। कहत प्रीति सारद सकुचाई
हर्षहिं निरखि राम पद अंका। मानहु पारस पायउ रंका.
रज सिर धरि हिय नैनन लावहिं। रघुवर मिलन सरिस सुख पावहिं
देखि भरत गति अकथ अतीवा। प्रेम मगन मृग खग जड़ जीवा
सखहि सनेह विवश मग भूला। कहि सुपन्थ सुर बरषहिं फूला
निरखि सिद्ध साधक अनुरागे। सहज सनेह सराहन लागे
होत न भूतल भाव भरत को। अचर सचर चर अचर करत को

दो० प्रेम अमिय मन्दर विरह भरत पयोधि गँभीर।
मथि प्रकटे सुर साधु हित कृपासिन्धु रघुबीर २९

सखा समेत मनोहर जोटा। लखेउ न लखन सघन वन ओटा
भरत दीख प्रभु आश्रम पावन। सकल सुमंगल सदन सुहावन
करत प्रवेश मिटा दुख दावा। जनु योगी परमारथ पावा
देखे भरत लखन प्रभु आगे। पूँछत वचन कहत अनुरागे
शीश जटा कटि मुनि पट बाँधे। तूरा कसे कर शर धनु काँधे
बेदी पर मुनि साधु समाजू। सीय सहित राजत रघुराजू
बलकल बसन जटिल तनु स्यामा। जनु मुनि वेष कीन्ह रति कामा

करकमलन्ह धनुसायकफेरत। जीकी जरनिहरत हँसि हेरत
दो० लसतमंजुमुनिमराउली मध्यसीयरघुनन्द।
ज्ञानसभा जनु तनुधरे भक्तिसच्चिदानन्द २३०
सानुजसखासमेतमगनमन। बिसरेहर्षशोकसुखदुखगन
पाहिनाथकहि पाहिगुसाईं। भूतल परे लकुट की नाईं
वचनसप्रेमलषणापहिचाने। करत प्रणामभरतजियजाने
बन्धुसनेहसरसइहि ओरा। उत साहिब सेवा बरजोरा
मिलिनजाइनहिंगुदरतबनई। सुकविलषणामनकीगतिभनई
रहे राखि सेवा पर भारू। चढ़ीचंग जनु खैंचि खिलारू
कहत सप्रेमनाइ महिमाथा। भरत प्रणाम करत रघुनाथा
उठे राम सुनि प्रेम अधीरा। कहुँपटकहुंनिषंगधनुतीरा
दो० बरबस लिये उठाइ उर लाये कृपानिधान।
भरतरामकोमिलनिलखिबिसरेउसबहिअपान ३१
मिलनिप्रीतिकिमिजाइबखानी। कविकुलअगमकर्ममनबानी
परमप्रेम पूरण दोउ भाई। मनबुधिचितअहमिति बिसराई
कहहु सुप्रेम प्रकटको करई। केहिछाया कविमतिअनुसरई
कविहि अर्थआखरबलसाँचा। अनुहरतालगतिहिनटनाँचा

अगम सनेह भरत रघुबरको। जहँ नजाइ मन विधि हरिहरको
सो मैं बरनि कहौं केहि भाँती। बालु सुराग कि गाड़रि ताँती
मिलनि बिलोकि भरत रघुबरको। सुरगन सभय धुकधुकी धरको
समुझाये सुर गुरु जड़ जागे। बरषि प्रसून प्रशंसन लागे
दो० मिलि सप्रेम रिपुसूदनहिं केवट भेंटेउ राम।
भूरि भाइ भेंटेउ भरत लछिमन करत प्रनाम ३२
भेंटेउ लषन ललकि लघुभाई। बहुरि निषाद लीन्ह उर लाई
पुनि मुनिगन दुहुँ भाइन बन्दे। अभिमत आसिष पाइ अनन्दे
सानुज भरत उमगि अनुरागा। धरि सिर सिय पद पद्म परागा
पुनि पुनि करत प्रनाम उठाये। सिय कर कमल परसि बैठाये
सीय असीस दीन्ह मन माहीं। मगन सनेह देह सुधि नाहीं
सब बिधि सानुकूल लखि सीता। भे अशोच उर अपडर बीता
कोउ कछु कहै न कोउ कछु पूँछा। प्रेम भरा मन निजगति छूँछा
तेहि अवसर केवट धीरज धरि। जोरि पानि बिनवत प्रनाम करि
दो० नाथ साथ मुनि नाथ के मातु सकल पुरलोग।
सेवक सेनप सचिव सब आये बिकल बियोग ३३
शीलसिन्धु मुनि गुरु आगमनु। सीय समीप राखि रिपुदमनु

चले सुवेग राम तेहि काला। धीर धर्म्म धुर दीनदयाला
गुहहिं देखि सानुज अनुरागे। दण्ड प्रणाम करन प्रभु लागे
मुनिवर धाइ लिये उर लाई। प्रेम उमगि भेंटे दोउ भाई.
प्रेम पुलकि केवट कहि नामू। कीन्ह दूरि ते दण्ड प्रणामू।
राम सखा ऋषि बरबस भेटा। जनु महि लुठत सनेह समेटा
रघुपति भक्ति सुमंगल मूला। नभ सराहि सुर बरषहिं फूला
इहि सम निपट नीच कोउ नाहीं। बड़ बसिष्ठ सम को जग माहीं
दो० जिहि लखि लखण हुते अधिक मिले मुदित मुनिराउ
सो सीतापति भजन को प्रकट प्रताप प्रभाउ ३४
आरत लोग राम सब जाना। करुणाकर सुजान भगवाना
जो जेहि भाँति रहा अभिलाषी। तेहि तेहि कीं तैसी रुचि राखी
सानुज मिलि पल महँ सब काहू। कीन्ह दूरि दुख दारुण दाहू.
यह बड़ि बात राम कै नाहीं। जिमि घट कोटि एक रबि छाहीं
मिलि केवटहि उमगि अनुरागा। पुरजन सकल सराहहिं भागा
देखीं राम दुखित महतारी। जनु सुबेलि अवली हिम मारी
प्रथम राम भेंटे कैकेई। सरल सुभाव भक्ति मति भेई
पग परि कीन्ह प्रबोध बहोरी। काल कर्म्म बिधि सिर धरि खोरी

दो० भेंटी रघुवर मातु सब करि प्रबोध परितोष।
अम्ब ईस आधीन जग काहु न देइय दोष ३५

गुरुतिय पद बन्दे दोउ भाई। सहित बिप्रतिय जे सँग आई
गंग गौरि सम सब सनमानी। देहिं असीस मुदित मृदु बानी
गहि पद लगे सुमित्रा अंका। जनु भेंटी सम्पति अति रंका
पुनि जननी चरनन दोउ भ्राता। परे प्रेम व्याकुल सब गाता
अति अनुराग अम्ब उर लाये। नयन सनेह सलिल अन्हवाये
तेहि अवसर कर हर्ष बिषादू। किमि कबि कहै मूक जिमि स्वादू
मिलि जननिहि सानुज रघुराऊ। गुरु सन कहेउ किधारिय पाऊ
पुरजन पाइ मुनीश नियोगू। जलथल तकि तकि उतरे लोगू

दो० महिसुर मंत्री मातु गुरु गने लोग लिये साथ।
पावन आश्रम गमन किय भरत लयन रघुनाथ ३६

सीय आय मुनिवर पग लागी। उचित असीस लही मन मागी
गुरपतिनिहि मुनितियन्ह समेता। मिलि सप्रेम कहि जाइ न जेता
बन्दि बन्दि पद सिय सबही के। आसिर बचन लहे प्रिय जी के
सासु सकल जब सीय निहारी। मूँदे उ नयन सहमि सुकुमारी
परी बधिक बस मनहुँ मरालो। काह कीन्ह करतार कुचालो

तिन्हसियनिरखिनिपटदुखपावा।सोसबसहियजोदैवसहावा
जनकसुतातबउरधरिधीरा। नीलनलिनलोचनभरिनीरा
मिलीसकलसासुन्हसियजाई।तेहिअवसरकरुणाभरिछाई
दो० लागिलागिपगसबनिसियभेंटतिअतिअनुराग
हृदयअसीशहिंप्रेमबशरहिहहुभरीसुहाग३७
बिकलसनेहसीयसबरानी। बैठनसबहिंकहेउगुरुज्ञानी
प्रथमकहीजगगतिमुनिनाथा।कहेउकछुकपरमारथगाथा
नृपकरसुरपुरगमनसुनावा।सुनिरघुनाथदुसहदुखपावा
मरणहेतुनिजनेहविचारी। भेअतिबिकलधीरधुरधारी
कुलिशकठोरसुनतकटुबानी।बिलपतलषणसीयसबरानी
शोकविकलअतिसकलसमाजू।मानहुँराजअकाजेउआजू
मुनिवरबहुरिरामसमुझाये। सहितसमाजसुसरितअन्हाये
ब्रतनिरम्बुतेहिदिनप्रभुकीन्हा।मुनिहुँकहेजलकाहुनलीन्हा
दो० भोरभयेरघुनन्दनहिंजोमुनिआयसुदीन्ह।
श्रद्धाभक्तिसमेतप्रभुसोसबसादरकीन्ह३८
करिपितुक्रियावेदजसिवरणी।भेपुनीतपातकतमतरणी
जासुनामपावकअघतूला। सुमिरतसकलसुमंगलमूला

शुद्ध सो भयउ साधुसम्मत अस। तीरथ आवाहन सुरसरि जस
शुद्ध भये दुइ बासर बीते। बोले गुरु सन राम पिरीते
नाथ लोग सब निपट दुखारी। कन्द मूल फल अम्बु अहारी
सानुज भरत सचिव सब माता। देखि मोहि पल जिमि जुग जाता
सब समेत पुर धारिय पाऊ। आपु इहां अमरावति राऊ
बहुत कहेउँ सब कियउँ ढिठाई। उचित होइ तस करिय गोसाँई
दो० धर्म्म हेतु करुणायतन कस न कहहु अस राम।
लोग दुखित दिन दुइ दरस देखि लहहिं बिश्राम ३९
राम बचन सुनि सभय समाजू। जनु जलनिधि महँ बिकल जहाजू
सुनि मुनि गिरा सुमंगल मूला। भयउ मनहुँ मारुत अनुकूला
पावन पयँ तिहुँ काल अन्हाहीं। जेहि बिलोकि अघ ओघ नसाहीं
मंगल मूरति लोचन भरि भरि। निरखहिं हरषि दण्डवत करि करि
राम शैल बन देखन जाहीं। जहँ सुख सकल सकल दुख नाहीं
झरना झरहिं सुधा सम बारी। त्रिविध ताप हर त्रिविध बयारी
बिटप बेलि तृन अगनित जाती। फल प्रसून पल्लव बहु भाँती
सुन्दर शैल सुखद तरु छाहीं। जाइ बरनि बन छबि केहि पाहीं
दो० सरित सरोरुह जल बिहँग कूजत गुंजत भृंग।

वैरविगत बिहरत बिपिन मृग विहंग बहु रंग २४०
कोल्ह किरात भील बनबासी। मधु सुचि सुन्दर स्वादु सुधा सी
भरि भरि परन कुटीर चिरूरी। कन्द मूल फल अंकुर जूरी
सबहि देहिं करि बिनय प्रनामा। कहि कहि स्वादु भेद गुन नामा
देहिं लोग बहु मोल न लेहीं। फेरत राम दुहाई देहीं॥
कहहिं सनेह मगन मृदु बानी। मानत साधु प्रेम पहिचानी
तुम सुकृती हम नीच निषादा। पावा दरशन राम प्रसादा
हमहिं अगम अति दरश तुम्हारा। जस मरु धरनि देव सरि धारा
राम कृपालु निषाद नेवाजा। परिजन प्रजा चहिय जस राजा
दो० यह जिय जानि सकोच तजि करिय छोह लखि नेहु
हमहिं कृतारथ करन लगि फल तृन अंकुर लेहु ४१
तुम प्रिय पाहुन बन पगु धारे। सेवा योग न भाग्य हमारे
देब कहा हम तुमहिं गुसाँई। ईंधन पात किरात मिताई
यह हमारि अति बड़ि सेवकाई। लेहिं न बासन बसन चुराई
हम जड़ जीव जीव गन घाती। कुटिल कुचाली कुमति कुजाती
पाप करत निसि बासर जाहीं। नहिं पट कटि नहिं पेट अघाहीं
सपनेहु धर्म बुद्धि कस काऊ। यह रघुनन्दन दरश प्रभाऊ

जबते प्रभु पद पद्म निहारे। मिटे दुसह दुख दोष हमारे
वचन सुनत पुरजन अनुरागे। तिन्हके भाग सराहन लागे
छं० लागे सराहन भाग सब अनुराग वचन सुनावहीं।
बोलनि मिलनि सियराम चरन सनेह लखि सुख पावहीं
नर नारि निदरहिं नेह निज सुनि कोल भिल्लन्ह की गिरा
तुलसी कृपा रघुबंश मणि की लोह लै लौका तरा २०
सो० बिहरहिं बन चहु ओर प्रति दिन प्रमुदित लोग सब
जल ज्यों दादुर मोर भये पीन पावस प्रथम ९
पुर नर नारि मगन अति प्रीती। बासर जाहिं पलक सम बीती
सीय सासु प्रति वेष बनाई। सादर करहिं सरिस सेवकाई
लखा न मर्म्म राम बिनु काहू। माया सब सिय माया नाहू
सीय सासु सेवा बश कीन्हीं। तिन्ह लहि सुख शिष आशिष दीन्हीं
लखि सिय सहित सरल दोउ भाई। कुटिल रानि पछिताइ अघाई
अब जिय महिं याचति कैकेई। मोहिं न बीच विधि मीचु न देई
लोकहु वेद विदित कवि कहहीं। राम विमुख थल नरक न लहहीं
यह संशय सब के मन माहीं। राम गमन विधि अवधि कि नाहीं
दो० निशि न नींद नहि भूख दिन भरत विकल शुचि शोच

नीचकीचबिचमगनजसमीनहिंसलिलसंकोच४२
कीन्हिमातुमिसुकालकुचाली।ईतिभीतिजसपाकतशाली
कोहिविधिहोइरामअभिषेकू।मोहिंअबफुरतउपायनएकू
अवशिफिरहिंगुरुआयसुमानी।मुनिपुनिकहबरामरुचिजानी
मातुकहे बहुराहिं रघुराऊ।रामजननिहठकरबकिकाऊ
मोहिंअनुचरकरकेतिकबाता।तेहिमहँकुसमयबामविधाता
जोहठकरौं तोनिपटकुकरमू।हरगिरि ते गुरु सेवक धरमू
एकौ युक्ति न मन ठहरानी।सोचत भरतहिं रैनि सिरानी
प्रातअन्हाइप्रभुहिशिरनाई।बैठत पठये ऋषय बुलाई
दो० गुरुपदकमल प्रणामकरि बैठे आयसु पाइ।
विप्रमहाजन सचिवसब जुरे सभासद आइ४३
बोले मुनिवर समयसमाना।सुनहु सभासद भरत सुजाना
धर्म्मधुरीणा भानुकुलभानू।राजा राम स्वबश भगवानू
सत्यसिन्धु पालकश्रुतिसेतू।रामजन्म जग मंगल हेतू॥
गुरुपितुमातुवचनअनुसारी।खलदलदलनदेवहितकारी
नीति प्रीति परमारथस्वारथ।कोउनरामसमजानयथारथ
विधिहरिहरशशिरविदिशिपाला।मायाजीवकरमकलिकाला

अहिप महिप जहँलगि प्रभुताई। योग सिद्धि निगमागम गाई
करि बिचार जियदेखहु नीके। राम रजाय शीश सबही के
दो० राखे राम रजाय रुख हम सब कर हित होइ।
समुझि सयाने करहु अब सब मिलि सम्मत सोइ ४४
सब कहँ सुखद राम अभिषेक। मंगल मूल मोद मग एक।
केहि विधि अवध चलहिं रघुराई। कहहु समुझि सोइ करैं उपाई
सब सादर सुनि मुनिवर बानी। नय परमारथ स्वारथ सानी
उतर न आव लोग भे भोरे। तब शिर नाइ भरत कर जोरे
भानु बंश भे भूप घनेरे। अधिक एक ते एक बड़ेरे
जनम हेतु सब कहँ पितु माता। कर्म शुभाशुभ देइ विधाता
दलि दुख सजै सकल कल्याना। असि असीष राउर जग जाना
सो गुसाइ विधि गति जेइ छेकी। सकै को टारि टेक जो टेकी
दो० बूझिय मोहिं उपाय अब सो सब मोर अभाग।
सुनि सनेह मय वचन गुरु उर उपजा अनुराग ४५
तात बात फुर राम कृपाहीं। राम बिमुख सुख सपनेहुँ नाहीं
सकुचौं तात कहत यक बाता। अरध तजहिं बुध सरबस जाता
तुम्ह कानन गवनहु दोउ भाई। फिरिहहिं लखन सीय रघुराई

सुनि शुभवचन हर्ष दोउ भ्राता। भे प्रमोद परिपूरन गाता
मन प्रसन्न तनु तेज विराजा। जनु जिय राउ राम भे राजा
बहुत लाभ लोगन लघु हानी। सम दुख सुख सब रोवहिं रानी
कहहिं भरत मुनि कहसि सो कीन्हे। फल जग जीवन अभिमत दीन्हे
कानन करउँ जन्म भरि बासू। एहि ते अधिक न मोर सुपासू
दो० अन्तरयामी राम सिय तुम सर्व्वज्ञ सुजान।
जो फुर कहहु तो नाथ निज कीजिय वचन प्रमान ४६
भरत वचन सुनि देखि सनेहू। सभा सहित मुनि भयउ विदेहू
भरत शील महिमा जल रासी। मुनि मति ढाढ़ि तीर अवलासी
गा चह पार यतन बहु हेरा। पावत नाव न बोहित बेरा.
औरु करहि को भरत बड़ाई। सरिस सीप की सिन्धु समाई
भरत मुनिहि मन भीतर भाये। सहित समाज राम पहँ आये
प्रभु प्रणामकीन्ह सुआसन। बैठे सब मुनि मुनि अनुशासन
बोले मुनिवर वचन विचारी। देश काल अवसर अनुहारी
सुनहु राम सर्व्वज्ञ सुजाना। धर्म्मनीति गुण ज्ञान निधाना
दो० सबके उर अन्तर बसहु जानहु भाव कुभाव।
पुरजन जननी भरत हित होइ सो कहिय उपाव ४७

भरतकहहिं विचारनकाजू। सुझुआरिहि आपन दाजू
सुनिसुनिवचनकहतरघुराजू। नाथ तुम्हारेहि हाथउपाजू
सबकर हित रुख राउर राखे। आयसुकिएसुदितफुरभाखे
प्रथम जो आयसु मोकहँ होई। माथे मानि करौं सिख सोई
पुनिजेहिकहँ जसहोब रजाई। सोसब भाँतिकरिहि सेवकाई
कह मुनिराम सत्य तुम भाखा। भरतसनेह विचार न राखा।
तेहि तेकहौं बहोरि बहोरी। भरतभक्ति हैमम मति मोरी
मोरे जान भरत रुचि राखी। जोकीजियसोशुभशिव साखी
दो० भरतविनयसादरसुनियकरिय विचारबहोरि।
करबसाधुमतलोकमतनृपनयनिगमनिचोरि४८
गुरु अनुराग भरत परदेखी। रामहृदय आनन्द विशेखी
भरतहिं धर्म्म धुरन्धर जानी। निजसेवकतनुमानस बानी
बोलेगुरु आयसु अनुकूला। वचन मंजु मृदु मंगल मूला.
नाथशपथपितुचरणदुहाई। भयउन भुवनभरतसम भाई
जेगुरुपद अम्बुज अनुरागी। तेलोकहुँ वेदहुँ बड़ भागी
राउर जापर अस अनुरागू। को कहि सकै भरतकरभागू
लखिलघुबन्धुबुद्धिसकुचाई। करतवदन परभरत बड़ाई

भरत कहहिं सोइ किये भलाई। अस कहि राम रहे अरगाई
दो० तब मुनि बोले भरत सन सब सँकोच तजि तात।
कृपासिन्धु प्रिय बन्धु सन कहहु हृदय की बात ४८
सुनि मुनि बचन रामरुख पाई। गुरुसाहिब अनुकूल अघाई
लखि अपने सिर सबछरभारू। कहि न सकैं कछु करैं बिचारू
पुलक शरीर सभा भे ठाढ़े। नीरज नयन नेह जल बाढ़े
कहब मोर मुनिनाथ निबाहा। इहिते अधिक कहौं मैं काहा
मैं जानौं निज नाथ सुभाऊ। अपराधिहु पर कोह न काऊ
मोपर कृपा सनेह बिशेखी। खेलत खुनस न कबहुँ देखी
शिशुपन ते परिहरेउँ न संगू। कबहुँ न कीन्ह मोर मन भंगू
मैं प्रभु कृपा रीति जिय जोही। हारेहु खेल जितावहि मोही
दो० महूँ सनेह सँकोच बश सन्मुख कहेउँ न बयन।
दरशन तृषित न आजु लगि प्रेम पियासे नयन २५०
बिधि न सकेउ सहि मोर दुलारा। नीच बीच जननी मिसु पारा
इहौ कहत मोहिं आजु न शोभा। आपुन समुझि साधु शुचि कोभा
मातु मन्द मैं साधु सुचाली। उर अस आनत कोटि कुचाली
फरै कि कोदव बालि सुशाली। मुकता प्रवै कि शम्बुक ताली

सपनेहु दोष कलेश न काहू। मोर अभाग उदधि अवगाहू
बिनसमुझे निज अघ परिपाकू। जारेउँ जाइ जननि कहि काकू
हृदय हेरि हारेउँ सब ओरा। एकहि भाँति भलि हि भल मोरा।
गुरु गुसाइँ साहिब सिय रामू। लागत मोहि नीक परिनामू॥
दो० साधु सभा प्रभु गुरु निकट कहौं सुथल सति भाव।
प्रेम प्रपञ्च कि झूठ फुर जानहिं मुनि रघुराउ ५१
भूपति मरन प्रेम प्रन राखी। जननी कुमति जगत सब साखी
देखि न जाहिं बिकल महतारी। जरहिं दुसह ज्वर पुर नर नारी
महीं सकल अनरथ कर मूला। सो सुनि समुझि सहौं सब सूला
सुनि बन गमन कीन्ह रघुनाथा। करि मुनि भेष लखन सिय साथा
बिनु पनहीं अरु प्यादेहि पाँये। शंकर साखि रह्यौं इहि घाये
बहुरि निहारि निषाद सनेहू। कुलिश कठिन उर भयउ न बेहू
अब सब आँखि न देखेउँ आई। जिय जड़ सबै सहाई
जिनहिं निरखि मग साँपिनि बीछी। तजहिं बिषम बिषतामस तीछी
दो० तेइ रघुनन्दन लखन सिय अनहित लागे जाहि।
तासु तनय तजि दुसह दुख दैव सहावै काहि ५२
सुनि अति बिकल भरत बर बानी। आरति प्रीति बिनय नय सानी

शोकमगनसबसभाखभारू। मनहुंकमलबनपरेउतुषारू
कहि अनेकविधिकथापुरानी। भरतप्रबोधकीन्हमुनि ज्ञानी
बोले उचितवचन रघुनन्दू। दिनकरकुलकैरवबनचन्दू
तातजीयजनिकरहुगलानी। ईशअधीनजीवगतिजानी
तीनिकालत्रिभुवनमतमोरे। पुण्यसलोकतात तनु तोरे
उरआनतुम परकुटिलाई। जाइलोकपरलोक नशाई।
दोषदेहिंजननिहिंजड़ तेई। जिन्हगुरुसाधुसभानहिंसेई
दो० मिटिहिपापपरिपञ्चसबअखिलअमंगलभार
लोकसुयशपरलोकसुखसुमिरतनामतुम्हार ४३
कहौंस्वभावसत्यशिवसाखी। भरत भूमि रह राउरि राखी।
तात कुतर्ककरहु जनिजाये। बैर प्रेम नहिं दुरै दुराये।
मुनिगणनिकटविहंगमृगजाहीं। बाधकबधिकबिलोकिपराहीं
हितअनहितपशुपक्षिउजाना। मानुषतनुगुणज्ञाननिधाना
तात तुमहिं मैं जानौं नीके। करौंकहा असमञ्जस जीके
राखेउ राउसत्यमोहिंत्यागी। तनुपरिहरेउ प्रेमपणलागी
तासुवचन मेटत मन शोचू। तेहिते अधिक तुम्हार सकोचू
तापरगुरुमोहिंआयसुदीन्हा। अवसिजोकहहुचहौंसोइकीन्हा

दो० मन प्रसन्न करि सकुचत जिय कहहु करौं सो आज।
सत्यसिन्धु रघुवर वचन सुनि भा सुखी समाज ५४

सुरगण सहित सभय सुरराजू। सोचहिं चाहत होन अकाजू।
करत विचार बनत कछु नाहीं। राम शरण सब गे मन माहीं
बहुरि विचारि परस्पर कहहीं। रघुपति भक्त भक्ति वश अहहीं
सुधि करि अम्बरीष दुर्वासा। भे सुर सुरपति निपट निरासा
सहे सुरन बहु काल विषादा। नरहरि किये प्रकट प्रह्लादा.
लागि लागि कान कहहिं धुनि माथा। अब सुर काज भरत के हाथा
आन उपाय न देखिय देवा। मानत राम सुसेवक सेवा
हिय सप्रेम सेवहु सब भरतहिं। निज गुण शील राम वश करतहिं

दो० सुनि सुर मत सुर गुरु कहेउ भल तुम्हार बड़ भाग।
सकल सुमंगल मूल जग भरत चरण अनुराग ५५

सीता पति सेवक सेवकाई। कामधेनु शत सरिस सुहाई
भरत भक्ति तुम्हरे मन आई। तजहु शोच विधि बात बनाई
देखु देव पति भरत प्रभाऊ। सहज सुभाव विवश रघुराऊ
मन थिर करहु देव डर नाहीं। भरतहि जानि राम परिछाहीं
सुनि सुर गुरु सुर सम्मत सोचू। अन्तरयामी प्रभुहि सकोचू

निज शिर मार भरत जिय जाना। करत कोटि विधि उर अनुमाना
करि विचार मन दीन्हीं ठीका। राम रजायसु आपन नीका
निज प्रण तजि राखेउ मन मोरा। छोभ सनेह कीन्ह नहिं थोरा

दो० कीन्ह अनुग्रह अमित अति सब विधि सीतानाथ
करि प्रणाम बोले भरत जोरि जलज युग हाथ ५६

कहउँ कहावउँ का अब स्वामी। कृपा अम्बुनिधि अन्तरयामी
गुरु प्रसन्न साहिब अनुकूला। मिटी मलिन मन कलपित शूला
अपडर डरउँ न शोच समूले। रविहि न दोष देव दिशि भूले
मोर अभाग मातु कुटिलाई। विधिगति विषम काल कठिनाई
पाँव रोपि सब मिलि मोहिं घाला। प्रणत पाल प्रण आपन पाला
यह नइ रीति न राउरि होई। लोकहु वेद विदित नहिं गोई
जग अनभल भल एक गुसाँई। कहिय होइ भल कासु भलाई
देव देवतरु सरिस सुभाऊ। सन्मुख बिमुख न काहु हि काऊ

दो० जाइ निकट पहिचानितरु छाँह शमन सब शोच
माँगत अभिमत पाव फल राउर कल पोच ५७

लखि सब विधि गुरु स्वामि सनेहू। मिटेउ छोभ नहिं मन सन्देहू
अब करुणाकर कीजिय सोई। जन हित प्रभु चित छोभ न होई

जो सेवक साहिब संकोची। निज हित चहै तासुमति पोची
सेवक हित साहिब सेवकाई। करै सकल सुख लोभ बिहाई
स्वारथ नाथ फिरे सबही का। किये रजाइ कोटि बिधि नीका
यह स्वारथ परमारथ सारू। सकल सुकृत फल सुगति सिंगारू
देव एक बिनती सुनि मोरी। उचित होइ तस करब बहोरी
तिलक समाज साजि सब आना। करिय सुफल प्रभु जो मन माना

दो० सानुज पठइय मोहिं बन कीजिय सबहि सनाथ
नातरु फेरिय बन्धु दोउ नाथ चलौं मैं साथ ५८

नतरु जाहिं बन तीनिउ भाई। बहुरिय सीय सहित रघुराई
जेहि बिधि प्रभु प्रसन्न मन होई। करुना सागर कीजिय सोई
देव दीन्ह सब मो पर भारू। मोरे नीति न धर्म्म बिचारू
कहौं बचन सब स्वारथ हेतू। रहत न आरत के चित चेतू
उतर देइ सुनि स्वामि रजाई। सो सेवक लरि लाज लजाई
अस मैं अवगुण उदधि अगाधू। स्वामि सनेह सराहत साधू
अब कृपाल मोहिं सो मत भावा। सकुच स्वामि मन जाइ न पावा
प्रभु पद शपथ कहौं सति भाऊ। जग मङ्गल हित एक उपाऊ

दो० प्रभु प्रसन्न मन सकुच तजि जो जेहि आयसु देव

सोशिर धरि धरि करिहि सबु मिटिहि अनट अवरेव ५६
भरत वचन शुचि सुनि हिय हरषे। साधु साधु सुमन सुर बरषे
असमञ्जस बश अवध निवासी। प्रमुदित मन तापस बन बासी
चुप रहिगे रघुनाथ सकोची। प्रभु गति देखि सभा सब सोची
जनक दूत तेहि अवसर आये। मुनि बशिष्ठ सुनि बेगि बुलाये
करि प्रणाम तिन्ह राम निहारे। बेष देखि भे निपट दुखारे।
दूतन्ह मुनिवर पूँछी बाता। कहहु बिदेह भूप कुशलाता
सुनि सकुचाइ नाइ महि माथा। बोले चर बर जोरे हाथा
बूझब राउर सादर साईं। कुशल हेतु सो भयउ गुसाईं
दो० नाहित कोशलनाथ के साथ कुशल गइ नाथ।
मिथिला अवध विशेष तें जग सब भयउ अनाथ २६०
कोशलपति गति सुनि जनकौरा। भे सब लोग शोक बश बौरा
जेहि देखा तेहि समय बिदेहू। नाम सत्य अस लाग न केहू
रानि कुचालि सुनत महिपालहिं। सूझ न कछु जस मणि बिनु ब्यालहिं
भरत राज रघुवर बन बासू। भा मिथिलेश हृदय हिय त्रासू
नृप बूझे बुध सचिव समाजू। कहहु बिचारि उचित का आजू
समुझि अवध असमञ्जस दोऊ। चलिय कि रहिय न कह कछु कोऊ

नृपति धीर धरि हृदय विचारी। पठये अवध चतुर चर चारी
बूझि भरत सत माउ कुभाऊ। आयहु वेगि न होइ लखाऊ.
दो० गये अवध चर भरत गति बूझि देखि करतूति।
चले चित्रकूटहिं भरत चार चले तिरहूति ६१
दूतन आइ भरत की करनी। जनक समाज यथामति बरनी
सुनि गुरु पुरजन सचिव महीपति। भे सब सोच सनेह बिकल अति
धरि धीरज करि भरत बड़ाई। लिये सुभट साहनी बुलाई
घर पुर देश राखि रखवारे। हय गज रथ बहुयान सँवारे
दुघरी साधि चले ततकाला। किय बिश्रामु न मगु महिपाला
भोरहिं आजु नहाइ प्रयागा। चले यमुन उतरन सबलागा
खबरि लेन हम पठये नाथा। तिन्ह कहि अस महि नायउ माथा
साथ किरात छ सातक दीन्हे। मुनिवर तुरत बिदा चर कीन्हे
दो० सुनत जनक आगमनु सब हरषेउ अवध समाजु।
रघुनन्दनहिं सँकोचु बड़ शोचु बिबस सुरराजु ६२
गरइ गलानि कुटिल कैकयी। काहि कहे केहि दूषनु देयी
अस मन आनि मुदित नर नारी। भयउ बहोरि रहब दिन चारी
एहि प्रकार गत बासर सोऊ। प्रात अन्हान लगे सब कोऊ

करि मज्जन पूजहिं नर नारी। गनपति गौरि पुरारि तमारी
रमा रमण पद बन्दि बहोरी। बिनवहिं अञ्जुलि अञ्चल जोरी
राजा राम जानकी रानी। आनँद अवधि अवध रजधानी
सुबस बसै फिरि सहित समाजा। भरतहिं रामु करहिं जुबराजा
एहि सुख सुधा सींचि सब काहू। देव देहु जग जीवन लाहू
दो० गुरु समाज भाइन सहित राम राज पुर होउ।
अछत राम राजा अवध मरिय माँग सब कोउ ६३
सुनि सनेह मय पुरजन बानी। निन्दहिं योग बिरति मुनि ज्ञानी
एहि बिधि नित्य करम करि पुरजन। रामहिं करहिं प्रनाम पुलकित तन
ऊँच नीच मध्यम नर नारी। लहहिं दरस निज निज अनुहारी
सावधान सबही सनमानहिं। सकल सराहत कृपा निधानहिं
लरिकाईं ते रघुबर बानी। पालत नीति प्रीति पहिचानी
सील सँकोच सिन्धु रघुराऊ। सुमुख सुलोचन सरल सुभाऊ
कहत राम गुन गन अनुरागे। सब निज भाग सराहन लागे
हम सम पुरय पुञ्ज जग थोरे। जिनहिं राम जानत करि मोरे
दो० प्रेम मगन तेहि समय सब सुनि आवत मिथिलेश
सहित सभा सम्भ्रम उठे रबि कुल कमल दिनेश ६४

आगे गमन कीन्ह रघुनाथा। भाइ सचिव गुरु पुरजन साथा
गिरिवर दीख जनक नृप जबहीं। करि प्रणाम त्यागे रथ तबहीं
राम दरश लालसा उछाहू । पथ श्रम लेश कलेश न काहू
मन तहँ जहँ रघुबर बैदेही। बिनु मन तनु दुख सुख सुधि केही
आवत जनक चले इहि भाँती। सहित समाज प्रेम मद माती
आये निकट देखि अनुरागे। सादर मिलन परस्पर लागे
लगे जनक मुनिगण पद बन्दन। ऋषिन प्रणाम कीन्ह रघुनन्दन
भाइन सहित राम मिलि राजहिं। चले लवाइ समेत समाजहिं
दो० आश्रम सागर शान्त रस पूरण पावन पाथ।
सेन मनहुँ करुणा सरित लिये जात रघुनाथ ६५
बोरति ज्ञान बिराग करारे। बचन सशोक मिलत नद नारे
शोच उसास समीर तरंगा। धीरज तट तरुवर कर भंगा
बिषम बिषाद तुरावति धारा। भय भ्रम भँवर अबर्त्त अपारा
केवट बुध बिद्या बड़ि नावा। सकहिं न खेइ एक नहिं आवा
बनचर कोल्ह किरात बिचारे। थके बिलोकि पथिक हिय हारे
आश्रम उदधि मिली जब जाई। मनहुं उठेउ अम्बुधि अकुलाई
शोक बिकल दोउ राज समाजा। रहा न ज्ञान न धीरज लाजा

भूप रूप गुण शील सराही। शोचहिं शोक सिन्धु अवगाही॥
छं० अवगाहि शोक समुद्र शोचहिं नारि नर व्याकुल महा।
दै दोष सकल सरोष बोलहिं बाम विधि कीन्हो कहा॥
सुर सिद्ध तापस योगिजन मुनि देखि दशा विदेह की।
तुलसी न समरथ कोउ जो तरि सकै सरित सनेह की॥११
सो० किये अमित उपदेश जहँ तहँ लोगन मुनिवरन।
धीरज धरिय नरेश कहेउ वशिष्ठ विदेह सन॥१०

जासु ज्ञान रवि भव निशि नाशा। वचन किरण मुनि कमल विकाशा
तेहि कि मोह ममता निअराई। यह सिय राम सनेह बड़ाई
विषयी साधक सिद्ध सयाने। त्रिविध जीव जग वेद बखाने
राम सनेह सरस मन जासू। साधु सभा बड़ आदर तासू
सोह न राम प्रेम बिनु ज्ञाना। करणधार बिनु जिमि जलयाना
मुनि बहु विधि विदेह समुझाये। राम घाट सब लोग अन्हाये
सकल शोक संकुल नर नारी। सो बासर बीतेउ बिनु बारी
पशु खग मृग न कीन्ह अहारा। प्रिय परिजन कर कवन विचारा
दो० दोउ समाज निमि राज रघु राज नहाने प्रात।
बैठे सब बट विटप तर मन मलीन कृश गात॥६६

जे महिसुर दशरथपुर वासी। जे मिथिलापतिनगरनिवासी
हंस बंश गुरु जनक पुरोधा। जिन जगमगु परमारथ शोधा.
लगे कहन उपदेश अनेका। सहित धर्म्म नय बिरति बिबेका
कौशिक कहि कहि कथा पुरानी। समुझाई सब सभा सुबानी
तब रघुनाथ कौशिकहिं कहेऊ। नाथ काल्हि जल बिनु सब रहेऊ
मुनि कह उचित कहत रघुराई। गयउ बीति दिन पहर अढ़ाई.
ऋषि रुख लखि कह तिरहुति राजू। इहाँ उचित नहिं असन अनाजू
कहा भूप भल सबहिं सुहाना। पाइ रजायसु चले नहाना.

दो० तेहि अवसर फल फूल दल मूल अनेक प्रकार।
लै आये बनचर बिपुल भरि भरि काँवरि भार ९७

कामद भे गिरि राम प्रसादा। अवलोकत अपहरत बिषादा
सर सरिता बन भूमि बिभागा। जनु उमगत आनंद अनुरागा
बेलि बिटप सब सफल सफूला। बोलत खग मृग अति अनुकूला
तेहि अवसर बन अधिक उछाहू। त्रिबिध समीर सुखद सब काहू
जाइ न बरनि मनोहर ताई। जनु महि करति जनक पहुनाई
तब सब लोग नहाइ नहाई। राम जनक मुनि आयसु पाई
देखि देखि तरु बर अनुरागे। जहँ तहँ पुरजन उतरन लागे

दल फल फूल कन्द विधि नाना। पावन सुन्दर सुधा समाना
दो० सादर सब कहँ राम गुरु पठये भरि भरि भार।
पूजि पितर सुर अतिथि गुरु लगे करन फलहार ६८
इहि विधि बासर बीते चारी। राम निरखि नर नारि सुखारी
दुहुँ समाज असरुचि मन माहीं। बिनु सिय राम फिरब भल नाहीं
सीता राम संग बनबासू। कोटि अमरपुर सरिस सुपासू
परिहरि लषण राम बैदेही। जेहि घर भाव बाम बिधि तेही
दाहिन दैव होइ जब सबहीं। राम समीप बसिय बन तबहीं
मन्दाकिनि मज्जन तिहुँ काला। राम दरश मुद मंगल माला
अटन राम गिरि बन तापस थल। अशन अमिय सम कन्द मूल फल
सुख समेत संवत दुइ साता। फल समहोहिं न जानिय जाता
दो० इहि सुख योग न लोग सब कहहिं कहाँ अस भाग।
सहज सुभाव समाज दुहु राम चरण अनुराग ६९
इहि विधि सकल मनोरथ करहीं। वचन सप्रेम सुनत मन हरहीं
सीय मातु तेहि समय पठाई। दासी देखि सुअवसर आई
सावकाश सुनि सब सिय सासू। आई जनक राज रनिवासू
कौशल्या सादर सनमानी। आसन दीन्ह समय सम आनी

शील सनेह सरस दुहुँ ओरा। द्रवहिं देखि सुनि कुलिस कठोरा
पुलक शिथिल तनु वारि विलोचन। महि नख लिखन लगीं सब सोचन
सब सिय राम प्रेम की मूरति। जनु करुणा बहु भेष बिसूरति
सीय मातु कह बिधि बुधि बाँकी। जिमि पय फेनु फोर पवि टाँकी
दो० सुनिय सुधा देखिय गरल सब करतूति कराल।
जहँ तहँ काक उलूक बक मानस सकृत मराल ७१
सुनि सोचु कह देबि सुमित्रा। बिधि गति अति बिपरीत बिचित्रा
जो सृजि पालै हरै बहोरी। बाल केलि सम बिधि मति भोरी
कौशल्या कह दोषु न काहू। करम बिवश दुख सुख छति लाहू
कठिन करम गति जान बिधाता। जो शुभ अशुभ करम फल दाता
ईश रजाइ शीश सबही के। उतपति थिति लय बिषहु अमी के
देबि मोह बश सोचिय बादी। बिधि प्रपञ्च अस अचल अनादी
भूपति जियब मरब उर आनी। सोचिय सखि लखि निज हित हानी
सीय मातु कह सत्य सुबानी। सुकृती अवधि अवधपति रानी
दो० लखन राम सिय जाहिं बन भल परिणाम न पोच
गहबरि हिय कह कौशिला मोहिं भरत कर शोच ७२
ईश प्रसाद असीष तुम्हारी। सुत सुतबधू देवसरि बारी

रामशपथमैंकीन्हनकाऊ। सोकरिसखीकहौंसतिभाऊ
भरतशीलगुणाविनयबड़ाई। भायपभक्ति भरोस भलाई
कहतशारदहु कैमति हीचे। सागरसीपकि जाहिंउलीचे
जानौंसदा भरतकुलदीपा। बारबारमोहिंकहेउमहीपा.
कसेकनकमणिपारिखपाये। पुरुषपरिखियेसमयसुभाये
अनुचितआजुकहबअसमोरा। शोकसनेहसयानप थोरा॥
सुनिसुरसरिसमपावनिबानी। भईसनेहविकलसब रानी
दो० कौशल्याकहधीरधरि सुनहु देविमिथिलेशि।
कोविवेकनिधिबल्लभहिंतुमहिंसकैउपदेशि७२
रानि राय सन अवसर पाई। आपनिभाँतिकहबसमुझाई
राखियलखणभरतगवनहिंबन। जोयहमतमानैमहीपमन
तोभलयतनकरबसुबिचारी। मोरे शोच भरत कर भारी
गूढ़ सनेह भरत मन माहीं। रहेनीक मोहिं लागत नाहीं
लखिसुभावसुनिसरलसुबानी। सबभईमगनकरुणारससानी
नभप्रसूनझरिधन्यधन्यधुनि। शिथिलसनेहसिद्धयोगीमुनि
सबरनिवासथकितलखिरहेऊ। तबधरिधीरसुमित्रा कहेऊ.
देविदण्ड युगयामिनिबीती। राम मातुसुनि उठी सप्रीती

दो० बेगि पायँ धारिय थलहि कह सनेह सति भाय।
हमरे तौ अब ईश गति कै मिथिलेश सहाय ७३

लखि सनेह सुनि बचन बिनीता। जनक प्रिया गहि पाय पुनीता
देबि उचित अस बिनय तुम्हारी। दशरथ घरनि राम महतारी
प्रभु अपने नीचहु आदरहीं। अगिनि धूम गिरि सिर तृण धरहीं
सेवक राउ करम मन बानी। सदा सहाय महेश भवानी
रौरे अंग जोग जग को है। दीप सहाय कि दिनकर सोहै
राम जाइँ बन करि सुर काजू। अचल अवध पुर करिहहिं राजू
अमर नाग नर राम बाहुबल। सुख बसिहहिं अपने अपने थल
यह सब याज्ञवल्क्य कहि राखा। देबि न होइ मृषा मुनि भाखा

दो० अस कहि पगु परि प्रेम अति सिय हित बिनय सुनाइ
सिय समेत सिय मातु तब चली सुआयसु पाइ ७४

प्रिय परिजनहिं मिली बैदेही। जो जेहि योग भाँति तस तेही
तापस भेष जानकिहि देखी। भे सब बिकल बिषाद बिसेखी
जनक राम गुरु आयसु पाई। चले थलहिं सिय देखी आई
लीन्हि लाइ उर जनक जानकी। पाहुनि पावनि प्रेम प्रान की
उर उमगेउ अम्बुधि अनुरागू। भयउ भूप मन मनहुँ प्रयागू।

सिय सनेह बट बाढ़त जोहा। तापर राम प्रेम शिशु सोहा
चिरंजीवि सुनि ज्ञान विकल जनु। बूड़त लहेउ बाल अवलम्बनु
मोह मगन मति नाहिं विदेह की। महिमा सिय रघुबर सनेह की
दो० सिय पितु मातु सनेह बश विकल न सकी सँभारि।
धरणी सुता धीरज धरेउ समय सुधर्म्म विचारि ७५
तापस भेष जनक सिय देखी। भयउ प्रेम परितोष विशेखी
पुत्रि पवित्र किये कुल दोऊ। सुयश धवल जग कह सब कोऊ
जिमि सुरसरि कीरति सरितोरी। गवन कीन्ह विधि अण्ड करोरी
गंग अवनि थल तीनि बड़ेरे। इहि किय साधु समाज घनेरे
पितु कह सत्य सनेह सुबानी। सीय सकुचि मन माहँ समानी
पुनि पितु मातु लीन्ह उर लाई। शिष आशिष हित दीन्ह सुहाई
कहति न सीय सकुच मन माहीं। इहाँ बसब रजनी भल नाहीं
लखि रुख रानि जनायउ राऊ। हृदय सराहत शील सुभाऊ।
दो० बार बार मिलि भेंटि सिय विदा कीन्ह सनमानि।
कही समय शिर भरत गति रानि सुबानि सयानि ७६
सुनि भूपाल भरत व्यवहारू। सोन सुगन्ध सुधा शशि सारू
मूँदे सजल नयन पुलके तन। सुयश सराहन लगे मुदित मन

सावधान सुनु सुमुखि सुलोचनि। भरत कथा भव बन्ध विमोचनि
धर्म्मराज नय ब्रह्म विचारू। इहाँ यथामति मोर प्रचारू
सो मति मोर भरत महिमाहीं। कहैं काह छल छुअति न छाहीं
विधि गणपति अहिपति शिव शारद। कवि कोविद बुध बुद्धि विशारद
भरत चरित कीरति करतूती। धर्म्मशील गुण विमल विभूती
समुझत सुनत सुखद सब काहू। शुचि सुरसरि रुचि निदरि सुधाहू
दो० निरवधि गुण निरुपम पुरुष भरत भरत सम जानि
कही सुमेरु कि सेर सम कवि कुल मति सकुचानि ११
अगम सबहि वरणत वरवरणी। जिमि जलहीन मीन मगु धरणी
भरत अमित महिमा सुनु रानी। जानहिं राम न सकहिं बखानी
बरणि सप्रेम भरत मति भाऊ। तिय जिय की रुचि लखि कह राऊ
बहुरहिं लखण भरत बन जाहीं। सब कर भल सब के मन माहीं
देबि परन्तु भरत रघुबर की। प्रीति प्रतीति जाइ नहिं तरकी
भरत सनेह अवधि समता की। यद्यपि राम स्वामि सम ताकी
परमारथ स्वारथ सुख सारे। भरत न सपनेहुँ मनहुँ निहारे
साधन सिद्धि राम पद नेहू। मोहिं लखि परत भरत मत येहू
दो० भोरेहुँ भरत न पेलिहहिं मन महँ राम रजाइ।

करियन शोच सनेह वश कहेउ भूप बिलखाइ ७८

राम भरत गुण गुण तस प्रीती। निशि दम्पति हिं पलक सम बीती
राज समाज प्रात युग जागे। न्हाइ न्हाइ सुर पूजन लागे
गे नहाइ गुरु पहँ रघुराई। वन्दि चरण बोले रुख पाई
नाथ भरत पुरजन महतारी। शोच विकल बनवास दुखारी
सहित समाज राउ मिथिलेशू। बहुत दिवस भे सहत कलेशू
उचित होइ सो कीजिय नाथा। हित सबही कर रौरे हाथा.
अस कहि अति सकुचे रघुराऊ। मुनि पुलके लखि शील सुभाऊ
तुम बिनु राम सकल सुख साजा। नरक सरिस दुहुँ राज समाजा
दो० प्राण प्राण के जीव के जिय सुख के सुख राम।
तुम तजि तात सुहात गृह जिनहिं तिनहिं विधि बाम
सो सुख कर्म्म धर्म्म जरि जाऊ। जहँ न राम पद पंकज भाऊ
योग कुयोग ज्ञान अज्ञानू। जहां न राम प्रेम परधानू.
तुम बिनु दुखी सुखी तुम तेही। तुम जानहु जिय जो जेहि केही
राउर आयसु शिर सबही के। विदित कृपाल हिं गति सब नीके
आपु आश्रमहिं धारिय पाऊ। भये सनेह शिथिल मुनि राऊ
करि प्रणाम तब राम सिधाये। ऋषि धरि धीर जनक पहँ आये

रामवचन गुरु नृपहि सुनाये। शील सनेह सुभाव सुहाये
महाराज अब कीजिय सोई। सबकर धर्म्म सहित हित होई
दो० ज्ञान निधान सुजान शुचि धर्म्म धीर नरपाल
तुम बिनु असमंजस शमन को समर्थ इहिकाल २८०
सुनि सुनि वचन जनक अनुरागे। लखि गति ज्ञान विराग विरागे
शिथिल सनेह गुरात मन माहीं। आये इहां कीन्ह भल नाहीं
रामहिं राय कहेउ बन जाना। कीन्ह आपु प्रिय प्रेम प्रमाना
हम अब बनते बनहिं पठाई। प्रमुदित फिरब विवेक बड़ाई
तापस मुनि महिसुर गति देखी। भये प्रेमवश विकल विशेखी
समय समुझि धरि धीरज राजा। चले भरत पहँ सहित समाजा
भरत आय आगे होय लीन्हा। अवसर सरिस सुआसन दीन्हा
तात भरत कह तिरहुति राऊ। तुमहिं विदित रघुबीर सुभाऊ
दो० राम सत्य व्रत धर्म्म रत सब कर शील सनेहु।
संकट हरत सँकोच बश कहिय जो आय सुदेहु ८१
सुनि तनु पुलकि नयन भरि बारी। बोले भरत धीर धरि भारी
प्रभु प्रिय पूज्य पिता मम आपू। कुलगुरु सम हित माइन बापू
कौशिकादि मुनि सहित समाजू। ज्ञान अम्बुनिधि आपुन आजू

शिशुसेवक आयसु अनुगामी। जानि मोहिं शिख देइय स्वामी
यहि समाज थल बूझब राउर। मन मलीन मैं बोलब बाउर।
छोटे बदन कहौं बड़ि बाता। क्षमब तात लखि बाम बिधाता
आगम निगम प्रसिद्ध पुराना। सेवाधर्म्म कठिन जग जाना
स्वामि धर्म्म स्वारथहि विरोधू। बधिर अन्ध प्रेमहि न प्रबोधू
दो० राखि राम रुख धर्म्म ब्रत पराधीन मोहिं जानि।
सबके सम्मत सर्व्व हित करिय प्रेम पहिंचानि ८२
भरत वचन सुनि देखि सुभाऊ। सहित समाज सराहत राऊ
सुगम अगम मृदु मंजु कठोरा। अर्थ अमित अति आखर थोरा
ज्यों मुख मुकुर मुकुर निज पानी। गहि न जाइ अस अद्भुत बानी.
भूप भरत मुनि साधु समाजू। गे जहँ बिबुध कुमुद द्विज राजू
सुनि सुचि सोच विकल सब लोगा। मनहुँ मीन गन नव जल योगा।
देव प्रथम कुल गुरु गति देखी। निरखि विदेह सनेह विसेखी
राम भक्ति मय भरत निहारे। सुर स्वारथी हहरि हिय हारे
सब कहँ राम प्रेम मय पेखा। भये अलेख सोच बस लेखा
दो० राम सनेह सँकोच बस कह सँकोच सुरराज।
रचहु प्रपंच पंच मिलि नाहित भयउ अकाज ८३

सुरन सुमिरि शारदा सराही। देवि देव शरणागत पाही
फेरि भरतमतिकरि निजमाया। पालु बिबुधकुलकरि छलछाया
बिबुध बिनयसुनि देवि सयानी। बोली सुरस्वारथि जड़ जानी
मो सनकहहु भरतमति फेरू। लोचन सहस न सूझ सुमेरू
बिधिहरिहर माया बड़िभारी। सो न भरतमति सकै निहारी
सो मति मोहिंकहत करु भोरी। चन्दनिकरकि चन्दकरि चोरी
भरतहृदय सियरामनिवासू। तहँकि तिमिरजहँतरणिप्रकासू
अस कहि शारद गइ बिधिलोका। बिबुधबिकल निशिमानहुँकोका
दो० सुरस्वारथी मलीन मन कीन्ह कुमंत्र कुठाट।
रचि प्रपञ्च माया प्रबल भय भ्रम अरति उचाट ८४
करि कुचालि सोचत सुरराजू। भरत हाथ सब काज अकाजू
गये जनक रघुनाथ समीपा। सनमाने सब रघुकुल दीपा
समय समाज धर्म्म अविरोधा। बोले तब रघुवंश पुरोधा।
जनक भरत सम्बाद सुनाई। भरत कहावत कही सुहाई.
तात राम जस आयसु देहू। सो सब करै मोर मत येहू
सुनि रघुनाथ जोरि युग पाणी। बोले सत्य सरल मृदु बाणी।
बिद्यमान आपुन मिथिलेशू। मोर कहा सब भाँति भदेसू

राउर राय रजायसु होई। राउरि शपथ सही शिर सोई
दो० रामशपथ सुनि मुनिजनक सकुचे सभासमेत
सकल बिलोकहिं भरत मुख बनै न उत्तर देत ८५
सभा सकुच वश भरत निहारी। राम बन्धु धरि धीरज भारी
कुसमय देखि सनेह सँभारा। बढ़त बिन्ध्य जिमि घटज निवारा
शोक कनक लोचन मति छोनी। हरी बिमल गुण गण जग योनी
भरत विवेक बराह विशाला। अनायास उधरे तेहि काला
करि प्रणाम सब कहँ कर जोरी। राम राउ गुरु साधु निहोरी।
छमब आजु अति अनुचित मोरा। कहउँ बदन मृदु वचन कठोरा
हिय सुमिरी शारदा सुहाई। मानस ते मुख पंकज आई
बिमल विवेक धर्म नय शाली। भरत भारती मंजु मराली
दो० निरखि विवेक विलोचनन शिथिल सनेह समाज
करि प्रणाम बोले भरत सुमिरे सीय रघुराज ८६
प्रभु पितु मातु सुहृद गुरु स्वामी। पूज्य परम हित अन्तरयामी
सरल सुसाहिब शील निधानू। प्रणतपाल सर्व्वज्ञ सुजानू
समरथ शरणागत हितकारी। गुणग्राहक अवगुण अघहारी
स्वामि गुसाँइहिं सरिश गुसाँई। मोहिं समान मैं स्वामि दुहाई

प्रभुपितु वचनमोहवशपेली। आयउँ इहाँ समाज सकेली
जगभलपोचऊंचअरुनीचू। अमी अमर पद माहुर मीचू
रामरजाय मेटि मन माहीं। देखा सुना कतहुँकोउ नाहीं
सोमैंसबविधिकीन्हढिठाई। प्रभु मानी सनेह सेवकाई
दो० कृपा भलाई आपनी नाथकीन्ह भल मोर।
दूषण भे भूषण सरिस सुयश चारु चहुँ ओर ८७
राउरि रीति सुबानि बड़ाई। जगत विदित निगमागम गाई
कूर कुटिल खल कुमति कलंकी। नीच निसील निरीस निसंकी
तेसुनि शरण सामुहे आये। सुकृत प्रणाम किये अपनाये
देखि दोष कबहुँ न उर आने। सुनि गुण साधु समाज बखाने
को साहिब सेवकहि निवाजी। आपु समान साज सब साजी
निजकरतूति न समुझिय सपने। सेवक सकुच सोच उर अपने
सो गुसाइँ नहिं दूसर कोपी। भुजा उठाइ कहौं प्रण रोपी
पशु नाचत शुक पाठ प्रवीना। गुण गति नट पाठक आधीना
दो० सो सुधारि सनमानि जन किये साधु शिरमौर।
को कृपालु बिनु पालिहै विरुदावलि बरजोर ८८
शोक सनेह कि बाल सुभाये। आयउँ राउ रजायसु पाये।

तबहुँ कृपालु हेरि निज ओरा। सबहि भाँति भल मानेहु मोरा
देखेउँ पायँ सुमंगल मूला। जानेउँ स्वामि सहज अनुकूला
बड़े समाज बिलोकेउँ भागू। बड़ी चूक साहिब अनुरागू
कृपा अनुग्रह अंग अघाई। कीन्हि कृपानिधि सब अधिकाई
राखा मोर दुलार गुँसाई। अपने शील सुभाव भलाई
नाथ निपट मैं कीन्ह ढिठाई। स्वामि समाज सँकोच बिहाई
अबिनय बिनय यथारुचि बानी। क्षमिय देव अति आरत जानी

दो० सुहृद सुजान सुसाहिबहि बहुत कहब बड़ि खोरि
आयसु देइय देव अब सबय सुधारिय मोरि ८९

प्रभुपद पद्म पराग दुहाई। सत्य सुकृत सुख सीम सुहाई
सौंकरि कहौं हिये अपने की। रुचि जागत सोवत सपने की
सहज सनेह स्वामि सेवकाई। स्वारथ छल फल चारि बिहाई
आज्ञा सम न सुसाहिब सेवा। सो प्रसाद जन पावै देवा।
अस कहि प्रेम बिवश भे भारी। पुलक शरीर बिलोचन बारी
प्रभुपद कमल गहे अकुलाई। समय सनेह न सो कहि जाई
कृपासिन्धु सनमानि सुबानी। बैठाये समीप गहि पानी
भरत बिनय सुनि देखि सुभाऊ। शिथिल सनेह सभा रघुराऊ

छं० रघुराउ शिथिल सनेह साधु समाज मुनि मिथिला धनी।
मन महुँ सराहत भरत भायप भक्ति की महिमा घनी।
भरतहिं प्रशंसत विबुध बरषत सुमन मानस मलिन से।
तुलसी विकल सब लोग सुनि सकुचे निशागम नलिन से १२

सो० देखि दुखारी दीन दुहुँ समाज नरनारि सब।
मघवा महा मलीन मुये मारि मंगल चहत १३

कपट कुचालि सीम सुरराजू। पर अकाज प्रिय आपन काजू
काक समान पाकरिपु रीती। छली मलीन कहूँ न प्रतीती
प्रथम कुमति करि कपट सकेला। सो उचाट सब के शिर मेला
सुरमाया सब लोग विमोहे। राम प्रेम अतिशयन बिछोहे
भय उचाट सब मन थिर नाहीं। छन बन रुचि छन सदन सुहाहीं
दुविध मनोगति प्रजा दुखारी। सरित सिन्धु संगम जिमि वारी
दुचित कतहुँ परितोष न लहहीं। एक एक सन मर्म्म न कहहीं
लखि हिय हँसि कह कृपानिधानू। सरिस श्वान मघवा निजबानू
दो० भरत जनक मुनि गण सचिव साधु सचेत विहाइ।
लगी देव माया सबहि यथा योग जन पाइ १४०

कृपासिन्धु लखि लोग दुखारे। निज सनेह सुरपति छल भारे

सभाराउ गुरुमहिसुरमंत्री । भरतभक्ति सबकी मतियंत्री
रामहिंचितवतचित्रलिखेसे। सकुचतबोलतवचनसिखेसे
भरतप्रीतिनितविनयबड़ाई । सुनतसुखदबरणातकढिनाई
जासुविलोकिभक्तिलवलेशू। प्रेममगनमुनिगणमिथिलेशू
महिमातासुकहैकिमितुलसी। भक्तिप्रभावसुमतिहियहुलसी
आपुछोटमहिमाबड़िजानी। कविकुलकानिमानिसकुचानी
कहिनसकतगुणारुचिअधिकाई।मतिगतिबालवचनकी नाई
दो० भरतविमलयशविमलविधुसुमतिचकोरकुमारि
उदितविमलजनहृदयनभएकटकरहीनिहारि ९१
भरतसुभावनसुगमनिगमहू। लघुमतिचापलताकविक्षमहू
कहतसुनतसतिभावभरतको। सीय राम पदहोइ न रतको।
सुमिरत भरतहिंप्रेमरामको।जेहिनसुलभतेहिसमनबामको
देखि दयालु दशा सबही की। रामसुजानजानिजन जीकी
धर्म्म धुरीणा धीर नय नागर । सत्य सनेह शील सुखसागर
देशकाल लखिसमय समाजू। नीति प्रीति पालक रघुराजू।
बोले वचन वाणि सरबस से। हित परिणाम सुनतशशिरस से
तातभरत तुम धर्म्म धुरीणा। लोक वेद विधि परम प्रवीणा

दो० कर्म्मवचन मानसविमलतुमसमानतुमतात।
गुरुसमाजलघुबन्धुगुरागुसमयकिमिकहिजात ९२

जानहु तात तरणिकुलरीती। सत्यसन्धु पितुकीरतिप्रीती
समयसमाजलाजगुरुजनकी। उदासीनहितअनहितमनकी
तुमहिंविदितसबहीकरमरमू। आपनमोरपरमहितधरमू।
मोहिंसबभाँतिभरोसतुम्हारा। तदपिकहौं अवसरअनुसारा
तात तातबिनुबात हमारी। केवलकुलगुरुकृपासुधारी
नतरु प्रजा पुरजन परिवारू। हमहिंसहितसबहोतदुखारू
जोबिनुअवसरअथवदिनेशू। जगकेहिकहहुनहोइकलेशू
तसउतपाततातविधिकीन्हा। मुनिमिथिलेशराखिसबलीन्हा

दो० राजकाजसबलाजपतिधर्म्मधरणिधनधाम।
गुरुप्रभावपालिहिसबहिंभलहोइहिपरिणाम ९३

सहित समाज तुम्हार हमारा। घर बन गुरुप्रसाद रखवारा
मातु पिता गुरुस्वामि निदेशू। सकल धर्म्मधरणीधरु शेशू
सोतुमकरहु करावहु मोहू। ततत्तरणिकुलपालकहोहू
साधन एक सकल सिधि देनी। कीरति सुगति भूतिमय बेनी
सोविचारि सहि संकट भारी। करहु प्रजा परिवार सुखारी

बाँटि विपति सबही मोहिं भाई। तुमहिं अवधि भरि अति कठिनाई
जानि तुमहिं मृदु कहौं कठोरा। कुसमय तात न अनुचित मोरा
होहिं कुठाँव सुबन्धु सुहाये। ओड़िय हाथ असिनिके घाये
दो० सेवक कर पद नयन से मुख सो साहिब होइ ।
तुलसी प्रीति कि रीति सुनि सुकवि सराहहिं सोइ ९४
सभा सकल सुनि रघुबर बानी। प्रेम पयोधि अमिय जनु सानी
शिथिल समाज सनेह समाधी। देखि दशा चुप शारद साधी।
भरतहिं भयउ परम सन्तोषू। सनमुख स्वामि विमुख दुख दोषू
मुख प्रसन्न मन मिटा विषादू। भा जनु गूंगहि गिरा प्रसादू
कीन्ह सप्रेम प्रणाम बहोरी। बोले पाणि पंकरुह जोरी.
नाथ भयउ सुख साथ गये को। लहेउँ लाभ जग जन्म भये को
अब कृपालु जस आयसु होई। करौं शीश धरि सादर सोई.
सो अवलम्ब देव मोहिं देई। अवधि पार पावउँ जेहि सेई
दो० देव देव अभिषेक हित गुरु अनुशासन पाइ।
आनेउँ सब तीरथ सलिल तेहि कहँ काह रजाइ ९५
एक मनोरथ बड़ मन माहीं। सभय सकोच जात कहि नाहीं
कहहु तात प्रभु आयसु पाई। बोले बाणि सनेह सुहाई

चित्रकूट मुनिथल तीरथ वन। खगमृग सरसरिनिर्झरगिरिगन
प्रभुपदअंकित अवनिविशेखी। आयसु होइ तो आवौं देखी।
अवशि अत्रिआयसु शिरधरहू। तात विगतभयकानन चरहू
मुनि प्रसाद बन मंगल दाता। पावन परम सुहावन भ्राता
ऋषिनायक जहँ आयसु देहीं। राखेहु तीरथ जल थल तेहीं
सुनि प्रभुवचन भरत सुख पावा। मुनिपदकमल मुदित शिर नावा
दो० भरत राम सम्बाद सुनि सकल सुमंगल मूल।
सुरस्वारथी सराहि कुल हरषित बरषहिं फूल ९६

धन्य भरत जय राम गुसाईं। कहत देव हरषत बरिआईं
सुनि मिथिलेश सभा सब काहू। भरत वचन सुनि भयउ उछाहू
भरत राम गुणग्राम सनेहू। पुलकि प्रसंशत राउ विदेहू
सेवक स्वामि सुभाव सुहावन। नेम प्रेम अति पावन पावन
मति अनुसार सराहन लागे। सचिव सभासद सब अनुरागे
सुनि सुनि राम भरत सम्बादू। दुहुँ समाज हिय हर्ष विषादू
रामसातु दुख सुख समजानी। कहि गुणदोष प्रबोधी रानी
एक करहिं रघुवीर बड़ाई। एक सराहत भरत भलाई
दो० अत्रि कहेउ तब भरत सन शैल समीप सुकूप।

राखिय तीरथ तोय तहँ पावन अमल अनूप ९७
भरत अत्रि अनुशासन पाई। जल भाजन सब दिये चलाई
सानुज आपु अत्रि मुनि साधू। सहित गये जहँ कूप अगाधू
पावन पाथ पुराय थल राखा। प्रमुदित प्रेम अत्रि अस भाखा
तात अनादि सिद्ध थल एहू। लोपेउ काल विदित नहिं केहू
तब सेवकन सरस थल देखा। कीन्ह सुजल हित कूप विशेखा
विधि बश भयउ विश्व उपकारू। सुगम अगम अति धर्म्म विचारू
भरत कूप अब कहिहहिं लोगा। अति पावन तीरथ जल योगा
प्रेम सनेम निमज्जत प्रानी। होइहि बिमल कर्म्म मन बानी
दो० कहत कूप महिमा सकल गये जहाँ रघुराउ।
अत्रि सुनायउ रघुबरहिं तीरथ पुराय प्रभाउ ९८
कहत धर्म्म इतिहास सप्रीती। भयउ भोर निशि सो सुख बीती
नित्य निबाहि भरत दोउ भाई। राम अत्रि गुरु आयसु पाई
सहित समाज साज सब साजे। चले राम बन अटन पयादे
कोमल चरण चलत बिनु पनहीं। भइ मृदु भूमि सकुचि मन मनहीं
कुश कण्टक काँकरी कुराई। कटुक कठोर कुबस्तु दुराई
महि मंजुल मृदु मारग कीन्हे। बहत समीर त्रिविध सुख लीन्हे

सुमनबरषि सुरघन करि छाहीं। बिटप फूल फल तृन मृदु लाहीं।
मृग बिलोकि खग बोलि सुबानी। सेवहिं सकल राम प्रिय जानी।
दो० सुलभ सिद्धि सब प्राकृतहु राम कहत जमुहात।
राम प्रानप्रिय भरत कहुँ यह न होइ बड़िबात ९९
इहि बिधि भरत फिरत बन माहीं। नेम प्रेम लखि मुनि सकुचाहीं।
पुनि जल आश्रय भूमि बिभागा। खग मृग तरु तृन गिरि बन बागा।
चारु बिचित्र पवित्र बिसेषी। बूझत भरत दिब्य सब देखी।
सुनि मन मुदित कहत ऋषिराऊ। हेतु नाम गुन पुनि प्रभाऊ।
कतहुँ निमज्जन कतहुँ प्रनामा। कतहुँ बिलोकत बन अभिरामा।
कतहुँ बैठि मुनि आयसु पाई। सुमिरत सीय सहित दोउ भाई।
देखि सुभाव सनेह सुसेवा। देहिं असीस मुदित बन देवा।
फिरहिं गये दिन पहर अढ़ाई। प्रभु पद कमल बिलोकहिं आई।
दो० देखे थल तीरथ सकल भरत पाँच दिन माझ।
कहत सुनत हरिहर सुयस गयउ दिवस भइ साँझ ३००
भोर न्हाइ सबु जुरा समाजू। भरत भूमिसुर तेरहुति राजू।
भल दिन आजु जानि मन माहीं। रामकृपालु कहत सकुचाहीं।
गुरु नृप भरत सभा अवलोकी। सकुचि राम फिरि अवनि बिलोकी।

शीलसराहि सभा सब सोची। कहुँ न राम सम स्वामि सकोची
भरत सुजान राम रुख देखी। उठि सप्रेम धरि धीर बिसेखी
करि दंडवत कहत कर जोरी। राखी नाथ सकल रुचि मोरी
मोहिं लगि सबहिं सहेउ सन्तापू। बहुत भाँति दुख पावा आपू
अब गुसाइँ मोहिं देउ रजाई। सेवौं अवध अवधि लगि जाई
दो० जेहि उपाय पुनि पाय जन देखिय दीन दयालु।
सो सिख देइय अवधि लगि कोसल पाल कृपालु १
पुरजन परिजन प्रजा गुसाँई। सब सुचि सरस सनेह सगाँई
राउर बदि भल भव दुख दाहू। प्रभु बिनु बादि परम पद लाहू
स्वामि सुजान जानि सब ही की। रुचि लालसा रहनि जन जी की
प्रनतपाल पालहिं सब काहू। देव दुहूँ दिसि ओर निबाहू।
अस मोहिं सब बिधि भूरि भरोसो। किये विचार न सोच खरो सो
आरति मोरि नाथ कर छोहू। दुहुँ मिलि कीन्ह ढीठ हठि मोहू
यह बड़ दोष दूरि करि स्वामी। तजि सकोच सिखइय अनुगामी
भरत विनय सुनि सबहिं प्रशंसा। क्षीर नीर विवरण गति हंसा.
दो० दीनबन्धु सुनि बन्धु के वचन दीन छल हीन।
देश काल अवसर सरिस बोले राम प्रवीन २

तात तुम्हारि मोरि परिजन की। चिन्ता गुरुहि नृपहि घर बन की
माथे पर गुरु मुनि मिथिलेशू। हमहि तुमहि सपनेहुँ न कलेशू
मोर तुम्हार परम पुरुषारथ। स्वारथ सुयश धरम परमारथ
पितु आयसु पालिय दुहुँ भाई। लोक बेद भल भूप भलाई
गुरु पितु मातु स्वामि सिख पालें। चलत सुमगु पगु परत न खालें
असि बिचारि सब सोच बिहाई। पालहु अवध अवधि भरि जाई
देस कोस परिजन परिवारू। गुरु पद रजहिं लाग छरभारू
तुम्ह मुनि मातु सचिव सिख मानी। पालहु पुहुमि प्रजा रजधानी
दो० मुखिया मुख सो चाहिये खान पान कहँ एक।
पालै पोषै सकल अँग तुलसी सहित बिबेक ३
राज धर्म सरबस इतनोई। जिमि मन माहँ मनोरथ गोई
बन्धु प्रबोध कीन्ह बहु भाँती। बिनु अधार मन तोषु न साँती
भरत सील गुरु सचिव समाजू। सकुच सनेह बिबस रघुराजू
प्रभु करि कृपा पाँवरी दीन्हीं। सादर भरत सीस धरि लीन्हीं
चरण पीठ करुणा निधान के। जनु जुग जामिक प्रजा प्रान के
संपुट भरत सनेह रतन के। आखर जुग जनु जीव यतन के
कुल कपाट कर कुसल करम के। बिमल नयन सेवा सुधर्म के

भरत मुदित अवलम्ब लहे तें। अस सुख जस सिय राम रहे तें
दो० माँगेउ बिदा प्रणामकरि राम लिये उर लाइ।
लोग उचाटे अमरपति कुटिल कुअवसर पाइ ४
सो कुचालि सब कहँ भइ नीकी। अवधि आस सब जीवन जीकी
नतरु लषण सिय राम बियोगा। हहरि मरत सब लोग कुरोगा
राम कृपा अवरेब सुधारी। बिबुध धीर भइ गुनाद गुहारी
भेंटत भुज भरि भाइ भरत सो। राम प्रेम रस कहि न परत सो
तन मन बचन उमगि अनुरागा। धीर धुरन्धर धीरज त्यागा.
बारिज लोचन मोचत बारी। देखि दसा सुर सभा दुखारी
मुनि गण गुरु जन धीर जनक से। ज्ञान अनल मन कसे कनक से
जे बिरञ्चि निर्लेप उपाये। पद्म पत्र जिमि जल जल जाये
दो० तेउ बिलोकि रघुबर भरत प्रीति अनूप अपार।
भये मगन मन तन बचन सहित बिराग बिचार ५
जहँ जनक गुरु गति मति भोरी। प्राकृत प्रीति कहत बड़ि खोरी
बरणत रघुबर भरत बियोगू। सुनि कठोर कबि जानहिं लोगू
सो सकोच बस अकथ सुबानी। समय सनेह सुमिरि सकुचानी
भेंटि भरत रघुबर समुझाये। पुनि रिपुदमन हरषि हिय लाये

सेवक सचिव भरत रुख पाई। निज निज काज लगे सब जाई
सुनि दारुण दुख दुहुँ समाजा। लगे चलन के साजन साजा
प्रभु पद पद्म बन्दि दोउ भाई। चले सीस धरि राम रजाई
मुनि तापस बन देव निहोरी। सब सनमानि बहोरि बहोरी
दो० लखन राहिं भेंटि प्रनामु करि सिर धरि सिय पद धूरि।
चले सप्रेम असीस सुनि सकल सुमंगल मूरि ६.
सानुज राम नृपहिं सिर नाई। कीन्हि बहुत बिधि बिनय बड़ाई
देव दया बस बड़ दुख पायहु। सहित समाज काननहिं आयहु
पुर पगु धारिय देइ असीसा। कीन्ह धीर धरि गमन महीसा
मुनि महि देव साधु सनमाने। बिदा किये हरि हर सम जाने
सासु समीप गये दोउ भाई। फिरे बन्दि पद आसिष पाई
कौसिक बामदेव जाबाली। पुरजन परिजन सचिव सुचाली
यथा योग्य करि बिनय प्रनामा। बिदा किये सब सानुज रामा
नारि पुरुष लघु मध्य बड़ेरे। सब सनमानि कृपानिधि फेरे
दो० भरत मातु पद बन्दि प्रभु सुचि सनेह मिलि भेंटि।
बिदा कीन्ह सजि पालकी सकुच सोच सब मेटि ७
परिजन मातु पितहि मिलि दीना। फिरी प्रानप्रिय प्रेम पुनीता

करि प्रणाम भेंटी सब सासू। प्रीति कहत कबि हिय नहिं हुलासू
सुनि सिख अभिमत आसिष पाई। रही सीय दुहुँ प्रीति समाई
रघुपति पटु पालकी मँगाई। करि प्रबोध सब मातु चढ़ाई
बार बार हिलि मिलि दोउ भाई। सम सनेह जननीं पहुँचाईं
साजि बाजि गज बाहन नाना। भूप भरत दल कीन्ह पयाना
हृदय राम सिय लषन समेता। चले जाहिं सब लोग अचेता
बसह बाजि गज पसु हिय हारे। चले जाहिं परबस मन मारे

दो० गुरु गुरुतिय पद बन्दि प्रभु सीता लषन समेत।
फिरे हर्ष बिसमय सहित आये परन निकेत ८.

बिदा कीन्ह सनमानि निषादू। चलेउ हृदय बड़ बिरह बिषादू
कोल्ह किरात भिल्ल बनचारी। फेरे फिरे जोहारि जोहारी
प्रभु सिय लषन बैठि बट छाहीं। प्रिय परिजन बियोग बिलखाहीं
भरत सनेह सुभाव सुबानी। प्रिया अनुज सन कहत बखानी
प्रीति प्रतीति बचन मन करनी। श्री मुख राम प्रेम बस बरनी
तेहि अवसर खग मृग जल मीना। चित्रकूट चर अचर मलीना
बिबुध बिलोकि दसा रघुबर की। बरषि सुमन कहि गति घर घर की
प्रभु प्रनाम करि दीन्ह भरोसो। चले मुदित मन डर न खरोसो

दो० सानुज सीय समेत प्रभु राजत परन कुटीर।
भक्ति ज्ञान वैराग्य जनु सोहत धरे शरीर ९
मुनि महिसुर गुरु भरत भुआलू। राम बिरह सब साज बिहालू
प्रभु गुन ग्राम गुनत मन माहीं। सब चुपचाप चले मग जाहीं
यमुना उतरि पार सब भयऊ। सो बासर बिनु भोजन गयऊ
उतरि देवसरि दूसर बासू। राम सखा सब कीन्ह सुपासू
सई उतरि गोमती नहाये। चौथे दिवस अवधपुर आये
जनक रहे पुर बासर चारी। राज काज सब साज सँभारी
सौंपि सचिव गुरु भरतहिं राजू। तिरहुत चले साजि सब साजू
नगर नारि नर गुरु सिख मानी। बसे सुखेरा राम रजधानी
दो० राम दरश लगि लोग सब करत नेम उपबास।
तजि तजि भूषन भोग सुख जिअत अवधि कीं आस २१०
सचिव सुसेवक भरत प्रबोधे। निज निज काज पाइ सिख सोधे
पुनि सिख दीन्ह बोलि लघु भाई। सौंपी सकल मातु सेवकाई
भूसुर बोलि भरत कर जोरे। करि प्रनाम बर बिनय निहोरे
ऊँच नीच कारज भल पोचू। आयसु देब न करब सँकोचू
परिजन पुरजन प्रजा बुलाये। समाधान करि सुबस बसाये

सानुज गे गुरु गेह बहोरी। करि दण्डवत कहत कर जोरी
आयसु होइ तौ रहौं सनेमा। बोले मुनि तनु पुलकि सप्रेमा
समुझब कहब करब तुम सोई। धर्म्मसार जग होइहि जोई.
दो० मुनि सिख पाइ असीस बड़ि गणक बोलि दिन साधि
सिंहासन प्रभु पादुका बैठारी निरुपाधि ११.
राम मातु गुरु पद शिर नाई। प्रभु पद पीठ रजायसु पाई
नन्दग्राम करि पर्णकुटीरा। कीन्ह निवास धर्म्मधुर धीरा
जटाजूट शिर मुनि पट धारी। महि खनि कुश साथरी सँवारी
असन बसन आसन ब्रतनेमा। करत कठिन ऋषि धर्म्म सप्रेमा
भूषण बसन भोग सुख भूरी। मन तन वचन तजे तृण तूरी
अवध राज सुरराज सिहाहीं। दशरथ धन लखि धनद लजाहीं
तेहि पुर बसत भरत बिनुरागा। चञ्चरीक जिमि चम्पक बागा
रमा बिलास राम अनुरागी। तजत बमन जिमि नर बड़ भागी
दो० राम प्रेम भाजन भरत बड़ी न यह करतूति।
चातक हंस सराहियत टेक विवेक विभूति १२
देह दिनहिं दिन दूबरि होई। घटत तेज बल मुख छबि सोई
नित नव राम प्रेम प्रण पीना। बढ़त धर्म्म दल मन नमलीना

जिमि जलनिधि दत सारद प्रकासी। बिलसत बेत सुबन्न बिकासी
सम दम संयम नेम उपासा। नखत भरत हिय बिमल अकासा
ध्रुव बिस्वास अवधि राकासी। स्वामि सुरति सुरबीथि बिकासी
राम प्रेम बिधु अचल अदोखा। सहित समाज सोह नित चोखा
भरत रहनि समुझनि करतूती। भगति बिरति गुन बिमल बिभूती
बरनत सकल सुकबि सकुचहीं। सेष गनेस गिरा गम नाहीं
दो० नित पूजत प्रभु पाँवरी प्रीति न हृदय समाति।
माँगि माँगि आयसु करत राज काज बहु भाँति १३
पुलक गात हिय सिय रघुबीरू। जीह नाम जप लोचन नीरू
लषन राम सिय कानन बसहीं। भरत भवन बसि तप तनु कसहीं
दुहुँ दिसि समुझि कहत सबु लोगू। सब बिधि भरत सराहन जोगू
सुनि ब्रत नेम साधु सकुचाहीं। देखि दसा मुनिराज लजाहीं
परम पुनीत भरत आचरनू। मधुर मंजु मुद मंगल करनू
हरन कठिन कलि कलुष कलेसू। महा मोह निसि दलन दिनेसू
पाप पुंज कुञ्जर मृगराजू। समन सकल सन्ताप समाजू
जन रञ्जन भञ्जन भव भारू। राम सनेह सुधाकर सारू
छ० सिय राम प्रेम पियूष पूरन होत जन्म न भरत को।

मुनिमन अगमयमनियमसमदमविषमब्रत आचरतको
दुखदाह दारिद दम्भदूषण सुयश मिसु अपहरतको।
कलिकाल तुलसीसे शठहि हठि रामसन्मुख करतको १३

सो० भरत चरित करि नेम तुलसी जे सादर सुनहिं।
सीय राम पद प्रेम अवशि होइ भवरस विरति १२

इति श्रीराम चरित मानसे सकल कलि कलुष विध्वंसने
बिमल विज्ञान वैराग्य सम्पादनो नाम तुलसीकृत
अयोध्याकाण्ड द्वितीय सोपानः समाप्तः

रामायरा गीतावली मूल तुलसीकृत छापा टैप.

अनेक रागों में सुन्दरबाल चरित्रादि सम्पूर्ण गीता युक्त रामायरा सातों काराड का आशय वरिांत है.

तथा. गीतावली सटीक बैजनाथजी छापा टै.

सातो काराड रामायरा की सम्पूर्ण कथा अनेक उत्तम २ रागों में वरिांत है बैजनाथ जी ने हरिभक्तों व सज्जनों के सरलता हेतु उत्तम रीति से ब्रजभाषा में टीका किया है.

रामायरा दोहावली तुलसीदास जी मूल छापा टैप.

जिसमें ज्ञान भक्ति वैराग्य मिश्रित दोहे हैं और विशेषकर संतोष की शिक्षा प्रधान है.

विजय दोहावली तु॰दा॰जी छापा टैप.

श्री गोसाईं तुलसीदास जी ने अपनी तुलसीकृत रामायरा के कठिन और गुप्तार्थ दोहे चौपाई सोरठे आदि के भाव यथार्थ प्रकट करने के निमित्त छन्दों में प्रकाशित किया.

रामायरा छन्दावली मू॰तु॰कृ॰छापा टैप.

श्री रविकुल कैरव चन्द्र कौशल्या हृदयानन्द वर्द्धन का परमोत्तम चरित्र बालकाराड से उत्तरकाराड पर्य्यन्त मनोहर चौपय्या छन्द में वरिांत है.

तथा. मय तिलक बैजनाथजी छापा टैप.

जिसको श्री बैजनाथ जी ने कठिन २ स्थलों के गूढ़ २ शब्दों का आशय प्रत्येक पुरारा शास्त्रादिकों के प्रमारा देकर ऐसा सरल कर दिया है जिसे सब सहज में समझ सक्ते हैं.

छप्पै रामायरा मूल तुलसीकृत छापा टैप.

सातों काराड रामायरा की कथा अति रुचिर छप्पै छन्दों में अतीव सरल पदों से वरिान की गई है.

तथा. मय टीका बैजनाथ जी छापा टैप.

जिसको बैजनाथ जी ने कठिन २ स्थलों के गूढ़ २ शब्दों का आशय प्रत्येक पुरारा शास्त्रादिकों के प्रमारा देकर ऐसा सरल कर दिया है जिसे सब सहज में समझ सक्ते हैं.

विनय पत्रिका मूल तुलसीदास जी कृत छापा टैप.

गोसाईं तुलसीदास जी ने श्री रामचन्द्र परब्रह्म परमेश्वर और जानकी महारानी के विनय युक्त भजन रागादि में वरिान किये हैं.

तथा. मय टीका बाबू शिवप्रकाश जी छापा टैप.

जिसमें भक्त भयहारी - अवध बिहारी - दीनहितकारी - रावरागन्तकर्ता - विभीषरागादि भयहर्त्ता श्री रामचन्द्र महाराजाधिराज प्रति विनय अति सुललित भजनों में निर्मित है.

तथा. मय टीका बैजनाथ जी छापा टैप.

जिसको बैजनाथ जी ने प्रति पद प्रति चरण व प्रत्येक का अनेक शास्त्र, पुरारा, स्मृति, उपनिषदादि

दृष्टान्त देकर सरल भाषा में निर्वर्तन किया है -

तुलसी सतसयी मूल तुलसीकृत छापादेय.

जिस में नानाप्रकार के नीति शास्त्र ग्रन्थों से छाँटकर सात सौ अत्यंत रमणीय दोहों में नीति वर्णन कीगई है.

तथा. मयटीक. कामताप्रसाद गीछा. दै.

जिसको श्री ६ मत कृपासागर सकल गुण आगर श्री स्वामी युगलानन्य शरण जीके शिष्य पण्डित रामकान्ता शरण जीने उत्तम रीति से वार्तिक भाषा टीका किया है.

तथा. मय टीका बेजनाथ गीछा. देय.

जिस में नाना प्रकार के नीति शास्त्र ग्रन्थों से छाँटकर अतीव मनोहर सात सौ दोहों में धर्म नीति वर्णित है.

भगवद्गीता नवलभाष्यका विज्ञापन.

प्रकट हो कि यह पुस्तक श्री मद्भगवद्गीता सकल निगम पुराण स्मृति सांख्यादि सारभूत परम रहस्य गीताशास्त्र का सर्व्वविद्यानिधान सौशील्य विनयौदार्य्य सत्यसंगर शौर्य्यादि गुण सम्पन्न नरावतार महानुभाव अर्जुन को परम अधिकारी जान के हृदय जनित मोहनाशार्थ सब प्रकार अपार संसार निस्तारक भगवद्भक्ति मार्ग दृष्टिगोचर कराया है वही उक्त भगवद्गीता वज्रवत् वेदान्त व योग शास्त्रान्तर्गत जिसको अच्छे २ शास्त्रवेत्ता अपनी बुद्धि से पार नहीं पा सके तब मन्दबुद्धी जिन को कि केवल देश भाषा ही पठन पाठन करने की सामर्थ्य है वह कब इसके अन्तराभिप्राय को जान सक्ते हैं- और यह प्रत्यक्षही है कि जब तक किसी पुस्तक अथवा किसी वस्तु का अन्तराभिप्राय अच्छे प्रकार बुद्धि में न भासित हो तब तक आनन्द क्योंकर मिले इस प्रकार सम्पूर्ण भारतनिवासी श्री मद्भगवत्पदाब्जरसिकजनों के चित्तानन्दार्थ व बुद्धिबोधार्थ सन्ततधर्म्म धुरीण सकलकला चातुरीण सर्व्वविद्या विलासी भगवद्भक्त्यनुरागी श्रीमान् मुन्शी नवलकिशोर जी (सी. आई. ई.) ने बहुत साधन व्ययकर फ़र्रुखाबाद निवासि पण्डित उमादत्त जी से इस मनोरञ्जन वेद वेदान्त शास्त्रोपरि पुस्तक को श्रीशंकराचार्य्य निर्मित भाष्यानुसार संस्कृत से सरल देश भाषा में तिलक रचाय नवलभाष्य आख्य से प्रभात कालिक कमल सरिस प्रफुल्लित करा दिया है कि जिसको भाषा मात्र के जाननेवाले पुरुष भी जान सक्ते हैं ॥

रमायण

आरण्यकाण्ड

मोटे अक्षरों में हरएक भक्तजन
के अनुराग और सुगमता से
पाठ करने के हेतु

प्रथमवार

कानपुर

मुंशी नवलकिशोर सी. आई. ई. के छापेखाने में छपी

अप्रैल सन् १८९४ ई०

विज्ञापन.

यह विशालदरशी मोटे अक्षरों की रामायरा प्रथमबार छापीगई है अभी तक ऐसी रामायरा हिन्दुस्तान में नहीं छपी कि जिस के दर्शन से आप लोग प्रसन्नहो ते अब परमेश्वर की कृपा से हमारे कारख़ाने में छपी है और हम इस की प्रशंसा नहीं कर सक्ते जब आप लोग ख़ुद इस रामायरा को अवलोकन करेंगे तब आप प्रसन्नता को प्राप्त होंगे- और यह रामायरा अलग २ काराड भी मिल सक्ती है. फ़क़त

नवलकिशोर.

मालिक मतबा नवलकिशोर प्रेसकानपूर व लखनऊ

नीचे लिखी हुई रामायरा हर क़िस्म की छापाख़ाना नवलकिशोर कानपूर व लखनऊ में ख़रीदारों को मिल सक्ती हैं.

रामायरा तु·क्र·सटीक रामचररादास कितावनुमा वयत्रानुमा छा·टैप सा·कां.

जिसको श्री रामचररा जीने भक्तजनों के उपकार और जगत कल्यारा के लिये वेद की ऋचाओं व अनेक प्रमारिाक श्लोकों से भूषित कर पद २ का भावा टीका किया है.

रामायरा तुलसीकृत मूल मोटाअक्षरमयतसवीर छापाटैप.

क्षेपक वमाहात्म्य सहित- रावरा विजय व श्री गंगा जी - महिरावरा नारान्तक रामदल संख्या सुलोचना कथा श्री रामायरा व सप्तदेव स्तुति भिन्न २ क्षेपक की रीति से संयुक्त है.

तथा - मुतवस्सित क़लम मय तसवीर छापा टैप ज़यर के अलङ्कारों सहित.

रामायरा तु·क्र·सटीक सुखदेवलाल कितावनुमा वयत्रानुमा छापाटैप.

जिसको सुखदेवलाल जी ने जगत कल्यारा के अर्थ भाषा टीका रचकर प्रमारिाक श्लोकों से भूषित किया और पद पदार्थ के अर्थ को अति स्पष्ट रीति से सलित देश भाषा में बखाना है.

रामायरा तु·क्र· सटीक बैजनाथ जी छापा टैप.

जिाको बैजनाथ जी ने कठिन २ स्थलों के गूढ़ शब्दों का आशय प्रत्येक पुरारा शास्त्र उपनिषद वेदादि के श्लोक ऋचा सूत्रादिकों के दृष्टान्त देकर ऐसा सरल कर दिया है जिसे सब सहज में समझ सक्ते है और अवलोकन करने के योग्य है.

रामायरा कवित्तावली मूलतु·छापाटैप.

जिसमें सम्पूरा आशय रामायरा का उक्त कविने अति रुचिर छन्दों में वरारन किया है.

तथा. मयटीकाबैजनाथजीसटीक.

जिसमें श्री महाराज राज राजेन्द्र रामचन्द्र जी का समस्त जीवन चरित्र सातकाराडों में अत्युत्तमकवित्तों में वरिात है.

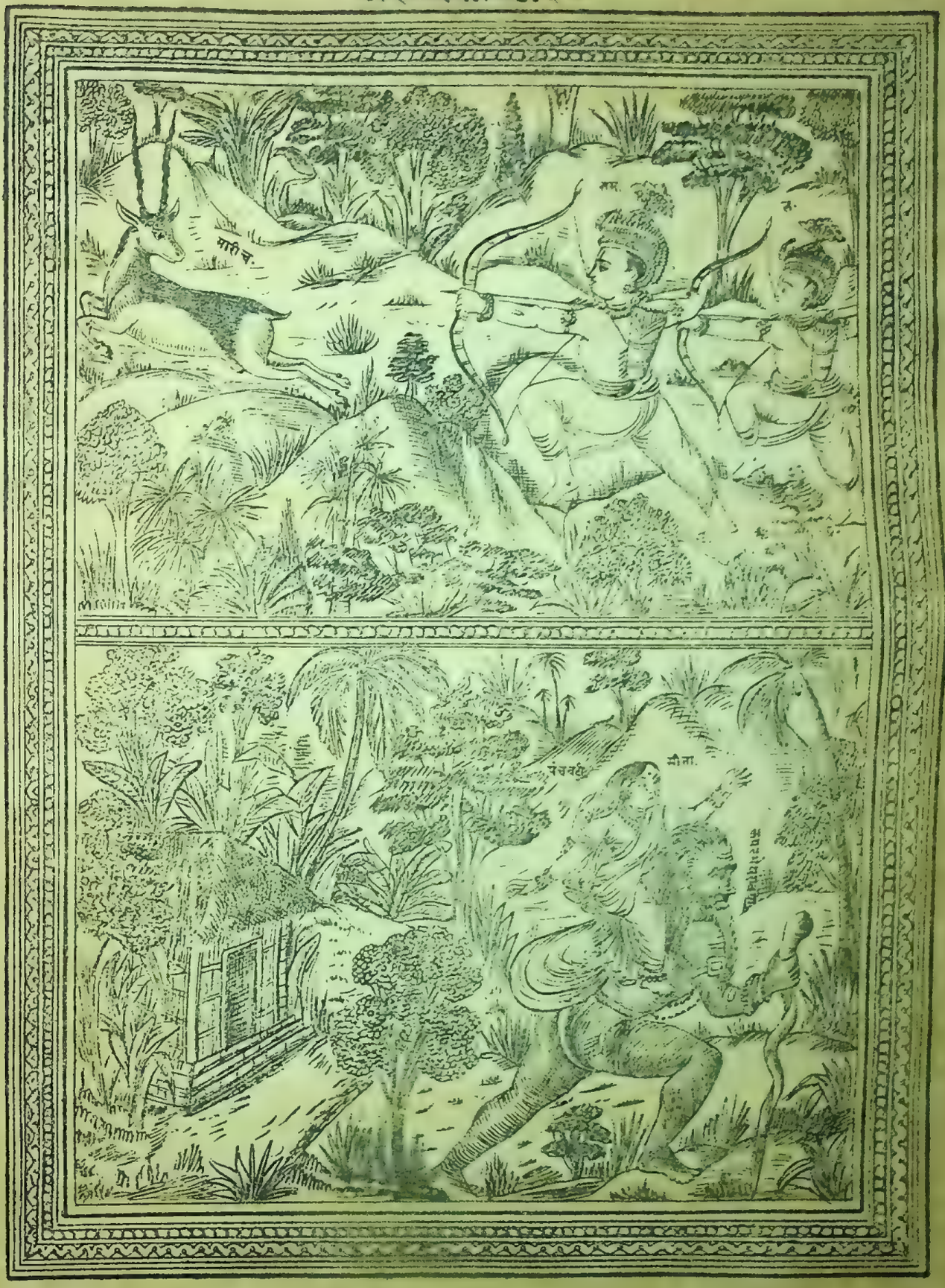
राम.
मारीच.
पंचवटी.
सीता.

۱۴۷/۳۰/۹۴ عبدالله

श्रीगणेशायनमः

श्रीरामायणातुलसीकृत

आरण्यकाण्ड

मूलंधर्मतरोर्विवेकजलधेःपूर्णेन्दुमानन्ददं।वैरा-
ग्याम्बुजभास्करंत्वघहरंध्वान्तापहंतापहं॥मोहाम्भो
धरपुंजपाटनविधौस्वःसंभवंशङ्करम्।वन्देब्रह्मकुलंक
लङ्कशमनंश्रीरामभूपप्रियम्१सान्द्रानन्दपयोदसौ-
भगतनुम्पीताम्बरंसुन्दरम्।पाणौबाणशरासनंकटि-
लसत्तूणीरभारंवरम्॥राजीवायतलोचनंधृतजटाजूटे
नसंशोभितम्।सीतालक्ष्मणसंयुतंपथिगतंरामाभि-
रामंभजे॥२॥

सो० उमारामगुणगूढ़पण्डितमुनिपावहिंविरति।
पावहिंमोहविमूढ़जेहरिबिमुखनधर्मरति१.

पूरण भरत प्रीति मैं गाई।मति अनुरूप अनूप सुहाई

अब प्रभु चरित सुनहु अति पावन। करत जे बन सुर नर मुनि भावन
एक बार चुनि कुसुम सुहाये। निज कर भूषण राम बनाये
सीतहिं पहिराये प्रभु सादर। बैठे फटिक शिला पर मादर
सुरपति सुत धरि बायस बेषा। शठ चाहत रघुपति बल देखा
जिमि पिपीलिका सागर थाहा। महा मन्द मति पावन चाहा.
सीता चरण चोंच हति भागा। मूढ़ मन्द मति कारण कागा
चला रुधिर रघुनायक जाना। सींक धनुष शायक सन्धाना
दो० अति कृपालु रघुनायक सदा दीन पर नेह.।
तासन आइ कीन्ह छल मूरख अवगुण गेह १
प्रेरित मन्त्र ब्रह्म शर धावा। चला भाजि बायस भय पावा
धरि निज रूप गयउ पितु पाहीं। राम विमुख राखा तेहि नाहीं
भा निराश उपजी मन त्रासा। यथा चक्र भय ऋषि दुर्बासा
ब्रह्म धाम शिव पुर सब लोका। फिरा श्रमित व्याकुल भय शोका
काहू बैठन कहा न ओही। राखि को सकै राम कर द्रोही
मातु मृत्यु पितु शमन समाना। सुधा होइ विष सुनु हरियाना
मित्र करै शत रिपु के करनी। ताकहँ बिबुध नदी वैतरनी
सब जग ताहि अनल ते ताता। जो रघुबीर बिमुख सुनु भ्राता

नारद देखा विकल जयन्ता। लागि दया कोमल चित सन्ता
पठवा तुरत राम पहँ ताही। कहेसु पुकारि प्रनत हित पाही
आतुर सभय गहेसि पद जाई। त्राहि त्राहि दयाल रघुराई
अतुलित बल अतुलित प्रभुताई। मैं मतिमन्द जानि नहिं पाई
निज कृत कर्म्म जनित फल पायउँ। अब प्रभु पाहि शरन तकि आयउँ
सुनि कृपालु अति आरत बानी। एक नयन करि तजा भवानी
सो० कीन्ह मोह वश द्रोह यद्यपि तेहि कर बध उचित।
प्रभु छाड़ेउ करि छोह को कृपालु रघुबीर सम २
रघुपति चित्रकूट बसि नाना। चरित किये श्रुति सुधा समाना
बहुरि राम अस मन अनुमाना। होइहि भीर सबहि मोहिं जाना
सकल मुनिन्ह सन बिदा कराई। सीता सहित चले दोउ भाई
अत्रि के आश्रम जब प्रभु गयऊ। सुनत महा मुनि हर्षित भयऊ
पुलकित गात अत्रि उठि धाये। देखि राम आतुर चलि आये.
करत दण्डवत मुनि उर लाये। प्रेम वारि दोउ जन अन्हवाये
देखि राम छबि नयन जुड़ाने। सादर निज आश्रम तब आने
करि पूजा कहि वचन सुहाये। दिये मूल फल प्रभु मन भाये.
सो० प्रभु आसन आसीन भरि लोचन शोभा निरखि।

मुनिवर परम प्रवीन जोरिपारि। स्तुतिकरत॥

छं०। नमामि भक्त वत्सलं। कृपालु शील कोमलं॥
भजामि ते पदाम्बुजं। अकामिनां स्वधामदं॥
निकाम श्याम सुंदरं। भवाम्बु नाथ मन्दरं॥
प्रफुल्ल कञ्ज लोचनं। मदादि दोष मोचनं॥
प्रलम्ब बाहु विक्रमं। प्रभो प्रमेय वैभवं॥
निषंग चाप शायकं। धरं त्रिलोक नायकं॥
दिनेश वंश मण्डनं। महेश चाप खण्डनं॥
मुनीन्द्र सन्त रञ्जनं। सुरारि वृन्द भञ्जनं॥
मनोज वैरि वन्दितं। अजादि देव सेवितं॥
विशुद्ध बोध विग्रहं। समस्त दूषणा पहं॥
नमामि इन्दिरा पतिं। सुखाकरं सतां गतिं॥
भजे सशक्ति सानुजं। शचीपति प्रियानुजं॥
त्वदंघ्रि मूल ये नरा। भजन्ति हीन मत्सरा॥
पतन्ति नो भवार्णवे। वितर्क वीचि संकुले॥
विविक्त वासना सदा। भजन्ति मुक्तये मुदा॥
निरस्य इन्द्रियादिकं। प्रयान्ति ते गतिं स्वकं॥

त्वमेक मद्भुतं प्रभुं। निरीह मीश्वरं विभुं॥
जगद्गुरुं च शाश्वतं। तुरीय मेव केवलं॥
भजामि भाव वल्लभं। कुयोगिनां सुदुर्लभं॥
स्वभक्त कल्प पादपं। समस्त सेव्य मन्वहं॥
अनूप रूप भूपतिं। नतोह मुर्विजा पतिं॥
प्रसीदमे नमामि ते। पदाब्ज भक्ति देहिमे॥
पठन्ति ये स्तवं इदं। नरा दरेरा ते पदं॥
व्रजन्ति नात्र संशयः। त्वदीय भक्ति संयुतः॥

दो॰ बिनती करि मुनि नाइ सिर कह कर जोरि बहोरि।
चरन सरोरुह नाथ जनि कबहुँ तजै मति मोरि २

अनुसुइया के पद गहि सीता। मिली बहोरि सुशील बिनीता।
ऋषि पतनी मन सुख अधिकाई। आशिष देइ निकट बैठाई
दिब्य बसन भूषण पहिराये। जे नित नूतन अमल सुहाये
कह ऋषि बधू सरल मृदु बानी। नारि धर्म्म कछु ब्याज बखानी
मातु पिता भ्राता हितकारी। मितप्रद सब सुनु राजकुमारी
अमित दानि भर्त्ता बैदेही। अधम सो नारि जो सेवन तेही
धीरज धर्म्म मित्र अरु नारी। आपदकाल परखियहि चारी

बृद्ध रोगबश जड़ धन हीना। अन्धबधिर क्रोधी अतिदीना
ऐसेहु पति कर किये अपमाना। नारि पाव यमपुर दुख नाना.
एकै धर्म्म एक ब्रत नेमा। कायवचनमनपति पद प्रेमा
जगपतिब्रताचारिबिधि अहहीं। वेद पुराण सन्त सब कहहीं
उत्तम के अस बस मन माहीं। सपनेहु आन पुरुष जग नाहीं
मध्यम परपति देखै कैसे। भ्राता पिता पुत्र निज जैसे.
धर्मविचारि समुझि कुलरहई। सो निकृष्टतिय श्रुति अस कहई
बिनु अवसर भय ते रह जोई। जानेहु अधम नारि जग सोई
पतिवञ्चक परपतिरतिकरई। रौरव नरक कल्प शत परई
क्षणासुखलागि जनमशतकोटी। दुखन समुझ तेहि समकोखोटी
बिनुश्रमनारि परमगतिलहई। पतिब्रत धर्म छाड़ि छलगहई
पतिप्रतिकूल जनमि जहँ जाई। बिधवा होइ पाय तरुणाई
सो० सहज अपावन नारि पति सेवत शुभगति लहै।
यश गावत श्रुति चारि अजहुँ तुलसिका हरिहि प्रिय॥
सुनु सीता तव नाम सुमिरि नारि पतिब्रत करहिं।
तोहिं प्राण प्रिय राम कहेउँ कथा संसार हित ४
सुनि जानकी परम सुख पावा। सादर तासु चरण शिर नावा

तबमुनिसनकहकृपानिधाना। आयसुहोइजाउँबनआना.
सन्तत मोपर कृपा करेहू। सेवकजानितजेहुजनि नेहू
धर्म धुरन्धर प्रभु कै बानी। सुनि सप्रेम बोले मुनि ज्ञानी
जासुकृपाअजशिवसनकादी। चहतसकलपरमारथ बादी
ते तुम राम अकाम पियारे। दीनबन्धु मृदु वचन उचारे॥
अबजानी मैं श्री चतुराई। भजियतुमहिंसबदेवबिहाई
जेहिसमानअतिशयनहिंकोई। ताकरशीलकसनअसहोई
केहिविधिकहौंजाहुबनस्वामी। कहहुनाथ तुम अन्तरयामी
असकहिप्रभुविलोकिमुनिधीरा। लोचनजलबह पुलकशरीरा

छं० तनुपुलकनिर्भर प्रेमपूरणा नयनमुखपङ्कजदिये।
मनज्ञानगुणागोतीतप्रभुमेंदीखजपतपकाकिये॥
जपयोगधर्मसमूह तेनरभक्तिअनुपम पावई।
रघुबीरचरितपुनीतनिशिदिनदासतुलसीगावई२

दो० कलिमलशमनदमनमनरामसुयशसुखमूल।
सादरसुनहिंजेतिन्हपररामरहहिंअनुकूल ३

सो० कठिनकालमल कोस धर्मनज्ञाननयोगतप।
परिहरिसकलभरोस रामहिंभजहिंतेचतुरनर ५

मुनिपदकमलनाइकरिशीशा। चले बनहिं सुर नर मुनिईशा
आगेराम अनुज पुनि पाछे। मुनिवर बेष बने अति काछे
उभयबीचसियसोहतिकैसी। ब्रह्मजीव बिच माया जैसी
सरिता गिरिवन अवघटघाटा। पति पहिचानि देहिं वरबाटा
जहँ जहँ जाहिं देव रघुराया। करहिं मेघ नभ तहँ तहँ छाया
मिला असुर विराध मगजाता। आवतही रघुबीर निपाता
तुरतहि रुचिर रूप तेहि पावा। देखि दुखी निज धाम पठावा
पुनि आयेजहँ मुनि सरभङ्गा। सुन्दर अनुज जानकी संङ्गा
दो॰ देखि राम मुखपंकज मुनिवर लोचन भृङ्ग।
सादर पान करत अति धन्य जन्म सरभङ्ग॰ ४
कह मुनि सुनु रघुबीर कृपाला। शङ्कर मानस राज मराला.
जात रहेउँ विरञ्चि के धामा। सुनेहुँ श्रवण बन ऐहहिं रामा
चितवत पंथ रहेउँ दिन राती। अब प्रभु देखि जुड़ानी छाती
नाथ सकल साधन मैं हीना। कीन्ही कृपा जानि जन दीना
सो कछु देव न मोहिं निहोरा। निजपन राखेउ जनमन चोरा
तबलगि रहहु दीन हितलागी। जबलगि मिलौं तुम्हैं तनुत्यागी
योगयज्ञजपतपव्रत कीन्हा। प्रभुकहँ देइ भक्तिवरलीन्हा

इहि विधि सर रचि मुनि सरभङ्गा। बैठे हृदय छाँड़ि सब सङ्गा
दो० सीता अनुज समेत प्रभु नील जलद तनु श्याम।
मम हिय बसहु निरन्तर सगुणरूप श्रीराम ५
अस कहि योग अगिनि तनजारा। राम कृपा बैकुण्ठ सिधारा.
तातें मुनि हरि लीन न भयऊ। प्रथमहिं भेद भक्ति वर लयऊ
ऋषि निकाय मुनिवर गति देखी। सुखी भये निज हृदय बिसेखी.
अस्तुति करहिं सकल मुनि बृन्दा। जयति प्रनत हित करुणा कन्दा
पुनि रघुनाथ चले बन आगे। मुनिवर बृन्द बिपुल सँग लागे
अस्थि समूह देखि रघुराया। पूँछेउ मुनिन्ह लागि अति दाया
जानतहू पूछिय कस स्वामी। सब दरशी तुम अन्तरयामी
निसिचर निकर सकल मुनि खाये। मुनि रघुबीर नयन जल छाये।
दो० निसिचर हीन करौं महि भुज उठाइ प्रण कीन्ह।
सकल मुनिन के आश्रमन्ह जाइ जाइ सुख दीन्ह ६
मुनि अगस्ति कर शिष्य सुजाना। नाम सुतीक्ष्ण रत भगवाना
मन क्रम वचन राम पद सेवक। सपनेहुँ आन भरोस न देवक.
प्रभु आगमन श्रवण सुनि पावा। करत मनोरथ आतुर धावा
हे बिधि दीनबन्धु रघुराया। मोसे शठ पर करिहहिं दाया

सहित अनुज मोहिं रामगुसाईं। मिलिहहिं निज सेवक की नाईं
मोरे जिय भरोस दृढ़ नाहीं। भक्ति न विरति ज्ञान मन माहीं
नहिं सतसंग योग जप यागा। नहिं दृढ़ चरण कमल अनुरागा
एक बानि करुणा निधान की। सो प्रिय जाके गति न आन की.
होइहहिं सुफल आजु मम लोचन। देखि बदन पंकज भव मोचन
निर्भर प्रेम मगन मुनि ज्ञानी। कहि न जाइ सो दशा भवानी
दिशि अरु विदिशि पन्थ नहिं सूझा। कोमैं चलेउँ कहाँ नहिं बूझा।
कबहुँक फिरि पाछे चलि जाई। कबहुँक नृत्य करै गुण गाई
अविरल प्रेम भक्ति मुनि पाई। प्रभु देखहिं तरु ओट लुकाई
अतिशय प्रीति देखि रघुबीरा। प्रगटे हृदय हरण भव भीरा
मुनि मगु माँझ अचल होइ बैसा। पुलक शरीर पनस फल जैसा
तब रघुनाथ निकट चलि आये। देखि दशा निज जन मन भाये
मुनिहिं राम बहु भाँति जगावा। जागन ध्यान जनित सुख पावा
भूप रूप तब राम दुरावा। हृदय चतुर्भुज रूप दिखावा.
मुनि अकुलाइ उठा पुनि कैसे। बिकल हीन मणि फणि वर जैसे
आगे देखि राम तनु श्यामा। सीता अनुज सहित सुख धामा
परेउ लकुट इव चरणान्हि लागी। प्रेम मगन मुनिवर बड़ भागी

भुज बिशाल गहि लिये उठाई। परम प्रीति राखे उर लाई
मुनिहिं मिलत इमि सोह कृपाला। कनक तरुहिं जिमि भेंटु तमाला
राम बदन विलोकि मुनि ठाढ़ा। मानहुँ चित्र माँझ लिखि काढ़ा
दो० तब मुनि हृदय धीर धरि गहि पद बारहिं बार।
निज आश्रम प्रभु आनि करि पूजा विविध प्रकार ७
कह मुनि प्रभु सुनु बिनती मोरी। अस्तुति करौं कवनि विधि तोरी
महिमा अमित मोरि मति थोरी। रवि सन्मुख खद्योत अँजोरी
श्याम ताम रस दाम शरीरं। जटा मुकुट परिधन मुनि चीरं
पाणि चाप शर कटि तूणीरं। नौमि निरन्तर श्री रघुवीरं
मोह विपिन घन दहन कृशानुं। सन्त सरोरुह कानन भानुं
निशिचर करि बरूथ मृगराजं। त्रातु सदा नोभव खगबाजं
अरुणा नयन राजीव सुवेषं। सीता नयन चकोर निशेषं
हर हृद मानस राज मरालं। नौमि राम उर बाहु बिशालं
संशय सर्प्प ग्रसन उर गादं। शमन सुकर्कस तर्क विषादं
भव भंजन रंजन सुर यूथं। त्रातु सदा नो कृपा बरूथं
निर्गुणा सगुणा विषम समरूपं। ज्ञान गिरा गोतीत मरूपं
अमल अखिल मनवद्य मपारं। नौमि राम भञ्जन महि भारं.

भक्त कल्प पादप आरामं। तर्जन क्रोध लोभ मद कामं.
अति नागर भवसागर सेतु। आतु सदा दिनकर कुल केतु
अतुलित भुज प्रताप बलधामं। कलिमल विपुल विभञ्जन रामं
धर्म्म बर्म्म नर्मद गुरा ग्रामं। सन्तत सान्तनोतु मम रामं
यदपि विरज व्यापक अबिनासी। सबके हृदय निरन्तर बासी
तदपि अनुज श्री सहित खरारी। बसतु मनसि मम कानन चारी
जे जानहिं ते जानहु स्वामी। सगुरा अगुरा उर अन्तरयामी
जो कोशलपति राजिव नयना। करौ सो राम हृदय मम अयना
अस अभिमान जाइ जनि भोरे। मैं सेवक रघुपति पति मोरे
सुनि सुनि वचन राम मन भाये। बहुरि हरषि मुनिवर उर लाये
परम प्रसन्न जानु मुनि मोहीं। जो वर माँगु देउँ सो तोहीं.
मुनि कह मैं वर कबहुं न याँचा। समुझि न परै झूँठ का साँचा
तुमहिं नीक लागै रघुराई। सो मोहिं देहु दास सुखदाई
अबिरल भक्ति विरति विज्ञाना। होहु सकल गुरा ज्ञान निधाना
प्रभु जो दीन्ह सो बर मैं पावा। अब सो देहु मोहिं जो भावा.

दो॰ अनुज जानकी सहित प्रभु चापबाराधर राम।
मम हिय गगन इन्दु इव बसहु सदा निष्काम ८

एवमस्तु कहि रमा निवासा। हरषि चले कुम्भज ऋषि पासा
बहुत दिवस गुरु दरशन पाये। भये मोहिं इहि आश्रम आये
अब प्रभु संग जाउँ गुरु पाहीं। तुम कहँ नाथ निहोरा नाहीं
देखि कृपानिधि मुनि चतुराई। लिये संग विहँसे दोउ भाई
पन्थ कहत निज भक्ति अनूपा। मुनि आश्रम पहुँचे सुर भूपा
तुरत सुतीक्षण गुरु पहँ गयऊ। करि दण्डवत कहत अस भयऊ
नाथ कोशलाधीश कुमारा। आये मिलन जगत आधारा
राम अनुज समेत वैदेही। निशि दिन देव जपत हहु जेही
सुनत अगस्ति तुरत उठि धाये। हरि विलोकि लोचन जल छाये
मुनि पद कमल परे दोउ भाई। ऋषि अति प्रीति लिये उर लाई
सादर कुशल पूँछि मुनि ज्ञानी। आसन पर बैठारे आनी।
पुनि करि बहु प्रकार प्रभु पूजा। मोहिं सम भाग्यवन्त नहिं दूजा
जहँ लगि रहे अपर मुनि बृन्दा। हर्षे सब विलोकि सुख कन्दा

दो॰ मुनि समूह महँ बैठे सन्मुख सबकी ओर।
शरद इन्दु तन चितवत मानहुँ निकर चकोर ९

तब रघुबीर कहा मुनि पाहीं। तुम सन प्रभु दुराव कछु नाहीं.
तुम जानहु जेहि कारण आयउँ। ताते तात न कहि समुझायउँ

अब सो मन्त्र देहु प्रभु मोही। जेहि प्रकार मारौं मुनि द्रोही
सुनि मुसकाने सुनि प्रभुबानी। पूँछेहु नाथ मोहिं का जानी
तुम्हरे भजन प्रभाव अघारी। जानौं महिमा कछुक तुम्हारी
दुम्बुर तरु बिशाल तव माया। फल ब्रह्माण्ड अनेक निकाया
जीव चराचर जन्तु समाना। भीतर बसहिं न जानहिं आना
ते फल भक्षक कठिन कराला। तव भयडरत सदा सोउकाला
ते तुम सकल लोकपति साईं। पूँछेहु मोहिं मनुज की नाईं
यह वर माँगौं कृपा निकेता। बसहु हृदय श्री अनुज समेता
अविरल भक्ति विरति सतसङ्गा। चरण सरोरुह प्रीति अभङ्गा.
यद्यपि ब्रह्म अखण्ड अनन्ता। अनुभवगम्य भजहिं जेहि सन्ता
अस तव रूप बखानौं जानौं। फिरिफिरि सगुण ब्रह्म रति मानौं
संतत दासन देहु बड़ाई। ताते मोहिं पूँछहु रघुराई.
है प्रभु परम मनोहर ठाऊँ। पावन पञ्चबटी तेहि नाऊँ
दण्डकबन पुनीत प्रभु करहू। उग्र शाप मुनिवर कै हरहू
बास करहु तहँ रघुकुलराया। कीजै सकल मुनिन पर दाया.
चले राम मुनि आयसु पाई। तुरतहि पञ्चबटी नियराई
दो० गीधराज सों भेंट भइ बहु बिधि प्रीति बढ़ाइ।

गोदावरी निकट प्रभु रहे परन गृह छाइ १०

जब ते राम कीन्ह तहँ बासा। सुखी भये मुनि बीती त्रासा
गिरि बन नदी ताल छबि छाये। दिन दिन प्रति अति होहिं सुहाये
खग मृग बृन्द अनन्दित रहहीं। मधुप मधुर गुञ्जत छबि लहहीं
सोभन बरनि न सक अहिराजा। जहाँ प्रकट रघुबीर बिराजा
एक बार प्रभु सुख आसीना। लक्ष्मण बचन कहे अति दीना
सुर नर मुनि सचराचर साईं। मैं पूँछौं निज प्रभु की नाईं
मोहिं समुझाइ कहहु सोइ देवा। सब तजि करौं चरन रज सेवा
कहहु ज्ञान बिराग अरु माया। कहहु सो भक्ति करहु जेहि दाया
दो० ईश्वर जीवहिं भेद प्रभु सकल कहहु समुझाइ।
जाते होइ चरन रति शोक मोह भ्रम जाइ ११

थोरे महँ सब कहौं बुझाई। सुनहु तात मति मन चित लाई
मैं अरु मोर तोर तैं माया। जेहि बश कीन्हें जीव निकाया
गो गोचर जहँ लगि मन जाई। सो सब माया जानेहु भाई
तेहि कर भेद सुनहु तुम सोऊ। विद्या अपर अविद्या दोऊ
एक दुष्ट अतिशय दुख रूपा। जा बश जीव पराभव कूपा
एक रचै जग गुना बश जाके। प्रभु प्रेरित नहिं निजबल ताके

ज्ञान मान जहँ एकौ नाहीं। देखत ब्रह्म समान सब माहीं
कहिय तात सो परम विरागी। तृणसम सिद्धि तीनि गुण त्यागी
दो० माया ईश न आपु कहँ जान कहिय सो जीव।

बन्ध मोक्ष प्रद सर्ब पर माया प्रेरक सीव १२

धर्म ते विरति योग ते ज्ञाना। ज्ञान मोक्ष प्रद वेद बखाना
जाते बेगि द्रवौं मैं भाई। सो मम भक्ति भक्त सुखदाई
सो स्वतन्त्र अवलम्बन आना। तेहि आधीन ज्ञान विज्ञाना
भक्ति तात अनुपम सुखमूला। मिले जो सन्त होहिं अनुकूला
भक्ति के साधन कहौं बखानी। सुगम पन्थ मोहिं पावहिं प्रानी
प्रथम हिं विप्र चरण अति प्रीती। निज निज कर्म्म निरत श्रुति रीती
यहि कर फल पुनि विषै विरागा। तब मम धर्म्म उपजु अनुरागा.
श्रवणादिक नव भक्ति दृढ़ाहीं। मम लीला रति अति मन माहीं
सन्त चरण पङ्कज अति प्रेमा। मन क्रम वचन भजन दृढ़ नेमा
गुरु पितु मातु बन्धु पति देवा। सब मोहिं कहँ जानैं दृढ़ सेवा
मम गुण गावत पुलक शरीरा। गदगद गिरा नयन बह नीरा
काम आदि मद दम्भ न जाके। तात निरन्तर बश मैं ताके
दो० वचन कर्म मन मोरि गति भजन करहिं निष्काम।

तिन्ह के हृदय कमल महँ करौं सदा विश्राम॥३

भक्तियोग सुनि अति सुख पावा। लक्ष्मण प्रभु चरणन्हि सिर नावा
यहि विधि गये कछुक दिन बीती। कहत विराग ज्ञान गुन नीती
सूर्पणखा रावण की बहिनी। दुष्ट हृदय दारुण जस अहिनी
पञ्चबटी सो गइ एक बारा। देखि विकल भइ युगल कुमारा
भ्राता पिता पुत्र उर गारी। पुरुष मनोहर निरखति नारी
होइ विकल सक मन नहिं रोकी। जिमि रवि मणि द्रव रविहिं विलोकी
रुचिर रूप धरि प्रभु पहँ जाई। बोली वचन बहुत मुसुकाई
तुम सम पुरुष न मो सम नारी। यह संयोग विधि रचा विचारी
मम अनुरूप पुरुष जग माहीं। देखेउँ खोजि लोक तिहुँ नाहीं
ताते अब लगि रहिउँ कुमारी। मन माना कछु तुमहिं निहारी
सीतहिं चितइ कही प्रभु बाता। अहै कुमार मोर लघु भ्राता
गइ लक्ष्मण रिपु भगिनी जानी। प्रभु विलोकि बोले मृदु बानी
सुन्दरि सुनु मैं उन्ह कर दासा। पराधीन नहिं तोर सुपासा
प्रभु समरथ कोशलपुर राजा। जो कछु करहिं उन्हें सब छाजा
सेवक सुख चह मान भिखारी। व्यसनी धन शुभ गति व्यभिचारी
लोभी यश चह चार गुमानी। नभ दुहि दूध चहत ये प्रानी

पुनि फिरि राम निकट सो आई। प्रभु लक्ष्मण पहँ बहुरि पठाई
लक्ष्मण कहा तोहिं सो बरई। जो तृण तोरि लाज परिहरई
तब रिपु सिं आनि राम पहँ गई। रूप भयंकर प्रगटति भई.
सीतहि सभय देखि रघुराई। कहा अनुज सन सैन बुझाई
दो० लक्ष्मण अति लाघव सो नाक कान बिनु कीन्ह।
ताके कर रावण कहँ मनहुँ चुनौती दीन्ह १४
नाक कान बिनु भइ बिकरारा। जनु स्रव शैल गेरु की धारा
खर दूषण पहँ गइ बिलपाता। धिक धिक तव पौरुष बलभ्राता
तेहि पूछा सब कहेसि बुझाई। यातुधान सुनि सेन बुलाई.
धाये निशिचर निकर बरूथा। जनु सपक्ष कज्जल गिरि यूथा
नाना वाहन नाना कारा। नाना युधधर घोर अपारा.
शूर्पणखा आगे करि लीनी। अशुभ भेष श्रुति नासा हीनी
अशकुन अमित होहिं भयकारी। गनहिं न मृत्यु विवश सब झारी
गर्जहिं तर्जहिं गगन उड़ाहीं। देखि कटक भट अति हरषाहीं
कोउ कह जियत धरहु दोउ भाई। धरि मारहु तिय लेहु छुड़ाई.
धूरि पूरि नभ मण्डल रहा। राम बुलाइ अनुज सन कहा
लै जानकिहि जाहु गिरि कन्दर। आवा निशिचर कटक भयंकर

रहेउ सजग सुनि प्रभु कै बानी। चले सहित श्री सर धनु पानी
देखि राम रिपुदल चलि आवा। बिहँसि कठिन कोदंड चढ़ावा
छं० कोदंड कठिन चढ़ाइ सिर जट जूट बाँधत सोह क्यों।
मरकत सैल पर लसत दामिनि कोटि सों जुग भुजग ज्यों॥
कटि कसि निषंग बिसाल भुज गहि चाप बिसिख सुधारि कै।
चितवत मनहुँ मृगराज प्रभु गजराज घटा निहारि कै॥
सो० आइ गये बग मेल धरहु धरहु धावत सुभट।
जथा बिलोकि अकेल बाल रबिहि घेरत दनुज॥

प्रभु बिलोकि सर सकहिं न डारी। थकित भये निसिचर धारी॥
सचिव बोलि बोले खर दूषन। यह कोउ नृप बालक नर भूषन॥
नाग असुर सुर नर मुनि जेते। देखे जिते हते हम केते॥
हम भरि जनम सुनहु सब भाई। देखी नहिं असि सुन्दरताई॥
यद्यपि भगिनी कीन्ह कुरूपा। बध लायक नहिं पुरुष अनूपा॥
तुरत देहु निज नारि दुराई। जीवत भवन जाहु दोउ भाई॥
मोर कहा तुम ताहि सुनावहु। तासु बचन सुनि आतुर आवहु॥
दूतन्ह कहा राम सन जाई। सुनत राम बोले मुसकाई॥
हम क्षत्रिय मृगया बन करहीं। तुम से खल मृग खोजत फिरहीं॥

रिपुबलवन्त देखि नहिं डरहीं। एक बार कालहु सन लरहीं
यद्यपि मनुज दनुज कुल घालक। मुनि पालक खल सालक बालक
जो न होइ बल घर फिरि जाहू। समर बिमुख मैं हतौं न काहू
रन चढ़ि करिय कपट चतुराई। रिपु पर कृपा परम कदराई
दूतन्ह जाइ तुरत सब कहेऊ। सुनिखरदूषन उर अति दहेऊ

छं० उर दहेउ कहेउ कि धरहु धाये बिकट भट रजनीचरा।
सर चाप तोमर सक्ति सूल कृपान परिघ परसु धरा॥
प्रभु कीन्ह धनुष टंकोर प्रथम कठोर घोर भयावहा।
भये बधिर ब्याकुल यातुधान न ज्ञान तेहि अवसर रहा ४

दो० सावधान होइ धाये जानि सबल आराति।
लागे बरषा राम पर अस्त्र सस्त्र बहु भाँति॥
तिनके आयुध तिल सम करि काटे रघुबीर।
तानि सरासन श्रवन लगि पुनि छाँड़े निज तीर १५

छं० तब चले बान कराल। फुःकरत जनु बहु ब्याल॥
कोपेउ समर श्री राम। चले बिसिख निसित निकाम
अवलोकि खरतर तीर। मुरि चले निसिचर बीर॥
भये क्रुद्ध तीनों भाइ। जो भागि रन ते जाइ॥

तेहिबधबहुमनिजपानि। फिरे मरन मनमहुँठानि५
आयुध अनेक प्रकार। सम्मुख तेकरहिंप्रहार॥
रिपु परम कोपे जानि। प्रभु धनुष शरसन्धानि॥
छाड़े विपुल नाराच। लगे कटनविकटपिशाच
उरशीशभुजकर चरन। जहँ तहँ लगेमहि परन॥
चिक्करत लागत बान। धर परत कुधर समान॥
भटकटत तनुशतखराड। पुनि उठतकरिपाखराड॥
नभउड़त बहुभुजमुराड। बिनुमौलि धावतरुराड॥
खगकंककागशृगाल। कट कटहिं कठिनकराल॥
छं० कट कटहिं जम्बुक भूतप्रेतपिशाचखप्परसंचहीं।
बैताल बीरकपाल तालबजाइयोगिनि नंचहीं॥
रघुबीरबाणाप्रचराडखराडहिंभटनकेउरभुजशिरा।
जहँ तहँ परहिंउठिलरहिंधरुधरुकरहिंभयकारीगिरा
अंतावरीगहि उड़हिंगीधपिशाचकरगहि धावहीं।
संग्रामपुरबासी मनहुँ बहु बालगुड़ी उड़ावहीं॥
मारे पछारे उर विदारे बिपुल भट कहरत परे।
अवलोकिनिजदलविकलभटतिरिरादिखरदूषणाफिरे

शर शक्ति तोमर परशु शूल कृपाण एकहि बार हीं।
करि कोप श्री रघुबीर पर अगि गात निशाचर डार हीं॥
प्रभु निमिष महँ रिपु शर निवारि प्रचारि डारे शायका।
दश दश विशिष उर माँझ मारे सकल निशिचर नायका॥
महि परत उठि भट भिरत मरत न करत माया अति घनी
सुर डरत चौदह सहस निशचर एक शर रघुकुल मनी॥
सुर मुनि सभय प्रभु देखि माया नाथ अति कौतुक कर्यो
देखहिं परस्पर राम करि संग्राम रिपु दल लरि मर्यो॥

दो० राम राम कहि तनु तजहिं पावहिं पद निर्वान।
करि उपाय रिपु मारेउ क्षण महँ कृपानिधान॥
हरषित बरषहिं सुमन सुर बाजहिं गगन निशान।
अस्तुति करि करि सब चले सोभित बिबिध बिमान१६

जब रघुनाथ समर रिपु जीते। सुर नर मुनि सबके भय बीते
तब लक्ष्मण सीतहिं ले आये। प्रभु पद परत हरषि उर लाये
सीता चितव श्याम मृदु गाता। परम प्रेम लोचन न अघाता
पञ्चबटी बसि श्री रघुनायक। करत चरित सुर मुनि सुखदायक
धुआँ देखि खरदूषण केरा। जाइ शुर्पनखा रावण प्रेरा॥

बोली बचन क्रोध करि भारी। देश कोष कै सुरति बिसारी
करसि पान सोवसि दिन राती। सुधि नहिं तव शिर पर आराती
राजनीति बिनु धन बिनु धर्मा। हरिहिं समर्पे बिनु सतकर्मा.
विद्या बिनु विवेक उपजाये। श्रम फल पढ़े किये अरु पाये
संग ते यती कुमन्त्र ते राजा। मान ते ज्ञान ज्ञान ते लाजा
प्रीति प्रराय बिनु मद ते गुनी। नाशहिं वेगि नीति असि सुनी

सो० रिपु रुज पावक पाप प्रभु अहि गनिय न छोट करि।
अस कहि विविध विलाप करि लागी रोदन करन १

दो० सभा माँझ परि व्याकुल बहु प्रकार कह रोइ।
तोहिं जियत दशकन्धर मोरि कि असि गति होइ १

सुनत सभासद उठे अकुलाई। समुझाई गहि बाँह उठाई.
कहलंकेश कहसि किन बाता। केहिं तव नासा कान निपाता
अवध नृपति दशरथ के जाये। पुरुष सिंह बन खेलन आये
समुझि परी मोहिं उनकै करनी। रहित निशाचर करिहहिं धरनी
जिन्ह कर भुज बल पाइ दशानन। अभय भये विचरत मुनि कानन
देखत बालक काल समाना। परम धीर धन्वी गुरा नाना
अतुलित बल प्रताप दोउ भ्राता। खल बध रत सुर मुनि सुख दाता

शोभाधाम राम अस नामा। तिनके संग नारि एक स्यामा
रूप राशि बिधि नारि सँवारी। रतिशतकोटि तासु बलिहारी
तासु अनुज काटे श्रुति नासा। सुनि तव भगिनि करहिं परिहासा
खरदूषरा सुनि लगे पुकारा। क्षरा महँ सकल कटक उन मारा
खरदूषरा त्रिशिरा कर घाता। सुनि दश शीश जरे सब गाता.

दो० शूर्पणखा रावहि सम्मुख जाय करि बल बोलेसि बहु भाँति
गयउ भवन अति शोच बश नींद परी नहिं राति १८

सुर नर असुर नाग खग माहीं। मोरे अनुचर कहँ कोउ नाहीं
खरदूषरा मोहिं सम बलवन्ता। तिन्हैं को मारै बिनु भगवन्ता
सुर रञ्जन भञ्जन महि भारा। जो भगवन्त लीन्ह अवतारा
तौ मैं जाइ बैर हठ करऊं। प्रभु शर प्राण तजे भव तरऊं
होइहि भजन न तामस देहा। मन क्रम वचन मन्त्र दृढ़ येहा
जो नर रूप भूप सुत कोऊ। हरिहौं नारि जीति रण दोऊ
चला अकेल यान चढ़ि तहवाँ। बस मारीच सिन्धु तट जहवाँ.
रथ अनूप जोरे खर चारी। बेगवन्त इमि जिमि उर गारी

छं० उरगारि सम अति वेग वरणत जाइ नहिं उपमा कहीं।
शिर छत्र शोभित श्याम घन जनु चमर श्वेत विराजहीं॥

इहि भाँति नांघत सरित शैल अनेक वापी सोहहीं।
बन बाग उपबन बाटिका शुचि नगर मुनि मन मोहहीं ८
दो० बहु तड़ाग शुचि बिहँग मृग बोलत विविध प्रकार
इहि बिधि आयउ सिन्धु तट शत योजन विस्तार २९
सुन्दर जीव विविध विधि जाती। करहिं कुलाहल दिन औ राती
कूदहिं ते गरजहिं घन नाई। महाबली बल बरणि न जाई
कनक वस्तु सुन्दर सुखदाई। बैठहिं सकल जन्तु तहँ आई
तिहि पर दिव्य लता तरु लागे। जिहि देखत मुनि मन अनुरागे.
गुहा बिबिध बिधि रहहिं बनाई। वरणात शारद मति सकुचाई
चहिये जहाँ ऋषि नकर बासा। तहाँ निशाचर करहिं निवासा
दशमुख देख सकल सकुचाने। जे जड़ जीव सजीव पराने॥
इहाँ राम जसि युक्ति बनाई। सुनहु उमा सो कथा सुहाई
दो० लक्ष्मण गये बनहिं जब लेन मूल फल कन्द।
जनक सुता सन बोले बिहँसि कृपा सुख कन्द २०
सुनहु प्रिया ब्रत रुचिर सुशीला। मैं कछु करब ललित नर लीला
तुम पावक महँ करहु निवासा। जब लगि करौं निशाचर नासा
जबहिं राम सब कहा बखानी। प्रभु पद धरि हिय अनल समानी

निजप्रतिबिम्बराखिवहँसीता। तैसइ रूप सुशील बिनीता.
लक्ष्मणाहूं यह मर्म न जाना। जो कछु चरित रचा भगवाना
दशमुख गयउ जहाँ मारीचा। नाय माथ स्वारथ रत नीचा.
नवनि नीच कै अति दुखदाई। जिमि अंकुश धनु उरग बिलाई
भयदायक खलकी प्रियबानी। जिमि अकाल के कुसुम भवानी
दो० करि पूजा मारीच तब सादर पूँछी बात।
कवन हेतु मनव्यग्र अति अकसर आयहु तात २१
दशमुख सकल कथा तेहि आगे। कही सहित अभिमान अभागे
होहु कपट मृग तुम छलकारी। जेहि बिधि हरि आनौं नृपनारी
तेहि पुनि कहा सुनहु दशशीशा। ते नर रूप चराचर ईशा
तासों तात बैर नहिं कीजै। मारे मरिय जियाये जीजै।
मुनिमख राखन गयउ कुमारा। बिनु फर शर रघुपति मोहिं मारा
शतयोजन आयउँ छनमाहीं। तिन सन बैर किये भल नाहीं
भइ मति कीट भृङ्ग की नाई। जहँ तहँ मैं देखौं दोउ भाई
जो नर तात तदपि अति शूरा। तिनहिं विरोध न आइहि पूरा
दो० जेहि ताड़का सुबाहु हति खण्डेउ हर कोदण्ड।
खरदूषण त्रिशिरा बध्येउ मनुज कि अस बलबण्ड २२

जाहु भवन कुल कुशल विचारी। सुनत जरा दीन्हेसि बहु गारी
गुरु जिमि मूढ़ करसि मम बोधा। कहु जग मोहिं समान को योधा
तब मारीच हृदय अनुमाना। नवहिं विरोधे नहिं कल्याना
शस्त्री मर्मी प्रभु शठ धनी।। वैद्य वन्दि कवि मानस गुनी
उभय भाँति देखा निज मरणा। तब ताकेसि रघुनायक शरणा
उतर देत मोहिं बधब अभागे। कस न मरौं रघुपति शर लागे.
अस जिय जानि दशानन सङ्गा। चला राम पद प्रेम अभङ्गा
मन अति हर्ष जनाव न तेही। आजु देखिहौं परम सनेही
छं० निज परम प्रीतम देखि लोचन सुफल करि सुख पाइहौं।
श्री सहित अनुज समेत कृपा निकेत पद मन लाइहौं॥
निर्बाण दायक क्रोध जाकर भक्त ऐसेहि बश करी।
निज पाणि शर सन्धान सो मोहिं बधहिं सुख सागर हरी ९
दो० मम पाछे धरि धावत धरे शरासन बान।
फिरि फिरि प्रभुहिं बिलोकिहौं धन्य न मोसम आन २३
तेहि बन निकट दशानन गयऊ। तब मारीच कपट मृग भयऊ
अति विचित्र कछु बरणि न जाई। कनक देह मणि रचित बनाई
सीता परम रुचिर मृग देखा। अङ्ग अङ्ग सुमनोहर बेखा

सुनहु देव रघुबीर कृपाला। यहि मृग कर अति सुन्दर छाला
सत्य सन्ध प्रभु बध करि येही। आनहु चर्म कहति वैदेही.
तब रघुपति जानत सब कारन। उठे हरषि सुर काज सँवारन
मृग विलोकि कटि परिकर बाँधा। करतल चाप रुचिर शर साधा.
प्रभु लक्ष्मणहि कहा समुझाई। फिरत बिपिन निशिचर बहु भाई
सीता केरि करेहु रखवारी। बुधि बिबेक बल समय विचारी
प्रभुहिं बिलोकि चला मृग भाजी। धाये राम शरासन साजी।
निगम नेति शिव ध्यान न पावा। माया मृग पाछे सोइ धावा
कबहुँ निकट पुनि दूरि पराई। कबहुँक प्रगटै कबहु छिपाई
प्रगटत दुरत करत छल भूरी। यहि बिधि प्रभुहिं गयो लै दूरी
तब तकि राम कठिन शर मारा। धरणी परेउ करि घोर पुकारा
लक्ष्मण कर प्रथम हिं लै नामा। पाछे सुमिरेसि मन महँ रामा।
प्राण तजत प्रगटेसि निज देहा। सुमिरेसि राम समेत सनेहा
अन्तर प्रेम तासु पहिचाना। मुनि दुर्लभ गति दीन्ह सुजाना.
दो० विपुल सुमन सुर बर्षहिं गावहिं प्रभु गुण गाथ।
निज पद दीन असुर कहँ दीनबन्धु रघुनाथ २४
खल बधि तुरत फिरे रघुबीरा। सोह चाप कर कटि तूणीरा

आरत गिरा सुनी जब सीता। कह लक्ष्मण सन परम सभीता
जाहु बेगि संकट अति भ्राता। लक्ष्मण बिहँसि कहा सुनु माता
भृकुटि बिलास सृष्टि लय होई। सपनेहु संकट परै कि सोई॥
मरम बचन जब सीता बोली। हरि प्रेरित लक्ष्मण मति डोली
बन दिशि देव सौंपि सब काहू। चले जहाँ रावण शशि राहू॥
सून बीच दशकन्धर देखा। आवा निकट यती के भेखा
जाके डर सुर असुर डराहीं। निशि न नींद दिन अन्न न खाहीं
सो दश शीश श्वान की नाईं। इत उत चितै चला भड़िहाईं॥
इमि कुपन्थ पग देत खगेशा। रहे न तेज बुधि बल तन लेशा
नाना बिधि कहि कथा सुनाई। राजनीति भय प्रीति दिखाई
कह सीता सुनु यती गुसाईं। बोलेहु वचन दुष्ट की नाईं
तब रावण निज रूप दिखावा। भई सभय जब नाम सुनावा
कह सीता धरि धीरज गाढ़ा। आइ गये प्रभु रहु खल ठाढ़ा
जिमि हरिबधुहिं क्षुद्र शशा चाहा। भयेसि काल बश निशिचर नाहा
सुनत बचन दशशीश रिसाना। मन महँ चरण बन्दि सुख माना
दो० क्रोधवन्त तब रावण लीन्हेसि रथ बैठाइ।
चला गगन पथ आतुर भय रथ हाँकि न जाइ २५

हे जगदीश बीर रघुराया। केहि अपराध बिसारेहु दाया
आरतिहरण शरण सुखदायक। हा रघुकुल सरोज दिननायक
हा लक्ष्मण तुम्हार नहिं दोषा। सो फल पायउँ कीन्हेउँ रोषा
बिबिध बिलाप करति वैदेही। भूरि कृपा प्रभु दूरि सनेही
विपति मोरि को प्रभुहिं सुनावा। पुरोडास चह रासभ खावा
सीता के बिलाप सुनि भारी। भये चराचर जीव दुखारी
गिद्धराज सुनि आरति बानी। रघुकुल तिलक नारि पहिचानी
अधम निशाचर लीन्हे जाई। जिमि मलेच्छ बस कपिला गाई
सीता पुत्रि करसि जनि त्रासा। करिहौं यातुधान के नासा
धावा क्रोधवन्त खग कैसे। छूटै पवि पर्वत पर जैसे
रे रे दुष्ट ठाढ़ किन होई। निर्भय चलेसि न जानेसि मोही
आवत देखि कृतान्त समाना। फिरि दशकन्धर कर अनुमाना
की मैनाक कि खगपति होई। मम बल जान सहित पति सोई
जाना जरठ जटायू एहा। मम कर तीरथ छाँड़िहि देहा
सुनत गिद्ध क्रोधातुर धावा। कह सुनु रावण मोर सिखावा
तजि जानकिहि कुशल गृह जाहू। नाहित अस होइहि बहु बाहू
राम रोष पावक अति घोरा। होइहि सकल शलभ कुल तोरा

उतर न देत दशानन योधा। तबहिं गिद्ध धावा करि क्रोधा॥
धरिकच बिरथ कीन्ह महि गिरा। सीतहिं राखि गिद्ध पुनि फिरा॥
चोचन्ह मारि बिदारेसि देही। दंड एक भइ मूर्च्छा तेही॥
तब सक्रोध निशिचर खिसियाना। काढ़ेसि परम कराल कृपाना॥
काटेसि पंख परा खग धरणी। सुमिरि राम करि अद्भुत करणी॥
सीतहि यान चढ़ाइ बहोरी। चला उताइल त्रासन थोरी॥
करति विलाप जाति नभ सीता। व्याध बिबस जनु मृगी सभीता॥
गिरि पर बैठे कपिन्ह निहारी। कहि हरि नाम दीन्ह पट डारी॥
यहि बिधि सीतहि सो लै गयऊ। बन अशोक महँ राखत भयऊ॥

दो० हारि परा खल बहु बिधि भय अरु प्रीति दिखाइ।
तब अशोक पादप तर राखेसि यतन कराइ २६.

उहाँ बिधाता मन अनुमाना। सुरपति बोलि मन्त्र असठाना॥
तात जनक तनया पहँ जाहू। सुधि न पाव जिहि निशिचर नाहू॥
अस कहि बिधि सुन्दर हवि आनी। सौंपि बहुरि बोले मृदु बानी॥
इह भक्षरा कृत क्षुधा न प्यासा। बरष सहस दश संशय नासा॥
सो प्रसाद लै आयसु पाई। चले हृदय सुमिरत रघुराई॥
कछु बासव माया नि न मोई। रक्षक रहे गये तहँ सोई॥

तदपि डरत सीता पहँ आयउ। करि प्रणाम निज नाम सुनायउ
निश्चय जान सुरेश सुजाना। पिता जनक दशरथ सम माना।
करि परितोष दूरि करि शोका। ह्य खवाय गये निज लोका
दो० जेहि विधि कपट कुरंग सँग धाइ चले श्रीराम।
सो छबि सीता राखि उर रटति रहति हरि नाम २१
रघुपति अनुजहि आवत देखी। मनबहु चिन्ता कीन्ह विशेखी
जनक सुता परिहरेउ अकेली। आयउ तात वचन मम पेली.
निशिचर निकर फिरहिं बन माहीं। मम मन सीता आश्रम नाहीं.
गहि पदकमल अनुज कर जोरी। सुनहु नाथ कछु मोहिं न खोरी
अनुज समेत गयउ प्रभु तहवाँ। गोदावरि तट आश्रम जहवाँ
आश्रम देखि जानकी हीना। भये विकल जस प्राकृत दीना
हा गुणखानि जानकी सीता। रूप शील ब्रत नेम पुनीता
लक्ष्मण समुझाये बहु भाँती। पूँछत चले लता तरु पाँती
हे खग मृग हे मधुकर श्रेनी। तुम देखी सीता मृग नैनी
खञ्जन शुक कपोत मृग मीना। मधुप निकर कोकिला प्रवीना
कुन्द कली दाड़िम दामिनी। कमल शरद शशि हे भामिनी
वरुण पास मनोज धनु हंसा। गज केहरि निज सुनत प्रशंसा

श्रीफल कनक कदलि हरषाहीं। नेकु न शंक सकुच मनमाहीं
सुनु जानकी तोहिं बिनु आजू। हरषे सकल पाइ जनु राजू॰
किमि सहि जात अनख तोहि पाहीं। प्रिया बेगि प्रगट सि कस नाहीं
यहि विधि खोजत बिलपत स्वामी। मनहुं महा बिरही अति कामी
पूरण काम राम सुख राशी। मनुज चरित कर अज अविनाशी
आगे परा गिद्धपति देखा। सुमिरत राम चरण की रेखा
दो॰ कर सरोज शिर परसेउ कृपा सिन्धु रघुबीर।
निरखि राम छबि धाम मुख विगत भई सब पीर २८
तब कह गीध बचन धरि धीरा। सुनहु राम भञ्जन भव भीरा
नाथ दशानन यह गति कीन्हीं। तेहि खल जनक सुता हरि लीन्हीं
लै दक्षिण दिशि गयउ गुसाईं। बिलपति अति कुररी की नाईं
दरश लागि प्रभु राखेउं प्राना। चलन चहत अब कृपा निधाना
राम कहा तनु राखहु ताता। मुख मुसुकाइ कही तेहि बाता
जाकर नाम मरत मुख आवा। अधमो मुक्त होइ श्रुति गावा
सो मम लोचन गोचर आगे। राखौं देह नाथ केहि लागे
जल भरि नयन कहहिं रघुराई। तात कर्म निज ते गति पाई
परहित बश जिन्ह के मन माहीं। तिन कहुं जग दुर्लभ कछु नाहीं.

तनुतजितात जाहु मम धामा। देउँ काह तुम पूरन कामा
गीध देह तजि धरि हरि रूपा। भूषन बहु पट पीत अनूपा
श्याम गात विशाल भुज चारी। अस्तुति करत नयन भरि बारी
छं० जय राम रूप अनूप निर्गुन सगुन गुन प्रेरक सही।
दशशीश बाहु प्रचण्ड खण्डन चापशर मण्डन महीं॥
पाथोज गात सरोज मुख राजीव आयत लोचनं।
नित नौमि राम कृपालु बाहु बिशाल भव भय मोचनं॥
बलमप्रमेय मनादि मज मव्यक्त मेक मगोचरं।
गोविन्द गोपद द्वन्द्व हर विज्ञान घन धरणी धरं॥
जे राम मन्त्र जपन्त सन्त अनन्त जन मन रञ्जनं।
नित नौमि राम अकाम प्रिय कामादि खल दल गञ्जनं॥
जेहि श्रुति निरन्तर ब्रह्म व्यापक विरज अज कहि गावहीं।
करि ज्ञान ध्यान विराग योग अनेक मुनि जेहि पावहीं॥
सो प्रगट करुणा कन्द शोभा वृन्द अग जगमोहई।
मम हृदय पङ्कज भृङ्ग अङ्ग अनङ्ग बहु छवि सोहई॥
जो अगम सुगम स्वभाव निर्मल असम सम शीतल सदा।
पश्यन्ति यं योगी यतन करि करत मन गो बश यदा॥

सोरामरमानिवाससन्ततदासवरात्रिभुवनधनी।
ममउरबसेउसोसमनसंसृतिजासुकीरतिपावनी ६
दो० अविरलभक्तिमाँगिवरगिडगयउहरिचाम।
तेहिकीक्रियायथोचितनिजकरकीन्हींराम॥
सीताहरणातातजनिकहेहुपितासनजाइ।
जोमैंरामतोकुलसहितकहिहिदशाननआइ २६
कोमलचितअतिदीनदयाला। कारणाबिनुरघुनाथकृपाला
गीधअधमखगआमिषभोगी। गतिदीन्हीं जो याचत योगी
सुनहु उमा ते लोग अभागी। हरितजि होहिंविषयअनुरागी
पुनिसीतहिंखोजतदोउभाई। चले बिलोकतवन बहुताई.
संकुललतावितपघनकानन। बहुखगमृगतहँगजपंचानन
आवतपन्थ कवन्धनिपाता। तेहि सब कही शापकीबाता
दुर्ब्बासा मोहिं दीन्हों शापा। प्रभु पद देखि मिटा सो पापा
सुनु गन्धर्व्व कहौं मैं तोही। मोहिंन सुहाइब्रह्मकुलद्रोही
दो० मनक्रमवचनकपटतजिजोकरभूसुरसेव।
मोहिंसमेतबिरंचिशिवबशताकेसबदेव ३०
शापत ताड़त परुष कहन्ता। बिप्र पूज्य अस गावहिंसन्ता

पूजिय विप्र शील गुणा हीना। शूद्र न गुणा गणा ज्ञान प्रवीना
कहि निज धर्म ताहि समुझावा। निज पद प्रीति देखि मन भावा
रघुपति चरणा कमल शिर नाई। गयउ गगन आपनि गति पाई
ताहि देइ गति राम उदारा। शबरी के आश्रम पगु धारा
शबरी देखि राम गृह आये। मुनि के बचन समुझि जिय भाये
सरसिज लोचन बाहु बिशाला। जटा मुकुट शिर उर बन माला
श्याम गौर सुन्दर दोउ भाई। शबरी परी चरणा लपटाई
प्रेम मगन मुख वचन न आवा। पुनि पुनि पदसरोज शिर नावा
सादर जल लै चरणा पखारे। पुनि सुन्दर आसन बैठारे.
दो० कंद मूल फल सुरस अति दिये राम कहँ आनि।
प्रेम सहित प्रभु खाये बारम्बार बखानि ३१
पाणि जोरि आगे भइ ठाढ़ी। प्रभुहिं बिलोकि प्रीति अति बाढ़ी
केहि बिधि अस्तुति करौं तुम्हारी। अधम जाति मैं जड़ मति भारी
अधम ते अधम अधम अति नारी। तिन महँ मैं मति मन्द अघारी
कह रघुपति सुनु भामिनि बाता। मानौं एक भक्ति कर नाता
जाति पाँति कुल धर्म्म बड़ाई। धन बल परिजन गुणा चतुराई
भक्ति हीन नर सोहै कैसा। बिनु जल वारिद देखिय जैसा

नवधा भक्ति कहौं तोहिं पाहीं। सावधान सुनु धरु मन माहीं
प्रथम भक्ति सन्तन कर सङ्गा। दूसरि रति मम कथा प्रसङ्गा
दो० गुरु पद पङ्कज सेवा तीसरि भक्ति अमान।
चौथि भक्ति मम गुन गन करइ कपट तजि गान ३२
मन्त्र जाप मम दृढ़ बिस्वासा। पंचम भजन सो वेद प्रकासा
छठि दम सील बिरति बहु कर्मा। निरत निरन्तर सज्जन धर्म्मा
सातवँ सब मोहिं मय जग देखे। मोते सन्त अधिक करि लेखे
आठवँ यथा लाभ सन्तोषा। सपनेहुँ नहिं देखिय परदोषा
नवम सरल सब मन छल हीना। मम भरोस हिय हरष न दीना
नव महँ एकौ जिन्ह के होई। नारि पुरुष सचराचर कोई
सोइ अतिशय प्रिय भामिनि मोरे। सकल प्रकार भक्ति दृढ़ तोरे
योगि बृन्द दुर्लभ गति जोई। तो कहँ आजु सुलभ भइ सोई
मम दर्शन फल परम अनूपा। जीव पाव निज सहज स्वरूपा
दो० सब प्रकार तव भाग्य बड़ मम चरनन्ह अनुराग।
तव महिमा जेहि उर बसिहि तासु परम बड़ भाग ३३
सुनि शुभ वचन हर्ष कहँ पाई। पुनि बोले प्रभु गिरा सुहाई
जनक सुता कै सुधि भामिनी। जानहिं कहु करिवर गामिनी

पम्पा सरहि जाहु रघुराई। तहँ होइहि सुग्रीव मिताई
ऋषिमतङ्ग महिमा गुणभारी। जीव चराचर रहत सुखारी
बैर न कर काहू सन कोई। जासन बैर प्रीति करु सोई
शिखर सुहावन कानन फूले। खग मृग जीव जन्तु अनुकूले
करहु सफल श्रम सब कर जाई। तहँ होइहि सुग्रीव मिताई
सो सब कहिहि देव रघुबीरा। जानतहू पूँछहु मतिधीरा
बार बार प्रभु पद शिर नाई। प्रेम सहित सब कथा सुनाई

छं० कहि कथा सकल बिलोकि हरि मुख हृदय पद पंकज धरे
तजि योग पावक देह हरि पद लीन भइ जहँ नहिं फिरे॥
नर विविध कर्म अधर्म बहु मत शोकप्रद सब त्यागहू।
विश्वास करि कह दास तुलसी राम पद अनुरागहू १०

दो० जाति हीन अघ जन्म महि मुक्त कीन्ह असि नारि।
महा मन्द मति सुख चहसि ऐसे प्रभुहि बिसारि ३४

चले राम त्यागा बन सोऊ। अतुलित बल नर केहरि दोऊ
बिरही इव प्रभु करत बिषादा। कहत कथा अनेक सम्बादा
लक्ष्मण देखु बिपिन कै शोभा। देखत केहि कर मन नहिं क्षोभा
नारि सहित सब खग मृग बृन्दा। मानहुँ मोरि करत हहिं निन्दा

हमहिं देखि मृग निकर पराहीं। मृगी कहहिं तुम कहँ भय नाहीं
तुम आनन्द करहु मृग जाये। कञ्चन मृग खोजन ये आये
संग लाइ करिनी करि लेहीं। मानहु मोहिं सिखावन देहीं
शास्त्र सुचिन्तित पुनि पुनि देखिय। भूप सुसेवित बश नहिं लेखिय
राखिय नारि यदपि उर माहीं। युवती शास्त्र नृपति बश नाहीं
देखहु तात बसन्त सुहावा। प्रिया हीन मोहिं भय उपजावा

दो० बिरह बिकल बल हीन मोहिं जानेसि निपट अकेल
सहित बिपिन मधुकर खगन्ह मदन कीन्ह बग मेल॥
देखि गयउ भ्राता सहित तासु दूत सुनि बात।
डेरा कीन्हेउ मनहुँ तिन कटकि हटकि नहिं जात ३५

बिटप बिशाल लता अरुझानी। बिबिध बितान दिये जनु तानी
कदलि ताल बर ध्वजा पताका। देखि न मोह धीर मन जाका
बिबिध भाँति फूले तरु नाना। जनु बानैत बने बहु बाना.
कहुँ कहुँ सुन्दर बिटप सुहाये। जनु भट बिलग बिलग होइ छाये
कूजत पिक मानहुँ गज माते। ढेक महोख ऊँट बिसराते
मोर चकोर कीर बर बाजी। पारावत मराल सब ताजी
तीतर लावक पदचर यूथा। बरनि न जाइ मनोज बरूथा

रथ गिरि शिला दुन्दुभी झरना। चातक बन्दी गुण गण बरना
मधुकर मुखर भेरि सहनाई। त्रिविध बयारि बसीठी आई
चतुरंगिनी सेन सँग लीन्हे। विचरत सबहि चुनौती दीन्हे
लक्ष्मण देखत काम अनीका। रहहिं धीर तिन्ह कै जग लीका
एहि के एक परम बल नारी। तेहि ते उबर सुभट सोइ भारी
दो० तात तीनि अति प्रबल खल काम क्रोध अरु लोभ।
मुनि विज्ञान धाम मन करहिं निमिष महँ क्षोभ॥
लोभ के इच्छा दम्भ बल काम के केवल नारि।
क्रोध के परुष वचन बल मुनिवर कहहिं विचारि ३६
गुणातीत सचराचर स्वामी। राम उमा सब अन्तरयामी
कामिन्ह कै दीनता दिखाई। धीरन के मन विरति दृढ़ाई
क्रोध मनोज लोभ मद माया। छूटहि सकल राम की दाया
सो नर इन्द्रजाल नहिं भूला। जापर होइ सो नट अनुकूला
उमा कहौं मैं अनुभव अपना। सत हरि भजन जगत सब सपना
पुनि प्रभु गये सरोवर तीरा। पम्पा नाम सुभग गम्भीरा
सन्त हृदय जस निर्मल बारी। बाँधे घाट मनोहर चारी
जहँ तहँ पियहिं विविध मृग नीरा। जनु उदार गृह याचक भीरा

दो० पुरइनि सघन ओट जल बेगि न पाइय मर्म।
माया छन्न न देखिय जैसे निर्गुन ब्रह्म॥
सुखी मीन सब एकरस अति अगाध जल माहिं।
जथा धर्मशीलन के दिन सुख संयुत जाहिं ३७

बिकसे सरसिज नाना रङ्गा। मधुर मुखर गुञ्जत बहु भृङ्गा
बोलत जल कुक्कुट कल हंसा। प्रभु बिलोकि जनु करत प्रसंसा
चक्रवाक बक खग समुदाई। देखत बनै बरनि नहिं जाई
सुन्दर खग गन गिरा सुहाई। जात पथिक जनु लेत बुलाई
ताल समीप मुनिन्ह गृह छाये। चहुँ दिसि कानन बिटप सुहाये
चम्पक बकुल कदम्ब तमाला। पाटल पनस पलास रसाला
नव पल्लव कुसुमित तरु नाना। चञ्चरीक पटली कर गाना
सीतल मन्द सुगन्ध सुहाऊ। सन्तत बहै मनोहर बाऊ
कुहू कुहू कोकिल धुनि करहीं। सुनि स्वर सरस ध्यान मुनि टरहीं

दो० फूले फले बिटप सब रहे भूमि नियराइ।
पर उपकारी पुरुष जिमि नवहिं सुसम्पति पाइ ३८

देखि राम अति रुचिर तलावा। मज्जन कीन्ह परम सुख पावा
देखी सुन्दर तरुवर छाया। बैठे अनुज सहित रघुराया

तहँ पुनि सकल देव मुनि आये। अस्तुति करि निज धाम सिधाये
बैठे परम प्रसन्न कृपाला। कहत अनुज सन कथा रसाला
बिरहवन्त भगवन्तहिं देखी। नारद मन भा सोच बिसेखी.
मोर शाप कर अङ्गीकारा। सहत राम नाना दुख भारा
ऐसे प्रभुहिं बिलोकौं जाई। पुनि न बनिहि अस अवसर आई
यह बिचारि नारद कर बीना। गये जहाँ प्रभु सुख आसीना
गावत राम चरित मृदु बानी। प्रेम सहित बहु भाँति बखानी
करत दण्डवत लिये उठाई। राखे बहुत बार उर लाई
स्वागत पूँछि निकट बैठारे। लक्ष्मण सादर चरण पखारे
दो० नाना बिधि बिनती करि प्रभु प्रसन्न जिय जानि।
नारद बोले बचन तब जोरि सरोरुह पानि ३९
सुनहु उदार परम रघुनायक। सुन्दर अगम सुगम बरदायक
देहु एक वर माँगौं स्वामी। यद्यपि जानत अन्तरयामी
जानहु मुनि तुम मोर सुभाऊ। जन सन कबहुँ कि करौं दुराऊ
कबनि बस्तु असि प्रिय मोहिं लागी। जो मुनिवर न सकहु तुम माँगी
जन कहँ कछु अदेय नहिं मोरे। अस बिस्वास तजहु जनि भोरे
तब नारद बोले हरषाई। अस बर माँगौं करौं ढिठाई.

यद्यपि प्रभु के नाम अनेका। श्रुति कह अधिक एक ते एका।
राम सकल नामन ते अधिका। होउ नाथ अघ खग गण बधिका।
दो० राका रजनी भक्ति तव राम नाम सोइ सोम।
अपर नाम उडुगण विमल बसहु भक्त उर व्योम॥
एवमस्तु मुनि सन कहेउ कृपासिन्धु रघुनाथ।
तब नारद मन हरष अति प्रभु पद नायउ माथ ४०
अति प्रसन्न रघुनाथहि जानी। पुनि नारद बोले मृदु बानी।
राम जबहिं प्रेरेहु निज माया। मोहहु मोहिं सुनहु रघुराया।
तब बिवाह मैं चाहौं कीन्हा। प्रभु केहि कारण करै न दीन्हा।
सुनु मुनि तोहिं कहौं सह रोसा। भजहिं जे मोहिं तजि सकल भरोसा।
करौं सदा तिन्ह कै रखवारी। जिमि बालकहिं राखु महतारी।
गह शिशु बच्छ अनल अहि धाई। तहँ राखै जननी अरगाई।
प्रौढ़ भये तेहि सुत पर माता। प्रीति करै नहिं पाछिल बाता।
मोरे प्रौढ़ तनय सम ज्ञानी। बालक सुत सम दास अमानी।
जिनहिं मोर बल निज बल ताही। दुहुँ कह काम क्रोध रिपु आही।
यह विचारि पंडित मोहिं भजहीं। पायहु ज्ञान भक्ति नहिं तजहीं।
दो० काम क्रोध लोभादि मद प्रबल मोह कै धारि।

तिन्ह महँ अति दारुण दुखद माया रूपी नारि ४१

सुनु मुनि कह पुराण श्रुति सन्ता। मोह बिपिन कहँ नारि बसन्ता
जप तप नेम जलाशय झारी। होइ ग्रीष्म सोखै सब नारी
काम क्रोध मद मत्सर भेका। इन्हहि हरष प्रद बरषा एका
दुर्बासना कुमुद समुदाई। तिन्ह कहँ सरद सदा सुखदाई
धर्म सकल सरसीरुह बृन्दा। होइहि तिन्हहि देति दुख मन्दा
पुनि ममता जवास बहुताई। पलुहै नारि शिशिर ऋतु पाई
पाप उलूक निकर सुखकारी। नारि निबिड़ रजनी अँधियारी
बुधि बल शील सत्य सब मीना। बनसी सम त्रिय कहहिं प्रबीना

दो० अवगुण मूल शूल प्रद प्रमदा सब दुख खानि।
ताते कीन्ह निवारण मुनि मैं यह जिय जानि ४२

सुनि रघुपति के वचन सुहाये। मुनि तनु पुलक नयन भरि आये
कहहु कवन प्रभु कै असरीती। सेवक पर ममता अरु प्रीती
जेन भजहिं अस प्रभु भ्रम त्यागी। ज्ञान रङ्क नर मन्द अभागी
पुनि सादर बोले मुनि नारद। सुनहु राम बिज्ञान बिशारद
सन्तन के लक्षण रघुबीरा। कहहु नाथ भञ्जन भव भीरा
सुनु मुनि संतन के गुण कहहूं। जिन्ह ते मैं उन के बश रहहूं।

षटविकारतजिअनघअकामा। अचलअकिञ्चनशुचिसुखधामा
अमितबोध परमारथ भोगी। सत्यसारकविकोविद योगी
सावधान मानद मद हीना। धीर धर्म्म गति परम प्रवीना
दो० गुणागार संसार दुख रहित विगत सन्देह।
तजि मम चरण सरोज प्रिय तिन कहँ देह न गेह ४३
निजगुणश्रवण सुनत सकुचाहीं। परगुण सुनत अधिक हरषाहीं
समशीतल नहिं त्यागहिं नीती। सरल स्वभाव सबहिं मन प्रीती
जप तप ब्रत दम संयम नेमा। गुरु गोविन्द विप्र पद प्रेमा
श्रद्धा क्षमा मयत्री दाया। मुदिता मम पद प्रीति अमाया
विरति विवेक विनय विज्ञाना। बोध यथारथ वेद पुराना
दम्भमान मद करहिं न काऊ। भूलि न देहिं कुमारग पाऊ
गावहिं सुनहिं सदा मम लीला। हेतु रहित परहित रत शीला
मुनि सुनु साधुन्ह के गुण जेते। कहि न सकहिं शारद श्रुति तेते
छं० कहि सक न शारद शेष नारद सुनत पद पङ्कज गहे।
अस दीनबन्धु कृपालु अपने भक्त गुण निज मुख कहे॥
शिर नाइ बारहिं बार चरणन्हि ब्रह्मपुर नारद गये।
ते धन्य तुलसीदास आश बिहाइ जे हरि रँग रये २१

दो० रावणारियश पावन गावहिं सुनहिं जे लोग।
रामभक्ति दृढ़ पावहीं बिनु बिराग जप योग॥
दीप सिखा सम युवति जन मन जनि होसि पतंग
भजहिं राम तजि काम मद करहिं सदा सतसंग४४

श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने विमलवैराग्यसम्पादनोनामतृतीयस्सोपानःसमाप्तः शुभम्॥

इति.

रामायण गीतावली मूल तुलसीकृत छापा टैप.

अनेक रागों में सुन्दरकाण्ड चरित्रादि सम्पूर्ण लीला युक्त रामायण सातों काण्ड का आशय वर्णित है.

तथा. गीतावली सटीक बैजनाथजी छा. टै.

सातो काण्ड रामायण की सम्पूर्ण कथा अनेक उत्तम २ रागों में वर्णित है बैजनाथ जी ने हरि भक्तों व मज्जनों के सरलता हेतु उत्तम रीति से ब्रजभाषा में टीका किया है.

रामायण दोहावली तुलसीदास जी मूल छापा टैप.

जिसमें ज्ञान भक्ति वैराग्य मिश्रित दोहे हैं और विशेष कर संतोष की शिक्षा प्रधान है.

विजय दोहावली तु. दा. जी छापा टैप.

श्री गोसाईं तुलसीदास जी ने अपनी तुलसीकृत रामायण के कठिन और गूढ़ार्थ दोहे चौपाई सोरठे आदि के भाव यथार्थ प्रकट करने के निमित्त छन्दों में प्रकाशित किया.

रामायण छन्दावली मू. तु. कृ. छापा टैप.

श्री रविकुल कैरव चन्द्र कौशल्या हृदयानन्द वर्द्धन का परमोत्तम चरित्र बालकाण्ड से उत्तरकाण्ड पर्य्यन्त मनोहर चौपय्या छन्द में वर्णित है.

तथा. मय तिलक बैजनाथजी छापा टैप.

जिसको श्री बैजनाथ जी ने कठिन २ स्थलों के गूढ़ २ शब्दों का आशय प्रत्येक पुराण शास्त्रादिकों के प्रमाण देकर ऐसा सरल कर दिया है जिसे सब सहज में समझ सक्ते हैं.

छप्पै रामायण मूल तुलसीकृत छापा टैप.

सातों काण्ड रामायण की कथा अति रुचिर छप्पै छन्दों में अतीव सरल पदों से वर्णन की गई है.

तथा. मय टीका बैजनाथ जी छापा टैप.

जिसको बैजनाथ जी ने कठिन २ स्थलों के गूढ़ २ शब्दों का आशय प्रत्येक पुराण शास्त्रादिकों के प्रमाण देकर ऐसा सरल कर दिया है जिसे सब सहज में समझ सक्ते हैं.

विनय पत्रिका मूल तुलसीदास जी कृत छापा टैप.

गोसाईं तुलसीदास जी ने श्री रामचन्द्र परब्रह्म परमेश्वर और जानकी महारानी के विनय युक्त भजन राग आदि में वर्णन किये हैं.

तथा. मय टीका बाबू शिवप्रकाश जी छापा टैप.

जिसमें भक्त भयहारी - अवध बिहारी - दीनहितकारी - रावणान्तकर्त्ता - विभीषणादि भयहर्त्ता श्री रामचन्द्र महाराजाधिराज प्रति विनय अति सुललित भजनों में निर्मित है.

तथा. मय टीका बैजनाथ जी छापा टैप.

जिसको बैजनाथ जी ने प्रति पद प्रति [illegible] अनेक शास्त्र, पुराण, स्मृति, उपनिषदादि

दृष्टान्त देकर सरल भाषा में निर्मित किया है -

तुलसी सतसयी मूल तुलसीकृत दोषादेष.

जिस में नानाप्रकार के नीति शास्त्रग्रन्थों से छाँटकर सात सौ अत्यंत रमणीय दोहों में नीति वर्णन कीगई है.

तथा.मयटीका कामताशरणजीका.दै.

जिसको श्री ६ मत् कृपासागर सकल गुरा आगर श्री स्वामी युगलानन्य शरणाजीके किङ्कर लालकिङ्कर श्री पण्डित रामकान्ता शरणा जी ने उत्तम रीति से वार्तिक भाषा टीका किया है.

तथा.मयटीकाबैजनाथजीका.दैप.

जिस में नाना प्रकार के नीति शास्त्र ग्रन्थों से छाँटकर अतीव मनोहर सात सौ दोहों में धर्म-नीति वर्णित है.

भगवद्गीता नवलभाष्यका विज्ञापन.

प्रकट हो कि यह पुस्तक श्री मद्भगवद्गीता सकल निगम पुराण स्मृति सांख्यादि सारभूत परम-रहस्य गीताशास्त्र का सर्व्व विद्यानिधान सौशील्य विनयौदार्य्य सत्यसंगर शौर्य्यादि गुरा सम्पन्न भगवतार महानुभाव अर्जुन को परम अधिकारी जान के हृदय जनित मोहनाशार्थ सब प्रकार अपार संसार निस्तारक भगवद्भक्ति मार्ग दृष्टिगोचर कराया है वही उक्त भगवद्गीता ब्रह्मवत् वेदान्त व योगशास्त्रान्तर्गत जिसको अच्छे २ शास्त्रवेत्ता अपनी बुद्धि से पार नहीं पा सक्ते तब मन्दबुद्धी जिन को कि केवल देश भाषा ही पठन पाठन करने की सामर्थ्य है वह कब इसके अन्तराभिप्राय को जान सक्ते हैं-और यह प्रत्यक्षही है कि जब तक किसी पुस्तक अथवा किसी वस्तु का अन्तराभिप्राय-अच्छे प्रकार बुद्धि में न भासित हो तब तक आनन्द क्योंकर मिले इस प्रकार सम्पूर्ण भारतनिवासी श्री मद्भगवत्पदाब्जरसिकजनों के चित्तानन्दार्थ व बुद्धिबोधार्थ सन्ततधर्म्म धुरीरा सकलकला चातुरीरा सर्व्वविद्या विलासी भगवद्भक्त्यनुरागी श्रीमान् मुन्शी नवलकिशोर जी (सी.आई.ई.) ने बहुत साधन व्ययकर फ़र्रुखाबाद निवासि पण्डित उमादत्त जी से इस मनोरञ्जन वेद वेदान्त शास्त्रोपरि पुस्तक को श्रीशंकराचार्य्य निर्मित भाष्यानुसार संस्कृत से सरल देश भाषा में तिलक स्वाय नवल भाष्य आख्य से प्रभात कालिक कमल सदृश प्रफुल्लित करादिया है कि जिसको भाषा मात्र के जाननेवाले पुरुष भी जान सक्ते हैं ॥

रामायण

किष्किन्धाकाण्ड

मोटे अक्षरों में हरएक भक्तजन

के अनुराग और सुगमता से

पाठ करने के हेतु

प्रथमवार

कानपुर

मुंशी नवलकिशोर की आई. ई. के छापेखाने में छपी.

अप्रैल सन् १८९४ ई०

विज्ञापन.

यह विशालदरशी मोटे अक्षरों की रामायण प्रथमबार छापी गई है अभी तक ऐसी रामायण हिन्दुस्तान में नहीं छपी कि जिस के दर्शन से आप लोग प्रसन्नहो ते अब परमेश्वर की कृपा से हमारे कारख़ाने में छपी है और हम इस की प्रशंसा नहीं कर सक्ते जब आप लोग ख़ुद इस रामायण को अवलोकन करेंगे तब आप प्रसन्नता को प्राप्त होंगे- और यह रामायण अलग २ काराड भी मिल सक्ती है. फ़क़त

नवलकिशोर.

मालिक मतबा नवलकिशोर प्रेसकानपूर व लखनऊ

नीचे लिखी हुई रामायण हर क़िस्म की छापाख़ाना नवलकिशोर कानपूरव लखनऊ में ख़रीदारों को मिल सक्ती हैं.

रामायण तु·रू·सटीक रामचररणदास किताबनुमा व पत्रानुमा छा·टैप सा·कां.

जिसको श्री रामचररण जीने भक्तजनों के उपकार और जगत कल्याण के लिये वेद की ऋचाओं व अनेक प्रमाणिक श्लोकों से भूषित कर पद २ का भाषा टीका किया है.

रामायण तुलसीकृत मूल मोटाअक्षरमय तसवीर छापाटैप.

क्षेपक वमाहात्म्य सहित-रावण विजय व श्री गंगा जी-अहिरावण नारान्तक रामदल संख्या सुलोचना कथा श्री रामायण व सप्तदेव स्तुति भिन्न २ क्षेपक की रीति से संयुक्त है.

तथा-सुतवस्सित क़लम मय तसवीर छापा टैप ऊपर के अलङ्करों सहित.

रामायण तु·रू·सटीक सुखदेवलाल किताबनुमा व पत्रानुमा छापाटैप.

जिसको सुखदेवलाल जी ने जगत कल्याण के अर्थ भाषा टीका रचकर प्रमाणिक श्लोकों से भूषित किया और पद पदार्थ के अर्थ को अति स्पष्ट रीति से सलिल देश भाषा में बखाना है.

रामायण तु·रू· सटीक बैजनाथ जी छापा टैप.

जिसको बैजनाथ जी ने कठिन २ स्थलों के गूढ़ शब्दों का आशय प्रत्येक पुराण शास्त्र उपनिषद वेदादि के श्लोक ऋचा सूत्रादिकों के दृष्टान्त देकर ऐसा सरल कर दिया है जिसे सब सहज में समझ सक्ते है और अवलोकन करने के योग्य है.

रामायण कवित्तावली मूलतु·छापाटैप.

जिसमें सम्पूर्ण आशय रामायण का उक्त कविने अति रुचिर छन्दों में वर्णन किया है.

तथा. मयटीका बैजनाथजी सटीक.

जिसमें श्री महाराज राज राजेन्द्र रामचन्द्र जी का समस्त जीवन चरित्र सातकाराडों में अत्युत्तम कवित्तों में वर्णित है.

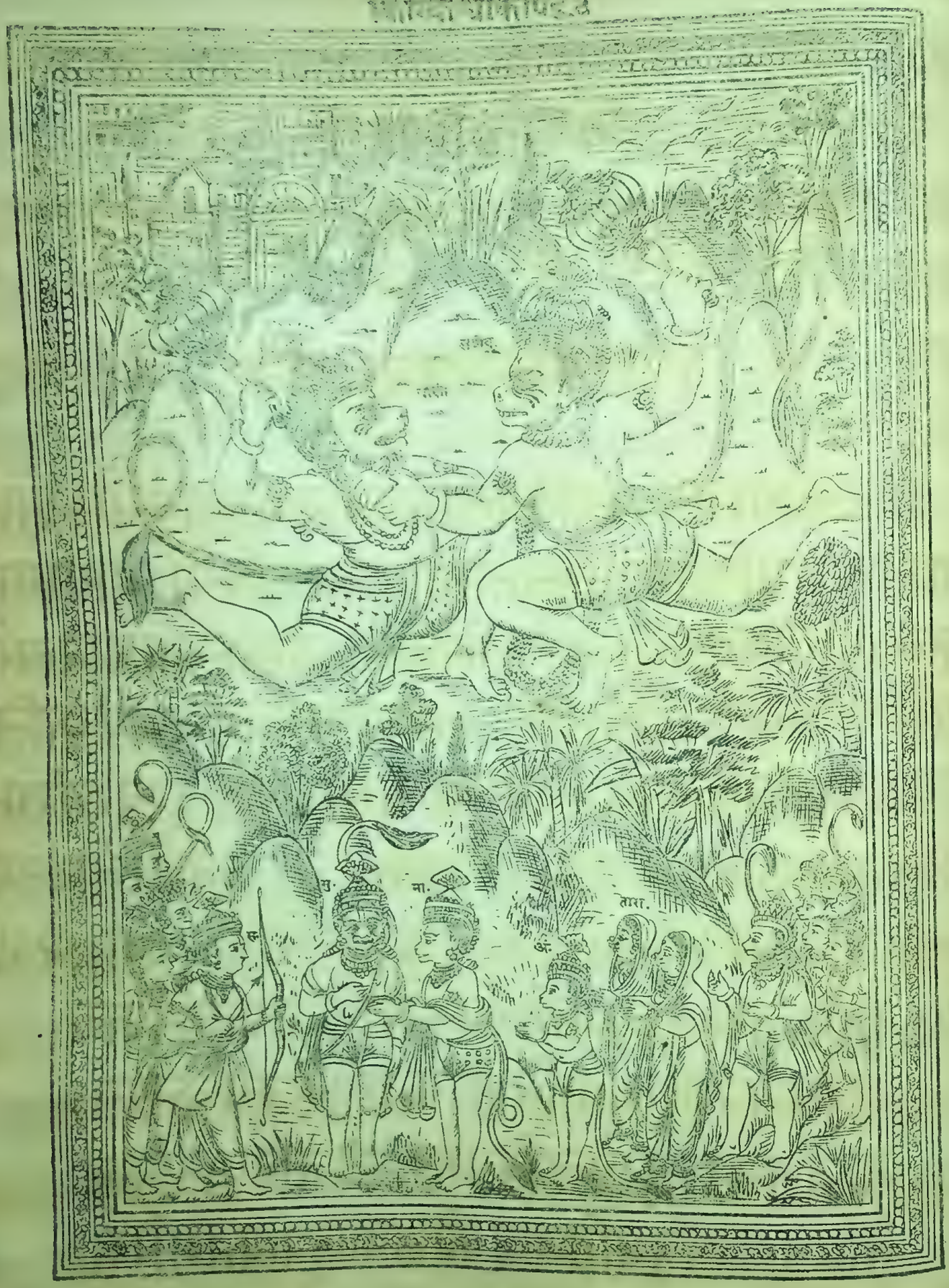
सु.
रा.
तारा.
अं.

श्रीगणेशायनमः

श्रीरामायणतुलसीकृत

किष्किन्धाकाण्ड

कुन्देन्दीवरसुन्दरावतिबलौ विज्ञानधामावुभौ। शो-
भाढ्योवरधन्विनौश्रुतिनुतौगोविप्रवृन्दप्रियौ। माया-
नुषरूपिणौरघुवरौसद्धर्मवन्तौहितौ। सीतान्वेषणतत्परौ
पथिगतौभक्तिप्रदौतौहिनः १ ब्रह्माम्भोधिसमुद्भवंकलि
मलप्रध्वंसनंचाव्ययं। श्रीमच्छम्भुमुखेन्दुसुन्दरवरेसंशो-
भितंसर्वदा। संसारामयभेषजंसुमधुरंश्रीजानकीजीवनम्
धन्यास्तेकृतिनःपिवन्तिसततंश्रीरामनामामृतम्॥२॥

सो० मुक्तिजन्मभहिजानि ज्ञानखानिअघहानिकर।
जहँबसशम्भुभवानि सो काशीसेइय कसन॥
जरतसकलसुरवृन्द विषम गरलजेहिपानकिय।
तेहिन भजसिमतिमन्द कोकृपालुशंकरसरिस१

आगे चले बहुरि रघुराया। ऋष्य मूक पर्वत नियराया
तहँ रह सचिव सहित सुग्रीवा। आवत देखि अतुल बल सींवा
अति सभीत कह सुनु हनुमाना। पुरुष युगुल बल रूप निधाना
धरि बटु रूप देखु तैं जाई। कहेसु मोहिं जिय सैन बुझाई
पठवा बालि होइ मन मैला। भागौं तुरत तजौं यह शैला
विप्र रूप धरि कपि तहँ गयऊ। माथ नाइ पूँछत अस भयऊ
को तुम श्यामल गौर शरीरा। क्षत्रिय रूप फिरहु बन बीरा
कठिन भूमि कोमल पद गामी। कवन हेतु बिचरहु बन स्वामी
मृदुल मनोहर सुन्दर गाता। सहत दुसह बन आतप बाता
कै तुम तीनि देव महँ कोऊ। नर नारायण कै तुम दोऊ

दो० जग कारण तारण भव भंजन धरणी भार।
कै तुम अखिल भुवनपति लीन्ह मनुज अवतार१

सुनि बोले रघुबंश कुमारा। विधिकर लिखा को मेटनहारा
कोशलेश दशरथ के जाये। हम पितु वचन मानि बन आये
नाम राम लक्ष्मण दोउ भाई। संग नारि सुकुमारि सुहाई
इहाँ हरी निशचर वैदेही। विप्र फिरहिं हम खोजत तेही
आपन चरित कहा हम गाई। कहहु विप्र निज कथा बुझाई

प्रभु पहिचानि परेउ गहि चरणा। सो सुख उमा जाइ नहिं बरणा
पुलकित तनु मुख आव न बचना। देखत रुचिर वेष कै रचना
पुनि धीरजधरि अस्तुति कीन्हा। हरष हृदय निज नाथहि चीन्हा
मैं अजान हौं पूँछा साईं। तुम पूँछहु कस नर की नाईं
तव माया बश फिरौं भुलाना। ताते मैं नहिं प्रभु पहिचाना

दो० एक मन्द मैं मोह बश कीश हृदय अज्ञान।
पुनि प्रभु मोहिं बिसारेउ दीन बन्धु भगवान २

यद्यपि नाथ बहु अवगुण मोरे। सेवक प्रभुहि परै जनि भोरे
नाथ जीव तव माया मोहा। सो निस्तरै तुम्हारहि छोहा
तापर मैं रघुबीर दुहाई। जानौं नहिं कछु भजन उपाई
सेवक सुत पितु मातु भरोसे। रहैं अशोच बनै प्रभु पोसे
अस कहि परेउ चरण अकुलाई। निज तनु प्रगट प्रीति उर छाई
तब रघुपति उठाय उर लावा। निज लोचन जल सींचि जुड़ावा
सुनु कपि जिय मानसि जनि ऊना। तैं मम प्रिय लक्ष्मण ते दूना
समदरशी मोहिं कह सब कोऊ। सेवक प्रिय अनन्य गति सोऊ

दो० सो अनन्य अस जाहि के मति न टरै हनुमन्त।
मैं सेवक सचराचर रूप राशि भगवन्त ३

देखि पवनसुत पति अनुकूला। हृदय हरष बीते सब शूला
नाथ शैल पर कपिपति रहई। सो सुग्रीव दास तव अहई
तेहि सन नाथ मित्रता कीजे। दीन जानि तेहि अभय करीजे
सो सीता कर खोज कराइहि। जहँ तहँ मरकट कोटि पठाइहि
यहि बिधि सकल कथा समुझाई। लिये दोउ जन पीठ चढ़ाई
जब सुग्रीव राम कहँ देखा। अतिशय जन्म धन्य करि लेखा
सादर मिलेउ नाइ पद माथा। भेंटेउ अनुज सहित रघुनाथा
कपि के मन बिचार यह रीती। करिहहिं बिधि मोसन ये प्रीती
दो॰ तब हनुमन्त उभय दिशि कहि सब कथा सुनाइ।
पावक साखी देइ कै जोरी प्रीति दृढ़ाइ ४
कीन्हि प्रीति कछु बीच न राखा। लक्ष्मण राम चरित सब भाखा
कह सुग्रीव नयन भरि बारी। मिलिहि नाथ मिथिलेशकुमारी
मंत्रिन्ह सहित इहाँ एक बारा। बैठ रहेउँ मैं करत बिचारा
गगन पन्थ देखी मैं जाता। परबश परी बहुत बिलखाता
राम राम हा राम पुकारी। हमहिं देखि दीन्हेउ पटडारी
माँगा राम तुरत तेहि दीन्हा। पटउर लाइ शोच अति कीन्हा
कह सुग्रीव सुनहु रघुबीरा। तजहु शोच मन आनहु धीरा

सब प्रकार करिहौं सेवकाई। जेहिबिधि मिलिहि जानकी आई
दो० सखावचन सुनिहरषे कृपासिन्धु बल सीव।
कारण कवन बसहु बन मोहिं कहहु सुग्रीव ५
नाथ बालि अरु मैं दोउ भाई। प्रीति रही कछु बरणि न जाई
मयसुत मायावी तेहि नाऊं। आवा सो प्रभु हमरे गाऊं
अर्द्धराति पुर द्वार पुकारा। बाली रिपुबल सहै न पारा
धावा बालि देखि सो भागा। मैं पुनि गयउं बन्धु सँग लागा
गिरिवर गुहा पैठ सो जाई। तबहिं बालि मोहिं कहा बुझाई
परखेउ मोहिं एक पखवारा। नहिं आवौं तौ जानेउ मारा
मास दिवस तहँ रहेउं खरारी। निसरी रुधिर धार तहँ भारी
तब मैं निज मन कीन्ह बिचारा। जाना असुर बन्धु कहँ मारा
बालिहनेसि मोहिं मारिहि आई। शिला द्वार दै चलेउं पराई
मंत्रिन्ह पुर देखा बिनु साँई। दीन्हेउ मोहिं राज्य बरिआई
बाली ताहि मारि गृह आवा। देखि मोहिं जिय भेद बढ़ावा
रिपुसम मोहिं मारेसि अति भारी। हरि लीन्हेसि सर्वस अरु नारी
ताके भय रघुबीर कृपाला। सकल भुवन मैं फिरेउं बिहाला
इहाँ शाप बश आवत नाहीं। तदपि सभीत रहौं मन माहीं

सुनि सेवक दुख दीनदयाला। फरकि उठे दोउ भुजा विशाला
दो॰ सुनु सुग्रीव मैं मारिहौं बालिहि एकहि बारा।
ब्रह्म रुद्र शरणागतहु गये न उबरहि प्राणा ६
जेन मित्र दुख होहिं दुखारी। तिन्हैं विलोकत पातक भारी
निजदुख गिरिसम रज करिजाना। मित्र केदुखरज मेरु समाना.
जिनके असि मति सहज न आई। ते शठ कत हठि करत मिताई
कुपथ निवारि सुपन्थ चलावा। गुण प्रगटै अवगुणहि दुरावा
देत लेत मन शंक न धरई। बल अनुमान सदाहित करई
विपतिकाल कर सतगुणनेहा। श्रुति कह सत्य मित्र गुण येहा
आगे कह मृदु वचन बनाई। पाछे अनहित मन कुटिलाई
जाकर चित अहिगति सम भाई। अस कुमित्र परिहरे भलाई.
सेवक शठ नृप कृपण कुनारी। कपटी मित्र शूल सम चारी
सखा शोच त्यागहु बल मोरे। सब बिधि करब काज मैं तोरे
कह सुग्रीव सुनौं रघुबीरा। बालि महा बल अति रण धीरा
दुन्दुभि अस्थि ताल दिखराये। बिन प्रयास रघुनाथ ढहाये
देखि अमित बल बाढ़ी प्रीती। बालि बधन कर भइ परतीती
बारहि बार नाय पद शीशा। प्रभुहिं जानि मन हर्ष कपीशा

उपजा ज्ञान वचन तब बोला। नाथकृपामन भयउ अडोला.
सुख सम्पति परिवार बड़ाई। सब परिहरि करिहौं सेवकाई
ये सब राम भक्ति के बाधक। कहहिं सन्त तव पद अवराधक
शत्रु मित्र दुख सुख जग माहीं। माया कृत परमारथ नाहीं
बालि परमहित जासु प्रसादा। मिलेहु रामतुम शमन विषादा
सपने जेहि सन होइ लराई। जागे समुझत मन सकुचाई
अब प्रभुकृपा करहु इहि भाँती। सब तजि भजन करौं दिन राती
सुनि विराग संयुत कपि बानी। बोले बिहँसि राम धनुपानी
जो कछु कहेउ सत्य सब सोई। सखा वचन मम मृषा न होई
नट मरकट इव सबहि नचावत। राम खगेश वेद अस गावत.
लै सुग्रीव संग रघुनाथा। चले चापशायक गहि हाथा
तब रघुपति सुग्रीव पठावा। गर्जेसि जाइ निकट बलपावा
सुनत बालि क्रोधातुर धावा। गहिकर चरण नारि समुझावा
सुनपति जिनहिं मिला सुग्रीवा। ते दोउ बन्धु तेज बल सींवा
कोशलेश सुत लक्ष्मण रामा। कालहु जीति सकहिं संग्रामा
सोइ रघुबीर हृदय महँ आनहु। छाँड़हु मोह कहा मम मानहु
दो० कहा बालि सुनु भीरु प्रिय सम दरशी रघुनाथ।

जो कदापि मोहिं मारिहैं तौ पुनि होब सनाथ७

असकहि चला महा अभिमानी। तृण समान सुग्रीवहि जानी.
बालि देखि सुग्रीवहिं डाढ़ा। हृदय क्रोध पुनि बहु बिधि बाढ़ा
भिरेउ उभय बाली अति तर्जा। मुष्टिक मारि महा धुनि गर्जा
तब सुग्रीव विकल होइ भागा। मुष्टि प्रहार बज्र सम लागा
मैं जो कहा रघुबीर कृपाला। बन्धु न होय मोर यह काला
एक रूप तुम भ्राता दोऊ। तेहि भ्रम ते नहिं मारेउँ सोऊ
कर परसा सुग्रीव शरीरा। तनभा कुलिश गई सब पीरा
मेली कराठ सुमन की माला। पठवा पुनि बल देइ विशाला
पुनि नाना बिधि भई लराई। बिटप ओट देखहिं रघुराई

दो॰ बहु छल बल सुग्रीव करि हृदय हारि भय मानि।
मारा बालिहि राम तब हिये माँझ शर तानि ८

परा विकल महि शर के लागे। पुनि उठि बैठ देखि प्रभु आगे
श्याम गात शिर जटा बनाये। अरुण नयन शर चाप चढ़ाये
पुनि पुनि चितै चरण चित दीन्हे। सुफल जन्म माना प्रभु चीन्हे.
हृदय प्रीति मुख वचन कठोरा। बोला चितै राम की ओरा
धर्म्म हेतु अवतरेहु गुसाईं। मारेहु मोहिं ब्याध की नाईं

मैं बैरी सुग्रीव पियारा। कारण कवन नाथ मोहि मारा॥
अनुज बधू भगिनी सुत नारी। सुनु शठ ये कन्या सम चारी॥
इन्हहिं कुदृष्टि बिलोके जोई। ताहि बधे कछु पाप न होई॥
मूढ़ तोहि अतिशय अभिमाना। नारि सिखावन करसि न काना॥
मम भुज बल आश्रित तेहि जानी। मारा चहसि अधम अभिमानी॥

दो० सुनहु राम स्वामी सुभग चलन चातुरी मोरि।
प्रभु अजहूं मैं पातकी अन्तकाल गति तोरि॥

सुनत राम अति कोमल बानी। बालि शीश परसेउ निज पानी॥
अचल करौं तनु राखहु प्राना। बालि कहा सुनु कृपा निधाना॥
जन्म जन्म मुनि यतन कराहीं। अन्त राम कहि आवत नाहीं॥
जासु नाम बल शंकर काशी। देत सबहिं सम गति अविनाशी॥
मम लोचन गोचर सोइ आवा। बहुरि कि प्रभु अस बनिहि बनावा॥

छं० सो नयन गोचर जासु गुन नित नेति कहि श्रुति गावहीं।
जिति पवन मन गो निरस करि मुनि ध्यान कबहुक पावहीं॥
मोहि जानि अति अभिमान बश प्रभु कहेउ राखु शरीरहीं।
अस कवन शठ हठि काटि सुरतरु बारि करिहि बबूरहीं॥
अब नाथ करि करुना बिलोकहु देहु जो बर माँगऊं।

जेहि योनि जन्मौं कर्म्म बश तहँ राम पद अनुरागऊं॥
यह तनय मम सम विनय बल कल्याण प्रद प्रभु दीजिये।
गहि बाँह सुर नर नाह अंगद दास आपन कीजिये.१

दो० राम चरण दृढ़ प्रीति करि बालि कीन्ह तनु त्याग
सुमन माल जिमि कण्ठ ते गिरत न जानै नाग १०

राम बालि निज धाम पठावा। नगर लोग सब व्याकुल धावा.
नाना बिधि बिलाप करतारा। छूटे केश न देह सँभारा
पुनि पुनि तासु शीश उर धरई। बदन विलोकि हृदय महँ हतई
मैं पति तुमहिं बहुत समुझावा। काल विवश पिय मनहिं न आवा
अंगद कहँ कछु कहन न पायहु। बीचहिं सुर पुर प्राण पठायहु
तारा बिकल देखि रघुराया। दीन्ह ज्ञान हरि लीन्ही माया
क्षिति जल पावक गगन समीरा। पञ्च रचित अति अधम शरीरा
प्रकट सो तनु तव आगे सोवा। जीव नित्य केहि लगि तुम रोवा
उपजा ज्ञान चरण तब लागी। लीन्हेसि परम भक्ति वर माँगी
उमा दारु योषित की नाईं। सबहिं नचावत राम गुसाँई
तब सुग्रीवहि आयसु दीन्हा। मृतक कर्म्म विधिवत सब कीन्हा
राम कहा अनुजहिं समुझाई। राज्य देहु सुग्रीवहि जाई.

रघुपति चरण नाइ करि माथा। चले सकल प्रेरित रघुनाथा
दो० लक्ष्मण तुरत बुलाये पुरजन विप्र समाज।
राज्य दीन्ह सुग्रीव कहँ अंगद कहँ युवराज ११
उमा राम सम हित जग माहीं। गुरु पितु मातु बन्धु प्रभु नाहीं
सुर नर मुनि सब की यह रीती। स्वारथ लागि करहिं सब प्रीती
बालि त्रास व्याकुल दिन राती। तनु बिबरण चिन्ता जरु छाती
सोइ सुग्रीव कीन्ह कपि राऊ। अति कृपालु रघुबीर सुभाऊ
जानतहूं अस प्रभु परिहरहीं। काहे न बिपति जाल नर परहीं
पुनि सुग्रीवहिं लीन्ह बुलाई। बहु प्रकार नृप नीति सिखाई
कह प्रभु सुनु सुग्रीव हरीसा। पुर न जाउँ दस चारि बरीसा
गत ग्रीषम बरषा ऋतु आई। रहिहौं निकट सैल पर छाई
अंगद सहित करहु तुम राजू। सन्तत हृदय धरहु मम काजू
तब सुग्रीव भवन फिरि आये। राम प्रबर्षण गिरि पर छाये
दो० प्रथमहिं देवन गिरि गुहा राखी रुचिर बनाइ।
राम कृपा निधि कछुक दिन बास करहिंगे आइ १२
सुन्दर बन कुसुमित तरु सोभा। गुंजत चञ्चरीक मधु लोभा
कन्द मूल फल पत्र सुहाये। भये बहुत जब ते प्रभु आये

देखि मनोहर शैल अनूपा। रहे तहँ अनुज सहित सुरभूपा
मंगल रूप भयउ बन तब ते। कीन्ह निवास रमापति जब ते
मधुकर खग मृग तनु धरि देवा। करहिं सिद्ध मुनि प्रभु की सेवा
फटिक शिला अति शुभ्र सुहाई। सुख आसीन तहाँ दोउ भाई
कहत अनुज सन कथा अनेका। भक्ति विरति नृप नीति विवेका
बरषा काल मेघ नभ छाये। गरजत लागत परम सुहाये.

दो० लक्ष्मण देखहु मोर गण नाचत वारिद पेखि।
गृही विरति रत हरष जस विष्णु भक्त कहँ देखि १३

घन घमण्ड नभ गरजत घोरा। प्रिया हीन डरपत मन मोरा
दामिनि दमकि रहत घन माहीं। खल की प्रीति यथा थिर नाहीं
बरषहिं जलद भूमि नियराये। यथा नवहिं बुध विद्या पाये
बुन्द अघात सहैं गिरि कैसे। खल के बचन सन्त सहैं जैसे.
क्षुद्र नदी भरि चलि उतराई। जस थोरेहु धन खल इतराई
भूमि परत भा ढाबर पानी। जनु जीवहिं माया लपटानी
सिमिटि सिमिटि जल भरहिं तलावा। जिमि सदगुण सज्जन पहँ आवा
सरिता जल जलनिधि महँ जाई। होइ अचल जिमि जिव हरि पाई

दो० हरित भूमि तृण संकुल समुझि परै नहिं पन्थ।

जिमि पाखण्ड बिबाद ते गुप्त होहिं सदग्रन्थ १४

दादुर धुनि चहुँ ओर सुहाई। वेद पढ़ैं जनु बटु समुदाई
नव पल्लव भे बिटप अनेका। साधक मन जस मिलें बिबेका
अर्क जवास पात बिन भयऊ। जस सुराज खल उद्यम गयऊ
खोजत पन्थ मिलै नहिं धूरी। करै क्रोध जिमि धर्म्महिं दूरी
ससि सम्पन्न सोह महि कैसी। उपकारी की सम्पति जैसी.
निसि तम घन खद्योत बिराजा। जनु दम्भिन कर जुरा समाजा
महावृष्टि चलि फूटि कियारी। जिमि स्वतन्त्र होइ बिगरहिं नारी
कृषी निरावहिं चतुर किसाना। जिमि बुध तजहिं मोह मद माना
देखिय चक्रवाक खग नाहीं। कलिहि पाइ जिमि धर्म्म पराहीं
ऊसर बरषे तृण नहिं जामा। जिमि हरिजन हिय उपजे नकामा
बिबिध जन्तु संकुल महि भ्राजा। प्रजा बाढ़ जिमि पाइ सुराजा
जहँ तहँ रहे पथिक थकि नाना। जिमि इन्द्रिय गन उपजे ज्ञाना

दो० कबहुँ प्रबल चल मारुत जहँ तहँ मेघ बिलाहिं
जिमि कपूत कुल उपजे सम्पति धर्म्म नशाहिं॥
कबहुँ दिवस महँ निबिड़ तम कबहुँ कि प्रकट पतंग।
उपजै बिनशै ज्ञान जिमि पाइ सुसंग कुसंग १५

बरषा बिगत शरद ऋतु आई। लक्ष्मण देखहु परम सुहाई
फूले कास सकल महि छाई। जनु बरषा कृत प्रकट बुढ़ाई
उदित अगस्ति पन्थ जल शोषा। जिमि लोभहि शोषै सन्तोषा।
सरिता सर निर्मल जल सोहा। सन्त हृदय जस गत मद मोहा
रस रस सूख सरित सर पानी। ममता त्याग करहिं जिमि ज्ञानी
जानि शरद ऋतु खञ्जन आये। पाइ समय जिमि सुकृत सुहाये
पङ्क न रेणु सोह अस धरणी। नीति निपुण नृप कीजसि करणी
जल संकोच बिकल भये मीना। बिबिध कुटुम्बी जिमि धनहीना
बिनु घन निर्मल सोह अकाशा। जिमि हरिजन परिहरि सब आशा
कहुँ कहुँ वृष्टि शारदी थोरी। कोउयक पाव भक्ति जिमि मोरी
दो॰ चले हरषि तजि नगर नृप तापस बनिक भिखारि।
जिमि हरिभक्ति पाइ जन तजहिं आश्रमी चारि १६.
सुखी मीन जहँ नीर अगाधा। जिमि हरि शरण न एकौ बाधा
फूले कमल सोह सर कैसे। निर्गुण ब्रह्म सगुण भये जैसे
गुञ्जत मधुकर निकर अनूपा। सुन्दर खग रव नाना रूपा
चक्रवाक मन दुख निशि पेखी। जिमि दुर्जन पर सम्पति देखी
चातक रटत तृषा अति ओही। जिमि सुख लहै न शंकर द्रोही

शरदातपनिशिशशिअपहरई। सन्त दरश जिमि पातक टरई
देखहिं विधु चकोर समुदाई। चितवहिं जिमिहरिजनहरिपाई
मशक दंश बीते हिम त्रासा। जिमिद्विजद्रोहकियेकुलनासा
दो० भूमि जीव संकुल रहे गये शरद ऋतु पाइ।
सतगुरुमिलेजाहिं जिमि संशय भ्रम समुदाइ १७
बरषा गत निर्मल ऋतु आई। सुधि न तात सीता की पाई
एक बार कैसेहुँ सुधि जानौं। कालहुजीतिनिमिषमहँआनौं
कतहुँ रहै जो जीवत होई। तात यतन करि आनौं सोई
सुग्रीवहुँ सुधि मोरि बिसारी। पावा राज्य कोश पुर नारी
जेहि शायक मारा मैं बाली। तेहि शर हतौं मूढ़ कहँ काली
जासु कृपा छूटै मद मोहा। ताकहँ उमा कि सपनेहुकोहा
जानहिंयह चरित्र मुनिज्ञानी। जिन्ह रघुवीर चरणारति मानी
लक्ष्मणक्रोधवन्तप्रभुजाना। धनुष चढ़ाइ गहे कर बाना
दो० तब अनुजहि समुझावा रघुपति करुणासींव।
भय दिखाय लै आवहु तात सखा सुग्रीव १८
इहाँ पवनसुत हृदय विचारा। राम काज सुग्रीव बिसारा
निकटजायचरणन्हशिरनावा। चारिहुविधितेहिकहिसमुझावा

सुनि सुग्रीव परम भयमाना। विषय मोर हरि लीन्हेउ ज्ञाना
अब मारुत सुत दूत समूहा। पठवहु जहँ तहँ बानर यूहा
कहहु पारख महँ आवन जोई। मोरे कर ताकर बध होई.
तब हनुमन्त बुलाये दूता। सबकर करि सनमान बहूता
भय अरु प्रीति नीति दिखराई। चले सकल चरनन्हि शिरनाई
तेहि अवसर लक्ष्मण पुर आये। क्रोध देखि जहँ तहँ कपि धाये
दो० धनुष चढ़ाइ कहा तब जारि करौं पुर छार।
व्याकुल नगर देखि तब आयउ बालि कुमार १६
चरण नाइ शिर विनती कीन्हीं। लक्ष्मण अभय बाँह तेहि दीन्हीं
क्रोधवन्त लक्ष्मण सुनि काना। कह कपीश अति भयअकुलाना
तुम हनुमन्त संग लै तारा। करि विनती समुझाउ कुमारा
तारा सहित जाय हनुमाना। चरण वन्दि प्रभु सुयश बखाना
करि बिनती मन्दिर लै आये। चरण पखारि पलँग बैठाये
तब कपीश चरणन्हि शिर नावा। गहि भुज लक्ष्मण कण्ठ लगावा
नाथ विषय सम मद कछु नाहीं। मुनि मन मोह करै क्षण माहीं
सुनत विनीत वचन सुख पावा। लक्ष्मण तेहि बहु विधि समुझावा
पवन तनय सब कथा सुनाई। जेहि विधि गये दूत समुदाई

दो० हरषि चले सुग्रीव तब अंगदादि कपि साथ।
राम अनुज आगे किये आये जहँ रघुनाथ २०

नाइ चरण शिर कह कर जोरी। नाथ मोरि कछु नाहिंन खोरी
अतिशय प्रबल देव तव माया। छूटै तबहिं करहु जब दाया
बिषय बिबश सुर नर मुनि स्वामी। मैं पाँवर पशु कपि अति कामी
नारि नयन शर जाहि न लागा। महा घोर निशि सोवत जागा
लोभ पाश जेहि गर न बँधाया। सो नर तुम समान रघुराया
यह गुण साधन ते नहिं होई। तुम्हरी कृपा पाव कोइ कोई
तब रघुपति बोले मुसुकाई। तुम प्रिय मोहिं भरत जिमि भाई
अब सोइ यतन करहु मन लाई। जेहि बिधि सीता की सुधि पाई

दो० यहि बिधि होत बतकही आये बानर यूथ।
नाना वरण अतुल बल देखिय कीश बरूथ २१

बानर कटक उमा मैं देखा। सो मूरख जो किय चह लेखा
आइ राम पद नावहिं माथा। निरखि बदन सब होहिं सनाथा
अस कपि एक न सेना माहीं। राम कुशल जेहि पूँछी नाहीं
यह कछु नहिं प्रभु कै अधिकाई। विश्व रूप व्यापक रघुराई
ठाढ़े जहँ तहँ आयसु पाई। कह सुग्रीव सबहिं समुझाई

रामकाज अरु मोर निहोरा। बानर यूथ जाहु चहुँ ओरा
जनक सुता कहँ खोजहु जाई। मास दिवस महँ आयहु भाई
अवधि मेटि जो बिन सुधि पाये। अवशि मरिहि सो ममकर आये
दो० वचन सुनत सब बानर जहँ तहँ चले तुरन्त।
तब सुग्रीव बुलाये अंगदादि हनुमन्त २२
सुनहु नील अंगद हनुमाना। जामवन्त मति धीर सुजाना
सकलसुभट मिलिदक्षिणाजाहू। सीता सुधि पूँछेहु सबकाहू
मनक्रमवचनसोयतनबिचारेहु। रामचन्द्र कर काज सँवारेहु
भानु पीठि सेइय उर आगी। स्वामिहि सेइय सबछल त्यागी
तजि माया सेइय परलोका। मिटै सकल भवसम्भव शोका
देह धरे कर यह फल भाई। भजिय राम सब काम बिहाई
सोइ गुणज्ञ सोई बड़ भागी। जो रघुबीर चरण अनुरागी
आयसु माँगि चरण शिरनाई। चले हर्षि सुमिरत रघुराई
पाछे पवन तनय शिर नावा। जानि काज प्रभुनिकट बुलावा
परसा शीश सरोरुह पानी। कर मुद्रिका दीन्ह जन जानी
बहु प्रकार सीतहि समुझायहु। कहिबल बीर बेगि तुम आयहु
हनुमत जनम सुफल करि जाना। चले हृदय धरि कृपानिधाना

यद्यपि प्रभु जानत सब बाता। राज नीति राखत सुर त्राता
दो० चले सकल बन खोजत सरिता सर गिरि खोहा
राम काज लयलीन मन बिसरा तन कर छोह २३
कतहुँ होइ निशिचर सन भेंटा। प्राण लेहिं इक एक चपेटा
बहु प्रकार गिरि कानन हेरहिं। कोउ मुनि मिलेता हि सब घेरहिं
लागि तृषा अतिशय अकुलाने। मिलै न जल घन गहन भुलाने
तब हनुमान कीन्ह अनुमाना। मरण चहत सब बिनु जल पाना
चढ़ि गिरि शिखर चहूं दिशि देखा। भूमि विवर इक कौतुक पेखा
चक्रवाक बक हंस उड़ाहीं। बहुतक खग प्रविशहिं तेहि माहीं
गिरि ते उतरि पवन सुत आवा। सब कहँ लै सो विवर दिखावा
आगे कर हनुमन्तहि लीन्हा। पैठे विवर विलम्ब न कीन्हा
दो० दीख जाइ उपबन सुभग सर विकसे बहु कञ्ज।
मन्दिर एक रुचिर तहँ बैठि नारि तप पुञ्ज २४
दूरहि ते तेहि सब शिर नावा। पूँछेसि सब वृत्तान्त सुनावा
तब तेइँ कहा करहु जल पाना। खाहु सरस सुन्दर फल नाना
मज्जन कीन्ह मधुर फल खाये। तासु निकट पुनि सब चलि आये
तेइँ सब आपनि कथा सुनाई। मैं अब जाब जहां रघुराई।

मूँदहु नयन विवर तजि जाहू। पैहहु सीतहि जनि कदराहू
नयन मूँदि तब देखहिं बीरा। ठाढ़े सकल सिन्धु के तीरा
सो पुनि गई जहां रघुनाथा। जाइ कमल पद नायसि माथा
नाना भाँति विनय तेहि कीन्हीं। अनपायनी भक्ति प्रभु दीन्हीं
दो० बदरीबन कहँ सो गई प्रभु आज्ञा धरि शीश।
उर धरि राम चरण युग जो बन्दित अज ईश २५
इहाँ बिचारहिं कपि मन माहीं। बीती अवधि काज कछु नाहीं
सब मिलि कहहिं परस्पर बाता। बिनु सुधि लिये करब का भ्राता
कह अंगद लोचन भरि बारी। दुहुँ प्रकार भइ मृत्यु हमारी
इहाँ न सुधि सीता करि पाई। उहाँ गये मारहि कपि राई।
पिता बधे पर मारत मोही। राखा राम निहोरा वोही
पुनि पुनि अंगद कह सब पाहीं। मरना भयो कछु संशय नाहीं
अंगद वचन सुनत कपि बीरा। बोलि न सकहिं नयन बह नीरा
क्षण इक शोक मगन ह्वै गये। पुनि अस वचन कहत सब भये
हम सीता की बिनु सुधि लीने। फिर बन सुनु युवराज प्रवीने
अस कहि लवण सिन्धु तट जाई। बैठे कपि सब दर्भ डसाई
जामवन्त अंगद दुख देखी। कही कथा उपदेश विशेखी

तात राम कहँ नर जनि जानहु। निर्गुण ब्रह्म अजित अज मानहु
हम सब सेवक अति बड़ भागी। सन्तत सगुण ब्रह्म अनुरागी
दो० निज इच्छा अवतरेउ प्रभु सुर द्विज गो महि लागि।
सगुण उपासक रहहिं सब मोक्ष सकल सुख त्यागि २६
इहि बिधि कहत कथा बहु भांती। गिरि कन्दरा सुना सम्पाती
बाहिर होइ देखे सब कीशा। मोहिं अहार दीन्ह जगदीशा
आजु सबन्ह कहँ भक्षण करऊं। दिन बहुगे अहार बिनु मरऊं.
कबहुँ न मिल भरि उदर अहारा। आजु दीन्ह बिधि एकहि बारा
डरपे गृद्ध वचन सुनि काना। अब भा मरण सत्य हम जाना
कपि सब उठे गृद्ध कहँ देखी। जामवन्त मन शोच विशेखी
कह बिचारि अंगद मन माहीं। धन्य जटायु सरिस कोउ नाहीं
राम काज कारण तन त्यागी। हरि पुर गयउ परम बड़ भागी
जो रघुबीर चरण चित लावै। तिहि सम धन्य न आन कहावै
सुनि खग हर्ष शोक युत बानी। आवा निकट कपिन्ह भय मानी
ताहि देखि सब चले पराई। ठाढ़ कीन्ह तेहि शपथ दिवाई
तिन्हें अभय करि पूँछेसि जाई। कथा सकल तिन्ह ताहि सुनाई
सुनि सम्पाति बन्धु की करणी। रघुपति महिमा बहु बिधि बरणी

दो० मोहिं लै चलहु सिन्धुतट देउं तिलांजलि ताहि।
वचन सहाय करब मैं पैहहु खोजहु जाहि २७
अनुज क्रिया करि सागर तीरा। कहनिज कथा सुनहु कपि वीरा
हम दोउ बन्धु प्रथम तरुणाई। गगन गये रवि निकट उड़ाई
तेजन सहि सक सो फिरि आवा। मैं अभिमानी रवि नियरावा
जरे पंख रवि तेज अपारा। परेउं भूमि करि घोर चिकारा
मुनि एक नाम चन्द्रमा ओही। लागी दया देखि करि मोही
बहु प्रकार तिन्ह ज्ञान सिखावा। देह जनित अभिमान छुड़ावा
त्रेता ब्रह्म मनुज तनु धरिहैं। तासु नारि निशिचर पति हरिहैं
तासु खोज पठउब प्रभु दूता। तिन्हैं मिले तुम होब पुनीता
जमिहहिं पंख करसि जनि चिन्ता। तिन्हैं दिखाइ देब तैं सीता
यह कहमुनि निज आश्रम गयऊ। तिहि क्षण हृदय ज्ञान कछु भयऊ
सदा राम कर सुमिरण करऊं। निशि दिन मग जोवत दिन भरऊं
मुनि की गिरा सत्य भइ आजू। सुनि मम वचन करहु प्रभु काजू
गिरि त्रिकूट ऊपर बस लंका। तहं रह रावण सहज अशंका
तहां अशोक वाटिका अहई। सीय बैठि तहं शोचति रहई
दो० मैं देखौं तुम नाहिंन गृद्धहि दृष्टि अपार।

बूढ़ भयों न तो करितेउँ कछुक सहाय तुम्हार॥
जो लाँघै शत योजन सागर। करै सो राम काज अति आगर
जो कोइ करै राम कर काजू। तेहि समधन्य आन नहिं आजू
मोहिं बिलोकि धरहु मन धीरा। राम कृपा कस भयउ शरीरा
पापिउ जाकर नाम सुमिरहीं। अति अपार भवसागर तरहीं
तासु दूत तुम तजि कदराई। राम हृदय धरि करहु उपाई
अस कहि उमा गृध्र जब गयऊ। सबके मन अति विस्मय भयऊ
निज निज बल सबकाहू भाखा। पार जानकर संशय राखा।
जठर भयउँ अब कहेउ ऋक्षेशा। नहिं तनु रहा प्रथम बल लेशा
जबहिं त्रिविक्रम भयेखरारी। तब मैं तरुरा रहा बल भारी
दो० बलि बाँधत प्रभु बाढ़ेउ सो तनु बरणि न जाइ।
उभय घरी महँ दीन्ह मैं सात प्रदक्षिणा धाइ २९
अंगद कहा जाउँ मैं पारा। जिय संशय कछु फिरती बारा
जामवन्त कह तुम सब लायक। किमि पठवौं सबही कर नायक
कहा ऋच्छपति सुनु हनुमाना। का चुप साधि रहा बलवाना
पवन तनय बल पवन समाना। बुधि विवेक विज्ञान निधाना
कौन सो काज कठिन जग माहीं। जो नहिं तात होइ तुम पाहीं

राम काज लगि तव अवतारा। सुनि कपि भयउ पर्वताकारा
कनक बरण तन तेज बिराजा। मानहुँ अपर गिरिन्ह कर राजा
सिंह नाद करि बारहिं बारा। लीलहिं नाँघौं जलनिधि खारा
सहित सहाय रावणहिं मारी। आनौं इहाँ त्रिकूट उपारी.
जामवन्त मैं पूँछौं तोही। उचित सिखावन दीजे मोही
इतना करेउ तात तुम जाई। सीतहि देखि कहौ सुधि आई
तब निज भुज बल राजिव नयना। कौतुक लागि संग कपि सयना

छं० कपि सेन संग सँहारि निश्चर राम सीतहि आनिहैं।
त्रयलोक पावन सुयश सुर मुनि नारदादि बखानिहैं॥
जो सुनत गावत कहत समुझत परम पद नर पावहीं।
रघुबीर पद पाथोज मधुकर दास तुलसी गावहीं२

दो० भव भेषज रघुनाथ यश सुनैं जो नर अरु नारि।
तिनकर सकल मनोरथ सिद्ध करहिं त्रिपुरारि३०

सो० नीलोत्पल तनु श्याम काम कोटि शोभा अधिक।
सुनिय तासु गुण ग्राम जासु नाम अघ खग बधिक२

श्रीरामचरित मानसे सकल कलिकलुष विध्वंसने विमल वैराग्य सम्पादनो नाम चतुर्थस्सोपानः समाप्तः४

रामायणगीतावली मूल तुलसीकृत छापा टैप.

अनेक रागों में सुन्दरबाल चरित्रादि सम्पूर्ण लीला युक्त रामायण सातों काण्ड का आशय वर्णित है.

तथा. गीतावली सटीक बैजनाथजी छा. टै.

सातो काण्ड रामायण की सम्पूर्ण कथा अनेक उत्तम २ रागों में वर्णित है बैजनाथ जी ने हरि भक्तों व मज्जनों के सरलता हेतु उत्तम रीति से ब्रजभाषा में टीका किया है.

रामायण दोहावली तुलसीदास जी मूल छापा टैप.

जिसमें ज्ञान भक्ति वैराग्य मिश्रित दोहे हैं और विशेष कर संतोष की शिक्षा प्रधान है.

विजय दोहावली तु. दा. जी छापा टैप.

श्री गोसाईं तुलसीदास जी ने अपनी तुलसी कृत रामायण के कठिन और गूढ़ार्थ दोहे चौपाई सोरठे आदि के भाव यथार्थ प्रकट करने के निमित्त छन्दों में प्रकाशित किया.

रामायण छन्दावली मू. तु. कृ. छापा टैप.

श्री रविकुल कैरव चन्द्र कौशल्या हृदयानन्द वर्द्धन का पुरुषोत्तम चरित्र बालकाण्ड से उत्तरकाण्ड पर्य्यन्त मनोहर चौपय्या छन्द में वर्णित है.

तथा. सटीक बैजनाथजी छापा टैप.

जिसको श्री बैजनाथ जी ने कठिन २ स्थलों के गूढ़ २ शब्दों का आशय प्रत्येक पुराण शास्त्रादिकों के प्रमाण देकर ऐसा सरल कर दिया है जिसे सब सहज में समझ सक्ते हैं.

छप्पै रामायण मूल तुलसीकृत छापा टैप.

सातों काण्ड रामायण की कथा अति रुचिर छप्पै छन्दों में अतीव सरल पदों से वर्णन की गई है.

तथा. सटीका बैजनाथ जी छापा टैप.

जिसको बैजनाथ जी ने कठिन २ स्थलों के गूढ़ २ शब्दों का आशय प्रत्येक पुराण शास्त्रादिकों के प्रमाण देकर ऐसा सरल कर दिया है जिसे सब सहज में समझ सक्ते हैं.

विनयपत्रिका मूल तुलसीदास जी कृत छापा टैप.

गोसाईं तुलसीदास जी ने श्री रामचन्द्र परब्रह्म परमेश्वर और जानकी महारानी के विनय युक्त भजन राग आदि में वर्णन किये हैं.

तथा. सटीका बाबू शिवप्रकाश जी छापा टैप.

जिसमें भक्त भयहारी - अनाथ बिहारी - दीनहितकारी - रावणान्तकर्त्ता - विभीषणादि भयहर्त्ता श्री रामचन्द्र महाराजाधिराज प्रति विनय अति सुचारित भजनों में निर्मित है.

तथा. सटीका बैजनाथ जी छापा टैप.

जिसको बैजनाथ जी ने प्रति पद प्रति [illegible] व प्रत्यक्षर का अनेक शास्त्र, पुराण, स्मृति, उपनिषदादि

निकाल देकर सरल भाषा में निर्मित किया है -

तुलसी सतसयी मूल तुलसी कृत छापोटिप.

जिस में नाना प्रकार के नीति शास्त्र ग्रन्थों से छाँटकर सात सौ दोहों में अत्यंत उत्तम नीति वर्णित है.

तथा. मयटीका कामतागणजीका. टैप.

जिसको श्री दीनदयालु कृपासागर सकल गुणागार श्रीस्वामी सुखानन्द सरस्वती जीके किङ्कर तुलसिदास जी पण्डित रामकान्त सरस्वती जी ने उत्तम रीति से वार्तिक भाषा टीका किया है.

तथा. मयटीका बेजनाथजीका. टैप.

जिसमें नाना प्रकार के नीति शास्त्र ग्रन्थों से छाँटकर अतीव मनोहर सात सौ दोहों में धर्मनीति वर्णित है.

भगवद्गीता नवलभाष्यका विज्ञापन.

प्रकट हो कि यह पुस्तक श्री मद्भगवद्गीता सकल निगम पुराण स्मृति तांत्र्यादि शास्त्रसार परम अद्भुत गीताशास्त्र का सर्व्व विद्यानिधान सौशील्य विनयौदार्य्य सत्यसंगर शौर्य्यादि गुणा सम्पन्न भगवान् वासुदेव अर्जुन को परम अधिकारी जान के हृदय जनित मोहनाशार्थ तत्व प्रकार अपार संसार निस्तारक भगवद्भक्ति मार्ग दृष्टिगोचर कराया है वही उक्त भगवद्गीता सर्व्वमत् वेदान्त व ब्रह्मज्ञानगर्भित जिसको अच्छे २ शास्त्रवेत्ता अपनी बुद्धि से पार नहीं पा सके तब भव्यबुद्धी जिज्ञासु कैसे कैवल देश भाषा ही पठन पाठन करने की सामर्थ्य है वह कब इसके अन्तरभिप्राय को जान सकते हैं- और यह प्रत्यक्षही है कि जब तक किसी पुस्तक अथवा किसी वस्तु का अन्तरभिप्राय अच्छे प्रकार बुद्धि में न भासित हो तब तक आनन्द क्योंकर मिले इस प्रकार संस्कृतानभिज्ञ भारतनिवासी श्री भगवत्यदाब्जरसिकजनों के चित्तानन्दार्थ व बुद्धिबोधार्थ सत्सत्मर्म्मज्ञ पुराण सकलशास्त्रवेदान्त सर्व्वविद्या विलासी भगवद्भक्त्यनुरागी श्रीमान् मुन्शी नवलकिशोर सी (सी. आई. ई.) ने बहुत साधन व्ययकर फर्रुखाबाद निवासि पण्डित उमादत्त जी से इस मनोरञ्जन वेदवेदान्त शास्त्रोपरि पुस्तक को श्रीशंकराचार्य्य निर्मित भाष्यानुसार संस्कृत से सरल देश भाषा में लिखाय नवलभाष्य आरब्ध से प्रभात कालिक कमल सदृश प्रफुल्लित करा दिया है कि जिसको भाषामात्र के जाननेवाले पुरुष भी जान सक्ते हैं ॥

समायण

मोटे अक्षरों में हनुमान्‌ भक्तजन
के अनुराग और सुगमता में
पाठ करने के हेतु

प्रथमवार

कानपुर

अप्रैल सन् १८९४ ई०

विज्ञापन.

यह विशालदरशी मोटे अक्षरों की रामायण प्रथमबार छापी गई है अभी तक ऐसी रामायण हिन्दुस्तान में नहीं छपी कि जिस के दर्शन से आप लोग प्रसन्नहो ते अब परमेश्वर की कृपा से हमारे कारख़ाने में छपी है और हम इस की प्रशंसा नहीं कर सक्ते जब आप लोग ख़ुद इस रामायण को अवलोकन करेंगे तब आप प्रसन्नता को प्राप्त होंगे- और यह रामायण अलग २ काण्ड भी मिल सक्ती है. फ़क़त

नवलकिशोर.

मालिक मतबा नवलकिशोर प्रेसकानपूर व लखनऊ

नीचे लिखी हुई रामायण हर क़िस्म की छापाख़ाना नवलकिशोर कानपूर व लखनऊ में ख़रीदारों को मिल सक्ती हैं.

रामायण तु·क्र·सटीक रामचरणदास किताबनुमा वपत्रानुमा छापाटैप सा·कां.

जिसको श्री रामचरण जीने भक्तजनों के उपकार और जगत कल्याण के लिये वेद की ऋचाओं व अनेक प्रमाणिक श्लोकों से भूषित कर पद २ का भाषा टीका किया है.

रामायण तुलसीकृत मूल मोटाअक्षरमय तसवीर छापाटैप.

क्षेपक वमाहात्म्य सहित-रावण विजय व श्री गंगा जी-अहिरावण नारान्तक रामदल संख्या सुलोचना कथा श्री रामायण व सप्तदेव स्तुति भिन्न २ क्षेपक की रीति से संयुक्त है.

तथा -सुतवस्सित क़लम मय तसवीर छापा टैप ऊपर के अलङ्गारों सहित.

रामायण तु·क्र·सटीक सुखदेवलाल किताबनुमा वपत्रानुमा छापाटैप.

जिसको सुखदेवलाल जीने जगत कल्याण के अर्थ भाषा टीका रचकर प्रमाणिक श्लोकों से भूषित किया और पद पदार्थ के अर्थ को अतिस्पष्ट रीति से सलिल देश भाषा में बखाना है.

रामायण तु·क्र· सटीक बैजनाथ जी छापा टैप.

जिसको बैजनाथ जीने कठिन २ स्थलों के गूढ़ शब्दों का आशय प्रत्येक पुराण शास्त्र उपनिषद वेदादि के श्लोक ऋचा सूत्रादिकों के दृष्टान्त देकर ऐसा सरल कर दिया है जिसे सब सहज में समझ सक्ते है और अवलोकन करने के योग्य है.

रामायण कवित्तावली मूल तु·छापाटैप.

जिसमें सम्पूर्ण आशय रामायण का उक्त कविने अति रुचिर छन्दों में वर्णन किया है.

तथा. मय टीका बैजनाथजी सटीक.

जिसमें श्री महाराज राज राजेन्द्र रामचन्द्र जी का समस्त जीवन चरित्र सातकाण्डों में अत्युत्तम कवित्तों में वर्णित है.

सीता.
विजटा

श्रीगणेशायनमः

श्रीरामायणतुलसीकृत

सुन्दरकाण्ड

शान्तंशाश्वतमप्रमेयमनघं निर्व्वाणशान्तिप्रदम्। ब्रह्मा
शम्भुफणीन्द्रसेव्यमनिशंवेदान्तवेद्यंविभुम्॥ रामाख्यञ्जग
दीश्वरंसुरगुरुंमायामनुष्यंहरिम्। वन्देहंकरुणाकरं रघुव
रम्भूपालचूड़ामणिम् १ नान्यास्पृहारघुपते हृदयेस्मदीयेस
त्यंवदामिचभवानखिलान्तरात्मा॥ भक्तिम्प्रयच्छरघुपुंगव
निर्भरंमे। कामादिदोषरहितंकुरुमानसञ्च २ अतुलितब
लधामंस्वर्णशैलाभदेहं। दनुजबनकृशानुं ज्ञानिनामग्रग-
रायम्॥ सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं। रघुपतिवर
दूतंवातजातन्नमामि ३

जामवन्त के वचन सुहाये। सुनि हनुमान हृदय अति भाये
तब लगि मोहिं परेखउ भाई। सहि दुख कन्द मूल फल खाई
जब लगि आवों सीतहि देखी। होइ काज मन हर्ष विशेखी

असकहि नाइ सबनि कहुँ माथा। चलेउ हरषि हिय धरि रघुनाथा
सिन्धु तीर एक सुन्दर भूधर। कौतुक कूदि चढ़े तेहि ऊपर
बार बार रघुबीर सँभारी। तरकेउ पवन तनय बल भारी
जेहि गिरि चरन देइ हनुमन्ता। सो चलि गयउ पताल तुरन्ता
जिमि अमोघ रघुपति कर बाना। ताही भाँति चला हनुमाना
जलनिधि रघुपति दूत बिचारी। तै मैनाक होहि श्रमहारी

सो० सिन्धु बचन सुनि कान तुरत उठे मैनाक तब।
कपि कहँ कीन्ह प्रनाम बार बार कर जोरि कै १

दो० हनूमान तेहि परसि कर पुनि तेहि कीन्ह प्रनाम
राम काज कीन्हे बिना मोहिं कहाँ बिश्राम १

जात पवन सुत देवन देखा। जानै कहँ बल बुद्धि बिसेषा।
सुरसा नाम अहिन कै माता। पठयउ आइ कही तेहिं बाता
आजु सुरन मोहिं दीन्ह अहारा। सुनि हँसि बोला पवनकुमारा
राम काज करि फिरि मैं आवौं। सीता कै सुधि प्रभुहिं सुनावौं
तब तव बदन पैठिहौं आई। सत्य कहौं मोहिं जान दे माई।
कवनिहुँ यतन देइ नहिं जाना। ग्रसि सिन मोहिं कहा हनुमाना
योजन भरि तेहिं बदन पसारा। कपि तनु कीन्ह दुगुन बिस्तारा।

सोरह योजन मुख तेहि ठयऊ। तुरत पवन सुत बत्तिस भयऊ
जस जस सुरसा बदन बढ़ावा। तासु दुगुण कपि रूप दिखावा
शत योजन तेइँ आनन कीन्हा। अति लघु रूप पवन सुत लीन्हा
बदन पैठि पुनि बाहर आवा। माँगी बिदा ताहि सिर नावा
मोहिं सुरन्ह जेहि लागि पठावा। बुधि बल मर्म तोर मैं पावा
दो० रामकाज सब करिहहु तुम बल बुद्धि निधान।
आसिष दै सुरसा चली हर्षि चले हनुमान २
निचर एक सिन्धु महँ रहई। करि माया नभ के खग गहई।
जीव जन्तु जे गगन उड़ाहीं। जल बिलोकि तिन की परछाहीं।
गहै छाँह सक सो न उड़ाई। एहि बिधि सदा गगनचर खाई
सोइ छल हनूमान तेकीन्हा। तासु कपट कपि तुरतहिं चीन्हा
ताहि मारि मारुत सुत बीरा। बारिधि पार गयउ मतिधीरा
तहाँ जाइ देखी बन शोभा। गुञ्जत चञ्चरीक मधु लोभा
नाना तरु फल फूल सुहाये। खग मृग बृन्द देखि मन भाये
शैल बिशाल देखि इक आगे। ता पर कूदि चढ़ेउ भय त्यागे
उमा न कछु कपि की अधिकाई। प्रभु प्रताप जो कालहि खाई
गिरि पर चढ़ि लंका तेहिं देखी। कहि न जाइ अति दुर्ग बिशेखी।

अतिउतंगजलनिधिचहुँपासा। कनककोटकरपरमप्रकासा

छं० कनककोटविचित्रमणिकृतसुन्दरायतिघना।
चौहट्ट हाट सुबट्ट बीथी चारु पुर बहु विधि बना॥
गज बाजि खच्चर निकर पदचर रथ बरूथन को गनै।
बहुरूप निशिचर यूथ अतिबल सेन बरणत नहिंबनै।
बन बाग उपबन बाटिका सर कूप बापी सोहहीं
नरनाग सुर गन्धर्व्व कन्या रूप मुनि मन मोहहीं॥
कहुँ मल्ल देह विशाल शैल समान अतिबल गर्जहीं।
नानाअखारन्हभिरहिंबहुविधिएकएकन्हतर्जहीं॥
करिमत्तभटकोटिन्हविकटतनुनगरचहुँदिशिरक्षहीं
कहुँमहिषमानुषधेनुखरअजखलनिशाचरभक्षहीं
इहिलागितुलसीदासइन की कथा संक्षेपहि कही
रघुवीर शर तीरथ सरित तनु त्यागि गति पैहैं सही।

दो० पुर रखवारे देखि बहु कपि मन कीन्ह विचार।
अति लघु रूप धरौं निशि नगर करौं पैसार ३

मशक समान रूप कपि धरी। लंका चलेउ सुमिरि नरहरी
नाम लंकिनी एक निशिचरी। सो कह चलेसि मोहिं निंदरी

जानसि नाहिं मर्म्म शठ मोरा। मोर अहार जहाँ लगि चोरा
मुष्टिक एक ताहि कपि हनी। रुधिर वमत धरणी ढनमनी
पुनि सँभारि उठी सो लंका। जोरि पाणि कर विनय ससंका
जबराबणहिं ब्रह्म वर दीन्हा। चलत विरंचि कहा मोहिं चीन्हा
विकल होसि जब कपि के मारे। तब जानेसि निशिचर संहारे
तात मोर अति पुण्य बहूता। देखेउँ नयन राम कर दूता
दो० सात स्वर्ग अपवर्ग सुख धरी तुला यक अंग।
तुलै न ताहि सकल मिलि जो सुख लव सतसंग ४
प्रविशि नगर कीजै सब काजा। हृदय राखि कोशलपुर राजा
गरल सुधा रिपु करै मिताई। गोपद सिन्धु अनल शितलाई
गरुअ सुमेरु रेणु सम ताही। राम कृपा करि चितवहिं जाही
अति लघु रूप धरेउ हनुमाना। पैठा नगर सुमिरि भगवाना
मन्दिर मन्दिर प्रति कर शोधा। देखे जहँ तहँ अगणित योधा
गयउ दशानन मन्दिर माहीं। अति विचित्र कहि जात सो नाहीं
शयन किये देखा कपि तेही। मन्दिर महँ न दीख वैदेही ।
भवन एक पुनि दीख सुहावा। हरि मन्दिर तहँ भिन्न बनावा
राम नाम अंकित गृह सोभा। वरणि न जाइ देखि मन मोहा

दो० रामनाम अंकित गृह शोभा वरणि न जाइ ।
नव तुलसी के वृन्द बहु देखि हर्ष कपिराइ ५
लंका निशिचर निकर निवासा। इहाँ कहाँ सज्जन कर वासा
मन महँ तर्क करन कपि लागे। ताही समय विभीषण जागे
रामनाम तेहि सुमिरण कीन्हा। हृदय हर्षि कपि सज्जन चीन्हा
इहि सन हठि करि हौं पहिचानी। साधु ते होइ न कारज हानी
विप्र रूप धरि वचन सुनावा। सुनत विभीषण उठि तहँ आवा
करि प्रणाम पूँछी कुशलाई। विप्र कहहु निज कथा बुझाई
की तुम हरि दासन में कोई। मोरे हृदय प्रीति अति होई।
की तुम दीनबन्धु अनुरागी। आयेहु मोहि करन बड़ भागी
दो० तब हनुमन्त कही सब राम कथा निज नाम ।
सुनत युगल तन पुलक मन मगन सुमिरि गुणग्राम ६
सुनहु पवनसुत रहनि हमारी। जिमि दशनन्ह महँ जीभ बिचारी
तात कबहुँ मोहिं जानि अनाथा। करिहहिं कृपा भानुकुलनाथा
तामस तन कछु साधन नाहीं। प्रीति न पद सरोज मन माहीं।
अब मोहिं भा भरोस हनुमन्ता। बिनु हरि कृपा मिलहिं नहिं संता
जो रघुवीर अनुग्रह कीन्हा। तो तुम मोहिं दरश हठि दीन्हा

सुनहु विभीषण प्रभु की रीती। करहिं सदा सेवक पर प्रीती
कहहु कवन मैं परम कुलीना। कपि चञ्चल सबही विधि हीना
प्रातलेइ जो नाम हमारा। तादिन ताहि मिलै न अहारा।
दो॰ अस मैं अधम सखा सुनु मोहूं पर रघुवीर ।
कीन्ही कृपा सुमिरि गुण भरे विलोचन नीर ७
जानतहूं अस स्वामि विसारी। फिरि ते काहि न होहिं दुखारी
इहि विधि कहत राम गुण ग्रामा। पावन अवण सुखद विश्रामा
पुनि सब कथा विभीषण कही। जेहि विधि जनक सुता तहँ रही
तब हनुमन्त कहा सुनु भ्राता। देखा चहौं जानकी माता।
युक्ति विभीषण सकल सुनाई। चलेउ पवन सुत विदा कराई
धरि सोइ रूप गये पुनि तहँवाँ। बन अशोक सीता रह जहँवाँ
देखि मनहिं मन कीन्ह प्रणामा। बैठेबीति गई निशि यामा
कृशतनशीश जटा इक वेणी। जपति हृदय रघुपति गुण श्रेणी
दो॰ निज पद नयन दिये मन राम चरण महँ लीन ।
परम दुखी भा पवन सुत निरखि जानकी दीन ८
तरु पल्लव महँ रहा लुकाई। करै विचार करौं का भाई।
तेहि अवसर रावण तहँ आवा। संग नारि बहु किये बनावा

बहु विधि खल सीतहिं समुझावा। साम दान भय भेद दिखावा
कह रावण सुनु सुमुखि सयानी। मन्दोदरी आदि सब रानी।
तव अनुचरी करौं पन मोरा। एक बार बिलोकु मम ओरा
तृण धरि ओट कहति बैदेही। सुमिरि अवधपति परम सनेही
सुनु दसमुख खद्योत प्रकाशा। कबहुँ कि नलिनी करहिं बिकाशा
अस मन समुझु कहति जानकी। खल सुधि नहिं रघुबीर बाण की
सठ सूने हरि आनेसि मोहीं। अधम निलज्ज लाज नहिं तोहीं
दो॰ आपुहि सुनि खद्योत सम रामहि भानु समान।
परुष बचन सुनि काढ़ि असि बोला अति रिस सान ९
सीता तैं मम कृत अपमाना। काटौं तव सिर कठिन कृपाना
नाहित सपदि मानु मम बानी। सुमुखि होति न त जीवन हानी
स्याम सरोज दाम सम सुन्दर। प्रभु भुज करि कर सम दसकन्धर
सो भुज कंठ कि तव असि घोरा। सुनु सठ अस प्रमान पन मोरा
चन्द्रहास हरु मम परितापा। रघुपति बिरह अनल सन्तापा
सीतल निसित बहसि बर धारा। कह सीता हरु मम दुख भारा
सुनत बचन पुनि मारन धावा। मयतनया कहि नीति बुझावा
कहेसि सकल निसिचरी बुलाई। सीतहि त्रास देखावहु जाई

मास दिवस महँ कहा न माना। तौ मैं मारब काढ़ि कृपाना
दो० भवन गयउ दशकन्धतब इहाँ निशाचरि वृन्द ।
सीतहिं त्रास दिखावहीं धरहिं रूप बहु मन्द १०
त्रिजटा नाम राक्षसी एका। राम चरण रत निपुण विवेका
सबहिं बुलाइ सुनायसि सपना। सीतहि सेइ करौ हित अपना
सपने बानर लंका जारी। यातुधान सेना सब मारी।
खर आरूढ़ नगन दशशीशा। मुंडित शिर खंडित भुज बीसा
एहि विधि सो दक्षिण दिशि जाई। लंका मनहुँ विभीषण पाई
नगर फिरी रघुबीर दुहाई। तब प्रभु सीतहि बोलि पठाई
यह सपना मैं कहौं विचारी। होइहि सत्य गये दिन चारी
तासु वचन सुनि के सब डरीं। जनक सुता के चरणन परीं
दो० जहँ तहँ गईं सकल तब सीता के मन शोच।
मास दिवस बीते मोहिं मारिहि निशिचर पोच ११
त्रिजटा सन बोलीं कर जोरी। मातु विपति संगिनि तैं मोरी
तजौं देह करु बेगि उपाई। दुसह विरह अब सहा न जाई
आनि काठ रचि चिता बनाई। मातु अनल तुम देहु लगाई
सत्य करहि मम प्रीति सयानी। सुनै को श्रवण शूल सम बानी

सुनत वचन पद गहि समुझावा। प्रभु प्रताप बल सुयश सुनावा
निशिन अनल मिलु राजकुमारी। अस कहि सो निज भवन सिधारी
कह सीता विधि भा प्रतिकूला। मिलै न पावक मिटै न शूला
देखियत प्रकट गगन अंगारा। अवनि न आवत एकौ तारा
पावक मय शशि स्रवत न आगी। मानहुँ मोहिं जानि हतभागी
सुनहु विनय मम विटप अशोका। सत्य नाम करु हरु मम शोका
नूतन किशलय अनल समाना। देहु अगिनि मम करहु निदाना
देखि परम विरहाकुल सीता। सो छण कपिहि कल्प सम बीता
सो० कपि कर हृदय विचार कीन्ह मुद्रिका डारि तब।
जनु अशोक अंगार दीन्ह हर्षि उठि कर गहेउ २
तब देखी मुद्रिका मनोहर। राम नाम अंकित अति सुन्दर
चकित चितै मुद्रिक पहिचानी। हर्ष विषाद हृदय अकुलानी
जीति को सकै अजय रघुराई। माया ते अस रची न जाई।
सीता मन विचार कीरि नाना। मधुर वचन बोले हनुमाना
रामचन्द्र गुण वरणन लागे। सुनतहि सीता कर दुख भागे
लागी सुनै श्रवण मन लाई। आदिहि ते सब कथा सुनाई
श्रवणामृत जिहि कथा सुनाई। कहि सो प्रगट होत किन भाई

तब हनुमन्त निकट चलि गयऊ। फिरि बैठी मन बिसमय भयऊ
रामदूत मैं मातु जानकी। सत्य सपथ करुनानिधान की।
यह मुद्रिका मातु मैं आनी। दीन्ह राम तुम कहँ सहिदानी
नर बानरहि संग कहु कैसे। कही कथा संगति भइ जैसी
दो० कपि कर बचन सप्रेम सुनि उपजा मन बिस्वास।
जाना मन क्रम बचन यह कृपासिन्धु कर दास १२
हरिजन जानि प्रीति अति बाढ़ी। सजल नयन पुलकावलि ठाढ़ी
बूड़त बिरह जलधि हनुमाना। भयहु तात मो कहँ जलयाना
अब कहु कुसल जाउँ बलिहारी। अनुज सहित सुख भवन खरारी
कोमल चित कृपालु रघुराई। कपि केहि हेतु धरी निठुराई
सहज बानि सेवक सुखदायक। कबहुँक मोहिं सुमिरत रघुनायक
कबहुँ नयन मम सीतल ताता। होइहहिं निरखि स्याम मृदु गाता
बचन न आवन नयन भरि बारी। अहो नाथ मोहिं निपट बिसारी
देखि बिरह ब्याकुल अति सीता। बोलेउ कपि मृदु बचन बिनीता
मातु कुसल प्रभु अनुज समेता। तव दुख दुखी सोक निकेता
जननी जनि मानहु मन ऊना। तुम ते प्रेम राम कहँ दूना।
दो० रघुपति कर सन्देसु अब सुनु जननी धरि धीर।

असकहि कपि गद्गद भये भरे विलोचन नीर १३

रामवियोग कहा सुनु सीता। मो कहँ सकल भयउ विपरीता
नूतन किसलय मनहुँ कृशानू। कालनिशा सम निशि शशि भानू
कुवलय विपिन कुन्त बन सरिसा। वारिद तप्त तेल जनु वरिसा
जेहि तरु तर रहौं करत सोपीरा। उरग श्वास सम त्रिविध समीरा
कहे ते नहिं दुख घटि कछु होई। काहि कहौं यह जान न कोई
तत्व प्रेम कर मम अरु तोरा। जानति प्रिया एक मन मोरा।
सो मन रहत सदा तोहिं पाहीं। जानु प्रीति रस इतनेहि माहीं
प्रभु सन्देश सुनत वैदेही। मगन प्रेम तनु सुधि नहिं तेही
कह कपि हृदय धीर धरु माता। सुमिरि राम सेवक सुखदाता
उर आनहु रघुपति प्रभुताई। सुनि मम वचन तजहु विकलाई

दो॰ निशिचर निकर पतंग सम रघुपति वाण कृशानु।
जननि हृदय निज धीर धरु जरे निशाचर जानु १४

जो रघुवीर होत सुधि पाई। करते नहिं विलम्ब रघुराई
राम वाण रवि उदय जानकी। तम वरूथ कहँ यातुधानकी
अवहिं मातु मैं जातु लिवाई। प्रभु आयसु नहिं राम दुहाई
कछुक दिवस जननी धरु धीरा। कपिन सहित ऐहैं रघुवीरा

निशिचर मारि तुमहिं लै जैहैं। तिहूं पुर नारदादि यश गैहैं
हैं सुत कपि सब तुम्हैं समाना। यातुधान भट अति बलवाना
मोरे हृदय परम सन्देहा। सुनि कपि प्रकट कीन्ह निज देहा।
कनक भूधराकार शरीरा। समर भयंकर अति बल वीरा
सीता मन भरोस तब भयऊ। पुनि लघुरूप पवनसुत लयऊ

दो॰ सुनु माता शाखामृगहिं नहिं बल बुद्धि विशाल।
प्रभु प्रताप तेगरुड़ ही खाइ परम लघु व्याल १५

मन सन्तोष सुनत कपि बानी। तन अति पुलक नयन ढरु पानी
भक्ति प्रताप तेज बल सानी। आशिष दीन्ह राम प्रिय जानी
अजर अमर गुणा निधि सुत होहू। करहिं सदा रघुनायक छोहू
करहिं कृपा प्रभु अस सुनि काना। निर्भर प्रेम मगन हनुमाना
बार बार नावहिं पद शीशा। बोले वचन जोरि कर कीशा
अब कृतकृत्य भयउं मैं ताता। आशिष तव अमोघ विख्याता

सुनि यमातु मोहिं अतिशय भूखा। लागि देखि सुन्दर फल रूखा
सुनु सुत करहिं विपिन रखवारी। परम सुभट रजनीचर भारी
तिन कर भय माता मोहिं नाहीं। जो तुम सुख मानहु मन माहीं

दो॰ देखि बुद्धि बल निपुण कपि कहा जानकी जाहु।

रघुपति चरण हृदय धरि तात मधुर फल खाहु १६

चला नाइ सिर पैठेउ बागा। फल खाये तरु तोरन लागा
रहे तहाँ बहु भट रखवारे। कछु मारे कछु जाइ पुकारे
नाथ एक आवा कपि भारी। तेइँ अशोक वाटिका उजारी
खायसि फल अरु विटप उपारे। जहँ तहँ पटकि पटकि भट मारे
सुनि रावण पठये भट नाना। तिन्हहिं देखि गरजा हनुमाना।
सब रजनीचर कपि संहारे। गये पुकारत कछु अधमारे
पुनि पठवा तेइँ अक्षयकुमारा। चला संग लै सुभट अपारा
आवत देखि विटप गहि तर्जा। ताहि निपाति महा धुनि गर्जा

दो॰ कछु मारेसि कछु मर्देसि कछु कमिलायसि धूरि।
कछु पुनि जाइ पुकारे प्रभु मर्कट बल भूरि १७

सुनि सुत वध लंकेश रिसाना। पठवा मेघनाद बलवाना।
मारेसु जनि सुत बाँधेसु ताही। देखौं कीश कहाँ कर आही
चलाइन्द्रजित अतुलित योधा। बन्धु वधन सुनि उपजा क्रोधा
कपि देखा दारुण भट आवा। कटकटाइ गरजा अरु धावा
अति विशाल तरु एक उपारा। विरथ कीन्ह लंकेश कुमारा
रहे महा भट ताके संगा। गहि गहि कपि मर्देसि निज अंगा

तिन्हैं निपाति ताहि सन बाजा। भिरे युगल मानहुँ गजराजा
मुष्टिक मारि चढ़ा तरु जाई। ताहि एक छन मूर्च्छा आई।
उठि बहोरि कीन्हिसि बहु माया। जीति न जाइ प्रभञ्जन जाया
दो० ब्रह्म अस्त्र तेइँ साध्यो कपि मन कीन्ह बिचार ।
जो न ब्रह्मशर मानऊँ महिमा मिटै अपार १८
ब्रह्मबारा तेइँ कपिकहँ मारा। परतिहु बार कटक संहारा
तेइँ जाना कपि मूर्च्छित भयऊ। नागफाँस बाँधेसि लै गयऊ
जासु नाम जपि सुनहु भवानी। भव बन्धन काटहिं नर ज्ञानी
तासु दूत बन्धन तर आवा। प्रभु कारज लगि आपु बँधावा।
कपिबन्धन सुनि निसिचर धाये। कौतुक लागि सभाँ लै आये
दसमुख सभा दीख कपि जाई। कहि न जाइ कछु अति प्रभुताई
कर जोरे सुर दिशप बिनीता। भृकुटि बिलोकहिं सकल सभीता
देखि प्रताप न कपि मन शंका। जिमि अहिगन महँ गरुड़ असंका
दो० कपिहि बिलोकि दशानन बिहँसा कहि दुर्बाद।
सुत बध सुरति कीन्ह पुनि उपजा हृदय बिषाद १९
कह लंकेश कवन तैं कीसा। केहि के बल घालेसि बन खीसा।
की धौं श्रवन सुनेसि नहिं मोही। देखौं अति असंक शठ तोही

मारेसिनिशिचरकोहिअपराधा,कहशठतोहिंनप्राणाकिसाधा
सुनुरावणाब्रह्माण्डनिकाया।पाइजासुबलविरचितमाया
जाकेबलविरञ्चिहरिईशा।पालतसृजतहरतदशशीशा
जाबलशीशधरेसहसानन।अण्डकोशसमेतगिरिकानन
धरेजोविविधदेहसुरत्राता।तुमसेशठनसिरावनदाता।
हरकोदण्डकठिनजेइँभञ्जा।तोहिंसमेतनृपदलमदगञ्जा
खरदूषणाविराधबधेसकलअतुलितबलशाली
दो० जाकेबललवलेशतैंजितेउचराचरझारि ।
तासुदूतहौंजाहिकीहरिआनेहुप्रियनारि २०
जानौंमैंतुम्हारिप्रभुताई।सहसबाहुसनपरीलराई
समरबालिसनकरियशपावा,सुनिकपिवचनविहँसिबहलावा
खायउँफलमोहिंलागीभूखा।कपिस्वभावतेतोरेउँरूखा
सबकेदेहपरमप्रियस्वामी।मारहिंमोहिंकुमारगगामी।
जिनमोहिंमारातेहिमैंमारा।तेहिपरबाँधेउतनयतुम्हारा
मोहिंनकछुबाँधेकरलाजा।कीन्हचहौंनिजप्रभुकरकाजा
विनतीकरौंजोरिकररावन।सुनहुमानतजिमोरसिखावन
देखहुतुमनिजहृदयविचारी।भ्रमतजिभजहुभक्तभयहारी

जाके डर अति काल डराई। जो सुर असुर चराचर खाई।
तासौं बैर कबहुँ नहिं कीजै। मोरे कहे जानकी दीजै ।
दो० प्रणत पाल रघुवंश मणि करुणासिन्धु खरारि।
गये शरण प्रभु राखिहैं तव अपराध बिसारि २१
राम चरण पंकज उर धरहू। लंका अचल राज तुम करहू।
ऋषि पुलस्त्य यश विमल मयंका तेहि कुल महुँ जनि होसि कलंका
रामनाम बिनु गिरा न सोहा। देखु विचारि त्यागि मद मोहा
बसन हीन नहिं सोह सुरारी। सब भूषण भूषित वर नारी
राम विमुख सम्पति प्रभुताई। गई रही पाई बिनु पाई ।
सजल मूल जेहि सरिता नाहीं। बरषि गये पुनि तबहिं सुखाहीं
सुनु दशकण्ठ कहौं पण रोपी। राम विमुख बाता नहिं कोपी
शंकर सहस विष्णु अज तोही। सकहिं न राखि राम कर द्रोही
दो० मोह मूल बहु शूल प्रद त्यागहु मति अभिमान।
भजहु राम रघुनायकहि कृपासिन्धु भगवान २२
यदपि कही कपि अति हित बानी। भक्ति विवेक विरति नय सानी
बोला बिहँसि अधम अभिमानी। मिला हमहिं कपि गुरु बड़ ज्ञानी
मृत्यु निकट आई खल तोही। लागेसि अधम सिखावन मोही

उलटा होइ कहा हनुमाना। मति भ्रम तोरि प्रगट मैं जाना
सुनि कपि वचन बहुत रिसिआना। बेगि न हरहु मूढ़ कर प्राना
सुनत निशाचर मारन धाये। सचिवन्ह सहित विभीषण आये
नाइ शीश करि विनय बहूता। नीति विरोध न मारिय दूता।
आन दण्ड कछु करिय गुसाँई। सबहीं कहा मन्त्र भल भाई
सुनत विहँसि बोला दशकन्धर। अंग भंग करि पठवह बन्दर।
दो० कपि कर ममता पूँछ पर सबहिं कहा समुझाइ।
तेल बोरि पट बाधि पुनि पावक देहु लगाइ २३
पूँछहीन बन्दर जब जाइहि। तब शठ निज नाथहिं लै आइहि
जिन की कीन्हेसि अमित बड़ाई। देखौं मैं तिन की प्रभुताई
वचन सुनत कपि मन मुसुकाना। भइ सहाय शारद मैं जाना
यातुधान सुनि रावण वचना। लागे रचन मूढ़ सोइ रचना।
रहा न नगर वसन घृत तेला। बाढ़ी पूँछ कीन्ह कपि खेला
कौतुक कहँ आये पुरवासी। मारहिं चरण करहिं बहु हाँसी
बाजहिं ढोल देहिं सब तारी। नगर फेरि पुनि पूँछ प्रजारी
पावक जरत देख हनुमन्ता। भयउ परम लघु रूप तुरन्ता
निबुकि चढ़ेउ पुनि कनक अटारी। भईं सभीत निशाचर नारी

दो० हरि प्रेरित तेहि अवसर चले मरुत उनचास।
अट्टहास करि गर्जा कपि बढ़ि लाग अकास २४

देह बिशाल परम हरुआई। मन्दिर तें मन्दिर चढ़ि जाई
जरे नगर भे लोग बिहाला। लपट झपट बह कोट कराला
तात मात सब करहिं पुकारा। इहि अवसर को हमहिं उबारा
हम जो कहा यह कपि नहिं होई। बानर रूप धरे सुर कोई
साधु अवज्ञा कर फल ऐसा। जरै नगर अनाथ कर जैसा
जारा नगर निमिष इक माहीं। एक बिभीषन का गृह नाहीं
जा कर भक्त अनल तेइँ सिरजा। जरा न सो तेहि कारन गिरिजा
उलटि पलटि लंका कपि जारी। कूदि परा तब सिन्धु मँझारी

दो० पूँछ बुझाइ खोइ श्रम धरि लघु रूप बहोरि ।
जनक सुता के आगे ठाढ़ भयउ कर जोरि २५

मातु मोहिं दीजै कछु चीन्हा। जैसे रघुनायक मोहिं दीन्हा।
चूड़ामनि उतारि तब दयऊ। हर्ष समेत पवन सुत लयऊ
कहेहु तात अस मोर प्रनामा। सब प्रकार प्रभु पूरन कामा
दीन दयाल बिरद सम्भारी। हरहु नाथ मम संकट भारी
तात शक्र सुत कथा सुनायह। बान प्रताप प्रभुहिं समुझायह

मासदिवसमहँनायनआये। तौपुनिमोहिंजि ।नहिंपाये
कहुकपिकेहिविधिराखौंप्राना। तुमहूँतातकहतहहुजाना
तुमहिंदेखिशीतलभइछाती। पुनिमोकहँसोइदिनसोइराती
दो० जनकसुतहिंसमुझायकरिबहुविधिधीरजदीन्ह।
चरणाकमलशिरनाइकरि गमनरामपहँकीन्ह २६
चलतमहाधुनिगरजेउभारी। गर्भअवेउसुनिनिशिचरनारी
लाँघिसिन्धुइहिपारहिआवा। शब्दकिलकिलाकपिन्हसुनावा
हर्षेसबविलोकिहनुमाना। नूतनजन्मकपिन तबजाना।
मुखप्रसन्नतनुतेजविराजा। कीन्हेसिरामचन्द्रकरकाजा।
मिलेसकलअतिभयेसुखारी। तलफतमीनपावजनुवारी
चलेहर्षिरघुनायकपासा। पूछतकहतनवलइतिहासा
तबमधुबनभीतरसबआये। अंगदसहितमधुरफलखाये
रखवारे जबबरजन लागे। मुष्टि प्रहार करत सबभागे
दो० जाइपुकारे सकलतेबन उजारि युवराज ।
सुनिसुग्रीवहर्षिकपिकरिआयेप्रभुकाज २७
जोनहोतसीतासुधिपाई। मधुबनके फलकोसकखाई
इहिविधिमनविचारकरराजा। आइगयेकपिसहितसमाजा

आइ सबहिं नावा पद शीशा। मिलेसबन्हि अति प्रेम कपीशा
पूँछेउ कुशल कुशल पद देखी। राम कृपा भा काम विशेखी
नाथ काज कीन्हेउ हनुमाना। राखे सकल कपिन्ह के प्राना
सुनि सुग्रीव बहुरि उर मिलेऊ। कपिन्ह सहित रघुपति पै चलेऊ
राम कपिन्ह कहँ आवत देखा। किये काज उर हर्ष विशेखा
फटिक शिला बैठे दोउ भाई। परे सकल कपि चरनन जाई
दो० प्रीति सहित भेंटे सकल रघुपति करुना पुञ्ज।
पूँछेउ कुशल नाथ अब कुशल देखि पद कञ्ज २८
जामवन्त कह सुनु रघुराया। जापर नाथ करहु तुम दाया
ताहि सदा शुभ कुशल निरंतर। सुरनर मुनि प्रसन्न तेहि ऊपर
सोविजयी विनयी गुणसागर। तासु सुयश तिहुँ लोक उजागर
प्रभु की कृपा भयउ सब काजू। जन्म हमार सुफल भा आजू
नाथ पवन सुत कीन्ह जो करनी। सो सुरलोक कहइ जाइ न बरनी
पवन तनय के चरित सुहाये। जामवन्त रघुपतिहिं सुनाये
सुनि कृपालु उर हरष न गाये। जानि सुभट रघुपति मन भाये
कहहु तात केहि भाँति जानकी। रहति करति रक्षा स्व प्राणकी
दो० नाम पाहरू दिवस निशि ध्यान तुम्हार कपाट

लोचन निज पद यंत्रित प्राण जाहिं केहि बाट २९
चलती बार कह्यो मोहिं टेरी। सुरति कराय शक्र सुत केरी
चलत मोहिं चूड़ा मणि दीन्ही। रघुपति हृदय लाय तेहि लीन्ही
नाथ युगल लोचन भरि वारी। वचन कहेउ कछु जनक कुमारी
अनुज समेत गहेहु प्रभु चरणा। दीन बन्धु प्रणतारति हरणा
मन क्रम वचन चरण अनुरागी। केहि अपराध नाथ मोहिं त्यागी
अवगुण एक मोर मैं जाना। बिछुरत प्राण न कीन्ह पयाना
नाथ सो नयनन कर अपराधा। निसरत प्राण करहिं हठि बाधा
विरह अनल तनु तूल समीरा। स्वास जरे छण माहिं शरीरा
नयन स्रवैं जल निज हित लागी। जरै न पाव देह विरहागी
सीता की अति विपति विशाला। बिनहि कहे भल दीनदयाला
दो० निमिष निमिष करुणायतन जाहिं कल्प शत बीति।
बेगि चलिय प्रभु आनिय भुज बल खल दल जीति ३०
सुनि सीता दुख प्रभु सुख अयना। भरि आये दोउ राजिव नयना
वचन काय मन मम गति जाही। सपनेहुँ विपति कि चाहिय ताही
कह हनुमान विपति प्रभु सोई। जब तव सुमिरण भजन न होई
कित कथा प्रभु यातुधान की। रिपु हि जीति आनिये जानकी

सुनु कपि तोहिं समान उपकारी। नहिं कोउ सुर नर मुनि तनुधारी
प्रति उपकार करौं का तोरा। सनमुख होय न सकत मन मोरा
सुनु कपि तोहिं उरिन मैं नाहीं। देखेउँ करि विचार मन माहीं
पुनि पुनि कपिहि चितव सुरत्राता, लोचन नीर पुलक अति गाता
दो० सुनि प्रभु वचन विलोकि मुख हृदय हर्ष हनुमन्त।
चरण परेउ प्रेमाकुल त्राहि त्राहि भगवन्त ३१
बार बार प्रभु चहत उठावा। प्रेम मगन तेहि उठत न भावा
प्रभु पद पंकज कपि कर शीशा। सुमिरि सो दशा मगन गौरीशा
सावधान मन करि पुनि शंकर। लागे कहन कथा अति सुन्दर
कपि उठाय प्रभु हृदय लगावा। कर गहि परम निकट बैठावा
कह कपि रावण पालित लंका। केहि विधि दहेउ दुर्ग अति बंका
प्रभु प्रसन्न जाना हनुमाना। बोले वचन विगत अभिमाना
शाखा मृग कै बड़ि मनुसाई। शाखा ते शाखा पर जाई
लाँघि सिन्धु हाटक पुर जारा। निशिचर गण बधि विपिन उजारा
सो सब तव प्रताप रघुराई। नाथ न कछु मोरि प्रभुताई।
दो० ताकहँ प्रभु कछु अगम नहिं जा पर तुम अनुकूल।
तव प्रताप बड़वानलहि जारि सकै खल तूल ३२

सुनत बचन प्रभु बहु सुख माना मनक्रम बचन दास निज जाना।
माँगु बचन सुत बर अनुकूला। देउँ आजु तुम कहँ सुख मूला
नाथ भक्ति तव अति सुखदायिनि देहु कृपा करि शिव मन भायिनि
सुनि प्रभु परम सरल कपि बानी। एवमस्तु तब कहेउ भवानी
राम स्वभाव उमा जिन्ह जाना। ताहि भजन तजि भाव न आना
यह सम्बाद जासु उर आवा। रघुपति चरण भक्ति तेइँ पावा
सुनि प्रभु बचन कहैं कपि बृन्दा। जय जय जय कृपालु सुख कन्दा
तब रघुपति कपिपतिहि बुलावा। कहा चलैकर करहु बनावा
अब बिलम्ब केहि कारण कीजै। तुरत कपिन कहँ आयसु दीजै
कौतुक देखि सुमन बहु बर्षी। नभ ते भवन चले सुर हर्षी।

दो॰ कपि पति बेगि बुलाय उ आये यूथप यूथ ।
नाना बरण अतुल बल बानर भालु बरूथ ३३

प्रभु पद पंकज नावहिं शीशा। गरजहिं भालु महा बल कीशा।
देखी राम सकल कपि सेना। चितइ कृपा करि राजिव नयना
राम कृपा बल पाइ कपिन्दा। भये पक्षयुत मनहुँ गिरिन्दा।
हर्षि राम तब कीन्ह पयाना। शकुन भये सुन्दर शुभ नाना
जासु सकल मंगलमय कीती। तासु पयान शकुन यह नीती

प्रभु पयान जाना बैदेही। फरके बाम अंग सुभ तेही।
जोजो सगुन जानकिहिं होई। असगुन भयउ रावनहिं सोई
चला कटक को बरनै पारा। गरजहिं बानर भालु अपारा
नख आयुध गिरि पादप धारी। चले गगन महँ इच्छाचारी।
केहरिनाद भालु कपि करहीं। डगमगाहिं दिग्गज चिक्करहीं
छं० चिक्करहिं दिग्गज डोल महि गिरि लोल सागर खरभरे।
मन हर्ष दिनकर सोम सुर मुनि नाग किन्नर दुख टरे॥
कटकटहिं मरकट बिकट भट बहु कोटि कोटिन्ह धावहीं
जय राम प्रबल प्रताप कोसलनाथ गुन गन गावहीं॥
सक सहि न भार अपार अहिपति बार बार बिमोहई।
गहि दसन पुनि पुनि कमठ पीठ कठोर सो किमि सोहई॥
रघुबीर रुचिर पयान प्रस्थित जानि परम सुहावनी।
जनु कमठ खप्पर सर्पराज सो लिखत अबिचल पावनी॥
दो० इहि बिधि जाय कृपानिधि उतरे सागर तीर।
जहँ तहँ लागे खान फल भालु बिपुल कपि बीर ३४
उहाँ निसाचर रहहिं ससंका। जब ते जारि गयउ कपि लंका
निज निज गृह सब करहिं बिचारा। नहिं निसचर कुल केर उबारा

जासु दूत बल बरणि न जाई। तेहि आये पुर कवनि भलाई
अति सभीत सुनि पुरजन बानी। मन्दोदरी हृदय अकुलानी।
रही जोरि कर पति पद लागी। बोली बचन नीति रस पागी
कन्त करष हरि सन परिहरहू। मोर कहा अति हित चित धरहू
समुझत जासु दूत कइ करनी। स्रवहिं गर्भ रजनीचर घरनी
तासु नारि निज सचिव बुलाई। पठवहु कन्त जो चहहु भलाई
तव कुल कमल बिपिन दुखदाई। सीता सीत निसा सम आई
सुनहु नाथ सीता बिनु दीन्हे। हित न तुम्हार शम्भु अज कीन्हे
दो० राम बाण अहि गण सरिस निकर निशाचर भेक।
जब लगि ग्रसत न तब हिं लगि यतन करहु तजि टेक ३५
अबण सुनत शठ ताकर बानी। बिहँसा जगत बिदित अभिमानी
सभय सुभाव नारि कर साँचा। मंगल माँह अमंगल राँचा।
जो आवै मरकट कटकाई। जियहिं बिचारे निशचर खाई
कम्पहिं लोकप जाके त्रासा। तासु नारि सभीत बड़ि हासा
असकहि बिहँसि ताहि उर लाई। चलेउ सभा ममता अधिकाई
मन्दोदरी हृदय कर चिन्ता। भयो कन्त पर बिधि बिपरीता
बैठेउ सभा खबरि असि पाई। सिन्धु पार सेना सब आई

बूझेसि सचिव उचित मत कहहू। ते सब हँसे मौन करि रहहू।
जितहु सुरासुर तब श्रम नाहीं। नर बानर केहि लेखे माहीं।
दो० सचिव वैद्य गुरु तीनि जो प्रिय बोलहिं भय आस।
राज धर्म्म तन तीनि कर होइ बेगही नास ३६
सोइ रावरा कहँ बनी सहाई। अस्तुति करहिं सुनाइ सुनाई
अवसर जानि बिभीषरा आवा। भ्राता चररा सीस तेहिं नावा
पुनि सिर नाइ बैठ निज आसन। बोला बचन पाइ अनुशासन
जो कृपालु पूँछेहु मोहिं बाता। मति अनुरूप कहउँ मैं ताता
जो आपन चाहौ कल्याना। सुयश सुमति शुभ गति सुख नाना
तौ पर नारि लिलार गुसाईं। तजौ चौथि चन्दा की नाईं
चौदह भुवन एक पति होई। भूत द्रोह तिष्ठै नहिं सोई।
गुरा सागर नागर नर जोऊ। अलप लोभ भल कहै न कोऊ
दो० काम क्रोध मद लोभ सब नाथ नरक कर पन्थ।
सब परिहरि रघुबीर पद भजहु कहहिं सत ग्रन्थ ३७
तात राम नहिं नर भूपाला। भुवनेश्वर कालहु के काला।
ब्रह्म अनामय अज भगवन्ता। व्यापक अजित अनादि अनन्ता
गो द्विज धेनु देव हितकारी। कृपा सिन्धु मानुष तनु धारी।

जनरञ्जनभञ्जनखलब्राता। वेद धर्म्म रक्षक सुर त्राता।
ताहि बैर तजि नाइय माथा। प्रणतारति भञ्जनरघुनाथा
देहु नाथ प्रभु कहँ बैदेही। भजहु राम बिनु काम सनेही।
शरणागये प्रभुताहुनत्यागा। विश्वद्रोह कृत अघजेहिलागा।
जासुनामत्रयतापनशावन। सोइप्रभुप्रकटसमुझिजियरावन
दो॰ बार बार पद लागौं बिनय करौं दश शीश ।
परिहरि मान मोह मद भजहु कोशलाधीश ॥
सुनिपुलस्त्यनिजशिष्यसनकहिपठईयहबाता।
तुरतसोमैंतुमसनकही पाइसुअवसर तात ३८
माल्यवन्तअतिसचिवसयाना,तासुवचनसुनिअतिसुखमाना
तातअनुजतवनीतिविभूषणा,सोउरधरहुजोकहतविभीषणा
रिपु उतकर्ष कहत शठ दोऊ। दूरि न करहु इहाँ ते कोऊ।
माल्यवन्त गृहगयउबहोरी। कहेउविभीषणा पुनिकरजोरी
सुमतिकुमतिसबकेउररहई। नाथपुराणानिगमअसकहई
जहाँसुमतितहँसम्पतिनाना। जहाँकुमतितहँविपतिनिदाना
तवउरकुमतिबसीविपरीती। हितअनहितजानतरिपुप्रीती
कालरात्रिनिशिचरकुलकेरी। तेहि सीता पर प्रीति घनेरी

दो० तात चरण गहि माँगौं राखहु मोर दुलार ।
सीता देहु राम कहँ अति हित होइ तुम्हार ३९

बुध पुराण श्रुति सम्मत बानी। कही बिभीषण नीति बखानी
सुनत दशानन उठा रिसाई। खल तोहिं निकट मृत्यु अब आई
जियसि सदा शठ मोर जियावा। रिपु कर पक्ष सदा तोहिं भावा
कहसि न खल अस को जग माहीं। भुज बल जेहि जीते हम नाहीं
मम पुर बसि तपसिन सन प्रीती। शठ मिलु जाहि तापस कहु नीती
अस कहि कीन्हेसि चरण प्रहारा। अनुज गहे पद बारहिं बारा
उमा सन्त कै इहै बड़ाई। मन्द करत जो करै भलाई।
सचिव संग लै नभ पथ गयऊ। सबहिं सुनाइ कहत अस भयऊ

दो० राम सत्य संकल्प प्रभु सभा काल वश तोरि ।
मैं रघुनायक शरण अब जाउँ देहु जनि खोरि ४०

अस कहि चला बिभीषण जबहीं। आयुहीन भे निशिचर तबहीं
साधु अवज्ञा तुरत भवानी। कर कल्याण अखिल कै हानी
रावण जबहिं बिभीषण त्यागा। भयउ बिभव बिनु तबहिं अभागा
चलेउ हरषि रघुनायक पाहीं। करत मनोरथ बहु मन माहीं

देखिहौं जाइ चरण जलजाता। अरुण मृदुल सेवक सुखदाता
जे पद परसि तरी रिषिनारी। दण्डक कानन पावन कारी।
जे पद जनक सुता उर लाये। कपट कुरंग संग धरि धाये
हर उर सर सरोज पद जोई। अहो भाग्य मैं देखब सोई
दो॰ जिन पायँन की पादुका भरत रहे मन लाइ।
ते पद आजु विलोकिहौं इन नयनन अब जाइ ४१
इहि विधि करत सप्रेम विचारा। आयउ सपदि सिन्धु के पारा।
कपिन विभीषण आवत देखा। जानेउ कोउ रिपु दूत विशेखा
ताहि राखि कपिपति पहँ आये। समाचार सब ताहि सुनाये।
कह सुग्रीव सुनिय रघुराई। आवा मिलन दशानन भाई।
कह प्रभु सखा बूझिये काहा। कहे कपीश सुनहु नर नाहा
जानि न जाइ निशाचर माया। कामरूप केहि कारण आया
भेद हमार लेन शठ आवा। राखिय बाँधि मोहिं अस भावा।
सखा नीति तुम नीक विचारी। मम प्रण शरणागत भयहारी
सुनि प्रभु वचन हर्ष हनुमाना। शरणागत वत्सल भगवाना।
दो॰ शरणागत कहँ जो तजहिं निज अनहित अनुमानि।
ते नर पामर पाप मय तिन्हहिं विलोकत हानि ४२

कोटि विप्र वध लागहिं जाहू। आये शरणा तजौं नहिं ताहू
सन्मुख होइ जीव मोहिं जबहीं। जन्म कोटि अघ नासौं तबहीं
पापवन्त कर सहज सुभाऊ। भजन मोर तेहि भाव न काऊ
जो पै दुष्ट हृदय सो होई। मोरे सन्मुख आव कि सोई
निर्मल मन जन सो मोहिं पावा। मोहिं कपट छल छिद्र न भावा
भेद लेन पठवा दशशीशा। तबहुँ न कछु भय हानि कपीशा
जग महुँ सखा निशाचर जेते। लछिमनु हनहिं निमिष महुँ तेते
जो सभीत आवा शरणाई। रखिहौं ताहि प्राण की नाईं
दो० उभय भाँति तेहि आनहू हँसि कह कृपानिधान।
जय कृपालु कहि कपि चले अंगदादि हनुमान ४४
सादर तेहि आगे करि बानर। चले जहाँ रघुपति करुणाकर
दूरिहिं ते देखे दोउ भ्राता। नयनानन्द दान के दाता।
बहुरि राम छबिधाम विलोकी। रहा सो ठाढ़ एक पद रोकी
भुज प्रलम्ब कञ्जारुणलोचन श्यामल गात प्रणतभयमोचन
सिंह कन्ध आयत उर सोहा। आनन अमित मदन छबि मोहा
नयन नीर पुलकित अति गाता। मन धरि धीर कही मृदु बाता
निशिचर वंश जन्म सुर त्राता। नाथ दशानन कर मैं भ्राता

सहज पाप प्रिय तामस देहा। यथा उलूकहि तम पर नेहा

दो॰ अवगुन सुयश सुनि श्रवनँ प्रभु भञ्जन भयभीर।
त्राहि त्राहि आरत हरण शरण सुखद रघुवीर ४४

अस कहि करत दण्डवत देखी। तुरत उठे प्रभु हर्ष विशेखी।
दीनबचन सुनि प्रभु मनभावा। भुज विशाल गहि हृदय लगावा
अनुज सहित मिलि ढिग बैठारी। बोले बचन भक्त हितकारी
कह लंकेश सहित परिवारा। कुशल कुठाहर बास तुम्हारा
खल मण्डली बसह दिनराती। सखा धर्म्म निबहै केहि भाँती
मैं जानी तुम्हारि सब रीती। अति शय निपुण न भाव अनीती
बरु भल बास नरक कर ताता। दुष्ट संग जनि देहिं विधाता
अब पद देखि कुशल रघुराया। जो तुम कीन्ह जानि जन दाया

दो॰ तब लगि कुशल न जीव कहँ सपनेहुँ मन विश्राम।
जब लगि भजत न राम को शोक धाम तजि काम ४५

तब लगि हृदय बसत खल नाना। लोभ मोह मत्सर मद माना।
जब लगि उर न बसत रघुनाथा। धरे चाप शायक कटि भाथा
ममता तिमिर तरुण अँधियारी। राग द्वेष उलूक सुखकारी
तब लगि बसत जीव उर माहीं। जब लगि प्रभु प्रताप रवि नाहीं

अब मम कुशल मिटे भय भारे। देखि राम पद कमल तुम्हारे
तुम कृपालु जा पर अनुकूला। ताहि न व्यापु त्रिविध भय शूला
मैं निश्चर अति अधम सुभाऊ। सुभ आचरण कीन्ह नहिं काऊ
जो रूप मुनि ध्यान न पावा। सो प्रभु हर्षि हृदय मोहिं लावा

दो० अहो भाग्य मम अमित अति राम कृपा सुख पुञ्ज।
देखेउँ नयन विरंचि शिव सेव्य युगल पद कञ्ज ४६

सुनहु सखा निज कहउँ सुभाऊ। जानु भुशुण्डि शम्भु गिरिजाऊ
जो नर होइ चराचर द्रोही। आवे सभय शरण तकि मोही।
तजि मद मोह कपट छल नाना। करौं सद्य तेहि साधु समाना
जननी जनक बन्धु सुत दारा। तन धन भवन सुहृद परिवारा
सबकै ममता ताग बटोरी। मम पद मनहिं बाँधि बरि डोरी
समदरशी इच्छा कछु नाहीं। हर्ष शोक भय नहिं मन माहीं
अस सज्जन मम उर बस कैसे। लोभी हृदय बसत धन जैसे
तुम सारिखे सन्त प्रिय मोरे। धरौं देह नहिं आन निहोरे।

दो० सगुण उपासक परम हित निरत नीति दृढ़ नेम।
ते नर प्राण समान मोहिं जिन के द्विज पद प्रेम ४७

सुनु लंकेश सकल गुण तोरे। ताते तुम अतिशय प्रिय मोरे

रामवचन सुनि बानर यूथा। सकल कहहिं जय कृपा बरूथा
सुनत बिभीषण प्रभु की बानी। नहिं अघात श्रवणामृत जानी
पद अम्बुज गहि बारहिं बारा। हृदय समात न प्रेम अपारा।
सुनिये देव चराचर स्वामी। प्रणतपाल उर अन्तरयामी।
उर कछु प्रथम वासना रहेऊ। प्रभु पद प्रीति सरित सो बहेऊ
अब कृपालु निज भक्ति पावनी। देहु सदा शिव मन भावनी।
एवमस्तु कहि प्रभु रणधीरा। माँगा तुरत सिन्धु कर नीरा
यद्यपि सखा तोहिं इच्छा नाहीं। मम दरशन अमोघ जग माहीं
अस कहि राम तिलक तेहि सारा। सुमन वृष्टि नभ भयउ अपारा

दो॰ रावण क्रोध अनल निज श्वास समीर प्रचण्ड।
जरत बिभीषण राखेउ दीन्हेउ राज अखण्ड॥
जो सम्पति शिव रावणहिं दीन्ह दिये दश माथ।
सो सम्पदा बिभीषणहिं सकुचि दीन्ह रघुनाथ ४८

अस प्रभु छाँड़ि भजहिं जे आना। ते नर पशु बिनु पूँछ बिषाना
निज जन जानि ताहि अपनावा। प्रभु स्वभाव कपि कुल मन भावा
पुनि सर्व्वज्ञ सर्व्व उर वासी। सर्व्व रूप सब रहित उदासी।
बोले बचन नीति प्रतिपालक। कारण मनुज दनुज कुल घालक

सुनु कपीस लंकापति वीरा। केहि विधि उतरिय जलधि गँभीरा
संकुल उरग मकर झष जाती। अति अगाध दुस्तर सब भाँती
कह लंकेश सुनहु रघुनायक। कोटि सिन्धु शोषक तव सायक
यद्यपि तदपि नीति असगाई। विनय करिय सागर पहँ जाई
दो० प्रभु तुम्हार कुल गुरु जलधि कहहिं उपाय विचारि।
बिनु प्रयास सागर तरहिं सकल भालु कपि धारि ४९
सखा कह्यो तुम नीक उपाई। करव दैव जो होय सहाई
मंत्र न यह लक्ष्मण मन भावा। राम वचन सुनि अति दुख पावा
नाथ दैव कर कवन भरोसा। शोषिय सिन्धु करिय मन रोसा
कादर मन कर एक अधारा। दैव दैव आलसी पुकारा
सुनत विहँसि बोले रघुवीरा। ऐसेइ करब धरहु मन धीरा
अस कहि प्रभु अनुजहि समुझाई। सिन्धु समीप गये रघुराई
प्रथम प्रनाम कीन्ह प्रभु जाई। बैठे तट पुनि दर्भ डसाई।
जबहिं विभीषण प्रभु पहँ आये। पाछे रावण दूत पठाये।
दो० सकल चरित तिन्ह देखेउ धरे कपट कपि देह।
प्रभु गुण हृदय सराहि अति शरणागत पर नेह ५०
प्रकट बखानत राम सुभाऊ। अति सप्रेम गा बिसरि दुराऊ

रिपु कर दूत कपिन्ह जब जाना। ताहि बाँधि कपिपति पहँ आना
कह सुग्रीव सुनहु सब बनचर। अंग भंग करि पठवहु निसिचर
सुनि सुग्रीव वचन कपि धाये। बाँधि कटक चहु पास फिराये
बहु प्रकार मारन कपि लागे। दीन पुकारत तदपि न त्यागे।
जो हमार हर नासा काना। तेहि कोशलाधीश कर आना
सुनि लक्ष्मण तेहि निकट बुलाये। दया लागि हँसि दीन्ह छुड़ाये
रावण कर दीन्हेउ यह पाती। लक्ष्मण वचन बाँचु कुल घाती।

दो॰ कहेउ मुरखागर मूढ़ सन मम सन्देश उदार ।।
सीता देइ मिलहु नतु आवा काल तुम्हार ५१

तुरत नाइ लक्ष्मण पद माथा। चला दूत वरणत गुण गाथा
कहत राम यश लंका आवा। रावण चरण शीश तिन्ह नावा
विहँसि दशानन पूँछेसि बाता। कहसि न सुक आपनि कुशलाता
पुनि कह कुशल विभीषण केरी। जासु मृत्यु आई अति नेरी
करत राज्य लंका शठ त्यागा। होइहि यव कर कीट अभागा
पुनि कह भालु कीश कटकाई। कठिन काल प्रेरित चलि आई
तिन्ह के जीवन कर रखवारा। भयउ मृदुल चित सिन्धु विचारा
कहत पसिन्ह कर बात बहोरी। जिन के हृदय त्रास बड़ि मोरी

दो० भई भेंट की फिरि गये श्रवण सुयश सुनि मोर।
कहसि निरिष बल तेज बल कस चकित चित तोर ५२

नाथ कृपा करि पूँछेहु जैसे। मानेहु वचन क्रोध तजि जैसे
मिला जाइ जब अनुज तुम्हारा। जातहि राम तिलक तेहि सारा
रावण दूत हमहिं सुनि काना। कपिन्ह बाँधि दीन्हे दुख नाना
श्रवण नासिका काटन लागे। राम शपथ दीन्हीं तब त्यागे
पूँछेहु नाथ कीश कटकाई। बदन कोटि शत बरणि न जाई
नाना बरण भालु कपि धारी। विकटानन विशाल भयकारी
जेहि पुर दहेउ बधेउ सुत तोरा। सकल कपिन महँ तेहि बल थोरा
अमित नाम भट कठिन कराला। अतुल बरण तन तेज विशाला

दो० द्विविद मयन्दी नील नल अंगदादि विकटासि।
दधिमुख केहरि कुमुद गवज जामवन्त बलरासि ५३

ये कपि सब सुग्रीव समाना। इन्ह सम कोटि गनै को नाना
राम कृपा अतुलित बल तिनहीं। तृण समान त्रय लोकहि गिनहीं
अस मैं अवण सुना दश कन्धर। पक्ष अठारह यूथप बन्दर
नाथ कटक महँ सो कपि नाहीं। जो न तुम्हैं जीतहि रण माहीं
परम क्रोध मीजहिं सब हाथा। आयुसु पै न देहिं रघुनाथा।

शोषहिंसिन्धुसहितभरव्याला,सुरहिंनतवधरिकुधरविशाला।
मर्दिगर्दिमिलवहिंदशशीशा।ऐसेवचनकहहिंसबकीशा
गर्जहिंतर्जहिंसहजअशंका।मानहुग्रसनचहतअबलंका
दो० सहज शूर कपि भालु सब पुनि शिर पर श्रीराम।
रावण काल कोटि कहँ जीति सकहिं संग्राम ५४
राम तेज बल बुधि विपुलाई। शेष सहस शत सकहिं न गाई
सक शर एक शोषि शतसागर।तव भ्रातहिं पूँछेउ नयनागर
तासुवचनसुनिसागरपाहीं। माँगत पन्थ कृपा मन माहीं
सुनतवचनविहँसादशशीशा।जोअसमतिसहायकृतकीशा
सहज भीरु करिवचन दृढ़ाई। सागर सन ठानी मचलाई।
मूढ़ मृषा का करसि बड़ाई। रिपु बल बुद्धि थाह मैं पाई
सचिवसभीतविभीषणजाके।विजयविभूतिकहाँलगिताके
सुनिखलवचनदूतरिसिबाढ़ी।समयविचारिपत्रिकाकाढ़ी
राम अनुज दीन्ही यह पाती। नाथ बँचाइ जुड़ावहु छाती।
विहँसिवामकरलीन्हेसिरावन,सचिवबोलिशठलागुबँचावन।
दो० बातन मनहिं रिझाइ शठजनि घालसि कुलखीश।
राम विरोध न उबरिहहु शरण विष्णु अज ईश ॥

होउ मान तजि अनुज इव प्रभु पद पंकज भृंग।
होहिं राम सर अनल खल जनि कुल सहित पतंग ५५

सुनत सभय मन महँ मुसुकाई। कहै दसानन सबहिं सुनाई
भूमि परा कर गहत अकाशा। लघु तापस कर बाक बिलासा
कह सुक नाथ सत्य सब बानी। समुझह छाँड़ि प्रकृति अभिमानी
सुनह बचन मम परिहरि क्रोधा। नाथ राम सन तजह बिरोधा
अति कोमल रघुबीर सुभाऊ। यद्यपि अखिल लोक कर राऊ
मिलत कृपा प्रभु तुम पर करिहैं। उर अपराध न एकौ धरिहैं
जनक सुता रघुनाथहि दीजै। इतना कहा मोर प्रभु कीजै।
जब तेहिं कहेउ दैन बैदेही। चरण प्रहार कीन्ह सठ तेही
चरण नाइ सिर चला सो ताहीं। कृपा सिन्धु रघुनायक जाहीं
करि प्रणाम निज कथा सुनाई। राम कृपा आपनि गति पाई
ऋषि अगस्त्य कर साप भवानी। राक्षस भयउ रहा मुनि ज्ञानी
बन्दि राम पद बारहिं बारा। मुनि निज आश्रम कहँ पगु धारा

दो० बिनय न मानत जलधि जड़ गये तीनि दिन बीति।
बोले राम सकोप तब भय बिनु होय न प्रीति ५६

लक्ष्मण बाण सरासन आनू। सोषौं बारिधि बिसिख कृसानू

शठसन विनय कुटिलसन प्रीती। सहज कृपिनसन सुन्दरनीती
ममतारतसन ज्ञानकहानी। अतिलोभीसन बिरति बखानी।
क्रोधिहि सन कामिहि हरिकथा। ऊसर बीज बये फलयथा
असकहि रघुपति चाप चढ़ावा। यह मत लक्ष्मण के मन भावे
सन्धानेउ प्रभु विशिख कराला। उठी उदधि उर अन्तर ज्वाला।
मकर उरग झष गण अकुलाने। जरत जन्तु जलनिधि जब जाने।
कनक थार भरि मणि गण नाना। विप्र रूप आयेउ तजि माना
दो० काटे पै कदली फरै कोटि यतन कोउ सींच।
विनय न मान खगेश सुनु डाटेहि पै नव नीच ५७
सभय सिन्धु गहि पद प्रभु केरे। छमहु नाथ सब अवगुण मेरे
गगन समीर अनल जल धरणी। इन्ह कै नाथ सहज जड़ करणी
तव प्रेरित माया उपजाये। सृष्टि हेतु सब ग्रन्थन गाये।
प्रभु आयसु जेहि कहँ जस अहई। सो तेहि भाँति रहे सुख लहई
प्रभु भल कीन्ह मोहिं सिख दीन्ही। मर्यादा पुनि तुम्हरी हि कीन्ही।
ढोल गँवार शूद्र पशु नारी। ये सब ताड़न के अधिकारी
प्रभु प्रताप मैं जाब सुखाई। उतरिहि कटक न मोरि बड़ाई
प्रभु आज्ञा अपेल श्रुति गाई। करउ सो बेगि जो तुमहिं सुहाई।

दो० सुनत विनीत वचन अति कह कृपालु मुसुकाइ।
जेहि विधि उतरै कपि कटकु तात सो करहु उपाइ ५८

नाथ नील नल कपि दोउ भाई। लरिकाईं ऋषि आशिष पाई
तिनके परस किये गिरि भारे। तरिहहिं जलधि प्रताप तुम्हारे
मैं पुनि उर धरि प्रभु प्रभुताई। करि हौं बल अनुमान सहाई
यहि विधि नाथ पयोधि बँधाइय जेहि यह सुयश लोक तिहुँ गाइय
यहि शर मम उत्तर तट बासी। हतहु नाथ खल नर अघ रासी
सुनि कृपालु सागर मन पीरा। तुरतहिं हरी राम रणधीरा
देखि राम बल अतुलित भारी। हरषि पयोनिधि भयो सुखारी
सकल चरित कहि प्रभुहि सुनावा, चरन बन्दि पायोधि सिधावा

छं० निज भवन गवनेउ सिन्धु श्रीरघुवीर हिय मत भायऊ।
यह चरित कलि मल हर राज समति दास तुलसी गायऊ॥
सुख भवन संशय दमन शमन विषाद रघुपति गुण गना।
तजि आस सकल भरोस गावहिं सुनहिं सज्जन शुचि मना ३

दो० सकल सुमंगल दायक रघुनायक गुण गान।
सादर सुनहिं ते तरहिं भव सिन्धु बिना जल यान ५९

श्री राम चरित मानसे सकल कालिकलुष वि-
ध्वंसने विमल वैराग्य सम्पादनो
नाम पञ्चमस्सोपान-
स्समाप्तः

रामायण गीतावली मूल तुलसीकृत छापा टैप.

अनेक रागों में सुन्दर बाल चरित्रादि सम्पूर्ण लीला युक्त रामायण सातों काण्ड का आशय वर्णित है.

तथा. गीतावली सटीक बैजनाथजी छापा है.

सातों काण्ड रामायण की सम्पूर्ण कथा अनेक उत्तम २ रागों में वर्णित है बैजनाथ जी ने हरि भक्तों व सज्जनों के सरलता हेतु उत्तम रीति से ब्रजभाषा में टीका किया है.

रामायण दोहावली तुलसीदास जी मूल छापा टैप.

जिसमें ज्ञान भक्ति वैराग्य मिश्रित दोहे हैं और विशेष कर संतोष की शिक्षा प्रधान है.

विजय दोहावली तु·दा·जी छापा टैप.

श्री गोसाईं तुलसीदास जी ने अपनी तुलसीकृत रामायण के कठिन और गूढ़ार्थ दोहे चौपाई सोरठे आदि के भाव यथार्थ प्रकट करने के निमित्त छन्दों में प्रकाशित किया.

रामायण छन्दावली मू·तु·कृ·छापा टैप.

श्री रविकुल कैरव चन्द्र कौशल्या हृदयानन्द वर्द्धन का परमोत्तम चरित्र बालकाण्ड से उत्तरकाण्ड पर्य्यन्त मनोहर चौपय्या छन्द में वर्णित है.

तथा. मय तिलक बैजनाथजी छापा टैप.

जिसको श्री बैजनाथ जी ने कठिन २ स्थलों के गूढ़ २ शब्दों का आशय प्रत्येक पुराण शास्त्रादिकों के प्रमाण देकर ऐसा सरल कर दिया है जिसे सब सहज में समझ सक्ते हैं.

छप्पै रामायण मूल तुलसीकृत छापा टैप.

सातों काण्ड रामायण की कथा अति रुचिर छप्पै छन्दों में अतीव सरल पदों से वर्णन की गई है.

तथा. मय टीका बैजनाथ जी छापा टैप.

जिसको बैजनाथ जी ने कठिन २ स्थलों के गूढ़ २ शब्दों का आशय प्रत्येक पुराण शास्त्रादिकों के प्रमाणादेकर ऐसा सरल कर दिया है जिसे सब सहज में समझ सक्ते हैं.

विनय पत्रिका मूल तुलसीदास जीकृत छापा टैप.

गोसाईं तुलसीदास जी ने श्री रामचन्द्र परब्रह्म परमेश्वर और जानकी महारानी के विनय युक्त भजन राग आदि में वर्णन किये हैं.

तथा. मय टीका बाबू शिवप्रकाश जी छापा टैप.

जिस में भक्त भयहारी - अवध बिहारी - दीनहितकारी - रावणान्तकर्त्ता - विभीषणादि भयहर्त्ता श्री रामचन्द्र महाराजाधिराज प्रति विनय अति सुललित भजनों में निर्मित है.

तथा. मय टीका बैजनाथ जी छापा टैप.

जिसको बैजनाथ जी ने प्रति पद प्रति चरण व प्रत्यक्षर का अनेक शास्त्र, पुराण, स्मृति, उपनिषदादि

दृष्टान्त देकर सरल भाषा में निर्मित किया है -

तुलसी सतसयी मूल तुलसीकृत छापाटैप.

जिस में नाना प्रकार के नीति शास्त्र ग्रन्थों से छाँटकर सात सौ अत्यंत सरसोपाय दोहों में नीति वर्णन कीगई है.

तथा. मय टीका कामता शरण जी छा. टैं.

जिसको श्री ६ मत कृपासागर सकल गुरा आगर श्री स्वामी युगलानन्य शरण जी के किङ्कर राजकिङ्कर श्री पण्डित रामकान्ता शरण जी ने उत्तम रीति से वार्तिक भाषा टीका किया है.

तथा. मय टीका बैजनाथ जी छा. टैप.

जिस में नाना प्रकार के नीति शास्त्र ग्रन्थों से छाँटकर अतीव मनोहर सात सौ दोहों में धर्म नीति वर्णित है.

भगवद्गीता नवल भाष्य का विज्ञापन.

प्रकट हो कि यह पुस्तक श्री मद्भगवद्गीता सकल निगम पुराण स्मृति सांख्यादि शास्त्रों का परम रहस्य गीताशास्त्र का सर्व विद्यानिधान सौशील्य विनयौदार्य्य सत्यसंगर शौर्य्यादि गुण सम्पन्न नरावतार महानुभाव अर्जुन को परम अधिकारी जान के हृदय जनित मोहनाशार्थ सब प्रकार अपार संसार निस्तारक भगवद्भक्ति मार्ग दृष्टिगोचर कराया है वही उक्त भगवद्गीता कत्रवत् वेदान्त योग शास्त्रान्तर्गत जिसको अच्छे २ शास्त्रवेत्ता अपनी बुद्धि से पार नहीं पा सके तब मन्दबुद्धी जिन को कि केवल देश भाषा ही पठन पाठन करने की सामर्थ्य है वह कब इसके अन्तराभिप्राय को जान सक्ते हैं- और यह प्रत्यक्षही है कि जब तक किसी पुस्तक अथवा किसी वस्तु का अन्तराभिप्राय अच्छे प्रकार बुद्धि में न भासित हो तब तक आनन्द क्योंकर मिले इस प्रकार सम्पूर्ण भारतनिवासी श्री मद्भगवत्पदाब्जरसिकजनों के चित्तानन्दार्थ व बुद्धिबोधार्थ सन्तत धर्म्म धुरीरा सकलकला चातुरीरा सर्व्वविद्या विलासी भगवद्भक्त्यनुरागी श्रीमान् मुन्शी नवलकिशोर जी (सी. आई. ई.) ने बहुत साधन व्ययकर फ़र्रुखाबाद निवासि पण्डित उमादत्त जी से इस मनोरञ्जन वेद वेदान्त शास्त्रोपरि पुस्तक को श्री शंकराचार्य्य निर्मित भाष्यानुसार संस्कृत से सरल देश भाषा में तिलक रचाय नवल भाव्य आरव्य से प्रभात कालिक कमल सरिस प्रफुल्लित करा दिया है कि जिसको भाषा मात्र के जाननेवाले पुरुष भी जान सक्ते हैं ॥

रामायण

लंकाकाण्ड

मोटे अक्षरों में हरएक भक्तजन

के अनुराग और सुगमता से

पाठ करने के हेतु

प्रथम बार

कानपुर

मुंशी नवल किशोर, सी. आई. ई., के छापे खाने में छपी.

अप्रैल सन् १८९४ ई०

विज्ञापन.

यह विशालदरशी मोटे अक्षरों की रामायरा प्रथमबार छापी गई है अभी तक ऐसी रामायरा हिन्दुस्तान में नहीं छपी कि जिस के दर्शन से आप लोग प्रसन्नहो ते अब परमेश्वर की कृपा से हमारे कारख़ाने में छपी है और हम इस की प्रशंसा नहीं कर सक्ते जब आप लोग ख़ुद इस रामायरा को अवलोकन करेंगे तब आप प्रसन्न ता को प्राप्त होंगे- और यह रामायरा अलग २ काराड भी मिल सक्ती है. फ़क़त

नवलकिशोर.

मालिक मतबा नवलकिशोर प्रेसकानपूर व लखनऊ

नीचे लिखी हुई रामायरा हर क़िस्म की छापाख़ाना नवलकिशोर कानपूरव लखनऊ में ख़रीदारों को मिल सक्ती हैं.

रामायरा तु·क्र·सटीक रामचररादास किताबनुमा वपत्रानुमा छा·टैप सा·कां.

जिसको श्री रामचररा जीने भक्तजनों के उपकार और जगतकल्यारा के लिये वेद की ऋचाओं व अनेक प्रमारिाक श्लोकों से भूषित कर पद २ का भाषा टीका किया है.

रामायरा तुलसीकृत मूल मोटाअक्षरमय तसवीर छापाटैप.

क्षेपक वमाहात्म्य सहित-रावरा विजय व श्री गंगा जी-अहिरावरा नारान्तक रामदल संख्या सुलोचना कथा श्री रामायरा व सप्तदेव स्तुति भिन्न २ क्षेपक की रीति से संयुक्त है.

तथा -सुतवस्सित क़लम मय तसवीर छापा टैप ऊपर के अलङ्गरों सहित.

रामायरा तु·क्र·सटीक सुखदेवलाल किताबनुमा वपत्रानुमा छापाटैप.

जिसको सुखदेवलाल जीने जगत कल्यारा के अर्थ भाषा टीका रचकर प्रमारिाक श्लोकों से भूषित किया और पद पदार्थ के अर्थ को अति स्पष्ट रीति से सलिल देश भाषा में बखाना है.

रामायरा तु·क्र· सटीक बैजनाथ जी छापा टैप.

जिाको बैजनाथ जीने कठिन २ स्थलों के गूढ शब्दों का आशय प्रत्येक पुरारा शास्त्र उपनिषद् वेदादि के श्लोक ऋचा सूत्रादिकों के दृष्टान्त देकर ऐसा सरल कर दिया है जिसे सब सहज में समझ सक्ते है और अवलोकन करने के योग्य है.

रामायरा कवित्तावली मूल तु·छापाटैप.

जिसमें सम्पूरा आशय रामायरा का उक्त कविने अति रुचिर छन्दों में वरान किया है.

तथा. मय टीका बैजनाथजी सटीक.

जिसमें श्री महाराज राज राजेन्द्र रामचन्द्र जी का समस्त जीवन चरित्र सात काराडों में अत्युत्तम कवित्तों में वरिात है.

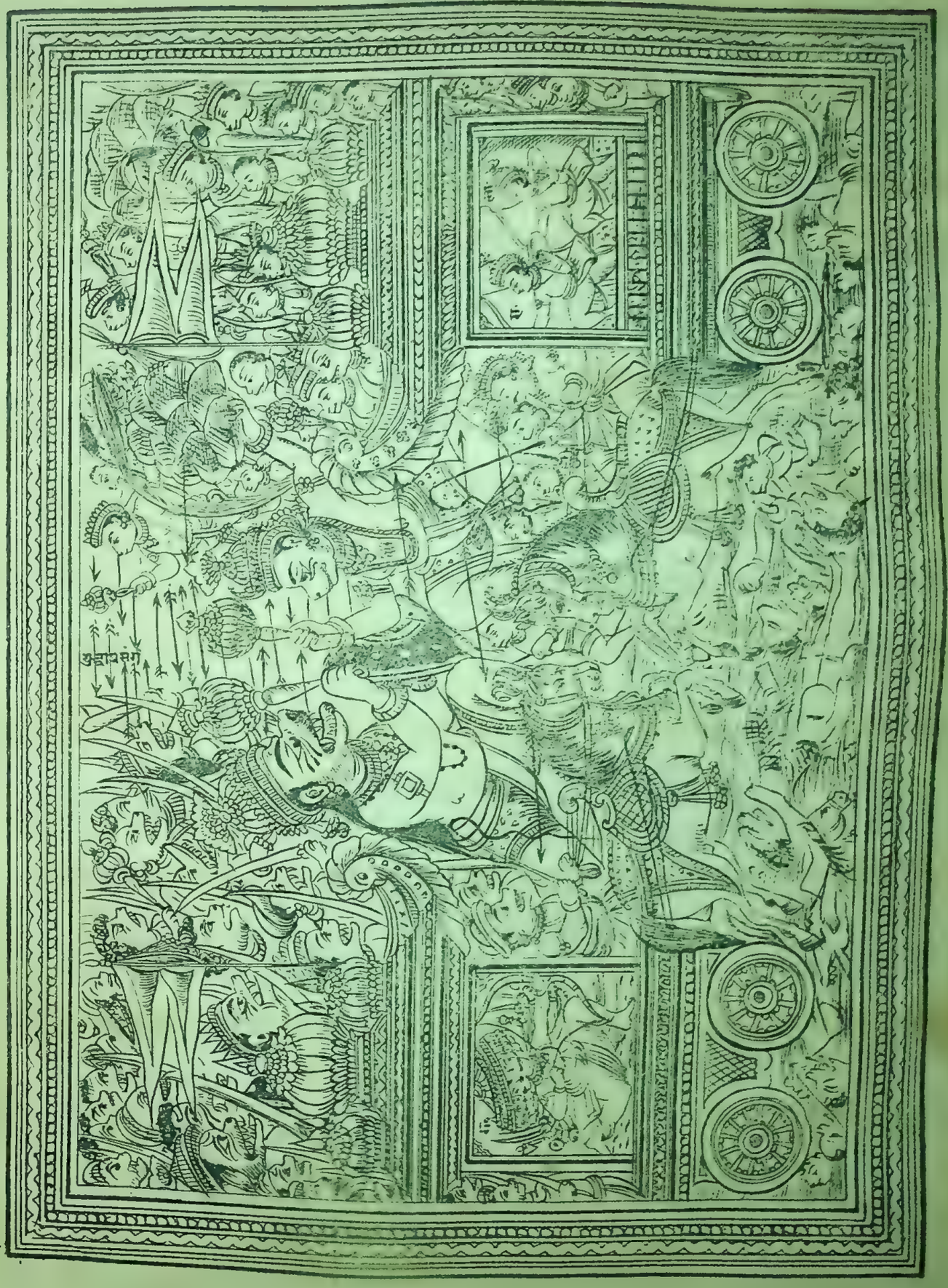

श्रीगणेशायनमः

श्रीरामायणतुलसीकृत

लंकाकाण्ड

शंखेंद्वाभमतीवसुन्दरतनुंशार्दूलचर्म्माम्बरं कालव्या-
लकरालभूषणधरंगंगाशशांकप्रियम्। काशीशंकलि-
कल्मषौघशमनंकल्याणकल्पद्रुमं नौमीड्यंगिरिजाप-
तिंगुणनिधिंश्रीशंकरंकामहम् १ योदक्षातिसतांशम्भुःके-
वल्यमपिदुर्ल्लभम्। खलानांदण्डकृत्योऽसौशंकरःशंत
नोतुमे २

दो॰ लवनिमेष परमाणु युग वर्ष कल्प शर चण्ड।
भजसि न मन तेहि राम कहँ कालजासुकोदण्ड १

सो॰ सिन्धुवचनसुनिरामसचिवबोलिप्रभुअसकहेउ।
अबबिलम्ब केहि काम करहु सेतु उतरै कटक॥
सुनहु भानुकुल केतु जामवन्त कर जोरि कह।
नाथ नामतव सेतु नर चढ़ि भवसागर तरहिं १

यहलघुजलधि तरतकतबारा। अससुनिपुनिकहपवनकुमारा
प्रभुप्रतापबड़वानल भारी। शोषेउ प्रथम पयोनिधिवारी
तवरिपुनारिरुदनजलधारा। भरयोबहोरि भयो तेहिखारा
सुनि अस उक्ति पवनसुतकेरी। विहँसे रघुपतिकपितन हेरी
जामवन्त बोले दोउ भाई। नलनीलहि सब कथा सुनाई।
रामप्रताप सुमिरिउर माहीं। करहु सेतु प्रयास कछु नाहीं
बोलिलिये कपिनिकरबहोरी। सकलसुनहुविनतीइकमोरी
रामचरणापंकजउर धरहू। कौतुक एकभालुकपिकरहू।
धावहु मर्कट विकट बरूथा। आनहु विटप गिरिनके यूथा
सुनिकपि भालु चलेकरिहूहा। जय रघुवीर प्रताप समूहा
दो० अतिउतंग तरु शैल गण लीलहिंलेहिंउठाइ।
आनिदेहिंनलनीलकहँ विरचहिं सेतु बनाइ २
शैलविशालआनिकपिदेहीं। कन्दुकइवनलनील सोलेहीं।
देखिसेतु अतिसुन्दररचना। विहँसिकृपानिधिबोलेवचना
परमरम्य सुन्दरयहधरणी। महिमाअमितजाइनहिंवरणी
करि हौं इहाँ शम्भु थापना। मोरे हृदय परम कल्पना।
सुनिकपीश बहु दूत पठाये। मुनिवर निकर बोलिलै आये

लिंग थापि विधिवत करि पूजा। शिव समान प्रिय मोहिं न दूजा
शिव द्रोही मम दास कहावे। सो नर स्वपनेहुँ मोहिं न पावे
शंकर विमुख भक्ति चह मोरी। सो नर मूढ़ मन्द मति थोरी
दो० शंकर प्रिय मम द्रोही शिव द्रोही मम दास।
ते नर करहिं कल्प भर घोर नरक महँ वास ३
जो रामेश्वर दरशन करिहैं। सो तन तजि मम धाम सिधरिहैं
जो गंगाजल आन चढ़ाई। सो सायुज्य मुक्ति नर पाई
होइ अकाम जो छल तजि सेइहि। भक्ति मोरि तिहि शंकर देइहि
मम कृत सेतु जो दरशन करिहैं। सो बिनु श्रम भवसागर तरिहैं
राम वचन सब के मन भाये। मुनिवर निज निज आश्रम आये
गिरिजा रघुपति की यह रीती। सन्तत करहिं प्रणत पर प्रीती
बाँधेउ सेतु नील नल नागर। राम कृपा यश भयउ उजागर।
बूड़हिं नाहिंन बोड़हिं जेई। भये प्रबल बोहित सम तेई।
महिमा यह न जलधि की बरणी। पाहन गुण न कपिन की करणी
दो० श्री रघुवीर प्रताप ते सिन्धु तरे पाषान ।
ते मतिमन्द जो राम तजि भजहिं जाय प्रभु आन ४
बाँधि सेतु अति सुदृढ़ बनावा। देखि कृपानिधि के मन भावा

चली सेन कछु बरणि न जाई। गरजहिं मरकट भट समुदाई
सेतु बन्ध ढिग चढ़ि रघुराई। चितव कृपालु सिन्धु बहुताई
देखन काहँ प्रभु करुणाकन्दा। प्रगट भये सब जलचर बृन्दा
नाना मकर नक्र झषब्याला। शत योजन तन परम विशाला
एकन्ह के डर एक पराहीं। एकन के डर एक पराहीं।
प्रभुहिं विलोकहिं टरहिं न टारे। मन हर्षित सब भये सुखारे
तिन की ओट न देखिय बारी। मगन भये हरि रूप निहारी।
चला कटक कछु बरणि न जाई। कोकहि सक कपि दल बिपुलाई
दो० सेतुबन्ध भइ भीर अति कपि नभ पन्थ उड़ाहिं।
अपर जलचरन्हि ऊपर चढ़ि चढ़ि पारहिं जाहिं ५
यह कौतुक विलोकि दोउ भाई। बिहँसि चले कृपालु रघुराई।
सेन सहित उतरे रघुवीरा। कहि न जात कछु यूथप भीरा।
सिन्धु पार प्रभु डेरा कीन्हा। सकल कपिन्ह कहँ आयसु दीन्हा
खाहु जाइ फल मूल सुहाये। सुनत भालु कपि जहँ तहँ धाये
सब तरु फले राम हित लागी। ऋतु अनऋतु हि काल गति त्यागी।
खाहिं मधुर फल बिटप हिलावहिं। लंका सन्मुख शिखर चलावहिं
जहँ कहँ फिरत निशाचर पावहिं। घेरि सकल मिलि नाचन चावहिं

दशानन काटि नासिका काना। कह प्रभु सुयश देहिं तब जाना
जिन कर नाशा कान निपाता। तेइ राक्षसाहिं कही सब बाता
सुनत श्रवण वारिधि बन्धाना। दश मुख बोलि उठा अकुलाना
दो० बाँधेउ जलनिधि नीरनिधि जलधि सिन्धु वारीश।
सत्य तोयनिधि नीरनिधि जलधि पयोधि नदीश ६
व्याकुलता निज सुमुखि बहोरी। विहँसि चला गृह करि मति भोरी
मन्दोदरी सुना प्रभु आये। कौतुकही पायोधि बँधाये
कर गहि पतिहि भवन निज आनी। बोली परम मनोहर बानी
चरण नाइ शिर अञ्चल रोपा। सुनहु वचन पिय परिहरि कोपा
नाथ बैर कीजै ताही सों। बुधि बल जीति सकिय जाही सों
तुमहिं रघुपतिहिं अन्तर कैसा। खल खद्योत दिवाकर जैसा
अति बल मधु कैटभ जिन मारा। महावीर दिति सुत संहारा
जेइ बलि बाँधि सहस भुज मारा। सोइ अवतरेउ हरण महि भारा
तासु विरोध न कीजिय नाथा। काल कर्म्म गुण जिन के हाथा
दो० रामहिं सौंपहु जानकिहि नाय कमल पद माथ।
सुत कहँ राज समर्पि बन भजहु जाय रघुनाथ ७
नाथ दीन दयालु रघुराई। बाघौ सम्मुख गये न खाई

चाहिय करन सो सब करि बीते। तुम सुर असुर चराचर जीते
वेद कहहिं अस नीति दशानन। चौथेपन हिं जाइ नृप कानन
तासु भजन कीजै तहँ भर्त्ता। जो कर्त्ता पालन संहर्त्ता।
सोइ रघुवीर प्रणात अनुरागी। भजहु नाथ ममता मद त्यागी
मुनि वर यतन करहिं जेहि लागी। भूप राज तजि होहिं विरागी
सोइ कोशला धीश रघुराया। आये करन तोहिं पर दाया
जो पिय मानहु मोर सिखावन। होइहि सुयश तिहूँ पुर पावन
दो० अस कहि लोचन वारि भरि गहि पद कम्पित गात।
नाथ भजहु रघुनाथ पद अचल होय अहिवात ८
तब रावण मय सुता उठाई। कहै लाग खल निज प्रभुताई।
सुन तैं प्रिया मृषा भय माना। जग योधा को मोहिं समाना
वरुण कुबेर पवन यम काला। भुज बल जितेसकल दिगपाला।
देव दनुज नर सब वश मोरे। कवन हेतु भय उपजा तोरे।
नाना विधि कहि तेहि समुझाई। सभा बहोरि बैठ सो जाई।
मन्दोदरी हृदय अस जाना। काल विवश उपजा अभिमाना।
सभा जाइ मंत्रिन सों बूझा। करिय कवन विधि रिपु सन जूझा।
कहहिं सचिव सुनु निशिचर नाहा। बार बार प्रभु पूछहु काहा।

कहइ कवन भय करिय विचारा। नर कपि भालु अहार हमारा
दो० वचन सवनि के अवरा सुनि कह प्रहस्त कर जोरि।
नीति विरोध न करिय प्रभु मंत्रिन मति अति थोरि ९
कह हिंसचिव सबठकुर सुहाती। नाथ न भल होइहि इहि भाँती
वारिधि लाँघि एक कपि आवा। तासु चरित मन महँ सब गावा
सुधा न रही तुम्हहिं सब काहू। जारत नगर न कस धरि खाहू
सुनत नीक आगे दुख पावा। सचिवन्ह अस मत प्रभुहि सुनावा
जो वारीश बँधायउ हेला। उतरे कपि दल सहित सुबेला।
सो जनु मनुज खाब हम भाई। वचन कहइ सब गाल फुलाई
सुनु मम वचन तात अति आदर। निज मन गुनइ मोहिं कहि कादर
प्रिय वानी जे सुनहिं जे कहहीं। ऐसे जग निकाय नर अहहीं
वचन परम हित सुनत कठोरे। कहहिं सुनहिं ते नर प्रभु थोरे
प्रथम बसीठ पठव सुन नीती। सीतहिं देइ करिय पुनि प्रीती
दो० नारि पाय फिरि जाहिं जो तौ न बढ़इय रारि।
नाहिं तो सन्मुख समर महँ तात करिय हठ मारि १०
यह मत जो मानहु प्रभु मोरा। उभय प्रकार सुयश जग तोरा
सुत सन कह दसकन्ध रिसाई। अस मति तोहिं शठ कवन सिखाई

अबहीं ते उर संशय होई। बेरा वंश सुत भयसि घमोई
सुनि पितु गिरा परुष अति घोरा। चला भवन कहि वचन कठोरा
हित मत तोहिं न लागत कैसे। काल विवश कहँ भेषज जैसे
सन्ध्यासमय जानि दशशीशा। भवन चला निरखत भुजबीशा
लंका शिखर रुचिर आगारा। अति विचित्र तहँ होते अखारा
बैठ जाइ तेहि मन्दिर रावन। लागे किन्नर गन्धर्व्व गावन।
बाजे ताल पखावज बीणा। नृत्य करहिं अप्सरा प्रवीणा
दो० सुनासीर शत सरिस सो सन्तत करै विलास ।
परम प्रबल रिपु शीश पर तदपि न मन कछु त्रास ११
इहाँ सुबेल शैल रघुबीरा। उतरे सेन सहित अति भीरा
शैल शृंग इक सुन्दर देखी। अति उतंग सम सुभग विशेखी
तहँ तरु किशलय सुमन सुहाये। लक्ष्मण रचि निज हाथ डसाये
ता पर रुचिर मृदुल मृग छाला। तेहि आसन आसीन कृपाला
प्रभु कृत शीश कपीश उछंगा। वाम दहिन दिशि चाप निषंगा
दुहुँ कर कमल सुधारत बाना। कह लंकेश मंत्र लगि काना।
बड़भागी अंगद हनुमाना। चरण कमल चापत विधि नाना
प्रभु पाछे लक्ष्मण बीरासन। कटि निषंग कर बाण शरासन

दो० यहि विधि करुणा शील गुण धाम राम आसीन।
धन्य सो नर यह ध्यान रत रहत सदा लवलीन ॥
पूरब दिशा विलोकि प्रभु देखा उदित मयंक।
कहेउ सबहिं देखहु शशिहि मृगपति सरिस अशंक १२

पूरब दिशि गिरि गुहा निवासी। परम प्रताप तेज बल रासी।
मत्त नाग तम कुम्भ विदारी। शशि केहरी गगन बन चारी
विथुरे नभ मुक्ताहल तारा। निशि सुन्दरी केर शृँगारा।
कह प्रभु शशि महँ मेचकताई। कहहु कहा निज निज मति भाई
कह सुग्रीव सुनहु रघुराई। शशि महुँ प्रगट भूमि की छाई
मारुह राहु शशिहि कह कोई। उर महँ परी श्यामता सोई
कोउ कह जब विधि रति मुख कीन्हा। सार भाग शशि कर हरि लीन्हा
छिद्र सो प्रगट इन्दु उर माहीं। तेहि मग देखिय नभ परिछाहीं
कह प्रभु गरल बन्धु शशि केरा। अति प्रीतम उर दीन्ह बसेरा
विष संयुत कर निकर पसारी। जारत विरहवन्त नर नारी।

दो० कह मारुत सुत सुनहु प्रभु शशि तुम्हार प्रिय दास।
तव मूरति तेहि उर बसति सोइ श्यामता भास ॥
पवन तनय के वचन सुनि विहँसे राम सुजान ।

दक्षिणादिशि अवलोकि प्रभु बोले कृपानिधान १३
देखु बिभीषण दक्षिण आसा। घन घमण्ड दामिनी बिलासा
मधुर मधुर गर्जत घन घोरा। होइ वृष्टि जनु उपल कठोरा
कहत बिभीषण सुनहु कृपाला। होइ न तड़ित न वारिद माला
लंका शिखर रुचिर आगारा। तहँ दशकन्धर केर अखारा।
छत्र मेघ डम्बर शिर धारी। सो प्रभु जलद घटा अतिकारी
मन्दोदरी श्रवण ताटंका। सो प्रभु जनु दामिनी दमंका।
बाजहिं ताल मृदंग अनूपा। सोइ रव सरस सुनहु सुर भूपा।
प्रभु सुसुकान देखि अभिमाना। चाप चढ़ाइ बाण सन्धाना
दो० छत्र मुकुट ताटंक सब हते एकही बाण ।
सब के देखत महि परे मर्म्म न काहू जान ॥
अस कौतुक करि राम शर प्रविसे आइ निषंग।
रावण सभा ससंक सब देखि महा रस भंग १४
कम्प न भूमि न मरुत विशेखा। अस्त्र शस्त्र कोउ नयन न देखा
सोच हिं सब निज हृदय विचारी। अशकुन भयउ भयंकर भारी
रावण देखि सभा भय पाई। विहँसि वचन कह युक्ति बनाई।
शिरौ गिरे सन्तत शुभ जाही। मुकुट गिरे कस अशकुन ताही

शयन करहु निज निज गृह जाई। गवने भवन सकल शिर नाई
मन्दोदरी शोच उर बसेऊ। जबते आवरा फूल महि खसेऊ
सजल नयन कह युग कर जोरी। सुनहु प्राणपति विनती मोरी
कन्त राम विरोध परिहरहू। जानि मनुज जनि हठ उर धरहू।
दो० विश्वरूप रघुवंश मणि करहु वचन विश्वास।
लोक कल्पना वेद कह अंग अंग प्रति जासु १५
पद पाताल शीश अज धामा। अपर लोक अंग अंग विश्रामा
भ्रकुटि विलास भयंकर काला। नयन दिवाकर कच घनमाला
जासु घ्राण अश्वनीकुमारा। निशि अरु दिवस निमेष अपारा
श्रवण दिशा दश वेद बखानी। मारुत श्वास निगम निज बानी
अधर लोभ यम दशन कराला। माया हास बाहु दिगपाला
आनन अनल अम्बुपति जीहा। उतपति पालन प्रलय समीहा
रोमावली अष्ट दश भारा। अस्थि शैल सरिता नस जारा
उदर उदधि अधगो कुजातना। जगमय प्रभु की बहु कल्पना
दो० अहंकार शिव बुद्धि अज मन शशि चित्त महान।
मनुज वास चर अचरमय रूप राशि भगवान॥
अस विचारि सुनु प्राणपति प्रभु सन वैर विहाइ।

प्रीति करहु रघुवीर पद मम अहिबात न जाइ १६

विहँसा नारि वचन सुनि काना। अहो मोह महिमा बलवाना
नारिसुभाव सत्य कवि कहहीं। अवगुण आठ सदा उर रहहीं
साहस अनृत चपलता माया। भय अविवेक असौच अदाया
रिपु कर रूप सकल तैं गावा। अति विशाल भय मोहिं सुनावा
सो सब प्रिया सहज वश मोरे। समुझि परा प्रभाव अब तोरे
जानेउँ प्रिया तोरि चतुराई। यहि मिसि कहहु मोरि प्रभुताई
तब बत कही गूढ़ मृगलोचनि। समुझत सुखद सुनत भय मोचनि
मन्दोदरि मन महँ यह ठयऊ। पियहि काल वश मति भ्रम भयऊ

दो० बहु विधि जल्पेसि सकल निशि प्रात भयेउ शाकंध
सहज अशंक सुलंकपति सभा गयो मद अन्ध १७

सो० फूले फले न बेत यदपि सुधा वरषहिं जलद।
मूरख हृदय न चेत जो गुरु मिलहिं विरञ्चि सम २

अथ क्षेपक

दो० मंत्रिन सहित दशानन चढ़ेउ धवरहर जाय ।
सारन कहत बरावन देखहु कपि समुदाय १८

येजो सिंहनाद किलकरहीं। सप्त ताल उन्नत सञ्चरहीं।

सहस कोटि अतुलित बलवाना। इन्ह के सँग वानर परिमाना
रण अजीत ये सहज अशंका। नाद सुने काँपै गढ़ लंका
नभ निरखहु इन के लंगूरे। जनु ऋतु पावस युग धनु पूरे
विश्वकरमा के सुत गुणखानी। इन्ह परसे पय शिल उतरानी
बसहिं ताम्र गिरि कन्दर माहीं। गोदावरी विमल जल पाहीं।
अति बल आगे धावहिं वीरा। इन्ह पर कृपा करहिं रघुवीरा
करहिं यमहु कर संगर ढीला। कज्जल वरण नाम नल नीला
दो० पदुम अठारह कपि कटक चल इन की सुजाँह।
निज कर सुरभि सुमन लै रघुपति पूजी बाँह १९
यह जो आवत अचल समाना। चौदह तार ऊँच परमाना
वास पुलिन्दा के तट करई। अम्बुद निकर निरखि कर धरई
रक्त कमल दल सम सब देहा। जनु विकसेउ सन्ध्या कर मेहा
हतै मेदिनी पूँछ भँवाई। लंका सौंह चितव जनु खाई।
तारासुअन बालि को जायो। अति जुझार रघुपति मन भायो
हृदय गगन इहि के प्रभु भानू। पञ्च पदुम कपि निकर प्रधानू
करै वज्र वासव कर भंगा। उदयाचल कहँ लेइ उछंगा
परम चतुर सेनप इहि लागी। रघुपति कृपा करत बड़ भागी

दो० पाउँ धरा धरि चापै पन्नग होइ अकाज ।
सेन अग्र धर देखहु यह अंगद युवराज २०

यह जो श्वेत वरण तनु रेखा। मनहुँ रजतगिरि शृंग विशेखा
दीर्घकेश दारुण भुज दण्डा। चलत चपल बल बुद्धि प्रचण्डा
वास करै जल निधि के तीरा। पान करै गोमती सुनीरा
नृप सुग्रीव केर अधिकारी। सबल व्यूह यह रचै सँवारी
जन्मत चन्द्रहि ग्रसन उड़ाना। इहि कर पुरुषारथ जग जाना
निरखि गगन राका शशि सोहा। शिशु अज्ञान तेहि लगि मन मोहा
धरणी धसकि धरन जब उड़ेऊ। सत्तरि योजन ते पुनि फिरेऊ

दो० कोटि पञ्च शत मर्कट रहैं सर्व्वदा साथ ।
कालहु तेरण लरि सकै कुमुद नाम कपिनाथ २१

येदेखहु जे चहुँ दिशि घुमड़े। मनहुं लंक सावन घन उमड़े
आगू पीछू दश दिशि धावहिं। शिला शृंग तरु त्वरत आवहिं
सहस नाग बल सबहिं समाना। सप्त पद्म इन कर परमाना
काशीपुरी वास इन केरी। समर कतहुँ जिन पीठि न फेरी।
तीसरण दन्त नख आयुध धारी। द्वन्द्व युद्ध ये जानहिं भारी
ध्वजकेतु यूथप इन्ह केरा। लंका निकट कीन्ह जेहि डेरा

इहि कर जेठ बन्धु जमवन्ता। तिहि केवल कर पावक ओन्ता
देव दनुज को जूझे ताही। धरा होइ कर कन्दुक जाही
बसै अशंक नर्म्मदा तीरा। अशनि समान अभेद शरीरा
दो० सचिव सुकराठ राज कर रघुवर करप्रिय दास।
सो जड़ मन्द जो याहि रण चहै जीतन की आस २२
अब देखहु यह यूथ अपारा। पीत वरण होइ गयउ पहारा
बाल अरुण मरीचि जस फूटी। निशिचर निकर तमीचह छूटी
चौबिस अर्बुद इन कर जूहा। सहस बुन्द शत कोटि समूहा
शिला शैल जे आगे परहीं। पाँयन मर्दि गर्द सम करहीं
कञ्चन गिरि कन्दर के वासी। इन कर यूथ नाथ अविनाशी
अतिबल वासव कर हितकारी। सरवा सुकराठ के सुखकारी
पान करै गंगा कर नीरा। पर्वत शृंग समान शरीरा।
छिन छिन सिंहनाद जो होई। गर्जत आवत है कपि सोई
दो० यशतिहुँ भराडल गालित गजबल कर नाहिंन अंत।
यह कपिराजा केसरी सुवन जासु हनुमन्त २३
उत्तर दिशि देखहु रजधानी। जनु दुकाल लगि शलभ उड़ानी
मरकट निकर बिकल बल टूटे। आवत उदधि कूल जनु छूटे

इहि दल यूथ नाथ जो अहई। अतिबलवन्त राज सँग रहई
कपि के रूप अनल अविनासी। ये द्वौ पारिपात्र के वासी
अति सुन्दर अरु समर विपक्षा। महा बली द्वौ गवय गवक्षा
ये द्वौ गर्ज्जत अति रणा धीरा। पीवहिं तुंगभद्र कर नीरा।
सत्तरि सहस नाग बल जाही। इन महँ एक कहौं मैं ताही
अपर बली गँधमादन नामा। रणा अजेय पुनि सब गुणाधामा
दो॰ बासव बिबुध वृन्द महँ तेजन महँ जस भानु।
पनस नाम यह वानर अतिबल नीति निधानु २४
यह जो कुमुद पत्र सम देहा। जस कैलास शरद कर मेहा
लोचन मधु पिंगल अति लोने। काम रूप चितवत चहुँ कोने
लंका सौंह लँगूर फिराई। गर्ज्जत प्रलय मेघ की नाई।
सुरपति साथ युद्ध कहँ गयऊ। तब ते काम रूप यह भयऊ
मघवा इहि सन कीन्हि मिताई। करै सदा यह देव सहाई।
सहस कोटि कपि इहि के संगा। राते पीत श्वेत बहु रंगा।
वचन सत्य मम प्रभु यह नाहीं। अपर बालि जानहु मन माहीं
दरदुर शैल सदन इहि केरा। मन वच करम राम कर चेरा
दो॰ गिरि वर लाँघत आवत चलत उड़ावत रेणु।

तरणि तेज इन रूँधेउ तारा तनय सुषेणा २५

यहकपिलसतमनहुंगिरिगेरू। दिनसुखछबिजसिलहतसुमेरू
सोइकपिप्रथमलंकजेहिजारी। प्रभुकेहिलगिआवतइहिवारी
अंजनिगर्भजन्मजसभयऊ। क्षुधितजननिसनअरतशठ्यऊ
तेइकहसुफलअरुणाफलखाहू। सुनतचितवइतउतचितचाहू
बालअरुणालखिगगनउड़ाना। असेसितरणिवासवतबजाना
मारेउ वज्र चिबुक भइ टेढ़ी। कोपि पवन समीरसम बेढ़ी
देवविकलहोइअस्तुतिकीन्हा। कुलिशहोउतनुअसवरदीन्हा
विद्या पढ़त भानु के पाहीं। उलटी गति रवि आगे जाहीं
वारिधि लाँघेउ गोपद जैसे। यहि कपीश सन जूझब कैसे
दो० अम्बक पीत बाल रवि वदन तेज अति राज ।
पवनतेवेग अधिकजनु अनलनितम्बसुभाज २६

अतसी कुसुम वरणातनरेखा। पुरुष पुराणा धरे नर वेखा
मत्तगजेन्द्र सुराउभुजदण्डा। धनुष वाणा असि धरे प्रचण्डा
उर विशाल अतिउन्नतकन्धर। कम्बु कण्ठ रेखा प्रसन्न वर
सुखछबिकी उपमाकविजोहीं। शशि सरोज समकहेनसोहीं
दशनपाँतिकीकांतिकहेको। ललकतमनपटतरहिंलेहेको

देखत अधरन की अरुणाई। बिम्बाफल बन्धूक लजाई।
सुकतुण्डहि नासिका लजावै। यकै सुकबिनहिं पटतर आवै
शीशजटा के मुकुट बनाये। भालविशाल तिलक अति भाये
दक्षिणादिशिलक्ष्मणाबलवीरा। रामबाहुसम अतिरणधीरा
दो० वामभागविभीषणाशिर अभिषेका राज ।
बीजमंत्रसबजानहिं अक्षरकरहिंसुकाज २१
अब देखहु यह सेन सुहाई। भादों मेघ घटा जनु छाई।
कन्या एक ब्रह्म उपजाई। नयन भूरि अरु रूप लुनाई
बालभाव दिनकरबलदीन्हा। ऋतुजानीबासवरतिकीन्हा
जातकजमल वीर द्वौ जाये। देव अंश वानर तनु पाये।
किष्किन्धा परइनकर थाना। देव सरिस मधुवन उद्याना
ऋष्यमूक इनकर विश्रामा। चातुर्मास्य बसे जहँ रामा
वालीज्येष्ठरामरणमारा। यहिकहँराजतिलक प्रभु सारा।
तारा तासु भई पटरानी। जिहिकरसुत अंगद अति ज्ञानी
सहसशंकुकर अरबुदएका। अरबुदसहस किबिन्दुविवेका
सहसविन्दुगराकनगरीमाना। महापद्मतेहिकरपरिमाना
ऐसे पद्म अठारह साजा। विग्रह बढ़ेउ राम के काजा

वीरवेष अरुनयन विशाला। कम्बुकण्ठमोतिनकीमाला
दो० हस्ती साठि सहस्र बल सदा धर्म्म की सीव ।
श्वेत छत्र शिर शोभित यह राजा सुग्रीव ॥
इहि विधि सकल देखाये शारन कपिदलयूह
गनै न रावरा काल वश अतिशय गर्वसमूह २८

इति

इहाँ प्रात जागे रघुराई। पूँछा मत सब सचिव बुलाई
कहह बेगि का कीयउपाई। जामवन्त कह पद शिर नाई
सुनु सर्वज्ञ सकलउर वासी। सर्व रूप सब रहित उदासी
मंत्र कहबनिज मतिअनुसारा। दूत पठाइय वालि कुमारा
नीक मंत्र सब के मन माना। अंगद सन कह कृपानिधाना
बालितनयबुधिबलगुराधामा। लंका जाहु तातममकामा
बहुतबुझाइ तुमहिंका कहऊं। परम चतुर मैंजानत अहऊं
काज हमार तासुहित होई। रिपुसन करेहु बतकही सोई
सो० प्रभु आज्ञा धरि शीश चरण वन्दि अंगद कहेउ।
सोइ गुरा सागर ईशराम कृपा जा पर करहु ॥
स्वयं सिद्ध सब काज नाथ मोहिं आदर दयउ।

असविचारियुवराजतनपुलकितहर्षितहिये ३
वन्दि चरणाउर धरि प्रभुताई। अंगद चलेउ सबहिंसिर नाई
प्रभु प्रतापउर सहज असंका। रणा बाँकुरा बालि सुतबंका
पुर पैठत रावण कर बेटा। खेलत रहा सो होइ गइ भेंटा
बातहिंबात कर्ष बढ़ि आई। युगल अतुल बल पुनि तरुणाई
तेहि अंगद कहँ लात उठाई। गहि पद पटकेउ भूमि भ्रमाई
निशिचर निकर देखि भट भारी। जहँ तहँ चले न सकहिं पुकारी
एकएक सन मर्म न कहहीं। समुझि तासु बल चुपहोइ रहहीं
भयउ कोलाहल नगर मँझारी। आवा कपि लंका जेइँ जारी।
अबधौं कहा करिहि करतारा। अतिसभीत सबकरहिं विचारा
बिनु पूँछे मगु देहिं बताई। जेहि विलोकु सोजाहि सुखाई
दो० गयो सभा दरबार रिषु सुमिरि राम पद कंज।
सिंह ठवनि इत उत चितै धीर वीर बल पुंज २९
तुरत निशाचर एक पठावा। समाचार रावणहिं सुनावा।
सुनतवचन बोलेउ दशशीशा। आनहु बोलि कहाँ कर कीशा
आयसु पाइ दूत बहु धाये। कपि कुंजरहि बोलि ले आये
अंगद दीख दशानन वैसा। सहित प्राण कज्जल गिरि जैसा

भुजाविटपशिर शृंग समाना। रोमावली लता तरु नाना।
मुख नासिका नयन अरु काना। गिरि कन्दरा खोह अनुमाना।
गयउ सभा मनमेकु न सुरा। बालि तनय अति बल बाँकुरा
उठी सभा सब कपि कहँ देखी। रावण उर भा क्रोध बिसेखी
दो० यथा मत्त गज यूथ महँ पञ्चानन चलि जाय ।
राम प्रताप सँभारि उर बैठ सबहिं शिर नाय ३०
कह दशकन्ध कवन तैं बन्दर। मैं रघुवीर दूत दशकन्धर।
मम जनकहि तोहिं रही मिताई। तव हित कारण आयउँ भाई
उत्तम कुल पुलस्त्य कर नाती। शिव विरंचि पूजेहु बहु भाँती
वर पायउ कीन्हेउ सब काजा। जीतेहु लोकपाल सुर राजा
नृप अभिमान मोह वश किम्बा। हरि आनेहु सीता जगदम्बा
अब शुभ कहा करहु तुम मोरा। सब अपराध क्षमहिं प्रभु तोरा
दशन गहहु तृण कण्ठ कुठारी। पुरजन संग सहित निज नारी।
सादर जनकसुता करि आगे। इहि विधि चलहु सकल भय त्यागे
दो० प्रणतपाल रघुवंश मणि त्राहि त्राहि अब मोहिं।
सुनतहिं आरत वचन प्रभु अभय करहिंगे तोहिं ३१
रे कपि पोच बोलु सम्भारी। मूढ़ न जानसि मोहिं सुरारी।

कह निज नाम जनक कर भाई। केहि नाते मानिये मिताई
अंगद नाम बालि कर बेटा। तो सों कबहुँ भई होइ भेंटा
अंगद वचन सुनत सकुचाना। रहा बालि वानर मैं जाना।
अंगद तहि बालि कर बालक। उपजेउ वंश अनल कुल घालक
गर्भ न गयउ व्यर्थ तुम जाये। निज मुख तापस दूत कहाये
अब कहु कुशल बालि कहँ अहई। विहँसि वचन अंगद अस कहई
दिन दश गये बालि पहँ जाई। बूझेहु कुशल सखा उर लाई
राम विरोध कुशल जस होई। सो सब तुमहिं सुनाइहि सोई।
सुन शठ भेद होइ मन ताके। श्री रघुवीर हृदय नहिं जाके
दो० हम कुल घालक सत्य तुम कुल पालक दश शीश।
अन्धौ बधिर न कहहिं अस अवगा नयन तोहिं बीश ३२
शिव विरंचि सुर मुनि समुदाई। चाहत जासु चरण सेवकाई
तासु दूत होइ हम कुल बोरा। ऐसी मति उर विहर न तोरा।
सुनि कठोर वाणी कपि केरी। कहत दशानन नयन तरेरी
खल तव वचन कठिन मैं सहऊं। नीति धर्म्म सब जानत अहऊं
कह कपि धर्म शीलता तोरी। हमहुँ सुनी कृत परतिय चोरी
देखेउ नयन दूत रखवारी। बूड़ि न मरहु धर्म्म व्रत धारी

नाकाकाननिधुभगिनिनिहारी। क्षमाकीन्ह तुमधर्मविचारी
धर्म्मशीलता तवजगजागी। पावा दरश हमहुँ बड़ भागी।
दो० जानिजल्पसिजड़जन्तुकपिशठविलोकुममबाहु।
लोकपालबलविपुलशशियसनहेतुजिमिराहु॥
पुनिनभसरममकरनिकरकरकमलनपरवास।
शोभितभयउ मरालइवशम्भुसहितकैलास ३३
तुम्हरेकटकमाहसुनुअंगद। मोसनभिरहिकवनयोधाबद
तवप्रभुनारिविरहबलहीना। अनुजतासुदुखदुखितमलीना
तुम सुग्रीव कूल द्रुम दोऊ। बन्धु हमार भीरु अति सोऊ
जामवन्त मंत्री अति बूढ़ा। सोकिमि होइ समर आरूढ़ा
शिल्पकर्म्म जानत नलनीला। है कपि एक महाबलशीला
आवा प्रथम नगरजेहिंजारा। सुनिहँसिबोलेउबालिकुमारा
सत्यवचनकह निशिचरनाहा। साँचहु कीश कीन्ह पुरदाहा
रावरा नगर अल्पकपि दहई। को अस झूठकहैकोसुनई
जो अतिसुभटसराहेहु रावन। सोसुग्रीव केर लघु धावन।
चलै बहुत सो वीर न होई। पठवा खबरि लेन हम सोई
दो० अबजानापुर दहेउ कपिबिनु प्रभु आयसुपाइ।

गयउ न फिरि निज नाथ पहँ तोहि भय रहेउ लुकाइ।
सत्य कहसि दश कराठ तैं मोहिं न सुनि कछु कोह
कोउ न हमरे कटक अस तुम सन लरत जो सोह ३४
प्रीति विरोध समान सन करिय नीति अस आहि।
जो मृगपति बध मेडुकहि भलो कहै को ताहि॥
यद्यपि लघुता राम कहुँ तोहिं बधे बड़ दोष।
तदपि कठिन दश कराठ सुन क्षत्रि जाति कर रोष ३५
हँसि बोलेउ दश मौलि तब कपि कर गुरा बड़ एक
जो प्रतिपालै तासु हित करै उपाय अनेक ३६
धन्य कीश जो निज प्रभु काजा। जहँ तहँ नाचहिं परिहरि लाजा
नाचि कूदि करि लोग रिझाई। पति हित करत कर्म्म निपुराई
अंगद स्वामि भक्त तव जाती। प्रभु गुरा कस न कहसि इहि भाँती
मैं गुरा गाहक परम सुजाना। तव कटु वचन करौं नहिं काना
कह कपि तव गुरा गाहकताई। सत्य पवन सुत मोहिं सुनाई
बन विध्वँसि सुत बधि पुर जारा। तदपि न तेइ कृत कछु अपकारा
सोइ विचारि तव प्रकृति सुहाई। दश कन्धर मैं कीन्ह ढिठाई
देखेउँ आइ जो कछु कपि भाषा। तुम्हरे लाज न रोष न माषा

दो० वक्र उक्ति धनु वचन शर हृदय दहेउ रिपु कीस।
प्रतिउत्तर सड़सिन मनहुँ काढ़त भट दससीस ३७

जोअस मति पितु खाय हृ कीसा। कहि असवचन हँसा दससीसा
पितहि खाइ खातेउँ अब तोही। अबहीं समुझि परा कछु मोही
बालि बिमल यश भाजन जानी। हतौं न तोहिं अधम अभिमानी
कह रावरा रावरा जग केते। मैं निज श्रवरा सुने सुनु तेते।
बलि जीत नयक गयउ पताला। राखा बाँधि शिशुन हय शाला
खेलहिं बालक मारहिं जाई। दया लागि बलि दीन्ह छुड़ाई।
एक बहोरि सहस भुज देखा। धाइ धरा जनु जन्तु विशेखा।
कौतुक लागि भवन लै आवा। सो पुलस्त्य मुनि जाइ छुड़ावा

दो० एक कहत मोहिं सकुच अति रहा वालि की काँख।
तिन महँ रावरा कवन तुम सत्य कहहु तजि माख ३८

सुनु शठ सोइ रावरा बल शीला। हर गिरि जानु जासु भुज लीला
जानु उमापति जासु सुराई। पूजे जेहि शिर सुमन चढ़ाई।
शिर सरोज निज कर हन्ह उतारी। पूजे अमित बार त्रिपुरारी
भुज विक्रम जानहिं दिगपाला। शठ अजहूं जिन के उर शाला
जानहिं दिग्गज उर कठिनाई। जबजब भिरेउँ जाइ बरिआई।

जिन के दशन कराल न फूटे। उर लागत मूलक इव टूटे।
जासु चलत डोलत इमि धरणी। चढ़त मत्त गज जिमि लघु तरणी
सोइ रावण जग बिदित प्रतापी। सुनेन श्रवण अलीक प्रतापी
दो० तेहि रावण कहँ लघु कहसि नर कर करसि बखान।
रे कपि बर बर खर्ब्ब खल अब जाना तव ज्ञान ३९
सुनि अंगद सकोप कह बानी। बोलु सँभारि अधम अभिमानी
सहस बाहु भुज गहन अपारा। दहन अनल सम जासु कुठारा।
जासु परशु सागर खर धारा। बूड़े नृप अगणित बहु बारा
तासु गर्ब जेहि देखत भागा। सो नर किमि दशकराठ अभागा
राम मनुज कस रे शठ बंगा। धन्वी काम नदी पुनि गंगा
पशु सुर धेनु कल्प तरु रूखा। अन्न दान अरु रस पीयूषा
वैनतेय खग अहि सहसानन। चिन्तामणि की उपल दशानन
सुनु मति मन्द लोक बैकुराठा। लाभ कि रघुपति भक्ति अकुराठा
दो० सेन सहित तव मान मथि बन उजारि पुर जारि।
कस रे शठ हनुमान कपि गयउ जो तव सुत मारि ४०
सुनु रावण परिहरि चतुराई। भजसि न कृपा सिन्धु रघुराई।
जो खल भयसि राम कर द्रोही। ब्रह्म रुद्र सक राखि न तोही

मूढ़ मृषा जनि मारसि गाला। राम वैर होइहि अस हाला
तव सिर निकर कपिन के आगे। परिहैं धरनि राम शर लागे
तब तव सिर कन्दुक इव नाना। खेलहिं भालु कीश चौगाना
जबहिं समर कोपहिं रघुनायक। छूटहिं अति कराल बहु शायक
तब कि चलिहि अस गाल तुम्हारा। अस विचारि भजु राम उदारा
सुनत वचन रावण पर जरा। बरत अनल महँ जनु घृत परा।

दो० कुम्भकर्ण सम बन्धु मम सुत प्रसिद्ध शक्तारि।
मोर पराक्रम सुनेसि नहिं जितेउँ चराचर झारि ४१

शठ शाखा मृग जोरि सहाई। बाँधा सिन्धु इहै प्रभुताई।
लाघहिं खग अनेक बारीशा। सूर न होहिं सुनहु जड़ कीशा।
मम भुज सागर जल बल पूरा। जहँ बूड़े सुर नर बल शूरा
बीस पयोधि अगाध अपारा। को अस वीर जो पावहिं पारा
दिगपालन मैं नीर भरावा। भूप सुयश खल मोहिं सुनावा
जौपै समर सुभट तव नाथा। पुनि पुनि कहसि जासु गुण गाथा
तौ वसीठ पठवा केहि काजा। रिपु सन प्रीति करत नहिं लाजा
हर गिरि मथन निरखि मम बाहू। पुनि शठ कपि निज स्वामि सराहू

दो० सूर कवन रावण सरिस निज कर काटे शीश।

हमेउँ अनल महँ बार बहु हर्षित सारि गिरीश ४२
जरत विलोकेउँ जबहिं कृपाला। विधि के लिखे अंक निज भाला
नर के कर आपन बध बाँची। हँसेउँ जानि विधि गिरा असाँची।
सो मन समुझि त्रास नहिं मोरे। लिखा विरञ्चि जरठ मति भोरे
आन वीर को शठ मम आगे। पुनि पुनि कहसि लाज परित्यागे
कह अंगद सलज्ज जग माहीं। रावण तोहिं समान कोउ नाहीं
लाजवन्त तव सहज सुभाऊ। निज मुख कहहिं न काऊ
शिर अरु शैल कथा चित रही। ताते बार बीस तैं कही।
सो भुजबल राखेउ उर घाली। जितेउ न सहस बाहु बलि बाली।
सुनु मति मन्द देह अब पूरा। काटे शीश न होइय शूरा।
बाजीगर कहँ काहिय न बीरा। काटे निज कर सकल शरीरा
दो० जरहिं पतंग विमोह वश भार बहहिं खर वृन्द।
ते नहिं शूर कहावहीं समुझि देखु मति मन्द ४३
अब जनि बत बढ़ावरवल करही। सुनु मम वचन मान परिहरही।
दश मुख मैं न वसीठी आयउ। अस विचारि रघुवीर पठायउ
बार बार इमि कहेउ कृपाला। नहिं गजारि यश बधे शृगाला
मन महँ समुझि वचन प्रभु केरे। सहेउँ कठोर वचन शठ तेरे

नाहिंत करिसुख भञ्जन तोरा। लै जातेउँ सीतहिं बरजोरा।
जानेउँ तव बल अधम सुरारी। सूने हरि आनी पर नारी
तैं निशिचर पति गर्ब बहूता। मैं रघुपति सेवक कर दूता
जो नराम अपमानहिं डरऊं। तोहिं देखत अस कौतुक करऊं

दो० तोहिं पटकि महि सेन हति चौपट करि तव गाउँ
मन्दोदरी समेत शठ जनक सुतहि लै जाउँ ४४

जो अस करउँ न तदपि बड़ाई। मुये बधे कछु नहिं मनुसाई
कौलकामवश कृपण विमूढ़ा। अतिदरिद्र अयशी अतिबूढ़ा
सदारोग वश सन्तत क्रोधी। रामविमुख श्रुति सन्त विरोधी
तनुपोषक निन्दक अघखानी। अनजीवत सम चौदह प्रानी।
अस विचारि खल बधौं न तोहीं। अब जनि रिस उपजायसि मोहीं
पुनि सकोप कह निशिचर नाथा। अधर दशन गहि मीजत हाथा
रे कपि पोच मरण अब चहसी। छोट वदन बात बड़ि कहसी
कटु जल्पसि जड़ कपि बल जाके। बुधि बल तेज प्रताप न ताके

दो० अगुण अमान विचारि तेहि दीन्ह पिता बनवास।
सो दुख अरु युवती विरह पुनि निशि दिन मम त्रास॥
जिन के बल का गर्ब तोहिं ऐसे मनुज अनेक।

खाहिंनिशाचरदिवसनिशिमूढ़समुझतजिटेक४५
जबतेकीन्हरामकरनिन्दा। क्रोधवन्त तबभयउ कपिन्दा।
हरिहरनिन्दासुनहिंजेकाना। होइ पाप गो घात समाना
कटकटाइकपिकुंजरभारी। दोउभुजदण्डतमकिमहिमारी
डोलत धरणी सभासद खसे। चले भागि भय मारुत ग्रसे
गिरत दशानन उठा सँभारी। भूतल परेउ मुकुट षट चारी
कछु निजकर लै शिरनि सँभारे। कछु अंगद प्रभु पास पँवारे
आवत मुकुट देखि कपि भागे। दिनहीं लूक परन बिधि लागे
कै रावण करि कोप चलाये। कुलिश चारि आवत अति धाये
कह प्रभु हँसि जनि हृदय डेराहू। लूकन अशनि केतु नहिं राहू।
ये किरीट दश कन्धर केरे। आवत बालि तनय के प्रेरे।
दो० कूदि गहे कर पवन सुत आनि धरे प्रभु पास।
कौतुक देखहिं भालु कपि दिनकर सरिस प्रकास ४६
उहाँ कहत दशकन्धरि साई। धरि मारहु कपि भागि न जाई
इहि बिधि वेगि सुभट सब धावहु। खाहु भालु कपि जहँ तहँ पावहु
महि अकीश करि फेरि दुहाई। जियत धरहु तपसी दोउ भाई
पुनि सकोप बोलेउ युवराजा। गाल बजावत तोहिं न लाजा

मरुगरकाटि निलज कुलघाती। बलविलोकि विहरत नहिं छाती
रे तिय चोर कुमारग गामी। खल मलराशि मन्द मति कामी
सन्निपात जल्पसि दुर्बादा। भयसि कालवश पाठ मनुजादा
याको फल पावहुगे आगे। वानर भालु चपेटनि लागे
राम मनुज बोलत असबानी। गिरहिन तव रसना अभिमानी।
गिरिहै रसना संशय नाहीं। शिरन समेत समर महि माहीं
सो० सोनर क्यों दशकन्ध बालि बधेउ जेहिं एक शर।
बीसहु लोचन अन्ध धृक तव जन्म कुजाति जड़॥
तव शोणित की प्यास तृषित राम शायक निकर।
तजेउँ तोहिं तेहि त्रास कटु जल्पसि निशिचर अधम॥
मैं तव दशन तोरिबे लायक। आयसु पै न दीन्ह रघुनायक
असरिस होत दशौं मुख तोरौं। लंका गहि समुद्र महँ बोरौं
गूलर फल समान तव लंका। बसहिं मध्य जन्तु जन्तु अशंका।
मैं बानर फल खात न बारा। आयसु दीन्ह न राम उदारा
युक्ति सुनत रावण मुसुकाई। मूढ़ सिखे कहँ अधिक झुठाई
बालिक बहुँ असगाल न मारा। मिलित यासिन तैं भयसि लबारा
साँचेहुँ मैं लबार भुज बीहा। जो न उपारौं तव दश जीहा

राम प्रताप सुमिरि करि कोपा। सभा माँझ करि प्रण पद रोपा
जो मम चरण सकहि शठ टारी। फिरहिं राम सीता मैं हारी।
सुनहु सुभट सब कह दशशीशा। पद गहि धरणि पछारहु कीशा
इन्द्रजीत आदिक बलवाना। हर्षि उठे जहँ तहँ भट नाना
झपटहिं करि बल विपुल उपाई। पद न टरै बैठहिं शिर नाई।
पुनि उठि झपटहिं सुर आराती। टरै न कीश चरण इहि भाँती
पुरुष कुयोगी जिमि उरगारी। मोह विटप नहिं सकहिं उपारी
दो० भूमि न छाँड़ कपि चरण देखत रिपु मद भाग।
कोटि विघ्न जिमि सन्त कहँ तदपि नीति नहिं त्याग ४७
कपि बल देखि सकल हिय हारे। उठा आपु कपि के परचारे
गहत चरण कह बालिकुमारा। मम पद गहे न तोर उबारा।
गहसि न राम चरण शठ जाई। सुनत फिरा मन अति सकुचाई
भयो तेज हत श्री सब गई। मध्य दिवस जिमि शशि सोहई।
सिंहासन बैठा शिर नाई। मानहुँ सम्पति सकल गँवाई
जगदाधार प्राणपति रामा। तासु विमुख किमि लह विश्रामा
उमा राम कर भ्रकुटि विलास॥ होइ विश्व पुनि पावै नासा
तृण ते कुलिश कुलिश तृण करहीं। तासु दूत पद कहु किमि टरहीं

पुनि कपि कही नीति विधि नाना। मानत ताहिं काल नियराना
रिपु मद मथि प्रभु सुयश सुनाये। अस कहि चले बालि नृप जाये।
अबहीं मुरुख का करौं बड़ाई। हति हौं तोहिं खिलाइ खिलाई।
प्रथमहिं तासु तनय कपि मारा। सो सुनि रावन भयो दुखारा
यातुधान अंगद बल देखी। भे व्याकुल सब हृदय विशेखी।
दो० रिपु बल धर्षि हर्ष हिय बालि तनय बल पुञ्ज।
सजल नयन अति पुलकि तन गहे राम पद कञ्ज॥
साँझ जानि दश कराठ तब भवन गयो बिलखाइ।
मन्दोदरी अनेक विधि बहुरि कहा समुझाइ ४८
कन्त समुझि मन तजहु कुमतिही। सोहन समर तुमहिं रघुपतिही
राम अनुज धनु रेख खचाई। सोनहिं लाँघेहु अस मनुसाई।
पिय तेहि ते जीतब संग्रामा। जाके दूतन के अस कामा
कौतुक सिन्धु लाँघि तव लंका। आयउ कपि केहरी अशंका
रखवारे हति विपिन उजारा। देखत तुमहिं अक्ष जिन्ह मारा।
जारि नगर जेइ कीन्हेंसि छारा। कहाँ रहा बल गर्व्व तुम्हारा।
अब पति मृषा गाल जनि मारहु। मोरकहा कछु हृदय विचारहु।
पति रघुपतिहि मनुज जनि जानहु। अगजगनाथ अतुल बल मानहु

बाणा प्रताप जान मारीचा। तासु कहा मानेहु नहिं नीचा
जनकसभा अगरीतमहिपाला। रहेउ तहाँ तुम गर्ब्ब विशाला।
भञ्जि धनुष जानकी विवाही। तब संग्राम जितेहु नहिं ताही
सुरपति सुत जाना बल थोरा। राखा जियत आँखि यक फोरा।
सूर्पनखा की गति तुम देखी। तदपि हृदय नहिं लाज विशेखी
दो० बधि विराध खर दूषणहिं लीला हतेउ कबन्ध।
बालिएक शर मारेउ तेहि नरकह दशकन्ध ४९
जेहि जल नाथ बँधायो हेला। उतरेउ कपि दल सहित सुबेला।
कारुणीक दिनकर कुलकेतू। दूत पठायउ तव हित हेतू।
सभा माँझ जेइ तव बल मथा। करि बरूथ महँ मृगपति यथा।
अंगद हनुमत अनुचर जाके। रण बाँकुरे वीर अति बाँके
तेहि कहँ पिय पुनि पुनि नरकहू। दृषा मान मम ता मद गहहू
अहह कन्त कृत राम विरोधा। काल विवश मन होय न बोधा
काल दण्ड गहि काहु न मारा। हरै धर्म्म बल बुद्धि विचारा।
निकट काल जेहि आवत साईं। तेहि भ्रम होइ तुम्हारिहि नाईं
दो० दुइ सुत मारेउ दहेउ पुर अजहुँ पूर पिय देहु ।
कृपासिन्धु रघुवीर भजि नाथ विमल यश लेहु ५०

नारिवचनसुनिविशिवसमाना।सभागयउठिहोतविहाना
बैठाजाइ सिंहासन फूली।अति अभिमान त्रास सब भूली
इहाँराम अंगदहिं बुलावा। आइ चरण पंकज शिर नावा
अति आदर समीप बैठारी। बोले विहँसि कृपालु खरारी
बालि तनय अति कौतुक मोहीं। तात सत्य कहु पूँछौं तोहीं
रावरायातुधानकुलटीका।भुजबलअतुलजासुजगलीका
तासुमुकुटतुमचारि चलाये। कहहु तात कवनी विधि पाये
कहाबालि सुत सुनहु खरारी। मुकुट न होयँ भूपगुण चारी।
साम दाम अरु दण्ड विभेदा। नृपउर बसहिं नाथ कह वेदा।
नीतिधर्म्मके चरणासुहाये। असजियजानि नाथ पहँ आये

दो० धर्म्महीन प्रभुपद विसुख कालविवशदशशीश
आयेगुण तजि रावराहिं सुनहु कोशलाधीश
परम चतुरता अवरा सुनि विहँसे राम उदार।
समाचार तब सब कहे गढ़के बालिकुमार ५१

रिपुके समाचारजब पाये। राम सचिव तब निकट बुलाये।
लंकाबंका चारि दुआरा। केहि विधि लागिय करहु विचारा
तबकपीशऋक्षेशविभीषण।सुमिरिहृदय दिनकरकुलभूषण

करि विचार तिन मंत्र दृढ़ावा। चारि अनी कपि कटक बनावा
यथा योग सेनापति कीन्हे। यूथ सकल बोलि तिन्ह लीन्हे।
प्रभु प्रताप सब कहि समुझाये। सिंहनाद करि सब कपि धाये
हर्षित राम चरण शिर नावैं। गहि गिरि शिखर वीर सब धावैं
गर्जहिं तर्जहिं भालु कपीशा। जय रघुवीर कोशलाधीशा।
जारत परम दुर्ग गढ़ लंका। प्रभु प्रताप कपि चले अशंका
घटादोप करि चहुँ दिशि घेरी। मुखहिं निशान बजावहिं भेरी
दो० जयति राम भ्राता सहित जय कपीश सुग्रीव।
गर्जे केहरि नाद कपि भालु महा बल सींव ५२
लंका भयउ कुलाहल भारी। सुनेउ दशानन अति हंकारी
देखि बानरन्ह केरि ढिठाई। विहँसि निशाचर सेन बुलाई।
आये कीश काल के प्रेरे। खुधावन्त सब निशिचर मेरे ।
असकहि अट्टहास शठ कीन्हा। गृह बैठे अहार विधि दीन्हा
सुभट सकल चारिहु दिशि जाहू। धरि धरि भालु कीश सब खाहू
उमा रावणहिं अस अभिमाना। जिमि टिट्टिभ पग करत उताना
चले निशाचर आयसु माँगी। गहि कर भिरिडिपाल बर सांगी
तोमर मुद्गर परिघ प्रचण्डा। शूल कृपाण परशु गिरिखण्डा।

जिमि अरुणोपल निकर निहारी। धाये खग शठ मांस अहारी
चोंच भंग दुख तिनहिं न सूझा। तिमि धाये मनुजाद अबूझा
दो० नानायुध शर चाप धरि यातुधान बल वीर।
कोटि कँगूरन चढ़ि गये कोटि कोटि रणधीर ४३
कोटि कँगूरन सोहहिं कैसे। मेरु शृंग पर जनु घन जैसे
बाजहिं ढोल निशान जुझाऊ। सुनि सुनि सुभटन के मन चाऊ
बाजहिं भेरि नफीरि अपारा। सुनि कादर उर होइ दरारा।
देखि न जाइ कपिन के ठट्ठा। अति विशाल तनु भालु सुभट्टा।
धावहिं गनहिं न औघट घाटा। पर्वत फोरि करहिं गहि बाटा
कटकटाइ कोटिन भट गर्जहिं। दशानन ओठ काटि अति तर्जहिं
उतरावराइत राम दुहाई। जयति जयति करि परी लराई।
निशिचर शिखर समूह ढहावहिं। कूदि धरहिं कपि फेरि चलावहिं
छं० धरि कुधर खराड प्रचराड मर्कट भालु गढ़ पर डारहीं।
झपटहिं चरण गहि पटकि महि महँ बार बार प्रचारहीं॥
अति तरुण तरल प्रताप तर्जहिं तमकि गढ़ पर चढ़ि गये
कपि भालु चढ़ि मन्दिरन जहँ तहँ राम यश गावत भये १
दो० एक एक गहि रजनिचर पुनि कपि चले पराइ।

ऊपर आपुन तर असुरगिरहिं धरणी पर आइ ५४

रामप्रतापप्रबलकपिजूथा। मर्दहिं निशिचरनिकर बरूथा।
चढ़े दुर्ग पुनि जहँ तहँ वानर। जय रघुवीर प्रताप दिवाकर
चले तमीचर निकर पराई। प्रबल पवन जिमि घन समुदाई।
हाहाकार भयो पुर भारी। रोवहिं आरत बालक नारी
सब मिलि देहिं रावणहिं गारी। राज करत जेइँ मृत्यु हँकारी
निजदलविचल सुना जब काना। फिरे सुभट लंकेश रिसाना
जोरण विमुख फिरा मैं जाना। तेहि मारि हौं कराल कृपाना
सर्वस खाइ भोग करि नाना। समर भूमि भा दुर्लभ प्राना।
उग्रवचन सुनि सकल डराने। फिरे क्रोध करि सुभट लजाने।
सन्मुख मरण वीर की शोभा। तब तिन तजा प्राण कर लोभा।

दो॰ बहु आयुध धरि सुभट सब भिरहिं प्रचारि प्रचारि।
कीन्हे व्याकुल भालु कपि परिघ प्रचण्ड निमारि ५५

भय आतुर कपि भागन लागे। यद्यपि उमा जीतिहैं आगे।
कोउ कह कहँ अंगद हनुमन्ता। कहँ नल नील दुविद जमवन्ता।
निजदलविचल सुना हनुमाना। पश्चिम द्वार रहा बलवाना।
मेघनाद तहँ करै लराई। टूट न द्वार परम कठिनाई।

पवनतनय मनभा अति क्रोधा। गर्जेउ प्रलयकाल समयोधा
कूदि लंक गढ़ ऊपर आवा। गहि गिरि मेघनाद पर धावा
भञ्जेउ रथ सारथी निपाता। तासु हृदय महँ मारेउ लाता।
दूसर रथ विकल तेहि जाना। स्यन्दन घालि तुरत घर आना
दो० अंगद सुनेउ कि पवनसुत गढ़ पर गयउ अकेल।
समर बाँकुरा बालिसुत तर्कि चलेउ करि खेल ४६
युद्ध विरुद्ध क्रुद्ध दोउ बन्दर। राम प्रताप सुमिरि उर अन्तर
रावण भवन चढ़े दोउ भाई। करहिं कोशलाधीश दुहाई
कलश सहित सब भवन ढहावहिं। देखि निशाचर अति भय पावहिं
नारि वृन्द कर पीटहिं छाती। अब दोउ कपि आये उतपाती
कपि लीला करि सबहिं डरावहिं। रामचंद्र कर सुयश सुनावहिं
पुनि कर गहि कञ्चन के खम्भा। करन लगे उतपात अरम्भा
कूदि परे रिपु कटक मझारी। लागे मर्दन भुज बल भारी
काहू लात चपेटन केहू। भजेहु न रामहिं सो फल लेहू।
दो० एक एक सन महिं करि तोरि चलावहिं मुराड।
रावण आगे परहिं ते जनु फूटहिं दधि कुराड ५७
महा महा मुखिया जे पावहिं। ते पद गहि प्रभु पास चलावहिं

कहहिं बिभीषण तिनके नामा। देहिं राम तिन्ह कहँ निज धामा
खल मनुजाद जो आमिष भोगी। पावहिं गति जोचत योगी
उमा राम मृदु चित करुणाकर। बैर भाव सोहिं सुमिरत निशिचर
देहिं परम गति अस जिय जानी। कोकृपालु अस अहै भवानी
जे अस प्रभु न भजहिं भ्रम त्यागी। ते मति मन्द सो परम अभागी
अंगद अरु हनुमन्त प्रवेशा। कीन्ह दुर्ग अस कह अवधेशा
लंका महँ कपि सोहहिं कैसे। मथहिं सिन्धु दुइ मन्दर जैसे।

दो० भुज बल रिपु दल दलि मले उ देखि दिवस कर अन्त।
कूदे युगल प्रयास बिनु आये जहँ भगवन्त ५८

प्रभु पद कमल शीश तिन नाये। देखि सुभट रघुपति मन भाये
राम कृपा करि युगल निहारे। भये विगत श्रम परम सुखारे
गये जानि अंगद हनुमाना। फिरे भालु मर्कट भट नाना
यातुधान प्रदोष बल पाई। धाये करि दश शीश दुहाई
निशिचर अनी देखि कपि फिरे। कटकटाइ जहँ तहँ भट भिरे
दोउ दल मिलहिं प्रचारि प्रचारी। लरहिं सुभट नहिं मानहिं हारी।
वीर तमीचर सब अति कारे। नाना वरण बली मुख भारे
सबल युगल दल सम अति योधा। विविध प्रकार लरहिं करि क्रोधा

प्राइट शरद पयोद घनेरे। लखत मनहुँ मारुत के प्रेरे
अवनि अकम्पन अरु अतिकाया। विचरत सेन करीतिन माया
भयउ निमिष महँ अति अँधियारा। काहु न सूझै अपन परारा
मारु खाहु सब करहिं पुकारा। वृष्टि होइ रुधिरोपल छारा
दो० देखि निविड़ तम दश हु दिशि कपिदल भयउ खभार।
एकहि एक न देखत जहँ तहँ करहिं पुकार ५९
सकल मर्म्म रघुनायक जाना। लिये बोलि अंगद हनुमाना
समाचार सब कहि समुझाये। सुनत कोपि कपिकुंजर धाये
पुनि कृपालु हँसि चाप चढ़ावा। पावक शायक सपदि चलावा
भयउ प्रकाश कतहुँ तम नाहीं। ज्ञान उदय जिमि संशय जाहीं।
तबहिं बली सुख पाइ प्रकाशा। धाये कोपि विगत श्रम त्रासा
हनूमान अंगद रण गाजे। हाँक सुनत रजनीचर भाजे।
भागत भट पटकहिं गहि धरणी। करहिं भालु कपि अद्भुत करणी
गहि पदडारहिं सागर माहीं। मकर उरग झष धरि धरि खाहीं
दो० कछु घायल कछु रण परे कछु गढ़ चले पराइ।
गर्जेउ मर्कट भालु भट रिपु दल बल विचलाइ ६०
निशा जानि कपि चारिउ अनी। आये सब जहँ कोशल धनी

राम कृपा करि चितवा जबहीं। भये विगत श्रम बानर तबहीं
वहाँ दशानन सचिव हँकारे। सब सन कहेसि सुभट जे मारे।
आधा कटक कपिन संहारा। कहहु वेगि का करिय विचारा
मालवन्त इक जरठ निशाचर। रावण मातु पिता मंत्री वर।
बोला वचन नीति अति पावन। तात सुनहु कछु मोर सिखावन
जब ते तुम सीता हरि आनी। अशकुन होहिं न जात बखानी
वेद पुराण जासु यश गावा। तासु विमुख सुख काहु न पावा
दो० हिरण्याक्ष भ्राता सहित मधु कैटभ बलवान।
जेइँ मारेउ सोइ अवतरेउ कृपासिन्धु भगवान॥
काल रूप खल बल दहन गुणागार घन बोध।
जेहि सेवहिं शिव कमल भव तिहि सन कौन विरोध ६१
परिहरि वयर देहु वैदेही। भजहु कृपा निधि परम सनेही
ताके वचन बाण सम लागे। करिया मुख करि जाहु अभागे।
बूढ़ भयसि न तु मरतेउँ तोहीं। अब जनि बदन देखावसि मोहीं
तेइँ अपने मन अस अनुमाना। बध्यो चहत यहि कृपा निधाना
सो उठि गयउ कहत दुर्बादा। तब सकोप बोलेउ घननादा
कौतुक प्रात देखिहहु मोरा। करि हौं बहुत कहत हौं थोरा

सुनिसुत वचन भरोसा आवा। प्रीति समेत निकट बैठावा
करत विचार भयउ भिनुसारा। लगे भालु कपि चारिहु द्वारा
कोपि कपि न दुर्गम गढ़ घेरा। नगर कोलाहल भयउ घनेरा
विविध अस्त्र गहि निशिचर धाये। गढ़ ते पर्वत शिखर ढहाये
छं० ढाहे महीधर शिखर कोटिन विविध विधि गोला चले।
घहरात जिमि पवि पात गर्ज्जत प्रलय के जनु बादले॥
मर्कट विकट भट जुटत कटत न लरत तन जर्जर भये।
गहि शैल ते गढ़ पर चलावहिं जहँ सो तहँ निशिचर हये २
दो० मेघनाद सुनि श्रवरा असगढ़ पुनि छेंका आइ।
उतरि दुर्ग ते वीर वर सन्मुख चला बजाइ ६२
कहँ कोशलाधीश दोउ भ्राता। धन्वी सकल लोक विख्याता
कहँ नल नील द्विविद सुग्रीवा। कहँ हनुमत अंगद बलसीवा
कहाँ विभीषण भ्राता द्रोही। आजु सठहि हठि मारउँ ओही।
अस कहि कठिन बाण संधाने। अतिशय कोपि श्रवण लगि ताने
शर समूह सो छाँड़न लागा। जनु सपक्ष धावैं बहु नागा।
जहँ तहँ परत देखिये बानर। सन्मुख होइ न सकहिं त्यहि अवसर
भागे भय व्याकुल कपि अच्छा। बिसरी सबहिं युद्ध की इच्छा।

सोकपिभालुनसाँमहँदेखा।कीन्हेसिजेहिनप्राणाअवशेखा

दो॰ मारेसिदशदशाविशिखउरपरेभूमिसबवीर।
सिंहनाद करि गर्जेउ मेघनाद रणधीर ६३

देखि पवनसुत कटकबेहाला।क्रोधवन्त धावा जनु काला
महा महीधर तमकिउपारा।अति रिस मेघनाद पर डारा
आवत देखि गयउ नभसोई।रथ सारथी तुरँग सब खोई
बार बार प्रचारि हनुमाना।निकट न आव मरम सो जाना
रामसमीप गयउ घननादा।नाना भाँति कहत दुर्बादा
अस्त्र शस्त्र बहु आयुध डारे।कौतुकही प्रभुकाटिनिवारे
देखि प्रभाव मूढ़ खिसियाना।करै लाग माया विधि नाना
जिमिकोउकरैगरुड़सनखेला।डरपावहिंगहिस्वल्पसपेला

दो॰ जासु प्रबल माया विवश शिव विरंचि बड़ छोट।
ताहि दिखावै निसिचर निज माया मतिखोट ६४

नभ चढ़ि बरषै विपुल अँगारा,महि ते प्रकट होइजल धारा
नाना भाँति पिशाच पिशाची।मारु काटु धुनि बोलहिंनाची
कीन्हेसि दृष्टि रुधिरकचहाड़ा।बर्षै कबहुँ उपल बहु छाड़ा
बर्षि धूरि कीन्हेसि अँधियारा।सूझ न आपन हाथ पसारा

अकुलाने कपि माया देखे। सबकर मरण बना इह लेखे
कौतुक देखि राम मुसुकाने। भये सभीत सकल कपि जाने
एकहिं बाण काटि सब माया। जिमि दिनकर हर तिमिर निकाया
कृपादृष्टि कपि भालु विलोके। भये प्रबल रण रहहिं न रोके

दो० आयसु माँगि राम पहँ अंगदादि कपि साथ।
लक्ष्मण चले सकोप तब धनु सायक गहे हाथ ६५

जलज नयन उर बाहु विशाला। हिम गिरि निभ तनु कछु एक लाला
इत उत जय इच्छा नहिं थोरी। मुठिकन लातन दाँतन काटहिं
कपि गिरि शिला मारि पुनि डाटहिं। मारु मारु धरु धरु धरु मारू
शीश तोरि गहि भुजा उपारू। असधुनि पूरि रही नभ छाई
बाजहिं जहँ तहँ रण डंका। देखहिं कौतुक नभ सुर बृन्दा
कबहुँक विस्मय कबहुँ अनन्दा। देखहिं कौतुक नभ सुर बृन्दा

दो० जमेउ गाढ़ भरि भरि रुधिर ऊपर धूरि उड़ाइ।
जिमि अंगार रासि पर मृतक धूम रहि छाइ ६६

घायल वीर विराजहिं कैसे। कुसुमित किंशुक के तरु जैसे

लक्ष्मण मेघनाद दोउ योधा। भिरहिं परस्पर करि अति क्रोधा
एकहि एक सकै नहिं जीती। निशचर छल बल करैं अनीती।
क्रोधवन्त तब भयउ अनन्ता। भञ्जेउ रथ सारथी तुरन्ता
नानाविधि प्रहार करि शेषा। राक्षस भयउ प्राण अवशेषा
रावणसुत निज मन अनुमाना। संकट भयउ हरिहि मम प्राना
वीर घातिनी छाँड़सि सांगी। तेज पुञ्ज लक्ष्मण उर लागी
मूर्च्छा भई शक्ति के लागे। तब चलि गयउ निकट भय त्यागे

दो० मेघनाद सम कोटि शत योधा रहे उठाइ ।
जगदाधार अनन्त सो उठहिं न चला खिसाइ ६७

सुनु गिरिजा क्रोधानल जासू। जरै भुवन चारिहु दश आसू
सक संग्राम जीति को ताही। सेवहिं सुर नर अग जग जाही
यह कौतुक जानहिं जन सोई। जेहि पर कृपा राम की होई
सन्ध्या भई फिरी दोउ सेनी। लगे सँभारन निज निज सेनी।
व्यापक ब्रह्म अजित भुवनेश्वर। लक्ष्मण कहँ पूँछा करुणाकर
तब लगि लै आयेहनुमाना। अनुज देखि प्रभु अति दुख माना
जामवन्त कह वैद्य सुषेना। लंका रह पठइय कोउ लेना।
धरि लघु रूप गये हनुमन्ता। आनेउ भवन समेत तुरन्ता

दो० रघुपति चरणासरोज शिर नायउ आइ सुषेन।
कहा नाम गिरि औषधी जाहु पवन सुत लेन ६८

राम चरणासरसिज उरधारी। चलेउ प्रभञ्जन सुत बल भारी
वहाँ दूत एक मरम जनावा। रावण कालनेमि गृह आवा।
दशमुख कहा मरम तेहिं सुना। पुनि पुनि कालनेमि शिर धुना
देखत तुमहिं नगर जेहिं जारा। तासु पन्थ को रोकनि हारा
भजु रघुपतिहि करहु हित अपना। तजौ नाथ अबहठ्या कल्पना
नीलकंज तनु सुन्दर श्यामा। हृदय राखु लोचन अभिरामा।
अहंकार ममता मद त्यागू। महा मोह निशि सोवत जागू
काल व्याल कर भक्षक सोई। सपनेहुँ समर कि जीतै कोई

दो० सुनि दशकन्ध रिसान तब तेहिं मन कीन्ह विचार।
राम दूत कर मरण भल यह खलु नत मोहिं मार ६९

अस कहि चला रचीमग माया। सर मन्दिर वर बाग बनाया।
मारुत सुत देखा शुभ आश्रम। सुनिहिं बूझि जल पियौं जाइ श्रम
राक्षस कपट वेष तहँ सोहा। मायापति दूतहिं चहै मोहा।
तुरत पवन सुत नायउ माथा। लागा कहन राम गुण गाथा
होत महारण रावण रामहिं। जीतहिं राम न संशय यामहिं

इहाँ भये मैं देखौं भाई। ज्ञानदृष्टि बल मोहिं अधिकाई
माँगा जल तेइँ दीन्ह कमण्डल। कह कपि नहिं अघाउँ थोरे जल
सर मज्जन करि आतुर आवहु। दीक्षा देउँ ज्ञान जेहि पावहु
दो० सर पैठत कपि पद गह्यो मकरी अति अकुलान
मकरी सो धरि दिव्य तनु चली गगन चढ़ि यान ७०
कपि तव दरश भये दुख नाशा। भट तात मुनि वर कर आशा
सुनि न होइ यह निशिचर घोरा। मानहु सत्य वचन कपि मोरा
अस कहि गई अप्सरा जबहीं। निशिचर निकट गयउ कपि तबहीं
कह कपि मुनि गुरु दक्षिणा लेहू। पाछे हमहिं मन्त्र तुम देहू।
शिर लंगूर लपेटि पछारा। निज तन प्रकटेसि मरती बारा
राम राम कहि छाड़ेसि प्राना। सुनि मन हर्षि चले हनुमाना
देखा शैल न औषधि चीन्हा। सहसा कपि उपारि गिरि लीन्हा
गहि गिरि निशि नभ धावत भयऊ। अवध पुरी ऊपर कपि गयऊ
दो० देखा भरत विशाल अति निशिचर मन अनुमानि।
बिनु फर शायक मारेउ चाप श्रवण लगि तानि ७१
परेउ मूर्च्छि महि लागत शायक। सुमिरत राम राम रघुनायक
सुनि प्रिय वचन भरत उठि धाये। कपि समीप अति आतुर आये

विकल विलोकि कीस उर लावा। जागत नहिं बहु भाँति जगावा
सुख मलीन मन भयउ दुखारी। कहत वचन भरि लोचन वारी
जेहि विधि राम विमुख मोहिं कीन्हा। तेहि पुनि यह दारुन दुख दीन्हा
जो मोरे मन वच अरु काया। प्रीति राम पद कमल अमाया।
तौ कपि होउ विगत श्रम शूला। जो मो पर रघुपति अनुकूला।
वचन सुनत उठि बैठ कपीशा। कहि जय जयति कोशलाधीशा।
सो० लीन्ह कपिहि उर लाइ पुलक गात लोचन सजल।
प्रीति हृदय समाइ सुमिरि राम रघुकुल तिलक ५
तात कुशल कहु सुख निधान की। सहित अनुज अरु मातु जान की
कपि सब चरित समास बखाने। भये दुखित मन महुँ पछिताने
अहह दैव मैं कत जग जायो। प्रभु के एको काज न आयो
जानि कुअवसर मन धरि धीरा। पुनि कपि सन बोले बल वीरा
तात गहरु होइ है तोहिं जाता। काज नशाइहि होत प्रभाता
चहु मम शायक शैल समेता। पठवौं तोहिं जहँ कृपा निकेता
सुनि कपि मन उपजा अभिमाना। मोरे भार चलहिं किमि वाना
राम प्रताप विचारि बहोरी। बन्दि चरण बोलेउ कर जोरी।
तव प्रताप उर राखि गुसाईं। जैहौं नाथ वारण की नाईं

हर्षि भरत तव आयसु दीन्हा। पद सिर नाइ गवन कपि कीन्हा॥
दो० तव प्रताप उर राखि प्रभु जैहौं नाथ तुरन्त।
अस कहि आयसु पाय पद वन्दि चले हनुमन्त॥
भरत बाहु बल शील गुना प्रभु पद प्रीति अपार।
जात सराहत मनहिं मन पुनि पुनि पवन कुमार ७२
उहाँ राम लछिमनहिं निहारी। बोले वचन मनुज अनुहारी।
अर्द्ध रात्रि गइ कपि नहिं आवा। राम उठाइ अनुज उर लावा
सकेहु न दुखित देखि मोहिं काऊ। बन्धु सदा तव मृदुल सुभाऊ
मम हित लागि तजेहु पितु माता। सहेहु बिपिन हिम आतप वाता
सो अनुराग कहाँ अब भाई। उठहु बिलोकि मोरि बिकलाई।
जो जनतेउँ बन बन्धु बिछोहू। पिता वचन नहिं मनतेउँ वोहू
सुत वित नारि भवन परिवारा। होहिं जाहिं जग बारहिं बारा
अस विचारि जिय जागहु ताता। मिलहि न जगत सहोदर भ्राता
यथा पंख बिनु खग अति दीना। मनि बिनु फनि करिवर कर हीना
अस मम जिवन बन्धु बिनु तोहीं। जो जड़ दैव जिआवै मोहीं।
जैहौं अवध कवन मुँह लाई। नारि हेतु प्रिय बन्धु गवाँई।
बरु अपयश सहतेउँ जग माहीं। नारि हानि विशेष क्षति नाहीं

अब अवलोकि शोक यह तोरा। सहे कठोर निदुर उर मोरा
निज जननी के एक कुमारा। तात तासु तुम प्राण अधारा
सौंपेहु मोहिं तुमहिं गहि पानी। सब विधि सुखद परम हित जानी
उतर ताहि देहौं का जाई। उठि कि न मोहिं समुझावहु भाई
बहु विधि शोचत शोच विमोचन। स्रवत सलिल राजिव दल लोचन
उमा अखण्ड एक रघुराई। नर गति भाव कृपाल दिखाई
सो० प्रभु विलाप सुनि कान विकल भये वानर निकर।
आइ गये हनुमान जिमि करुणा महँ वीर रस ई
हर्षि राम भेंटे हनुमाना। अति कृतज्ञ प्रभु परम सुजाना
तुरत वैद्य तब कीन्ह उपाई। उठि बैठेउ लक्ष्मण हरषाई
हृदय लाइ भेंटे प्रभु भ्राता। हर्षे सकल भालु कपि व्राता
पुनि कपि वैद्य तहाँ पहुँचावा। जेहि विधि तबहिं ताहि लै आवा
यह वृत्तान्त दशानन सुनेऊ। अति विषाद पुनि पुनि शिर धुनेऊ
व्याकुल कुम्भकरण पहँ गयऊ। करि बहु यतन जगावत भयऊ
जागा निशिचर देखिय कैसा। मानहुँ काल देह धरि वैसा
कुम्भकर्ण पूँछा सुनु भाई। काहे तव मुख रहा सुखाई
कथा कही तेइँ सकल भवानी। जेहि प्रकार सीता हरि आनी

तात कपिन निशिचर संहारे। महा महा योद्धा सब मारे
दुर्मुख सुररिपु मनुज अहारी। भट अतिकाय अकम्पन भारी
अपर महोदर आदिक वीरा। परे समर महँ सबरणा धीरा
दो० दशकन्धर के वचन सुनि कुम्भकर्ण बिलखान।
जगदम्बा हरि आनि कै शठ चाहसि कल्यान ७३
भलन कीन्हेतैं निशिचर नाहा। अब मोहिं आनि जगायहु काहा
अजहुँ तात त्यागहु अभिमाना। भजहु राम होइहि कल्याना
हैं दश शीश मनुज रघुनायक। जाके हनूमान से पायक
अहह बन्धु तैं कीन्ह खुटाई। प्रथमहिं मोहिं न जगायहु आई
कीन्हेहु प्रभु विरोध तेहि देवक। शिव विरंचि सुर जाके सेवक।
नारद मुनि मोहिं ज्ञान जो कहेऊ। कहतेउँ तोहिं समय नहिं रहेऊ
अब भरि अंक भेंटु मोहिं भाई। लोचन सुफल करौं मैं जाई।
श्याम गात सरसीरुह लोचन। देखौं जाय तापत्रय मोचन
दो० राम रूप गुण सुमिरि मन मगन भयउ क्षण एक।
रावण माँगेउ कोटि घट मद अरु महिष अनेक ७४
महिष खाइ करि मदिरा पाना। गर्जेउ वज्र घात अनुमाना
कुम्भकर्ण दुर्मद रण रंगा। चलेउ दुर्ग तजि सेन न संगा

अनुजउठाइहृदयतेहिलावा। रघुपतिभक्तजानिमनभावा
तातलातमोहिंरावराामारा। कहतपरमहितमन्त्रविचारा।
तेहिगलानिरघुपतिपहँआयउँ। दीनजानिप्रभुकेमनभायउँ।
सुनुसुतभयउकालवशरावन। सोकिमिमानैपरमसिखावन
धन्यधन्यतैंधन्यविभीषरणा। भयहुतातनिशिचरकुलभूषरणा
बन्धु बंश तैं कीन्ह उजागर। भजहु राम शोभा सुखसागर
दो० मन क्रम वचन कपट तजि भजहु तातरघुवीर।
अजहुंननिजपरहूझमोहिंभयउकालवशवीर७५
बन्धुवचनसुनिफिराविभीषरणा। आयउजहँत्रैलोकविभूषरणा
नाथ भूधराकार शरीरा। कुम्भकरणा आवत रणा धीरा
इतना कपिन सुना जबकाना। किलकिलाइ धाये हनुमाना
लियेउपारि विटप अरुभूधर। कटकटाय डारे तिहिंऊपर।
कोटिकोटि गिरिशिखरप्रहारा। करहिंभालुकपिएकहिबारा
गिरैनसुरै टरै नाहिं टारे। जिमि गज आकफलन के मारे
तबमारुतसुतमुष्टिकहनेऊ। परेउधरणीव्याकुलशिरधुनेऊ
पुनिउठि तेइँ मारेउ हनुमन्ता। घुर्मित घायल परेउ तुरन्ता
पुनिगहिचरणटारिसिआनिपछारेसि। जहँतहँपटकिपटकिभटमारेसि

चलीबली सुग्रवसेन पराई। अतिभय त्रासितन कोउ समुहाई
दो० अंगदादि कपि मूर्च्छित करि समेत सुग्रीव।
कारवदाबि कपिराज कहँ चला अमितबल सींव ७६
उमाकरतरघुपतिनरलीला। खेलगरुड़ जिमि अहिगरामीला
भृकुटि भंग जिहि कालहिखाई। ताहि कि ऐसी सोह लराई
जग पावन कीरति विस्तरहीं। गाइ गाइ नर भवनिधि तरहीं
मूर्च्छा गइ मारुत सुतजागा। सुग्रीवहिं तब खोजन लागा।
कपिराजहँ कर मूर्छाबीती। निबुकि गयउ तब कृतक प्रतीती
काटेसि दशन नासिकाकाना। गर्जि अकाश चला तेहिंजाना
गहेसि चरणाधरिधरणीपछारा। अतिलाघवपुनिउठितेहिमारा
पुनिआयउप्रभुपहँबलवाना। जयतिजयतिजयकृपानिधाना
नाककानकाटेतेहिजानी। फिरा क्रोध करिमानिगलानी।
सहजभीमपुनिविनुश्रुतिनासा। देखतकपिदलउपजात्रासा
दो० जयजयजय रघुवंशमणि धाये कपिकरि हूह।
एकहि वार जो तासुपर डारे गिरि तरु जूह ७७
कुम्भकर्णरणरंग विरोधा। सन्मुख चला काल जनु क्रोधा
कोटिकोटि कपि धरिधरिखाई। जनुटीड़ी गिरिगुहा समाई

कोटिन गहि शरीर महँ मर्दी। कोटिन मींजि मिलावसि गर्दी।
सुरबनासिका अवरा कीबाटा। निकसि पराहिं भालु कपि ठाटा
रणा मदमत्त निशाचर दर्प्पा। मानहु विश्व यसन कहँ अर्प्पा
सुरे सुभट रणा फिरहिं न फेरे। रूझ न नयन सुनै नहिं टेरे
कुम्भकरणा कपि फौज बिड़ारी। सुनि धाये रजनीचर झारी
देखी राम विकल कटकाई। रिपु अनीक नाना विधि आई
दो० सुनु सौमित्र विभीषणा सकल सँवारहु सैन ।
मैं देखौं रवल दल बलहिं बोले राजिव नैन ७८
कर शारंग विशिख कटि भाथा। रुगपति टवनि चले रघुनाथा
प्रथम कीन्ह प्रभु धनुटंकोरा। रिपुदल वधिर भये सुनि शोरा
धनु सँधान छाँड़े शर लक्षा। काल सर्प्प जनु चले सपक्षा
अतिबल चले निकर नाराचा। लगे कटन भट विकट पिशाचा
कटहिं चरणा शिर उर भुज दण्डा। बहुतक वीर होहिं शत खण्डा
घुर्मि घुर्मि घायल महि परहीं। उठहिं सँभारि सुभट फिरि लरहीं
लागत वाणा जलद जिमि गाजहिं। बहुतक देखि कठिन शर भाजहिं
रुण्ड प्रचण्ड सुण्ड विनु धावहिं। धरु धरु मारु मारु गुहरावहिं
दो० रणा महँ प्रभु के शायकनि काटे विकट पिशाच।

पुनि रघुपति कै बोरा महँ प्रवेश आइ नराच १९

कुम्भकर्ण मन दीख विचारी। रण महँ हते निशाचर भारी।
भयउ क्रुद्ध दारुण बल वीरा। करि मृगनायक नाद गँभीरा
कोपि महीधर लिये उपारी। डारेसि जहँ मर्कट भट भारी।
आवत देखि शैल प्रभु भारे। शरन्ह काटि रज सम करि डारे
पुनि धनु तानि कोपि रघुनायक। छाँड़े अति कराल बहु शायक
तनु महँ प्रविशि निसरि सर जाहीं। जिमि दामिनि घन माहिं समाहीं
शोणित स्रवत सोह तन कारे। जिमि कज्जल गिरि गेरु पनारे
विकल विलोकि भालु कपि धाये। विहँसा जबहिं निकट चलि आये
दो० गर्जत धायउ बेग अति कोटि कोटि गहि कीश।
महि पटकै गजराज इव सपथ करैं दससीश ८०

आगे भालु कपिन के यूथा। देखि विलोकि जिमि मेरव बरूथा।
चले भाजि कपि भालु भवानी। विकल पुकारत आरत बानी
यह निशिचर दुकाल सम अहई। कपि कुल देश परन अब चहई
कृपा वारि धर राम खरारी। पाहि पाहि प्रणतारत हारी।
करुणा वचन सुनत भगवाना। चले सुधारि शरासन बाना
राम सेन निज पाछे घाली। चले सकोप महा बल शाली।

खैंचि धनुष शत शर सन्धाने। छूटे तीर शरीर समाने।
लागत शर सँभारि सो फिरा। कुधर डगमगेउ डोली धरा।
लीन्ह एक तेइँ शैल उपाटी। रघुकुल तिलक भुजा सोइ काटी।
धावा वाम बाहु गिरि धारी। प्रभु सोइ भुजा काटि महि डारी।
काटे भुज सोहै खल कैसे। पक्ष हीन मन्दर गिरि जैसे।
उग्र विलोकनि प्रभुहि विलोका। मानहुँ ग्रसन चहत त्रय लोका।

दो० करि चिकार सुख घोर अति धावा वदन पसार।
गगन सकल सुर त्रासित अति हाहाकार पुकार ८२

सभय देव करुनानिधि जाने। अवरा प्रयन्त शरासन ताने।
विशिष निकर निशिचर सुख भरेऊ। तदपि महाबल भूमि न परेऊ।
शरनि भरा सुख सरु सुख धावा। काल घोरा जनु तनु धरि आवा।
तब प्रभु कोपि तीव्र शर लीन्हा। धरते भिन्न तासु शिर कीन्हा।
सो शिर परा दशानन आगे। विकल भयउ जिमि फरी मरी त्यागे।
धरनी धसै धर धाव प्रचण्डा। तब प्रभु काटि कीन्ह दुइ खण्डा।
परैं भूमि जिमि नभ ते भूधर। हेठ दाब कपि भालु निशाचर।
तासु तेज प्रभु वदन समाना। सुर मुनि सबन्ह अचम्भा माना।
नभ दुन्दुभी बजावहिं हर्षहिं। जय जय कहि प्रसून सुर वर्षहिं

करि विनती सुर सकल सिधाये। तबतेहि समय देव ऋषि आये
गगनो परि हरि गुण गण गाये। रुचिर वीर रस प्रभु मन भाये
बेगि हतहु खल मुनि कहि गये। राम समर महँ शोभित भये।
छं० संग्राम भूमि विराज रघुपति अतुल बल शोभा घनी।
श्रम बिन्दु सुन्दर राजीव लोचन रुचिर तन शोणित कनी॥
भुज युगल फेरत शर शरासन भालु कपि चहुँ दिशि बने।
कह दास तुलसी कहि न सकहु बिशेष जेहि आनन घने ८
दो० निशिचर अधम मलायतन ताहि दीन्ह निज धाम।
गिरिजा ते नर मन्द मति जे न भजहिं श्री राम ८२
दिनके अन्त फिरी दोउ अनी। समर भई सुभटन सन घनी।
राम कृपा बल कपि दल बाढ़ा। जिमि द्रुमा बढ़ै लगे अति दाढ़ा
छीजहिं निशिचर दिन औराती। निज मुख कहे सुकृत जेहि भाँती
बहु विलाप दश कन्धर करई। पुनि पुनि बन्धु शीश उर धरई
रोवहिं नारि हृदय हत पानी। तासु तेज बल विपुल बखानी
मेघनाद तेहि अवसर धावा। कहि बहु कथा पितहि समुझावा
देखहु काल्हि मोरि मनुसाई। अबहिं बहुत का करौं बड़ाई
इष्टदेव सन जो वर पायउँ। सो वर तात तुमहिं सुनायउँ।

इहिविधिजल्पतभयउविहाना।लगेभालुकपिचहुँदिशिनाना
इतकपिभालुकालसमवीरा।उतरजनीचरअतिरणाधीरा
लरहिंसुभटनिजनिजजयहेतु।वरणिनजाइसमररबगकेतु
दो० मेघनादमायाविरचिरथ चढ़िगयो अकाश।
गर्जेउप्रलयपयोदजिमिभाकपिदलअतित्रास ८३
शक्तिशूलशरपरिघकृपाना।अस्त्रशस्त्रकुलिशायुधनाना
डारेपरमु प्रचराड पषाना।लागा वृष्टि करै विधि नाना
रहे दशहु दिशिशायकछाई।मानहुँ मघा मेघझरिलाई
धरुधरुमारुसुनहिंकपिकाना।जो मारै तेहि कोउ न जाना
गहिगिरितरुअकाशकपिधावहिंदेखहिंतेहिनदुरिवतफिरिआवहिं
अवघटघाटबाटगिरिकन्दर।मायाबलकीन्हेसिशरपंजर।
मारुतसुतअंगदनलनीला।कीन्हेसिविकलसकलबलशीला
पुनिलक्ष्मणासुग्रीवविभीषणा।शरनमारिकीन्हेसिजर्जरतन
पुनिरघुपतिसनजूझनलागा।शरछाँड़तहोइलागहिंनागा
व्यालफाँसवशभयेखरारी।स्ववशअनन्तएक अविकारी
नटइव चरितकरतविधिनाना।सदास्वतन्त्ररामभगवाना
रणशोभाहित आपुबँधावा।देखिदशा देवन भय पावा।

दो० खगपतिजाकर नामजपिनरकाटहिंभवपास।
सोप्रभु आवकिवन्धतरव्यापकाविश्वनिवास८४

चरितरामकेसगुणाभवानी। तरकिनजाइबुद्धिबलवानी।
असविचारिजोपरमविरागी। रामहिंभजहिंतर्कसबत्यागी
व्याकुलकटककीन्हघननादा। पुनिभाप्रकटकहतदुर्व्वादा
जामवन्तकहखलरहठाढ़ा। सुनिकैताहिक्रोधअतिबाढ़ा
बूढ़जानिशठछाँड़ेउँतोहीं। लागेसिअधमप्रचारणा मोहीं
असकहिताहिबिशूलचलावा। जामवन्तसोकरगहिधावा
मारेउमेघनादकी छाती। परा धरणी घुर्मित सुर घाती।
पुनिरिसाइगहिचरणाफिरावा। महिपछारिनिजबलहिंदिखावा
वर प्रसाद सो मरै न मारा। तब पद गहि लंका पर डारा।
इहाँ देवऋषि गरुड़ पठाये। रामसमीपसपदि चलि आये

दो० पन्नगारिखाये सकलरणामहँ व्याल वरुथ।
भई विगत माया तुरत हर्षे वानर यूथ ॥

गहि गिरि पादपउपलबहु धाये कीशरिसाइ।
चले तमीचरविकल अतिगढ़पर चढ़े पराइ८५

मेघनादकी मूर्च्छाजागी। पितहि विलोकि लाज अतिलागी

तुरत गयउ सो गिरिवर कन्दर। करन अजय मख असमन हठ धर
सो सुधि पाइ विभीषण कहई। सुनु प्रभु समाचार अस अहई
मेघनाद मख करै अपावन। खल मायावी देव सतावन।
सो प्रभु सिद्ध होइ जो पाइहि। नाथ बेगि रिपु जीति न जाइहि
सुनि रघुपति अतिशय सुख माना। बोलि लिये अंगद हनुमाना
लक्ष्मण संग जाहु सब भाई। यज्ञ विध्वंस करहु तुम जाई।
तुम लक्ष्मण राखा मोरहु ओही। देखि सभय सुर बड़ दुख मोही
मारेहु तेहि बल बुद्धि उपाई। जेहि छीजै निशिचर सुनु भाई।
जामवन्त कपिराज विभीषण। सैन समेत रहहु तीनों जन।
जबहि रघुवीर दीन्ह अनुशासन। कटि निषंग कर बाण शरासन
प्रभु प्रताप उर धरि रण धीरा। बोलेउ घन इव गिरा गँभीरा।
जो जेहि आजु बधे बिनु आवौं। तौ रघुपति सेवक न कहावौं
जो शत शंकर करहिं सहाई। तदपि हतौं रघुवीर दुहाई।

दो० वन्दि राम पद कमल युग चले तुरन्त अनन्त।
अंगद नील मयन्द नल संग सुभट हनुमन्त ८६

जाइ कपिन देखा सो वैसा। आहुति देत रुधिर अरु भैंसा
तब कीशन कृत यज्ञ विध्वंसा। जबन उठै तब करहिं प्रशंसा

तदपिनउठै धरहिं कच जाई। लातनहतिहति चलहिं पराई।
लै त्रिशूल धावा कपि भागे। आवा राम अनुज के आगे
आवत परम क्रोध करि मारा। गर्जि घोर रव बारहिं बारा।
कोपि मरुतसुत अंगद धाये। हति त्रिशूल उर धरणि गिराये
प्रभु पर छाँडेसि शूल प्रचण्डा। शरहति कृत अनन्त युगखण्डा।
उठि बहोरि मारुतयुवराजा। हतेउ कोपि तेहि घाव न बाजा
फिरै वीर रिपु मरै न मारा। पुनि धावा करि घोर चिकारा
धावत देखि क्रोध जनुकाला। लक्ष्मण छाँड़े विशिख कराला।
आवत देखि वज्र सम बाना। तुरत भयो खल अन्तरधाना।
विविध वेष धरि करै लराई। कबहुँक प्रकट कबहुँ दुरि जाई
तब त्रिशूल छाँड़ेसि लक्ष्मण पर। काटिकीन्ह शत खंड धरणिधर
शिखर एक लै पुनि सो धावा। राम अनुज सो काटि खसावा
दो० आयुध विविध प्रहार किय रजसम कीन्ह फणीश
हर्ष विवश कपि रीछ सब विबुध सहित सुरईश ८७
बहुरि विविध शर छाँड़न लागा। रण कारण छूटहि जिमि नागा
राम अनुज शर गरुड़ समाना। उमा ग्रसत छूटहि अभिमाना
देखि अजय रिपु डरपे कीशा। परम क्रोध तब भये अहीशा

देखियजिमिरवितेजसमाना।फुंकरतमनहुँव्याल अनुमाना
लक्ष्मणामन असमंझबूढ़ावा।इहिपापिहिमैंबहुतखिलावा
सुमिरि कोशलाधीश प्रतापा। शरसन्धान कीन्ह करिदापा
छाँड़ा वाराा तासुउर लागा। शीश भुजा काटे नृप नागा
घनसमानसो गर्जि अभागा। मरती बार कपट सब त्यागा
दो० राम अनुज कहि राम कहि अस कहि छाँड़ेसि प्रान।
धन्य शक्रजित मातु तव कहि अंगद हनुमान ८८
बिनु प्रयास हनुमान उठायो। लंका द्वार राखि पुनि आयो
तासु मरणासुनि सुर गन्धर्व्वा। चढ़ि विमान आये नभसर्व्वा
बरषि सुमन दुन्दुभी बजावहिं। श्रीरघुवीर विमलयश गावहिं
जय अनन्त जय जगदाधारा। तुम प्रभु सब देवन्ह निस्तारा।
अस्तुति करि सुर सकल सिधाये। लक्ष्मणा कृपासिन्धु पहँ आये

क्षेपक

प्रभुहिं विलोकि शीश पदनायो उठि प्रभु अनुज हर्षि उर लाये।
कृपादृष्टि करि अनुजहि हेरा। विगत भयो श्रम जब कर फेरा
वाराा वेधि तन देखियत कैसे। कनक त्वगा शर पूरित जैसे
मुख प्रसन्नता देखि सुख पायो सब। रिपुवध कहा विभीषणाहू तब

धरेउ शीश आनी प्रभु आगे। बानर भालु विलोकन लागे
प्रभु कौतुकी निरखि सोइ शीशा। रावन कहेउ कोशलाधीशा
दो० प्रभु आयसु सुनि कीश पति रावेउ यतन कराय।
कटक सहित रघुवंश मणि शोभित अति दोउ भाय ९९
कृपा दृष्टि सब कटक निहारे। भये श्रम रहित राम बैठारे।
सुनहु उमा इहि विधि रिपु मारे। सुर गन्धर्व्व सुनि भये सुखारे।
अब सो सुनहु भुजा तेहि केरी। खग जिमि गई लंक शर प्रेरी।
मेघनाद आँगन में परी। वारा वेधि शोणित सन भरी।
देखति तहाँ सुलोचनि कैसी। रति ते रुचिर रूप गुण जैसी
नागसुता दशकन्ध पतोहू। बासव रिपु तिय छबि मय जोहू
हेम सिँहासन सोहत बाला। सेवत विद्याधरि त्रय काला।
पूजत विविध विनय करताही। सुख प्रमोद को सकत सराही
तहँ पति भुजा परी इहि भाँती। मनहुं सकल सुख तरु की काँती
दो० तब निज दासिन्ह देखि तहँ शोणित अवत भुजदण्ड।
भय उ समर आश्चर्य मय मनहुं अरव राड न रवराड १००
सुनकर सकल सखी मुख बैना। तजि सिंहासन उठी सुनैना।
प्रेम सुभाय धुकधुकी धरकी। रूदक अश्रु भरहिं भुज फरकी

होत महारण रावण रामहिं। वीर बली रण भोर पियत महिं
सकल सुरासुर सकहिं न जूझी। विधि बामता परत नहिं बूझी
इतना कहत गई चलि आपू। पति भुज लखि कीरि कोटि कलापू
कञ्चन मणि गण भूषण सोई। महा विटप सम आनन होई
देखत मन हहि न आवत तेही। जासु प्रभाव सुनहु किन लेही
नींद नारि भोजन परिहरही। बारह बरष तासु कर मरही
दो० करि विचार मन टेक दै मैं पति देवत नारि।
भुज लखि मेटइ दुचित ही सुनकर दीन पसारि ९१
लखि रक्तासु सखी उठि धाई। सो तेहि खोज खरी लै आई
दीन हाथ मणि मय अँगनाई। लिखन लखण की रति रुचिराई
नींद नारि भोजन शत कोटी। तजत तासु महिमा अति छोटी
अक्षय अखण्ड अलख अविनासी। अतुल अमित घट घट के वासी
प्रगटहिं पालहिं पुनि संहरई। त्रिगुण रूप त्रय मूरति धरई।
जो कालहु कर काल भयंकर। वरणत शेष शारदा शंकर
लीला तनु सुर सेवक हेतू। जासु नाम भव सागर सेतू
मुनि मन पुण्डरीक जाके घर। वचन विवेक विचार बुद्धिवर
दो० कोटि कल्प वरणत निगम अगम जासु गुण गाय।

तमशरीरजड़जीवबिनुकिमिबसातलिखिहाय९२
मम शिरगयो दरश रघुराई। तव प्रतीत लगि भुजा पठाई।
इहिविधिलिखेउसकलभुजबाता। परीभूमितलअतिविकलाता
बाँचिसकलभुजलिखितयथारथ। लक्ष्मणरामनामपरमारथ
त्रियास्वभावतदपिबहुभाँती। विलखतसकलसखिनकरपाँती
गुणागराासाहसशीलनाहको। काहिरोवतबलविपुलबाँहको
जेहिभुजबलसुरनाथविगोवा। सोप्रभु आजुसमरमहिसोवा
मणिागणाभूषणावसनबिसारत। महिलोटतकरतलशिरमारत
मगनवियतिनिजतनसुधिनाहीं। दारुणाविपतिकालियकोहिपाहीं
सुराकप्रबोधसखीकोउकरहीं। बहुरि शोक दावानलजरहीं
सुराासुराउठतपरतधरणीतल। पुनिपुनिसबसराहपतिकोबल
दो० तिनमेंसखीसयानिइककाहिसमुझावतबैन।
शोकछाँड़िपतिदेवतासुमतिकरौमतिरैन९३
सुनकरसहसानन तनजाता। सत्यकहततुमसखीसुमाता
विधिनिर्मितदुखमोकहँलाहू। सुखपरिपूरभवनसबकाहू
विजयरामलक्ष्मणाकहँआवा। सुयशसकलमर्कटकुलपावा
कुलकलंकबड़लहेउविभीषन। कुलकुठारअसमुनेउँनदीषन

छूटि बन्दि अब सुरगरा केरी। निज निज पुरन दुहाई फेरी।
सुनि पुलस्त्य कर भाकुल नाशा। अबर बिशाशि सुखकर हिं प्रकाश
तेजवन्त पावक परिहरि दुख। बहव समीर आजु अपने सुख
सलिल गंग निर्मल जल आजू। सुबस बसहिं सुर नायक राजू
दो० यम कुबेर दिगपाल सब प्रमुदित सुर नर नाग।
खाय अघाय बिहाय दुख पाय सुयज्ञ बिभाग ६४
इतना कह मन्दिर महँ आई। देखत मणि गण धन बहुताई
सुरपति भवन सुपटतर नाहीं। जहँ ऋधि सिधि तनु धरे कमाहीं
देखत बिनय न मन अनुरागा। पति पद प्रेम निपुण मन पागा
देत दान मणि भूषण चीरा। धेनु बसन मन हाटक हीरा
मणि मय शिबिका रुचिर सुहाई। भुज बढ़ाइ पहिराय बनाई
आपन चढ़त भई पुनि आई। सुर दुर्लभ सुख सदन बिहाई
बीत राग जिमि तजत बिषय गन। तेहि तस भाँति दियो पति पद मन
शुक सारिका सुलोचन जाये। कनक पिञ्जरन राखि पढ़ाये
व्याकुल कह कहँ जात सुनयना। सुनि धीरज परिहरत सुबयना
भये बिकल खग मृग इहि भाँती। अपर दशा कैसे कहि जाती
प्रजा लोग गृह तजि सँग लागे। प्रेम उमँगि लोचन जल पागे

दो० बाजन लगे निशान बहु ढोल दुन्दुभी भेरि ।
पुरजन परिजन संग सब चले पालकी घेरि९५

देखि भीर दशकन्धर द्वारे। सजग भये सब वीर प्रचारे
जानेउ कटक रिपुन कर आवा। अस्त्र शस्त्र कर गहि कर धावा
धनु चढाइ कटि तरकस बाँधे। कोउ असि चर्म्म शरासन साँधे
तोमर परशु प्रचण्ड गदा गहि। रोषन चोखे शूल शक्ति गहि
मारु मारु धरु धरु कहि धाये। प्रकट दशानन विजय सुनाये
गर्जत तर्जत गिरा गँभीरा। समर भयंकर निशचर वीरा।
निपटहि निकट पालकी आई। चीन्हि सकल भट रहे लजाई
देखि जुहार नागपति कन्या। सती शिरोमणि त्रिभुवन धन्या

दो० द्वारपाल दशकन्ध बहु खबरि जनाई जाय ।
भयउ जायसु वेगि तब वचन कहत विलखाय९६

तुमहिं अक्षत अस दशा हमारी। सुखतजि भई शोक अधिकारी
नभ पथ ह्वै भुज मम गृह परा। वारा वेधि शोणित तन भरा
देखि भुजा मन में अति डरी। संशय जानि दीन्ह कर खरी।
लिखी राम लक्ष्मण महिमाइन। क्रम क्रम सो सब कथा कही तिन
ठगिसी रही वाँचि गुण गाथा। जरहुँ संग जो पाऊँ माथा।

रणकबन्ध भुज मम गृह आई। शिर तहँ गयउ जहाँ रघुराई
करहु सोयतन मिलहि मोहिं शीघ्रा। तुमसामर्थ निशाचरईश्वरा
सुनत कुलिशसम गिरा बधू की। जीवन आश दशानन मूकी
तदपि धीर धरि करसि प्रबोधा। कहि को मोहि समान जगयोधा
दो० राम लषण सुग्रीव नल नील द्विविद हनुमन्त।
माथ विभीषण ऋषभ कर आनब मारि तुरन्त ९७
अबलगि रहेउ भरोसा भारी। कुम्भकर्ण घननाद सुरारी।
सुनहु आज लगि कीन्ह न जूझा। इन सबकर पुरुषारथ बूझा
मरेउ सो नर बानर के मारे। बात सुनत अति लाज हमारे
बिनती करउ बीर मैं तोही की। अति दुर्दशा कीन्ह कपि जिन की
तजहु शोक कुलबधू पतोहू। उनसमान जनि जानसि मोहू
पुत्रि बिलम्ब करौ घटि चारी। देखहु मोर भयंकर भारी।
आनब शिर तब शत्रुन केरा। बिन प्रयास नहिं लावौं बेरा
भोगत जन्तु पुराकृत भोगा। नतु किन निश्चर बन चर योगा
दो० मेरु उखारन हार जे धरा धरत कर बीच ।
तेभट खाये मशक शिशु काल कुटिलता नीच ९८
क्रोधावेष प्रगल्भहि बोली। हृदय शोक तन अचल न डोली

समाधान नहिं मानत सोई। सुनि प्रलाप परितोष न होई
नरवानर पुरुषारथ देखत। बड़ो प्रभाव छोट करि लेखत।
कूदि सिन्धु कपि लंका जारी। लघु करि मानत ताहि सुरारी
कुम्भकरण अतिकाय महोदर। मम पति गिरेउ समेत सहोदर
ते रिपु चहत दशानन जीती। देखहु महा मोह कर रीती
उतरु देहुँ तौ पातक होई। कह विवाद कर सर्ब्बस खोई
फिरहि राज कछु मोहिं न काजू। बिन पिय सकल नरक कर साजू
दो० तुरतहि उठी सुलोचना गइ मय तनया पास ।
पद्गहि रोवति सकल कह प्रकट्यो इतिहास ९९

आदिहि ते सब कथा बखानी। सुनि सुनि रोवत राकण रानी
कह निज पति भुज लिखित बहोरी। राम लखण महिमा नहिं थोरी
कहेउ बहरि दशकन्धर क्रोधा। मुये बिडम्बन कीन्हेसि बोधा
सुनि निज पुत्र बधू की बानी। बोली दुखित मँदोदरि रानी
कहत सो मानहु सत्य सयानी। सुनी जो नारद मुनि की बानी
पाछिलि बात भई सब साँची। अनुभव कीन्ह न एकौ बाँची
देवि न होइ मृषा ऋषि भाषत। अपने महा मोह मन राखत
अगली कथा समास समेता। सुनु पुत्री ऋषि वर रोउँ जेता

वैरि भाव दशकन्धर जूझव। पाराह्न गये नीति नहिं बूझव
सिया शोक संकट ते छूटहिं। बानर भालु राज घर लूटहिं।
सुरमणि भूषण बसन विमाना। भोग करहिं बनचर कुल नाना
दो० राज विभीषण पाइहैं अमर कल्प निरबाह।
भावी वश दुख सुख जगत उपदेशिय कहु काह १००
मुनिवर वचन मोह परतीती। अनुभव दोउ हार अरु जीती
अब पुत्री परिहरि सब शोका। पति सँग बेगि साध परलोका
जाह्न राम पहँ पति शिर लागी। तजि संकोच आन किन माँगी
आजु न होइ लाज कर भूषण। समय हीन गुण गनिय न दूषण
है पुनि श्वसुर विभीषण तोरा। बालि तनय बालक सम मोरा
एक नारि ब्रत रघुवर केरा। लषण सुयश तुम सुनेउ घनेरा।
जामवन्त मंत्री सुग्रीवा। द्विविद मयन्द महा बल सीवा
जानह ब्रह्मचर्य्य हनुमन्ता। शिव स्वरूप भवहर भगवन्ता
सदा नीति रत राम नरेशा। तहाँ जात कह कवन कलेशा
दो० विदित तोर पति भुजालि रिपु लक्ष्मण राम प्रभाव।
हमहूं ऋषि भाषित कहेउ अब विलम्ब जनि लाव १
सुनत सासु सुख कर हित बानी। जाइँ राम पहँ असजिय ठानी

बार बार वरणात शिर नाई। चली जहाँ लक्ष्मण रघुराई।
देखत कटक भालु कपि केरा। सिन्धु सुबेल महीधर घेरा।
उमगेउ मनो महोदधि दूसर। हरित पीत कपि धूमर धूसर
व्योम लाल भाषत अनुहेरी। मनहुँ लेत बड़वानल घेरी।
गिरितरु धरभुज सहसभयंकर। जहँतहँप्रकटहोइँजनुजलधर
लक्ष्मण शेषसुअंकशीशधर। कटकजलधिसोवतराघववर
अरुवटजहँतहँबैठिविभीषन। असमुझतीकहुँसुनैनदीषन
दो० देखत डरत सुलोचना धीरज धरत बहोरि ।
महाराज रघुवीर कहँ विनय सुनावो मोरि २
बानर सकल उठे अस बोली। अरिपुर ते आवत इक डोली
जानि परत रावण अब बूझा। भइमति मेघनाद तब जूझा।
हठ तजि सीतहि दीन पठाई। तजहु शोच अब मिटी लराई।
जिहिलगिप्रकटकीन्हपुर आगी। बाँधेउसेतुहेतुजिहिलागी
सोइसीता अब बिन श्रम पाई। जानहुविधि अनुकूल सहाई
बिजय राम सुग्रीवहिं आवा। सुयश वीर बानरकुल पावा
विरह राम लक्ष्मण कर छूटा। बिन कलेश लंका गढ़ टूटा
युगयुगकीरतिचलबहमारी। कहँराक्षसकहँलघुबन चारी

दो० इहिविधि चारु विचार करि निश्चय धरि मन माहिं।
भयउ काज रघुराज कर बात दूसरी नाहिं ३

पैठत कटक अति हि सकुचाई। अनवि नारि जनु पर घर आई
आगे हि जाइ देखि रघुवीरा। छवि मय श्याम ल गौर शरीरा
मरकत कनक छवि हि जनु निन्दत। धन्य सुजन महि मा ते विन्दत
मत्त गयन्द सुराङ भुज दण्डा। धनुष वारा असि धरि य प्रचण्डा
उर विशाल अति उन्नत कन्धर। कम्बु कण्ठ रेखा त्रय सुन्दर
दशन पाँति की कांति कहै को। लाघत मन पटतर हि लहै को
देखत अधरन की अरुणाई। बिम्बा फल बन्धूक लजाई।
शुक तुण्ड क नासिका लजाई। याकेउ कवि पटतर नहिं पाई

दो० छवि मय गुण मय तेज मय राम उदधि अवगाह।
जहाँ न पावत पार सुर कवि वर रो कवि याह ४

भृकुटी ललित कपोल सुहाये। शीश जटा कर मुकुट बनाये
भाल विशाल तिलक युत सोहै। ध्यान समय मुनि मानस मोहै
बल्कल वसन धूरा कटि बाँधे। कर शर शुभग शरासन काँधे
वीरासन आसीन कृपाला। नव पल्लव प्रसून कर माला
चरण सरोज वरणि नहिं जाई। जहँ मुनि मधु कर रहे लुभाई

प्रकट भई जिह थलसे गंगा। श्रुतिपुराणकहँ कथा प्रसंगा
नवतमहेशविरंचिजाहिको। लोचनगोचरहोत काहिको
जन आरत भञ्जनजो कोई। भवसागर तारण कै सोई
दो० प्रणातपाल विरदावली जिन चरणनकीवान।
शोकहरण संशय दलन करनसुमंगलखान ५
कर जोरे अंगद हनुमाना। द्विविद मयन्द कुमुद बलवाना
जामवन्तकपिपतिबलशीला। ऋषभसुषेणसहितनलनीला
महावीरवानरसबराजत। लषणविभीषणदोउदिशिभ्राजत
मितिभाषितप्रभुचरणासुसेवक। चितवतरुखरघुनन्दनदेवक
सभामध्यसोहतअघमोचन। कीनेउसकलनिरखिनिजलोचन
करतदण्डवतशिरधरिधरणी। तिहिकर चरितविभीषणवरणी
पुत्र बधू दशकन्धर केरी। बड़ि पतिव्रता जानि प्रभु हेरी।
मेघनाद करनारिसुशीला। असगतितवविरोध करलीला
करतप्रणाम प्रेम नहिं थोरे। करुणा वचनकहतकरजोरे
दो० भुयेजानिपतिभुजहितबलिरविसमुझाईमोहिं।
महाराजरघुबंश मणि याचन आई तोहिं ६
छं० परसे चरणा कर प्रेम पूरणा प्रणातपाल खरारि के।

जिहि नमत शंकर शेष सुर मुनि धरणि मज्जन भारके॥
प्रभु जान सो विनती सुलोचनि करत कहै विनती घनी।
जय शोक हर राक्षपालु जय जय जयति जय रघुकुलमनी॥
प्रभु अहह रूप सुभाव शीतल अतुल बल त्रिभुवन धनी।
जय हरण धरणी भार बाहु विशाल खण्डन खल अनी॥
तव दीनबन्धु दयालु अपरम पार सब गुण आगरे।
करुणानिधान सुजान शील सनेह रूप उजागरे॥
षट अष्ट लोक जो रचत पालत प्रलय सो माया सुरी।
केहि भाँति वरणौं नाथ गुण गण नारि जड़ मति बावरी॥
जेइ चरण ईश महेश शारद श्रुति निरन्तर ध्यावहीं।
हौं भूरि भाग सरोज पद सोइ हर्ष शिर सिल गावहीं॥

छं० गह कर बानी शारँग पानी सब गुण खानी रामबली।
सुर सुरभी रक्षक राक्षस भक्षक भक्त हि रक्षक मानबली॥
मैं रिपु सुत नारी जान अघारी अधिकारी नहिं दुख भारी।
हरि विरह दवारी अति भय कारी सहब बहु बारी दुख कारी॥
तव शरण आइ जन सुख दाई रघुराई करुणा सागर।
पति मस्तक पाऊँ जनि सँग जाऊँ शिर नाऊँ शोभा आगर॥

पतिसमतनत्यागीअतिबड़भागीअनुरागीजिनमुक्तिलही
ममताकिमितारुवरणौंआरुजासुअचलजगपंतिरही।
यहिविधिपदपंकजसेव्यरमाअजमायनायकरजोरिरही
सुनिपंकजलोचनवचनसुलोचनलोचनमेंजलधारबही १०

दो॰ असप्रभुदीनबन्धुहरि कारणारहितदयाल।
तुलसिदासशठताहिभजुछाँडिकपटजंजाल ७

तुमअन्तरयामीभगवाना।नहिंतोहिंआदिमध्यअवसाना
करुणावचनसुनतरघुवीरा।पुलकरोमभयेशिथिलशरीरा
देहुँजिवायतोरपतिआजू।करहूलंकाकलपशतराजू।
छाड़ुशोचअबमनहर्षाहू।तुरतभवनअपनेफिरिजाहू
सुनिअससत्यसिन्धुकरवानी।मनमेंबनचरअतिभयमानी
काहिनसकतकछुप्रभुरुखदेखी।कहाकरबकरतारविशेखी
सबदेवनकरशोचनजाई।जोकरिकृपारामयहज्याई
दो॰ राजविभीषणलंकाकरकोहिविधिकरिहहिंजाइ।
समुझिवैरधननादजबगहतशरासनधाइ ८

सुखरुखदेखिकापिनभयमाना।प्रणातपालभगवन्तसुजाना।
देखिबहुतरघुवरकरछोहू।विनयकरतदशकन्धपतोहू।

तुम उदार सब देवे लायक। करुणामय देखे रघुनायक
हमहुँ विचारि दीख मन माहीं। जीवन ते अस मरण सराहीं
भुजबलजीति लोकवश कीन्हे। चौदह भुवन भोग करि लीन्हे
सप्ततीरथ याचकबड़ चीन्हा। प्राणसुधन लक्ष्मणाकर दीन्हा
अबनउचित पतिहैउपहारा। तेहि पर अधिकसोदरशतुम्हारा
हमहूंजाइमरबसतसाधी। मिलबतुमहिंजसमिलतसमाधी
दो० निर्मल गति अवसर भयउ सुनहु सत्यरघुवीर।
तुमहिं मिलतनहिंहोयभवयथासिन्धुगतनीर ६
मन कीजानन हार सुजेवा। भवसागर तारहु यह खेवा
लीन्हेउ राम कपीश बुलाई। मेघनाद शिर दीन्ह मँगाई
पाय कृतारथ मानेउ आपू। पिया विरह सम्भव परितापू।
अञ्चल पोंछत सुखकी धूरी। कहि मम प्राणसजीवन मूरी
देखसदेहकहतसुग्रीवा। भुजगाहिलिखत जीह बिन ग्रीवा
हँसिहहिंवदन तोहिंहैसाँची। नातरनिशिचर माया जाँची
कितअसज्ञानमृतकभुजगावैं। जोमुनिवर साधननहिंपावैं
प्रभुअसकहेउहँसबयह शीशा। करतकुतर्कनउचितकपीशा
दो० शिरसोंकहत सुलोचना हँसहु बेगि मम नाथ।

नातर सत्य न मानिहौं लिखा जो तुम्हरे हाथ ११०

छिन का बिलम्ब कीन्ह नहिं बोला। स्तुत कवन मृदुल नहिं खोला
पुनि पुनि कहत सो नाग कुमारी। अमित भय उरगा में करि मारी
लगे लषण शर क्षोभ बढ़ावा। प्रभु समीप कस मोहि लजावा
जो मन वचन करम यह देही। पति देवता न आन सनेही।
तौ प्रभु सभा बीच शिर बोलै। रहहि छाय यश सुयश अमोलै।
जो जानत तब यह गति साईं। बोलि पठावत पितहि सहाई
सुनि तिय वचन हँसेउ तब शीशा। चौंके चकित भालु भट कीशा
हँसेउ ढठाय वदन सब देखा। विस्मय भयउ सकल जिहि पेखा
कुलिश समान सुना नहिं जाई। रहेउ सो वदन बहुरि अरगाई।
सकुच कपीशहिं तोरेउ नारी। बड़ आश्चर्य्य भयो बन चारी
पूँछत कपि पति पद शिर नाई। कारण कवन हँसा शिर साँई
प्रभु कह सुनु सुग्रीव कपीशा। शीश हँसे कह सुनहु अदीशा
मनक्रम वचन पतिहि सेवकाई। तिय हित यहि सम आन उपाई
असजिय जानि करहि पति सेवा। तेहि परसानुकूल सुनि देवा
यह सतवति अहि राज कुमारी। तेहि सत ते हँस शीश मुरारी
सुनि प्रभु वचन कपि न सुख माना। पुनि पुनि चरण गहे हनुमाना

सुचि गिरिजा अस प्रभु प्रभुताई। केवल भक्ति हि देत बड़ाई।
जासु दृष्टि जग उपजत नाशा। अस कौतुक कर कोतिक आशा
दो० शीश पाइ प्रभु चरणा गहि बहु विधि विनय सुनाय।
आजको दिन रणा परिहरहु मम हित कोशलराय ११
बहुरि विभीषणा पग न परीसो। रघुपति चरणा दियो मन धुनिसो
तुम पितु समदश कन्धर भाई। इहि कुल की तोहिं लाज बड़ाई।
सुनि पुलस्त्य परिवार कदीपा। पायउ फल रघुवीर समीपा।
महामोह वश अनभल माना। ज्ञान भयो तब गुणा पहिचाना
युग युग कर हु अकण्टक राजू। सहित सुकीरति सुकृत समाजू
सुमिरत तुमहिं सुजन गति पावा। रघुपति चरित संग करि गावा
सुनत विभीषणा मन करुणा भरा प्रकट न कहत समय विरहाकर
कालकर्म गति काहि सुभाई। चली तुरत गुरु आयसु पाई
दो० बाहर करि कपि कटक ते फिरेउ विभीषणा आप।
बिसरेउ दश सुख वैरही हृदय अधिक सन्ताप १२
शिर चढ़ाइ पालकी चढ़ी सो। रघुपति कृपा प्रभाव बढ़ी सो
हृदय रवि मूरति घनश्यामा। रसना रटत निरन्तर नामा।
सरित सिन्धु संगम जहँ पावन। अस सुधि पाय गयो तहँ रावन

संग मँदोदरि सब रनिवासू। मनो शोक रवि कीन्ह प्रकासू
पाय रजायसु सेवक धाये। चन्दन अगर भार बहु लाये
रचि दृढ़ दारुण चिता बनाई। जनु सुर लोक निसेनी लाई
करि प्रणाम सबजन परितोषी। धीरज धरसि तासु मति पोषी
शिर भुज धरि बैठी करि आसन। भइ जनु योग सिद्धि कर भाजन
दो० देत अनल ज्वाला बढ़ी लपट गगन लगि जाय।
लखी न काहू जात तेहि सुर पुर पहुँची आय १३
इति

सुतवध सुना दशानन जबहीं। संभ्रम मूर्च्छि परा महि तबहीं
दुरित भयउ लोचन भरि आवा। जनु निज भरा आहि राज गँवावा
हा सुत सन्तत आज्ञाकारी। करि विलाप दशकन्ध पुकारी
शक्र आदि जीतेहु सब देवा। सुर मुनि वन्दि करायहु सेवा
दूसर रहा न भुज बल दापा। स्वर्ग भूमितल तपेउ प्रतापा
इहि विधि करि विलाप लंकेशा। भयउ तेज हत सुनु उरगेशा।
मन्दोदरी रुदन करि भारी। उर ताड़ति बहु भाँति पुकारी।
नगर लोग सब व्याकुल शोचा। सकल कहहिं दशकन्धर पोचा
दो० तब दशकन्ध अनेक विधि समुझाई सब नारि।

नश्वररूप प्रपञ्च सब देखहु हृदय विचारि १४

तिनहिं ज्ञान उपदेशेउ रावन। आपन मन्द कथा अतिपावन
पर उपदेश कुशल बहुतेरे। जे आचरहिं ते नर न घनेरे।
तासु क्रिया कारि निशिचरनाहा। भयउ तेज हत अति मन माहा।
सचिव आइ सब लागे बुझावन। बादि विषाद करिय जनि रावन
सुत बित नारि बिबिध सुख जैसे। उपजहिं घटा मेघ नभ जैसे
यह जिय जानि सुनहु रखवाला। बचहिं न कोउ जग आये काला
अब प्रभु यतन विचारहु सोई। रिपु कर नाश जतन बिधि होई

क्षेपक

दो० लागेउ करन विचार पुनि बहु प्रकार दशशीश।
समुझि हृदय अहिरावसहि आयउ जहाँ गिरीश २५

दण्ड चारि तब तहँ निशि बीती। सन्ध्या वन्दन कीन्ह सप्रीती
लागेउ करन ध्यान दशशीशा। कारि हर्षित सम्मुख कर बीशा
शंकर सेवक अति अनुरागी। सुनु खगेश तेहि ते बड़ भागी
मंत्र कर्षराज जपि दशभाला। अहिरावण चित डोल पताला
लगेउ करन सो मन अनुमाना। कोहि कारण दशमुख अकुलाना
निशिचर नाह भुवन बल जाको। जीतन कहँ न वीर कोउ ताके

मनक्रमवचनआननहिंसेवी। धरेउ ध्यानउर कामद देवी
चलेउबहुरिआयउसोतहँवाँ। शिवमराडपरावरा रहजहँवाँ।
निशिचरपतिकहितेहिंशिरनायउ। करगहिनिजआसनबैठायउ
दो० अहिरावरा तबरावरा हिं बूझी कुशल सप्रीति।
प्रथमकही तेहिंसबकथा जैसेभगिनिअनीति २६
बधखरदूषरा जिमिसुधिपाई। मृगमारीच कपट छल गाई
कहेसि बहुरिसीता करहरराा। लंकदहनहनुमतकरवरराा
सेतुबाँधिजिमिप्रभुचलिआयउ। बालिकुमारविवादसुनायउ
अनीअकम्पनअरुअतिकाया। परेसमरमहिसुनुअहिराया
तातकुशलअबसबइसिरानी। कटकनिशाचरसकलनशानी
कुम्भकरराा घननादहु मारे। रामलषरा दुइ मनुज विचारे।
आनेहुँ बोलितोहिंनिजपासा। करहुसुयतनहोइरिपुनासा
सुनतशोचभा अहिरावरामन। बोलावचनसुहावनपावन
सुनुरावरा जगनीतिपियारी। करे अनीति होय भय भारी
बिनाविचार रारि तुमठानी। कीन्ह सेन कुल सर्वस हानी
मनुजप्रतापप्रभावनजानेउ। सबतेबड़ तेहि लघुकरमानेउ
यद्यपिनयोगमोहिअसबाता। तदपिहरहुँतवलगिहोउभ्राता

लै पताल देविहिं बलि देहौं। यश पूरण निशिचर कुल लेहौं।
लै जैहौं तुम जानेउ तबहीं। रवि सम तेज होइ निशि जबहीं
दो० कहि अस वचन प्रबोध करि शीश नाइ बल भारि
आयउ रघुपति कटक तब निज देविहिं उर धारि १७
रहेउ निज कर अति अँधियारी। मर्कट भट जागहिं तहँ भारी
कहहिं जयति जय जयति कृपाला। अतिहिं अगम जहँ नहिं गति काला
तहँ मारुत सुत रचेउ उपाई। कर लंगूर कोट कठिनाई।
सो शोभा यहि भाँति सुनाई। भुजग राज कुराडली लगाई
देखिय उन्नत शैल समाना। द्वार जहाँ जहँ सुख हनुमाना।
देखि हृदय अहिरावण हारा। किमि विधि गृह कर तिमिर पसारा।
एकौ युक्ति न मन ठहरानी। कपट वेष तेहि कीन्ह भवानी
वेष विभीषण सब अनुहारी। पवन तनय पहँ गा छलकारी
दो० सहज प्रतापी पवन सुत पुनि सुरपति पति दास।
तिनहिं निदर छल राम पहँ मूढ़ हृदय नहिं त्रास १८
मरम न जान प्रभञ्जन जाता। कीन्हे सिगरन विभीषण भाँता
ठाढ़ होइ बोलेउ सुनु भ्राता। चलेउ जहाँ कृपालु जन त्राता
मैं रघुपति सन आयसु पाई। सन्ध्या करन गयउँ सुनु भाई।

तोहितेतुरितचलेउँप्रभुपाहीं।भद्रविलम्बजानिरामरिसाहीं
सत्यवचनकपिनिजमनमाना।सुखसागरभावीबलवाना
कपटचतुरगतिजानिनजाई।परमनहरैहरहिंधनभाई
आयसुपाइगयउसोतहँवाँ।रहेफरारीभरथसुखेउजहँवाँ
कपिपतिजामवन्तनलनीला।बालीसुतसुंदरबलसीला
दो० द्विविदमयन्दरुकीशगराजगवाक्षकपीश
सहितविभीषणअपरभटसोयेसबरणधीर २९
तिनहिंमध्यरघुबरराजिराहू।एकसंगसोवतफरारीनाहू
दक्षिणादिशिसोवतरघुनाथा।अनुजवामदिशितेहिपरहाथा
प्रभुकर कर पर राजत कैसे।जातरूपपंकजफरारी जैसे।
कपिसमूहजनुसागरक्षीरा।तहँसोयेमानहुँदोउवीरा।
सुभगवारा धनु धरे बनाई।लक्ष्मणसह समीपरघुराई
अहिरावणमनकीन्हभरोसा।देखिरामसुन्दरघनश्यामा।
ब्रह्मादिकजेहिध्याननपावहिं।मुनिमहेशभूजामनलावहिं
करहिंविविधजपयोगविरागी।जपहिंनिरन्तरनिशिदिनजागी
सोप्रभुतेहिदेखाभरिलोचन।कृपासिन्धुसेवकभयमोचन
बहरिहृदयतेहिकीन्हविचारा।करहुँकाजरावरणअनुसारा

कछु निज माया कृत सुरा आई। कवनी भाँति जाहिं दोउ भाई
दो० मोहन ते मोहे सकल मन्त्र ते सुरव मूँदि ।
भयउ अदृश्य उठाइ करि प्रभुहिं चलेउ लै कूदि १२०
यहि विधि गयउ हुहन लै सोई। नभ मारग प्रकाश अति होई
सो प्रकाश जब रावरा देखा। किय प्रसारा तेहि वचन विशेखा
मन महँ हर्ष करहि अति भारी। अहिरावरा लै गा असुरारी
लै निज लोक गयउ पल माहीं। भयउ शोर तब कपि दल माहीं
जागे बानर अी हत भारी। देखिय जिमि सरिता बिनु वारी
पुनि देखिय जिमि निशि बिनु इन्दू। भे बानर जिमि उड़ विनु चन्दू
रवि बिनु दिवस जीव बिनु देहा। जिमि देखिय दीपक विनु गेहा
एकहि एक लगे तब बूझन। कहाँ गये त्रैलोक्य विभूषन।
दो० शोधेउ सब मिलि कटक तिन नहिं पाये दोउ वीर।
भेव्याकुल सब भालु कपि जिमि जलचर गत नीर २१
सकल कहैं यह विधि कह कीन्हा रघुपति विरह प्रारा कत लीन्हा
शोक ग्रसित धरि सकहिं न धीरा। कहाँ राम लक्ष्मरा दोउ वीरा
करुरणा करहिं कपीश अपारा। बनी बात विधि कहा बिगारा
कटक निशाचर सकल सँहारी। रहा एक रिपु रावरा भारी ।

सोउ न रहत राम शर लागे। भाइउ हम सब परम अभागे
कबहुँ जोदशशिर अरि राजीतहिं। उत्तर कबन देब हम सीतहिं
अस कहि विकल मूर्च्छि महि परे। लागत बज्र शैल जिमि गिरे।
दशा विभीषण कही न जाई। विगत वत्स जनु धेनु लवाई।
दो० सहित पवनसुत ऋक्षपति दुख मन भा बड़ि भाँति।
खगपति रूप अनेक तहँ कछु तम अपार तेहि राति २
पवनतनय पुनि कह सब पाहीं। विस्मय एक होत मन माहीं
कोउ एक आव विभीषण बेला। प्रभु के निकट जात हम देखा
पूँछत वदन कहसि अति नीका। कपट न जानिय निशिचर जीका
वचन सुनत बोलेउ लंकेशा। अहिरावण लैगा अवधेशा
पन्नग लोक निवासी सोई। मम तनु वेष अवर नहिं कोई
महाबली जानै सब माया। निश्चय तेहि दशशीश पठाया।
जेहि बल होइ तहाँ सो जाई। ताहि जीति आनहिं दोउ भाई
कहेउ भालुपति सुनु हनुमाना। तव बल तात सकल जग जाना
बेगि सो यतन विचारहु ताता। कृपासिन्धु आनहु दोउ भ्राता
दो० विलखि कहेउ कपि पति बहरि सुनु मारुतसुत तात
बिनु रघुनायक जन्म धिक पल युग सरिस बिहात २३

यथा लवित बिनु वारिद वारी। रवि बिनु जलज मीन बिनु वारी
भट अशस्त्र रण अनी अनाथा। वह्नि अनिन्धन गात अमाथा
दीप अवर्त्ति सकल क्षरा भंगी। तिमि हम सब देखिय बजरंगी
जिमि सीता सुधि भेवज आनी। तेहि प्रकार आनहु सुख दानी
सुनत वचन मारुत सुत बोला। रारवहु चित थिर कटक अडोला
भुवन चारिदश तीनिहुं लोका। आनहुं प्रभु बल प्रभु तज शोका
अब तुम सजग रहेउ सब भाई। लरहु काल सन जो चढ़ि आई
अस कहि सहत चलेउ हनुमाना। गरजत प्रलय पयोधि समाना
चलत बाट इक तरु तर आयउ। गीधिनि गीध कहत तहँ भायउ
दो० नारि गर्भिणी गृद्ध कर बोली पति सन बैन ।
आनहु आमिष मनुज पिय खाहुँ होय जिय चैन २४
तासु वचन सुनि खग अस कहेऊ। अहि रावण राम हिं लै गयऊ
देइहि बालि देवि हिं सो जाई। सो आमिष बड़ भाग न पाई
कवनेउँ यतन देब मैं आनी। अस कहि विहँग वाम सन मानी
जबहिं पवन सुत अस सुधि पाई। चलेउँ तहाँ सुमिरत रघुराई।
अभय ल्लवक पाताल हि गयऊ। अहि रावण पुर प्रविशत भयऊ
द्वार पाल मकरध्वज कीशा। कपि सन डाटि कहत बहु रीशा

निदरिजात मोहिं तोहिं डर नाहीं। दीपहिं जिमि न पतंग डराहीं
जानेसि मोहिं न मरुतसुत बालक। स्वामिभक्त भंजन सुरखकालक
सो० सुनत वचन हनुमान बोलत भे विस्मै विवश ।
अरे मूढ़ अज्ञान मोरे सुत स्वपनेहुँ नहीं ७
कहत वचन शठ सँग्युत रवोरी। काम विवश कब भइ मति मोरी
मम सुत बनसि मूढ़ केहि काजा। इतना कहत तोहिं नहिं लाजा
केहि प्रकार तुव मम सुत भयऊ। निजउत पति मोसन किन कहेऊ
सुनत कहहिं मकरध्वज वचना। किहेउ हाहरावरा पुर रचना
जब आयेउ चलिउ दधि सीपा। बहेउ स्वेद तव तन कपि दीपा
सो प्रस्वेद सागर महँ गयऊ। पियउ मीन तेहि ते मैं भयऊ।
यहि प्रकार मैं तव सुत ताता। गोवहुँ नहिं निज पिता न माता
अहिरावरा सेवा मैं करहूं। रखवेहु द्वार न कबहूँ टरहूं।
दो० सत्य वचन हनुमान कहि पुनि पूँछी सब बात।
लावा लक्ष्मण राम कहँ काह करत सो तात २५
कहहु तात तेहि अस्थल नाऊ। जान चहउँ मैं तव प्रभु ठाऊँ
यह वृतान्त अस जानहु ताता। यह मैं अवरा सुनेउँ कछु वाता
सीता पति अरु फरिा पति साथा। सोले आयउ निशिचर नाथा

कस्त होम तेहिकारण आजू। देविहिं बलि देई नृप राजू।
जोकछुनिज अवगानसुनिपायउँ।तातसकलसोतुमहिं सुनायउँ
निजप्रभुकाजलागिदुखसहऊँ।तुमसनसत्यवचनमैं कहेऊँ
जानकहहु तुमजानन देऊँ। प्रभु आज्ञातजि अयशन लेऊँ
सुनि असपेलि चलेउहनुमाना। भयेउ क्रोध मकरध्वज जाना।
दो० तेहिमुष्टिककपिकहँहनेउपुनिमारेउकपिताहि।
हनहिंपरस्परएकइकबलसमानघटिनाहिं २६
एकहि एक सकहिंनहिंपारी। पितापुत्र दोऊ भट भारी।
सुतहिंलूमसनबाँधिभवानी। चलेउवातसुतबिलचन आनी
धरिलघु रूप होमगृह देखा। जीव सजीव परै नहिं लेखा
तहँदेवी कर मराडपरहई। शोणित घट बहु को कहिसकई
विविध भाँति मेवा पकवाना। धरे आनि देवी अस्थाना
मालिनितहँ प्रसून लै आई। सुमनमध्यप्रविशेउकपिराई।
सुमनहुँ तेकरि अतिहलुकाई। लेतपारिजेहिजानिनजाई
जबदेविहिंसोपुष्प चढ़ायेउ। विकटरूपतबकपिदिखरायेउ
दो० छुवत चरणादेवी तुरित धरणी रही समाइ ।
सुखबगारि दाढ़े भयेकपिछबिलखतडराइ २७

देवी प्रकट समुझि बल भारी। करहिं विचार हृदय अति भारी
कहहिं कि देवि प्रकट भइ आजू। बड़ भागी भा निशिचर राजू
करि प्रणाम पुनि पूजा करहीं। जो चढ़ाव सो कपि सुख परहीं
जो जहँ रही वस्तु समुदाई। बची न कछू सकल कपि खाई
कपि रिपु रिपु कौतुक विस्तारा। भा वह निशिचर कुल संहारा
अहिरावण उर भा सुख कैसे। चढ़े काँध पर बलि पशु जैसे।
जबहीं होम सिद्ध तेहि जाना। लक्ष्मण राम त्वरित तहँ आना
ठाढ़ कीन्ह प्रभु कहँ तहँ आनी। निशिचर बहु आयुध धरि पानी
कोउ गदा कोऊ भल्ल वाणा। शक्ति शूल धरि कोउ कृपाणा
दो० तोमर मुद्गर परशु असि पाश परिघ अरु बेत।
शूल भुशुण्डी पटि परशु देखत बिसरत चेत २८
माया बल तेसकल विचक्षण। अति विकार मय मूढ़ कुलक्षण
यहि विधि सकल वीर तहँ रहहीं। अहिरावण आज्ञा दृढ़ गहहीं
आयसु पाइ खड्ग तिन काढ़े। मारण कहँ प्रभु पर भे ठाढ़े।
कोउ कह राजनीति अनुसरहू। भरि भैराउ बिलंब अबकरहू
पुनि अस वचन मूढ़ अति कहहीं। सुमिरहु जो तुम्हरे हित अहहीं
नाहिं तो काल आइ नियराना। निशा सुत्र सम दोउ जन प्राना

बोलहिंमूढ असम्भववानी। सकुचसगहिसोकहतभवानी।
दो० फरिपतिचितवहिंरामतनरामचितवअहिराज।
प्रभुकरकौतुककहियकिमिसुनोदशास्यखगराज २९
विहँसिकीन्हप्रभुहृदयविचारा।जपैसकलजगनामहमारा।
जानादेवि रूप हनुमाना। विहँसि कहा तब राम सुजाना
कालकौरतुमसुमिरहरक्षक। भईतुम्हारि देवि तव भक्षक।
सुनतगिरातिनमारन ढयऊ। घनसमानकपिगर्जतभयऊ
निशिचरसकलत्रसितभेभारी। कहहिंवचनभयहृदयविचारी
अहिरावरा भलकीन्हनकाजू। आने कपट वेष सुरराजू।
तेहि तेदेविकृद्ध कृत आजू। अबभासबकर मररा समाजू
सम्भ्रमवशतबनिश्चरभारी। बहरिकीश गर्जेउ अति भारी।
दो० प्रकट रूपकरि पवनसुत अट्टहास गम्भीर।
अतिभयत्रसितरजनिचरसुनहुउमामतिधीर १३०
डगमगानिशिचरअभिमानी। मारुत वेग यथा नद पानी
तेहिसराकपिलीन्हेदोउभाई। धुनतदलनिशिचरससुराई।
छीनिकयारा लीन्ह हनुमाना। कादतभुजशिरकयीसमाना
खराऽखराऽसबरवलदलकीन्हा। गहिपदडारिअनलमहँदीन्हा

करि लंगूर कोट कपि राई। तेहि महँ बिरि कोउ भागि न जाई
इहि बिधि सब निसिचर संहारे। अहिरावण लरि बचन उचारे
रे कपि ढीठ त्रास नहिं तोही। अहिरावण ते जान न मोही
जम्बुमाल कहँ जिमि तैं मारा। अरु रावण सुत हतेउ बिचारा
दो० कालनेमि सम नाहिं मैं करु कपि बचन प्रमान।
असकहि रञ्ज प्रहार किय कपि तन बज्र समान ३१
लै असि ताहि पवन सुत मारा। काटि सीस पावक महँ डारा
आहुति पूरी कीन्ह तब कीसा। लै पुनि चलेउ लंक राज गदीसा
मकरध्वज प्रणाम तब कीन्हा। बन्धन छोड़ि राज्य तेहि दीन्हा।
इहाँ राज्य भोग हु तुम ताता। भजहु सदा मम प्रभु हेउ भ्राता।
असकहि कपि निज दल सो आवा। हर्षेउ कटक सबनि सुख पावा
मृतक शरीर प्राण जिमि आवहिं। मरि गत पाइ फरी सुख पावहिं
बिछुरि अलभ्य मिले जनु आई। तिमि हर्षे सब लरि दोउ भाई
मिलेउ कपीश चरण धरि माथा। पुनि पग गहे निशाचर नाथा
दो० जामवन्त अंगद सहित मिले भालु अरु कीश।
सनमाने कहि बचन प्रिय लंकराज कोशलाधीश ३२
बहुरि सबहिं भेंटे हनुमाना। कहहिं तात तुम राखे प्राना।

देवन सुमन वृष्टि तब कीन्ही। प्रमुदित हृदय दुन्दुभी दीन्ही।
अनुज सहित हर्षित रघुवीरा। कहेउ वचन सुनु तनय समीरा
तव समान नहिं कोउ हितकारी। सुर मुनि सिद्ध मनुज तनु धारी
यश तुम्हार त्रिभुवन महँ भयऊ। सुनि प्रभु वचन चरण कपि नयऊ
नाथ कीन्ह सब मैं कहि लेखे। तरणी चलत अगम जल देखे
तैसे सब प्रताप तव नाथा। सुनि अस मिले कपिहिं रघुनाथा
कटक सहित हरषे दोउ भाई। तेहि अवसर सुख किमि कहि जाई
छं० कहि जाइ सुख किमि तेहि समय कर सुनहु गिरिजा चित धरे।
रघुवीर रूख अवलोकि हरषित आरती सुर गण करे॥
अति प्रेम सों मारुत सुवन यश गाइ विबुधन अस कहा।
नर नारि यह कीरति सुनत गावत लहत मंगल महा ११
दो० करि बहु विधि हरि आरती वाणी सत्य सुनाय।
राम चरण अनुराग ऊ अमर सुमन झरि लाय ३३
देव निडर प्रभु गुण गण गावहिं। आरत हर कहँ विनय सुनावहिं
विबुध विनय रघुपति सुनि काना। कह प्रभु सत्य सिन्धु भगवाना
चतुरानन वर दीन्ह अपेला। तेहि कारण यह बाढ़ उ खेला
नाहिं तु लषण एक पल माहीं। राखत यातुधान कुल नाहीं

अजहुँ होइ रण कौतुक भारी। निरखहु तुम सब शोच बिसारी
अब जो रहेउ निशाचर शेखा। भट महँ जासु भुजा कर रेखा
तेरण महि महँ हतहुँ प्रचारी। बिनु श्रम सब सों कहत खरारी
शम्भु कृपा अब संशय नाहीं। सुनि सुर हर्षे अति मन माहीं

दो० सत्य वचन सुनि राम कर आनन्दित सुर यूह ।
चले कहत जय जय अति प्रभु वरषे सुमन समूह ३४

यह चरित्र शुचि सुभग सुहावा। खगपति राम कृपा मैं गावा
अब हिय हरषि सुनहु द्विजराई। मानस कहहुं सुमिरि रघुराई
याज्ञवल्क्य पद वन्दि सप्रीती। भरद्वाज बोले शुचि नीती।
यह चरित्र अति रुचिर सुहावा। सुनि मम नाथ परम सुख पावा
अहि रावण वध अन्त भगवाना। चरित किये सो कहहु बखाना
सुनि मुनि विनय ऋषय पुलकाई। बोले हृदय सुमिरि गिरिराई
प्रश्न तुम्हार तात अति पावन। सहज सुभग सज्जन मन भावन।
मानस हरि चरित्र सुठि नीका। सुनत करत जो कोउ मन फीका

दो० सोई जगवञ्चक सुनहु तेहि मानस न सुहाइ ।
भव सागर महँ भ्रमत सो अमित कल्प चलि जाइ ३५

मानस सुनत न मन हिं अघाहीं। तास धन्य अवर कोउ नाहीं

धन्यधन्यतुमसनकोउआना। ललितचरितअतिसुनहसुजाना।
रामलषणादलसहितविराजे। जयतिरामकहिकपिगणगाजे
रामसेनसुखमाअधिकाई। निगमागमजानेवबुध भाई।
उहाँ दशानन सब सुधि पाई। दूत सँदेश दीन्ह सब जाई।
अहिरावणाकरबधसुनिकाना। भयउतेजहतअतिदुखमाना
वचनवज्रसमलागेउताही। सम्भ्रम मूर्च्छि परेउ महि माही।
कटेपंखजिमिविहँगविहाला। रंकचीरगतनिशिहिमकाला
सुखसुखानलोचनजलबहई। वचननआवशीशधुनिरहई
दो० मयतनयातब आइसुनि बहु प्रकार समुझाइ।
मान न मूरख काल वश परम क्रोधकहँपाइ ३६
नारिवचनसुनितेहिरिसिबाढ़ी। उठि बैठउ धरि धीरज गाढ़ी
तेहि अवसर मंत्री यक आवा। करि आदर दश मुख बैठावा
सिन्धुरनाद नाम बलवाना। बृद्ध ज्ञान मग परम सुजाना।
सदा विभीषणा करसँगठयऊ। कबहूँ दशमुखसभानगयऊ
आयासोभल अवसर पाई। कहेसि नीति रावणाहिंबुझाई
ज्ञानकथा दशमुखनसुहानी। तबबहिराइबात कहिआनी
कारिवरनादहृदय असगुनेऊ। प्रभुदुहतागहृदय पटबुनेऊ

अब यहि कहौं सो सहज उपाई। जेहि यहि मूल समूल नशाई
दो० यह विचारि बोलेउ सचिव सुनहु दनुज कुलराउ।
धीर धरहु संशय विगत कहहुँ सो करिय उपाउ ३७
असादिक न सुतन बल दूना। कस सुरारि मन मानहुँ ऊना।
सचिव वचन सुनि दश मुख कहई। अब हमरे कुल को भट अहई
अपने मन महँ करहु विचारा। है नारान्तक तनय तुम्हारा।
मूल अमुक्त माहिं भा जोई। दियेउ बहाइ मरा नहिं सोई
शम्भु प्रसाद ताहि कुछ भयऊ। पुरबिहवा बल नृपता दयऊ
कोटि बहत्तर एक प्रभाऊ। राजा प्रजा भेद नहिं काऊ।
दूत पठाइ बुलावहु ताही। जीतिहि सो रिपु रणा महि माही
दनुज अधीश चतुर चर पठवौ। धरहु धीर चित चिन्ता घटवौ
दो० तासु मन्त्र सुनि दश वदन हृदय प्रमोद अमान।
धूम्रकेतु कहँ बोलि ढिग समुझायउ सनमान ३८
धूम्रकेतु तुम परम सयाना। लै मम पाती करहु पयाना
बसत जहाँ नारान्तक राजा। तहाँ न तात अवर कर काजा
अवसर पाइ हेतु समुझाई। सपदि ताहि लै आनौ भाई
आयसु पाइ चार तहँ गमना। यह सुनि विहँसि कहेउ अहिदमना

काक नाथ यह गाथ सुहाई। मो सन तात कहहु समुझाई
नारान्तक उतपत्ति यथाविधि। पुरविह्वावलगा कवनी सिधि
सुमिरि काक पति उर अवधेशा। मनप्रसन्न कर कहु काकेशा
अति सुन्दर शुचि यह सम्बादू। चित थिर करि सुनिये उरगादू।
दो० नरव चौगुना वसुजन तहँ सप्त अकाश मिलाइ।
इतने निशिचर एक दिन भेरावरा पुर आइ ३९
पुरमहँ उपजे खल इक साया। तब सुनिहरषा निशिचर नाथा
निजगुरु बोलि चरणा शिर नाई। बूझा सुदिन सुकलश धराई
भृगुनन्दन तब तेहि सन कह्यऊ। आजु बाल सब मूलन भयऊ।
सत्य कहत दशासुख तुम पाहीं। भये आजु जे तब पुर माहीं
ये सुत सब निज निज पितु घाती। सुख देखत सुनु सुर आराती
धरि राखे धन सहित विनाशा। होइ अवशि नहिं उबरन आशा
शुक्र वचन सुनि डेरे निशाचर। कह करिये अति बाद परस्पर
निश्चय कीन्ह प्रसव शिशु आजू। सौंपिय सिन्धुहि और न काजू
दो० सपरिकरहु सब काज यह लावहु बाल बटोरि।
राखे होई हानि अति यह दशवदन बहोरि १४०
सेवक दशा सुख आयसु पाई। धाये तुरित चरणा शिर नाई

रावरा आयसु नगर पुकारी। सुनहु सकल पुर नर अरु नारी
आजु अमुक्त मूल भय बालक। डारहु सागर सब कुल घालक
बोरे सबन बाल इक ठाईं। भावी वश मधु मारबी नाईं
पाय अधार हस बट बोरा। पीवन लगे क्षीर चहुँ ओरा।
पीवत क्षीर अब्द भरि राती। पुष्ट भये खल निश्चर जाती
पुनि सबरुक संग तहँ जाई। सुरसरि संगम भाजेहि ठाईं
तहँ शिव मन्दिर परम सुहावा। सबन विलोकि मुदित शिर नावा
छं० शिर नाइ मुदित विलोकि शिव मन्दिर सुहावन पावनं।
कछु दिन रहे तहँ सकल पुनि उठि चले सुनु अहिरावनं॥
रावरा पुरी ते दिशा प्राची कोश शत रस चलि गये।
बैठे जलधि महँ पाइ थल वर शम्भु चरणान चित दये १२
दो० जानत नहिं उतपत्ति निज मन महँ करत विचार।
गे तेहि ढिग जाकर विदित रवि ते छठवीं वार ४१
हरि अरि गुरु निज शिष्यन चीन्हा, करत प्रणाम आशिषा दीन्हा
काहि निज नाम सबन समुझावा। कुल गुरु जाना विनय सुनावा
निज उतपति बूझी शिर नाई। भृगुनन्दन सो सकल सुनाई।
सुनत अपन वृत्तान्त लजाने। लखि रुख भृगुनायक सनमाने

कारा प्रतोष मन्त्र गुरु दीन्हा। शिक्षा पाइ गमन तिन कीन्हा
ज्ञान लहेउ सब संशय त्यागी। भे विरञ्चि पद सब अनुरागी
निराहार बैठे इक आसन। वर्ष सहस तप किय उरगाशन
श्वास धार कृत वर्ष हजारा। रहे ऊर्ध्व मुख बिना अहारा
दो० एक पाद पुहमी दये अपर अंग अनयास ।
सकल पुष्ट तन मन हरष सपनेहुँ भूखन प्यास ४२
तप अतिउग्र विचार विधाता। तिन ढिग गमने मुख मुसकाता
हंसारूढ़ कमराडलु हाथे। श्वेत सुकुट शुचि चारिउ माथे।
आनन चारि नयन वसु नीके। चारिउ भाल भस्म शुभ टीके
उपमा मय प्रभु सब जग अयना। भायेउ दया सदन वर वयना
माँगहु वर जो सब मन भावा। सुनेउ सबनि विधि पद शिर नावा
नाथ चहत हम यह वरदाना। हमहिं न कोउ जीतै मय दाना
एवमस्तु विधि कहेउ विचारी। आन पाणि नहिं मृत्यु तुम्हारी
हरि सुत हैं तुम्हार गुरु भाई। तेहि सन कि हेउ न कबहुँ लराई
दो० जो तेहि सन कीरि हौ समर भरि हौ वचन प्रमान।
एकहि कहँ वरदान यह दै कह कृपा निधान ४३
दियउ नरान्तक कहँ वरदाना। रहे अपर जे धरि उर ध्याना

तिन सन वरंबूहि विधि कहेऊ। सुनत प्रमोद सबनि उर लहेऊ
सुनि विधि गिरा सबनि कह स्वामी। देहु येह वर अन्तरयामी
देवासुर संग्रामहिं माहा। जीतहिं हम यह बर सुर नाहा
असकहि दनुज रहे शिर नाई। तिन सन कहेउ विरंचि बुझाई
तुम अजीत सबसन सब भाँती। बानर भालु त्यागि दुइ जाती।
यहि विधि सब कहँ देवरदाना। ब्रह्म लोक गे ब्रह्म सुजाना
विधि ते लहि वर तिन सुख बाढ़ा। लागे करन बहुरि तप गाढ़ा
दो० गिरा गिरीश समेत सब जपहिं निरन्तर नाम ।
जोरि युगल कर एक पद निशि दिन आठौ याम ४४
बिनु प्रयास ठाढ़े सब भाई। सुधा तृषा निद्रा विसराई।
गुरा सहस्र संबत सब ऐसे। गये बीति प्रथमहिं तप जैसे
सबनि शीश मुनि अवनी दीन्हा। उभय चरण जरध कहँ कीन्हा
जोरे कर निरोध कर श्वासा। जपहिं मन्त्र शंकर वर आसा
मुनिगण तिन कर साधन देखी। मन महँ मानत सकुच विशेखी
हरि इच्छा बल हृदय विचारी। निरखि चले मुनि जपत पुरारी।
अयुत अब्द बीते खगनायक। भे प्रसन्न शिव जन सुखदायक
चढ़े वरद हिम सुता समेता। आये तिन तट कृपा निकेता

दो० बोले तिनहिं प्रशंसि शिव माँगहु वर मनभाव।
नारान्तक कारि दण्डवत बोला सुनु सुरराव ४५

मैं तप किहेउँ दरश तव लागी। नाथ दीनजन नित अनुरागी
अब माँगत आवत मोहिं लाजा। ठाढ़ रहा कहि निशिचरराजा
माँगु सकुचतजि असहर कहेऊ। नारान्तक तव माँगत भयेऊ
मोहिं विभव अस देहु गोसाई। भूप प्रजा नहिं परहुँ लखाई
पुर अनयास बसहि मम नाथा। यहकहि रहा जोरि युगहाथा
एवमस्तु कहि हरसुर ईशा। गवने भवन सहित वागीशा
शिवप्रसाद नारान्तक पावा। अन्तरिक्ष पुर सपदि बसावा
पुरविहवा बल की रुचिराई। कहत कछू इक तुमसन गाई

दो० ऋतु रवि दूने कोटि सौ भवन बसे इक ठोर।
जातरूप मय नगजटित अति शोभित चहुँ ओर ४६

योजन दाई शत चकलाई। चौसठ कोश उतंग सुहाई
दुर्गम दुर्ग जलधि चहुँ फेरा। विस्मय विश्व कर्म्म मन घेरा।
चारि दुआर कुलिश पट रूरे। गढ़ भीतर चौहट निधि पूरे
वारीक पद्म धन तुच्छ खजाना। बन उपबन सरिता सर नाना
बसत प्रजा पुर सघन अपारा। नारान्तक गढ़ मध्य सँभारा।

सोड़शकोटकोटचहुँओरा।मारोमारोकलागेनहिंथोरा
हयगयरथखच्चरसमुदाई।कहिनजाइखगमृगविपुलाई
कोटि बहत्तर एकै साथा। विद्या पढ़न लगे खग नाथा
दो० हरि प्रेरित तेहिकाल महँ दधिबल पहुँचा आइ
पुरविहगबलनिरखिसोकछुदिनरहालुभाइ४७
भावीवशनिशिचरसँगकीशा।वर्ष एक पढ़ सुनहु मुनीशा
गुरुइकबारकहेउ रिसियाई।हतिहसि तैं आपनगुरुभाई
विनु अघसुनि दधिबलगुरुशापा।विदामाँगिगवनाकरिदापा
मारगमिले देवऋषितेही। गहेसुकराठ सुवन पगनेही ।
लखि अशीश दे बूझा तेहीं। दधिबल कवन काजगे जेहीं
तब नारान्तक पुर प्रभुताई। दधिबल नारद मुनिहिं सुनाई
सुनी निशाचर सम्पति भारी। रहे ब्रह्म सुत हृदय विचारी
क्षराक देवऋषि कीन्ह गुमाना।बारबारसुमिरे भगवाना
दो० दधिबल ते नारद कहेउ सुनहु तात चित लाइ।
तनुधरिजेहिहरिभक्तिनहिंजन्मवादिजगजाइ४८
यह विचारि भजुरामहिं ताता।उपजेउसुनतज्ञानमुनिबाता
ऋषिपदपरशि आशिषापाई।कपिपतिसुतगवनेउहरषाई

सपदिकीशतबपहुँचाजहुँवाँ।पयानिधिमध्यरुचिरगिरितहुँवा
धवरागिरितेहिनामसुहावा। सुभग देखिकपिवर मनभावा
गौरि गिरीश सुमिरि गराराई। कीन्ह निवास बैठ हरषाई।
नारद ताहि देइ उपदेशा। गये विरंचि धाम खग बेशा
उत दश सुख सुत विद्या पाई। जहाँ तहाँ की विविध लराई
विन्दुनाम इक निशिचर आहा। सोरवल रहा बितल थल माहा
सो० अति रणधीर जुझार चढ़े शक्र परबलि विपुल।
कीन्हेउ समर अपार अब्दएक श्रुति सन्तकह ८
सप्त कोटि निशिचर सँग ताके। आसित मेरु समस्वलभट्वाके
सुनासीर कोपेउ इक बारा। सब कहुँ समर मध्य संहारा।
भाजिविन्दुकेवल गृहगयऊ।तासुनारिनिशिचरिसुखदयऊ
सब निशि भोगकरा खलपापी। उपजे बहु बालक परतापी
सप्त कोटि सुत नाना नामा। ऊदर वक्र सकल बल धामा
कोटिबहत्तरितनयाजाके। लाजहिंभृंगलोचनलखिताके
तिनमहँविन्दुमतीइकसुन्दरि। नभचारिनिरतिरूप निरन्तरि
निरखिविन्दुनिजमन अनुमाना नहिंनारान्तकसमकोउआना
दो० यह विचारिचितविन्दु तबनारान्तकाहिबुलाइ।

बिन्दुमती आदिक सुता सुन्दर साज सजाइ ४९
सकल सुता इक संग बिवाहीं। यथायोग जेहि कहँ जस चाहीं
नारान्तक सब सेन समेता। करि बिवाह फिरि गयउ निकेता
पुर बिहार बल कीन्ह बसेरा। प्रजा सहित सुख करत घनेरा
जोतिय चहिय बिबुध गृह भाई। सो भावी बस निसिचर पाई।
नारि पतिव्रत जेहि घर माहीं। तेहि प्रताप निज अमर डराहीं
बिन्दुमती बिद्या सम ताता। बुध जन सभा चरित बिख्याता
नारान्तक उतपति मैं गावा। सुनु खगेश पुनि चरित सुहावा
पुनि पुनि हरिहर पद सिर नाई। गुरु सन सुनेउँ सो कहेउँ बुझाई
दो० चारन दश सुख को तुरत मग चलि पहुँचा जाइ।
ग्रामान्तर योजन युगल ठाढ़ भयेउ हरषाइ १५०
तेहि मारुत दिशि कानन भारी। परसा लेत देखेउ तहँ बारी
सकुचि समीप जाइ भा ठाढ़ा। बूझेसि ताहि धीर धरि गाढ़ा
कवन रीति यहि पुर महँ भाई। तरु पर चढ़त भूप सुत आई
चार बचन सुनि सो मुसकाना। कवन नगर तुम बसत अयाना
नारान्तक नृप कै यह बारी। तेहि कर सेवक मैं लघु चारी
धूम्रकेतु तेहि उतरु न दीन्हा। फरुहा लेइ पुनि निज मारग लीन्हा

लिये कनक घट सुरवमा पूरी। वारि लेन आई तिय रूरी
देखि भयउ तेहि संशय भारी। बूझा सत्य कहहु सुकुमारी।
दो० तुम्हरे पुर कह चेरि नहिं रानी कहहु स्वभाव।
आइउ तुम जल भरन कहँ बोलेउ त्यागउ राव ५२
दूत वचन सुनि निशिचर चेरी। बोली हँसि करि एकहि बेरी
नारान्तक दासिन की दासी। हम ताकी दासी विश्वासी।
सदा भरैं यहि सागर पानी। इहँ आवहिं कोहि कारण रानी
कहिहहु अवर काहु असबाता। पैहहु मार मुष्टिका लाता
असकहि गवनी लै जलनारी। तिन सँग धूम्रकेतु मग धारी
गढ़ भीतर कीन्हेसि पैसारी। निरखे विपुल कूप सर वारी
नानागज रथ खच्चर घोरा। फिरत विलोकत पुर चहुँ ओरा
अन्तर गढ़ तेहि चारि दुआरा। तहाँ न चर पावहिं पैसारा।
छं० पावत नहीं पैसार चर गति द्वार लागि फिरि आयऊ।
यहि भाँति रावण दूत घटिका युग्म दिवस गँवायऊ
मन महँ विचारत ठाढ़ चौहट मध्य सोजबराहि गयो।
निशिचर निकंदन होन लागि विधि ताहि इक अवसर दयो ५३
सो० गवनेउ भूपति द्वार दूत्य करन इक कौतुकी।

लीन्ह धारि तेहि भार गढ़ इमि कीन्ह प्रवेश चर ९

बैठेउ सभा नरान्तक जाई। कोटि बहत्तर संयुत भाई।
व्योम तीन रस गुण वसु एका। अंक रीति लिखि गुणी विवेका
वन्दीजन नट कौतुक करहीं। प्रति दिन कवि कोविद उच्चरहीं
रावण दूत सभा सो देखी। मन महँ चकित भयेउ विशेखी।
तब चारण मन अस अनुमाना। कोटि बहत्तर रूप न आना
भूषण वसन सुआसन जोहा। देखि सुखद चारण मन मोहा
याम दिवस गत अवसर पावा। नारान्तक कहँ शीश नवावा
दीन्ह पत्रिका पद शिर नाई। कुशल तासु बूझी हरषाई
दो० नारान्तक निज कुशल कहि बूझा दशमुख हेत।
समाचार गढ़ लंक कर वरणेउ दूत सचेत ५२
चर भाषित नारान्तक सुनेऊ। सराक माहिं मन कारण गुनेऊ
पुनि पत्री निशिचर पति बाँची। मानी चार बात सब साँची
उठेउ सभा ते हृदय रिसाई। गा निज भवन शोच सरसाई।
विन्दुमती कहँ बाँचि सुनाई। पितु पर भीर पत्रिका आई
समाचार सुनि कह तेहिं नारी। तुम जनि करहु राम सन रारी।
गहहु चरण पिय अकसर जाई। रसन सफल करि विनय सुनाई

माँगि भक्ति वर प्रेम दृढ़ाई। निर्भय राज्य करहु गृह आई
नारिवचनतोहिमनहिनभावा। तबउठिकोट द्वाररवलआवा
दो० कहत बजाव निशान घन सजहु सेन चतुरंग।
जन्म भूमि जावा चहहुँ पितु चरणा के संग ५३
आयसु दीन्ह नरान्तक राजा। लगे निशाचर सजन समाजा
अमित बाजि गज उष्ट्र नाना। रथ खच्चर खेचर बहु याना।
नाना अस्त्र शस्त्र गहि पानी। निशिचर अनीनजाइबखानी
जैसब संयुत साज जुहाई। विविध निशान हने हरषाई
कन्तजातनिश्चय जियजानी। विन्दुमती निज चित अनुमानी
राम विरोध नयहि कल्याना। महूँ संग अब करहुँ पयाना
भूषण बसन सुअंग बनाई। कन्त चरण गहि विनय सुनाई
सासु श्वसुर दर्शन हितनाथा। हमहूँ चलब प्राणपतिसाथा
दो० दशमुखसुतसुनितियवचनहृदय परमसुखमानि
कहेउ चलहु सबसरिवनसहप्रमुदित ऊँडिगलानि ५४
सुनिपतिवचननारिहरषानी। चली संग लै सखी सयानी
लै दल नारान्तक पग धारा। अमित सेन को कहि सकपारा
बुधजन कहत सुनहु खगराजा। अयुत सतावन बाजन बाजा

धूम्रकेतु कहँ दिग सँग लीन्हे। अति आतुर गवनारिस कीन्हे
चलत शकुन भल ताहि न होई। गनइ न मृत्यु विवश शठ सोई
तासु पयान जानि दिगपाला। जिय महँ संशय करत विशाला
कोल कूर्म अहिपति अति डरहीं। पुनि पुनि राम चरण चित धरहीं
समुझि राम बल संशय त्यागी। सुर दिगेश प्रभु पद अनुरागी।

दो॰ नारान्तक लंका तुरत दल समेत नियरान ।
दिग योजन दल रहेउ जब सुनु मुनीश सज्ञान ५५

इहाँ कृपालु रमेश खरारी। असित जलद सम सेन निहारी
प्रभु सर्व्वज्ञ नीति हित सेतू। सचिव बोलि कह रघुकुल केतू
सखा विलोकहु दक्षिण ओरा। गर्जत घन आवत नहिं थोरा
उमा राम सब अन्तरयामी। चरित हेतु बूझा अस स्वामी
रामवचन सुनि दशमुख भ्राता। कहहँसि गहि प्रभु पदजलजाता
देव देव नहिं दल जल बाहा। अहहिं नरान्तक निश्वर नाहा।
बिहवा बल पुर बसत गुसाँई। पठवा तेहि दशकन्ध बुलाई
आवत धूम्रकेतु चर संगा। करत कुलाहल नाद उतंगा।

दो॰ तेहि सँग गुरगी अनेक प्रभु गावत हनत निशान।
सेन संग चतुरंग खल डोलत विविध दिशान ५६

कह प्रभाव तेहि सुनि भगवाना। विहँसे प्रभु बल बुद्धि निधाना
पाइ राम रुख पवन कुमारा। उठे हर्षि हिय गर्जि प्रचारा।
सहित लषण प्रभु पद शिर नाई। धाये कहि जय जय रघुराई
बात जात निशिचर समुदाई। देखि सपदि ढिग पहुँचे जाई
कटकटाइ गरजे अति भारी। देखेउ इमि आवत बन चारी।
बूझेउ दूतहिं निशिचर नाथा। यह आवत धावत को भ्राता
स्वर्ण शैल विकरार शरीरा। गर्जत प्रलय जलद सम वीरा
तब नारान्तक सन कह दूता। यहै पवन सुत बली अकूता

दो॰ सिन्धु लाँघि लंकहि दहेसि पुनि हति अक्ष कुमार
कालनेमि कहँ मारि मगलावा मेरु उपारि ५७

पुनि अहिरावण सह परिवारा। पैठि पताल सदल संहारा
लै आवा तापस दोउ भाई। आवत अब तव ढिग सोइ धाई।
यहि कर भुज बल अहै अपारा। सुनि रिसान दशकण्ठ कुमारा
चाप चढ़ाइ सुधारेसि बाना। तजन न पाव गहेउ हनुमाना
सो शर धनुष तोरि कपि डारा। पुनि रिसाइ उर मुष्टिक मारा
परा दशानन सुत महि कैसे। मिश्र रसातल गे गिरि जैसे।
पवन पूत बल लूम पसारा। कोटिन रथ गहि ता पर डारा

रथसारथी चूर्ण समभयऊ। विधिवशतेहिकरप्राणनगयऊ
दो० एक दण्ड अति विकल खल रहभूतल धुनिमाथ।
पुनिशठउठा सँभारितन धायउधरिधनुहाथ ५८
आँड़ेसि अगणित शायक कोपी। क्षरायक कीश कटक गातोपी
राम प्रताप प्रभञ्जन जाया। करगहि अरि शर तोरि बहाया
देखि पवन सुत की प्रभुताई। बरषत सुमन विबुध भरलाई।
जयजय पिंग अक्षसुर भारवा। सुनि दशकन्धतनय मन मारवा
नारान्तक अति हृदय रिसाई। कपि तट पहुँचा आतुर धाई
कह खल कीश जोकछु बल धरहू। मो सन मल्लयुद्धरण करहू
गावहिं विबुध तोर भुजजोरा। निजउरसह इक मुष्टिक मोरा।
लागत ढाढ़ रहै जो बानर। तौजानहुँ तव भुज बल आगर।
सो० हरि सुनि ता करि बात राम दूत रिस रोंकि उर।
अतिसमीप मुसक्यात क्षराकठाढ़ सन्मुख रहेउ १०
तबतेहिं कपि कहँ मुष्टिक मारा। भयउताड़ित समशब्द अपारा
टरानतहँतेपग हनुमाना। हृदय ननिशिचर नेकु लजाना।
दुइ मुष्टिक तेहिं फेरि चलावा। तब मारुत सुत कोप बढ़ावा
किलकिलाइ लंगूर लपेटा। डारि भूमि तिन दीन्ह चपेटा।

विकलताहिकरिकपिअतिगाजे।भेर्य्याकुलनिशिचरबहुभाजे
कोटिननिशिचरकपिकरगहहीं।रामदूत कर कौतुक अहहीं
मर्दि मर्दि बहु वारिधि डारे। देखि देव जय जयति पुकारे
एकदराड गत निशिचरजागा।बहु विधिसमरकरनसोलागा
छं० लागेउकरनपुनिसमरबहु विधिनिजसुभटबहुफेरिकै।
खलकोटिकोटिप्रचंडशायककपिहिंरामहँघेरिकै॥
रघा रंग रञ्जित वीर मारुत पूत पुनि पुनि गर्ज्जहीं।
गहिगहिविपुलदनुजहिंपछारतउरविदारततर्ज्जहीं १४
दो० सघनबाहिनीजलजबन जिमिकरिकृतउतपात।
रिपुनहनततिमिवायुसुत बिनुश्रमप्रमुदितगात ५९
करत समर आयउ तेहि ठामा।जहँ नित होत रहा संग्रामा
लरत अकेल तहाँ हनुमाना। धायउ बालि तनय बलवाना।
ता पाछे कपि चमू अपारा। चले कहत जय कृपा अगारा
लीन्हे गिरि तरु रज पाषाना।जहँ तहँ करन लगे मैदाना
अंगद आइ पवनसुत पाहा।कहिजयरघुवरसुनुद्विज नाहा
दोऊ भट यक सँग करि हूहा। हतन लगे करि सेन समूहा
देखतभालुकीशदलभागे।भागि चलेनिशिचर भय भागे।

देखि अनी निज ग्रसित बहूता। भा अति कुपित दशानन दूता
छं० अति कुपित भाद्दश सुरवसुवन निज भटन शपथ दिवाइकै
फेरेउ सबनि करि कोप बोला जात कहहुँ पराइकै॥
विधि दीन्ह विविध अहार कपि दल खात कसन अघाइकै
बिनु भालु कपि महि करहु पुनि हठ धरहु तापस धाइकै १५
दो० सुनि नारान्तक सरुष वच रजनीचर समुदाय।
लागे लरन सकोप सब माया कपट कुभाय १६०
माया तिमिर पसार अपारा। अस्त्र शस्त्र बहु भाँति प्रहारा
शक्ति शूल वर विशिष कराला। डारहिं रजतरु शैल विशाला
गिरत वृक्ष कपि लागत शायक। उठत बहुरि कहि जय रघुनायक
निज दल विकल विलोकि खरारी। सत्य सिन्धु इक शर संचारी
रिपु शर काटि तिमिर करि दूरी। प्रभु शर हते निशाचर भूरी।
हरि निषंग महँ पुनि सो तीरा। पविशे आइ सुनहु मुनि धीरा
निरखि विप्रकाश भालु अरु कीशा। गहि गिरितरु कहि जय जगदीशा
निशिचर अनी मध्य गे जबहीं। दिये डारि गिरि रजतरु तबहीं
दो० मरे तमीचर कोटि षट जानि निशा परिवेश।
दल युत अंगद पवनसुत चले जहाँ अवधेश ६१

अंगद हनुमदादि कपि भालू। आये जहँ रघुवीर कृपालू
प्रभुहिं विलोकि चरणशिर धरे। भे श्रमरहित सकलसुख भरे
अति आदर प्रभु कियसनमाना। सबकहँ बैठन कह भगवाना
पुनि रजाइ लै थल निशि धाये। छबिवारिधि प्रभु पदशिर नाये।
अंगद हनुमत निकट निवासी। राम चरण सुखमा गुणराशी
दोउ भट कर परसत प्रभु पाँऊ। देखि सुरन मन भा अति चाऊ
हमहुँ होत जगकीश स्वरूपा। पदगहि नित्त रहत नर भूपा
हरिनसिहाहिं सुमन झरि लाये। निज निज आश्रम अमर सिधाये
दो० बन्धु सचिव सेना सहित शोभित श्री भगवान।
तुलसिदास ते धन्य नर जे यह ध्यान लुभान ६२
उत नारान्तक सेन समेता। गयउ जहाँ दशकन्ध निकेता।
सुतहिं सुरारि मिला पुलकाई। कुशल बूझि बैठेउ हरषाई
देखि नरान्तक कैसमुदाई। दश मुख शठ सब शोच दुराई।
जेहि विधि हरि लावा जगमाता। ताहि आदि कृतकृत विख्याता
कुम्भकरण घननाद निपाता। कहि विलखा अहिराव घाता।
पितु मन मलिन नरान्तक देखा। बोला खल उर गर्व्व विशेखा।
तजहु सकल संशय विषुधारी। करिहहुँ पात समर अति भारी

चमूकीश बिनुक्षिति करिताता। धरि हौं तापस होत प्रभाता
छं० धरि आनि तापस भ्रात दोउ परभात बार न लाइहौं।
धरिधरिविपुलकपिभालुदीननिशाचरन अघवाइहौं॥
भुजबलकहहुं निजनहिंबहुतकरिरिपुनप्रकटदिखाइहौं
बिनुश्रमहिं तातन कोबयरलै तबचरणशिरनाइहौं १६
दो० सुनत बीस भुज सुत वचन बार बार उर लाइ।
लागु करावन नृत्य जड़ गुणी समूह बुलाइ ६३
बिन्दुमती आदिक रनिवास्। सब चलि गई मंदोदरि पास्।
सासुहिं मिलि बैठीं सब नारी। मय तनुजा कीरि आदर भारी
बूझि परस्पर रावण घरनी। प्रभुयश ताहि सुनायउ वरनी
देइ पतोहन वास सुहावन। आपु लगी सुमिरण जगपावन
शयन करहु कहसुतहि निशाचर। उठा आपु मतिमन्द अथाकर
गातेहि भवन कुटिल दशग्रीवा। जहँ मय तनया सद्गुणसीवा
आयउ पिय मन्दोदरि जानी। पाइसु अवसर गहि पग पानी
तियसुनाय अतिकोमलवैना। लगी कहन जल भरियुग नैना
दो० नाथ निगम आगम बिबुध कहत प्रकट यह बात।
बुधजन सो जो आपेहू राखे सर्व्वस जात ६४

तजहि न हठ शठ सर्व्वस खोवै। यद्यपि अन्त शीश धुनि रोवै
सो विचारि प्रभु परम सुजाना। मोर वचन सुनि कीजिय काना
अनुज भाँति मिलिये प्रभु जाई। अथवा हिं सीतहि देहु पठाई। सुनि तुम गवनहुँ पुत्र लखाई।
प्रभु पद गहि माँगहु वर येहू। पद पंकज रति विमल सनेहू।
पिया वचन तेहि विष सम लागा। सो गृह तजि गा अनत अभागा
निज नारी कहि कछु अभिमानी। कीन्ह शयन निशि गइ बड़ जानी
सो रजनी गत भयउ प्रभाता। जागे रघुवर अय जग त्राता
दो० अस्त्र कीश जगदीश पद शीश नाइ रुख पाइ।
धरि गिरि तरु धावत भये कहि जय जय रघुराइ ६५
कपि घेरा गढ़ सुनियहु काना। राव सुत लखि निपट रिसाना
साजि विपुल दल हनत निशाना। गढ़ ते चला निकरि बल वाना
चारिद्वार करि कठिन लराई। विशिख वरषि कपि दल विचलाई
निकरे निशिचर गढ़ ते कैसे। शलभ समूह शैल ते जैसे।
मारुत सुत देखा कपि भाजे। कटकटाइ अति विक्रम गाजे
कपि लँगूर चहुँ ओर भँवाई। रोके खल निशिचर समुदाई।
पटकत महि निशिचर फल बेलू। कोतिन देत विदिशि दिशि मेलू

इक दिशि इमि हरिकृत संग्रामा। दिग दूजी अंगद बल धामा

दो० निशिचर सेना उदधि सम मन्दर इव दोउ कीश।
मथत देखि जय रतन लगि हँसे बिबुध सुर ईश ६६

छन्द पद्धतिका

इमि निरखि पराक्रम करत कीशा। भा क्रोध परम रजनीचरीशा
करि प्रलय कन्द ते घोर शोर। धर कुधर शस्त्र धाये कठोर।
इक बार मार कर शर समूह। किय विकल अस्त्र हनि कीश जूह
कोउ देत कपिपति चित उचाट। कोउ सुरक करत निज धाम बाट
बह चले कन्दरा शैल ताक। कोउ दबकत इत उत ताक झाक
कोउ देत दुहाई लषण राम। कोउ कहत विधाता भयउ वाम
यहि बीच निशान्तक कर प्रधान। तेहि धाइ गहेउ युवराज पान।
बह भट लपटाने अंग संग। सब संग उठेउ अंगद उतंग
नभ कीश कीन्ह कौतुक अभूत। रवि मण्डल पहुँचेउ बालि पूत
अँग झारे जारे तपनि आँच। पुनि आयउ जहँ संग्राम राच।
यह निरखि अपर यूथप पिशाच। उर आइ गयउ सेना समाच
लै विषम शूल मारेसि प्रचण्ड, उर आनि लागि अति कठिन दण्ड
महि परेउ तनय तारा तुरन्त। लखि दौरि परेउ हनुमन्त सन्त।

सोइ शूल सैंचि मारेउ प्रचण्ड। होइ गिरेउ यूथपति सहसखण्ड
सब चरित सुनेरविकुलदिनेश। कह जाहु वेगि अहिराज शेष
चले नाइ माथ शंकर मनाइ। धनु बाँधि वाण विकराल लाइ
उर अंगद कर धरि सुमिरि राम। यम विगत भय उबल अतुल धाम
दो० विगत भई मूर्च्छा तुरित बहुरि चलेउ युवराज।
लखण चाप टंकोर सुनि फिरा कीश दल लाज ६७
सुनि टंकोर शरासन निश्चर। बधिर भये नहिं सुनत शब्द पर।
वर्षा विशिष कीन्ह अहिनाथा। काटे पारि पाय बहु माथा।
उड़हिं अकाश शीश भुज कैसे। धुनुकत तूल रोम गण जैसे।
रुण्ड अशीश फिरहिं रण धरणी। यथा अकाल सुधारत करणी
इत कपि भालु विजय अभिलाखे। उतहिं निशाचर जय हित राखे
मारुत सुत अंगद बल बीरा। समर बाँकुरे अति रण धीरा
सिंहनाद कीन्हा हरि दोऊ। भाजे कपि गण गाजे सोऊ।
दोउ दल युद्ध परस्पर करहीं। प्रमुदित भट कायर हिय डरहीं।
छं० कायर डरहिं प्रमुदित सुभट सबलरत हारि न मानहीं।
जहँ तहँ गिरहिं पुनि उठि फिरहिं दुहुँ ओर जय तिय बखानहीं॥
कौतुक विलोकत विबुध गण विस्मय हरष उर आनहीं।

रघुवीरसेननि परसुमन झरिलाय विनतीठानहीं १८

दो० अति अद्भुत करणी करहिं रक्ष कीस बलभूरि।
कर पद बिनु करि रैनिचर तिन मुख डारहिं धूरि ६८

बहुतनि के शिर तोरि चलावहिं। निज भुज बल रावरा हिं जनावहिं
गये याम युग दिवस भवानी। नारान्तक अवसेन सिरानी
मरे निशाचर अमित निहारी। रावरा सुवन कोप करि भारी
रथ समेत ऊपर नभ जाई। भयउ अदृश्य अस्त्र झरि लाई
सरा महँ करि मूर्छित कपि सैना, पुनि शठ गाजहँ राजिव नैना
गरजा मनहु मेघ समुदाई। कहन लगा कटु वचन रिसाई
होसि सजग निशिचर कुल द्रोही। बन्धु वैर लगि मारहु तोहीं
प्रभु कहँ कटुक कहत सुनि काना। कोपेउ जामवन्त बलवाना

दो० शूल एक तेहि छाड़ेउ सो कर गहि रक्षेश।
धाय तासु उर मारेउ भयिजयति अवधेश ६९

लागत शूल सो मूर्छित भयऊ। जामवन्त तब कर गहि लयऊ
वार अमित महि माँह पछारा। बाँधि गाड़ि बारूह महँ डारा
जागे सकल बली सुख रूच्छा। लगे करन रणा निज निज इच्छा
जामवन्त निज हृदय विचारा। मरै नाहिं यह खल मम मारा

विधि इच्छा पुनि ताहि उरवारी। सुष्टि चार उर माहीं प्रचारी
गहि पद संचारा गढ़ माहा। शापदि परा जहँ निशिचरनाहा
दशौं वदन हाहा करि धावा। नारान्तकहिं हृदय तब लावा
निरखि निशाचर गणा समुदाई। गढ़ कहँ गे सब सम्भ्रम धाई
दो० कपि गणा समय प्रदोष लखि राम चरणा धरि माथ।
ढाढ़ भये सब तन चिते दया दृष्टि रघुनाथ ७०
बिनु श्रम कीन्ह सबनि जगदीशा। गये सुवास भालु अरु कीशा
रुचिरासन आसीन रमेशा। ढिग वीरासन उरग नरेशा।
अंगद मारुत सुत प्रभु चरणा। लगे पलोटन सुनहु अपरणा
पुरायपुञ्ज अरु भाग्य निधाना। जिन पर नित प्रसन्न भगवाना
वहाँ सुरारि सुतहिं पौढ़ाई। विलखहिं तासु नारि समुदाई
होत प्रभात नरान्तक जागा। पितु विलोकि लज्जा रस पागा।
रथ चढ़ि तुरत इकाकी धावा। नभपथ समर पोह मिम आवा
कीश कटक यह मर्म्म न जाना। होइ लोय कीन्हेसि भारि वाना
दो० धावहिं व्योम हिं भालु कपि ताहि न हेरै नैन ।
घायल होइ होइ गिरहिं महि भायहिं आरत वैन ७१
वाराण एक शत तड़ित समाना। छाँड़ेसि शठ जहँ कृपानिधाना

लागत बिसुल कीश सुरभाने। बहुतक कायर देखि पराने
भागि सेतु ढिग एक अयाना। टेरे फिरहि न सुनु हरियाना
मारुतसुत अंगद सुग्रीवा। कुमुद मयन्द द्विविद बलसीवा
ये सब बीर हाँक दै धावहिं। नभपथ ताहि न खोजत पावहिं
तब सब बीर एक मति ठाना। लै गिरि तरु किय लंक पयाना
दस सुख भवन तासु कंगूरा। बैठे कपि पसारि लंगूरा।
कर तेडारि देहिं पाषाना। बहुत दनुज भे चूरी समाना

छन्द तोमर

भे चूरी निशिचर यूथ। गे निशिचरी भय गूथ॥
सुख बीन आरत दीन्ह। भइ भवन रावरा लीन्ह॥
सुनि बोलि भट दशभाल। कह खाहु कीश कराल।
करि यत्न भागें कीश। अस कहेउ वच दशशीश।
मम लहहु आयसु वीर। तुम हौ सकल रण धीर॥
सो शूर मो कहँ प्यार। जो खाइ मर्कट धार॥
जो जाइ आयसु छोर। सोइ जानि हौं रिपु मोर १८

दो० एतु एतु गुण रजनिचर एक एक भुज जोर।
रावण पावन रावि शिर धाये करि रव घोर १२

देखि लँगूर सकल हरषाने। मधु मारवी सम सब लपटाने
कपि उर सुमिरि रमेश प्रतापा। डारे सबन पटकि करि दापा
काँचे घट सम दनुज विदारी। जयति रामजय लषणा पुकारी
सुभट छुहनि पुनि फेरि लँगूरा। भूमि गिरावहिं कोटि कँगूरा।
अतिविशाल गहि कंचन खंभा। जिमि प्रयास बिनु करुआरंभा
लै दाहत अपक्क घट जूहा। कपि तिमि तोरत दनुज समूहा
पुनि विचार करि हरि घट धाये। निशिचर निकर मध्य चलि आये
करि कोटिन बिनु नाशा काना। कर पद हीन कीन्ह रिपु नाना
छं० रिपु कीन कर पद हीन अगरात दीन वचन पुकारहीं।
गढ़ ते निकरि निशिचर अखिल खल विपिन बाट सिधारहीं
पीपर परषा सम धरणि लंका कम्प घट कीश निकरा।
तोरे कपाट निपाटि अरि तिय कीश रवँचत गहि करा १९
दो० भयउ कुलाहल लंक अति नारान्तक सुनि कान।
नभ ते स्यन्दन सहित शठ प्रगटि परमरिसियान ७३
निरखि दशा निज नारिन केरी। कहन लाग कटु गिरा घनेरी
शठ आयउ संग्राम विहाई। लरत तियन सँग लाज न आई
अबलन पै बल भट न कराहीं। छाड़हु तियनि लरहु मम पाहीं

सुनिमरकटनिभयउसुखभारी। तजी निशाचरि दीनपुकारी
भाजिभवनभययुतगइँ नारी। लीन्हकपिनकरशिलाउपारी
शिलप्रहारहयस्यन्दनभञ्जा। आयुध तोरि सारथी गञ्जा
धरिपछारिरावराहगदेखा। कौतुककीशनिकीन्हविशेखा
लागेपदगहिखलानिफिरावनि। नाचहिंगाइरामयशपावनि

दो० तोरतिनतनपटकिमहिकहतजयतिरघुवीर।
करतयुद्धगतयामयुगकोशछहौंरणाधीर७४

अस्ताचलरविकीन्हप्रवेशा। वन्दे चरणा जाइ अवधेशा
श्यामसरोरुहप्रभुतनदेखी। पदधरिशिरसुखलहेउविशेखी
रामसबनि सादर सनमाना। को दयालु रघुवीर समाना
कह प्रभु होहु थलनि आसीना। आयसुपाइभये श्रमहीना
भयेविगतश्रमबानरभालू। अनुज सहित मनमुदित कृपालू
सुनहुउमातानिशिरघुनायक। गावतजनगुणासबगुणादायक
यामतीनियामिनिगतजबहीं। उत नारान्तक जागेउतबहीं
शोचविवशमींजतदोउहाथा। लज्जितहृदयनिशाचरनाथा

छं० लाजकै रयै सँभारि बाजि साजि रुष्ट पुष्ट।
शंक छाँड़ि शस्त्र माँड़ि गाढ़वीरसंग दुष्ट॥

भेरि दुन्दुभी निशान गान काड कैत कर्त्त ।
धीर वीर अग्र गौन गाजि गाजि शब्द भर्त्त ॥
जीव आश वास नाश बाज मोह छराड छराड।
बंक शूर शंक दूर वीरता सपूर चराड ॥
बाजि नाग शोर घोर घूरि गे दशौ दिशान।
धूरि धूरि मेघ बोध शोधना परौ अपान॥
कूद कूद व्योम पन्थ जाय आय जाय भूमि।
अस्त्र शस्त्र काढ़ि काढ़ि कुद्ध कुद्ध झूमि झूमि२०
दो० प्रलय मनहुँ चाहत करन अनीतमीचर चराड ।
सुनु खगेश मर्कट विकट जिमि धाये वरबराड७५
छं० निहारि हर्ष कीश रक्ष झूलि झूलि शैल भे
बजाइ कट्कटाइ हूह एक बार कै अभे॥
उपारि भूधरा अपार द्रुम अश्म शृंग हू।
मेरे निशाचरानि रुराड झुराड झुरिड भृंग हू॥
रदी हरी मृगावनी सवार उष्ट्र मराड हू।
मनोविचित्र वाहिनी दई मनोज खराड हू॥
हले धरा बले विचारि मार धारि को सकै ।

सुनै पुकारि जयति राम शत्रु से नहीं थके।
लँगूर शूल से अकाश भीत उच्च औ चल्यो
गिरे पयोद पौन ते झपेट भेटते कल्यो २१
सो० शब्दकरत अति घोर झमि पहुँच्यो दल भालु कपि।
आयुध भारि अतिज़ोर परे लागि घन प्रलय सम ११
सजग होन कपि भालु न पाये। अतिशय निकट तमीचर धाये
अमित निशाचर अति अँधियारी। ता पर करहिं शत्रु कै मारी
सूझहि कपिन न हाथ पसारे। जहँ तहँ एकनि एक पुकारे
सन्मुख कोउ न करत लराई। कपिन मारि रण भूमि सुवाई
गे अनेक भजि सिन्धु समीपा। सेन विकल लखि रघुकुल दीपा
सजि सारंग तजा इक बाना। भा प्रकाश दिग तरणि समाना
लखि तम विगत भालु कपि हरषे। कटकटाय धाये रिपु धरषे
भिरे एक सन एक प्रचारी। लागे करन कठिन हठ भारी
दो० शीश शिला तरु करन धरि कँरवन भरि भरि धूरि।
गरजे भालु बली वदन धाय धाय नभ दूरि ७६
डारहिं गिरि तरु निशिचर शीशा। दधि घट सम फोरहिं भट कीशा
चढ़हिं अनेक कन्ध पर जाई। काटहिं कान दृगन रज नाई।

तोरहिं शूल चाप नाराचा। अरि दल अस्त्र न एकौ बाचा
शस्त्र हीन रिपु सेन पराई। देखि पवन सुत हँसेउ ढठाई
बैठि अवनि अति लूमलफाई। अति उतंग दीरघ चौड़ाई।
तर्कित खसे निशाचर कैसे। पक्ष हीन नभ ते खग जैसे
गिरत कीश गहि चरण फिराई। पटकि भूमि गाड़हिं बिहँसाई
तुंबरिसम अगरीतभुज तोरत। अगरीतरुराड सिन्धु महँ छोरत
दो० कोटि बयालिस तमीचर नारान्तक कर भ्रात।
रामकृपा बल हति खलनि कपिन बिताई रात ७७
प्रभु तुणीर महँ हरि शर जबहीं। प्रविशे कीन्ह उदय रवि तबहीं
देखि कटक निज परम बिहाला। नारान्तक भट कोटि कराला
कीरबहु शपथालिये सँगवीरा। बरषत शक्ति उपल गरा तीरा
शर अस्तम्भन विपुल पनारे। भये अचर कपि टरहि न टारे।
लै लै पाश निशाचर धाई। बाँधत जिमि चुंगलि शुक पाई
व्याधि पींजरा सम बहु जाना। भरे यान प्रति अयुत प्रमाना
जे कपि लखे विपुल बलबंका। ते मूर्च्छित फेके गढ़ लंका
रावण देखि तनय की करणी। बन्दीजन जिमि भुज बल बरणी
दो० हरि इच्छा जानै न कस सुतहिं सराहत मूढ़ ।

कालविवशमतिसंभ्रमितसुनहुऋषेबुधिगूढ़ ७८
अंगद हनूमान जब जागे। नारान्तक सन जूझन लागे।
सराइक कीश न पायउ लरई। पुनिशर हति मूर्च्छावश करई
याम युगल तेहि करवरदाना। राखेउ तेहि कारण भगवाना
रिपुहिं खिलावत रघुकुलकेतू। पालत बुधि वाणी श्रुतिसेतू
सो युग याम गये जब बीती। तब रघुवीर सजी जय रीति।
हाँक देय कपि भालु जगाये। भये विगत मूर्च्छा सब धाये
हनूमान अंगद जब जागे। राम लषण चरणन अनुरागे
प्रभु पद शीश रहे धरि कीशा। तब हँसि बोले श्री जगदीशा।
सो० विधि वाचा लगि आज तात तुम्हें मूर्च्छा भई।
पुनि कहि प्रभु रघुराज अब श्रम सपनेहु अनत नहिं १२
तुमहिं सुमिरि अंगद हनुमाना जिति हैं जगत मनुज संग्रामा
असवर जबहिं रमापति भाखा। सुनत गिरा हरषे मृगशाखा
कह्यउ बहोरि वचन रघुवीरा। सुनु अंगद हनुमत रणधीरा।
तात तुरित तुम उभय सिधावहु। लंक गये कपि तिन्हें छुटावहु
सुनि दोउ भट गहि शैल विशाला। सुमिरि कोशलाधीश कृपाला
सपदि कीश गढ़ पर चढ़ि गये। देखि लंक महँ रव भर भये

सकल कपिनके मूर्च्छा बीती। तोरि पाश भजि राम सप्रीती
वायु सूनु युवराज निहारी। हरषे कहि जय जयति खरारी
दो० मेघ बरूथहिं पाइ जिमि इक गरा करहिं शिंगार।
तिमि मरदहिं दनुजन सुभट कीश भालु बरियार ७१
याम एक वासर अवशेखा। कह अंगद कीशन तन देखा
चलिय तात अब जहँ सुरभूपा। देखिय पद पाथोज अनूपा
अंगद वचन पवन सुत भाये। सपदि सहित दल प्रभु पहँ आये
निशिचर कोटि नरान्तक संगा। करत रहे बहु विधि रणरंगा
माया करि निज गात बजावहिं। जहँ तहँ खल रावण यश गावहिं
अदिति नन्दलखि तिन कर माया। सभय भये जाना रघुराया
दीननाथ अनुजहिं अनुशासन। उठे नमित गहि विशिख शरासन
अहि पति कहेउ तिष्ठ क्षण एका। तैं कीन्हे रण खेल अनेका
छं० तैं कीन्ह खेल अनेक विधि अब तिष्ठ खल रणभूमला।
इमि कहि अहीश चढ़ाइ धनु शर करन निशिचर दल मला
निज अनी निरखि निदान हरिहर सुवन धावा रिस भरा।
डारत अनेक नराच प्रभु पर शिला तरु वर भूधरा ॥
रघुवीर अनुज प्रचंड खल बल दलन द्युति यश गावहीं

तरु उपल गिरि सरि तीर उपरहिं वारा लयरा चलावहीं
रिपु शस्त्र अस्त्र अनेक आयुध कनक कारि कारिडारहीं।
सुरगरा प्रफुल्लित सुमन भारि करिजय तिलयरा पुकारहीं २२
दो० मायापति के अनुज सन माया करत अयान।
लगत नरन कौजानि जिय तबखल निकट तुलान १८०
हनालयरा उर पविसम शायक। लगत गिरे रा महि अहिनायक
पुनि खल दल भा प्रबल अपारा। भक्षरा लाग भालु कपि धारा
चले पराय कीश भय भीता। अब न बचब करि काल प्रतीता
निशिचर धारि भालु कपि वेषा। लागे खान कपि न अस देखा
कपि डर कीश भालु डर नट्टा। आपु आपु भय मिलन अनीक्षा
कोउ न काहु निकट नियराई। जो जेहि पावत ताहि तेहि खाई।
पुनि शठ साधि विभीयरा रूपा। गहि अंगद हनुमत कपि भूपा
काहु न यह माया कछु जानी। कपट मिलाप विभीयरा ठानी
दो० तेहि अवसर जागे लयरा देखा सेन विनाश।
अहिरावरा छल पवन सुत समुझत उड़ा अकाश ८१
गरजेउ जाइ भयंकर भारी। फटेउ हृदय सुनि निशिचर भारी
माया हत शर लयरा पँवारा। उघरे कपट कपाट अपारा

नारान्तक कै माया बीती। गयउ यज्ञशाला अति प्रीती
खोजेसि सकल सामग्री ताकी। कीन्ह अरम्भ विजय निज ताकी
यज्ञ आसुरी तेहिं तब ठाना। पशु समूह बलि कारण आना
भये निशा सुख श्रम वश सैना। फिरे सुमिरि सब राजिव नैना
त्वरित अहीश राम पहँ आये। सहित अनी प्रभु पद शिर नाये
कृपा अयन निरखे खगशायी। प्रभु श्रम छीन दीन अभिलाषी
दो० टिकहु थल निसब सन कहा सुख सागर रघुनाथ।
पायसु आयसु भालु कपि चले सुमिरि श्रीनाथ ८२
तब रघुराज अनुज उर लावा। निज आसन समीप बैठावा।
मघवा सुत सुत अरु हनुमाना। इन सम भाग्यवन्त नहिं आना
अमलाम्बुज पद गहि निज पानी। परसे सबनि सनेह भवानी
जामवन्त लंकेश हरीशा। प्रभु समीप सब मुदित मुनीशा
अनुज सखा नारान्तक करणी। युद्ध प्रबलता बहु विधि वरणी
शिव प्रसाद तेहि अमित प्रतापा। मरत न दीन्हे बहु सन्तापा
सुने वचन रघुपति सुसकाने। अति सनेह हरि चरित बखाने
सुनहु सकल हम शंभु न आना। जिनहिं भेद ते वश अज्ञाना
दो० जे सुमिरहिं शिव सहु उमा ते जानहु मम प्रीय।

शंकरभजहिंसोमोहिंभजैंमोहिंसोशम्भुअतीय ८३
चारिपदारथकरतलताके। बसहिं महेश उमा उर जाके
जो मम प्रणा शिवसदा निबाहा। सोजय देव न संशय आहा
सुरवकलत्रजयविजयविभूती। शंकर सुमिरत होइ अकूती
भक्तिमोरि शंकर आधीना। जलाधीन जिमिजीवनमीना।
कह आश्चर्य्य नरान्तकरण्हा। मोपर गिरिपति परमसनेहा
सुमिरह्न सदा विश्वयकनाथा। कपटत्यागि सबनावह्न माथा
होइहि विजय धीर मन धरह्न। बेगि उपाव पाव सुखकरह्न।
शम्भुउपासन कर मम दासा। तात हृदय धरिदृढ़ विश्वासा
दो० जेनर चाहत भक्ति मम सो छल कपट दुराइ ।
शिवासमेत गिरीश पद निशिदिन रह्न मनलाइ ८४
मनक्रमवचन शम्भुपद आसा। करहिंताहिउरसबगुणावासा
निर्भय करि जो हर पद नेह्न। ता उर रमा सहित मम गेह्न।
भववारिधिलाघहिंबिनुखेवहिं,यहविचारिबुधजनभवसेवहिं
भवभञ्जनयहहितउपदेशा। अनुजहिंसखहिंबुझावरमेशा
ध्रुववाणीसुनि अतिसुखपावा। अहिपतिरामचरणाशिरनावा
अंगदहनूमाननलनीला। कपिपति अरुऋक्षेशसुशीला।

सहितविभीषणराजनसाता।सुनिश्रीसुखहरयशविख्याता
रामहिंशिवहिंरुकजेजाने।भयतजिनामजपत हरषाने।
दो० कहतसुनत इतिहास शुचिनिशिबीतीयुगयाम।
स्वगपतिआगतदेवऋषिजितशोभितश्रीराम ८५
रामलषणा सुखसींवविराजैं।मार अपार निहारत लाजैं।
निरखिमानिमुनिहृदयसनाया।उठेहरषिप्रभुरघुकुलनाथा
शीशनाइप्रभुआसनदीन्हा।आशियपाइहरषिहितकीन्हा
मुनिनीकेहरिरूपविलोका।यथाइन्दुलखिसुखलहकोका
पुलकिगाततबकहऋषिराजा।सुनहुनाथआयउँजेहिकाजा
चतुराननपठवामोहिंस्वामी।यदपिकृपानिधिअन्तरयामी
सदाअनाथनाथभगवाना।विनयविरंचिकरिय परिमाना
जबलगिहोनप्रभातनपावहि।तबलगिहरिहरसुतलैआवहि
दो० जपत निरन्तर नामतव सो जानहु भगवान ।
विधिवरहित इतआनियेतेहिकहँकृपानिधान ८६
नारान्तक बधहै तेहि हाथा। दधिबल नामभक्त तवनाथा
नाथबहुतयहिखलहिंखिलावा।रणाविलोकिदेवनदुखपावा
अबरघुवीरकरहुसोइ घाता।बिनुप्रयास रिपु मरइ प्रभाता

तेहिसन तुमहिं न सोह लराई। दधिबलसनसुरवकरहु बुलाई
सविनयनाइ शीश वरभारवी। गवने मुनि प्रभु छबिउररारवी
नारदगयेजबहिंविधिलोका। वायु तनय तन राम विलोका
तात तुरित तुम गवनहुँ तहँवाँ। वारिधिमहँ धौरा गिरिजहँवाँ
तहँ दधिबल रह ध्यान लगाये। बहुत दिवस चलि गयेसुभाये
दो० अहै तपोबल तेजसी तात तासु ढिग जाइ ।
मनप्रसन्न करि चतुरई आनहु बेगि बुलाइ ८७
पवन कुमार पाइ अनुशासन। चलेवन्दि पदहरषिउदासन
वेगवन्त धावा कपि कैसे। वर नराच दधिसुत ते तैसे।
लोक अर्द्ध घटिका तेहिठामा। पहुँचे वायु पुत्र बल धामा
देखितरणि समतासुप्रकासा। ठाढ़भयउकपिमन्दिर पासा
दराडयुगलकपिअस्थितरहेऊ। हियमहँरामरामअसकहेऊ
उतरु न होई होत प्रभाता। इत इनकरचित हरि पदराता
सराइककपिमनकीन्हविचारा,प्रभुपहँचलियेकौनप्रकारा
जोगृह सहितचलहुँलैएही। नहिं अस आयसु भक्तसनेही
दो० बुधजनशीशशिरोरतन अतिलजातमुनिराउ।
ताहिजगावन हेतु तब कीन्हे अमितउपाउ ८८

अचलध्यानकपितासुप्रमाना।तजिप्रवीनताभजिभगवाना।
रामचरणाचितकपिवरद्वयऊ।दण्डएक औरो चलिगयऊ
विधिप्रेरितदधिबललघुशंका।करन उठेउ देखाभट बंका।
जयश्रीरामवायुसुत बोला।सुनिदधिबलनिजलोचनखोला।
बूझिहरिहिकीशहिंउरलाई।कही परस्पर दोउकुशलाई।
पुनिहनुमानकहेउसुनुभ्राता।चलहुविलोकनत्रिभुवनत्राता।
सानुजनाथसुखदपदकंजा।जिनमकरन्दशिलाअघगंजा।
जोहिलागितपकीन्हेउबहुकाला।सोतुम परअनुकूलकृपाला।
दो० धूरजटी हृद मानसर बसत हंस इव जोइ ।
सादरतुमकहँलेनलागिपठवामोहिंप्रभुसोइ ८१
सुनिसुभवचनसुकंठकुमारा।हरिपहँहरिसँगतुरितसिधारा।
आये नाथ निकटमृगशारवा।देखे पदजे हर हिय रारवा।
रहेउचरणागहिप्रीतिसमेता।दधिबलनिरखेउकृपानिकेता।
सानुजहरषिमिलेसुखपुञ्जा।तासुपारिगहिनिजकरकञ्जा।
बैठेताहिनिकटबैठावा। तेहि अवसर सुकराठ तहँ आवा।
निरखितनयकपिपतिहरषाना।मिलतप्रेमनहिंजायबखाना।
गइभारीपन्नगजनुपाई।देही देह मीन जल भाई।

सुख सुग्रीव लङ्केउ प्रभु भेटे। अवगुण तीनताहिसन मेटे
सो० दधिबलबालिकुमार मिले परस्परहरषिहिय।
भयउ आइभिनुसारन्हाइसबनिप्रभुपदगहे १३
जहँतहँसमरकरनबनचारी। चले कहतजयलषसारखरारी
उहाँ नरान्तक प्रात प्रबोधा। रथचढ़ि चलेउ भयंकर योधा
निशिचरहठीसुभटसँगताके। आयुध अखिलभयानकवाके
महि संग्राम निशाचर ठाढ़े। असित मेघ समअतिरिसबाढ़े
करिमायातेहिगातछिपावा। भयउप्रगट तबप्रभुढिगआवा
दधिबललखसरवाचलिआयउ,भुजापसारिहरषिउठिधायउ
नारान्तकहुँदीरवगुरुभाई। मुदित मिले उरउभय अघाई।
भेंटिसप्रेमबूझिकुशलाता। निजनिजदशाकीन्हविख्याता।
दो० हरिपतिपूतप्रवीरा अतिसुनितेहिमुखविख्यात
लगेबुझावनमित्रकहँसुनहुपीयपतिबात १९०
वंशस्वभावसत्यकविकहहीं। फलपियूषविषबेलिनलहहीं
समुझहुतातविचारिनिदाना। किहे अनीतिनजगकल्याना
पितु चरित्र समुझहु मनमाहीं। रामविरोधकतहुँजयनाहीं
तुवप्रवीराभामतिभ्रमकैसे। कूपधसतविकबाट अनैसे

तुमहुँ कीन्ह दिन चारि लराई। जानेउ भालु कीश बल भाई
तजि कुमन्त्र सम्भव अज्ञाना। कहहु पाहि रघुवर भगवाना
सफल करहु भव प्रभु पद परशी। करिहैं अभय तोहिं समदरशी
मानहु सीख मोरि सुखकारी। प्रणतपाल रघुवीर खरारी
दो० शारंगी शर तरणि सम दश सुख वपुरवगलेय।
जरतरावु यहि समय तुव करि विज्ञान विशेय ९१
सुनत वचन गुरु भ्राता केरा। नारान्तक भा क्रोध घनेरा
कहन लाग खल ताहि कुभाँती। सहज सभीत कीश दिनराती
बालिहिं हतेउ जवन तप धारी। भा अंगद तिन आज्ञाकारी
दधिबल यह बानर कुल रीती। हमरे करहिं न अरि सन प्रीती
यहकहि प्रभु सन्मुख सो धावा। दधिबल लूमल पेटि ढिकावा
नारान्तक कहरे शठ बानर। तव तन नहीं मोर डर कादर।
छाँडहु मूढ़ ससुझि गुरु भाई। कहि असपेलि चला कठिनाई
तबसुकराढ सुत क्रोधित भयऊ। शपदि कूदि आगे गहि लयऊ
दो० नारान्तक दधिबल भिरे निरखि भालु अरु कीश।
लगे करन सँग निशिचरन कहि जय श्री जगदीश ९२
छं० कपि शूर संहारे शिल निगारि। बहु मारे करे सिकता पहारि

भट बिहवाबल बासी जितेका। कपि मारि गिराये बचेनएक
रह एकाकी मनुजाद वीर। किय द्वन्द्व युद्ध उरगाद धीर।
दोउलरतलहैं छबिएकभाँति। गिरिकज्जलकञ्चनउभयगाति
युग घटिका ऊपरएकयाम। दोउ भिरेसमरबलओज धाम
पुनिभा अलक्षसोकरतयुद्ध। बलवन्तउभय श्रमगतसक्रुद्ध।
कहुघटप्रकारश्रुतियुद्धरीति। सुरमानेउसुरदेखतसुप्रीति
लरिसुतएकाकीपुलकिताता। कहबालि अनुज अतिहर्षबात

दो॰ जामवन्तसनवचन सुहु कहेउ सुकाराढपुकारि।
कहुतातदधिबलकबहिंदनुजहिडारिहिमारि॥३

समरकरतलागी अतिबारा। यहसुनिबोलेउऋक्षभुआरा
क्षराकहृदयधरुधीरकपीशा। दधिबलगुरुसनलही अशीशा
सोअवसर अबआनितुलाना। एकपलकमहँमारिहि अयाना
सुनिहरीशमनमहँअतिहरषे। तबहीं विबुधसुमनबहुबरषे।
दधिबलधन्यभुजाबलतोरा। रणकौतुहलकीन्ह न थोरा।
हरिअस्तुतिसुनिहरिअरिकोपा। कपिहिंसहितखलभयउअलोप
योजनअयुतअष्टनभजाई। दधिबलसुमिरिहृदयरघुराई।
महिमयुजाद भूमिपर डारा। करिचिकारतेहिमरती बारा

छं० मरतीसमयअतिशब्दकरिदशासुरवतनयहरिहरिकही।
तजीअधमतनधरिसुभगवपुद्विजनाथसुनिसोगतिलही
जेहिहेतुसुरमुनिसिद्धनानाभाँतिजपतपमखकिये।
श्रीरामकरुणासिन्धुसोफलसहजही दनुजेदिये २४

दो० देखितासुगतिविबुधगणाअभयभयेखगराय।
प्रमुदितबरषेपुहुपझरिरामचरणाचितलाय९४

मरानरान्तकदधिबलजानी। तोरितासुशिरगहिनिजपानी
रुराड तासु गहि लंक सचारी। आपु चले जहँ नाथ खरारी
निशा प्रवेश भूत बैताला। चढ़ि चढ़ि वाहन वेष कराला
जाइ समर महि सुरद समेता। उदर अघाइ गये सुनि केता
आयउदधिबल प्रभुके पासा। देखिहरषिउठिरमानिवासा।
सानुजराम मिले अति प्रीती। परम प्रसाद नाथ नित रीती।
बैठे रघुकुल मणिा दोउ भाई। सखासुतहि निज ढिग बैठाई।
हनुमदादि मर्कट प्रभु पाहीं। नाइ माथ प्रमुदित मन माहीं

दो० रामरजायसु पाय पुनि होइ विगतश्रमकीश
तबदधिबलप्रभुचरणागहिआगेधरिअरिशीश ९५

समुझिकौतुकीरिपुसुतशीशा। सुनहुँसुकराढकहोजगदीशा

नारान्तक कर शीश धरावहु। यतन समेत न सैंत चलावहु
नाथ रजाइ पाइ कपि राई। राखेउ सो शिर यतन कराई
पुनि दधिबलहरि कीन्ह बड़ाई। श्रीपति श्रीमुख बहु विधि गाई
जासु बड़ाई किय बड़ ईशा। सखहि सराहत सो जगदीशा।
दधिबल प्रभु अनुकूल विलोकी। सफल जन्म लखि भयउ विशोकी
प्रेम बारि लोचन कर जोरी। बोलेउ गिरा भक्ति रस बोरी।
जगदात्मा तुम्हार यह बाना। सन्तत करहु दीन सनमाना
दो॰ बनचर पावँर सहज जड़ बुद्धि विषम अज्ञान।
विरद स्वभाव कृपालु प्रभु सेवक सुयश बखान ६६
तव यश विमल विदित अवधेशा। कहत न पार पाव श्रुति शेशा
सो मैं प्रभु कहि सकहुँ न कैसे। पर्यो वारिधि गज भरि गुण जैसे
अस कहि हरि हरि पद्दल पटाने। देखि प्रेम कपि विबुध सिहाने
अनअभिमान ताहि प्रभु जाना। दीनदयालु बहुरि सनमाना
माँगु बच्छ जो वर मनभावा। सुनि दधिबल करि विनय सुनावा
नाथ तुम्हार रूप गुण नामा। करहि निरन्तर मम उर धामा।
हउँ मुहिं पद पंकज प्रिय कैसे। कामिहिं वाम स्वम धन जैसे
एवमस्तु तुम कहँ वर एहू। मम इच्छा कछु औरो लेहू।

सो० बिहरु बल पुर राज करहु तात तुम मुदित मन।
छाँड़ि अवर सब काज शिव। शम्भु पद भक्ति दृढ़ १४

यहै काज शुभ सन्तत चहई। जोइ सोइ प्राणी मम मन रहई।
उमा राम कर यहै स्वभाऊ। जन पर प्रेम न कबहुँ दुराऊ
मोहिं निज रूप रमापति जानैं। ताते बारम्बार बखानैं।
जानेउ श्री रघुवर स्वभाव जिन। सबतजि प्रेम भक्ति माँगी तिन
राम भक्ति वारीश जासु उर। महिमा तासु कहत श्रुति बुधवर
सरसरिता सब सुखद सुहाये। सहजहिं आवत बिनहिं बुलाये
ताहि युद्ध सिख देरघुनाथा। सुनि प्रभु कीन्ह तिलक निज हाथा
सारंगी रुख सबही पावा। अंगदादि ता कहँ शिर नावा

दो० पाइ भक्ति वर राज वर प्रभु चरनान शिर नाइ।
दधिबल पठयउ त्वरित हठ सुनहु भरत सुभभाइ ९७

तन मन राम चरना अनुरागे। दधिबल राज करत भय त्यागे
सेन साहित श्री राजिव नयना। राजत देखि विबुध चित चयना
हनत दुन्दुभी विविध प्रकारा। पुहुप माल भारि करत अपारा
करि अस्तुति वर विनय पुकारे। अदिति सूनु निज गेह सिधारे
उतहिं जहाँ बैठो दश भाला। बिनु शिर वपु सो परा विशाला।

देखि विकल आपेउ उठि धावा। पहिचानत तेहि अति दुख पावा
हा नाराच्तक कहि खल परा। महा रवभार लंक गढ़ भरा।
मय तनया आदिक निशिचरी। शोक समाज विषाद हिं भरी
दो० बिन्दुमती आदिक सकल नाराच्तक की नारि।
व्याकुल महि लोटहिं परी निज तन दशा बिसारि ९८
करविलाप जिमि निशिचर नारी। सोन जात काहि सुनु भचारी
शोक जलधि लंका लघु तरणी। चढ़ी सकल निशिचर की घरणी
बूड़त जानि न कतहुँ निबाहा। कहत मँदोदरि तब सब पाहा
बिन्दुमती कर गहि बैठाई। नाग सुता की कथा सुनाई
सुनत सुनयना की यु चि करणी। धारि धीर नाराच्तक घरणी
सबनि बुझाइ सासु पग लागी। तजि धन धाम स्वामि अनुरागी
मातु करहु सोय तन उताउल। मिलहुँ जाइ जेहि पद निज राउल।
सुत सुत बधू न आन उपाऊ। जाउ जहाँ राजत रघुराऊ।
दो० जेहि विधि गई सुलोचना तेहि गहि तुम भय त्यागि।
निरखहु रघुपति पद कमल लावहु पति शिर माँगि ९९
सासु वचन सुनि जानि प्रभाता। उठि निशिचर तिय पुलकित गाता
जात रूप मय यान मँगाई। निज कर गहि पद देह चढ़ाई

चली अकेलि यान चढ़िजबहीं। तासु सचिव इक आइ तबहीं
नाम चित्ररेखा अस ताहू। गुण गण सुभग बसै तनु जाहू
सो करि विनय चढ़ी तेहि संगा। कीन्ह पयान रँगी सत रंगा।
रथ अकेल आवत कपि देखा। कादर डरपे हृदय विशेखा
आवत मानि सबल रिपु कोऊ। नल अरु नील सुभट वर दोऊ
आये धाम सपदि तब आगे। युगल नारि तन निरखन लागे।

दो० रूपि बूझि वृत्तान्त दोउ फिरि आये प्रभु पास।
वन्दि कञ्ज पद उभय कह सुनिये रमा निवास २००

नाथ नरान्तक की दोउ नारी। आवत शरण प्रणत भय हारी
सुनि रघुवीर हृदय मुसकाने। उतहिं टिकावहु सखा सयाने
सुनि प्रभु वचन बहुरि सो धायउ। कटक विगत रथ दूरि टिकायउ
विन्दुमती पद रेखा दूनो। विनय हमारि कीश अस सूनो
कहहु जाइ तुम प्रभुहिं बुझाई। कोहि कारण हम दरशन पाई
हम अबला कपि विनवैं तोहीं। बूझि नाथ सन कहबै मोहीं
नारि विनय सुनि कपि दोउ भले। नीति विचारि राम पहँ चले
विनती नारि जाइ नल वरणी। सुनि विहँसे प्रभु तिनकै करणी

दो० परम सदुल रघुनाथ चित कहत सन्त बुध वेद ।

ताकहँ देत न दरश प्रभु सुनु खगेश सो भेद १

प्रेम परीक्षा हित रघुनायक। कौतुक करत अमर सुखदायक
नाथ सखा सब बहुरि बुझाई। पुनि नल नारिन पास पठाई
कहु कपि सुनहु नरान्तक नारी। दरशन तुमहिं न देत खरारी
तुम गृह जाहु वचन मम मानी। बोली सो तिय वचन सयानी
हम अबला दरशन हित आईं। नयन सफल बिनु किमि गृह जाईं
यहि विधि करत विनय दोउ नारी। कीशन कटक कीन पैसारी
आवत निकट जानि रिपु वनी। यद्यपि पतिव्रत है सुखभवनी
तदपि नाथ तेहि दरशन देहीं। जाइ निकट विनती की तेहीं

दो० प्रभु सीता पति जगत पति सुर नर पति रघुनाथ।
देउ दरश करुणायतन दीनबन्धु श्रुति माथ २

बोले राम न सो तिय बोली। विमल ज्ञान पतिव्रत अनुडोली
नाथ सत्य यह नीति बखाने। पुरुष न पर तिय सपनेहु जाने
प्राकृत पुरुषन की यह रीती। जिन के हृदय कपट पर प्रीती
सम दरशी कछु दोष न स्वामी। सो विचारु प्रभु अन्तरयामी।
आरत बन्धु बिलम्ब न कीजै। करुणा कर वर दरशन दीजै
नहिं बोले प्रभु पुनि सो कहई। तव यश अस श्रुति गावत अहई

गौतम वाम राम तुम तारी। अधम जाति भिलनी निस्तारी
सुनि मम हृदय परी परतीती। अब प्रभु कस देखिय विपरीती
दो० तारि तारि अधमनि अमित वार बार अब जान।
ताते करत अनाकनी मोरि ओरि भगवान ३
प्रभु मुसुक्याहिं न उत्तर देहीं। ताकर प्रेम परीक्षा लेहीं।
विकल उभय नारान्तकबाला। बार बार करि विनय विशाला
धर्म्म धुरन्धर प्रभु अवतारा। केवल पतिव्रत धर्म्म हमारा
जो हम सत्य सत्य तुम स्वामी। द्रवहु बेगि उर अन्तरयामी
वृथा करत कत प्रभु श्रुतिभाषा। पूजत नाथ न मम अभिलाषा
लीन भय उपति पाराराम महँ। अर्द्ध भाग हम कहहु जाइँ कहँ
हृन्दा चरित नाथ सुधि करहू। विनय हमारि बेगि उर धरहू
विनय प्रीति सब धर्म्म जनाई। परी प्रेम वश महि अकुलाई
दो० पाहि पाहि रघुवंश मणि हृतहु न विरद प्रतीत।
प्रीतम प्रीति न नरक डर तुम कहँ नाथ अनीत ४
सुनी निराश विनय सुनि बानी। पुलके दीन दयाल भवानी
दुहुँन लीन्ह निज कटक बुलाई। परीं युगल प्रभु पदतर आई
तिन्हहिं उठाय राम बैठावा। जगदीश्वर मृदु वचन सुनावा।

बिन्दुमती तैं परम सयानी। पति पदरति दृढ़ हृदय समानी
बहुत करहुँ कहु तवगुणगाना। माँगु वेगि वर जो मन माना
सुनतवचन लोचनजलबाढ़ी। जोरि युगल कर दोऊ ठाढ़ी
प्रभु तव दानि वेद तरवर से। पदजलजात देखि सुर सरि से
परम पवित्र भईं हमदोऊ। हम सम धन्य नारि नहिं कोऊ
छं०-कोधन्यहमसमनारिजगमहुँसुनहु श्रीरघुनायकं।
दै दरश कीन्हींपतित पावन नाथसुर अरि घायकं॥
कृपा सागर यश उजागर देहु वर सुर भावरम्॥
जेहिमिलैंपतिकहुँजाइबिनुश्रमबढ़इतपयशश्रीधरं २५
सो० यहकहि बिन्दुकुमारि सहित सौति प्रभु पदपरी
तिन्हैंउठाइखरारि जगत्राता इमिकहतसुनि १५
धरहु धीर तुम जनि अबडरहू। निजपति लेहु भवनसुखकरहू
कहेहु देव हमकहँ यह नीका। हमहुँकहत अबभावतजीका
गिरिजासहितगिरीशविरागी। नाथ तुम्हार दरश अनुरागी
नारदादि सनकादिकजेते। जपतपकरहिंविविधविधितेते
तेउ न कबहुँ हमारी नाईं। देखहिं पदजल जात अघाईं
हरि दरशन लवलेश प्रमाना। जग के सबसुख नाहिंसमाना

अमिय अघायगरल कोखाई। विनय हमारि यहे सुरसाँई
देहु कन्त शिर सपदि मँगाई। दया शील सागर रघुराई।
दो० नाराचक कर शीश तब दीन्ह मँगाइ रमेश।
पाइ स्वामि शिर मुदित होइ बोलीं दोउ उरगेश ५
नाथ विनय हम अवरो कहीं। ग्राह विनाहम कोहि विधि जरहीं
सुरवसागर सुनि वचन प्रमाना। हनुमत अंगदादि भट नाना
कह प्रभु सरवालंक महँ धावहु। चन्दन अगर भार बहु लावहु
पाइ राम अनुशासन धाये। लंका गढ़ गृह गृह सबु पाये
कपिन शोधि चन्दन बहु भारा। लाये जहँ श्रीनाथ उदारा
कह रघुवीर सुनहु लंकेशा। तात यहे बड़ हित उपदेशा
बिन्दुमती जहँ चाहत ठाँऊ। दाह भार सँग तुम तहँ जाऊ।
दशकन्धर कर बैर बिहाई। चिता चारु शुचि देहु बनाई
दो० रघुवर आज्ञा धारि शिर उठे दशानन भाइ ।
अयुत भार चन्दन अगर तेहि सँग चले लिवाइ ६
जहाँ जरी मघवाजित नारी। तेही ठाहर चिता सँवारी।
उहवाँ अपर सवति मनु नारी। बिन्दुमती मन भाव पियारी
मूर्च्छित परीं प्रथम सुधि नाहीं। चलीं सुनत गति दुख मन माहीं

चलीं चतुर्दश निशिचरि कैसे। निरखि त्रास मृगीगण जैसे
हा हा बिन्दुमती पति प्यारी। कहाँ गई तुव हमहिं बिसारी
पहुँचीं सह विलाप तहँ सोऊ। हरषी हृदय विलोकत दोऊ
षोड़श निशिचरि भईं सभागी। मनवचक्रम पति पद अनुरागी
सकल अन्हाइ मृतक अन्हवाई। सुमिरत हृदय राम गति दाई

दो० उत दशकन्धर जगेउ शठ सुनेउ अवरा सब हेतु।
सँग मन्दोदरि आदितिय गवना लै रथ केतु ७

बाजत ढोल कपिन सुनि काना। अपने मन तिन अस अनुमाना
आव युद्ध हित उत कोउ वीरा। हमकह ढाढ़ करत यहि तीरा
कीश अयुत तब प्रभु पहँ आये। पूरण प्रेम चरण शिर नाये
नाथ उतहिं दशकन्धर जाता। कीश एक कह सुनु जन त्राता
प्रभु कह कुमुद तुरित तुम धावहु। वेगि विभीषण कहँ लै आवहु
राम रजाय सुशिर धरि धाये। सपदि विभीषण पहँ सो आये।
तात तुमहिं रघुराज बुलावा। सुनत लंकपति आतुर आवा
हेतु पतोहुन कहि समुझावा। कुमुद सहित रघुपति पहँ आवा

दो० मोह निशा तहँ तरुण रवि तिन चरण नाइ शिर नाइ।
भाग्यवन्त रावण अनुज बैठेउ प्रभु रुख पाइ ८

दशमुखतियनसहितगातहँवाँ।बिन्धुमतीचित्तेरखाजहँवाँ
देखत अतिविलखाबिधुधारी।करुणाकरतनिशाचरिभारी
सासुश्वसुरकहँदेखिदुखारी।जान नवीन नराधक नारी
कहिसुचिगाथसबनसमुझाई।स्वामि समेत चिता पर आई
यथा योग्य बैठीं सब तैसे। पति गृह रहत रहीं नित जैसे
अग्नि दीन्हज्वाला अति धाई।पहुँची सुर पुर सबतिय जाई
देखिदशातिनकीसुरबनी।तिनहिंसराहिभवननिजगवनी
रावणासहित युवति निजगेहा। गयउ भरो सासत सन्देहा

छं० सन्देह सासत भरेउ रावणा सहित दारन गृह गयो ।
इमिमयसुतादिकानिशिचरिनलखिविकलबलमूर्छितभयो
दशमायगतिदेखत विपुल बिलखैंनिशाचरनिशिचरी
सन्ताप शोक बिलापमय भ्रमकटक लंका महँ परी २६

दो० राम विरोधिहिं जस उचित तस दिन पहुँचा आइ।
सो विचारि करि लंक गढ़ उतरी बिपतिबजाइ ९

इहाँ देव देवायसु जाना। वर आसन शोभित भगवाना।
यथायोग्य बैठे मृगशाबा।सबकीन्हे प्रभु पद अभिलाषा
रिषुबड़मरेउहरषसबकेमन।पुनिपुनिहेरतसुभगश्यामतन

तिनकी रुचिलखि दीनदयाला। शिवयश गावहु कहा कृपाला
भरद्वाज प्रभु आज्ञा पाई। गावहिं कपि कल कराठ लजाई
डमरु भृंगि शृंगी कर तारी। घारा पारिा सुरवते बन चारी
गाँडर तन्तु वेरा मञ्जीरा। शंख मृदंग नाद गम्भीरा।
नृत्यत कीश भाव दिखरावत। शिवा सहित शिव कीरति गावत
छं० शिव शिवा कीरति विमल गावत भालु वानर सुरवभरे।
अहिनाथ युत रघुनाथ छबि निरखत सकल चित पद धरे
प्रभु देखि कौतुक अनुज सहित सरवन बरवानत औ सुरवं
तुलसी पगे जेहि ध्यान जेजन पाइहैं नित यश सुरवम् २७
सो० गत रजनी युग याम तब कीरान करारा अयन
करि पूरारा मन काम सबनि कहेउ राजइ थलन २६
बैठे निज निज थल रारा धीरा। अनुज सहित राजत रघुवीरा
सुरवमा सींव सेन युत राजैं। जय जय धुनि कपि भालु समाजैं
उमा चरित यह रुचिर सुहावा। नाथ कृपा मैं तुमहिं सुनावा
अपर चरित गिरिराज कुमारी। सुनहु कहत तब प्रीति निहारी
उहाँ मध्य निशि रावरा जागा। कोउ कोउ सचिव सिरवावन लागा
उग्र सिरवावन कहि बुध बाँके। यके न कछु मन माने ताके

रावण मन औरै कछु लसई। मैं दिकोस कहिचु विधि उरवसई
प्रभु विरोध कारि चहै कल्याना। मोह विवश सो शठ अज्ञाना

इति

वचन सुनत तेइँ कछु सुख माना। काल विवश जस तीरथ ज्ञाना
इहि विधि जल्पत भा भिनुसारा। लगे भालु कपि चारिहु द्वारा
सुभट बुलाइ दशानन बोला। रण सन्मुख जाकर मन डोला
सो अबहीं बरु जाइ पराई। रण सन्मुख भागे न भलाई
निज भुज बल मैं बैर बढ़ावा। देहौं उतर जो रिपु चढ़ि आवा
अस कहि मरुत वेग रथ साजा। बाजहिं सकल जुझाऊ बाजा
चले वीर सब अतुलित बली। जनु कज्जल गिरि आँधी चली।
अशकुन अमित होहिं तेहि काला। गनै न भुज बल गर्व विशाला।

छं० अति गर्व्व गनत न शकुन अशकुन सबहिं आयुध हाथ ते।
भट गिरहिं रथ ते बाजि गज चिक्करत भाजहिं साथ ते॥
गो माय गृध्र कराल खर रव श्वान बोलहिं अति घने।
जनु काल दूत उलूक बोलहिं सकल परम भयावने २८

दो० ताहि कि सम्पति शकुन शुभ सपनेहुँ मन विश्राम।
भूत द्रोह रत मोह वश राम विमुख रत काम २९०

चली निशाचर अनी अपारा। चतुरंगिनी चमू बहु धारा।
विविध भाँति वाहन रथ याना। विपुल वरण पताक ध्वज नाना
चले मत्त गज यूथ घनेरे। मनहुँ जलद मारुत के प्रेरे।
वरण वरण वर दैत्य निकाया। समर शूर जानहिं बहु माया
अति विचित्र वाहिनी बिराजी। वीर वसन्त सेन जनु साजी
चलत कटक दिग सिन्धुर डगहीं। क्षुभित पयोधि कुधर डगमगहीं
उठी रेणु रवि गयउ छिपाई। पवन थकित वसुधा अकुलाई
पराव निशान घोर रव बाजहिं। महा प्रलय के जनु घन गाजहिं
भेरि नफीरि बाजु सहनाई। मारू राग शूर सुखदाई।
केहरि नाद वीर सब करहीं। निज निज बल पौरुष अनुसरहीं
कहै दशानन सुनहु सुभट्टा। मर्दहु भालु कपिन कर ठट्टा
हौं मारिहौं भूप दोउ भाई। अस कहि सन्मुख फौज चलाई
यह सुधि सकल कपिन जब पाई। धाये करि रघुवीर दुहाई
छं० धाये विशाल कराल मर्कट भालु काल समान ते।
मानहुँ सपक्ष उड़ाहिं भूधर वृन्द नाना बान ते ॥
नख दशन शैलन करन द्रुम गहि सबल शंकन मानहीं।
जय राम रावण मत्त गज मृगराज सुयश सुनावहीं २९

दो० दुहुँ दिशि जयजयकार करि निज निज जोरी जानि।
भिरे वीर इत रघुपतिहिं उत रावणहिं बखानि ११

रावण रथी विरथ रघुवीरा। देखि विभीषण भयउ अधीरा
अधिक प्रीति उर भा सन्देहा। वन्दि चरण कह सहित सनेहा
नाथ न रथ नाहीं पद त्राना। केहि विधि जीतब रिपु बलवाना
सुनहु सखा कह कृपानिधाना। जेहि जय होइ सो स्यन्दन आना
शौरज धीरज जाहि रथ चाका। सत्य शील दृढ़ ध्वजा पताका
बल विवेक दम पर हित घोरे। क्षमा दया समता रजु जोरे।
ईश भजन सारथी सुजाना। विरति चर्म्म सन्तोष कृपाना।
दान परशु बुधि शक्ति प्रचण्डा। वर विज्ञान कठिन कोदण्डा
संयम नियम शिली सुख नाना। अमल अचल मन त्रोण समाना
कवच अभेद विप्र पद पूजा। एहि सम विजय उपाय न दूजा।
सखा धर्म्म मय अस रथ जाके। जीतन कहँ न कतहुँ रिपु ताके

दो० महा घोर संसार रिपु जीति सकै को वीर ।
जाके अस रथ होइ दृढ़ सुनहुँ सखा मति धीर॥

सुनत विभीषण प्रभु वचन हर्षि गहे पद कञ्ज।
एहि विधि मोहि उपदेश किय राम कृपा सुख पुञ्ज॥

उत प्रचार दशकन्ध कर इत अंगद हनुमान।
लरत निशाचर भालु कपि करि निज निज प्रभु आन १२
सुर ब्रह्मादि सिद्ध मुनि नाना। देखहिं रण नभ चढ़े विमाना।
मैं हूँ उमा रहेउँ तेहि संगा। देखत राम चरित रण रंगा
सुभट समर रस दुहुँ दिशि माते। कपि जय शील राम बल ताते
एक एक सन भिरहिं पचारहिं। एक एक मर्दहिं महि पारहिं
मारहिं काटहिं धरणि पछारहिं। शीश तोरि गहि भुजा उपारहिं
उदर विदारहिं भुजा उपारहिं। गहि पद अवनि पटकि भट डारहिं
निशिचर भट महि गाड़हिं भालू। ऊपर डारि देहि बहु बालू
बीर बली सुख युद्ध विरुद्धा। देखिय विपुल काल जनु क्रुद्धा
छं० क्रुद्धे कृतान्त समान कपि तन सजत शोणित राजहीं
मर्दहिं निशाचर कटक भट बल गर्जि जिमि घन गाजहीं॥
मारहिं चपेटन्ह काटि दाँतन डारि लातन मींजहीं।
चिक्करहिं मर्कट भालु छल बल करहिं जेहि खल छीजहीं॥
धरि गाल फारहिं उर विदारहिं गल अँतावरि मेलहीं।
प्रहलादपति जनु विविध तनु धरि समर अंगन खेलहीं॥
धरु मारु काटि पछारु घोर गिरा गगन महि भरि रही।

जय रामजोत्तरातेकुलिशकरकुलिशातेकरत्तरासही
दो० निजदलविचलविलोकितबीसभुजादशचाप।
चलादशानन कोपकरि फिरहु फिरहुकरिदाप १३
धावा परम क्रोध दशकन्धर। सन्मुख चले हूह दै बन्दर।
गहि कर पादप उपल पहारा। डारहिं तेहिं पर एकहि बारा
लागहिं शैल वज्र तनु तासू। खराड खराड होइ फूटहिं आसू
चलान अचल रहा रथरोपी। रणा दुर्मद रावरा अतिकोपी
इतउतझपटिदपटिकपियोधा। मरदै लाग भयो अतिक्रोधा
चले पराइ भालु कपिनाना। आहि आहि अंगद हनुमाना।
पाहि पाहि रघुवीर गुसाईं। यह खल खाव काल की नाईं
तेहि देखे कपि सकल पराने। दशहु चाप शायक सन्धाने
छं० सन्धानि धनु शरनिकर छाँड़े सिउरगा जिमिउरलागहीं।
रहपूरि शरधरणी गगन दिशिविदिशिकहँकपिभागहीं
भा अतिकोलाहल विकलदलकपिभालुबोलहिं आतुरे।
रघुवीर करुणा सिन्धु आरतबन्धुजन रक्षकहरे ३१
दो० विचलत देखा कपि कटक कटि निषंग धनुहाथ।
लक्ष्मरा चले सकोप तबनाइ रामपद माथ १४

रे खल का मारसि कपि भालू। मोहिं विलोकु तोर मैं कालू
खोजत रहेउँ तोहिं सुत घाती। आजु निपाति जुड़ावौं छाती
कहि अस छाँड़ेसि बाण प्रचंडा। लक्ष्मण किये सरहति शत खंडा
कोटिन आयुध रावण डारे। तिल प्रमाण प्रभु काटि निवारे।
पुनि निज बाण ताहि कीन्ह प्रहारा। स्यन्दन भञ्जि सारथी मारा
शत शत शर मारेउ दश भाला। गिरि शृंग निज तनु प्रबिशाहिं ब्याला
पुनि शत शर मारेउ उर माहीं। परेउ अवनि तनु सुधि कछु नाहीं
उठा प्रबल पुनि मूर्च्छा जागी। छाँड़सि ब्रह्मदत्त जो सांगी।
छं० जो ब्रह्मदत्त प्रचण्ड शक्ति अनन्त उर लागी सही।
परयो विकल वीर उठाव दश मुख अतुल बल महि मारही
ब्रह्माण्ड भुवन विराज जाके एक शिर जिमि रजकनी।
सो चह उठावन मूढ़ रावण जान नहिं त्रिभुवन धनी ३२
दो० देखत धावा पवन सुत बोलत वचन कठोर।
आवत तेहि उर महँ हनेउ मुष्टि प्रहार प्रघोर १५
जानु टेकि कपि भूमि न परेऊ। उठा सँभारि बहुरि रिस भरेऊ
मुष्टिक एक ताहि कपि मारा। परेउ शैल जिमि वज्र प्रहारा
मूर्च्छा गई बहुरि सो जागा। कपि बल विपुल सराहन लागा।

धृक धृक धृक बल पौरुष मोहीं। जो तैं जियत उठा सुरद्रोही
अस कहि कपिल स्मरा कहँ लावा। देखि दशानन विस्मय पावा
कह रघुवीर समुझि जिय भ्राता। तुम्ह कृतान्त भक्षक सुर त्राता
सुनत वचन उठि बैठ कृपाला। गगन गई सो शक्ति कराला
पुनि कोदण्ड बाण गहि धाये। रिपु सन्मुख अति आतुर आये
छं० आतुर बहोरि विभञ्जि स्यन्दन मारि तेहि व्याकुल कियो
गिरेउ धरणि दशकन्ध विकल तनु वाण शत वेध्यो हियो
सारथी रथ घालि दूसर ताहि लंका लै गयो ।
रघुवीर बन्धु प्रताप पुञ्ज बहोरि प्रभु चरणान नयो ३३
दो० उहाँ दशानन बहुरि उठि करन लाग कछु यज्ञ।
जय चाहत रघुपति विमुख राठ हठ वश अति अज्ञ १६
इहाँ विभीषण सब सुधि पाई। सपदि जाइ रघुपतिहि सुनाई
नाथ करै रावण इक यागा। सिद्ध भये नहिं मरहि अभागा
पठवहु नाथ वेगि भट बन्दर। करहिं विध्वंस आव दशकन्धर
प्रात होत प्रभु सुभट पठाये। हनुमदादि बन्दर सब धाये
कौतुक कूदि चढ़े कपि लंका। पैठे रावण भवन अशंका
जबहीं यज्ञ करत तेहि देखा। सकल कपिन भा क्रोध विशेखा

रणतेभाजिनिलज्ज गृहआवा। इहाँ आइबक ध्यान लगावा
असकहि अंगद मारेउ लाता। चितव न शठ स्वारथमद राता
छं० नहिं चितवजब कपिकोपितब गहिदशानलातनमारहीं
धरिकेशनारि निकारि बाहरजब सो दीन पुकारहीं॥
तबउठा कोपि कृतान्त सम गहि चरण बानर डारहीं।
इहिभाँतियज्ञविध्वंसकरिकपिनेकु मननहिंहारहीं ३४
दो० मखविध्वंसकरि कपिसकल आये रघुपतिपास।
चलादशानन क्रोधकरि छाँड़ी जिय की आश १७
चलतहोहिं तेहि अशुभभयंकर। बैठहिं गृध्र उड़ाहिं शिरनि पर
भयउकालवशकाहु न माना। कहेसि बजावहु युद्ध निशाना
चली तमीचर अनी अपारा। बहु गजरथ पदचर असवारा
प्रभुसन्मुखखलधावहिं कैसे। शलभसमूह अनलकहँ जैसे
इहाँदेवसबविनती कीन्हीं। दारुणाविपतिहमहिं इनदीन्हीं
अबजनिनाथखेलावहुयेही। अतिशय दुखित होतिवैदेही
देववचनसुनि प्रभुमुसकाना। उठिरघुवीर सुधारेउ बाना।
जटा जूट बाँधा दृढ़ माथे। सोहत सुमन बीच बिच गाथे
अरुणानयनवारिदतनश्यामा। अखिललोकलोचनअभिरामा

कटितट परिकर कसे निषंगा। कर कोदण्ड कठिन शारंगा
छं० शारंग कर सुन्दर निषंग शिली सुखाकर कटि कस्यो।
भुज दण्ड पीन मनोहरा अति उर धरा सुर पद लस्यो॥
कह दास तुलसी जबहिं प्रभु शर चाप कर फेरन लगे।
ब्रह्मांड दिग्गज कमठ अहि महि सिन्धु भूधर डगमगे २५
दो० हर्षे देव विलोकि छबि वर्षहिं सुमन अपार।
जय जय प्रभु गुण ज्ञान बल धाम हरण महि भार १८
इहि के बीच निशाचर अनी। कसमसाति आई अति घनी
देखि चले सन्मुख कपि भट्टा। प्रलय काल के जिमि घन घट्टा
शक्ति शूल तरवारि चमक्कहिं। जनु दश दिशि दामिनी दमक्कहिं
गज रथ तुरँग चिकार कठोरा। गर्जत मनहुँ बलाहक घोरा।
कपि लंगूर विपुल नभ छाये। मनहुँ इन्द्र धनु उगेउ सुहाये
उठी रेणु मानहुँ जल धारा। वाराबुन्द भइ वृष्टि अपारा
दुहुँ दिशि पर्वत करहिं प्रहारा। वज्र पात जनु बारहिं वारा
रघुपति कोपि वाराभारि लाई। घायल भे निशिचर समुदाई।
लागत वारा वीर चिक्करहीं। घुर्मि घुर्मि अगारीत महि परहीं
स्रवहिं शैल जनु निर्झर वारी। शोणित सरि कादर भयकारी

छं० कादर भयंकर रुधिर सरिता बाढ़ि परम सुहावनी।
सोउ कूल दल रथ रेत चक्र अवर्त्त बहति भयावनी॥
जल जन्तु गज पद चर तुरग रथ विविध बाहन कोगने।
शर शक्ति तोमर परशु चाप तरंग चर्म्म कमठ घने ३६

दो० वीर परे जनु तीर तरु मज्जा बह जनु फेन।
कादर देखत डरहिं जिय सुभटन के मन चैन १९

मज्जहिं भूत पिशाच बेताला। कलि करहिं योगिनी कराला।
काक कंक धरि भुजा उड़ाहीं। एक ते एक छीनि धरि खाहीं।
एक कहहिं ऐसी सौं धाई। राठ तुम्हार दारिद्र न जाई।
कहरत भट घायल तट गिरे। जहँ तहँ मनहुँ अर्द्ध जल परे।
खैंचहिं आँत गृध्र तट भये। जनु बनशी खेलत चित दये।
बहु भट बहे चढ़े खग जाहीं। जिमि नावरि खेलहिं जल माहीं।
योगिनि भरि भरि खप्पर साँचहिं, भूत पिशाच विविध विधि नाचहिं।
भट कपाल करताल बजावहिं। चामुण्डा नाना विधि गावहिं।
जम्बुक निकर तहाँ कट कटहीं। खाहिं अघाहिं हुआहिं दपटहीं।
कोटिन रुण्ड मुण्ड बिनु डोलहिं। शीश परे महि जय जय बोलहिं।
छं० बोलहिं जोजय जय रुण्ड मुण्ड प्रचण्ड शिर बिनु धावहीं।

परिणामयुद्ध अगुत्य बोलहिं सुभट सुर पुर पावहीं॥
निशचर बरूथनि मर्दि गर्जहिं भालु कपि दर्पित भये।
संग्राम अंगनि सुभट सोहहिं राम शरनिकरनिहये ३७

दो० हृदय विचारेसि दशवदन भा निशचर संहार।
मैं अकेल कपि भालु बहु माया करौं अपार ३०

देवन्ह प्रभुहिं पयादेहिं देखा। उर उपजा अति क्षोभ विशेखा
सुरपति निजरथ तुरत पठावा। हर्ष सहित मातुलि लै आवा
तेज पुञ्ज रथ दिव्य अनूपा। हरिहँसि चढ़े कोशलपुर भूपा।
चञ्चल तुरँग मनोहर चारी। अजर अमर मन सम गतिकारी
रथारूढ़ रघुनाथहिं देखी। धाये कपि बल पाइ विशेखी
सही न जाइ कपिन की मारी। तब रावण माया विस्तारी
सो माया रघुवीरहिं बाँची। सब काहू मानी करि साँची।
देखी कपिन निशाचर अनी। बहु अंगद कपि लक्ष्मण धनी
छं० बहु बालि सुत लक्ष्मण कपीश विलोकि मर्कट अपडरे।
जनु चित्र लिखित समेत लक्ष्मण जहँ सो तहँ चितवत खरे॥
निज सेन चकित विलोकि हँसि धनु तानि शर कोशलधनी
माया हरी हरि निमिष महँ हर्षी सकल मर्कट अनी ३८

दो० बहुरि राम सब तन चितय बोले वचन गँभीर।
द्वन्द्व युद्ध देखहु सकल श्रमित भये अति वीर २१

अस कहि रथ रघुनाथ चलावा। विप्र चरण पंकज शिर नावा
तब लंकेश क्रोध करि धावा। गर्जि तर्जि प्रभु सन्मुख आवा
जीतेहु जो भट संयुग माहीं। सुनु तापस मैं तिन सम नाहीं
रावण नाम जगत यश जाना। लोकपाल जेहि के बँदिखाना
खर दूषण विराध तुम मारा। हतेउ व्याध इव बालि विचारा।
निशिचर सुभट सकल संहारे। कुम्भकर्ण घननादहिं मारे
आजु बैर सब लेउँ निवाही। जोरण भूमि भागि नहिं जाही
आजु करौं खल काल हवाले। परहु कठिन रावण के पाले
सुनि दुर्वचन कालवश जाना। कहेउ विहँसि तब कृपानिधाना
सत्य सत्य तव सब प्रभुताई। जनि जल्पसि देखब मनुसाई
छं० जनि जल्पना करि सुयश नाशहि नीति सुनि शठ करुक्षमा
संसार महँ पूरुष त्रिविधि पाटल रसाल पनस: समा ॥
एक सुमन प्रद एक सुमन फल एक फलै केवल लागहीं
इक कहहिं कहहिं करहिं अपर इक करहिं कहत न बागहीं
दो० राम वचन सुनि विहँसि कह मोहिं सिखावहु ज्ञान।

वैर करत तव नहिं डरेहु अब लागत प्रिय प्रान २२

काहि दुर्वचन क्रोध दशकन्धर। कुलिशसमान लाग छाँड़न शर
नानाकार शिली सुरवधाये। दिशि अरु विदिशि गगन महँ छाये
अनल वाराछाँड़े रघुवीरा। क्षरा महँ जरे निशाचर तीरा
छाँड़सि तीव्र शक्ति रिवसि आई। वारा संग प्रभु फेरि पठाई
कोटिन चक्र त्रिशूल पवाँरे। त्वरा समान प्रभु काटि निवारे
निफल होहिं रावरा शर कैसे। खल के सकल मनोरथ जैसे
तब शत वारा सारथि हि मारेसि। परे भूमि जय राम पुकारेसि
राम कृपा करि सूत उठावा। तब प्रभु परम क्रोध कर पावा
छं० भये क्रुद्ध युद्ध विरुद्ध रघुपति त्रोरा शायक कसमसे।
कोदण्ड धुनि सुनि चराड अति मनुजादि भय मारुत ग्रसे॥
मन्दोदरी उर कम्प कम्पित कमठ भूधर अति त्रसे।
चिक्करहिं दिग्गज दशन गहि महि देखि कौतुक सुर हँसे ४०

दो० तान्यो चाप जो श्रवरा लगि छाँड़े विशिख कराल।
राम वारा नभ मग चले लहलहात जनु व्याल २३

चले वारा सपक्ष जनु उरगा। प्रथम हिं हते सारथी तुरगा
रथ विभञ्जि हति केतु पताका। गर्जा अति अन्तर बल थाका

तुरत आनि रथ चढ़ि खिसियाना छाँड़ेसि अस्त्र शस्त्र विधिनाना
बिफल होइँ सब उद्यम ताके। जिमि परद्रोह निरत मनसा के
तब रावण दश शूल चलाये। बाजि चारि महि मारि गिराये
तुरँग उठाइ कोपि रघुनायक। छाँड़े अति कराल बहु शायक।
रावण शिर सरोज बन चारी। चले रघुनाथ शिली मुख धारी
दश दश बाण भाल दश मारे। निसरि गये चलु रुधिर पनारे
स्रवत रुधिर धावा बलवाना। प्रभु पुनि कृत धनु शर सन्धाना
तीस तीर रघुबीर पचाँरे। भुजनि समेत शीश महि पारे।
काटतही पुनि भये नवीने। राम बहोरि भुजा शिर छीने
काटित काटित पुनि नूतन भये। प्रभु बहु बार बाहु शिर हये
पुनि पुनि प्रभु काटहिं भुज शीशा। अति कौतुकी कोशलाधीशा
रहे छाइ नभ शिर अरु बाहू। मानहुँ अमित केतु अरु राहू
छं० जनु राहु केतु अनेक नभ पथ स्रवत शोणित धावहीं।
रघुबीर तीर प्रचण्ड धावहिं भूमि गिरन न पावहीं ॥
इक एक शर शिर निकर छेदे नभ उड़त इमि सोहई ।
जनु कोपि दिनकर करनिकर जहँ तहँ विधुंतुद पोहई ४१
दो० जिमि जिमि प्रभु हत तासु शिर तिमि तिमि होहिं अपार।

सेवत विषय विवर्द्ध जिमि तिमिनितनूतन मार २४
दशमुख देख शिरनि कै बाढ़ी। बिसरा मरण भई रिसि गाढ़ी
गरजेउ मूढ़ महा अभिमानी। धायउ दशहु शरासन तानी
समर भूमि दशकन्धर कोपा। वर्षि धारा रघुपति रथ तोपा
दराड एक रथ देखि न परेऊ। जनु निहार महँ दिनकर हरेऊ
हाहाकार सुरन्ह सब कीन्हा। तब प्रभु कोपि धनुष कर लीन्हा
शर निवारि रिपु के शिर काटे। ते दिशि विदिशि गगन महि पाटे
काटे शिरन भुज मारग धावहिं। जय जय धुनि काहि भय उपजावहिं
कहँ लक्ष्मण हनुमन्त कपीशा। कहँ रघुवीर कोशलाधीशा
छं० कहँ राम काहि शिरनि कर धावहिं देखि मर्कट भजि चले
सन्धानि शर रघुवंश मणि तब शरन्ह शिर बेधे भले ॥
शिर माल का गहि काल का तहँ द्वन्द्व द्वन्दनि सों मिली
करि रुधिर सर मज्जन मनहुँ संग्राम वट पूजन चली ४२
दो० पुनि रावण अति कोप करि छाँड़ी शक्ति प्रचण्ड।
सन्मुख चली विभीषण हिं मनहुँ काल को दण्ड २५
आवत देखि शक्ति कर धारा। मरण तारत हरि विरद सँभारा
त्वरित विभीषण पाछे मेला। सन्मुख राम सह्यो सो सेला

लगी शक्ति मूर्च्छा कछु भई। प्रभु कृत खेल सुरन्ह बिकलई
देखि बिभीषन प्रभु श्रम पायउ। गहि कर गदा क्रोध कर धायउ
रे अभाग्य शठ मन्द कुबुद्धे। तैं सुर नर मुनि नाग बिरुद्धे
साद्दर शिव कहँ शीश चढ़ाये। एक एक के कोटिन पाये
तेहि कारण खल अब लगि बाँचा। अब तव काल शीश पर नाचा
राम बिमुख शठ चहसि सम्पदा। अस कहि हनेसि माँझ उर गदा
छं० उर माँझ गदा प्रहार घोर कठोर लागत महि पर्‍यो।
दश वदन शोनित स्रवत पुनि संभारि धायो रिसि भर्‍यो
द्वौ भिरे अति बल मल्ल युद्ध बिलोकि एकहि एक हनै।
रघुबीर बल गर्व्वित बिभीषन काल नहिं ता कहँ गनै ४३
दो० उमा बिभीषन रावनहिं सन्मुख चितव कि काउ।
मिरत सो काल समान अब श्री रघुबीर प्रभाउ ९६
देखा अमित बिभीषन भारी। धावा हनूमान गिरि धारी
रथ तुरंग सारथी निपाता। हृदय माँझ मारेउ तेहि लाता
ठाढ़ रहा अति कम्पित गाता। गयउ बिभीषन जहँ जन त्राता
पुनि रावन तेहि हतेउ प्रचारी। चला गगन कपि पूँछ पसारी
गहेसि पूँछ कपि सहित उड़ाना। पुनि नभ भिरेउ प्रबल हनुमाना

लरत अकाश युगल सम योधा। हनत एक एकहि करि क्रोधा
शोभित नभछल बल बहु कहीं। कज्जल गिरि सुमेरु जनु लरहीं
बुधि बल निशिचर परै न पारा। तब मारुत सुत प्रभुहिं सँभारा
छं० संभारि श्री रघुवीर धीर प्रचारि कपि रावरा हन्यो।
महि परत पुनि उठि लरत देवन युगल कहँ जय जय भन्यो
हनुमन्त संकट देखि मर्कट भालु क्रोधातुर चले।
रण मत्त रावरा सकल सुभट प्रचण्ड भुज बल दलि मले ४४
दो० राम प्रचारे वीर सब धाये कीश प्रचण्ड ।
कपि दल विपुल विलोकि तेहिं कीन्ह प्रकट पाखण्ड २७
अन्तरधान भयो क्षण एका। पुनि प्रकटे सिरवल रूप अनेका
रघुवर कटक भालु कपि जेते। जहँ तहँ प्रकट दशानन तेते
देखे कपिन अमित दश शीशा। भागे भालु विकल भट कीशा
चले बली मुख धरहिं न धीरा। त्राहि त्राहि लक्ष्मण रघुवीरा
दुहुँ दिशि कोटिन धावहिं रावन। गर्जहिं घोर कठोर भयावन
डरे सकल सुर चले पराई। जय की आश तजहु रे भाई
सब सुर जिते एक दश कन्धर। अब बहु भये तकहु गिरि कन्दर
रहे विरञ्चि शम्भु मुनि ज्ञानी। जिन जिन प्रभु की महिमा जानी

छं० जानहिं प्रताप ते रहे निर्भय कपिन रिपु मानेउ फुरे।
चलु विचल मर्कट भालु सकल कृपालु पाहि भयातुरे॥
हनुमन्त अंगद नील नल बलवन्त प्रतिरण बाँकुरे।
मर्दहिं दशानन कोटि कोटिन कपट भट के आँकुरे ४५

दो० सुर बानर देखे विकल हँसे कोशलाधीश।
साजि शरासन निमिष महँ हरे सकल दशशीश २८

प्रभु क्षण महँ माया सब काटी। जिमि रवि उदय जाहि तम फाटी
रावण एक देखि सुर हर्षे। विपुल सुमन पुनि प्रभु पर वर्षे।
भुज उठाइ रघुपति कपि फेरे। फिरे एक एकनि के टेरे।
प्रभु बल पाइ भालु कपि धाये। तरल तमकि संयुग महँ आये
करत प्रशंसा सुर तेइँ देखे। भयउँ एक मैं इन के लेखे
शठहु सदा तुम मोर मरायल। असकहि गगन पन्थ महँ धायल
हाहाकार करत सुर भागे। शठहु जाहु कहँ मोरे आगे
देखि विकल सुर अंगद धावा। कूदि चरण गहि भूमि गिरावा
छं० गहि भूमि पार्यो लात मार्यो बालिसुत प्रभु पहँ गयो
संभारि उठि दशकाठ घोर कठोर करि गर्जत भयो॥
करि दाप धनुष चढ़ाइ दशसन्धानि शर बहु वर्षई।

कियसकलभटघायलबियाकुलदेखिनिजबलहर्ष्यो ४६

दो० तब रघुपति लंकेश के शीश भुजा शर चाप।
काटे भये बहोरि जिमि कर्म्म मूढ़ के पाप २६

शिर भुज बाढ़ि देखि रिपुकेरी। भालु कपिन रिस भई घनेरी
मरत न मूढ़ कटे भुज शीशा। धाये कोपि भालु अरु कीशा
बालितनय मारुत नलनीला। द्विविदमयन्द महा बलशीला।
विटप महीधर करहिं प्रहारा। सोइ गिरितरु गहि कपिन सो मारा
एक नखन रिपुवपुष विदारी। भागि चलहिं एक लातन मारी
तबनल नील शिरन चढ़ि गयऊ। नखन ललाट विदारत भयऊ
रुधिर विलोकि सकोप सुरारी। तिनहिं धरन कहँ भुजा पसारी
गहे न जाहिं शिरनि पर फिरहीं। जनु युग मधुप कमल वन चरहीं
कोपि कूदि दोउ धरेसि बहोरी। महि पटकेसि गहि भुजा मरोरी
पुनि सकोपि दश धनु कर लीन्हा। शरन मारि घायल कपि कीन्हा
हनुमदादि मूर्च्छित सब बन्दर। पाइ प्रदोष हर्ष दश कन्धर
मूर्च्छित देखि सकल कपि वीरा। जामवन्त धावा रणधीरा
संग भालु भूधर तरु भारी। मारन लगे पचारि पचारी
भयो क्रोध रावण बलवाना। गहि पद महि पटके भट नाना

देखि भालुपति निजदल घाता। कोपि माँझ उर मारेसि लाता
छं० उर लात घात प्रचण्ड लागत बिकल रथ ते महि गिरा।
गहि भालु बीसहु कर निमानहुँ कमल निशि बसि मधुकरा
मूर्च्छित बहोरि बिलोकि परहति भालुपति प्रभु पहुँ गयो
निशि जानि स्यन्दन घालि तेहि तब सूत यत्न करत भयो ४७
दो० मूर्च्छा गइ कपि भालु तब सब आये प्रभु पास।
सकल निशाचर रावणहिं घेरि रहे अति त्रास ३०
तेहि निशि महँ सीता पहँ जाई। त्रिजटा कहि सब कथा बुझाई
शिर भुज बाढ़ि सुनत रिपु केरी। सीता उर भे त्रास घनेरी।
मुख मलीन उपजी मन चिन्ता। त्रिजटा सन बोली तब सीता
होइहि कहा कहसि किन माता। केहि बिधि मरिहि बिश्व दुखदाता
रघुपति शर शिर कटे न मरई। बिधि बिपरीत चरित सब करई
मोर अभाग्य जिआवत ओही। जेहि हौं हरि पद कमल बिछोही
जेइँ कृत कनक कपट मृग झूठा। अजहुँ सो दैव मोहिं पर रूठा
जेइँ बिधि मोहिं दुख दुसह सहावा। लक्ष्मण कहँ कटु बचन कहावा
रघुपति बिरह बिषम शर भारी। तकि तकि मार बार बहु मोहिं मारी
ऐसेहु दुख जो राख मम प्राना। सो बिधि ताहि जिआवन आना

बहुविधिकरतिबिलापजानकी।कारिकरिसुरतिकृपानिधान
कहत्रिजटासुनुराजकुमारी।उर शर लागत मरिहि सुरारी।
ताते प्रभु उर हतहिं न तेही।इहि के हृदय बसति बैदेही
छं॰ इहिकेहृदय बसुजानकी मम जानकी उर वास है ।
मम उदर भुवन अनेक लागत वारा सबको नासहै॥
अससुनतहर्षविषादउरअतिदेखिपुनित्रिजटाकहा।
अबमरिहिरिपुइहिभाँतिसुन्दरितजहुतुमसंशयमहा४८
दो॰ काटत शिरहोइहि विकल छूटिजाइतवध्यान।
तबरावराकेहृदय शरमारहिं रामसुजान ३१
असकहिबहुप्रकारसमुझाई।पुनित्रिजटानिजभवनसिधाई
रामस्वभावसुमिरिवैदेही।उपजी विरह व्यथा अतितेही।
निशिहिशशिहिनिन्दतिबहुभाँती।युगसमभईविहातिनराती
करतिविलापमनहिंमनभारी।रामविरह जानकी दुखारी
जबअतिभयो विरहउर दाहू।फरकेउ वाम नयन अरु बाहू
शकुन विचारि धरी उर धीरा।अबमिलिहहिंकृपालुरघुबीरा
इहाँअर्द्धनिशिरावराजागा।निजसारथिसनखीझनलागा
शठरहाभूमिछड़ायेहुमोही।धृकधृकअधममन्दमतितोही

तेइँ पट्टगहि बहुविधि समुझावा। भोरभयेरथचढ़िपुनिआवा
सुनिआगमन दशानन केरा। कपि दल खरभर भयउ घनेरा
जहँ तहँ भूधर विटप उपारी। धाये कटकटाइ भट भारी।
छं० धाये जो मर्कट विकट भालु कराल कर भूधर धरा ।
अति कोपि करहिं प्रहार मारत भजि चले रजनीचरा॥
विचलाय दल बलवन्त कीशनि घेरि पुनि रावरा लियो।
दुहुँ दिशि चपेटन्ह मारि नरवनि विदारि तेहि व्याकुल कियो
दो० देखि महा मरकट प्रबल रावरा कीन्ह विचार।
अन्तरहित होइ निमिष महँ कृत माया विस्तार ३२
छं० जब कीन्ह तेइ पाखराड। भये प्रकट जन्तु प्रचराड
बैताल भूत पिशाच। कर धरे धनु नाराच ।
योगिनि गहे करबाल। इक हाथ मनुज कपाल
करि सद्य शोरीत पान। नाचहिं करहिं गुरा गान
धरु मारु बोलहिं घोर । रहि पूरि धुनि चहुँ ओर
मुख बाय धावहिं खान। तब लगे कीश परान।
जहँ जाहिं मर्कट भागि। तहँ बरत देखहिं आगि
भये विकल वानर भालु। पुनि लागु बर्षरा बालु।

जहँ तहँ थकित करि कीश। गर्जेउ बहुरि दशशीश
लक्ष्मण कपीश समेत। भये सकल वीर अचेत।
हा राम हा रघुनाथ। कहि सुभट मीजहिं हाथ।
इहि विधि सकल बल तोरि। तेहि कीन्ह कपट बहोरि
प्रकटे विपुल हनुमान। धाये गहे पाषान ।
तिन घेरि रामहिं जाइ। चहुँ दिशि बरूथ बनाइ।
मारहु धरहु जनि जाइ। कट कटहिं पूँछ उठाइ।
दश दिशि लँगूर विराज। तेहि मध्य कोशलराज ५०

छं० तेहि मध्य कोशलराज सुन्दर श्याम तन शोभा सही ।
जनु इन्द्र धनुष अनेक की बर वारि तुंगन शाल ही ॥
प्रभु देखि हर्ष विषाद उर सुर बदति जय जय जय करी ।
रघुवीर एकहि तीर कोपित निमिष महँ माया हरी ॥
माया विगत कपि भालु हर्षे विटप गिरि गहि सब फिरे ।
शर निकर छाँड़े राम रावण बहुरि शिर महि महँ गिरे ॥
श्री राम रावण समर चरित अनेक कल्प जो गावहीं ।
शत शेष शारद निगम कवि तेउ तदपि पार न पावहीं ५२

दो० कहे तासु गुण गण कछुक जड़ मति तुलसीदास।

निजपौरुष अनुसार जिमि मशक उड़हिं आकास
काटि शीश भुज बार बहु मरै न भट लंकेश ।
प्रभु क्रीड़त मुनि सिद्ध सुर व्याकुल देखि कलेश ३३

काटत बढ़हिं शीश समुदाई। जिमि प्रतिलाभ लोभ अधिकाई
मरै न रिपु श्रम भयउ विशेखा। राम विभीषण तन तब देखा
उमा काल मर जाकी इच्छा। सो प्रभु जन की लेत परिच्छा
सुनु सर्वज्ञ चराचर नायक। प्रणतपाल सुर मुनि सुखदायक
नाभी कुण्ड सुधा वश वाके। नाथ जियत रावण बल ताके
सुनत विभीषण वचन कृपाला। हर्षि गहे प्रभु वाण कराला
अशकुन होन लगे विधि नाना। रोवहिं बहु शृगाल खर श्वाना
बोलहिं खग अति आरत हेतू। प्रकट भये जहँ तहँ नभकेतू
दश दिशि दाह होन तब लागा। भये पर्व्व बिनु रवि उपरागा।
मन्दोदरि उर कम्पित भारी। प्रतिमा स्रवहिं नयन मग वारी।

छं० प्रतिमा स्रवहिं पबि पात नभ अति बात बह डोलति मही
वर्षहिं बलाहक रुधिर कच रज असुभ अति सक को कही
उतपात अमित विलोकि नभ सुर बिकल बोलहिं जय जये
सुर सभय जानि कृपालु रघुपति चाप शर जोरत भये ५२

दो० आकर्णउ धनु श्रवणलगि छाँडे शर इकतीश ।
रघुनायक शायक चले मानहुँ काल फणीश ३४

शायक एक नाभि शर शोषा । अपर लगे शिर भुज करि रोषा
लै शिर बाहु चले नाराचा । शिर भुज हीन रुराड महि नाचा
धरणि धसै धर धाव प्रचराडा । तब शर हति प्रभु कृत खुगखराडा
गरजेउ मरत घोर रव भारी । कहाँ राम रण हतौं प्रचारी ।
डोली भूमि गिरत दशकन्धर । क्षुभित सिन्धु सह दिग्गज भूधर
धरेउ भूमि युग खराड बढ़ाई । चापि भालु मर्कट समुदाई
मन्दोदरि आगे भुज शीशा । धरि शर चले जहाँ जगदीशा ।
प्रविशे सब निषंग महँ जाई । देखि सुरन दुन्दुभी बजाई ।
तासु तेज समान प्रभु आनन । हर्षे देखि शम्भु चतुरानन ।
जय धुनि पूरि रही नवखराडा । जय रघुवीर प्रवल भुजदराडा
वर्षहिं सुमन देव मुनि वृन्दा । जय कृपालु जय जयति मुकुन्दा

छं० जय कृपा कन्द मुकुन्द हरि मर्दन निशाचर मद प्रभो ।
खल दल विदारण परम कारण कारुणीक सदा विभो
सुर सिद्ध मुनि गन्धर्व्व हर्षे बाज दुन्दुभि गहगही ।
संग्राम अंगन राम अंग अनंग बहु शोभा लही ॥

शिरजटा मुकुट प्रसून बिचबिच अति मनोहर राजहीं
जनु नीलगिरि पर तड़ित पटल समेत उडुगण भ्राजहीं।
भुज दण्ड फेरत शर शरासन रुधिर करातन अतिबने
जनु राय मुनियत माल तरु पर बैठि बहु सुख आपने ५३

दो० कृपादृष्टि करि दृष्टि प्रभु अभय किये सुर वृन्द।
हर्षे वानर भालु कपि जय सुख धाम मुकुन्द ३५

पति शिर दीरघ जबहिं मन्दोदरी। मूर्छित विकल खसी धरणी परि
युवति वृन्द रोवति उठि धाईं। तेहि उठाय रावण पहँ लाईं
पति गति देखि सो करति पुकारा। छूटे केश न देह सँभारा।
उर ताड़ना करै विधि नाना। रोदन करै प्रताप बखाना
तव बल नाथ डोलानित धरणी। तेज हीन पावक शशि तरणी
शेष कमठ सहि सकहिं न भारा। सो तनु आजु परा महि छारा
वरुण कुबेर सुरेश समीरा। रण सन्मुख धरु काहु न धीरा।
भुज बल जीति काल यम साईं। आजु सो परेउ अनाथ कि नाईं
जगत विदित तुम्हारि प्रभुताई। सुत परिजन बल बरणि न जाई
राम विमुख अस हाल तुम्हारा। रहा न कुल कोउ रोवन हारा
तव वश विधि प्रपंच सब नाथा। सब दिगपति तोहिं नावहिं माथा

अवतव शिर भुज जन्बुक खाहीं। राम विमुख यह अनुचित नाहीं
काल विवश पति कहा न माना। अज जगनाथ मनुज करि जाना
छं० जानेउ मनुज कर दनुज कानन दहन पावक हरि स्वयं।
जिहिं नवत शिव ब्रह्मादि सुर पिय भजेहु ना करुणामयं
आजन्म ते पर द्रोह रत पापौघ मय तव तन अयं।
तुमहूँ दियो निज धाम राम नमामि ब्रह्म निरामयं २४
दो० अहह नाथ रघुनाथ सम कृपासिन्धु को आन।
सुनिदुर्लभ जो परम गति तुमहिं दीन्हि भगवान ३६
मन्दोदरी वचन सुनि काना। सुर मुनि सिद्ध सबहिं सुख माना
अज महेश नारद सनकादी। जे मुनि वर परमारथ वादी
भरि लोचन रघुपतिहि निहारी। प्रेम मगन सब भये सुखारी
रोदन करत विलोकेउ नारी। गये विभीषण मन दुख भारी
बन्धु दशा देखत दुख भयऊ। तब प्रभु अनुजहिं आयसु दयऊ
लक्ष्मण तेहि बहु विधि समुझाये, साहित विभीषण प्रभु पहँ आये
कृपा दृष्टि प्रभु ताहि विलोका। करह क्रिया परिहरि सब शोका
कीन्हि क्रिया प्रभु आयसु मानी। विधिवत देश काल जिय जानी
दो० मय तनयादिक नारि सब देइँ तिलाञ्जलि ताहि।

भवन गई रघुवीर गुणागर वरणति मन माहिं ३७
आइ विभीषण पुनि शिर नावा। कृपासिन्धु तब अनुज बुलावा
तुम कपीश अंगद नल नीला। जामवन्त मारुत सुत शीला।
सब मिलि जाहु विभीषण साथा। सारेउ तिलक कहेउ रघुनाथा
पितावचन मैं नगर न जाऊँ। आपु सरिस कपि अनुज पठाऊँ
त्वरित चले कपि सुनि प्रभु वचना। कीन्ही जाइ तिलक की रचना
सादर सिंहासन बैठारी। तिलक कीन्ह अस्तुति अनुसारी।
जोरि पाणि सबही शिर नाये। सहित विभीषण प्रभु पहँ आये
तब रघुवीर बोलि कपि लीन्हे। कहि प्रिय वचन सखी सब कीन्हे
छं० कीन्हेउ सखी सबकपि सुवाणी। बल तुम्हार रिपु हयो।
पायो विभीषण राज तिहुँपुर यश तुम्हारो नित नयो॥
मोहिं सहित शुभ कीरति तुम्हारी परम प्रीति जो गाइहैं।
संसार सिन्धु अपार पार प्रयास बिनु तरि जाइहैं ५५
दो० सुनत राम के वचन मृदु नहिं अघात कपि पुञ्ज।
बारहिं बार विलोकि मुख गहे सकल पद कञ्ज ३८
तब प्रभु बोलि लिये हनुमाना। लंका जाहु कहेउ भगवाना।
समाचार जानकिहि सुनावहु। तासु कुशल लै तुम चलि आवहु

तब हनुमन्त नगर महँ आये। सुनि निशिचरी निशाचर धाये
पूजा बहु प्रकार तिन कीन्ही। जनक सुता दिखाय पुनि दीन्ही
दूरिहि ते प्रणाम कपि कीन्हा। रघुपति दूत जानकी चीन्हा
कहहु तात प्रभु कृपा निकेता। कुशल अनुज प्रभु सेन समेता
सब विधि कुशल कोशलाधीशा। मातु समर जीते उ दश शीशा।
अविचल राज विभीषण पावा। सुनि कपि वचन हर्ष उर छावा

छं० अति हर्ष मन तन पुलक लोचन सजल पुनि पुनि कह रमा।
का देउँ तोहिं त्रैलोक्य महँ कपि किमपि नहिं वाणी समा॥
सुनु मातु मैं पायउँ अखिल जग राज आजु न संशयं।
राजीति रिपु दल बन्धु युत पश्यामि राम नमामियं ५६

दो० सुनु सुत सद्गुण सकल तव हृदय बसौ हनुमन्त।
मानुकूल रघुवंश मणि रहहिं समेत अनन्त ३६

अब सोइ यतन करहु तुम ताता। देखौं नयन श्याम मृदु गाता
तब हनुमन्त राम पहँ आये। जनक सुता कर कुशल सुनाये।
सुनि वाणी पतंग कुल भूषण बोलि लिये कपि राज विभीषण
मारुत सुत के संग सिधावहु। सादर जनक सुता लै आवहु
त्वरितहिं सकल गये जहँ सीता। सेवहिं सब निशिचरी विनीता

वेगि बिभीषण तिनहिं सिरावा। सादर तिन सीतहिं अन्हवावा
दिव्य बसन भूषण पहिराये। शिबिका रुचिर साजि पुनि लाये।
तेहि पर हर्षि चढ़ी वैदेही। सुमिरि राम सुख धाम सनेही
बेत पाणि रक्षक चहुँ पासा। चले सकल मन परम हुलासा
देखन भालु कीश बहु धाये। रक्षक कोटि निवारण आये
कह रघुवीर कहा मम मानहु। सीतहिं सखा पयादेहि आनहु
देखहिं कपि जननी की नाईं। बिहँसि कहा रघुवीर गुसाईं
सुनि प्रभु वचन भालु कपि हर्षे। नभ ते सुरन सुमन बहु वर्षे।
सीतहिं प्रथम अग्नि महँ राखी। प्रकट कीन्ह चह अन्तर साखी
दो० तेहि कारण करुणायतन कहे कछुक दुर्वाद।
सुनत यातुधानी सकल लागीं करन विषाद २४०
प्रभु के वचन शीश धरि सीता। बोली मन क्रम वचन पुनीता
लक्ष्मण होहु धर्म्म के नेगी। पावक प्रकट करहु तुम बेगी
सुनि लक्ष्मण सीता की बानी। बिरह विवेक धर्म्म रति सानी
लोचन सजल जोरि कर दोऊ। प्रभु सन कछुक कहि सकत न ओऊ
देखि राम रुख लक्ष्मण धाये। पावक प्रकट काठ बहु लाये।
प्रबल अनल बिलोकि वैदेही। हृदय हर्ष कछु भय नहिं तेही

जो मन क्रम वच मम उर माहीं। तजि रघुवीर आन गति नाहीं
तव कृशानु सब की गति जाना। मो कहँ होउ श्रीखराड समाना
छं० श्रीखराड सम पावक प्रकट किय सुमिरि प्रभु तेहि महँ चली
जय कोशलेश महेश वन्दित चरण रज अति निर्म्मली॥
प्रतिबिम्ब अवलोकित कलंक प्रचराड पावक महँ जरे
प्रभु चरित काहु न लखेउ सुर मुनि सिद्ध सब देखहिं खरे
तब अनल भूसुर रूप कर गहि सत्य श्री श्रुति विदित जो
जिमि क्षीर सागर इन्दिरा रामहिं समर्पी आनि सो।
सोइ राम वाम विभाग राजित रुचिर अति शोभा भली
नव नील नीरज निकट मानहुँ कनक पंकज की कली ५७
दो० हर्षि सुमन वर्षहिं बिबुध बाजहिं गगन निशान।
गावहिं किन्नर अप्सरा नाचहिं चढ़ी विमान॥
श्री जानकी समेत प्रभु शोभा अमित अपार।
देखि भालु कपि हर्षेउ जय रघुपति सुखसार ४१
तब रघुपति अनुशासन पाई। मातलि चले चरण शिर नाई
आये देव सदा स्वारथी। वचन कहहिं जनु परमारथी
दीनबन्धु दयालु रघुराया। देव कीन्ह देवन पर दाया

विश्वद्रोहरतखलअतिकामी।निजअघगयउकुमारगगामी
तुम सर्व्वज्ञ ब्रह्म अविनाशी।सदा एक रस सहज उदासी
अकलअगुणाअनवद्यअनामयअजितअमोघएकरुणामय
मीन कमठ सूकर नर हरी। वामन परशुराम वपु धरी।
जबजबनाथसुरन्हदुखपावा।नानातनुधरितुमहिं नशावा
रावणापापमूलसुरद्रोही। कामक्रोध मद रत अति कोही
सोकृपालु तव धामसिधावा।यह हमरे मन अचरज आवा
हमदेवता परम अधिकारी।स्वारथ रत तव भक्ति बिसारी
भव प्रवाह सन्तत हम परे। अब प्रभु पाहि शरणा अनुसरे
दो॰ करिविनती सुर सिद्ध सबरहे जहँ तहँकरजोरि।
अतिशय प्रेमसरोजभव अस्तुतिकरतबहोरि४२
छं॰ जयरामसदासुखधामहरे।रघुनायक शायकचाप धरे।
भवबारणा दारणा सिंहप्रभो।गुणासागर नागर नाथविभो
तनकामअनेकअनूपछबी।गुणागावत सिद्धमुनीन्द्रकवी
यशपावनरावणानागमहा।खगनाथयथाकरिकोपगहा
जनरञ्जनभञ्जनशोकमयं।गतक्रोधसदाप्रभुबोधमयं।
अवतारउदार अपारगुनं।महिभारविभंजन ज्ञान घनं ॥

अजव्यापकमेकमनादिसदा। करुणाकरराममनामिमुदा
रघुवंश विभूषण दूषणहा। कृतभूप विभीषण दीन रहा।
गुणाज्ञाननिधान अमान अजं। नितरामनमामि विभुं विरजं।
भुजदण्ड प्रचण्ड प्रताप बलं। खलवृन्दनिकन्दमहाकुशलं।
विनुकारण दीनदयालहितं। छविधामनमामिरमासहितं
भव तारण कारण काज परं। मनसम्भव दारुण दोष हरं।
शर चाप मनोहर त्रूण धरं। जलजारुण लोचन भूप वरं।
सुख मन्दिर सुन्दर श्रीरमनं। मद मार सुधा ममता शमनं।
अनवद्य अखण्डन गोचरगो। सब रूप सदा सब होइ नमो
इति वेदवदन्ति न दन्तकथा। रवि आतप भिन्न न भिन्न यथा
कृतकृत्य विभो सब बानरये। निरखन्त तवानन सादरये।
धृक जीवन देव शरीर हरे। तव भक्ति बिना भव भूलि परे
अब दीनदयाल कृपा करिये। मति मोरि विभेदकरी हरिये।
जिहि ते विपरीति कृपा करिये। दुख में सुख मान सुखी चरिये
खलखण्डन मण्डन रम्य क्षमा। पदपंकज सेवित शम्भु उमा
नृपनायक देवर दान मिदं। चरणाम्बुज प्रेम सदाम्बुभदं ५८

दो० विनय कीन्ह बहु भाँति विधि प्रेम प्रफुल्लित गात।

वदन विलोकत राम कर लोचन नाहिं अघात ४३

तिहि अवसर दशरथ तहँ आये। तनय विलोकि नयन जल छाये
सहित अनुज प्रणाम प्रभु कीन्हा। आशिर्बाद पिता तब दीन्हा
तात सकल तव पुण्य प्रभाऊ। जीतेउँ अजय निशाचर राऊ।
सुनि सुत वचन प्रीति अति बाढ़ी। नैन सलिल रोमावलि ठाढ़ी
रघुपति प्रथम प्रेम अनुमाना। चितै पितहि दीन्हेउ दृढ़ ज्ञाना
ताते उमा मोक्ष नहिं पावा। दशरथ भेद भक्ति मन लावा।
सगुणा उपासक मोक्ष न लेहीं। तिन्ह कहँ राम भक्ति निज देहीं।
बार बार करि प्रभुहिं प्रणामा। दशरथ हर्षि गये निज धामा

दो॰ अनुज जानकी सहित प्रभु कुशल कोशलाधीश।
छबि विलोकि मन हरषि अति अस्तुति कर सुरईश ४४

छं॰ जय राम शोभा धाम। दायक प्रणत विश्राम।
धृत तूण वर शर चाप। भुज दण्ड प्रबल प्रताप
जय दूषणारि खरारि। मर्दन निशाचर भारि।
यह दुष्ट मारेउ नाथ। भे देव सकल सनाथ।
जय हरण धरणी भार। महिमा उदार अपार।
जय रावणारि कृपाल। किये यातुधान विहाल

लंकेश अति बलगर्ब्ब। किये बश सुर गन्धर्ब्ब
मुनि सिद्ध नरखग नाग। हठि पन्थ सबके लाग।
पर द्रोह रत अति दुष्ट। पायो सो फल पापिष्ट
अब सुनहु दीनदयाल। राजीव नयन बिशाल।
मोहिं रहा अति अभिमान। नहिं कोउ मोहिं समान
अब देखि प्रभु पदकञ्ज। गत मान प्रद दुखपुञ्ज
कोउ ब्रह्म निर्गुण ध्याव। अव्यक्त जेहि श्रुति गाव
मोहिं भाव कोशल भूप। श्रीराम सगुण स्वरूप
बैदेहि अनुज समेत। मम हृदय करहु निकेत।
मोहिं जानिये निजदास। दे भक्ति रमा निवास ५९

छं० देभक्ति रमानिवास त्रास हरण शरणा सुख दायकं।
सुख धाम राम नमामि काम अनेक छवि रघुनायकं॥
सुर हृन्द रञ्जन द्वन्द भञ्जन मनुज तन अतुलित बलं।
ब्रह्मादि शंकर सेव्य राम नमामि करुणा कोमलं ६०

दो० अब करि कृपा बिलोकि मोहिं आयसु देहु कृपाल
काह करौं सुनि प्रिय बचन बोले दीन दयाल ४५

सुनु सुरपति कपि भालु हमारे। परे भूमि निशिचर्न्ह जो मारे।

मम हित लागि तजेउ इन प्राना। सकल जियाउ सुरेश सुजाना
सुनु खगेश प्रभु कीयह बानी। अति अगाध जानहिं मुनि ज्ञानी
प्रभु सक त्रिभुवन मारि जियाई। केवल शक्रहि दीन्ह बड़ाई।
सुधा बरषि कपि भालु जियाये। हरषि उठे सब प्रभु पहँ आये
सुधा दृष्टि भै दुहुँ दल ऊपर। जिये भालु कपि नहिं रजनीचर।
रामाकार भये तिन्ह के मन। गये ब्रह्म पद तजि शरीर रन।
सुरअंशिक सब कपि अरु रीछा। जिये सकल रघुपति कीइच्छा
राम सरिस को दीन हितकारी। कीन्हे मुक्त निशाचर भारी।
खल मल धाम काम रत रावन। गति पाई जो मुनि वर पावन

दो० सुमन बरषि सब सुर चले चढ़ि चढ़ि रुचिर विमान
देखि सुअवसर राम पहँ आये शम्भु सुजान ॥
परम प्रीति करि जोरि युग नयन नलिन भरि वारि
पुलकित तन गद्गद गिरा विनय करत त्रिपुरारि ४६

छं० मामभिरक्षय रघुकुल नायक। धृत वर चाप रुचिर कर शायक
मोह महा घन पटल प्रभञ्जन। संशय विपिन अनल सुर रञ्जन
अगुण सगुण गुण मन्दिर सुन्दर। भ्रम तम प्रबल प्रताप दिवाकर।
काम क्रोध मद गज पञ्चानन। बसहु निरन्तर जन मन कानन।

विषयमनोरथपुञ्जकञ्जवन। प्रबल तुषार उदार पार मन
भववारिधि मन्दर पर मन्दर। वारय तारय संसृत दुस्तर।
श्याम गात राजीव विलोचन। दीन बन्धु प्रणतारत मोचन
अनुजजानकीसहित निरन्तर। बसहु राम नृप मम उर अन्तर
मुनिरंजन महिमण्डलमण्डन। तुलसिदासप्रभुत्रासविखंडन
दो० नाथ जबहिं कोशलपुर होइहि तिलक तुम्हार।
तब मैं आउब सुनहु प्रभु देखन चरित उदार ४७
करिविनतीजब शम्भु सिधाये। तबप्रभुनिकट विभीषण आये
नाइचरण शिरकह मृदुबानी। विनयसुनिय ममशारँगपानी
सकलसदलप्रभुरावणमारा। पावन यशत्रिभुवन विस्तारा।
दीन मलीन हीन मति जाती। मो पर कृपा कीन्ह बहु भाँती
अबजन गृह पुनीत प्रभुकीजै। मज्जन करिय समरश्रम छीजै
देश कोष मन्दिर सम्पदा। देहु कृपालु कपिन कहँ मुदा।
सबविधिनाथमोहिंअपनाइय,पुनिमोहिंसहितअवधपुरजाइय
सुनत वचन मृदु दीनदयाला। सजलभयेहरि नयन विशाला।
दो० तोर कोष गृह मोर सब सत्य वचन सुनु तात।
दशाभरतकीसुमिरिमोहिंपलककल्पसमजात॥

तापस भेष शरीर कृशा जपै निरन्तर मोहिं ।
देखौंवेगिसो यत्न करु सखा निहोरोंतोहिं ॥
जो जैहौं बीते अवधि जियत न पाऊँ वीर ।
प्रीतिभरतकीसमुझिप्रभुपुनिपुनिपुलकशरीर४८

सुनत विभीषणा वचन रामके। हर्षि गहे पद कृपा धाम के
बानरभालुसकलहर्षाने। प्रभु पदगहि गुणा विमल बखाने
बहुरि विभीषणा भवन सिधाये। मणिगणावसन विमानभराये
लै पुष्पक प्रभु आगे राखा। हँसि कै कृपासिन्धु असभाखा
चढ़ि विमानसुनुसखाविभीषणा। गगनजाइ वर्षहु पटभूषणा
नभ पर जाइ विभीषणा तबहीं। वर्षि दिये पट भूषणा सबहीं
जो जेहि मन भावै सो लेहीं। मणिमुखमेलिडारिकपिदेहीं
हँसत रामसिय अनुजसमेता। परम कौतुकी कृपानिकेता।

दो० ध्यान न पावहिं जासु मुनि नेति नेति कह वेद।
कृपासिन्धु सोइ कपिन सों करत अनेकविनोद
उमायोगजप दान तप नाना व्रत मख नेम ।
रामकृपानहिंकरहिं तसजसनिष्केवलप्रेम ४९

भालुकपिनपट भूषणा पाये। पहिरिपहिरिरघुपतिपहँआये

नानाजिनिस देखि प्रभु कीशा। पुनि पुनि हँसत कोशलाधीशा
चितै सबनि पर कीन्ही दाया। बोले मधुर वचन रघुराया।
तुम्हरे बल मैं रावण मारा। तिलक विभीषण कहँ पुनि सारा
निजनिज गृह अब तुम सब जाहू। सुमिरह मोहिं डरहु जनि काहू
वचन सुनत प्रेमाकुल बानर। जोरि पाणि बोले सब सादर।
प्रभु जो कहहु तुमहिं सब सोहा। हमरे हिय उपजै सुनि मोहा
दीन जानि कपि कियेसनाथा। तुम त्रैलोक्य ईश रघुनाथा।
सुनि प्रभु वचन लाज हम मरहीं। मशक कबहुँ खगपति हित करहीं
देखि राम रुख वानर रीछा। प्रेम मगन नहिं गृह की इच्छा।

दो० प्रभु प्रेरित कपि भालु सब राम रूप उर राखि।
हर्ष विषाद समेत सब चले विनय बहु भाखि॥
जामवन्त कपिराज नल अंगदादि हनुमान।
सहित विभीषण अपर जे यूथप कपि बलवान
कहिन सकहिं कछु प्रेम वश भरि भरि लोचन वारि
सन्मुख चितवहिं राम तन नयन निमेष निवारि २५०

अतिशय प्रीति देखि रघुराई। लीन्हे सकल विमान चढ़ाई।
मन महँ विप्र चरण सिर नावा। उत्तर दिशहि विमान चलावा।

चलत विमान कोलाहल होई। जय रघुवीर कहैं सब कोई।
सिंहासन अति उच्च मनोहर। सिय समेत बैठे प्रभु ता पर
राजत राम सहित भामिनी। मेरु शृंग जनु घन दामिनी
रुचिर विमान चला अति आतुर। कीन्हीं सुमन वृष्टि हर्षे सुर
परम सुखद चलि त्रिविध बयारी। सागर सुरसरि निर्म्मल वारी
शकुन होयँ सुन्दर चहुँ पासा। मन प्रसन्न निर्म्मल आकासा
कह रघुवीर देखु रण सीता। लक्ष्मण हत्यो इहाँ इँद्रजीता।
अंगद हनूमान के मारे। रण महँ परे निशाचर भारे
कुम्भकरण रावण दोउ भाई। इहाँ हतेउँ सुर मुनि दुखदाई।
दो॰ सुन्दरि सेतु देखु यह थापेउँ शिव सुख धाम।
सीता सहित कृपायतन शम्भुहिं कीन्ह प्रणाम॥
जहँ जहँ कृपा सिन्धु बन कीन्ह वास विश्राम।
सकल दिखाये जानकिहिं कहि कहि सबके नाम ५१
सपदि विमान तहाँ चलि आवा। दण्डक बन जहँ परम सुहावा
कुम्भजादि मुनिनायक नाना। गये राम सब के अस्थाना।
सकल मुनिन सों पाय अशीषा। आये चित्रकूट जगदीशा
तहँ करि ऋषिन केर सन्तोषा। चला विमान तहाँ ते चोषा।

बहुरि रामजानकी देखाई। यमुना कलिमल हरनि सुहाई
पुनि देखी सुरसरी पुनीता। राम कहा प्रनाम करु सीता।
तीरथपति पुनि देख प्रयागा। देखत जाहिं पाप सब भागा
देखि राम पावन पुनि बेनी। हरषा शोक सुर लोक निरोनी
देखी अवध पुरी अतिपावनि। त्रिविधतापभवदापनशावनि

दो० तबरघुनन्दनसियसहित अवधहिंकीन्ह प्रनाम।
सजलविलोचनपुलकतनपुनिपुनिहर्षितराम॥
बहुरि बिभेषणी आय प्रभु हर्षित मज्जन कीन्ह ।
कापिन समेत महीसुरनदानविविधविधिदीन्ह ५२

प्रभु हनुमन्तहिं कहा बुझाई। धरिद्विज रूप अवध पुर जाई
भरतहिं कुशल हमार सुनावहु। समाचारलैपुनिचलिआवहु
त्वरित पवनसुतगवनतभयऊ। तब प्रभु भरद्वाज पहँ गयऊ।
नानाविधि पूजासुनिकीन्हीं। अस्तुतिकरिपुनिआशिषदीन्हीं
मुनिपदवन्दियुगलकरजोरी। चढ़िविमान प्रभु चले बहोरी
इहाँ निषाद सुना प्रभु आये। नाव नाव करि लोग बुलाये
सुरसरि लाँघियान जब आवा। उतरा तहँ प्रभु आयसु पावा
तब सीता पूजी सुरसरी। बहु प्रकार करि चररान परी।

दीन्ह असीस मुदित मन गंगा। सुन्दरि तव अहिवात अभंगा
सुनत गिंगुह बारि पेमाकुल। आवा निकट परम सुख संकुल।
प्रभुहिं बिलोकि सहित बैदेही। परेउ अवनितल सुधि नहिं तेही।
परम प्रीति बिलोकि रघुराई। हरषि उठाइ लीन्ह उर लाई।

छं० लियहृदय लाइ कृपानिधान सुजान राम रमापती ।
बैठारि परम समीप पूँछी कुशल सो करि बीनती ॥
अब कुशल पद पंकज बिलोकि बिरंचि शंकर सेव्य जे
सुख धाम पूरन काम राम नमामि राम नमामि ते
सब भाँति अधम निषाद सो हरि भरत ज्यों उर लाइये
मति मन्द तुलसी दास सो प्रभु मोहबश बिसराइये
यह रावणारि चरित्र पावन राम पद रति प्रद सदा
कामादि हर बिज्ञान कर सुर सिद्ध मुनि गावहिं मुदा ६२

दो० समर बिजय रघुनायक सुनहिं जे सन्त सुजान।
बिजय बिबेक बिभूति नित तिन्हहिं देहिं भगवान
यह कलिकाल मलायतन मन करि देख बिचार
श्रीरघुनायक नाम तजि नहिं कछु आन अधार ५३

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने विमलवैराग्यसम्पादनो नाम षष्ठस्सोपानः समाप्तः ६॥

रामायणगीतावली मूल तुलसीकृत छापा टैप.

अनेक रागों में सुन्दरकाण्डादि सम्पूर्ण लीला युक्त रामायण सातों काण्ड का आशय वर्णित है.

तथा. गीतावली सटीक बैजनाथजी छापे.

सातों काण्ड रामायण की सम्पूर्ण कथा अनेक उत्तम २ रागों में वर्णित है बैजनाथ जी ने हरि भक्तों व सज्जनों के सरलता हेतु उत्तम रीति से ब्रजभाषा में टीका किया है.

रामायण दोहावली तुलसीदास जी मूल छापा टैप.

जिसमें ज्ञान भक्ति वैराग्य मिश्रित दोहे हैं और विशेष कर संतोष की शिक्षा प्रधान है.

विजय दोहावली तु. दा. जी छापा टैप.

श्री गोसाईं तुलसीदास जी ने अपनी तुलसीकृत रामायण के कठिन और गूढ़ार्थ दोहे चौपाई सोरठे आदि के भाव यथार्थ प्रकट करने के निमित्त छन्दों में प्रकाशित किया.

रामायण छन्दावली मू. तु. कृ. छापा टैप.

श्री रविकुल कैरव चन्द्र कौशल्या हृदयानन्द वर्द्धन का परमोत्तम चरित्र बालकाण्ड से उत्तरकाण्ड पर्य्यन्त मनोहर चौपय्या छन्द में वर्णित है.

तथा. सटीक बैजनाथजी छापा टैप.

जिसको श्री बैजनाथ जी ने कठिन २ स्थलों के गूढ़ २ शब्दों का आशय प्रत्येक पुराण शास्त्रादिकों के प्रमाण देकर ऐसा सरल कर दिया है जिसे सब सहज में समझ सकते हैं.

छपे रामायण मूल तुलसीकृत छापा टैप.

सातों काण्ड रामायण की कथा अति रुचिर छपे छन्दों में अतीव सरल पदों से वर्णन की गई है.

तथा. सटीक बैजनाथ जी छापा टैप.

जिसको बैजनाथ जी ने कठिन २ स्थलों के गूढ़ २ शब्दों का आशय प्रत्येक पुराण शास्त्रादिकों के प्रमाण देकर ऐसा सरल कर दिया है जिसे सब सहज में समझ सकते हैं.

विनय पत्रिका मूल तुलसीदास जीकृत छापा टैप.

गोसाईं तुलसीदास जी ने श्री रामचन्द्र परब्रह्म परमेश्वर श्री जानकी महारानी के विनय युक्त भजन राग आदि में वर्णन किये हैं.

तथा. सटीक बाबू शिवप्रकाश जी छापा टैप.

जिसमें भक्त भयहारी - अवध विहारी - दीन हितकारी - रावणान्तकर्ता - विभीषणादि भयहर्त्ता श्री रामचन्द्र महाराजाधिराज प्रति विनय अति सुसज्जित भजनों में निर्मित है.

तथा. सटीक बैजनाथ जी छापा टैप.

जिसको बैजनाथ जी ने प्रति पद [illegible] व अलङ्कार का अनेक शास्त्र, पुराण, स्मृति, उपनिषदादि

दृष्टान्त देकर सरल भाषा में निर्मित किया है

तुलसी सतसयी मूल तुलसीकृत कायारथ

जिस में नानाप्रकार के नीति शास्त्र ग्रन्थों से छाँट कर सात सौ अत्यंत उपयोगी दोहों में नीति वर्णन की गई है.

तथा. मय टीका कामताशरण नीका-दूसरे.

जिनको श्री ईमत कृपासागर सकल गुण आगर श्री स्वामी युगलानन्य शरण जी के किङ्कर अनुकिङ्कर श्री [illegible] रामकान्ता शरण जी ने उत्तम रीति से वार्तिक आर्या टीका किया है.

तथा. मय टीका बैजनाथ नीका-तीसरे.

जिस में नाना प्रकार के नीति शास्त्र ग्रन्थों से छाँटकर अतीव मनोहर सात सौ दोहों में धर्म नीति वर्णीत है.

भगवद्गीता नवलभाष्य का विज्ञापन.

प्रकट हो कि यह पुस्तक श्री मद्भगवद्गीता सकल निगम पुराण स्मृति सांख्यादि शास्त्रों का परम रहस्य गीताशास्त्र का सर्व्व विद्यानिधान सौशील्य विनयौदार्य्य सत्यसंगर सौम्यमूर्ति पुराण सम्भव नरावतार महानुभाव अर्जुन को परम अधिकारी जान के हृदय जनित मोहनाशार्थ सब प्रकार अपार संसार निस्तारक भगवद्भक्ति मार्ग दृष्टिगोचर कराया है वही उक्त भगवद्गीता अक्षरशः वेदान्त व योगशास्त्रान्तर्गत जिसको अच्छे २ शास्त्रवेत्ता अपनी बुद्धि से पार नहीं पा सके तब मन्दबुद्धी जिन को कि केवल देश भाषा ही पठन पाठन करने की सामर्थ्य है वह कब इसके अन्तराभिप्राय को जान सके हैं. और यह प्रत्यक्षही है कि जब तक किसी पुस्तक अथवा किसी वस्तु का अन्तराभिप्राय अच्छे प्रकार बुद्धि में न भासित हो तब तक आनन्द क्योंकर मिले इस प्रकार सम्पूर्ण भारतनिवासी श्री मद्भगवत्पदाब्जरसिकजनों के चित्तानन्दार्थ व बुद्धिबोधार्थ सन्तत धर्म्म धुरीण सकलकला चातुरीण सर्व्वविद्या विलासी भगवद्भक्त्यनुरागी श्रीमान् मुन्शी नवलकिशोर जी (सी. आई. ई.) ने बहुत साधन व्ययकर फ़र्रुखाबाद निवासि पण्डित उमादत्त जी से इस मनोरञ्जन वेदवेदान्त शास्त्रोपरि पुस्तक को श्रीशंकराचार्य्य निर्मित भाष्यानुसार संस्कृत से सरल देश भाषा में तिलक रचाय नवलभाष्य आख्य से प्रभात कालिक कमल सदृश प्रफुल्लित करा दिया है कि जिसको भाषा मात्र के जाननेवाले पुरुष भी जान सके हैं ॥

रामायण

उत्तरकाण्ड

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

प्रथमवार

कानपुर

मुंशी नवलकिशोर की आज्ञा से छापेखाने में छपी

[illegible]

विज्ञापन.

यह विशालदरशी मोटे अक्षरों की रामायरा प्रथमबार छापी गई है अभी तक ऐसी रामायरा हिन्दुस्तान में नहीं छपी कि जिस के दर्शन से आप लोग प्रसन्नहो ते अब परमेश्वर की कृपा से हमारे कारख़ाने में छपी है और हम इस की प्रशंसा नहीं कर सक्ते जब आप लोग ख़ुद इस रामायरा को अवलोकन करेंगे तब आप प्रसन्नता को प्राप्त होंगे- और यह रामायरा अलग २ काराड भी मिल सक्ती है. फ़क़त

नवलकिशोर.

मालिक मतबा नवलकिशोर प्रेसकानपूर व लखनऊ

नीचे लिखी हुई रामायरा हर क़िस्म की छापाख़ाना नवलकिशोर कानपूरव लखनऊ में ख़रीदारों को मिल सक्ती हैं.

रामायरा तु·क्र·सटीक रामचररादास किताबनुमा वयत्रानुमा छापटैप सा·को.

जिसको श्री रामचररा जीने भक्तजनों के उपकार और जगत कल्यारा के लिये वेद की ऋचाओं व अनेक प्रमारिाक श्लोकों से भूषित कर पद २ का भाषा टीका किया है.

रामायरा तुलसीकृत मूल मोटा अक्षरमय तसवीर छापा टैप.

सेपक वमाहात्म्य सहित- रावरा विजय व श्री गंगा जी - ग्रहिरावरा नारान्तक रामदल संख्या सुलोचना कथा श्री रामायरा व सप्तदेव स्तुति भिन्न २ श्लेपक की रीति से संयुक्त है.

तथा -सुतवस्सित क़लम मय तसवीर छापा टैप ऊपर के अलङ्कारों सहित.

रामायरा तु·क्र·सटीक सुखदेवलाल किताबनुमा वयत्रानुमा छापा टैप.

जिसको सुखदेवलाल जी ने जगत कल्यारा के अर्थ भाषा टीका रचकर प्रमारिाक श्लोकों से भूषित किया और पद पदार्थ के अर्थ को अति स्पष्ट रीति से सलिल देश भाषा में बखाना है.

रामायरा तु·क्र· सटीक बैजनाथ जी छापा टैप.

जिाको बैजनाथ जी ने कठिन २ स्थलों के गूढ़ शब्दों का आशय प्रत्येक पुरारा शास्त्र उपनिषद वेदादि के श्लोक ऋचा सूत्रादिकों के दृष्टान्त देकर ऐसा सरल कर दिया है जिसे सब सहज में समझ सक्ते है और अवलोकन करने के योग्य है.

रामायरा कवित्तावली मूल तु·छापा टैप.

जिसमें सम्पूरा आशय रामायरा का उक्त कविने अति रुचिर छन्दों में वरारन किया है.

तथा. मय टीका बैजनाथजी सटीक.

जिसमें श्री महाराज राजराजेन्द्र रामचन्द्र जी का समस्त जीवन चरित्र सातकाराडों में अत्युत्तम कवित्तों में वरारित है.

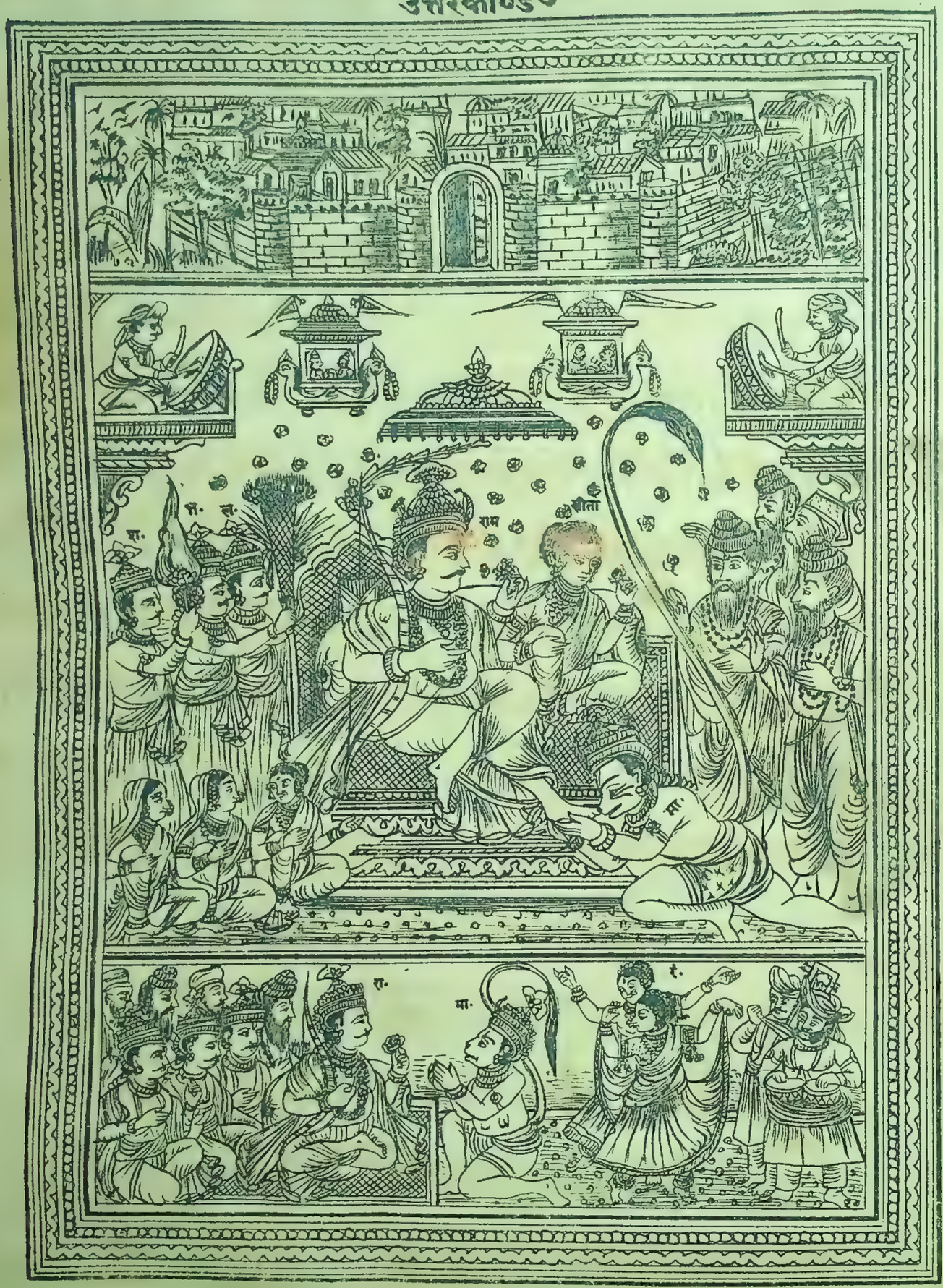
सीता
राम
ल.
ग.
ग.
म.
म.
ह.

श्रीगणेशायनमः

श्रीरामायणतुलसीकृत

उत्तरकाण्ड

केकीकण्ठाभनीलंसुरवरविलसद्विप्रपादाब्जचिन्हं। शोभाढ्यंपीतवस्त्रंसरसिजनयनंसर्व्वदासुप्रसन्नम्॥ पाणौनाराचचापंकपिनिकरयुतंबन्धुनासेव्यमानं। नौमीड्यंजानकीशंरघुवरमनिशंपुष्पकारूढरामम् १ कौशलेन्द्रपदकञ्जमञ्जुलौपद्मयोनिशितिकण्ठवन्दितौ॥ जानकीकरसरोजलालितौचिन्तकस्यमनभृङ्गसङ्गिनौ २ कुन्दइन्दुदरगौरसुन्दरं अम्बिकापतिमभीष्टसिद्धिदम्॥ कारुणीककलकञ्जलोचनं नौमि शंकरमनंगमोचनम् ३॥

दो॰ रहा एक दिन अवधि कर अति आरत पुरलोग।
जहँ तहँ शोचहिं नारि नर कृश तन राम वियोग॥
शकुन होहिं सुन्दर सकल मन प्रसन्न सब केर।
प्रभु आगमन जनाव जनु नगर रम्य चहुँ फेर॥

कौशल्यादि मातु सब मन अनन्द अस होइ।
आयेप्रभुसिय अनुजयुतकहन चहत असकोइ
भरत नयनभुज दक्षिना फरकाहिं बारहिं बार।
जानि शकुन मन हर्ष अति लागेकरन विचार १
रहा एकदिन अवधि अधारा। समुझत मनदुखभयउ अपारा
कारणाकवननाथनहिंआये। जानिकुटिल प्रभु मोहिंबिसराये
अहह धन्यलक्ष्मणाबड़भागी। राम पदारविन्द अनुरागी
कपटीकुटिलनाथ मोहिंचीन्हा। ताते नाथसंग नहिं लीन्हा
जोकरणी समुझैं प्रभु मोरी। नहिं निस्तार कल्प शत कोरी
जन अवगुणा प्रभुमाननकाऊ। दीनबन्धु अति मृदुल सुभाऊ
मोरेजिय भरोस दृढ़ सोई। मिलिहहिं राम शकुन शुभ होई
बीते अवधि रहैं जो प्राना। अधम कवनजग मोहिंसमाना
दो० राम विरह सागर महँ भरत मगन मन होत।
विप्ररूप धरि पवनसुत आइ गये जिमि पोत॥
बैठे देखिकुशासन जटा मुकुट कृश गात।
रामराम रघुपतिजपतस्रवत नयन जलजात २
देखत हनूमान अति हर्षे। पुलक गात लोचन जल वर्षे।

मन महँ बहुत भाँति सुख मानी। बोले श्रवण सुधा सम बानी
जासु बिरह सोचहु दिन राती। रटहु निरन्तर गुण गण पाँती
रघुकुलतिलक सुजन सुखदाता। आये कुशल देव मुनि त्राता
रिपु रण जीति सुयश सुर गावत। सीता अनुज सहित प्रभु आवत
सुनत वचन बिसरे सब दूखा। तृषावन्त जनु पाय पियूखा
को तुम तात कहाँ ते आये। मोहिं परम प्रिय वचन सुनाये
मारुत सुत मैं कपि हनुमाना। नाम मोर सुनु कृपानिधाना।
दीनबन्धु रघुपति कर किंकर। सुनत भरत भेंटेउ उठि सादर।
मिलत प्रेम नहिं हृदय समाता। नयन स्रवत जल पुलकित गाता
कपि तव दरश सकल दुख बीता। मिले आजु मोहिं राम सप्रीते
बार बार पूँछी कुशलाता। तो कहँ काह देउँ सुनु भ्राता
यह सन्देश सरिस जग माहीं। करि विचार देखा कछु नाहीं
नाहिन उऋण्ण तात मैं तोहीं। अब प्रभु चरित सुनावहु मोहीं
तब हनुमान नाइ पद माथा। कहे सकल रघुपति गुण गाथा
कहु कपि कबहुं कृपालु गुसाईं। सुमिरत मोहिं दास की नाईं
छं० निज दास ज्यों रघुवंश भूषण कबहुँ मम सुमिरण कर्यो।
सुनि भरत वचन विनीत अति कपि पुलकतन चरणन पर्यो

रघुवीर निज मुख जासु गुण गण कहत अज जगनाथ जो
काहे न होइ विनीत परम पुनीत सद्गुण सिन्धु सो १

दो॰ राम प्राण प्रिय नाथ तुम सत्य वचन मम तात।
पुनि पुनि मिलत भरत सन प्रेम न हृदय समात ३

सो॰ भरत चरण शिर नाइ त्वरित गयो कपि राम पहँ
कही कुशल सब जाइ हर्षि चले प्रभु यान चढ़ि १

हर्षि भरत कोशल पुर आये। समाचार सब गुरुहिं सुनाये
पुनि मन्दिर महँ बात जनाई। आवत नगर कुशल रघुराई
सुनत सकल जननी उठि धाईं। कहि प्रभु कुशल भरत समुझाईं
समाचार पुर वासिन पाये। नर अरु नारि हर्षि उठि धाये
दधि दूर्व्वा रोचन फल फूला। नव तुलसी दल मंगल मूला।
भरि भरि हेम थार वर भामिनि। गावत चलीं सिन्धुरा गामिनि
जो जैसहिं तैसहिं उठि धावहिं। बाल वृद्ध कोउ संग न लावहिं
एक एक मन पूँछहिं धाई। तुम देखे दयालु रघुराई।
अवध पुरी प्रभु आवत जानी। भई सकल शोभा की खानी
भा सरयू अति निर्मल नीरा। बहै सोहावन त्रिविध समीरा

दो॰ हर्षित गुरु पुर जन अनुज भूसुर वृन्द समेत।

चले भरत अति प्रेम मन सन्मुख कृपा निकेत॥
बहुतक चढ़ीं अटारिन्ह निरखहिं गगन विमान।
देखि मधुर स्वर हर्षित करहिं सुमंगल गान॥
राका शशि रघुपति पुरी सिन्धु देखि हर्षान।
बढ़े कोलाहल करत जनु नारि तरंग समान ८

रविकुलकमलदिवाकर आवत। नगर मनोहर कपिन देखावत
सुनु कपीश अंगद लंकेशा। पावनि पुरी रुचिर यह देशा
यद्यपि सब बैकुंठ बखाना। वेद पुरान विदित जग जाना
अवध सरिस प्रिय मोहि न सोऊ। यह प्रसंग जानै कोउ कोऊ
जन्मभूमि मम पुरी सोहावनि। उत्तर दिशि सरयू बहै पावनि।
जो मज्जहिं सो बिनहिं प्रयासा। मम समीप नर पावहिं बासा
अति प्रिय मोहिं इहाँ के वासी। मम धामदा पुरी सुखरासी
हर्षे कपि सुनि प्रभु की बानी। धन्य अवध जेहि राम बखानी

दो० आवत देखे लोग सब कृपासिन्धु भगवान।
नगर निकट प्रभु आयउ उतरे भूमि विमान॥
बहुरि कहेउ प्रभु पुष्पकहि तुम कुबेर पहँ जाहु।
प्रेरित राम चलेउ सो हर्ष विरह अति ताहु ५

आये भरत संग सब लोगा। कृश तनु श्रीरघुवीर वियोगा
वामदेव वशिष्ठ मुनि नायक। देखा प्रभु महि धरि धनु सायक।
धाइ धरे गुरु चरन सरोरुह। अनुज सहित अति पुलक तनोरुह
भेंटे कुशल पूँछि मुनि राया। हमरे कुशल तुम्हारिहि दाया
सकल द्विजन कहँ नाय उमाथा। धर्म्म धुरन्धर रघुकुल नाथा
गहे भरत पुनि प्रभु पद पंकज। नवहिं जिनहिं शंकर सुर मुनि व्रज
परे भूमि नहिं उठत उठाये। बल करि कृपा सिन्धु उर लाये
श्यामल गात रोम भये ठाढ़े। नव राजीव नयन जल बाढ़े।
छं० राजीव लोचन स्रवत जल तन ललित पुलकावलि बनी।
अति प्रेम हृदय लगाइ अनुजहिं मिले प्रभु त्रिभुवन धनी॥
प्रभु मिलत अनुजहिं सोह मो पहँ जात नहिं उपमा कही।
जनु प्रेम अरु शृंगार तनु धरि मिलत वर सुषमा लही॥
पूँछत कृपानिधि कुशल भरतहिं वचन बेगि न आवई।
सुनु शिवा सो सुख वचन मन ते भिन्न जान न पावई॥
अब कुशल कोशलनाथ आरत जानि जन दरशन दियो।
बूड़त विरह वारिधि कृपानिधि काढ़ि मोहिं कर गहि लियो॥
दो० पुनि प्रभु हरषित शत्रुहन भेंटे हृदय लगाइ।

लक्ष्मण भेंटे भरत पुनि प्रेम न हृदय समाइ ६

भरत अनुज लक्ष्मण तब भेंटे। दुसह विरह सम्भव दुख मेटे।
सीता चरण भरत शिर नावा। अनुज समेत परम सुख पावा।
प्रभु विलोकि हर्षे पुर वासी। जनित वियोग विपति सब नासी।
प्रेमातुर सब लोग निहारी। कौतुक कीन्ह कृपालु खरारी।
अमित रूप प्रकटे तेहि काला। यथा योग्य मिले सबहि कृपाला।
कृपा दृष्टि सब लोग विलोकी। किये सकल नर नारि विशोकी।
रघुपति भेंट सबहिं मिले भगवाना। उमा मर्म्म यह काहु न जाना।
इहि विधि सबहिं सुखी करि रामा। आगे चले शील गुण धामा।
कौशल्यादि मातु सब धाईं। निरखि वच्छ जनु धेनु लवाईं।

छं० जनु धेनु बालक बच्छ तजि गृह चरन बन परवश गईं।
दिन अन्त पुर रुख स्रवत थन हुंकार करि धावत भईं॥
अति प्रेम प्रभु सब मातु भेंटे वचन मृदु बहु विधि कहे।
गइ विषम विपति वियोग भव तिन्ह हर्ष सुख अगणित लहे ३

दो० भेंटेउ तनय सुमित्रा राम चरण रत जानि।
रामहिं मिलत कैकई हृदय बहुत सकुचानि॥
लक्ष्मण सब मातन मिले हर्षे आशिष पाइ।

केवटकहँपुनिपुनिमिलेमनकरक्षोभनजाइ७
सासुन सबहिं मिली वैदेही। चरनान लागि हर्ष अति तेही
देहिं असीस पूँछि कुशलाता। होउ अचल तुम्हार अहिवाता
सबरघुपतिपदकमलविलोकी। मंगलजानिनयनजलरोंकी
कनक थार आरती उतारहिं। बार बार प्रभु गात निहारहिं
नानाभाँति निछावरि करहीं। परमानन्द हर्ष उर भरहीं।
कौशल्यापुनिपुनिरघुवीरहिं। चितवहिंकृपासिन्धुरनधीरहिं
हृदयविचारतिबारहिंबारा। कवनि भाँति लंका पति मारा
अति सुकुमारयुगलमम्वारे। निशिचरसुभट महा बल भारे
दो० लक्ष्मणाअरुसीतासहित प्रभुहिंविलोकहिंमातु।
परमानन्द मगन मन पुनिपुनि पुलकित गातु ८
लंकापति कपीशनलनीला। जामवन्त अंगद सुभ शीला
हनुमदादि सब वानर वीरा। धरे मनोहर मनुज शरीरा।
भरतसनेह शील व्रतनेमा। सादरसबवरनाहिं अति प्रेमा।
देखि नगर वासिन कै रीती। सकल सराहहिंप्रभु पद प्रीती
पुनिरघुपतिनिजसखाबुलाये। मुनिपदलागहुसबहिंसिखाये
गुरु वशिष्ठ कुल पूज्य हमारे। इनकी कृपा दनुज रण मारे

येसब सखासुनिय मुनि मोरे। भये समर सागर कहँ बेरे।
ममहित लागिजन्मइन हारे। भरतहुतेमोहिअधिकपियारे
सुनिप्रभुवचनमगनसबभये। निमिषनिमिषउपजतसुखनये

दो० कौशल्याके चरगान पुनि तिन्ह नायउ माथ।
आशिषदीन्हहर्षिहियतुमप्रियजिमिरघुनाथ
सुमन वृष्टिनभसंकुल भवन चले सुख कन्द।
चढ़े अटारिन देखहिं नगर नारि नर वृन्द ९

कञ्चन कलशविचित्रसँवारे। सबनिधरेसजिनिजनिजद्वारे
वन्दनवार पताका केतू। सबनि बनायउ मंगल हेतू।
बीथिन सकलसुगन्धिसिचाये। गजमणिरचिबहुचौकपुराये
नाना भाँति सुमंगल साजे। हर्ष निशान नगर बहु बाजे
जहँ तहँ नारि निछावरिकरहीं। देहिं अशीष हर्ष उर भरहीं।
कञ्चन थार आरती नाना। युवती साजि करहिं कलगाना
करहिं आरती आरत हरके। रघुकुलकमलविपिन दिनकरके
पुर शोभा सम्पति कल्याना। निगम शेष शारदा बखाना
तेऊ चरित देखि ठगि रहहीं। उमातासुगुणनरकिमि कहहीं

दो० नारिकुमुदिनी अवधसररघुपतिविरह दिनेश।

अरुण भये विकासित भई निरखि रामराकेश॥
होहिंशकुनशुभविविधविधिबाजहिंगगननिशान
पुरनरनारिसनाथकरिभवन चले भगवान १०

प्रभु जानी केकयी लजानी। प्रथम तासु गृह गये भवानी
ताहिप्रबोधिबहुतसुखदीन्हा। तबनिजभवनगवन प्रभुकीन्हा
कृपासिन्धु जब मन्दिरगयऊ। पुरनरनारिसुखी सबभयऊ
गुरु वशिष्ठ द्विज लियेबुलाई। आजुसुघरीसुदिनसुखदाई।
सबद्विज देहु हर्षि अनुशासन। रामचन्द्र बैठहिं सिंहासन।
मुनि वशिष्ठ के वचन सुहाये। सुनतसकलविप्रन मन भाये
कहहिंवचनमृदुविप्रअनेका। जगअभिरामराम अभिषेका।
अबमुनिवरविलम्बनहींकीजै। महाराजकहँ तिलक करीजे।

दो॰ तबमुनिकहेउसुमन्त सनतुरितचलेशिरनाइ।
रथ अनेक गज बाजिबहु सकल सँवारे जाइ॥
जहँ तहँ धावन पठे पुनि मंगल द्रव्य मँगाइ।
हर्ष समेत वशिष्ठ पदपुनिशिर नायउ आइ ११

अवधपुरी अति रुचिरबनाई। देवन्ह सुमन वृष्टि झरि लाई
राम कहा सेवकन्ह बुलाई। प्रथमसखन्हअन्हवावहुजाई

सुनत वचन जनजहँ तहँ धाये। सुग्रीवादि त्वरित अन्हवाये
पुनि करुणानिधि भरतहँकारे। निज कर जटा राम निरवारे
अन्हवाये पुनि तीनिहु भाई। भक्त बछल कृपालु रघुराई
भरत भाग्य प्रभु कोमलताई। शेष कोटि शतसकहिं नगाई
पुनि निजजटा राम विवराये। मुनि अनुशासन पाइ अन्हाये
करि मज्जन भूषण प्रभु साजे। अंग अनंग कोटि छवि लाजे।

दो० सासुन सादर जानकिहि मज्जन त्वरित कराइ।
दिव्य वसन वर भूषणानि अँग अँग सजे बनाइ॥
राम वाम दिशि शोभित रमा रूप गुण खानि।
देखि सासु सब हर्षित जन्म सुफल निज जानि॥
सुनु खगेश तेहि अवसर ब्रह्मा शिव मुनिवृन्द।
चढ़ि विमान आये सकल सुर देखन सुखकन्द १२

प्रभु विलोकि मुनि मन अनुरागा। त्वरित दिव्य सिंहासन माँगा
रवि सम तेज वरणि नहिं जाई। बैठे राम द्विजन शिर नाई।
जनक सुता समेत रघुराई। देखि प्रहर्षे मुनि समुदाई
वेद मंत्र द्विज वर उच्चारे। नभ सुर मुनि जय जयति पुकारे
प्रथम तिलक वशिष्ठ मुनि कीन्हा। पुनि सब विप्रन आयसु दीन्हा

सुत विलोकि हर्षित महतारी। बार बार आरती उतारी।
विप्रन दान विविध विधि दीन्हे। याचक सकल अयाचक कीन्हे
सिंहासन पर त्रिभुवन साँई। देखि सुरन्ह दुन्दुभी बजाई
छं० नभ दुन्दुभी बाजहिं विपुल गन्धर्व्व किन्नर गावहीं।
नाचहिं अप्सरा वृन्द परमानन्द सुर मुनि पावहीं॥
भरतादि अनुज विभीषणांगद हनुमतादि समेत जे।
गहे छत्र चामर व्यजन धनु असि चर्म्म शक्ति विराजते॥
सिय सहित दिनकर वंश भूषण काम बहु छबि सोहहीं।
नव अम्बुधर वर गात अम्बर पीत मुनि मन मोहहीं॥
मुकुटांगदादि विचित्र भूषण अंग अंगन प्रति सजे।
अम्भोज नयन विशाल उर भुज धन्य नर निरखन्त जे ४
दो० यह शोभा समाज सुख कहत न बनै खगेश।
वरणौं शारद शेष श्रुति सो रस जानु महेश॥
भिन्न भिन्न अस्तुति करि गे सुर निज निज धाम।
वन्दी वेष वेद धरि आये जहँ श्री राम॥
प्रभु सर्वज्ञ कीन्ह अति आदर कृपा निधान।
लखेउ न काहू मर्म कछु लगे करन गुण गान १३

छं० जय सगुण निर्गुण रूप राम अनूप भूप शिरोमने ।
दशकन्धरादि प्रचण्ड निशिचर प्रबलखलभुजबलहने ॥
अवतार नर संसार भार विभञ्जि दारुण दुख दहे ।
जय प्रणत पाल दयाल प्रभु संयुक्त शक्ति नमामिहे ॥
तव विषम माया वश सुरासुर नाग नर अग जग हरे ।
भवपंथ भ्रमित अमित दिवस निशि काल कर्म गुणाभरे ॥
जे हि नाथ करि करुणा विलोक त्रिविध दुखते निर्वहे
भव खेद छेदन दक्ष हम कहँ रक्ष राम नमामि हे ॥
जे ज्ञान मान विमत्त तव भय हरण भक्ति न आदरी ।
ते पाइ सुर दुर्ल्लभ पदादपि परत हम देखत हरी ॥
विश्वास करि सब आश परिहरि दास तव जे होइ रहे ।
जपि नाम तव बिनु श्रम तरहिं भवनाथ राम नमामि हे ॥
जे चरण शिव अज पूज्य रज शुभ परसि मुनि पत्नी तरी ।
नख निर्गता मुनि वन्दिता त्रैलोक्य पावनि सुरसरी ॥
ध्वज कुलिश अंकुश कंज युत पद फिरत कराट कनि लहे
पद कञ्ज द्वन्द मुकुन्द राम रमेश नित्य भजामि हे ॥
अव्यक्त मूल मनादि तरु त्वच चारि निगमागम भने ।

षटकन्ध शाखा पंञ्चविंश अनेक पर्ण सुमन घने॥
फलयुगलविधिकटुमधुरबेलि अकोलिजेहि आश्रितरहे
पल्लवित फूलत नवल नित संसार विटप नमामिहे॥
जे ब्रह्म अज अद्वैत अनुभवगम्य मन पर ध्यावहीं।
ते कहहु जानहुँ नाथ हम तवसगुण यशनितगावहीं
करुणायतन प्रभु सद्गुणाकर देव यह वर माँगहीं।
मनकर्मवचनविकार तजितवचरणाहम अनुरागहीं ५

दो० सबके देखत वेदन्ह विनती कीन्ह उदार ।
अन्तरधान भये तब गये ब्रह्म आगार ॥
वैनतेय सुनु शम्भु तब आये जहँ रघुवीर।
विनयकरतगद्गदगिरा पूरितपुलकशरीर १४

छं० जयरामरमारमणं शमनं। भवतापभयाकुल पाहि जनं।
अवधेश सुरेश रमेश विभो। शरणागत मांगत पाहि प्रभो
दशशीशविनाशनवीसभुजा। कृतदूरिमहा महि भीरुरुजा।
रजनीचर वृन्द पतंग रहे। शर पावक तेज प्रचराड दहे
महि मराडलमराडनचारुतरं। धृतशायकचापनिषंगवरं
मदमोह महाममतारजनी। तम पुञ्ज दिवाकर तेज अनी

मनुजादकिरातनिपातकिये। मृगलोगकुभोगसरेनहिये
हितनाथअनाथनिपाहिहरे। विषयाबनपामरभूलिपरे।
बहुरोगवियोगन्हलोगह्यये। भवदंघ्रि निरादर के फल ये
भव सिन्धु अगाध परेनरते। पद पंकज प्रेम न जे करते
अतिदीनमलीनदुखीनितहीं। जिनके पदपंकज प्रीतिनहीं
अवलम्बभवन्तकथाजिनको। भवभीतिकदापिनहींतिनके
नहिंराग नरोषनमान मदा। तिनकेसम वैभववादि पदा
मुनित्यागतयोगभरोससदा। इहिते तवसेवक होतमुदा
करि प्रेम निरन्तरनेम लिये। पद पंकज सेवत शुद्ध हिये।
सम माननिरादरआदरही। सोइसन्तसुखीविचरन्त मही।
मुनिमानस पंकज भृंगभजे। रघुवीर महा रणा धीर अजे
तवनामजपामिनमामिहरी। भवरोग महामद मानअरी
गुणाशीलकृपापरमायतनं। प्रणामामिनिरन्तरश्रीरमनं
रघुनन्दनिकन्दनद्वन्द्व घनं। महिपालविलोकियदीनजनं दे

दो॰ बार बार वर मागौं हर्षि देहु श्री रंग ।
पद सरोज अनपावनी भक्ति सदा सतसंग॥
वररिाउमापतिरामगुणा हर्षि गयेकैलास।

तब प्रभु कपिन दिवाये सब विधि सुखप्रद वास १५

सुनखगपति यह कथा सुहावनि। त्रिविध ताप भवदोष नशावनि
महाराज कर शुभ अभिषेका। सुनत लहहिं नर विरति विवेका
जे सकाम नर सुनहिं जे गावहिं। सुख सम्पति नाना विधि पावहिं
सुर दुर्ल्लभ सुख करि जग माहीं। अन्त काल रघुपति पुर जाहीं
सुनहिं विमुक्त विरत अरु विषई। लहहिं भक्ति सुख सम्पति निजई
खगपति राम कथा मैं वरणी। सुमति विलास त्रास दुख हरणी
विरति विवेक भक्ति दृढ़ करणी। मोह नदी कहँ सुन्दर तरणी
नित नव मंगल कोशलपुरी। हर्षित रहहिं लोग सब कुरी
नित नव प्रीति राम पद पंकज। सेवत जेहि शंकर सुर मुनि अज।
मंगन बहु प्रकार पहिराये। द्विजन दान नाना विधि पाये।

दो० परमानन्द मगन कपि सब कहँ प्रभु पद प्रीति।
जात न जानेउँ दिवस निशि गये मास षट बीति १६

बिसरे गृह सपने सुधि नाहीं। जिमि पर द्रोह सन्त मन माहीं
तब रघुपति सब सखा बुलाये। आइ सबन्हि सादर शिर नाये।
प्रेम समेत निकट बैठारे। भक्त सुखद मृदु वचन उचारे।
तुम अति कीन्ह मोरि सेवकाई। मुख पर केहि विधि करौं बड़ाई

ताते मोहिं तुम अति प्रिय लागे। मम हित लागि भवन सुख त्यागे
अनुज राज सम्पति बैदेही। देह गेह परिवार सनेही।
सब मोहिं प्रिय नहिं तुमहिं समाना। मृषा न कहौं मोर यह बाना।
सब कहँ प्रिय सेवक यह नीती। मोरे अधिक दास पर प्रीती।

दो० अब गृह जाहु सखा सब भजहु मोहिं दृढ़ नेम।
सदा सर्व्वगत सर्व्व हित जानि करेहु अति प्रेम ९७

सुनि प्रभु वचन मगन सब भये। को हम कहाँ बिसरि तन गये।
इकटक रहे जोरि कर आगे। कहि न सकत कछु अति अनुरागे।
परम प्रीति तिन्ह कर प्रभु देखी। कहा बिबिध बिधि ज्ञान बिसेखी।
प्रभु सन्मुख कछु कहैं न पारहिं। पुनि पुनि चरन सरोज निहारहिं।
तब प्रभु भूषन बसन मँगाये। नाना रंग अनूप सुहाये।
सुग्रीवहिं प्रथमहिं पहिराये। भरत बसन निज हाथ बनाये।
प्रभु प्रेरित लछिमन पहिराये। लंकापति रघुपति मन भाये।
अंगद बैठि रहे नहिं डोले। प्रीति जानि प्रभु ताहि न बोले।

दो० जामवन्त नीलादि सब पहिराये रघुनाथ।
हिय धरि राम रूप सब चले नाइ पद माथ ॥

तब अंगद उठि नाइ सिर सजल नयन कर जोरि।

अति विनीत बोले वचन मनहुँ प्रेम रस बोरि १८

सुन सर्व्वज्ञ कृपा सुख सिन्धो। दीन दयाकर आरत बन्धो
मरती बार नाथ मोहिं बाली। गयो तुम्हारे पगतर घाली
अशरण शरण विरद सम्भारी। मोहिं जनि तजहु भक्त हितकारी
मोरे प्रभु तुम गुरु पितु माता। जाउँ कहाँ तजि पद जल जाता
तुमहिं विचारि कहहु नरनाहा। प्रभु तजि भवन काज मम काहा
बालक अबुध ज्ञान बल हीना। राखहु शरण जानि जन दीना
नीच टहल गृह की सब करिहौं। पद विलोकि भव सागर तरिहौं
अस कहिं चरण परे प्रभु पाहीं। अब जनि नाथ कहहु गृह जाहीं

दो० अंगद वचन विनीत सुनि रघुपति करुणा सींव।
प्रभु उठाय उर लायऊ सजल नयन राजीव ॥
निज उर माला वसन मणि बालितनय पहिराय।
विदा किये भगवान तब बहु प्रकार समुझाय १९

भरत अनुज सौमित्र समेता। पठवन चले भक्त कृत चेता
अंगद हृदय प्रेम नहिं थोरा। फिरि फिरि चितवत प्रभु की ओरा
बार बार करि दण्ड प्रणामा। मन अस रहन कहहिं मोहिं रामा
राम विलोकनि बोलनि चलनी। सुमिरि सुमिरि शोचत हँसि मिलनी

प्रभुरुखदेखि विनयबहुभारी। चलेहृदय पद पंकज धारी।
अतिआदरसबकपिपहुँचाये। भाइनसहितरामफिरि आये
तब सुग्रीव चरण गहि नाना। भाँति विनयकीन्हीं हनुमाना
दिनदशकरि रघुपतिपदसेवा। तबफिरिचरण देखिहौं देवा
पुराय पुञ्जतुम पवनकुमारा। सेवहु जाय कृपा आगारा
असकहिकपिपतिचलेतुरन्ता। अंगदकहेउ सुनहु हनुमन्ता।

दो० करेहु दण्डवत प्रभु सन तुमहिं कहौं कर जोरि।
बार बार रघुनायकहिं सुरति करायहु मोरि॥
असकहि चलेउ बालि सुतफिरि आयेहनुमन्त।
तासु प्रीति प्रभु सन कही मगन भये भगवन्त॥
कुलिशहु चाहकठोर अतिकोमलकुसुमहुचाहि
चितवगोशरघुनाथ असससुझिपरैकहुकाहि २०

पुनिकृपालुलियबोलिनिषादा। दीन्हेउ भूषण वसनप्रसादा।
जाहुभवनममसुमिरण करहू। मनक्रमवचनधर्म्मअनुसरहू।
तुममम सखाभरतसमभ्राता। सदा रहेउ पुर आवत जाता
वचनसुनतउपजा सुखभारी। परेउ चरण लोचन भरि वारी
चरण कमलउर धरि गृह आवा। प्रभुसुभावपरिजनहिंसुनावा

रघुपतिचरितदेखिपुरवासी।पुनिपुनिकहहिंधन्यसुखरासी
राम राज्य बैठे त्रय लोका।हर्षित भयउ गयउ सब शोका
वैर न कर काहू सन कोई।राम प्रताप विषमता खोई
दो० वर्णाश्रम निज निज धरम निरत वेदपथलोग
चलहिंसदापावहिंसुखहिंनहिंभयशोकनरोग २१
दैहिक दैविक भौतिक तापा।रामराज्य नहिं काहुहिं व्यापा
सब नर करहिं परस्पर प्रीती।चलहिंसुधर्म्मनिरतश्रुतिनीती
चारिउ चरण धर्म्म जगमाहीं।पूरि रहा सपनेहुँ अघ नाहीं
राम भक्ति रत नर अरु नारी।सकलपरम गतिके अधिकारी
अल्पमृत्युनहिंकवनिउपीरा।सबसुन्दरसबनिरुज शरीरा।
नहिंदरिद्रकोउदुखीन दीना।नहिंकोउ अबुधनलक्षणहीना
सबनिर्दम्भ धर्म्म रति धरणी।नर अरुनारि चतुरशुभकरणी
सबगुणज्ञ सब पण्डितज्ञानी।सबकृतज्ञ नहिंकपटसयानी
दो० रामराज्य विहँगेश सुन सचराचर जग माहिं।
कालकर्मस्वभावगुणाकृतदुखकाहुहिनाहिं २२
भुवन अनेक रोम प्रति जासू।यह प्रभुता कछु बहुत न तासू
सो महिमा समुझत प्रभुकेरी।यह वर्णत हीनता घनेरी।

यह महिमा खगेश जिन जानी। फिरि यह चरित तिन्हहुँ बखानी
सो जानेकर फल यह लीला। कहहिं महा मुनि सुमति सुशीला
राम राज्य कर सुख सम्पदा। वरनि न सकहिं फनीस शारदा
सब उदार सब पर उपकारी। द्विज सेवक सब नर अरु नारी
एक नारि व्रत रत नर भारी। ते मन वच क्रम पति हितकारी

दो० दण्ड यतिन कर भेद जहँ नर्त्तक नृत्य समाज।
जीतेउ जग मन सुनिय अस रामचन्द्र के राज २३

फूलहिं फलहिं सदा तरु कानन। रहहिं एक सँग गज पंचानन
खग मृग बैर सहज बिसराई। सबनि परस्पर प्रीति बढ़ाई
कूजहिं खग मृग नाना वृन्दा। अभय चरहिं बन करहिं अनन्दा
शीतल सुरभि पवन बह मन्दा। गुञ्जत अलि लै चलु मकरन्दा
लता विटप माँगे फल द्रवहीं। मन भावते धेनु पय स्रवहीं।
शशि सम्पन्न सदा रह धरणी। त्रेता भे सतयुग की करणी
प्रकटे गिरि नाना मणि खानी। जगदातमा भूप पहिचानी
सरिता सकल बहैं वर वारी। शीतल अमल स्वाद सुखकारी।
सागर निज मर्य्यादा रहहीं। डारहिं रत्न तटनि नर लहहीं।
सरसिज संकुल सकल तड़ागा। अतिप्रसन्न दश दिशा विभागा

दो० बिधु महि पूर पियूषन रबि तप तेज न काज ।
माँगे बारिद देहिं जल रामचन्द्र के राज २४

कोटिन्ह बाजिमेध प्रभु कीन्हा। अमित दान बिप्रन कहँ दीन्हा।
श्रुति पथ पालक धर्म धुरन्धर। गुनातीत अरु भोग पुरन्दर।
पति अनुकूल सदा रह सीता। शोभा खानि सुशील बिनीता
जानति कृपासिन्धु प्रभुताई। सेवति चरना कमल मन लाई
यद्यपि गृह सेवक सेवकीनी। सब प्रकार सेवा बिधि लीनी
निज कर गृह परिचर्य्या करहीं। रामचन्द्र आयसु अनुसरहीं
जेहि बिधि कृपासिन्धु सुख मानहिं। सोइ सिय सेवा बिधि उर आनहिं
कौशल्यादि सासु गृह माहीं। सेवहिं सबे मान मद नाहीं।
उमा रमा ब्रह्मादि बन्दिता। जगदम्बा सन्तत समानिता।

दो० जाकी कृपा कटाक्ष सुर चाहत चितवनि सोइ।
राम पदारबिन्द रत रहति स्वभाबहिं जोइ २५

सेवहिं सानुकूल सब भाई। राम चरना रत प्रीति सुहाई।
प्रभु पदकमल बिलोकत रहहीं। कबहिं कृपालु हमहिं कछु कहहीं
राम करहिं भ्रातन पर प्रीती। नाना भाँति सिखावहिं नीती
हर्षित रहहिं नगर के लोगा। करहिं सकल सुर दुर्लभ भोगा

अहनिशि विधिहिं मनावत रहहीं। श्रीरघुवीर चरण रति चहहीं
दुइ सुत सुन्दर सीता जाये। लव कुश वेद पुरानन गाये
दोउ बिजयी विनयी अति सुन्दर। हरि प्रतिबिम्ब मनहुँ गुण मन्दिर
दुइ दुइ सुत सब भ्रातन केरे। भये रूप गुण शील घनेरे

दो० ज्ञान गिरा गोतीत अज माया गुण गो पार।
सोइ सच्चिदानन्द घन करत चरित्र अपार २६

प्रातकाल सरयू करि मज्जन। बैठहिं सभा संग द्विज सज्जन
वेद पुराण वशिष्ठ बखानहिं। सुनहिं रामयद्यपि सब जानहिं।
अनुजन्ह सँयुत भोजन करहीं। देखि सकल जननी सुख भरहीं
भरत शत्रुहन दोनों भाई। सहित पवन सुत उपबन जाई
पूँछहिं बैठि राम गुण गाहा। कहहनुमान सुमति अवगाहा
सुनत विमल गुण अति सुख पावहिं। बहरि बहरि कै विनय सुनावहिं
सब के गृह गृह होय पुराना। राम चरित सुन्दर विधि नाना
नर अरु नारि राम गुण गानहिं। करहिं दिवस निशि जात न जानहिं

दो० अवध पुरी वासिन कर सुख सम्पदा समाज।
सहस शेष नहिं कहिं सकहिं जहँ नृप राम विराज २७

नारदादि सनकादि मुनीशा। दरशन लागि कोशला धीशा।

दिनप्रतिसकलअयोध्याआवहिं। देखिनगरविरागबिसरावहिं
रत्नजटितमणिकनकअटारी। नानारंग रुचिर गच ढारी
पुर चहुँ पास कोट अतिसुन्दर। रचे कँगूरा रंग रंग वर।
नव ग्रह सुन्दर निकर बनाई। मनहुँ घेरि अमरावति आई
महि बहुरूपरुचिरगचकाचा। जोविलोकि मुनिवरमननाचा
धवलधामऊपरनभचुम्बत। कलशमनहुँशशिरविद्युतिनिन्दत।
बहुमणिरचितझरोखनभ्राजैं। गृह गृह प्रतिमणिदीपविराजैं

छं० मणि दीप राजहिं भवन भ्राजहिं देहरी विद्रुम रची।
सुन्दरमनोहर मन्दिरायत अजिर अतिफटिकन खची
मणिखम्भभीतिविरंचिविरचितकनकमणिमरकतरचे
प्रति द्वार द्वार कपाट पुरट बनाय बहु वज्रन खचे ७

दो०-चारु चित्र शाला अमित गृह गृह रचे बनाइ।
रामधाम जोनिरखत मुनि मन लेत चुराइ २८

सुमन बाटिका सबहिं लगाई। विविधभाँतिकरियतनबनाई
लतालालित बहु भाँतिसुहाई। फूलहिं सदा वसन्त कि नाँई
गुञ्जत मधुकर मुखर मनोहर। मारुत त्रिविधसदा बह सोहर
नानाखगबालकन्हजिआये। बोलत मधुर उड़ात सुहाये।

मोर हंस सारस पारावत। भवनन्ह पर शोभा अति पावत।
जहँ तहँ देखहिं निज परिछाहीं। बहु विधि कूजहिं नृत्य कराहीं
सुक सारिका पढ़ावहिं बालक। कहहु राम रघुपति जन पालक
राज द्वार सब ही विधि चारू। बीथी चौहट रुचिर बजारू।

छं० बाजार रुचिर न बनै बरनत वस्तु बिनु गथ पाइये ।
जहँ भूप रमा निवास तहँ की सम्पदा किमि गाइये॥
बैठे बजाज़ सराफ़ बनिक अनेक मनहुँ कुबेर ते ।
सब सुखी सब सुचरित्र सुन्दर नर युवा शिशु जठर ते ८

दो० उत्तर दिशि सरयू बहै निर्म्मल जल गम्भीर।
बाँधे घाट मनोहर स्वल्प पंक नहिं तीर २९

दूर फराक रुचिर सो घाटा। जहँ जल पिवहिं वाजि गज ठाटा
पनिघट परम मनोहर नाना। तहाँ न पुरुष करहिं अस्नाना
राजघाट सब हीं विधि सुन्दर। मज्जहिं तहाँ बरन चारिउ नर
तीर तीर देवन कर मन्दिर। चहुँ दिशि तिन्ह के उपवन सुन्दर
कहुँ कहुँ सरिता तीर उदासी। बसहिं ज्ञानरत मुनि संन्यासी
जहँ तहँ तुलसी वृन्द सुहाये। बहु प्रकार सब मुनिन लगाये
पुर शोभा कछु बरनि न जाई। बाहर नगर परम रुचिराई

देखत पुरी अखिल अघ भागा। बन उपबन वापिका तड़ागा

छं० वापी तड़ाग अनूप कूप मनोहरायत सोहई ।
सोपान सुन्दर नीर निर्म्मल देखि सुर मुनि मोहई ॥
बहु रंग कञ्ज अनेक खग कूजहिं मधुप गुंजारहीं ।
आराम रम्य पिकादि खग रव मनहुँ पथिक हँकारहीं ॥

दो० रमा नाथ जहँ राजा सो पुर बरिणा न जाइ।
अरिणमादिक सुख सम्पदा रहीं अवध पुर छाइ ३०

जहँ तहँ नर रघुपति गुरा गावहिं। बैठि परस्पर इहै सिखावहिं
भजहु प्रणातप्रतिपालक रामहिं। शोभा शील रूप गुरा धामहिं
जलज विलोचन श्यामल गातहिं। पलक नयन इव सेवक त्रातहिं
धृत शर रुचिर चाप तूणीरहिं। सन्त कञ्ज बन रवि रणधीरहिं
काल कराल व्याल खग राजहिं। नमत राम अकाम ममताजेहिं
लोभ मोह मृगयूथ किरातहिं। मनसिज करि हरि जन सुखदातहिं
संशय शोक निबिड़ तम भानुहिं। दनुज गहन बन दहन कृशानुहिं
जनक सुता समेत रघुवीरहिं। कस न भजहु भञ्जन भव भीरहिं
बहु वासना मशक हिम राशिहिं। सदा एक रस अज अविनाशिहिं
मुनि रञ्जन भंजन महि भारहिं। तुलसिदास के प्रभुहि उदारहिं

दो० इहि विधि नगर नारि नर करहिं राम गुणगान।
सानुकूल सब पर रहत सब पर कृपा निधान ३१

जब ते राम प्रताप खगेशा। उदित भये अति प्रबल दिनेशा
पूरि प्रकाश रहेउ तिहुँ लोका। बहुतन सुख बहुतन मन शोका
जिनहिं शोक ते कहौं बखानी। प्रथम अविद्या निशा नसानी
अघ उलूक जहँ तहाँ लुकाने। काम क्रोध कैरव सकुचाने
विविध कर्म्म गुण काल सुभाऊ। ये चकोर सुख लहहिं न काऊ
मत्सर मान मोह मद चोरा। इन कहँ सुख नहिं कबनिहु ओरा
धर्म्म तड़ाग ज्ञान विज्ञाना। ये पंकज विकसे विधि नाना
सुख सन्तोष विराग विवेका। विगत शोक ये कोक अनेका

दो० यह प्रताप रवि जाहि के उर जब करै प्रकाश।
पाछिल बाढ़हिं प्रथम जे कहे ते पावहिं नाश ३२

भ्रातन सहित राम इकबारा। संग परम प्रिय पवन कुमारा
सुन्दर उपवन देखन गयऊ। सब तरु कुसुमित पल्लवनयऊ
जानि समय सनकादिक आये। तेज पुञ्ज गुण शील सुहाये।
ब्रह्मानन्द सदा लवलीना। देखत बालक बहुकालीना
रूप धरे जनु चारिउ वेदा। समदर्शी मुनि विगत विभेदा।

आशावसनव्यसननहिंतिनहीं। रघुपतिचरितहोयतहँसुनहीं
तहाँ रहे सनकादि भवानी। जहँ घटसम्भव मुनि वर ज्ञानी
रामकथामुनिबहुविधिवरणी। ज्ञानयोगपावकजिमिअरणी
दो० देखि राम मुनि आवत हर्षि दण्डवतकीन्ह।।
स्वागत पूँछी पीतपट प्रभु बैठन कहँ दीन्ह ३३
कीन्ह दण्डवत तीतिउ भाई। सहितपवनसुत सुखअधिकाई
मुनिरघुपतिछबिअतुलविलोकी। भयेमगनमनसकतनरोकी
श्यामल गात सरोरुहलोचन। सुन्दरता मन्दिर भव मोचन।
इकटकरहे निमेष न लावहिं। प्रभु कर जोरे शीश नवावहिं
तिन्हकीदशा देखि रघुवीरा। स्रवतनयनजलपुलक शरीरा।
कर गहि प्रभु मुनि वर बैठारे। परम मनोहर वचन उचारे।
आज धन्य मैं सुनहुमुनीशा। तुम्हरे दरशजाहि अघखीशा।
बड़े भाग्य पाइय सतसंगा। बिनहिं प्रयास होहिं भवभंगा
दो० सन्त पन्थ अपवर्ग कर कामी भव कर पन्थ।
कहहिंसन्तकविकोविदश्रुतिपुरणासद्ग्रन्थ ३४
सुनिप्रभुवचनहर्षिसुनिचारी। पुलकगात अस्तुति अनुसारी
जयभगवन्त अनन्त अनामय। अनघ अनेकएककरुणामय

अजनिर्गुणराजयजयगुणासागर।सुखनिधानतिहुँलोकउजागर
जयइन्दिरारमणाजयभूधर। अनुपमयशाअनादिशोभाकर
ज्ञाननिधानअमानमानप्रद। पावनसुयशपुराणावेदवद
अज्ञ ह्यतज्ञ अज्ञता भञ्जन। नाम अनेक अनाम निरञ्जन
सर्व्व सर्व्व गतसर्व्व उरालय। वसहुसदाहमकहँप्रतिपालय
ह्वन्दविपतिभवफन्दविभञ्जन।ह्रदवसरामकाममदगञ्जन

दो० परमानन्द ह्यपायतन तुम परिपूरण काम।
प्रेमभक्ति अनपावनी देहु हमहिं श्रीराम ३५

देहुभक्तिरघुपतिअनपावनि।त्रिविधतापभवदापनशावनि
प्रणातपाल सुरधेनु कल्पतरु। होइ प्रसन्न प्रभु दीजे यह वरु
भवपारीधिकुम्भजरघुनायक। सेवकसुलभसकलसुखदायक
मनसम्भव दारुणदुखदारक।दीनवन्धु समता विस्तारक।
आस त्रास ईर्षादि निवारक। विनयविवेकविरतिविस्तारक
भूपमौलिमणीमण्डनधरणी।देहु भक्ति संसृति सरितरणी
मुनिमनमानसहंसनिरन्तर। चरणाकमलवन्दितअजशंकर
रघुकुलकेतु सेतु श्रुतिरक्षक। कालकर्म्मसुभावगुणाभक्षक
तारण तरण हरण भवभूषण। तुलसिदास प्रभुत्रिभुवनभूषण

दो० बार बार स्तुति करि प्रेम सहित सिर नाय।
ब्रह्मभवन सनकादिगे अति अभीष्ट वर पाय ३६

सनकादिक विधि लोक सिधाये। भ्रातन राम चरण शिर नाये
पूँछत प्रभुहिं सकल सकुचाहीं। चितवहिं सब मारुतसुत पाहीं
सुनाचहहिं प्रभु मुख की बानी। जो सुनि होय सकल भ्रम हानी
अन्तरयामी प्रभु सब जाना। पूँछत कहहु कहा हनुमाना।
जोरि पाणि तब कह हनुमन्ता। सुनिये दीनबन्धु भगवन्ता।
नाथ भरत कछु पूँछन चहहीं। प्रश्न करत मन सकुचत अहहीं
तुम जानहुँ कपि मोर सुभाऊ। भरतहिं मोहिं न कछू दुराऊ।
सुनि प्रभु वचन भरत गह चरणा। सुनिय नाथ प्रणतारति हरणा।

दो० नाथ न मोहिं सन्देह कछु सपनेहुँ शोक न मोह।
केवल कृपा तुम्हारि प्रभु चिदानन्द सन्दोह ३७

करौं कृपानिधि एक ढिठाई। मैं सेवक तुम जन सुख दाई
सन्तन की महिमा रघुराई। बहु विधि वेद पुराणन्ह गाई।
श्री मुख पुनि तुम कीन्ह बड़ाई। तिन्ह पर प्रभुहिं प्रीति अधिकाई
सुनाचहौं प्रभु तिन कर लक्षणा। कृपासिन्धु गुणज्ञान विचक्षणा
सन्त असन्त भेद बिलगाई। प्रणतपाल मोहिं कहिय बुझाई

सन्तन के लक्षण सुनु भ्राता। अगनित श्रुति पुराण विख्याता
सन्त असन्तन की असकरणी। जिमि कुठार चन्दन आचरणी
काटे पर सुमलय सुनि भाई। निज गुण देइ सुगन्ध बसाई
दो० ताते सुर शीशन चढ़त जग वल्लभ श्री खण्ड।
अनल दाहि पीटत घनहि परसु वदन यह दण्ड ३८
विषय अलम्पट शील गुणाकर। पर दुख दुख सुख सुख देखे पर
सम मय भूति रिपु विमद विरागी। लोभा मर्ष हर्ष भय त्यागी
कोमल चित दीनन पर दाया। मन वच क्रम मम भक्त अमाया
विगत काम मम नाम परायन। शान्त विरक्त विदित मुदितायन
शीतलता सरलता मयत्री। द्विज पद प्रेम धर्म्म जनुयत्री।
यह सब लक्षण बसहिं जासु उर। जानेहु तात सन्त सन्तत फुर
शम दम नियम नीति नहिं डोलहिं। परुष वचन कबहूं नहिं बोलहिं
दो० निन्दा अस्तुति उभय सम ममता मम पद कंज।
ते सज्जन मम प्राणप्रिय गुण मन्दिर सुख पुंज ३९
सुनहु असन्तन केर सुभाऊ। भूलेहु संगति करिय न काऊ
तिनकर संग सदा दुखदाई। जिमि कपिलहि घालै हरहाई
खलन हृदय अति ताप विशेखी। जरहिं सदा पर सम्पति देखी

जहँ कहँ निन्दा सुनहिं पराई। हर्षहिं मनहुँ परी निधि पाई
काम क्रोध मद लोभ परायन। निर्दय कपटी कुटिल मलायन
वैर अकारण सब काहू सों। जो कर हित अनहित ताहू सों
झूठै लेना झूठै देना। झूठै भोजन झूठ चबेना
बोलहिं मधुर वचन जिमि मोरा। खाहिं महा अहि हृदय कठोरा
दो० पर द्रोही पर दार रत पर धन पर अपवाद।
ते नर पामर पाप मय देह धरे मनुजाद ४०
लोभै ओढ़न लोभै डासन। शिश्नोदर पर यमपुर त्रासन
काहू की जो सुनहिं बड़ाई। स्वास लेहिं जनु जूड़ी आई
जब काहू की देखहिं विपति। सुखी होहिं मानहुँ जगपति
स्वारथ रत परिवार विरोधी। लम्पट काम लोह अति क्रोधी
मातु पिता गुरु विप्र न मानहिं। आपु गये अरु घालहिं आनहिं
करहिं मोह वश द्रोह परावा। सतसंगति हरि भक्ति न भावा
अवगुण सिन्धु मन्द मति कामी। वेद विदूषक पर धन स्वामी।
विप्र द्रोह पर द्रोह विशेषी। दम्भ कपट जिय धरे सुवेषी
दो० ऐसे अधम मनुज खल कृतयुग त्रेता नाहिं।
द्वापर कछुक वृन्द बहु होइहैं कलियुग माहिं ४१

परहितसरिस धर्म्म नहिं भाई। पर पीड़ा सम नहिं अधमाई
निर्णय सकल पुराण वेद कर। कहेउँ तात जानहिं कोविद नर
नर शरीर धरि जो पर पीरा। करहिं ते सहहिं महा भवभीरा
करहिं मोह वश नर अघ नाना। स्वारथ रत परलोक नशाना
काल रूप मैं तिन कहँ ताता। शुभ अरु अशुभ कर्म फलदाता
अस विचारि जो परम सयाने। भजहिं मोहिं संसृति दुख जाने
त्यागहिं कर्म शुभाशुभ दायक। भजैं मोहिं सुर नर मुनि नायक
सन्त असन्तन के गुण भाखे। ते न परहिं भव जिन लखि राखे

दो० सुनहु तात माया कृत गुण अरु दोष अनेक।
गुण यह उभय न देखिये देखिय सो अविवेक ४२

श्री सुख वचन सुनत सब भाई। हर्ष प्रेम नहिं हृदय समाई।
करहिं विनय अति बारहिं बारा। हनूमान हिय हर्ष अपारा
पुनि रघुपति निज मन्दिर गये। इहि विधि चरित करत नित नये
बार बार नारद मुनि आवहिं। चरित पुनीत राम कर गावहिं
नित नव चरित देखि मुनि जाहीं। ब्रह्मलोक सब कथा कहाहीं
सुनि विरंचि अतिशय सुख माना। पुनि पुनि तात करहु गुण गाना
सनकादिक नारदहिं सराहहिं। यद्यपि ब्रह्म निरत मुनि आहहिं

सुनिगुणागानसमाधिविसारी। सादरसुनहिंपरम अधिकारी
दो॰ जीवनमुक्त ब्रह्म पर चरित सुनहिंतजिध्यान।
जेहरिकथानकरहिंरतितिनकेहृदयपषान४३
एक वार रघुनाथ बुलाये। गुरु द्विज पुरबासी सब आये
बैठे गुरु द्विज वरमुनिअज्ञन। बोले वचनभक्त भय भज्जन।
सुनहुसकलपुरजनममबानी। कहौं नकछु ममताउर आनी
नहिं अनीतिनहिंकछुप्रभुताई। सुनो करहु जो तुमहिंसुहाई
सोइसेवक प्रीतममम सोई। मम अनुशासन मानै जोई
जो अनीति कछु भाषौं भाई। तो मोहिं बरजेहुभय बिसराई
बड़े भाग्य मानुष तन पावा। सुरदुर्ल्लभ सद्ग्रन्थन गावा
साधन धाम मोक्ष कर द्वारा। पाइ न जेइं परलोक सँवारा
दो॰ सो परत्र दुख पावई शिर धुनि धुनि पछिताइ।
कालहिंकर्महिं ईश्वरहिंमिथ्या दोष लगाइ४४
इहि तनुकर फलविषयनभाई। स्वर्गहु स्वल्प अन्त दुखदाई
नर तनु पाइ विषय मन देहीं। पलटि सुधा ते शठ विष लेहीं
ताहि कबहुँ भलकहै नकोई। गुञ्जा गहे परस मणिखोई
आकर चारि लाख चौरासी। योनिभ्रमत यहजिय अविनासी

फिरत सदा माया के प्रेरे। काल कर्म्म स्वभाव गुण घेरे
कबहुक करि करुणा नर देही। देत ईश बिनु हेतु सनेही।
नर तन भव वारिधि कहँ बेरे। सन्मुख मरुत अनुग्रह मेरे
करणधार सद्गुरु दृढ़ नावा। दुर्लभ साज सुलभ करि पावा

दो० जो न तरै भवसागरहिं नर समाज अस पाय।
सो कृतनिन्दक मन्दमति आतमहन गति जाय ४५

जो परलोक इहाँ सुख चहहू। सुनि मम वचन हृदय दृढ़ गहहू
सुलभ सुखद यह मारग भाई। भक्ति मोरि पुराण श्रुति गाई
ज्ञान अगम प्रत्यूह अनेका। साधन कठिन न मन कहँ टेका
करत कष्ट बहु पावत कोई। भक्तिहीन प्रिय मोहिं न सोई
भक्ति स्वतन्त्र सकल सुख खानी। बिनु सतसंग न पावहिं प्रानी
पुण्य पुञ्ज बिनु मिलहिं न सन्ता। सतसंगति संसृति कर अन्ता
पुण्य एक जग महुँ नहिं दूजा। मन क्रम वचन विप्र पद पूजा।
सानुकूल तिहि पर सब देवा। जो तजि कपट करै द्विज सेवा

दो० अबरो एक गुप्त मत सबहिं कहौं कर जोरि।
शंकर भजन बिना नर भक्ति न पावै मोरि ४६

कहहु भक्ति पथ कवन प्रयासा। योग न मख जप तप उपवासा

सरल सुभाव न मन कुटिलाई। यथा लाभ सन्तोष सदाई।
मोर दास कहाइ नर आसा। करै तौ कहहु कहा विश्वासा
बहुत कहौं का कथा बड़ाई। इहि आचरण बश्य मैं भाई
बैर न विग्रह आश न त्रासा। सुखमय ताहि सदा सब आसा
अनारम्भ अनिकेत अमानी। अनघ अरोष दक्ष विज्ञानी।
प्रीति सदा सज्जन संसर्गा। तृणसम विषय स्वर्ग अपवर्गा
भक्ति पक्षता नहिं शठताई। दुष्ट कर्म्म सब दूरि विहाई।

दो० मम गुण ग्राम नाम रत गत ममता मद मोह।
ताकर सुख सोइ जाने परमानँद सन्दोह ४७

सुनत सुधा समवचन राम के। सबन्हि गहे पद कृपा धाम के
जननि जनक गुरु बन्धु हमारे। कृपा निधान प्राण ते प्यारे।
तन धन धाम राम हितकारी। सब विधि तुम प्रणतारतिहारी
असि सिख तुम बिनु देइ न कोऊ। मात पिता स्वारथ रत ओऊ
हेतु रहित सब विधि उपकारी। तुम तुम्हार सेवक असुरारी
स्वारथ मीत सकल जग माहीं। सपनेहुँ कोउ परमारथ नाहीं
सब के वचन प्रेम रस साने। सुनि रघुनाथ हृदय हर्षाने
निज निज गृह गे आयसु पाई। बरणत प्रभु की गिरा सुहाई

दो० उमा अवध वासी नर नारि कृतारथ रूप।
ब्रह्म सच्चिदानन्द घन रघुनायक जहँ भूप ४८

एक बार वशिष्ठ मुनि आये। जहाँ राम सुख धाम सुहाये
अति आदर रघुनायक कीन्हा। पद पखारि चरणोदक लीन्हा
राम सुनहु मुनि कहउँ कर जोरी। कृपासिन्धु विनती इक मोरी
देखि देखि आचरण तुम्हारा। होत मोह मम हृदय अपारा
महिमा अमित वेद नहिं जाना। मैं कोहि भाँति कहौं भगवाना
उपरोहिती कर्म अति मन्दा। वेद पुराण स्मृति करु निन्दा।
जब न लेउँ तबही विधि मोहीं। कहा लाभ आगे सुत तोहीं
परमातमा ब्रह्म नर रूपा। होइ हैं रघुकुल भूषण भूपा

दो० तब मैं हृदय विचार किय योग यज्ञ जप दान।
जेहि नित करिय सो पाइये धर्म न इहि सम आन ४९

जप तप नियम योग व्रत धर्म्मा। श्रुति सम्भव नाना विधि कर्म्मा
ज्ञान दया दम तीरथ मज्जन। जहँ लगि धर्म्म कहैं श्रुति सज्जन
आगम निगम पुराण अनेका। पढ़े सुने कर फल प्रभु एका
तव पद पंकज प्रीति निरन्तर। सब साधन कर फल यह सुन्दर
छूटै मल कि मलहि के धोये। घृत कि पाव कोउ वारि विलोये

प्रेम भक्ति जल बिनु रघुराई। अभ्यन्तर मल कबहुँ न जाई
सोइ सर्व्वज्ञ तज्ञ सोइ पण्डित। सोइ गुणाज्ञ विज्ञान अखण्डित
दक्ष सकल लक्षणा युत सोई। जाके पदसरोज रति होई।
दो॰ नाथ एक वर माँगौं मोहिं कृपा करि देहु।
जन्मजन्म प्रभु पदकमल कबहुँ घटै जनि नेहु ५०
अस कहि मुनि वशिष्ठ गृह आये। कृपासिन्धु के मन अति भाये
हनूमान भरतादिक भ्राता। संग लिये सेवक सुख दाता
पुनि कृपालु पुर बाहर गयऊ। गज रथ तुरँग मँगावत भयऊ
देखि कृपा करि सकल सराहे। दिये उचित जिन्ह जिन्ह जो चाहे
हरषा सकल श्रम प्रभु श्रम पाई। गये जहाँ शीतल अमराई।
भरत दीन निज वसन डसाई। बैठे प्रभु सेवहिं सब भाई
मारुत सुत मारुत तब करई। पुलकि गात लोचन जल भरई।
हनूमान सम को बड़ भागी। नहिं कोउ राम चरण अनुरागी
गिरिजा जासु प्रीति सेवकाई। बार बार प्रभु निज मुख गाई
दो॰ तेहि अवसर मुनि नारद आये कर तल वीन।
गावन लागे राम गुण कीरति सदा नवीन ५१
राम विलोके पंकज लोचन। कृपाविलोकनि शोच विमोचन

नील तामरस श्याम काम अरि। हृदय कञ्ज मकरन्द मधुप हरि
यातुधान बरूथ बल गञ्जन। मुनि सज्जन रञ्जन अघ भञ्जन
भूसुर शशि नव वृन्द बलाहक। अशरण शरण दीन जन गाहक
भुजबल विपुल भार महि खंडित। खर दूषण विराध वध पंडित
रावणारि सुख रूप भूपवर। जय दशरथ कुल कुमुद सुधाकर
सुयश पुराण विदित निगमागम। गावत सुर मुनि सन्त समागम
कारुणीक बाली मद खराडन। सब विधि कुशल कोशला मराडन
कलि मल मथन नाम ममताहन। तुलसिदास प्रभु पाहि प्रणातजन

दो० प्रेम सहित मुनि नारद बरणि राम गुण ग्राम।
सोभा सिन्धु हृदय धरि गये जहाँ विधि धाम ५२

गिरिजा सुनहु विशद यह कथा। मैं सब कही मोरि मति यथा।
राम चरित शत कोटि अपारा। श्रुति शारदा न बरणौ पारा।
राम अनन्त अनन्त गुणानी। जन्म कर्म्म अनन्त नामानी
जल शीकर महि रज गनि जाहीं। रघुपति चरित न बरणि सिराहीं
विमल कथा यह हरि पद दायिनि। भक्ति होइ सुनि अति अनपायिनि
उमा कहेउँ सो कथा सुहाई। जो भुशुण्डि खगपतिहिं सुनाई
कछुक राम गुण कहेउँ बखानी। अब का कहौं सो कहहु भवानी

सुनि शुभ कथा उमा हरषानी। बोली अति विनीत मृदु बानी
धन्य धन्य मैं धन्य पुरारी। सुनेउँ राम गुण भव भय हारी
दो० तुम्हरी कृपा कृपायतन अब कृतकृत्य न मोह।
जानेउँ राम प्रभाव प्रभु चिदानन्द सन्दोह ॥
नाथ तवानन शशि स्रवत कथा सुधा रघुवीर।
श्रवण पुटन मन पान करि नहिं अघात मति धीर ५३
राम चरित जे सुनत अघाहीं। रस विशेष जाना तिन नाहीं
जीवन मुक्त महा मुनि जेऊ। हरि गुण सुनत अघात न तेऊ
भव सागर चह पार जो पावा। राम कथा ता कहँ दृढ़ नावा
विषयिन कहँ पुनि हरि गुण ग्रामा। श्रवण सुखद अरु मन विश्रामा
श्रवणावन्त अस को जग माहीं। जाहि न रघुपति कथा सुहाहीं
ते जड़ जीव निजात्म घाती। जिन्हहिं न रघुपति कथा सुहाती
हरि चरित्र मानस तुम गावा। सुनि मैं नाथ परम सुख पावा
तुम जो कही यह कथा सुहाई। काक भुशुण्डि गरुड़ प्रति गाई
दो० बिरति ज्ञान विज्ञान दृढ़ राम चरण अति नेह।
बायस तनु रघुपति भगति मोहिं परम सन्देह ५४
नर सहस्र महँ सुनहु पुरारी। कोउ इक होइ धर्म्म व्रत धारी।

धर्म्म शील कोटिन महँ कोई। विषय विमुख विराग रत होई
कोटि विरक्त मध्य श्रुति कहई। सम्यक ज्ञान सकृत कोउ लहई
ज्ञानवन्त कोटिन महँ कोई। जीवनमुक्त सकृत फल सोई
तिन सहस्र महँ सब सुख खानी। दुर्लभ ब्रह्म लीन विज्ञानी
सब ते सो दुर्लभ सुर राया। राम भक्ति रत गत मद माया
सो हरि भक्ति काक किमि पाई। विश्वनाथ मोहिं कहहु बुझाई

दो० राम परायण ज्ञान रत गुणागार मति धीर।
नाथ कहहु केहि कारण पायउ काक शरीर ५५

यह प्रभु चरित पवित्र सुहावा। कहहु कृपालु काक किमि पावा
तुम केहि भाँति सुना मदनारी। कहहु मोहिं यह कौतुक भारी।
गरुड़ महा ज्ञानी गुण रासी। हरि सेवक अति निकट निवासी
सो केहि हेतु काक सन जाई। सुनी कथा मुनि निकर बिहाई
कहहु कवनि विधि भा सम्बादा। दोउ हरि भक्त काक उरगादा
गौरि गिरा सुनि सरल सुहाई। बोले शिव सादर सुख पाई।
धन्य सती पावनि मति तोरी। रघुपति चरण प्रीति नहिं थोरी
सुनहु परम पुनीत इतिहासा। जो सुनि होइ सकल भ्रम नासा
उपजहिं राम चरण विश्वासा। भव निधि तर नर बिनहिं प्रयासा

दो० ऐसिय प्रश्न विहंग पति कीन्ह काक सन जाइ।
सो सब सादर कहत हौं सुनहु उमा चित लाइ ५६

मैं जिमि कथा सुनी भव मोचनि। सो प्रसंग सुनु सुमुखि सुलोचनि
प्रथम दक्ष गृह तव अवतारा। सती नाम तब रहा तुम्हारा
दक्ष यज्ञ मम भा अपमाना। तुम अति क्रोध तजा तहँ प्राना
मम अनुचरन कीन्ह मख भंगा। जानहु तुम सो सकल प्रसंगा
तब अति शोच भयउ मन मोरे। दुखित भयउ वियोग प्रिय तोरे
सुन्दर गिरि बन सरित तड़ागा। कौतुक देखत फिरौं बिभागा
गिरि सुमेरु उत्तर दिशि दूरी। नील शैल इक सुन्दर भूरी।
तासु कनक मय शिखर सुहाये। चारि चारु मोरे मन भाये
तेहि पर इक इक बिटप बिशाला। बट पीपर पाकरी रसाला
शैलोपरि सुन्दर सर सोहा। मणि सोपान देखि मन मोहा

दो० शीतल अमल मधुर जल जलज बिपुल बहुरंग।
कूजत कलरव हंस गण गुञ्जत नाना भृंग ५७

तेहि गिरि रुचिर बसै खग सोई। तासु नाश कल्पान्त न होई
माया कृत गुण दोष अनेका। मोह मनज आदिक अविवेका।
रहे व्यापि समस्त जग माहीं। तेहि गिरि निकट कबहुँ नहिं जाहीं

तहँ बसि हरिहि भजै जिमि कागा। सो सुनु उमा सहित अनुरागा
पीपर तरु तर ध्यान सो धरई। जाप यज्ञ पाकर तर करई
अम्ब छाँह करि मानस पूजा। तजि हरि भजन काज नहिं दूजा
बट तर कह हरि कथा प्रसंगा। आवहिं सुनन अनेक बिहंगा
राम चरित बिचित्र बिधि नाना। प्रेम सहित करु सादर गाना
सुनहिं सकल मति बिमल मराला। बसहिं निरन्तर जोजेहि काला
जब मैं जाइ सो कौतुक देखा। उर उपजा आनन्द बिसेखा
दो० तब कछु काल मराल तनु धरि तहँ कीन्ह निवास।
सादर सुनि रघुपति चरित पुनि आयउँ कैलास ५८
गिरिजा कहेउँ सो सब इतिहासा। मैं जेहि समय गयउँ खगपासा
अब सो कथा सुनहु जेहि हेतू। गयउ काग पहँ खग कुल केतू
जब रघुनाथ कीन्ह रन क्रीड़ा। सहुमत चरित होत मोहि ब्रीड़ा
इन्द्रजीत कर आपु बँधावा। तब नारद मुनि गरुड़ पठावा
बन्धन काटि गयउ उरगादा। उपजा हृदय प्रचंड बिषादा
प्रभु बन्धन समुझत बहु भाँती। करत बिचार उरग आराती
व्यापक ब्रह्म बिरज बागीशा। माया मोह पार परमीशा।
सो अवतार सुनेउँ जग माहीं। देखेउँ सो प्रभाव कछु नाहीं

दो० भव बन्धन ते छूटहिं नर जपि जाकर नाम।
खर्ब निशाचर बाँधेउ नाग फाँस सोइ राम ५९

नानाभाँति मनहिं समुझावा। प्रगट न ज्ञानहृदय भ्रम छावा
खेद खिन्न मन तर्क बढ़ाई। भयउ मोह वश तुम्हरी नाई।
व्याकुल गयउ देवऋषि पाहीं। कहेसि जो संशय निजमन माहीं।
सुनि नारदहि लागि अति दाया। सुनु खग प्रबल राम की माया
जो ज्ञानिन्ह कर चित अपहरई। बरिआई विमोह वश करई
जेइँ बहु बार नचावा मोहीं। सो व्यापेउ विहंग पति तोहीं
महा मोह उपजा मन तोरे। मिटहि न बेगि कहे खग मोरे
चतुरानन पहँ जाहु खगेशा। सोइ करेहु जो होइ निदेशा।

दो० असकहि चले देवऋषि करत राम गुणगान।
हरिमाया बल वरणात पुनि पुनि परम सुजान ६०

तब खगपति विरञ्चि पहँ गयऊ। निज सन्देह सुनावत भयऊ
सुनि विरञ्चि रामहिं शिर नावा। समुझि प्रताप प्रेम उर छावा
मन महँ करहिं विचार विधाता। माया वश कवि कोविद ज्ञाता
हरि माया कर अमित प्रभावा। विपुल वार जो मोहिं नचावा
अगजगमय सब मम उपराजा। नहिं आश्चर्य्य मोह खगराजा

पुनि बोले विधि गिरा सुहाई। जानु महेश राम प्रभुताई
वैनतेय शंकर पहँ जाहू। तात अनत पूँछहु जनि काहू
तहाँ होइ तव संशय हानी। चला विहँगपति सुनि विधि बानी
दो० परमातुर विहंगपति तब आयउ मम पास।
जात रहेउँ कुबेर गृह उमा रहेउँ कैलास ६१
तेइ मम पद सादर शिर नावा। पुनि आपन सन्देह सुनावा
सुनि ताकरि विनीत मृदुबानी। प्रेम सहित मैं कहेउँ भवानी
मिलेउ गरुड़ मारग महँ मोही। कवन भाँति समझावौं तोही
जब कछु कालकरिय सतसंगा। तब यह होइ मोह भ्रम भंगा
सुनिय तहाँ हरि कथा सुहाई। नाना भाँति सुनिन जो गाई।
जेहि महँ आदि मध्य अवसाना। प्रभु प्रतिपाद्य रामभगवाना
नितिहरिकथा होइ जहँ भाई। पठवौं तोहिं सुनहु तहँ जाई
जाइहि सुनत सकल सन्देहा। होइहि रामचरण दृढ़ नेहा।
दो० बिनु सतसंग न हरिकथा तेहि बिनु मोह न भाग।
मोह गये बिनु राम पद होइ न दृढ़ अनुराग ६२
मिलहिं न रघुपति बिनु अनुरागा। किये योग जप ज्ञान विरागा
उत्तर दिशि सुन्दर गिरि नीला। तहँ रह काग भुशुण्डि सुशीला

राम भक्ति पथ परम प्रवीना। ज्ञानी गुण गृह बहु कालीना
राम कथा सोइ कहै निरन्तर। सादर सुनहिं विविध विहंगवर
जाइ सुनइ तहँ हरि गुण भूरी। होइहि मोह जनित दुख दूरी
मैं जब सब तेहि कहा बुझाई। चलेउ हर्षि मम पद शिर नाई
ताते उमा न मैं समुझावा। रघुपति कृपा मर्म्म सब पावा
होइहि कीन्ह कबहुँ अभिमाना। सो खोवै चह कृपानिधाना
कछु तेहि ते पुनि बीचन राखा। खग जानै खगही की भाखा
प्रभु माया बलवन्त भवानी। जाहि न मोह कवन अस ज्ञानी

दो० ज्ञानी भक्त शिरोमणि त्रिभुवन पति कर जान।
ताहि मोह माया प्रबल पामर करहिं गुमान॥
शिव विरञ्चि कहँ मोहई को है बपुरा आन।
अस जिय जानि भजहिं मुनि माया पति भगवान ६३

मयउ गरुड़ जहँ बसै भुशुराडी। मति अकुराठ हरि भक्त अखराडी
देखि शैल प्रसन्न मन भयऊ। माया मोह शोक भ्रम गयऊ
करि तड़ाग मज्जन जल पाना। बट तर गयउ हृदय हरषाना
वृन्द वृन्द विहंग तहँ आये। सुनै राम के चरित सुहाये
कथा अरम्भ करै सो चाहा। ताही समय गयउ खगनाहा

आवत देखि सकल खगराजा। हर्येउ वायस सहित समाजा
अति आदर खगपति कर कीन्हा। स्वागत पूँछि सुआसन दीन्हा
करि पूजा समेत अनुरागा। मधुर वचन बोले तब कागा
दो० नाथ कृतारथ भयउँ मैं तव दरसन खगराज।
आयसु होय सो करौं अब प्रभु आयहु केहि काज
सदा कृतारथ रूप तुम कह मृदु वचन खगेश।
जाकी अस्तुति सादर निज मुख कीन्ह महेश ६४
सुनहु तात जेहि कारण आयउँ। सो सब भयउ दरश तव पायउँ
देखि परम पावन तव आश्रम। गयउ मोह संशय नाना भ्रम
अब श्रीराम कथा अति पावनि। सदा सुखद दुख पुंज नशावनि
सादर तात सुनावहु मोहीं। बार बार विनवौं प्रभु तोहीं।
सुनत गरुड़ की गिरा विनीता। सरल सप्रेम सुखद सुपुनीता
भयउ तासु मन परम उछाहा। कहै लाग रघुपति गुण गाहा
प्रथमहि अति अनुराग भवानी। रामचरित सब कहेसि बखानी
पुनि नारद कर मोह अपारा। कहेसि बहरि रावण अवतारा
प्रभु अवतार कथा पुनि गाई। पुनि शिशु चरित कहेसि मन लाई
दो० बाल चरित कहि विविध विधि मन महँ परम उछाह।

ऋषि आगमन कहेसि पुनि श्रीरघुवीर विवाह ६५

बहुरि राम अभिषेक प्रसंगा। पुनि नृपमरण राज रस भंगा।
पुरवासिन कर विरह विषादा। कहेसि रामलक्ष्मण सम्बादा।
विपिन गमन केवट अनुरागा। सुरसरि उतरि निवास प्रयागा।
वालमीकि प्रभु मिलन बखाना। चित्रकूट जिमि बस भगवाना।
सचिवागमन नगर नृपमरणा। भरतागमन प्रेम अतिवरणा।
करि नृप क्रिया संग पुरवासी। भरत गये जहँ प्रभु सुखरासी
पुनि रघुपति बहु विधि समुझाये। लै पादुका अवध फिरि आये
भरत रहनि सुरपति सुत करणी। प्रभु अरु अत्रि भेंट पुनि वरणी

दो० कहि विराध वध जाहि विधि देह तजी शरभंग।
बरणि सुतीक्ष्ण प्रेम पुनि प्रभु अगस्त्य सत संग ६६

कहि दण्डक बन पावनताई। गृध्र मयत्री पुनि तेहँ गाई।
पुनि प्रभु पञ्चबटी कृत वासा। भंजेउ सकल मुनिन्ह कर त्रासा
पुनि लक्ष्मण उपदेश अनूपा। सूर्पणखा जिमि कीन्ह कुरूपा
खर दूषण वध बहुरि बखाना। जिमि सब मर्म दशानन जाना।
दशकन्धर मारीच बत कही। जेहि विधि भई सकल तेहँ कही
पुनि माया सीता कर हरणा। श्री रघुवीर विरह कछु वरणा

पुनि प्रभु गृद्ध क्रिया जिमि कीन्ही। बधि कबन्ध सबरिहिं गति दीन्ही
बहुरि बिरह बरनात रघुबीरा। जेहि बिधि गयउ सरोबर तीरा।

दो० प्रभु नारद सम्बाद कहि मारुत मिलन प्रसंग।
पुनि सुग्रीव मिताई बालि प्रान कर भंग॥
कपिहिं तिलक करि प्रभु कृत सैल प्रबर्षन बास
बरनत बर्षा सरद ऋतु राम रोष कपि त्रास ६७

जेहि बिधि कपि पति कीस पठाये। सीता खोज सकल दिसि धाये
बिबर प्रबेश कीन्ह जेहि भाँती। कपिन्ह बहोरि मिला सम्पाती
सुनि सब कथा समीर कुमारा। लाँघत भयउ पयोधि अपारा
लंका कपि प्रबेश जिमि कीन्हा। पुनि सीतहिं धीरज जिमि दीन्हा
बन उजारि रावनहिं प्रबोधी। पुर दहि लाँघेउ बहुरि पयोधी
आये कपि सब जहँ रघुराई। बैदेही कै कुसल सुनाई।
सेन समेत यथा रघुबीरा। उतरे जाइ बारि निधि तीरा
मिला बिभीषन जेहि बिधि आई। सागर निग्रह कथा सुनाई

दो० सेतु बाँधि कपि सेन जिमि उतरे सागर पार।
गयो बसीठी बीर बर जेहि बिधि बालिकुमार॥
निसिचर कीस लराई बरनेसि बिबिध प्रकार।

कुम्भकर्ण घननाद कर बल पौरुष संहार ६८

निशिचर निकर मरण बिधि नाना। रघुपति रावण समर बखाना
रावण वध मन्दोदरि शोका। राज्य विभीषण देव अशोका
सीता रघुपति मिलन बहोरी। सुरन्ह कीन्ह अस्तुति कर जोरी
पुनि पुष्पक चढ़ि सीय समेता। अवध चले प्रभु कृपा निकेता
जेहि विधि राम नगर निय आये। बायस विशद चरित सब गाये
कहेसि बहोरि राम अभिषेका। पुर बर्नन नृप नीति अनेका
कथा समस्त भुशुण्डि बखानी। जो मैं तुम सन कहा भवानी
सुनि शुभ राम कथा खगनाहा। विगत मोह मन परम उछाहा

सो० गयउ मोर सन्देह सुनेउँ सकल रघुपति चरित।
भयउ राम पद नेह तव प्रसाद वायस तिलक॥

मोहिं भयउ अति मोह प्रभु बन्धन रण महँ निरखि
चिदानन्द सन्दोह राम विकल कारण कवन २

देखि चरित अति नर अनुहारी। भयउ हृदय मम संशय भारी
सो भ्रम अब मैं हित करि जाना। कीन्ह अनुग्रह कृपा निधाना
जो अति आतप व्याकुल होई। तरु छाया सुख जानै सोई
जो नहिं होत मोह अति मोही। मिलतेउँ तात कवनि विधि तोही

सुनतेउँ किमि हरि कथा सुहाई। अति विचित्र सब विधि तुम गाई।
निगमागम पुराण मत एहा। कहहिं सिद्ध मुनि नहिं सन्देहा।
सन्त विशुद्ध मिलहिं पुनि तेही। चितवहिं राम कृपा करि जेही।
राम कृपा तव दरशन भयऊ। तव प्रसाद मम संशय गयऊ।

दो॰ सुनि विहंग पति वाणी सहित विनय अनुराग।
पुलक गात लोचन सजल मन हर्षे अति काग॥
श्रोता सुमति सुशील अति कथा रसिक हरि दास।
पाइउ नाथ गोप्य मत सज्जन करहिं प्रकास॥

बोलेउ काग सुनहु बड़भागी। नभग नाथ पर प्रीति न त्यागी।
सब विधि नाथ पूज्य तुम मेरे। कृपा पात्र रघुनायक केरे।
तुमहिं न संशय मोह न माया। मो पर नाथ कीन्हि तुम दाया।
पठै मोह मिस खगपति तोहीं। रघुपति दीन्हि बड़ाई मोहीं।
तुम निज मोह कहा खगसाईं। सो नहिं कछु आश्चर्य्य गुसाईं।
नारद शिव विरञ्चि सनकादी। जो मुनि नायक आतमवादी।
मोह न अन्ध कीन्ह केहि केही। को जग काम नचावन जेही।
तृष्णा केहि न कीन्ह बौराहा। केहि के हृदय क्रोध नहिं दाहा।

दो॰ ज्ञानी तापस शूर कवि कोविद गुण आगार

केहिकेलोभबिडम्बनाकीन्हनइहिसंसार॥
श्रीमदवक्रनकीन्हकेहिप्रभुतावधिरनकाहि
मृगनयनीकेनयनशरकोअसलागनजाहि७०

गुराकृत सन्निपातनहिंकेही। कोन मान मदव्यापेउजेही
यौवनज्वरकेहिनाहिंबलगावा। ममताकेहिकरयशाननशावा
मत्सरकाहिकलंकनलावा। काहिन शोकसमीरडोलावा
चिन्तासाँपिनिकाहिनखाया। कोजगजाहिनव्यापीमाया
कीटमनोरथदारुशरीरा। जेहिनलागघुनकोअसधीरा।
सुतवितनारिईषणात्तीनी। केहिकीमतिइन्हकृतनमलीनी
यहसबमायाकृतपरिवारा। प्रबल अमितकोवरणौपारा
शिव चतुरानन देखि डेराहीं। अपर जीव केहि लेखे माहीं

दो० व्यापिरह्योसंसारमहँमायाकटकप्रचराड।
सेनापतिकामादिभटदम्भकपटपारखराड॥
सोदासीरघुवीरकीसमुझेमिथ्यासोपि।
छुटैनरामकृपाबिनुनाथकहौंपरारोपि ७१

सोमायासबजगहिंनचावा। जासुचरितलखिकाहुनपावा
सोप्रभुभ्रूविलासखगराजा। नाचनटीइवसहितसमाजा

व्यापक ब्रह्म अखण्ड अनंता। अखिल अमोघ रूक भगवंता
सोइ सच्चिदानन्द घन श्यामा। अज विज्ञान रूप गुण धामा
अगुण अदम्भ गिरा गोतीता। सम दरशी अनवद्य अजीता
निर्गुण निराकार निर्मोहा। नित्य निरञ्जन सुख सन्दोहा
प्रकृति पार प्रभु सब उर वासी। ब्रह्म निरीह विरज अविनाशी
इहाँ मोह कर कारण नाहीं। रवि सन्मुख तम कबहुँ न जाहीं

दो० भक्त हेतु भगवान प्रभु राम धरेउ तनु भूप।
किये चरित पावन परम प्राकृत नर अनुरूप॥
यथा अनेक वेष धरि नृत्य करै नट कोय।
जोइ सोइ भाव देखावै आपुन होइ न सोय ७२

अस रघुपति लीला उरगारी। दनुज विमोहन जन सुख कारी
जे गति मलिन विषय वश कामी। प्रभु पर मोह धरहिं इमि स्वामी
नयन दोष जा कहँ जब होई। पीत वरण शशि कहँ कह सोई
जब जेहि दिग भ्रम होइ खगेशा। सो कह पश्चिम उगेउ दिनेशा
नौका रूढ़ चलत जग देखा। अचल मोह वश आपुहि लेखा
बालक भ्रमहिं न भ्रमहिं गृहादी। कहहिं परस्पर मिथ्यावादी
हरि विषयिक अस मोह विहंगा। सपनेहुँ नहिं अज्ञान प्रसंगा

मायापति मति मन्द अभागी। हृदय जमनिका बहु विधि लागी
ते शठ हठ वश संशय करहीं। निज अज्ञान राम पर धरहीं
दो० काम क्रोध मद लोभ रत गृहासक्त दुख रूप।
ते किमि जानहिं रघुपतिहि मूढ़ परे तम कूप
निर्गुण रूप सुलभ अति सगुण न जानै कोइ।
सुगम अगम नाना चरित सुनि मुनि मन भ्रम होइ ७३
सुनु खगपति रघुपति प्रभुताई। कहौं यथा मति कथा सुहाई
जेहि विधि मोह भयो प्रभु मोही। सो सब चरित सुनावौं तोही
राम कृपा भाजन तुम ताता। हरि गुण प्रीति मोहिं सुख दाता
ताते नहिं कछु तुमहिं दुरावौं। परम रहस्य मनोहर गावौं।
सुनहु राम कर सहज सुभाऊ। जन अभिमान न राखहिं काऊ
संसृति मूल शूल प्रद नाना। सकल शोक दायक अभिमाना
ताते करहिं कृपानिधि दूरी। सेवक पर ममता अति भूरी
जिमि शिशु तनु ब्रण होइ गुसाईं। मातु चिराव कठिन की नाईं
दो० तदपि प्रथम दुख पावै रोवै बाल अधीर ।
व्याधि नाश हित जननी गनै न सो शिशु पीर॥
तिमि रघुपति निज दास कर हरहिं मान हित लागि

तुलसिदास एहि सेइ प्रभुहिं कस न भजहु भ्रम त्यागि ७४

राम कृपा आपनि जड़ताई। कहौं खगेश सुनहु मन लाई
जब जब राम मनुज तनु धरहीं। भक्त हेतु लीला बहु करहीं
तब तब अवध पुरी मैं जाऊं। शिशु लीला विलोकि हर्षाऊं
जन्म महोत्सव देखौं जाई। वर्ष पाँच तहँ रहौं लुभाई
इष्ट देव मम बालक रामा। शोभा वपुष कोटि शत कामा
निज प्रभु वदन निहारि निहारी। लोचन सुफल करौं उरगारी
लघु वायस वपु धरि हरि संगा। देखौं बाल चरित बहु रंगा

दो॰ लरिकाईं जहँ जहँ फिरहिं तहँ तहँ संग उड़ाउँ।
जूठन परै अजिर महँ सो उठाय पुनि खाउँ॥
एक बार अतिशय सब चरित कीन्ह रघुवीर।
सुमिरत प्रभु लीला सोइ पुलकित भयउ शरीर ७५

कहै भुशुण्डि सुनहु खगनायक। राम चरित सेवक सुखदायक
नृप मन्दिर सुन्दर सब भाँती। खचित कनक मणि नाना जाती
बरणि न जाय रुचिर अँगनाई। जहँ खेलहिं नित चारों भाई
बाल विनोद करत रघुराई। विचरत अजिर जननि सुख दाई।
मरकत मृदुल कलेवर श्यामा। अंग अंग प्रति छवि बहु कामा

नवराजीव अरुणा मृदुचरणा। पदपंकज नखमणि द्युतिहरणा।
ललित अंग कुलिशादिक चारी। नूपुर चारु मधुर रव कारी।
चारुपुरट मणिरचित बनाई। कटिकिंकिणी कल मुखर सुहाई।
दो० रेखा त्रय सुन्दर उदर नाभि रुचिर गम्भीर।
उर आयत भ्राजत विविध बालविभूषण चीर ७६
अरुणा पाणि नखकर ज मनोहर। बाहु विशाल विभूषण सोहर।
कन्धबाल केहरि दर ग्रीवा। चारु चिबुक आनन छबि सींवा।
कलबल वचन अधर अरुणारे। दुइदुइ दशन विशद वर बारे।
ललितकपोल मनोहर नासा। सकल सुरद शशिकर सम हासा।
नीलकञ्ज लोचन भयमोचन। भ्राजत भाल तिलक गोरोचन।
विकट भृकुटि सम श्रवण सुहाये। कुंचित कच मेचक छबि छाये।
पीत झीन झींगुलि तनसोही। किलकनि चितवनि भावत मोही।
रूप राशि नृप अजिर विहारी। नाचहिं निज प्रतिबिम्ब निहारी।
मोसन करहिं विविध विधि क्रीड़ा। बरणत चरित होत मन ब्रीड़ा।
किलकत मोहिं धरन जब धावहिं। चलौं भाजि तब पूप देखावहिं।
दो० आवत निकट हँसहिं प्रभु भाजत रुदन कराहिं।
जाउँ समीप गहन पद फिरि फिरि चितै पराहिं॥

प्राकृत शिशु इव लीला देखि भयउ मोहिं मोह।
कवन चरित्र करत प्रभु चिदानन्द सन्दोह ७७

इतना मन आनत खगराया। रघुपति प्रेरित व्यापी माया
सो माया न दुखद मोहिं काहीं। आन जीव इव संसृति नाहीं
नाथ इहाँ कछु कारण आना। सुनहु सो सावधान हरियाना।
ज्ञान अखण्ड एक सीतावर। माया वश्य जीव सचराचर।
जो सब के रह ज्ञान एकरस। ईश्वर जीवहि भेद कहहु कस
माया वश्य जीव अभिमानी। ईश वश्य माया गुणखानी
पर वश जीव स्ववश भगवन्ता। जीव अनेक एक श्री कन्ता
दुविधा भेद आपी कृत माया। बिनु हरि जाइ न कोटि उपाया

दो० रामचन्द्र के भजन बिनु जो चह पद निर्वाण।
ज्ञानवन्त अति सोपि नर पशु बिनु पूँछ विषाण

राका शशि षोड़श उगहिं तारा गण समुदाय।
सकल गिरिन दवलाइये रवि बिनु राति न जाय ७८

ऐसे बिनु हरि भजन खगेशा। मिटै न जीवन केर कलेशा।
प्रभु सेवक कहि न व्यापि अविद्या। प्रभु प्रेरित तेहि व्यापै विद्या
ताते नाश न होइ दास कर। भेद भक्ति बाढ़ै विहंग वर।

भ्रम ते चकित राम मोहिं देखा। बिहँसे सो सुनु चरित बिसेखा
तेहि कौतुक करि मर्म न काहू। जाना अनुज न मात पिताहू।
जानुपाणि धाये मोहिं धरणा। श्यामल गात अरुण कर चरणा।
तब मैं भागि चलेउँ उर गारी। राम गहन कहँ भुजा पसारी।
जिमि जिमि दूरि उड़ाउँ अकासा। तिमि तिमि भुज देखौं निज पासा।

दो० ब्रह्मलोक लौं गयउँ मैं चितवत पाछे उड़ात।
जुग अंगुल कर बीच रहु राम भुजहिं मोहिं तात
सप्तावरणा भेद करि जहँ लगि गति मोरि
गयउँ तहाँ प्रभु भुज निरखि ब्याकुल भयउँ बहोरि १९

मूदेउँ नयन त्रसित जब भयऊँ। पुनि चितवत कोशलपुर गयऊँ
मोहिं विलोकि राम मुसकाहीं। बिहँस तुरत गयउँ मुख माहीं
उदर माझ सुनु अण्डजराया। देखेउँ बहु ब्रह्माण्ड निकाया
अति विचित्र तहँ लोक अनेका। रचना अमित एक ते एका।
कोटिन चतुरानन गौरीशा। अगणित उडुगण रविरजनीशा
अगणित लोकपाल यमकाला। अगणित भूधर भूमि विशाला
सागर सरिता विपिन अपारा। नाना भाँति सृष्टि विस्तारा
सुर मुनि सिद्ध नाग नर किन्नर। चारि प्रकार जीव सचराचर।

दो० जो नहिं देखा नहिं सुना जो मन महँ न समाइ।
अस अद्भुत तहँ देखेउँ वरणि कवनि विधि जाइ
एक एक ब्रह्माण्ड महँ रहेउँ वर्ष शत एक।
इहि विधि मैं देखत फिरेउँ अण्ड कटाह अनेक ८०

लोक लोक प्रति भिन्न विधाता। भिन्न विष्णु शिव मनु दिशि त्राता।
नर गन्धर्व्व भूत वैताला। किन्नर निशिचर पशु खग व्याला
देव दनुज गण नाना जाती। सकल जीव तहँ आनहिं भाँती
महि सर सागर सरि गिरि नाना। सब प्रपंच तहँ आनहिं आना
अण्ड कोश प्रति प्रति निज रूपा। देखेउँ जिनिस अनेक अनूपा
अवध पुरी प्रति भुवन निहारी। सरयू भिन्न भिन्न नर नारी
दशरथ कौशल्यादिक माता। विविध रूप भरतादिक भ्राता
प्रति ब्रह्माण्ड राम अवतारा। देखेउँ बाल विनोद अपारा

दो० भिन्न भिन्न सब देखेउँ अति विचित्र हरियान।
अगणित देखत फिरेउँ मैं राम न देखा आन
सोइ शिशुपन सोइ शोभा सोइ कृपालु रघुवीर।
भुवन भुवन देखत फिरेउँ प्रेरित मोह शरीर ८१

भ्रमत मोहिं ब्रह्माण्ड अनेका। बीते मनहुँ कल्प शत एका।

फिरत फिरत निज आश्रम आयउँ। तहँ पुनि रहि कछु काल गँवायउँ
निज प्रभु जन्म अवध सुनि पायउँ। निर्भर प्रेम हर्ष उठि धायउँ
देखेउँ जन्म महोत्सव जाई। जेहि विधि प्रथम कहा मैं गाई
राम उदर देखेउँ जग नाना। देखत बनै न जात बखाना
तहँ पुनि देखेउँ राम सुजाना। माया पति कृपालु भगवाना
करौं विचार बहोरि बहोरी। मोह कलित व्यापित मति मोरी
उभय घरी महँ मैं सब देखा। भयउँ भ्रमित मन मोह विशेखा

दो॰ देखि कृपालु विकल मोहिं विहँसे तब रघुवीर।
विहँसतही मुख बाहर आयउँ सुनु मति धीर॥
सोइ लरिकाई मोहि सन लगे करन पुनि राम।
कोटि भाँति समझाओं मन न लहै विश्राम ८२

देखि चरित हरि सो प्रभुताई। समुझत देह दशा विसराई
धरणि परेउँ मुख आवन बाता। त्राहि त्राहि आरत जन त्राता
परमाकुल प्रभु मोहिं विलोकी। निज माया प्रभुता तब रोकी
कर सरोज प्रभु मम शिर धरेऊ। दीनदयाल दुसह दुख हरेऊ।
कीन्ह राम मोहिं विगत विमोहा। सेवक सुखद कृपा सन्दोहा
प्रभुता प्रथम विचार विचारी। मन महँ होइ हर्ष अति भारी

भक्त वछलता प्रभु कै देखी। उपजा मम उर हर्ष विशेखी
सजलनयनपुलकितकरजोरी। कीन्हीबहुविधिविनयबहोरी
दो० सुनि सप्रेम मम वाणी देखि दीन निज दास।
वचन सुखद गम्भीर मृदु बोले रमा निवास॥
कागभुशुण्डी माँगु वर अति प्रसन्न मोहिंजानि
अणिमादिकसुख अपरनिधि मोक्षसकलसुखखानि
ज्ञानविवेक विरति विज्ञाना। मुनिदुर्लभगतिजो जग जाना।
आजु देउँ सब संशय नाहीं। माँगुजो तोहिं भाव मन माहीं
सुनिप्रभुवचन बहुत अनुरागेउँ। मनअनुमानकरन तबलागेउँ
प्रभु कह देन सकलसुख सही। भक्ति आपनी देन न कही
भक्ति हीन गुणासुख सबऐसे। लवणा बिना बहुव्यंजनजैसे
भक्ति हीन सुख कवनेकाजा। असविचारिबोलेउँखगराजा
जो प्रभु होइ प्रसन्न वर देहू। मो पर करहु कृपा अरु नेहू
मन भावत वर माँगौं स्वामी। तुम उदार उर अन्तरयामी।
दो० अविचलभक्तिविशुद्धतवश्रुतिपुराणाजोगाव।
जेहिखोजतयोगीशमुनिप्रभुप्रसादकोउपाव॥
भक्ति कल्पतरु प्रणतहित कृपासिंधुसुखधाम

सोइ निज भक्ति मोहिं प्रभु देहु दया करि राम ८४

एवमस्तु कहि रघुकुल नायक। बोले बचन परम सुख दायक
सुनु वायस तैं परम सयाना। काहे न माँगसि अस वरदाना
सब सुख खानि भक्ति तैं माँगी। नहिं कोउ तोहिं समान बड़ भागी
जो मुनि कोटि यतन नहिं लहहीं। जे जप योग अनल तनु दहहीं
रीझेउ तोरि देखि चतुराई। माँगेउ भक्ति मोहिं अति भाई।
सुनु विहंग प्रसाद अब मोरे। सब शुभ गुण उर बसिहैं तोरे
भक्ति ज्ञान विज्ञान विरागा। जो सब चरित रहस्य विभागा
जानब तैं सबही कर भेदा। मम प्रसाद नहिं साधन खेदा
दो० माया सम्भव मर्म्म सब अब नहिं व्यापै तोहिं।
जानेसु ब्रह्म अनादि अज अगुणागुणाकर मोहिं
मोहिं भक्त प्रिय सन्तत अस विचारि सुनु काग
कायवचनमन मम चरणाकरहु अचल अनुराग ८५

अब सुनु परम विमल मम बानी। सत्य सुगम निगमादि बखानी
निज सिद्धान्त सुनावौं तोही। सुनि मन धरि सब तजि भजमोही
मम माया सम्भव संसारा। जीव चराचर विविध प्रकारा।
सब मम प्रिय सब मम उपजाये। सब ते अधिक मनुज मोहिं भाये

तेहि महँ द्विज द्विज महँ श्रुतिधारी। तिन्ह महँ निगम नीति अनुसारी
तिन्ह महँ प्रिय विरक्त पुनि ज्ञानी। ज्ञानिहु ते अति प्रिय विज्ञानी
तेहि ते पुनि मोहि प्रिय निज दासा। जेहि गति मोहि न दूसरि आसा
पुनि पुनि सत्य कहौं तोहि पाहीं। मोहि सेवक सम प्रिय कोउ नाहीं
भक्ति हीन विरञ्चि किन होई। सब जीवन महँ अप्रिय सोई
भक्तिवन्त अति नीचो प्राणी। मोहि परम प्रिय सुनु मम बाणी

दो० शुचि सुशील सेवक सुमति कहु प्रिय काहि न लाग
श्रुति पुराण कह नीति असि सावधान सुनु काग ८६

एक पिता के विपुल कुमारा। होइ पृथक गुण शील अचारा
कोउ पण्डित कोउ तापस ज्ञाता। कोउ धनवन्त शूर कोउ दाता
कोउ सर्व्वज्ञ धर्म्म रत कोई। सब पर पितहि प्रीति सम होई
कोउ पितु भक्त वचन मन कर्म्मा। सपनेहुँ जान न दूसर धर्म्मा।
सो प्रिय सुत पितु प्राण समाना। यद्यपि सो सब भाँति अयाना
इहि विधि जीव चराचर जेते। त्रिजग देव नर असुर समेते।
अखिल विश्व यह मम उपजाया। सब पर मोरि बराबरि दाया
तिन महँ जो परिहरि मद माया। भजहिं मोहि मन वच अरु काया
दो० पुरुष नपुंसक नारि वा जीव चराचर कोइ ।

सर्वभाव भजु कपट तजि मोहिं परम प्रिय सोइ ८७

सो० सत्य कहौं खग तोहिं शुचि सेवक मम प्राण प्रिय।
अस विचारि भजु मोहिं परिहरि आश भरोस सब ३

कबहुँ काल नहिं व्यापै तोहीं। सुमिरेसु भजेसु निरन्तर मोहीं।
प्रभु वचनामृत सुनि न अघाऊं। तन पुलकित मन अति हर्षाऊं
सो सुख जानै मन अरु काना। नहिं रसना प्रति जाइ बखाना
प्रभु शोभा सुख जान तनयना। कहि किमि सकौं तिन्हैं नहिं वयना
बहु विधि राम मोहिं सिख दई। लगे करन शिशु कौतुक तेई
सजल नयन कछु सुख करि रूखा। चितै मातु तन लागी भूखा
देखि मातु आतुर उठि धाई। कहि मृदु वचन लिये उर लाई
गोद राखि करावं पय पाना। रघुपति चरित ललित करि गाना
सो० जेहि सुख लागि पुरारि असुभ भेष कृत शिव सुख द

अवधपुरी नर नारि तेहि सुख महुँ सन्तत मगन॥
सोई सुख लवलेश जिन बारक सपनेहुँ लहेउ।
तेहि नहिं गनहिं खगेश ब्रह्म सुखहि सज्जन सुमति ४

मैं पुनि अवध रहेउँ कछु काला। देखेउँ बाल विनोद रसाला
राम प्रसाद भक्ति वर पायउँ। प्रभु पद वन्दि निजाश्रम आयउँ

तबते मोहि न व्यापी माया। जब ते रघुनायक अपनाया
यह सब गुप्त चरित मैं गावा। हरिमाया जिमि मोहिं नचावा
निज अनुभव अब कहौं खगेशा। बिनु हरिभजन न जाहि कलेशा
राम कृपा बिनु सुनु खग राई। जानि न जाय राम प्रभुताई।
जाने बिनु न होइ परतीती। बिनु परतीति होइ नहिं प्रीती
प्रीति बिना नहिं भक्ति दृढ़ाई। जिमि खगेश जल की चिकनाई
सो० बिनु गुरु होइ कि ज्ञान ज्ञान कि होइ विराग बिनु।
गावहिं वेद पुरान सुख कि लहहिं बिनु हरि भगति
कोउ विश्राम कि पाव तात सहज सन्तोष बिनु।
चलै कि जल बिनु नाव कोटि यतन पचि पचि मरै ५
बिनु सन्तोष न काम नशाहीं। काम अछत सुख सपनेहुँ नाहीं
राम भजन बिनु मिटहिं न कामा। थल बिहीन तरु कबहुँ कि जामा
बिना ज्ञान की समता आवै। कोउ अवकाश कि नभ बिनु पावै
श्रद्धा बिना धर्म्म नहिं होई। बिनु महि गन्ध कि पावै कोई
बिनु तप तेज कि करु विस्तारा। जल बिनु रस कि होइ संसारा
शील कि मिलु बिनु बुध सेवकाई। जिमि बिनु तेज न रूप गुसाँई
निज सुत बिनु मन होइ कि पीरा। परस कि होइ विहीन समीरा

कवनेउँसिद्धिकिबिनुविश्वासा।बिनुहरिभजननभवभयनासा

दो० बिनुविश्वासभक्तिनहिंतेहि बिनुद्रवहिंनराम।
रामकृपाबिनुसपनेहुँमनकिलहै विश्राम ८८

सो० असविचारिमतिधीरतजिकुतर्कसंशयसकल
भजहिरामरणा धीरकरुणाकरसुन्दरसुखद ६

निजमतिसरिसनाथ मैंगाई।प्रभु प्रताप महिमाखग राई
कहेउँनकछुकरियुक्तिविशेखी।यहसबमैंनिजनयननदेखी
महिमानामरूपगुणागाथा।सकलअमितअनन्त रघुनाथा
निजनिजमतिमुनिहरिगुणागावहिं।निगमशेषशिवपारनपावहिं
तुम्हैंआदिखगमशकप्रयन्ता।नभउड़ाहिं नहिंपावहिं अन्ता।
इमिरघुपतिमहिमाअवगाहा।तातकबहुँकोउपावकिथाहा
रामकामशतकोटिसुभगतन।दुर्गाकोटि अमितअरिमर्दन।
शक्रकोटिशतसरिसविलासा।नवशतकोटिअमितअवकासा

दो० मरुतकोटिशतविपुलबलरविशतकोटिप्रकास।
शशिशतकोटिसुशीतलशमनसकलभवत्रास॥
कालकोटिशतसरिसअतिदुस्तरदुर्ग्गदुरन्त ।
धूम्रकेतु शत कोटिसम दुराधर्ष भगवन्त ८९

प्रभु अगाध शत कोटि पताला। शमन कोटि शत सरिस कराला।
तीरथ अमित कोटि शत पावन। नाम अखिल अघ पुंजन शावन
हिम गिरि कोटि अचल रघुवीरा। सिन्धु कोटि शत सरिस गँभीरा
कामधेनु शत कोटि समाना। सकल काम दायक भगवाना।
शारद कोटि अमित चतुराई। विधि शत कोटि सृष्टि निपुणाई
विष्णु कोटि शत पालन कर्त्ता। रुद्र कोटि शत सम संहर्त्ता।
धनद कोटि शत सम धनवाना। माया कोटि प्रपञ्च निधाना।
भार धरण शत कोटि अहीशा। निरवधि निरुपम प्रभु जगदीशा।
छं० निरवधि निरुपम राम समनहिं आन निगमागम कहै।
जिमि कोटि शत खद्योत रवि कहँ कहत अति लघुता लहै
इहि भाँति निज निज मति विलास मुनीश हरिहिं बखानहीं
प्रभु भाव गाहक अति कृपालु सप्रेम सुनि सुख पावहीं १०
दो० राम अमित गुण सागर थाह कि पावै कोइ।
सन्तन सन जस कछु सुनेउँ तुमहिं सुनायउँ सोइ ९०
सो० भाव वश्य भगवान सुख निधान करुणा सुवन।
तजि मम ता मद मान भजिय राम सीता रमण ७
सुनि भुशुण्डि के वचन सुहाये। हर्षित खगपति पंख फुलाये

नयन नीर मन अति हर्षाना। श्री रघुपति प्रताप उर आना।
पाछिल मोह समुझि पछिताना। ब्रह्म अनादि मनुज करि जाना।
सुनि पुनि काग चरण शिर नावा। जानि राम सम प्रेम बढ़ावा।
गुरु बिनु भव निधि तरै न कोई। जो विरञ्चि शंकर सम होई।
संशय सर्प ग्रसेउ मोहिं ताता। दुखद लहरि कुतर्क बहु बाता।
तव स्वरूप गारुड़ि रघुनायक। मोहि जियायहु जन सुखदायक।
तव प्रसाद मम मोह नशाना। राम रहस्य अनूपम जाना।

दो॰ ताहि प्रशंसेउ विविध विधि शीश नाइ कर जोरि।
वचन सप्रेम विनीत मृदु बोलेउ गरुड़ बहोरि॥
प्रभु अपने अविवेक तें बूझौं स्वामी तोहिं।
कृपासिन्धु सादर कहहु जानि दास निज मोहिं ९२

तुम सर्वज्ञ तज्ञ तम पारा। सुमति सुशील सरल आचारा।
ज्ञान विरति विज्ञान निवासा। रघुनायक तुम प्रिय तुम दासा।
कारण कवन देह यह पाई। तात सकल मोहिं कहहु बुझाई।
राम चरित सर सुन्दर स्वामी। पायहु कहाँ कहहु नभगामी।
नाथ सुना मैं अस शिव पाहीं। महा प्रलयहुँ नाश तव नाहीं।
मृषा वचन नहिं शंकर कहहीं। सो मोरे मन संशय अहहीं।

अग जग जीव नाग नर देवा। नाथ सकल जग काल कलेवा
अंड कटाह अमित लय कारी। काल सदा दुरंत क्रम भारी
सो० तुम्हहिं न व्यापै काल अति कराल कारण कवन।
सो मोहिं कहहु कृपाल ज्ञान प्रभाव कि योग बल॥
दो० प्रभु तव आश्रम आयउँ मोर मोह भ्रम भाग।
कारण कवन सो नाथ अब कहहु सहित अनुराग ९२
गरुड़ गिरा सुनि हर्षेउ कागा। बोलेउ वचन सहित अनुरागा
धन्य धन्य तव मति उरगारी। प्रश्न तुम्हारि मोहिं अति प्यारी
सुनि तव प्रश्न सप्रेम सुहाई। बहत जन्म की सुधि मोहिं आई
सब निज कथा कहौं मैं गाई। तात सुनहु सादर मन लाई
जप तप मख संयम ब्रत दाना। विरत विवेक योग विज्ञाना
सब कर फल रघुपति पद प्रेमा। तेहि बिनु कोइ न पावै क्षेमा
इहि तन राम भक्ति मैं पाई। ताते मोहिं ममता अधिकाई
सो० पन्नगारि असनीति श्रुति संमत सज्जन कहहिं।
अति नीचहु सन प्रीति करिय जानि निज परम हित॥ पाट कीट तेहोइ तातें पा
टंबर रुचिर। छमि पालै सब कोइ। परम अपावन प्राण सम ९
स्वारथ साँच जीव कहँ एहा। मन क्रम वचन राम पद नेहा

सोइ पावन सोइ सुभग शरीरा। जो तनु पाइ भजिय रघुवीरा
राम विमुख लहि विधि सम देही। कवि कोविद न प्रशंसहिं तेही
राम भक्ति यहि तन महँ जामी। ताते मोहिं परम प्रिय स्वामी
तजौं न तन निज इच्छा मरणा। तनु बिनु वेद भजन नहिं वरणा
प्रथम मोह मोहिं बहुत विगोवा। राम विमुख सुख कबहुँ न सोवा
नाना जन्म कर्म पुनि नाना। किये योग जप तप मख दाना।
कवन योनि जन्मेहुँ जहँ नाहीं। मैं खगेश भ्रमि भ्रमि जग माहीं
देखेउँ सब करि कर्म्म गुसाईं। सुखी न भयउँ अबहिं की नाईं
सुधि मोहिं नाथ जन्म बहु केरी। शिव प्रसाद मति मोहिं घनेरी।

दो० प्रथम जन्म के चरित सब कहौं सुनहु विहँगेश।
सुनि प्रभु पद रति ऊपजै जातैं मिटै कलेश ॥
पूरब कल्प एक प्रभु कलियुग मल कर मूल।
नर अरु नारि अधर्म्म रत सकल निगम प्रतिकूल ९३

तेहि कलियुग कोशल पुर जाई। जन्मत भयउँ शूद्र तनु पाई।
शिव सेवक मन क्रम अरु वानी। आन देव निन्दक अभिमानी
धन मद मत्त परम वाचाला। उग्र बुद्धि उर दम्भ विशाला।
यद्यपि रहेउँ रघुपति रजधानी। तदपि नहीं महिमा कछु जानी

अब जाना मैं अवध प्रभावा। निगमागम पुराण अस गावा
कवनहुँ जन्म अवध बस जोई। राम परायण सो परु होई।
अवध प्रभाव जान तब प्राणी। जब उर बसहिं राम धनुपाणी
सो कलिकाल कठिन उरगारी। पाप परायण सब नर नारी।

दो० कलिमल ग्रसेउ धर्म्म सब लुप्त भयउ सद्ग्रन्थ।
दम्भिन निज मत कल्पि कर प्रगट कीन्ह बहु पन्थ
भयउ लोग सब मोहबश लोभ ग्रसेउ सुभ कर्म।
सुनु हरियान ज्ञान निधि कहौं कछुक कलि धर्म ९४

बर्ण धर्म्म नहिं आश्रम चारी। श्रुति विरोध रत सब नर नारी
द्विज श्रुति बेंचक भूप प्रजासन। कोउ न मानु निगम अनुशासन
मारग सोइ जा कहँ मन भावा। पण्डित सोइ जो गाल बजावा
मिथ्यारम्भ दम्भ रत जोई। ता कहँ सन्त कहै सब कोई
सोइ सयान जो परधन हारी। जो कर दम्भ सो बड़ आचारी
जो कछु कहँ मसखरी जाना। कलियुग सोइ गुणवन्त बखाना
निराचार जो श्रुति पथ त्यागी। कलियुग सोइ ज्ञानी बैरागी
जाके नख अरु जटा विशाला। सोइ तापस प्रसिद्ध कलिकाला

दो० असुभ भेष भूषण धरें भक्ष्याभक्ष्य जे खाहिं।

तेयोगी तेसिद्ध नर पूज्य तेकलियुगमाहिं ९५

सो० जे अपकारी चार तिन्ह कर गौरव मान्यता।
मनक्रमवचनलवार तेवक्ता कलिकाल महँ १०

नारि विवश नरसकलगुसाईं। नाचहिं नट मरकट की नाईं
सूद्र द्विजहिंउपदेशहिं ज्ञाना। मेलि जनेऊ लेहिं कुदाना।
सब नर काम लोभरत क्रोधी। देव विप्र गुरु सन्त विरोधी।
गुरुमन्दिरसुन्दरपतित्यागी। भजहिंनारिपरपुरुष अभागी
सौभागिनी विभूषणा हीना। विधवन कहँ शृंगार नवीना
गुरुशिष अन्धबधिरकरलेखा। एक न सुनै एक नहिं देखा
हरै शिष्य धन शोक न हरई। सो गुरु घोर नरक महँ परई
मातपिताबालकनबोलावहिं। उदरभरैसोइ कर्म सिखावहिं

दो० ब्रह्म ज्ञान बिनु नारि नर कहहिं न दूसरि बात।
कौड़ी लागी लोभ वश करहिं विप्र गुरु घात॥
बादसूद्रकहँद्विजनसनहुमतुमतेकछुघाटि ।
जानैब्रह्मसोविप्रवर आँखिदेखावहिंडाटि ९६

परत्रिय लम्पट कपट सयाने। मोह द्रोह ममता लपटाने।
तेउ अभेद वादी ज्ञानी नर। देखा मैं चरित्र कलियुग कर

आपुगये अरु आनहिं घालहिं। जोकोउश्रुतिमारगप्रतिपालहिं
कल्पकल्पभरिएकएकनरका। परहिंजेदूषहिंश्रुतिकरतरका।
जेवर्णाधमतेलिकुम्हारा। श्वपचकिरातकोलकलवारा
नारिमुई गृह सम्पतिनासी। मूड़ मुड़ाय भये संन्यासी
तेविप्रनसनपाँवपुजावहिं। उभयलोकनिजहाथनशावहिं
विप्रनिरक्षरलोलुपकामी। निराचार शठ वृषली स्वामी।
शूद्रकरहिंजपतप ब्रत दाना। बैठि बरासन कहहिं पुराना
सबनरकल्पितकरहिंअचारा। जाइनवरणिश्रनीतिअपारा
दो० भयेवर्णसंकरकलिहिं भिन्न सेतु सब लोग।
करहिं पाप पावहिं दुख भयरुज शोकवियोग
श्रुतिसम्मत हरिभक्ति पथ संयुतज्ञानविवेक
तेनचलहिंनरमोहवशकल्पहिंपन्थ अनेक ९७
छं० बहुधामसवाँरहिंयोगयती विषयारहि लीनगई विरती
तपसीधनवन्तदरिद्रगृही कलिकौतुक तात न जात कही।
कुलवन्तिनिकारहिंनारिसती गृहआनहिंचेरिहिंचेरगती
सुतमानहिंमातपिता तौलौं अबलाननदीख नहीं जौलौं
ससुरारि पियारि लगी जब ते रिपु रूप कुटुम्ब भये तबते

नृपपापपरायण धर्म्म नहीं करुदण्ड विदण्ड प्रजा नितहीं
धनवन्त कुलीन मलीन अपी द्विज चिन्ह जनेउ उघार तपी॥
नहिं मान पुराण न वेदहिं जो हरिसेवक सत्य सही कलिसो॥
कविवृन्द उदार दुनी न सुनी गुण दूषक बातन कोपि गुनी।
कलि बारहिं बार दुकाल परै बिनु अन्न दुखी बहु लोग मरै ११

दो॰ सुनु खगेश कलि कपट हठ दम्भ दोष पारावार।
काम कोध लोभादि मद व्यापि रहे ब्रह्मण्ड॥
तापस धर्म्म करहिं नर जप तप मख व्रत दान।
देवन वर्षै धरणि पर बये न जामहिं धान ९८

छं॰ अबला कच भूषण भूरि क्षुधा धन हीन दुखी ममता बहुधा।
सुख चाहहिं मूढ़ न धर्म्म रता मति थोरि कठोरि न कोमलता॥
नर पीड़ित रोग न भोग कहीं अभिमान विरोध अकारण हीं
लघु जीवन सम्मत पञ्च दशा कल्पान्त न नाश गुमान अशा।
कलिकाल विहाल किये मनुजा नहिं मानत कोउ अनुजा तनुजा
नहिं तोष विचार न शीतलता सब जाति कुजाति भये मँगता।
इरषा परुषा छल लोलुपता भरि पूरि रही समता विगता॥
सब लोग वियोग विशोक हये वरणाश्रम धर्म अचार गये।

दमदानदयानहिंजानपनीजड़तापरिपञ्चकतातघनी १२

दो० सुनुव्यालारिकरालकालिमलअवगुणाआगार।
गुणाउ बहुत कलियुग कर बिनु प्रयास निस्तार॥
कृतयुग त्रेता द्वापरहु पूजा मख अरु योग।
जोगतिहोइसोकलिहरिनामतेपावहिंलोग १३

कृतयुग सब योगी विज्ञानी। करिहरिध्यान तरहिं भव प्रानी
त्रेता विविध यज्ञ नरकरहीं। प्रभुहिंसमर्पि कर्म्मभवतरहीं
द्वापर करि रघुपति पद पूजा। नरभव तरहिंउपाय न दूजा।
कलिकेवलहरिगुणागणागाहा। गावत नर पावहिंभवथाहा
कलियुगयोगयज्ञनहिंज्ञाना। एक अधाररामगुणा गाना
सबभरोस तजिजोभजरामहिं। प्रेमसमेत गावगुणाग्रामहिं
सोभवतरुकछु संशयनाहीं। नामप्रताप प्रकटकलिमाहीं
कलिकर एकपुनीतप्रतापा। मानसपुराय होइनहिंपापा

दो० कलियुगसमयुग आननहिंजोनरकरुविश्वास।
गायरामगुणागणाविमलभवतरुबिनहिंप्रयास
प्रगट चारि पद धर्म्म के कलि महँ एक प्रधान।
येनकेनविधि दीन्हें दान करै कल्यान १००

कृतयुग धर्म्म होइँ सब केरे। हृदय राम माया के प्रेरे।
शुद्ध सत्य समता विज्ञानी। कृत प्रभाव प्रसन्न मन मानी
सत्य बहुत कछु रजरतिकर्मा। सबविधि शुभ त्रेता कर धर्मा
बहुरज सत्य स्वल्प कछु तामस। द्वापर हर्ष शोक भय मानस
तामस बहुत रजोगुण थोरा। कलि प्रभाव विरोध चहुँ ओरा
बुधयुग धर्म्म जानि मनमाहीं। तजि अधर्म्म रत धर्म्म कराहीं
कलि अधर्म नहिंव्यापहि ताही। रघुपति चरण प्रीति अति जाही
नट कृत कपट विकट खगराया। नट सेवकहि न व्यापै माया

दो० हरि माया कृत दोष गुण बिनु हरि भजन न जाहिं
भजिय राम सब काम तजि अस विचारि मन माहिं
तेहि कलि काल वर्ष बहु बसेउँ अवध बिहँगेश
परेउ दुकाल विपत्ति वश तब मैं गयउँ विदेश १

गयउँ उजैन सुनहु उरगारी। दीन मलीन दरिद्र दुखारी।
गये काल कछु सम्पति पाई। तहँ पुनि करौं शम्भु सेवकाई
विप्र एक वैदिक शिव पूजा। करै सदा तेहि काज न दूजा।
परम साधु परमारथ विन्दक। शम्भु उपासक नहिं हरि निन्दक।
सेवौं मैं तेहि कपट समेता। द्विज दयाल अति नीति निकेता

बाहिर नयन देखि मोहिं साईं। विप्र पढ़ाव पुत्र की नाईं।
शम्भु मंत्र मोहिं द्विजवर दीन्हा। सुभउपदेश विविध विधि कीन्हा।
जपौं मंत्र शिव मन्दिर जाई। हृदय दम्भ अहमिति अधिकाई
दो० मैं खल मल संकुल मति नीच जाति वश मोह।
द्विज हरि जन देखत जरौं करौं विषाद कर द्रोह २
सो० गुरु नित मोहिं प्रबोध दुखित देखि आचार मम।
मोहिं उपजै अति क्रोध दम्भिहि नीति कि भावई ११
एक वार गुरु लीन्ह बुलाई। मोहिं नीति बहु भाँति सिखाई
शिव सेवा कर फल सुत सोई। अविचल भक्ति राम पद होई
रामहिं भजहिं तात शिव धाता। नर पामर कै केतिक बाता
जासु चरण शिव अज अनुरागी। तासु द्रोह सुख चहसि अभागी
हर कहँ हरि सेवक गुरु कहेऊ। सुनि खगनाथ हृदय मम दहेऊ।
अधम जाति मैं विद्या पाये। भयउँ यथा अहि दूध पियाये
मानी कुटिल कुभाग्य कुजाती। गुरु सन द्रोह करौं दिन राती
अति दयालु गुरु स्वल्प न क्रोधा। पुनि पुनि मोहिं सिखाव सुबोधा
जेहि ते नीच बड़ाई पावा। सो प्रथमहिं हठि ताहि नशावा।
धूम अनल सम्भव सुनु भाई। तेहि बुझाव घन पदवी पाई

रज मगु परी निरादर रह्ही। सब कर पद प्रहार नित सह्ही
मरुत उड़ाइ प्रथम तेहि भरई। पुनि नृप नयन किरीटन्ह परई
सुनु खगपति अस समुझि प्रसंगा। बुध नहिं करहिं अबुध सन संगा
कबि कोबिद गावहिं असि नीती। खल सन कलह न भल नहिं प्रीती
उदासीन नित रहिय गुसाईं। खल परि हरिय स्वान की नाईं
मैं खल हृदय कपट कुटिलाई। गुरु हित कहैं न मोहिं सुहाई

दो० एक बार हर मन्दिर जपत रहेउँ सिव नाम ।
गुरु आये अभिमान ते उठि नहिं कीन्ह प्रनाम
सो दयालु नहिं कहेउ कछु उर न रोष लवलेश
अति अघ गुरु अपमानता सहि नहिं सके महेश ३

मन्दिर माझ भई नभ बानी। रे हतभाग्य अधम अभिमानी
यद्यपि तव गुरु स्वल्प न क्रोधा। अति कृपालु चित सम्यक बोधा
तदपि शाप देहौं शठ तोहीं। नीति बिरोध सुहात न मोहीं
जौ नहिं करौं दण्ड शठ तोरा। भ्रष्ट होइ श्रुति मारग मोरा।
जे शठ गुरु सन ईर्षा करहीं। रौरव नरक कल्प शत परई।
त्रिजग योनि पुनि धरहिं शरीरा। अयुत जन्म भरि पावहिं पीरा
बैठि रहेसि अजगर इव पापी। हो सि सर्प खल मल मति व्यापी

महा विटप कोटर महँ जाई। रहरे अधम अधोगति पाई

दो॰ हाहाकार कीन्ह गुरु सुनि दारुण शिव शाप।
कंपित मोहिं विलोकि अति उर उपजा परिताप
करि दण्डवत सप्रेम गुरु शिव सन्मुख कर जोरि।
विनय करत गद्गद गिरा समुझि घोर गति मोरि ४

छं॰ नमामीशमीशान निर्वाणरूपं। विभुं व्यापकं ब्रह्मवेदस्वरूपं
अजं निर्गुणां निर्विकल्पं निरीहं। चिदाकाशमाकाशवासं भजेहं
चिदाकार माकार मूलं तुरीयं। गिराज्ञान गोतीत मीशं गिरीशं
करालं महाकाल कालं कृपालं। गुणागार संसार सारं नतोहं
तुषाराद्रि संकाश गौरं गभीरं। मनो भूत कोटि प्रभा सी शरीरं
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गंगा। लसद्भाल बालेंदु कंठे भुजंगा
चलत्कुण्डलं शुभ्र नेत्रं विशालं। प्रसन्नाननं नील कण्ठं दयालं
मृगाधीश चर्म्माम्बरं मुण्डमालं। प्रियं शंकरं सर्व नाथं भजामि
प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं। अखण्डं अजं भानु कोटि प्रकाशं
त्रयी शूल निर्मूलनं शूल पाणिं। भजेहं भवानी पतिं भाव गम्यं
कलातीत कल्याण कल्पान्त कारी। सदा सज्जनानन्द दाता पुरारी
चिदानन्द सन्दोह मोहापहारी। प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी

नयावत उमानाथपादारविंदं। भजन्तीह लोके परे बानराणां
नतावत्सुखंशान्तिसन्तापनाशं।प्रसीदप्रभोसर्व भूतादि वासं।
नजानामियोगंजपंनैवपूजां। नतोहं सदा सर्वदा शम्भुतुभ्यं
जराजन्मदुःखौघतातप्यमानं।प्रभोपाहिशापान्नमामीशशंभो

श्लो० रुद्राष्टक मिदं प्रोक्तं विप्रेरा हर तुष्टये।
येपठन्ति नराभक्त्यातेषांशम्भुःप्रसीदति॥

दो० सुनि विनतीसर्व्वज्ञशिवदेखिविप्र अनुराग ।
पुनि मन्दिरवाणी भई हे द्विज वर वर माग ॥
जो प्रसन्न प्रभु मोहिं पर नाथ दीन पर नेह ।
निज पद भक्ति देहु प्रभु पुनि दूसर वर देहु॥
तवमायावशजीवजड़ सन्ततफिरै भुलान ।
तेहिपरक्रोधनकरियप्रभु कृपासिन्धुभगवान
शंकर दीन दयाल अब यहि पर होहु कृपाल
शापानुग्रह होइ जेहि नाथ थोरेही काल ५

इहि कर होइ परम कल्याना।सोइ करहु अब कृपानिधाना
विप्र गिरा सुनि परहित सानी। एवमस्तु कहि भइ नभ वानी
यदपि कीन्ह यह दारुण पापा।मैंपुनि दीन्ह क्रोध करि शापा

तदपितुम्हारि साधुता देखी। करिहौं इहि पर कृपा विशेखी
क्षमा शील जे पर उपकारी। ते द्विज प्रिय मोहिं यथा खरारी।
मोर शाप द्विज व्यर्था न होई। जन्म सहस्र पाव यह सोई।
जन्मत मरत दुसह दुख होई। इहि कहँ स्वल्प न व्यापहि सोई
कोनेहुँ जन्म मिटिहि नहिं ज्ञाना। सुनहु शूद्र मम वचन प्रमाना।
रघुपति पुरी जन्म तव भयऊ। पुनि तैं मम सेवा मन दयऊ
पुरी प्रसाद अनुग्रह मोरे। राम भक्ति उपजिहि उर तोरे
सुनु मम वचन सत्य अब भाई। हरितोषक व्रत द्विज सेवकाई
अब जनि करसि विप्र अपमाना। जानेसु सन्त अनन्त समाना
इन्द्र कुलिश मम शूल विशाला। काल दण्ड हरि चक्र कराला
जो इन कर मारा नहिं मरई। विप्र रोष पावक सो जरई
अस विवेक राखेहु मन माहीं। तुम कहँ जग दुर्लभ कछु नाहीं
औरो एक आशिषा मोरी। अव्याहत गति होइहि तोरी
दो० सुनि शिव वचन सप्रेम गुरु एवमस्तु इति भाखि।
मोहिं प्रबोधि गयउ गृह शम्भु चरण उर राखि ॥
प्रेरित काल विन्ध्य गिरि जाइ भयउँ मैं व्याल ।
बिनु प्रयास सो तनु तजेउँ नाथ थोरेही काल ॥

जो तनु धरौं सो तजौं पुनि अनायास हरियान।
जिमि नूतन पट पहिरि कै नर परिहरै पुरान॥
शिवरावेउ श्रुति नीति विधि मैं नहिं पाव कलेश।
इहि विधि धरेउँ विविध तनु ज्ञानन गयेउ खगेश॥

त्रिजग योनि जो जो तनु धरेऊँ। तहँ तहँ राम भक्ति अनुसरेऊँ
एक शूल मोहिं बिसरु न काऊ। गुरु कर कोमल शील सुभाऊ
परम देह द्विज कर मैं पाई। सुर दुर्लभ पुराण श्रुति गाई
खेलौं तहाँ बालकन मीला। करौं सकल रघुनायक लीला।
प्रौढ़ भये मोहिं पिता पढ़ावा। समुझौं सुनौं गुणौं नहिं भावा।
मनते सकल वासना भागी। केवल राम चरण लय लागी।
कह खगेश अस कौन अभागी। खरी सेव सुर धेनुहिं त्यागी
प्रेम मगन मोहिं कछु न सुहाई। हारेउ पिता पढ़ाय पढ़ाई।
भये काल वश जब पितु माता। मैं बन गयउँ भजन जन त्राता।
जहँ जहँ विपिन मुनीश्वर पावौं। आश्रम जाइ जाइ शिर नावौं
पूँछौं तिनहिं राम गुण गाहा। कहहिं सुनौं हर्षित खग नाहा
सुनतफिरौं हरि गुण अनुवादा। अव्याहत गति शम्भु प्रसादा
छूटी त्रिविध ईषणा गाढ़ी। एक लालसा उर अति बाढ़ी।

राम चरण पंकज जब देखौं। तब निज जन्म सुफल करि लेखौं
जेहि पूँछौं सो मुनि अस कहई। ईश्वर सर्व्व भूत मय अहई
निर्गुण मत नहिं मोहिं सुहाई। सगुण ब्रह्म रति उर अधिकाई

दो० गुरु के वचन सुरति करि राम चरण मन लाग।
रघुपति यश गावत फिरौं छण छण नव अनुराग
मेरु शिखर बट छाया मुनि लोमश आसीन।
देखि चरण शिर नायउँ वचन कहेउँ अति दीन॥
सुनि मम वचन विनीत मृदु मुनि कृपालु खगराज।
मोहिं सादर बूझत भयहु द्विज आयहु केहि काज॥
तब मैं कहेउँ कृपा निधि तुम सर्व्वज्ञ सुजान।
सगुण ब्रह्म अवराधन मोहिं कहहु भगवान॥
तब मुनीश रघुपति गुण गाथा। कहेउ कछुक सादर खगनाथा
ब्रह्म ज्ञान रति मुनि विज्ञानी। मोहिं परम अधिकारी जानी
लागे करन ब्रह्म उपदेशा। अज अद्वैत अगुण हृदयेशा।
अकल अनीह अनाम अरूपा। अनुभव गम्य अखण्ड अनूपा।
मन गोतीत अमल अविनाशी। निर्विकार निरवधि सुखराशी
सो तैं ताहि तोहिं नहिं भेदा। वारि बीचि इव गावहिं वेदा।

विविधभाँतिमोहिंमुनिसमुझावा।निर्गुणमतममहृदयनआवा
पुनिमैंकहेउँनाइपदशीशा।सगुणउपासनकहहुमुनीशा।
रामभक्तिजलममनमीना।किमिबिलगाइमुनीशप्रवीना
सोउपदेशकहहुकरिदाया।निजनयननदेखौंरघुराया।
भरिलोचनबिलोकिअवधेशा।तबसुनिहौंनिर्गुणाउपदेशा
सुनिमुनिकहहरिकथाअनूपा।खंडितमतसगुणाअगुणानिरूपा
तबमैंनिर्गुणामतकरिदूरी।सगुणानिरूपौंकरिहठभूरी
उत्तरप्रत्युत्तरमैंदीन्हा।मुनिउरभयउक्रोधकरचीन्हा
सुनुप्रभुबहुतअवज्ञाकिये।उपजुक्रोधज्ञानिहुँकेहिये
अतिसंघर्षणाकरैजोकोई।अनलप्रगटचन्दनतेहोई

दो० बारहिंबारसकोपिमुनिकरहिंनिरूपणाज्ञान।
मैंअपनेमनबैठितबकरौंविविधअनुमान॥
क्रोधकिद्वैतबुद्धिबिनुद्वैतकिबिनुअज्ञान।
मायावशपरिक्षीणाजड़जीवकिईशसमान८

कबहुंकदुखसबकरहितताके।तेहिदरिद्रपारसमणिजाके
कामीपुनिकिरहैनिकलंका।परबोधीकिहोइनिश्शंका
वंशकिरहद्विजअनहितकीन्हें।कर्मकिहोहिंस्वरूपहिचीन्हें

काहू सुमति किरवल सँग जामी। सुभगति पावकि परत्रियगामी
राज किरहै नीति बिनु जाने। अघ कि रहै हरि चरित बखाने
भव किपरहिं परमारथ विन्दक। सुखी कि होहिं कबहुँ परनिंदक
पावन यश किपुराय बिनु होई। बिनु अघ अयश किपावै कोई
लाभ कि किछु हरि भक्ति समाना। जेहि गावहिं श्रुति सन्त पुराना
हानि कि जग इहि सम किछु भाई। भजिय न रामहिं नर तनु पाई
अघ कि होहिं ताम्रस सम आना। धर्म्म कि दया सरिस हरियाना
इहि विधि अमित युक्ति मन गुनेऊँ। सुनि उपदेश न सादर सुनेऊँ
पुनि पुनि सगुण पक्ष मैं रोपा। तब मुनि बोले वचन सकोपा
मूढ़ परम शिर देउँ न मानसि। उत्तर प्रत्युत्तर बहु आनसि।
सत्य वचन विश्वास न करही। बायस इव सबही सन डरही
शठ सपक्ष तव हृदय विशाला। सपदि होहु पक्षी चाराडाला
लीन्ह शाप मैं शीश चढ़ाई। नहिं कछु भय न दीनता आई

दो० तुरत भयउँ मैं काग तब पुनि मुनि पद शिर नाय
सुमिरि राम रघुबंश मणि हर्षित चलेउँ उड़ाय॥
उमा जो राम चरण रत विगत काम मद क्रोध।
निज प्रभुमय देखहिं जगत का सन करहिं विरोध॥

मुनुरवगेश नहिंकछु ऋषिदूषण। उर प्रेरकरघुवंशविभूषण।
कृपासिन्धु मुनि मति करि भोरी। लीन्हीं प्रेम परीक्षा मोरी
मनक्रमवचनमोहिजनजाना। मुनिमतिपुनिफेरीभगवाना
ऋषि ममसहजशीलतादेखी। रामचरणविश्वासविशेखी
अतिविस्मयपुनिपुनिपछिताई। सादरमुनिमोहिंलीन्हबुलाई
ममपरितोषविविधविधिकीन्हा। हर्षितराममन्त्रमोहिंदीन्हा
बालकरूपरामकरध्याना। कहेउ मोहिं मुनिकृपानिधाना
सुन्दरसुखदमोहिंअतिभावा। सोप्रथमहिं मैं तुम्हैं सुनावा
मुनिमोहिंकछुककालतहँराखा। रामचरितमानसतबभाखा
सादरमोहिं यहकथा सुनाई। पुनि बोले मुनि गिरासुहाई
रामचरित सरगुप्त सुहावा। शम्भु प्रसाद तात मैं पावा
तोहिं निज भक्तरामकरजानी। ताते मैं सबकहेउँ बखानी
रामभक्तिजिनके उर नाहीं। कबहुँ नतात कहियतेहिपाहीं
मुनिमोहिंविविधभाँतिसमुझावा। मैंसप्रेममुनिपदशिरनावा
निजकरकमलपरसिममशीशा। हर्षितआशिषदीन्हमुनीशा
रामभक्तिअविरलउर तोरे। बसहि सदा प्रसाद अब मोरे
दो० सदारामप्रियहोवतुमशुभगुणाभवनअमान।

काम रूप इच्छा मरण ज्ञान विराग निधान ॥
जेहि आश्रम तुम बसब पुनि सुमिरत श्रीभगवंत।
व्यापहि तहँ न अविद्या योजन एक पर्य्यन्त १०
कालकर्म्म गुण दोष सुभाऊ। कछु दुख तुम्हहि न व्यापिहि काऊ
राम रहस्य ललित विधि नाना। गुप्त प्रकट इतिहास पुराना।
बिनु श्रम तुम सब जानब सोऊ। नित नव प्रेम राम पद होऊ
जो इच्छा करिहौ मन माहीं। हरि प्रसाद कछु दुर्लभ नाहीं
सुनि मुनि आशिष सुनु मति धीरा। ब्रह्म गिरा भइ गगन गँभीरा
एवमस्तु तव वच मुनि ज्ञानी। यह मम भक्त कर्म्म मन बानी
सुनि नभ गिरा हर्ष मन भयऊ। प्रेम मगन मन संशय गयऊ
करि विनती मुनि आयसु पाई। पद सरोज पुनि पुनि शिर नाई
हर्ष सहित इहि आश्रम आयऊँ। प्रभु प्रसाद दुर्ल्लभ वर पायऊँ
इहाँ बसत मोहिं सुनु खगईशा। बीते कल्प सात अरु बीसा
करौं सदा रघुपति गुण गाना। सादर सुनहिं विहंग सुजाना
जब जब अवध पुरी रघुवीरा। धरहिं भक्त हित मनुज शरीरा।
तब तब जाइ अवध पुर रहऊँ। शिशु लीला विलोकि सुख लहऊँ
पुनि उर राखि राम शिशु रूपा। इहि आश्रम आवौं खग भूपा

कथा सकल मैं तुमहिं सुनाई। काग देह जेहि कारण पाई
कहेउँ तात सब प्रश्न तुम्हारी। राम भक्ति महिमा अति भारी
दो० ताते यह तन मोहिं प्रिय भयउ राम पद नेह।
निज प्रभु दरशन पायउँ गयउ सकल सन्देह॥
भक्ति पक्ष हठ करि रहेउँ दीन्ह महा ऋषि शाप।
पुनि दुर्लभ वर पायउँ देखहु भजन प्रताप ११
जो अति भक्ति जानि परिहरही। केवल ज्ञान हेतु श्रम करही
ते जड़ कामधेनु गृह त्यागी। खोजत आक फिरहिं पय लागी
सुनु खगेश हरि भक्ति विहाई। जो सुख चाहहिं आन उपाई
ते शठ महा सिन्धु बिनु तरणी। पैरि पार चाहत जड़ करणी
सुनि भुशुण्डि के वचन भवानी। बोलेउ गरुड़ हर्षि मृदु बानी
तव प्रसाद प्रभु मम उर माहीं। संशय शोक मोह भ्रम नाहीं।
सुनेउँ पुनीत राम गुण ग्रामा। तुम्हरी कृपा लहेउँ विश्रामा
एक बात प्रभु पूँछौं तोहीं। कहहु बुझाइ कृपा निधि मोहीं
कहहिं सन्त मुनि वेद पुराना। नहिं कछु दुर्लभ ज्ञान समाना।
सो मुनि तुम सन कहेउँ गुसाईं। नहिं आदरेउ भक्ति की नाईं
ज्ञानहि भक्तिहि अन्तर केता। सकल कहहु प्रभु कृपा निकेता

सुनिउरगारि वचन सुखमाना। सादर बोलेउ काग सुजाना।
ज्ञानहिभक्तिहिनहिंकछुभेदा। उभयहरहिं भवसम्भवखेदा।
नाथमुनीशकहहिंकछुअन्तर। सावधानहोइसुनहविहँगवर
ज्ञान विराग योग विज्ञाना। ये सब पुरुष सुनहु हरियाना
पुरुष प्रताप प्रबल सबभाँती। अबला अबलसहजजड़जाती
दो० पुरुष त्यागिसक नारिहिं जो विरक्त मति धीर।
नहिंतोकामी विषयवशविमुखजोपदरघुवीर १२
सो० जोमुनिज्ञाननिधान मृगनयनीविधुमुखनिरखि
विकलहोहिंहरियाननारिविरचिमायाप्रकट १२
इहाँ न पक्ष तात कछु राखौं। वेद पुराणा सन्त मत भाखौं
मोह न नारि नारि के रूपा। पन्नगारि यह नीति अनूपा।
माया भक्ति सुनहु प्रभु दोऊ। नारि वर्ग जानै सब कोऊ
पुनि रघुबीरहिं भक्ति पियारी। माया खल नर्त्तकी विचारी
भक्तिहिं सानुकूल रघुराया। ताते तेहि डरपति अति माया
राम भक्ति निरुपम निरुपाधी। बसै जासु उर सदा अबाधी
तेहि विलोकि माया सकुचाई। करि न सकै कछु निजप्रभुताई
अस विचारि जोमुनि विज्ञानी। याचहिंभक्तिसकलगुणखानी

दो० यह रहस्य रघुनाथ कर बेगि न जानै कोइ ।
जाने ते रघुपति कृपा सपनेहुँ मोह न होइ ॥
अबरो ज्ञान भक्ति कर भेद सुनो परवीन ।
जो सुनि होइ राम पद प्रीति सदा अबछीन १३

सुनहु तात यह अकथ कहानी। समुझत बनै न जात बखानी
ईश्वर अंश जीव अविनाशी। चेतन अमल सहज सुखराशी
सो माया बश भयउ गुसाईं। बँध्यो कीर मरकट की नाईं
जड़ चेतनहिं ग्रन्थि परि गई। यदपि मृषा छूटत कठिनई
तब तें जीव भयो संसारी। ग्रन्थि न छूट न होइ सुखारी
श्रुति पुरान बहु कहेउ उपाई। छूट न अधिक अधिक अरुझाई
जीव हृदय तम मोह बिशेखी। ग्रन्थि छुटै किमि परै न देखी
अस संयोग ईश जब करई। तबहुँ कदाचित सो निरुअरई
सात्विक श्रद्धा धेनु सुहाई। जो हरि कृपा हृदय बस आई
जप तप संय्यम नियम अपारा। जो श्रुति कहै सुधर्म्म अचारा
ये तृण हरित चरै जब गाई। भाव बत्स शिशु पाइ पन्हाई
नोइन प्रीति पात्र बिश्वासा। निर्म्मल मन अहीर निज दासा
परम धर्म्म मय पय दुहि भाई। अवटै अनल अकाम बनाई

तोष मरुत तब छमाजुड़ावै। धृति सम जावन देइ जमावै
मुदिता मथे विचार मथानी। दम अधार रजु सत्य सुवानी
तब मथि काढ़ि लेइ नवनीता। विमल विराग सुभग सुपुनीता
दो० योग अगिनि करि प्रकट तब कर्म्म सुभासुभ लाइ।
बुद्धि सिरावै ज्ञान घृत ममता मल जरि जाइ॥
तब विज्ञान निरूपिनी बुद्धि विशद घृत पाइ।
चित्त दिया भरि धरै दृढ़ समता दिअटि बनाइ॥
तीनि अवस्था तीनि गुन तेहि कपास ते काढ़ि
तूल तुरीय सँवारि पुनि बाती करै सुगाढ़ि १४
सो० एहि विधि लेसै दीप तेज राशि विज्ञानमय ।
जातहिं जासु समीप जरहिं मदादिक शलभ सब १३
सोहमस्मि इति बृत्ति अखण्डा। दीप शिखा सोइ परम प्रचण्डा
आतम अनुभव सुख सुप्रकाशा। तब भव मूल भेद भ्रम नाशा।
प्रबल अविद्या कर परिवारा। मोह आदि तम मिटै अपारा
तब सोइ बुद्धि पाइ उजियारा। उर गृह बैठि ग्रंथि निरुआरा।
छोरन ग्रन्थि पाव जो सोई। तब यह जीव कृतारथ होई
छोरत ग्रन्थि जानि खगराया। विघ्न अनेक करै तब माया

ऋद्धि सिद्धि प्रेरे बहु भाई। बुद्धिहिं लोभ देखावै जाई।
कल बल छल करि जाइ समीपा। अञ्चल बात बुझावै दीपा
होइ बुद्धि जो परम सयानी। तिन्ह तन चितवन अनहित जानी
जो तेहि विघ्न बुद्धि नहिं बाधी। तौ बहोरि सुर करहिं उपाधी
इन्द्रिय द्वार झरोखा नाना। तहँ तहँ सुर बैठे करि थाना
आवत देखहिं विषय बयारी। ते हठि देहिं कपाट उघारी।
जब सो प्रभञ्जन उर गृह जाई। तबहिं दीप विज्ञान बुझाई
ग्रन्थि न छूटि मिटा सो प्रकाशा। बुद्धि विकल भइ विषय बतासा
इन्द्रिय सुरन न ज्ञान सुहाई। विषय भोग पर प्रीति सदाई
विषय समीर बुद्धि कृत भोरी। तेहि विधि दीप को बार बहोरी

दो॰ तब फिरि जीव विविध विधि पावै संसृति क्लेश।
हरि माया अति दुस्तर तरि न जाइ विहगेश॥

कहत कठिन समुझत कठिन साधन कठिन विवेक
होइ घुनाक्षर न्याय ज्यों पुनि प्रत्यूह अनेक १५

ज्ञान के पन्थ कृपाण कि धारा। परत खगेश न लागै बारा
जो निर्विघ्न पन्थ निर्वहई। सो. कैवल्य परम पद लहई।
अति दुर्लभ कैवल्य परम पद। सन्त पुरान निगम आगम बद

राम भक्ति सों मुक्ति गुसाईं। अनइच्छित आवै बरिआईं
जिमि थल बिनु जल रहि न सकाई। कोटि भाँति कोउ करै उपाई
तथा मोक्ष सुख सुनु खगराई। रहि न सकै हरि भक्ति बिहाई
अस विचारि हरि भक्त सयाने। मुक्ति निरादरि भक्ति लोभाने
भक्ति करत बिनु यतन प्रयासा। संसृति मूल अविद्या नासा
भोजन करिय तृप्ति हित लागी। जिमि सो असन पचवै जठरागी
अस हरि भक्ति सुगम सुखदाई। को अस मूढ़ न जाहि सुहाई

दो० सेवक सेव्य भाव बिनु भव न तरिय उरगारि।
भजहु राम पद पंकज अस सिद्धान्त विचारि॥
जो चेतन कहँ जड़ करै जड़हि करै चैतन्य।
अस समर्थ रघुनायकहि भजहिं जीव ते धन्य १६

कहेउँ ज्ञान सिद्धान्त बुझाई। सुनहु भक्ति मनि की प्रभुताई
राम भक्ति चिन्तामनि सुन्दर। बसै गरुड़ जाके उर अन्तर
परम प्रकाश रूप दिन राती। नहिं कछु चहिअ दिआ घृत बाती
मोह दरिद्र निकट नहिं आवा। लोभ बात नहिं ताहि बुझावा
प्रबल अविद्या तम मिटि जाई। हारहिं सकल सलभ समुदाई
खल काम दि निकट नहिं जाहीं। बसै भक्ति मनि जेहि उर माहीं

गरलसुधासमअरिहितहोई।तेहिमणिबिनुसुखपावनकोई
व्यापहिमानसरोगनभारी।जेहिकेवशसबजीवदुखारी।
रामभक्तिमणिउरबसुजाके।दुखलवलेशनसपनेहुँताके
चतुरशिरोमणितेजगमाहीं।जेमणिलागिसुयतनकराहीं
सोमणियदपिप्रगटजगअहई।रामकृपाबिनुकोउनलहई
सुगमउपायपाइबेकेरे। नरहतभाग्यदेतभटभेरे।
पावनपर्व्वतवेदपुराना। रामकथारुचिराकरनाना।
मर्म्मीसज्जनसुमतिकुदारी। ज्ञानविरागनयनउरगारी
भावसहितजोखोदैप्रानी।पावभक्तिमणिसबसुखखानी
मोरेमनप्रभुअसविश्वासा।रामतेअधिकरामकरदासा
रामसिन्धुघनसज्जनधीरा। चन्दनतरुहरिसन्तसमीरा
सबकरफलहरिभक्तिसुहाई।सोबिनुसन्तनकाहूपाई
असविचारिजोकरुसतसंगा।रामभक्तितेहिसुलभविहंगा

दो० ब्रह्मपयोनिधिमन्दरज्ञानसन्तसुरआहि ।
कथासुधामथिकाढ़हींभक्तिमधुरताजाहि।
विरतिचर्मअसिज्ञानमदलोभमोहरिपुमारि।
जयपाईसोइहरिभगतिदेखुखगेशविचारि१७

पुनि सप्रेम बोलेउ खगराऊ। जो कृपाल मोहिं ऊपर भाऊ
नाथ मोहिं निज सेवक जानी। सप्त प्रश्न मम कहहु बखानी
प्रथमहिं कहहु नाथ मतिधीरा। सब ते दुर्लभ कवन शरीरा
बड़ दुख कवन कवन सुख भारी। सो संक्षेपहि कहहु बिचारी
सन्त असन्त मर्म तुम जानहु। तिन्ह कर सहज सुभाव बखानहु
कवन पुनि श्रुति बिदित बिशाला। कहहु कवन अघ परम कराला
मानस रोग कहहु सब गाई। तुम सर्व्वज्ञ कृपा अधिकाई
तात सुनहु सादर अति प्रीती। मैं संक्षेप कहौं यह नीती
नर समान नहिं कवनिउ देही। जीव चराचर याचत जेही।
नरक स्वर्ग अपवर्ग निसेनी। ज्ञान बिराग भक्ति सुख देनी
सो तनु धरि हरि भजहिं न जे नर। होइँ बिषयरत मन्द मन्द तर।
कञ्चन काँच बदलि शठ लेहीं। करते डारि परस मनि देहीं
नहिं दरिद्र सम दुख जग माहीं। सन्त मिलन सम सुख कछु नाहीं
पर उपकार वचन मन काया। सन्त सहज सुभाव खगराया
सन्त सहहिं दुख पर हित लागी। पर दुख हेतु असन्त अभागी
भूर्ज तरु सम सन्त कृपाला। पर हित सहनि बिपति बिशाला
सन इरवल पर बन्धन करई। खाल कढ़ाइ बिपति सहि मरई

खल बिनु स्वारथ पर अपकारी। अहि मूषक इव सुनउरगारी
पर सम्पदा बिनासि नसाहीं। जिमि ससि हति हिम उपल बिलाहीं
दुष्ट उदय जग आरति हेतू। यथा प्रसिद्ध अधम ग्रह केतू
सन्त उदय सन्तत सुखकारी। बिश्व सुखद जिमि इन्दु तमारी
परम धर्म श्रुति बिदित अहिंसा। पर निन्दा सम अघ न गरिंसा
हरि गुरु निन्दक दादुर होई। जन्म सहस्र पाव तन सोई।
द्विज निन्दक बहु नरक भोग करि। जग जनमै बायस सरीर धरि
सुर श्रुति निन्दक जे अभिमानी। रौरव नरक परहिं ते प्रानी
होहिं उलूक सन्त निन्दा रत। मोह निसा प्रिय ज्ञान भानु गत।
सब की निन्दा जे जड़ करहीं। ते चमगादुर होइ अवतरहीं
सुनहु तात अब मानस रोगा। जेहि ते दुख पावहिं सब लोगा
मोह सकल ब्याधिन कर मूला। तेहि ते पुनि उपजैं बहु सूला
काम बात कफ लोभ अपारा। क्रोध पित्त नित छाती जारा
प्रीति करहिं जो तीनौं भाई। उपजै सन्निपात दुखदाई।
बिषय मनोरथ दुर्गम नाना। ते सब सूल नाम को जाना
ममता दद्रु कंडु इरषाई। कुष्ट दुष्ट तामस कुटिलाई।
अहंकार जो दुखद डमरुआ। दम्भ कपट मद मान नहरुआ

तृष्णा उदर वृद्धि अति भारी। त्रिविधईषणा तरुणातिजारी
युगविधि ज्वर मत्सर अविवेका। कहँ लगि कहौं कुरोग अनेका
दो० एकव्याधि तें नरमरहिं ये असाध्य बहु व्याधि।
सन्ततपीड़हिंजीवकहँसोकिमिलहहिंसमाधि
नेम धर्म्म आचार तप ज्ञान यज्ञ जप दान ।
भेषजपुनिकोटिन्हकरहिंरुजनजाहिंहरियान१८
इहिविधिसकलजीवजगरोगी। शोकहर्षभय प्रीतिवियोगी
मानस रोग कछुक मैं गाये। हैं सब के लखिविरलनिपाये
जानेते छीजहिं कछु पापी। नाश न पावहिं जन परितापी
विषय कुपथ्य पाय अंकुरे। मुनिन्ह हृदय का नर बापुरे
राम कृपा नाशहिं सब रोगा। जो इहि भाँति बनै संयोगा।
सद्गुरु वैद्यवचन विश्वासा। संयमयह नविषय की आशा
रघुपति भक्ति सजीवन मूरी। अनूपान श्रद्धा मति रूरी
इहिविधिभलेकुरोगनशाहीं। नहिंतौयतनकोटिनहिंजाहीं
जानिय तब यह विरुजगुसाँई। जबउर बल विराग अधिकाई
सुमति क्षुधा बाढ़ै नित नई। विषय आश दुर्बलता गई।
विमल ज्ञानजल पाइ अन्हाई। तब रह राम भक्ति उर छाई

शिव अज शुक सनकादिक नारद। जे मुनि ब्रह्म विचार विशारद
सब कर मत खगनायक एहा। करिय राम पद पंकज नेहा
श्रुति पुराण सब ग्रन्थ कहाहीं। रघुपति भक्ति बिना सुख नाहीं
कमठ पीठ जामहिं बरु बारा। बन्ध्या सुत बरु काहुहिं मारा
फूलहिं नभ बरु बहु विधि फूला। जीव न लह सुख प्रभु प्रतिकूला
तृषा जाइ बरु मृग जल पाना। बरु जामहिं शश शीश विषाना
अन्धकार बरु रविहिं नशावै। राम विमुख सुख जीवन पावै
हिम ते प्रगट अनल बरु होई। विमुख राम सुख पाव न कोई

दो० बारि मथे बरु होइ घृत सिकता ते बरु तेल ।
बिनु हरिभजन न भव तरिय यह सिद्धान्त अपेल॥
मशक हिं करहिं विरंचि प्रभु अजहिं मशक ते हीन
अस विचारि तजि संशय रामहिं भजहिं प्रवीन १९

कहेउँ नाथ हरि चरित अनूपा। व्यास समास स्वमति अनुरूपा
श्रुति सिद्धान्त इहै उरगारी । राम भजिय सब काम बिसारी
प्रभु रघुपति तजि सेइय काही। मो से शठ पर ममता जाही।
तुम विज्ञान रूप नहिं मोहा। कीन्ह नाथ मो पर अति स्नेहा
पूँछेहु राम कथा अति पावनि। शुक सनकादि शंभु मन भावनि

संतसंगतिदुर्लभ संसारा। निमिष दण्ड भरि एकौ वारा
देखु गरुड़ निजहृदय विचारी। मैं रघुवीर चरण अधिकारी
शकुनाधमसबभाँतिअपावन।प्रभुमोहिंकीन्हविदितजगपावन
दो० आजुधन्यमैंधन्यअति यद्यपि सबविधिहीन।
निजजनजानिरामभोहिं सन्तसमागम दीन॥
नाथ यथामति भाषेउँ राखेउँ कछु नहिंगोय।
चरित सिन्धु रघुनाथकर याहकिपावै कोय २०
सुमिरिरामकेगुणागरानाना।पुनिपुनिहर्षभुशुण्डिसुजाना
महिमा निगमनेतिकरिगाई। अतुलितबलप्रतापप्रभुताई।
शिवअजपूज्यचरणरघुराई।सो पर कृपा परम मृदुलाई
असस्वभावकहुँसुनौंनदेखौं। केहिखगेशरघुपतिसमलेखौं।
साधकसिद्धविमुक्तउदासी। कविकोविदविरक्तसंन्यासी
योगी सुर अरुतापस ज्ञानी।धर्मनिरतपण्डितविज्ञानी।
तरहिंनबिनुसेयेमम स्वामी। रामनमामिनमामिनमामी
शरणागयेमोसेअघराशी। होहिंशुद्धनमामि अविनाशी।
दो० जासुनाम भव भेषज हरण घोर त्रय शूल।
सोकृपालमोहिंतोहिंपरसदारहहिंअनुकूल॥

सुनि सुखारिड के वचन वर देखि राम पद नेह।
बोले गरुड़ सप्रेम अति विगत मोह सन्देह २१

मैं कृत कृत्य भयउँ तव वानी। सुनि रघुवीर भक्ति रस सानी।
राम चरण नूतन रति भई। माया जनित विपति सब गई।
मोहजलधि बोहित तुम भयऊ। मोकहँ नाथ विविध सुख दयऊ।
मो सन होइ न प्रत्युपकारा। बन्दौं तव पद बारहिं बारा।
पूरण काम राम अनुरागी। तुम सम तातन कोउ बड़ भागी।
सन्त विटप सरिता गिरि धरणी। पर हित हेतु इन्हन की करणी।
सन्त हृदय नवनीत समाना। कहा कविन पै कहै न जाना।
निज परिताप द्रवै नवनीता। पर दुख द्रवहिं सुसन्त पुनीता।
जीवन जन्म सुफल मम भयऊ। तव प्रसाद सब संशय गयऊ।
जानेहु मोहिं सदा निज किंकर। पुनि पुनि उमा कहै विहंगवर।

दो० तासु चरण शिर नाइ करि प्रेम सहित मति धीर।
गरुड़ गयउ वैकुण्ठ तब हृदय राखि रघुवीर॥

गिरिजा सन्त समागम सम न लाभ कछु आन।
बिनु हरि कृपा सो होइ नहिं गावहिं वेद पुरान २२

कहेउँ परम पुनीत इतिहासा। सुनत श्रवण छूटहिं भव पासा।

प्रगट कल्पतरु करुणापुञ्जा। उपजै प्रीति राम पदकञ्जा
मन वच कर्म्म जनित अघ जाई। सुनै जो कथा श्रवण मन लाई
तीर्थ अटन साधन समुदाई। योग विराग ज्ञान निपुणाई
नाना कर्म्म धर्म्म ब्रत दाना। संयम नियम यज्ञ जप नाना
भूत दया द्विज गुरु सेवकाई। विद्या विनय विवेक बड़ाई।
जहँ लगि साधन वेद बखानी। सब कर फल हरि भक्ति भवानी
सोइ रघुनाथ भक्ति श्रुति गाई। राम कृपा काहू एक पाई

दो० मुनि दुर्लभ हरि भक्ति नर पावहिं बिनहिं प्रयास।
जो यह कथा निरन्तर सुनहिं मानि विश्वास २३

सोइ सर्व्वज्ञ गुनी सोइ ज्ञाता। सोइ महि मंडन पण्डित दाता
धर्म्म परायण सोइ कुल त्राता। राम चरण जा कर मन राता।
नीति निपुण सोइ परम सयाना। श्रुति सिद्धान्त नीक तेहि जाना
सोइ कवि कोविद सोइ रणधीरा। जो छल छाँड़ि भजै रघुवीरा
धन्य नारि पतिब्रत अनुसरी। धन्य सो देश जहाँ सुरसरी
धन्य सो भूप नीति जो करई। धन्य सो द्विज निज धर्म्म न टरई
सो धनि धन्य प्रथम गति जाकी। धन्य पुण्य रत मति सोइ पाकी
धन्य घरी सोइ जब सतसंगा। धन्य जन्म द्विज भक्ति अभंगा।

दो० सो कुल धन्य उमा सुनु जगत पूज्य सुपुनीत ।
श्री रघुवीर परायरा जेहि कुल उपज विनीत २४

मति अनुरूप कथा मैं भाखी। यद्यपि प्रथम गुप्त करि राखी
तव मन प्रीति देखि अधिकाई। तब मैं रघुपति कथा सुनाई
यह न कहिय शठ हीं हठशीलहिं। जो मन लाइ न सुन हरि लीलहिं
कहिय न लोभिहिं क्रोधिहिं कामिहिं। जो न भजै सचराचर स्वामिहिं
द्विज द्रोहिहिं न सुनाइय कबहूं। सुरपति सरिस होइ नृप जबहूं
राम कथा के ते अधिकारी। जिनके सतसंगति अति प्यारी
गुरु पद प्रीति नीति रत जोई। द्विज सेवक अधिकारी सोई
ता कहँ यह विशेष सुखदाई। जाहि परम प्रिय श्री रघुराई

दो० राम चरण रति जो चहै अथवा पद निर्वान ।
भाव सहित जो यह कथा करै श्रवण पुट पान २५

रामकथा गिरिजा मैं बरणी। कलिमल शमनमनोमल हरणी
संसृत रोग सजीवन मूरी। राम कथा गावहिं श्रुति भूरी।
इहि महँ रुचिर सप्त सोपाना। रघुपति भक्ति केर पथ नाना
अति हरि कृपा जाहि पर होई। पावँ देइ इहि मारग सोई।
मन कामना सिद्धि नर पावै। जो यह कथा कपट तजि गावै

कहहिं सुनहिं अनुमोदन करहीं। ते गोपद इव भवनिधि तरहीं
सुनि शुभ कथा हृदय अति भाई। गिरिजा बोली गिरा सुहाई
नाथ कृपा मम गत सन्देहा। राम चरण उपजा नव नेहा।
दो० मैं कृत कृत्य भयउँ अब तव प्रसाद विश्वेश।
उपजी राम भक्ति दृढ़ बीते सकल कलेश २६
यह शुभ शम्भु उमा सम्बादा। सुखद सदा अरु शमन विषादा
भव भञ्जन गञ्जन सन्देहा। जन रञ्जन सज्जन प्रिय येहा।
राम उपासक जे जग माहीं। इहि सम प्रिय तिन कहँ कछु नाहीं
रघुपति कृपा यथा मति गावा। मैं यह पावन चरित सुहावा
इहि कलि काल न [illegible] योग यज्ञ जप तप व्रत पूजा
रामहिं सुमिरिय गाइय रामहिं। सन्तत सुनिय राम गुण ग्रामहिं
जासु पतित पावन जग बाना। गावहिं कवि श्रुति सन्त पुराना
ताहि भजिय तजि मन कुटिलाई। राम भजे कोहिं गति नहिं पाई
छं० पाई न गति कोहिं पतित पावन राम भजु सुनु शठ मना।
गणिका अजामिल गृध्र व्याध गजादि खल तारेउ घना॥
आभीर यवन किरात खल श्वपचादि अति अघरूप जे
कहि नाम बारेक तेपि पावन होत राम नमामि ते ॥

रघुवंशभूषण चरित यह नरकहहिं सुनहिं जे गावहीं।
कलिमलमनोमल धोइ बिनु श्रम रामधाम सिधावहीं॥
शत पञ्च चौपाई मनोहर जानि जो नर उर धरैं।
दारुण अविद्या पञ्च जनित विकार श्रीरघुपति हरैं॥
सुन्दर सुजान कृपानिधान अनाथ पर कर प्रीति जो।
सो एक राम अकाम हित निर्वाण प्रद सम आन को॥
जाकी कृपा लवलेश ते मति मन्द तुलसीदास हूं।
पायो परम विश्राम राम समान प्रभु नाहीं कहूं १४

दो० मो सम दीन न दीन हित तुम समान रघुवीर।
अस विचारि रघुवंश मनि हरहु विषम भव भीर
कामिहिं नारि पियारि जिमि लोभिहिं प्रिय जिमि दाम
ऐसे होइ कै लागहू तुलसी के मन राम १३०

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने
विमलवैराग्यसम्पादनो नाम सप्तम-
सोपानः समाप्तः ७

श्लोक

यःपृथ्वीभरवारणायदिविजैः सम्प्रार्थितश्चिन्मयः।
सञ्जातःपृथिवीतलेरविकुलेमायामनुष्योऽव्ययः॥
निश्शंकंहतराक्षसाःपुनरगाद्ब्रह्मत्वमाद्यंस्थिरं।
कीर्त्तिंम्यापहरांविधायजगतांतज्ज्ञानकीशंभजे॥

यत्पूर्व्वंप्रभुणाकृतंसुकविनाश्रीशम्भुनादुर्गमं।
श्रीमद्रामपदाब्जभक्तिमनिशंप्राप्तोतुकामायराम्॥
मत्वातद्रघुनाथनाम्नि[illegible]तस्तमःशान्तये॥
भाषाबद्धमिदंचकारतुलसीदासस्तथामानसम् १
पुरायंपापहरं सदासुखकरं विज्ञानभक्तिप्रदम्।
मायामोहभवापहंसुविमलंप्रेमाम्बुपूरं शुभम्॥
श्रीमद्रामचरित्रमानसमिदंभक्त्यावगाहन्तिये।
तेसंसारपतंग घोरकिरणैर्दह्यन्तिनो मानवाः २

इति

अथ आरती श्रीरामायण जीकी

आरति श्री रामायण जीकी।
कीरति कलित ललित सिय पी की॥

टेक

गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद वाल्मीकि विज्ञान विशा
रद शुक सनकादि शेष अरु शारद वरणि पवन सुत की
रति नीकी। सप्तत गावत शम्भु भवानी औघट सम्भ
मुनिवर ज्ञानी व्यास आदि कवि पुंगव बरवानी काग भु-
शुण्डि गरुड़ कौहिये [illegible] चारिउ वेद पुराण अष्टदश
छइउ शास्त्र सब ग्रन्थनि को रस तन मन धन सन्तन को
सर्व्वस सार अंश सम्मत सब ही की। कलि मल हरणि
विषय रस फीकी सुभग शिँगार मुक्ति युवती की ह्र-
णि रोग भव मूरि अमी की तात मात सब विधि तुल-
सी की॥

जय लम्बो
काज सँवारन शुभ सब
न्त करि वदन सुहावे मूसे असवारी। ऋद्धि सि
इन्द्रादिक सब देवन पूजे गणानचें भीरा। दूर्य्य
न दीनदयाल न कोई वेगि कृपा करियो। राम गंग ई
जय लम्बोदर ईशा॥

सूर्य्य स्तुति आ

जय रजनी तमहारी। जड़ चेतन के प्राण आधार तू
वर वाजि विशाला रथ को राजरहे। ज्योति स्वरूप अनूप
नन कुराडल जगमग छाजे ज्योति कला चहुं ओरा। सुन्दर
चोरा (२) गणेश महेश करें गुण गाना चन्दन धूप सजै। अगरु कपूर
बीन बजै (३) जगउजियारक मोह निशि घालक प्रगट प्रभाव
स्वामी हिय तम नाश करो (४) जय रजनी तम हारी॥

दुर्गा स्तुति आरती

जय जननी सुख दैनी। मंगल करणी अमंगल हरणी तप्ताप
अरुणा तन वस्त्र भूषणा भूरि सजै। नयन विशाल लाल
माला नाक बुलाक लसै। चूपुर
गदा विराजै असुर संहार करै।

अथ आरती श्रीरामायणजीकी

आरति श्री रामायण जी की।
कीरति कलित ललित सिय पी की॥

टेक

गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद वाल्मीकि विज्ञान विशा
रद शुक सनकादि शेष अरु शारद बरणि पवन सुत की
रति नीकी। गावत शम्भु भवानी औघट सम्भु
मुनिवर ज्ञानी व्यास आदि कवि पुंगव बरवानी काग सु-
शुण्डि गरुड़ को हिय की प्रिय जो सुंदर वेद पुराण अष्ट दश
छइउ शास्त्र सब ग्रन्थनि को रस तन मन धन सन्तन को
सर्व्वस सार अंश सम्मत सब ही की। कलि मल हरणि
विषय रस फीकी सुभग शिँगार मुक्ति युवती की हर-
णि रोग भव मूरि अमी की तात मात सब विधि तुल-
सी की॥